Machine Translated by Google

ANITA NAIR

Mistress

a novel

"Nair is a powerful writer, who through this tender story shows great understanding and compassion for all women and for the choices and regrets they cannot avoid."
— Booklist, Ladies Coupe

Copyrighted Material

Machine Translated by Google

MISTRESS

A Novel

ANITA NAIR

St. Martin's Griffin
New York

Machine Translated by Google

चाचाओं के एक परिवार के लिए - केरल के
मुंडाकोटुकुरुस्सी में मणि और न्यूयॉर्क में मणि।

और सेतुमाधवन, राजन, श्रीधरन और वी.रामचंद्रन की याद में

Machine Translated by Google

विषयसूची

शीर्षक पेज

प्रस्तावना

पुस्तक 1

- श्रृंगारम
  - राधा
  - श्याम
  - चाचा
  - 1937 विनम्र पहुँच की प्रार्थना
- हास्यं
  - राधा
  - श्याम
  - चाचा
  - 1938 द प्लैंक ऑफ़ एविडिटी
- करुणाम
  - राधा
  - श्याम
  - चाचा
  - 1938–1940 एक नज़र का वजन

पुस्तक 2

- रौद्रम
  - श्याम
  - राधा
  - चाचा
  - 1938–1940 धोखे का व्याकरण
- वीरम
  - श्याम
  - राधा
  - चाचा
  - 1940–1952 आशा का ताज
- भयानकम

Machine Translated by Google

श्याम
राधा
चाचा
1952–1960 आगे बढ़ना
पुस्तक 3
बीभलसम
राधा
श्याम
चाचा
1961–1970 होमबलि की वेदी
अद्भुतम्
राधा
श्याम
चाचा
1970–1971 द क्रूसिबल
शांतम
राधा
श्याम
चाचा
1971 से अब तक पुनरुत्थान का ढंग
उपसंहार
स्वीकृतियाँ
साथ ही ब्यानिता नायर
अनीता नायर
कथकली शब्दकोश
ग्रन्थसूची
कॉपीराइट पेज

Machine Translated by Google

क्या आप नहीं देखते कि कला में कोई प्रथम व्यक्ति नहीं होता?
—ऑस्कर वाइल्ड

Machine Translated by Google

प्रस्तावना

तो फिर मैं कहां से शुरू करूं?

चेहरा। हाँ, चलिए उस चेहरे से शुरू करते हैं जो दिल की धड़कनों को तय करता है। चेहरे से ही हम विचारों को ध्वनियों के बिना भाषा में डिकोड करते हैं। क्या यह बात आपको हैरान करती है? आप पूछते हैं कि ध्वनियों के बिना भाषा कैसे हो सकती है। इसे नकारें नहीं। मैं आपकी आँखों में सवाल देख सकता हूँ।

मुझे एहसास है कि आप इस दुनिया के बारे में बहुत कम जानते हैं, जिसमें मैं आपको ले जाने वाला हूँ। मैं आपकी चिंता को समझता हूँ कि यह आपकी समझ से परे हो सकता है। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अगर मैं अपनी कला के प्रति अपने प्यार का कुछ हिस्सा आप तक नहीं पहुँचा पाया तो मैं अपने इरादों में विफल हो जाऊँगा। जब मैं समाप्त करूँगा, तो मुझे विश्वास है कि आप भी वैसा ही महसूस करेंगे जैसा मैं करता हूँ।

या लगभग वैसा ही जैसा मैं करता हूं।

मुझ पर भरोसा करो। मैं तुमसे बस यही माँगता हूँ। मुझ पर भरोसा करो और सुनो। और अपनी बुद्धि पर भरोसा रखो। किसी और को यह तय मत करने दो कि तुम्हारे लिए क्या है और क्या नहीं। तुम इतना और उससे भी ज़्यादा ग्रहण करने में सक्षम हो, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ।

मेरी ओर देखो। मेरे चेहरे को देखो। नंगा चेहरा, रंग और मेकअप, चमक और अलंकरण से रहित। हमारे पास यहाँ क्या है? माथा, भौंहें, नाक, मुँह, ठोड़ी और चेहरे की बत्तीस मांसपेशियाँ। ये हमारे उपकरण हैं और इनसे हम शब्दों के बिना भाषा को गढ़ेंगे। नवरस: प्रेम, अवमानना, दुःख, क्रोध, साहस, भय, घृणा, आश्चर्य, शांति।

जीवन की तरह नृत्य में भी हमें खुद को अभिव्यक्त करने के लिए नौ से ज़्यादा तरीकों की ज़रूरत नहीं होती। आप इन्हें दिल के नौ चेहरे कह सकते हैं।

समय के साथ, उनमें से हर कोई इसे अलग तरह से याद रखेगा। लेकिन जब तक वे जीवित रहेंगे, यह कभी नहीं मिटेगा: अनुग्रह के उस क्षण की याद। एल्युमिनियम की सीढ़ियों से नीचे गिरती रोशनी की, जिसकी छाया एक सफ़ेद चमक के रूप में थी, एक हवा की जो नदी के तल पर बने तालाबों पर ठंडी हवा दे रही थी। क्रिस की प्रतीक्षा की, उस व्यस्त रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर शांति का एक द्वीप।

वह खड़ा था, उत्सुक निगाहों से बेखबर, उसके इर्द-गिर्द भूखी निगाहों और खुली हथेलियों से खड़े बच्चों से, विक्रेताओं से जो उससे अपने सामान को आजमाने की विनती कर रहे थे। वह इस बात से अनजान था कि उसका सामान सीढ़ियों तक जाने के रास्ते में बाधा बन रहा था, जिससे लोग उसके बैगों से टकराते हुए बड़बड़ा रहे थे और बड़बड़ा रहे थे।

Machine Translated by Google

क्रिस ने चारों ओर देखा, उसके बालों में रोशनी के गुच्छे कैद थे, एक विशाल वायलिन केस का वजन उसके शरीर को एक तरफ झुका रहा था। मानो क्षतिपूर्ति करने के लिए, उसका मुंह एक विचारशील, तिरछी रेखा में खिंच गया था।

वे एक पल के लिए वहीं खड़े रहे, उसे देखते रहे। फिर उसने अपनी आँखें उठाईं और उन्हें देखा, जब वे सीढ़ियों के ऊपर रुके थे। बूढ़ा आदमी, जवान औरत और कम जवान आदमी। झिझकते हुए, अनिश्चित, प्रकाश के मार्ग को ग्रहण करते हुए और पैरों के प्रवाह को रोकते हुए।

रेखा एक वक्र में बदल गई, एक ऐसा इशारा जो खुशी से इतना पारदर्शी था और बाद में आने वाली हर चीज से इतना अछूता था कि उनमें से हर एक को लगा, मानो किसी पतंगे के पंख ने, कोमल और अलौकिक, उनकी आत्माओं को छू लिया हो। यह एक ऐसा संक्षिप्त और इतना आकर्षक स्पर्श था कि वे इसके खत्म होते ही इसके लिए तरस गए।

उस क्षण की शोभा ऐसी थी।

तभी, मानो पहला दावा पेश करने के लिए, युवती आगे बढ़ी।

'नमस्ते, आप क्रिस्टोफर स्टीवर्ट होंगे,' उसने कहा। 'मैं राधा हूँ। स्वागत है।'

क्रिस ने नमस्ते की मुद्रा में अपने हाथ जोड़े, जबकि उसका हाथ उसकी ओर बढ़ा।

जैसा कि उनकी गाइडबुक में सुझाया गया था कि भारत में महिलाओं का अभिवादन करते समय उन्हें ऐसा करना चाहिए।

उसने अपना हाथ नीचे कर दिया जैसे कि उसे फटकारा गया हो। उसने उसके हाथ को ऐसे पकड़ा जैसे कि माफ़ी मांग रहा हो। हाव-भाव, शिष्टाचार और अजीबोगरीब शुरुआत के साथ, क्रिस ने खुद को एक नई दुनिया में स्थापित कर लिया।

'हाय, मैं क्रिस हूँ। आपसे मिलकर खुशी हुई, राधा।' उसने धीरे से उसका नाम बोला, अक्षरों पर ध्यान दिया, उन्हें याद किया, प्रत्येक ध्वनि समूह का आनंद लिया।

राधा कांप उठी। राधा उसकी रीढ़ की हड्डी के नीचे एक पंखनुमा निशान थी।

जादू तोड़ने के लिए वह उस कम उम्र के आदमी की ओर मुड़ी। 'यह श्याम है,' उसने कहा।

वह कम उम्र का आदमी मुस्कुराया और अपना हाथ आगे बढ़ाया।

'शम,' क्रिस ने लगभग चिल्लाते हुए कहा, ऐसा महसूस करते हुए कि उसने अपनी उंगलियाँ किसी खड्ड में डाल दी हैं। यह कैसा नाम था? वैसे, यह किस तरह का जानवर था, उसने सोचा, जैसे ही उसने अपनी उंगलियाँ हाथ मिलाने से बाहर निकालीं। अपनी पीठ के पीछे, उसने अपनी लगभग सुन्न हो चुकी उँगलियों को धीरे-धीरे जकड़ा और खोला।

क्रिस की बेचैनी से बेखबर, उस कम उम्र के व्यक्ति ने विरोध किया, 'शाम, मैं कोई शम नहीं हूँ। यह श्याम है।' लेकिन क्रिस पहले ही बूढ़े व्यक्ति की ओर बढ़ चुका था। 'और आप, सर,' उसने धीरे से

कहा। बूढ़े व्यक्ति को कुछ अंग्रेजी आती थी, उसे बताया गया था। 'आप मि. कोमन होंगे।' बूढ़े व्यक्ति ने सिर हिलाया। क्रिस ने अनिश्चित होकर मुस्कुराया। भारत में रहने के कुछ दिनों में, वह पहले ही सिर हिलाने का सामना कर चुका था और अभी भी यह समझने में असमर्थ था कि इसका मतलब हाँ है या नहीं।

Machine Translated by Google

राधा बूढ़े आदमी के करीब चली गई। 'अंकल,' उसने कहा। 'यह क्रिस्टोफर स्टीवर्ट है।' क्रिस ने धीरे से कहा, यह नहीं जानते हुए कि बूढ़ा आदमी कितना समझ

पाएगा, 'आपके दोस्त फिलिप रीड ने मुझे आपके बारे में बहुत कुछ बताया है। मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूँ कि आप मुझसे मिलने के लिए सहमत हुए।'

बूढ़े आदमी ने अपने दोनों हाथ अपने हाथों में लिए और मुस्कुराया। उसकी निगाहों की गर्माहट ने उसे अंदर तक खा लिया। क्रिस ने अपनी आँखें बूढ़े आदमी के चेहरे पर घुमाईं, हर एक चेहरे की विशेषताओं को चुपके से किसी जानी-पहचानी रेखा या वक्र के लिए जाँचता रहा। उसने देखा कि घनी भौंहों के नीचे आँखों में कौवे के पैर की लकीरें सिकुड़ रही थीं। उसने देखा कि कैसे ऊँची गाल की हड्डियाँ बूढ़े आदमी की त्वचा को खींच रही थीं, जिससे उसका चेहरा लगभग जवान लग रहा था और फिर उसने ठोड़ी में डिंपल देखा और उसे अंदर से एक उत्तेजना महसूस हुई। उसने अपनी आँखें उनके हाथों की पकड़ पर टिका दीं।

नमस्ते, उसने मुँह से कहा। नमस्ते, समुद्र पार से आए बूढ़े आदमी। नमस्ते, शायद पिताजी। नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते...

Machine Translated by Google

पुस्तक 1

कंडालेथ्रेयुम कौथुकमुंडिथिन, पांडु
कंडिल्ला ज्ञान एवं विधं केट्टुमिल्ला

यह देखने में कितना सुंदर है, मैंने ऐसा कुछ पहले
कभी नहीं देखा या सुना है

—नालचरितम् [पहला दिन]
उन्नायी वारियर

Machine Translated by Google

श्रृंगारम

प्रेम। आइये श्रृंगार से शुरू करें।

क्या हम इसके लिए अन्य शब्द जानते हैं?

या फिर हम इसे आंखों के फैलने से, भौंहों के ऊपर उठने से, मुंह के मुड़ने की कोमलता से, प्रत्येक तंत्रिका-छोर से निकलने वाली सांस की सूजन से जानते हैं जो एक आकृति बनाना चाहती है?

इस बाढ़ के लिए हमारे पास ऐसे शब्द हैं जो अन्य सभी विचारों को बहा ले जा सकते हैं।
सुख, लालसा, वासना... हम इसे कई नामों से पुकारते हैं। ऐसा करना मानवीय है। हर चीज़ और हर किसी को नाम देना, वर्गीकृत करना और अलग करना। तभी हम इस अद्भुत प्राणी को जानने, जीतने, उसे थामने की ज़रूरत की सीमा को माप सकते हैं, यह प्राणी जो हर पल एक अजीब और अकथनीय लालसा से भरा रहता है।

अपने चारों ओर देखो और मुझे बताओ, प्रेम और क्या है?
क्या यह इसी महीने हो सकता है?

अगस्त।

हर जगह फूल हैं। बालसम और हिबिस्कस। पीले तुरही के आकार के फूल और झाड़ियों में छोटे, नाजुक एरी-पू। मैरीगोल्ड, गुलदाउदी, अनगिनत रंग जो हमारी ज़रूरतों को आकार देते हैं। झाड़ियाँ घनी हैं। साँप अस्त-व्यस्त ज़मीन पर रेंगते हैं। यह एक जंगली और मनमौजी महीना है। बारिश होती है, धूप भी।

कटे हुए खेत आसमान की ओर एक उदास खालीपन से देखते हैं: अतीत और भविष्य। वर्तमान वह फसल है जो घरों में, लकड़ी की दीवारों वाले मंजों में, सुनहरी और मोटी होती है। प्रेम वर्तमान में रहता है। बाकी सब स्मृति और आशा है।

कोई फल नहीं है। न काजू, न कटहल, न आम, न ताड़ का फल। शायद बगीचे के किसी अनदेखे हिस्से में, राख-हरे रंग की तलवारों के बीच एक अनानास आराम कर रहा हो। इस महीने का फल धान है। भरपूरता की मीठी परिपूर्णता से भरे हुए दाने। श्रृंगारम ऐसा ही लगता है।

आसमान चाँद से जगमगा रहा है। रात का ऑर्केस्ट्रा बज रहा है: पंखों पर मलक्का लटकाए झींगुर, गले में खड़खड़ाहट लिए मेंढक, उल्लू की आवाज़, ताड़ के पत्तों की सरसराहट, पेड़ों के बीच बहती हवा।

दिन के समय, ऊपर आसमान में, क्रेस्टेड लार्क गाता है। वनमपदी।

Machine Translated by Google

स्वर्ग के द्वार से, अज्ञात का एक मार्ग, आत्मा को दुलारता हुआ, इच्छा को जगाता हुआ, आवश्यकताओं को शब्दों में ढालता हुआ...

अज्ञात के प्रति प्रेम। यह भी श्रृंगारम का चेहरा है।

राधा

हम सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हैं, दो-दो लोग एक पंक्ति में। क्रिस और उसका सेलो; अंकल और मैं; श्याम और बैगों से लदा लाल शर्ट वाला रेलवे-कुली।

क्रिस सीढ़ी के शीर्ष पर रुकता है और फिर रेलिंग की ओर चलता है।

रेलवे लाइनों के पार नदी का किनारा है। या जो कुछ बचा है। ज़्यादातर रेत घर बनाने के लिए ले जाई गई है। जब नदी मानसून की बारिश से उफनती है, तो नदी के किनारे बने घरों में घुस जाती है। हालाँकि, ज़्यादातर नीला एक काल्पनिक नदी है, जो सिर्फ़ उन लोगों की यादों में मौजूद है जिन्होंने इसे पूरे उफान पर, तेज़ और भूरे रंग में देखा है और अपने पानी में उन सभी को बहा ले जाती है जो इसके प्रवाह को रोकने की हिम्मत करते हैं।

क्रिस वहाँ खड़ा है और गहरी साँस लेता है। मैं उस दृश्य को वैसे ही देखने की कोशिश करता हूँ जैसे वह देख रहा है: पानी की चमकती हुई रेखा, नदी के किनारे बने कई तालाब, मछली पकड़ते हुए बगुले, पेड़ों की चोटियाँ और नदी के किनारे उगने वाली लंबी घास, हवा से हिलती हुई, दूर की पहाड़ियाँ और साफ़ नीला आसमान, और मैं डर को जानता हूँ।

उसके साथ बिताए इन चंद मिनटों में ही, परिचितता एक नई धार से संपन्न हो जाती है।

मैं उसकी तरफ़ देखती हूँ। हर पल यह विचार मेरे दिमाग़ में और गहरा होता जाता है: कितना आकर्षक आदमी है।

ऐसा नहीं है कि उसके बाल शीशम के रंग के हैं - गहरे भूरे रंग के साथ लाल रंग के संकेत - या उसकी आँखें रिसॉर्ट के बंद तालाब की तरह हरी हैं। यह उसकी त्वचा का पीला सुनहरा रंग भी नहीं है। यह उसके माथे से बालों को पीछे की ओर कंघी करने का तरीका है: एक व्यवस्थित लहर जो बीच में ही खत्म हो जाती है और अव्यवस्थित कर्ल में बदल जाती है। यह उसके शरीर की ताकत और उसकी उंगलियों की लंबाई है, जो उसके प्राकृतिक आलस्य को झुठलाती है। यह उसकी आँखों का सिकुड़ना और उसकी धीमी मुस्कान है जो उसके चेहरे को विषम रेखाओं में बदल देती है। यह उसके मुँह की कोमलता है जो दो दिन की क्रूर दाढ़ी से घिरी हुई है। यह वह तरीका है जिससे वह व्यवस्था और अव्यवस्था को एक साथ रहने देता है, एक दूसरे को अलग करने की कोशिश किए बिना। वह ऐसा दिखता है मानो उसे इस बात की परवाह नहीं है कि कोई उसके बारे में क्या सोचता है।

मैंने देखा कि क्रिस अंकल से बात करने के लिए मुड़ा। 'फिलिप ने मुझे इस दृश्य के बारे में बताया। उसने कहा कि मुझे पुल के चौथे खंभे पर खड़ा होना चाहिए और जो मैंने देखा, उसे देखकर मेरा मन कभी यहाँ से जाने का नहीं करेगा।'

Machine Translated by Google

चाचा क्रिस के पास जाकर खड़े हो जाते हैं।

जब वे सीढ़ियों के नीचे हाथ जोड़कर खड़े हुए थे, तो वहां एक अजीब सी खामोशी थी, जिसमें वे एक-दूसरे से गुप्त शब्दों में बात कर रहे थे, जिसे न तो मैंने और न ही किसी और ने पहले कभी सुना था। लेकिन श्याम, जिसे क्रिस शाम कहकर पुकारते हैं, ने उस क्षण को लापरवाही से तोड़ दिया, जो कि उसकी खासियत है।

'यह क्या है?' उसने क्रिस की पीठ पर रखे वाद्य की ओर इशारा करते हुए पूछा। 'वायलिन का दादा?' 'मुझे नहीं लगता कि यह वायलिन है।' मैंने श्याम को बीच में रोकने की कोशिश की, इससे पहले कि

वह खुद को बेवकूफ़ बना ले। 'मैंने इसे फिल्मों में और कई बार संगीत कार्यक्रमों में देखा है। हालाँकि, मुझे याद नहीं है कि इसे क्या कहा जाता है,' मैंने जल्दी से कहा। क्या यह सेलो था या डबल बास? मुझे यकीन नहीं था।

क्रिस ने अपने हाथ अंकल के हाथों से खींचे और बातचीत में शामिल हो गया।
किसी परिचित कमरे में प्रवेश करने की सहजता। 'यह एक सेलो है,' वह हँसा।

'क्या?' श्याम ने पूछा। 'क्या तुमने इसे सेलो कहा?' वह मुझे अपने मज़ाक में शामिल करने के लिए मुड़ा। 'जब तुम रिसॉर्ट में आओगे, तो मैं तुम्हें हमारे सेलो दिखाऊंगा,' उसने एक बड़ी आँख मारते हुए कहा।

क्रिस हैरान था। उसने मेरे चेहरे पर स्पष्टीकरण की तलाश की। मैं उसे कैसे बता सकती थी कि श्याम उन हॉट केसों की बात कर रहा था जो रिसॉर्ट में बुफे में खाने को गर्म रखते थे? इसने उपकरण की भव्यता को तुच्छ बना दिया। मैं शर्मिंदगी में दूर हो गई। वह सिर्फ़ दिखावा नहीं था, वह एक बदतमीज़ आदमी था, मेरा यह पति।

अब, वह अंकल और क्रिस के पास जाता है, जहाँ वे खड़े होकर नज़ारे का लुत्फ़ उठा रहे हैं, और कहता है, 'यह अफ़सोस की बात है कि तुम यहाँ से रिज़ॉर्ट नहीं देख सकते। क्या तुमने यह सब बहुत नहीं देखा है? रिज़ॉर्ट से नज़ारा, मैं तुमसे वादा करता हूँ, और भी बेहतर है। लेकिन पहले, मुझे तुम्हें कुछ दिखाना है। चलो।'

दोनों आदमी खुद को दूर ले जाते हैं और क्रिस के चेहरे पर निराशा और अंकल के चेहरे पर सहनशीलता के भाव के साथ श्याम का पीछा करते हैं। वह उन्हें सीढ़ियों के किनारे टंगे पीले रंग के बोर्ड के पास ले जाता है। 'अब यह वही है जिसे देखते-देखते मैं थक नहीं सकता,' वह फ्रेम से एक सूखा पत्ता झटकते हुए कहता है।

'नीला के पास', वह पढ़ता है। 'एक नदी के किनारे विश्राम स्थल जहाँ आपकी हर इच्छा पूरी होती है और उससे भी ज़्यादा। ए/सी और नॉन ए/सी कॉटेज और कमरे। बहु-व्यंजन और केरल के विशेष रेस्तरां। आयुर्वेदिक मालिश और सांस्कृतिक कार्यक्रम।

व्यापार हो या मौज-मस्ती, नियर-द-नीला आपकी ज़रूरतों को किसी और से बेहतर तरीके से जानता है।' वह रुकता है। और फिर, क्रिस पर एक गंभीर नज़र डालते हुए, वह कहता है, 'मुझे उम्मीद है कि यही वह चीज़ है जो आपको कभी नहीं छोड़ना चाहेगी। वास्तव में ...'

मैं अब इस नियर-द-नीला प्रमोशन को और बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं कुली को सिर हिलाकर जवाब देता हूँ

Machine Translated by Google

और हम प्लेटफॉर्म के दूसरी ओर उतरना शुरू करते हैं जहां कार खड़ी है।

कुली पूछता है, 'वह कौन है?' 'क्या वह कथकली सीखने आया है?' शोरानूर रेलवे स्टेशन पर कुली मोहम्मद की मौजूदगी नॉन-वेज रिफ्रेशमेंट रूम और एसएलवी न्यूजस्टैंड की तरह ही है। जब से मैं याद कर सकता हूँ, मोहम्मद ने हमारे बैग उठाए हैं। यह हर यात्रा की रस्म का हिस्सा है। जब मैं बच्चा था, मोहम्मद हमारे बैग ले जाता था, बिरयानी के पार्सल लाता था और फिर मेरे साथ कॉमिक खरीदने के लिए न्यूजस्टैंड जाता था। बाद में, जब मैं बड़ा हो गया और बैंगलोर की यात्रा कर रहा था, जहाँ मेरा कॉलेज था, तो वह मेरे बैग की रखवाली करता था, जबकि मैं एक पत्रिका खरीदता था।

इन दिनों मैं शायद ही कहीं जाता हूं और रेलवे स्टेशन पर भी बहुत कम आता हूं।
लेकिन जब मैं अंदर आया तो मोहम्मद ने मुझे देख लिया और हमेशा की तरह वह दौड़कर मेरे पास आया और सामान उठाकर ले गया।

'नहीं, नहीं,' मैं कहता हूं, क्रिस के कथकली सीखने के विचार पर मुस्कुराहट को दबाते हुए।
'वह एक लेखक है। वह अंकल से मिलने आया है। और वह होटल में ठहरेगा।' रिट्रीट और रिसॉर्ट ऐसे शब्द हैं जिनके
लिए मोहम्मद की शब्दावली में कोई जगह नहीं है।

'उसकी पीठ पर वह चीज़ क्या है?' वह सेलो की ओर इशारा करते हुए पूछता है।

मैंने कहा, 'यह एक संगीत वाद्य है।'

'वह इसे कैसे बजाता है? क्या आप जानते हैं? क्या वह इसे मेज पर रखता है या दीवार के सहारे टिका देता है?' मुझे एहसास है कि सेलो कई चर्चाओं
का हिस्सा बनने जा रहा है।

मैं मुस्कुराती हूं और शरारत से खुद को रोक नहीं पाती हूं, मैं कहती हूं, 'मुझे लगता है कि वह इसे अपनी टांगों के बीच में रखता है।' मोहम्मद
शरमा जाता है और दूसरी तरफ देखने लगता है।

'ये लो मोहम्मद,' मैंने कुछ नोट उसकी हथेली में दबाते हुए कहा। 'कुछ चाय के पैसे।' मोहम्मद ने उसे सावधानी से जेब में रख
लिया। उसने अपना गला साफ किया और बीच की दूरी पर देखा। हम दोनों जानते हैं कि पैसे किस लिए हैं।

श्याम ने कार का दरवाज़ा खोलते हुए कहा, 'आह, वे यहाँ हैं।' उसने आदेश दिया, 'कुली, बैग अंदर रख दो।'

'तो इसकी कीमत कितनी होगी?' वह अपना बटुआ निकालते हुए पूछता है।

मोहम्मद ने बैग उठाते समय जो लुंगी बांधी थी, उसे नीचे गिरा दिया और अपनी सही लंबाई पर आ गया। फिर उसने नम्रता के तौर पर अपने पैरों को क्रॉस किया और अज्ञानता दर्शाने के लिए अपना सिर खुजलाया।

'ऐसी स्थिति में, यह पर्याप्त होना चाहिए,' श्याम ने दो दस रुपये के नोट निकालते हुए कहा
नोट्स.

एक क्षण के लिए मोहम्मद की नज़रें मेरी नज़रों से मिलती हैं। बीस पैसे जो मैंने दिए थे

Machine Translated by Google

इससे पहले उन्हें आंशिक भुगतान किया गया था, जो अग्रिम भुगतान था।

मोहम्मद के मुंह पर एक आधी मुस्कान आ जाती है। मैं उसके होंठों की सिकुड़न में घृणा देख सकता हूं और मैं सिहर उठता हूं। वह नोटों को अपनी उंगलियों के बीच रगड़ता है और मुझे चिंता होती है कि वह कुछ तीखा बोल देगा। लेकिन वह अपनी जुबान पर काबू रखता है और, जैसे कि वे पांच सौ रुपये के नोट हों, वह बड़ी सावधानी से नोटों को मोड़ता है, उन्हें अपनी कमीज की जेब में डालता है और वापस स्टेशन की ओर चल देता है।

क्रिस कार को देखता है और पूछता है, 'हम सब इसमें कैसे फिट हो जाते हैं?' श्याम

कार के बोनट को थपथपाता है। 'यह, मेरे दोस्त,' वह कहता है, 'एक एंबेसडर है, भारत में निर्मित पहली कार।' मैं खुद को कोई भावना नहीं दिखाने के लिए तैयार करता हूँ। जब श्याम ने नियर-द-नीला

की स्थापना की, तो वहाँ काम करने वाले सभी कर्मचारियों और यहाँ तक कि मुझे, जो कि केवल नाम के लिए ही संपत्ति की मालकिन थी, को एक शीट दी गई जिसमें वह सब कुछ था जो हमें जानना चाहिए था। वह सब कुछ जिसके बारे में एक विदेशी पर्यटक पूछेगा: आयुर्वेद, कथकली, कलारीपयतु, केरल के व्यंजन, त्रिशूर पूरम, मैंगलोर की टाइलें और, हालाँकि कार पश्चिम बंगाल में निर्मित है, एंबेसडर।

श्याम कुछ देर रुकता है। वह चाहता है कि मैं कार की विशेषताओं के बारे में बताऊँ। मैं समझ नहीं पाता हूँ। वह आह भरता है और शुरू करता है, 'जैसा कि मैं आपको बता रहा था, एम्बेसडर भारत में निर्मित पहली कार थी। यह डीजल से चलती है, जो इसे चलाने की लागत में बेजोड़ किफ़ायती बनाती है। भारत में पेट्रोल बहुत महंगा है। इस कार का ईंधन टैंक 42 लीटर ईंधन भर सकता है। इसे पूरा टैंक भरने में लगभग 42 अमेरिकी डॉलर का खर्च आता है। आपके मानकों के हिसाब से यह बहुत ज़्यादा नहीं है, लेकिन यहाँ एक मज़दूर के लिए यह मासिक मज़दूरी है। एम्बेसडर में आसानी से ठंड में स्टार्ट होने की सुविधा है और प्रभावी ब्रेकिंग के लिए 9 इंच व्यास के ब्रेक ड्रम हैं।' श्याम अपने हाथ से ब्रेक की हरकत की नकल करता है।

1/8

तीन लाइन और बोलो, बात खत्म हो जाएगी। जल्दी करो, मैं श्याम को बताना चाहता हूँ।
क्या आप नहीं देख सकते कि क्रिस को इस बात की परवाह नहीं है कि इसमें पांच-स्पीड गियरबॉक्स है या स्वतंत्र फ्रंट सस्पेंशन?

'सस्पेंशन ही वह चीज है जो एम्बी को, जैसा कि हम इसे कहते हैं, भारतीय सड़कों के लिए एकदम सही बनाती है। अब, मैं एक जापानी या कोरियाई कार या यहां तक कि एक फोर्ड भी खरीद सकता हूं, लेकिन दस साल में, जबकि मेरी एम्बी अभी भी चलती रहेगी, ये नई कारें कबाड़ हो जाएंगी।' क्रिस अपना माथा पोंछता है और पूछता है,

'लेकिन हम सब इसमें कैसे फिट होंगे?' अंकल, जिन्होंने अब कुछ समय से एक शब्द भी नहीं

बोला है, ड्राइवर को इशारा करते हैं
एक ऑटोरिक्शा। क्रिस ने कहा, 'मैं उसके साथ चलूँगा। समस्या हल हो गई, है न?'

वह कार का पिछला दरवाज़ा खोलता है और अपना सेलो सावधानी से सीट पर रख देता है।

श्याम कुछ नहीं कहता। मुझे पता है कि वह खुश नहीं है।
वह क्रिस को और भी बहुत कुछ बताने की योजना बना रहा था।

अंकल मेरी ओर मुड़े और बोले, 'हम तुमसे पहले रिसॉर्ट पहुंच जाएंगे। मैं कहां पहुंचूं?'

Machine Translated by Google

उसे ले चलो?'

'कॉटेज नंबर 12,' मैंने कहा। 'लेकिन पहले, उसे नाश्ते के लिए रेस्तरां में ले चलो।
हम वहाँ आपसे मिलेंगे।' मुझे पता है

कि श्याम चाहता है कि क्रिस को सबसे अच्छी झोपड़ी मिले, जो नदी के सबसे करीब हो और मुख्य इमारत से सबसे दूर हो। श्याम को उम्मीद है कि क्रिस अपनी लिखी यात्रा पुस्तक में नियर-द-नीला के बारे में शानदार जानकारी शामिल करेगा।

तो हम रिसॉर्ट की ओर चल पड़े, श्याम और मैं ड्राइवर के साथ आगे की सीट पर बैठ गए।

पीछे सेलो है, एक छद्म यात्री, विदेशी और अलग-थलग और अंदर तक हलचल मचाने वाला
मुझे बहुत कुछ ऐसा महसूस होता है जिसे मैं फिर कभी महसूस न करने के लिए खुद को तैयार कर चुका हूँ।

मैं श्याम के चेहरे पर नज़र डालने के लिए मुड़ता हूँ। श्याम सुंदर है। उसकी त्वचा गोरी और चिकनी है; हालाँकि वह हर सुबह दाढ़ी बनाता है, दोपहर तक, एक नीली छाया दिखाई देती है, जो चेहरे के बालों की ओर इशारा करती है जिसे वह बेरहमी से नियंत्रित रखता है। उसकी विशेषताएँ समतल और तराशी हुई हैं; उसका शरीर सीधा और लचीला है; उसके बाल गहरे काले, भरपूर और करीने से कंघी किए हुए हैं। वह एक लोकप्रिय मलयालम फिल्म स्टार जैसा दिखता है। एक एक्शन हीरो। श्याम जानता है कि दूसरी महिलाएँ उसे देखती हैं। कि वह दिलचस्पी और शायद वासना भी जगाता है। हालाँकि, मैं उसके लिए शायद आदतन झुंझलाहट के अलावा कुछ भी महसूस नहीं करता।

मैं देखती हूं कि श्याम सुबह के समय से परेशान है और अचानक मुझे उस पर दया आ जाती है।

कार से रिसॉर्ट वापस लौटना आमतौर पर उनके लिए सबसे खास होता है। मुख्य सड़क से नीचे उतरते हुए श्याम नदी के किनारे चिमनी टावरों के ढेर की ओर इशारा करते हुए कहते, 'यह राधा के परिवार का हुआ करता था। इस क्षेत्र की सबसे पुरानी टाइल फैक्ट्री।' 'यह,' वे एक आधुनिक तीन मंजिला इमारत की ओर इशारा करते हुए कहते, 'यह एक सिनेमा घर हुआ करता था। मुरुगन टॉकीज। यह राधा के दादा का था। कुछ साल

पहले, यह जल गया और इसकी जगह यह बना।'

और इस तरह यह सूची बढ़ती चली गई। एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स। एक चावल मिल। घरों की एक पंक्ति। एक रबर का बागान। एक आम का बगीचा। नारियल के पेड़ों की एक पंक्ति... ये सभी मेरे परिवार के स्वामित्व में हैं या कभी थे।

फिर उसकी बारी आती। यही वह क्षण था जिसका वह इंतजार करता था, जब वह अपनी उपलब्धियों का पता लगा सकता था, जो नियर-द-नीला तक ले जाती थी। और कभी-कभी, मुझे भी। मुझे लगता है कि अब उसके साथ धोखा हुआ है।

शोरनुर में हर कोई हमारे बारे में सब कुछ जानता है। केवल अजनबियों के बीच ही श्याम को अपनी जीत का पैमाना पता चलता है।

मैं उसकी बांह थपथपाता हूं और कहता हूं, 'परेशान मत हो। और भी मौके मिलेंगे।'

Machine Translated by Google

श्याम की आँखें मेरी आँखों में घुस गईं। 'क्या कह रहे हो? तुम्हें क्या लगता है कि मैं परेशान हूँ? मैं तो बस परेशान हूँ। वह हमें क्या समझता है? उसके कुली? उसके बैग और उसके बेवकूफ़ भैंस जैसे यंत्र के साथ उसका पीछा करने के लिए...' 'शश...' मैंने उसे शांत करने की कोशिश की।

श्याम के अंदर आत्म-सम्मान की भावना बहुत बढ़ गई है। या शायद यह उतनी बढ़ गई नहीं है जितनी कम हो गई है। वह उन अपमानों को भी देखता है, जिनका कोई इरादा नहीं होता। और इसके लिए भी 'राधा का परिवार' जिम्मेदार है।

अचानक मुझे एहसास हुआ कि श्याम के लिए मेरे मन में क्या है। न दया, न स्नेह।
बस जिम्मेदार.

'मैं जानता हूं, मैं जानता हूं,' मैंने कहा।

श्याम अपने बालों में उंगलियाँ घुमाता है, जो अलग होकर पीछे गिरते हैं। एक समय था जब मैं अपनी उंगलियाँ बालों में घुमाता था। अब जब मैं बालों को देखता हूँ, तो मुझे एक अलग ही दिलचस्पी महसूस होती है।

मैंने श्याम का मूड बदलने की कोशिश करते हुए कहा, 'तुम्हें बाल कटवाने की जरूरत है।'

'क्या तुम्हें ऐसा लगता है?' वह एक लट को खींचकर उसकी लंबाई जांचने के लिए पूछता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह इसके विपरीत सोचता है। श्याम अपने बाल कटवाएगा क्योंकि मैंने उससे कहा है
को।

अगर मैं श्याम से कहूं तो वह मेरे लिए चाँद ले आएगा।

कार एक गड्ढे में धंस जाती है और सड़क पर गिर जाती है। पीछे सेलो खतरनाक तरीके से हिलता है। 'रुको,' मैं ड्राइवर से कहता हूँ और हम सड़क के किनारे रुक जाते हैं।

मैं बाहर निकलता हूँ और यंत्र के केस को सुरक्षित स्थान पर ले जाने की कोशिश करता हूँ। मैं सोचता हूँ कि अंदर क्या है। लकड़ी की चमक, साटन जैसा एहसास। मैं अपनी उँगलियों को उसकी लंबाई के साथ तेज़ी से चुपके से सहलाता हूँ। ऐसा कैसे हुआ कि मैं किसी ऐसी चीज़ की परवाह करने लगा हूँ जिसे मैंने पहले कभी देखा ही नहीं? ऐसा कैसे हुआ कि मैं जानता हूँ कि इस केस के अंदर शायद वह सबसे खूबसूरत चीज़ है जो मैंने अपने जीवन में कभी देखी होगी? मुझे लगता है कि डर ने मुझे फिर से जकड़ लिया है।

जब मैं श्याम के पास बैठता हूँ, तो वह स्वीकृतिपूर्वक मुस्कुराता है। 'हमें आखिरी चीज़ जो चाहिए वह है उस वाद्य यंत्र को क्षतिग्रस्त करना। हम नहीं चाहते कि वह वापस जाए और हमारे रिसॉर्ट या हमारी सड़कों को कटु नोटिस दे। हालाँकि मैं चाहता हूँ कि वह कुछ ऐसा लाए जिसे ले जाना आसान हो। जैसे कि बांसुरी, शायद?' वह हँसता है।

ड्राइवर के मुँह पर मुस्कान फैल गई। 'क्या तुम्हें लगता है कि वह बांसुरी वाला आदमी है?' उसने पूछा।
पूछता है, उसकी आँखों में शरारत झलक रही है।

श्याम ने मेरी ओर एक त्वरित नज़र डाली और मुस्कुराया। 'आप कभी नहीं जानते कि इन कलात्मक चीजों के साथ
वैसे भी, मेरा सुझाव है कि आप अपनी दूरी बनाए रखें।'

वे एक दूसरे को देखकर मुस्कुराते हैं, अपने गटर हास्य से प्रसन्न होते हैं। मेरी उपस्थिति में अश्लील होने में सक्षम होने के साथ, इस ज्ञान में सुरक्षित कि मैं ऐसा नहीं करूँगा

Machine Translated by Google

समझना।

बांसुरी बजाना। मुर्गा चूसने वाला। कायर। नीच... वे वास्तव में ऐसा नहीं चाहते, मैं खुद से कहता हूँ।

मैं अपना चेहरा भावहीन रखती हूँ। श्याम भूल गया है कि मैं क्या जानती हूँ। श्याम भूल गया है कि मैं क्या जानती हूँ।
वह भूल गया है कि मैं इस संरक्षित दुनिया से बाहर रहता हूं, जिसमें वह मुझे रखना पसंद करता है।

उस गर्म कार में, मुझे ठंड और कांप लग रहा है। मैं अकेला महसूस कर रहा हूँ। मैं अपना हाथ अपनी जांघ पर रखता हूँ, हथेली ऊपर की ओर। मैं चाहता हूँ कि श्याम इसे ले ले। अगर वह ऐसा करता है, तो सब ठीक हो जाएगा, मुझे लगता है।

मेरा हाथ वहाँ खुला और अछूता पड़ा है। और फिर मुझे एहसास होता है कि मैं क्यों
श्याम से कभी चाँद नहीं मांगेगी।

मुझे पूछने से नफरत है.

Machine Translated by Google

श्याम

राधा क्यों 'दुनिया की सारी मुसीबतें मुझ पर हैं' वाला चेहरा बना रही है? कभी-कभी वह अपनी नाखुशी से मुझे थका देती है। वह किस बात से नाखुश है?

मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसे दु:ख का अधिकार है, लेकिन मैंने यह सब पीछे छोड़ दिया है। और उसे भी ऐसा ही करना चाहिए। इसके अलावा, अब हमारे पास बाकी सब चीजों के अलावा नियर-द-नीला भी है।

मुझे पता था कि अंकल को अपने साथ रेलवे स्टेशन ले जाना एक बुरा विचार था। मैंने राधा को यह बताया था। लेकिन वह अड़ी हुई थी। 'क्रिस्टोफर अंकल से मिलने यहाँ आ रहा है। और अंकल हमारे साथ जाने के लिए बहुत उत्सुक हैं।' 'मुझे पता है,' मैंने उसे मनाने की कोशिश की। 'लेकिन हम नहीं चाहते कि वह सिर्फ़ अंकल पर ध्यान केंद्रित करे।' 'श्याम,' उसने

उस लहज़े में कहा, जिससे मुझे उसे थप्पड़ मारने का मन हुआ। जैसे कि मैं कोई छोटा बच्चा हूँ जिसे समझाना है। 'जहाँ तक क्रिस्टोफर स्टीवर्ट का सवाल

है, नियर-द-नीला सिर्फ़ एक और सहारा है। अगर हम उसे यह बात बताएँगे, तो वह या तो इसे नकार देगा या पूरी तरह से अनदेखा कर देगा। वह हमारे साथ ही रहेगा, है न? उसे लुभाने और उसे प्रभावित करने के लिए हमारे पास पूरा समय है। लेकिन अभी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अंकल उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता हैं।' मैंने कुछ नहीं कहा। मैं समझ सकता था कि वह क्या कहना चाह रही थी, लेकिन मैं इसे स्वीकार नहीं करना चाहता था। मैं जानता था कि चाचा हमारे लिए अच्छी बातें कहेंगे। नीर-द-नीला के लिए बहुत-सी अच्छी बातें कहेंगे।

वह मुझसे बहुत प्यार करते हैं। वह राधा के चाचा हैं, लेकिन उन्हें मुझसे बहुत लगाव है। मैं यह जानता हूँ। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम दोनों, वह और मैं, केवल खून के रिश्ते पर ही एक अनिश्चित पकड़ रखते हैं। आखिरकार हम बाहरी लोग हैं। हालाँकि, जब मैंने यह बात चाचा से कही, तो उन्होंने मुझे ऐसे घूर कर देखा जैसे मैं उनकी पाल कांजी में एक मक्खी हूँ और झल्लाकर बोले, 'मैं वास्तव में नहीं समझ पा रहा हूँ कि तुम क्या कह रहे हो। वे मेरे परिवार के लोग हैं। कभी-कभी, श्याम, तुम बहुत बकवास करते हो!' मैंने कुछ नहीं कहा। मुझे चाचा के मुझ पर झल्लाने से कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं सच्चाई जानता हूँ, जैसा कि वह जानते हैं। चाचा चाहे जितना भी रिश्तेदारी का दावा करें, वह राधा के पिता के सौतेले भाई ही हैं। और कुछ भी इसे बदलने वाला नहीं है। वह भी उतने ही बाहरी व्यक्ति हैं जितना मैं

हूँ।

इसलिए यह स्वाभाविक है कि हम एक-दूसरे का ध्यान रखें।

यही कारण है कि जब क्रिस्टोफर ने अंकल को पत्र लिखकर पूछा कि क्या वे उनके लिए तीन महीने के लिए किराये पर मकान ढूंढ सकते हैं, तो मैंने उन्हें ईमेल भेजकर रिसॉर्ट में कॉटेज नंबर 12 की पेशकश की, वह भी बहुत उचित दर पर।

Machine Translated by Google

राधा ने मुस्कुराते हुए मेरी बांह थपथपाई और कहा, 'यह तुम्हारी बहुत उदारता है, श्याम।
चाचा खुश हैं कि तुम यह सब कर रहे हो, वह भी एक अजनबी के लिए!'

उसकी आँखों की चमक देखकर मुझे गाने का मन हुआ। आम तौर पर राधा की आँखें शाम के समय बल्ब की तरह होती हैं। बस मुश्किल से जीवित। तो मैं उसे कैसे बता सकता था कि जब अंकल ने मुझे पत्र दिखाया था, तो मैंने क्रिस्टोफर स्टीवर्ट का नाम एक कागज़ पर कॉपी किया था और नेट पर उनके बारे में एक यादृच्छिक खोज की थी? या कि मैंने पाया था कि वह एक यात्रा पत्रिका के लिए एक कॉलम लिखते थे और पश्चिमी दुनिया भर के कई प्रकाशनों में नियमित रूप से यात्रा संबंधी लेख लिखते थे?

मुझे पता था कि यह शायद टूर ऑपरेटरों को भारी कमीशन दिए बिना अंतरराष्ट्रीय टूर सर्किट में शामिल होने का एक तरीका था। क्रिस्टोफर ने तुरंत मुझे मेल करके बताया कि वह बहुत खुश है और उसने हमारी वेबसाइट देखी है और हालाँकि वह शायद ही कभी इस तरह के लेख लिखता हो, उसने सोचा कि उसने नियर-द-नीला के बारे में जो पढ़ा है, उसके आधार पर वह रिसॉर्ट के बारे में एक छोटा सा लेख लिख सकता है।

मैं विदेशी की चाचा में दिलचस्पी देखकर हैरान था। ऐसा नहीं है कि वे विश्व प्रसिद्ध कलाकार हैं। चाचा इतने प्रसिद्ध नहीं हैं, यहाँ तक कि भारत में भी नहीं। हालाँकि, राधा के साथ इस पर चर्चा करने का कोई मतलब नहीं है। अगर मैं चाचा की सफलता की कमी के बारे में कोई मामूली टिप्पणी भी करता हूँ, तो वह चाचा का बचाव करने के लिए आगे आती है। 'हर कोई तुम्हारे जैसा नहीं होता, श्याम। पैसा ही सब कुछ नहीं है,' उसने एक बार कहा। 'लोग चुनाव करते हैं, आप जानते हैं। यह चाचा की बात है। वे अपनी कला से खुश हैं और यही उनके लिए पर्याप्त है। एक सफल कलाकार हमेशा एक अच्छा कलाकार या खुश कलाकार नहीं होता।'

मैंने तब कुछ नहीं कहा। कभी-कभी वह बिलकुल बकवास बोलती है और कोई बात नहीं होती।
उसे चीजों को किसी अन्य तरीके से देखने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करें।

मैंने फिर से राधा के चेहरे की ओर देखा। 'मुझे खुशी है कि अंकल की असली कीमत आखिरकार पहचानी जा रही है और मुझे खुशी है कि मैं इसका हिस्सा बन सकता हूँ... किसी तरह से उनकी पहचान में मदद कर सकता हूँ,' मैंने बेरुखी से कहा, यह सोचकर कि कहीं मैं ज़्यादा तो नहीं बोल रहा हूँ।
लेकिन सच तो यह है कि जब मैंने ये शब्द कहे, तो मुझे पता चला कि मैं वाकई ऐसा ही महसूस कर रहा हूँ। मैं अंकल को बहुत पसंद करता हूँ, उनसे बहुत प्यार करता हूँ, हालाँकि मुझे नहीं लगता कि मैं उन्हें कभी समझ पाऊँगा। या फिर यह कि वे जो करते हैं, वह क्यों करते हैं।

जैसे ऑटोरिक्शा में चले जाना और क्रिस्टोफर स्टीवर्ट को अपने साथ ले जाना, इससे पहले कि मैं उसे बता पाऊं कि रिसॉर्ट में क्या होने वाला है। ऐसा नहीं है कि मैं विशेष रूप से विदेशी के साथ रहना चाहता था। अब जब मैं उससे मिल चुका हूं, तो मुझे नहीं लगता कि मैं उसे इतना पसंद करता हूं। एक तो वह बहुत छोटा है। मुझे उम्मीद थी कि वह एक बूढ़ा आदमी होगा और वह बत्तीस या तैंतीस साल से ज़्यादा का नहीं हो सकता। शायद यह इसलिए भी है क्योंकि अंकल उससे नज़रें नहीं हटा पा रहे थे। जहाँ तक राधा की बात है, तो ऐसा नहीं था कि उसकी आँखें इमरजेंसी लैंप की तरह चमकीली थीं, लेकिन वे झिलमिलाती हुई लग रही थीं।

Machine Translated by Google

मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसमें आकर्षण क्या है। वह दिखने में तो अच्छा है ही, लेकिन मेरा ड्राइवर शशि भी तो अच्छा है। जहाँ तक उस म्यूजिक केस की बात है...वह यहाँ सिर्फ़ कुछ महीनों के लिए है। उसे इसे साथ क्यों लाना पड़ा? वह इसे अपने साथ विमान में कैसे ले आया? मुझे उससे पूछना याद रखना चाहिए।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि प्लेटफ़ॉर्म पर खड़े क्रिस की पहली झलक ने मेरा गला दबा दिया था। यह एक तस्वीर की तरह था। एक पुरानी तस्वीर जिसके किनारे मुड़े हुए थे, एक बिल्कुल अजनबी की। आप इसे देखते हैं और बिना जाने क्यों, आपको इसमें मौजूद व्यक्ति के साथ एक अजीब सा जुड़ाव महसूस होता है, इतना कि आपको लगता है कि जब तक आप इसे फ्रेम करके अपनी दीवार पर नहीं टांग लेते, तब तक आपको चैन नहीं मिलेगा। उस पहले पल में मुझे ऐसा ही महसूस हुआ था। अगले ही पल, मैंने देखा कि दो दिन और बिना दाढ़ी के ठोड़ी पर वह एक बैकपैकिंग बजट पर्यटक की तरह लग रहा था। मैं निश्चित रूप से ऐसे लोगों को अपने रिसॉर्ट में नहीं रखना चाहता, कहीं ऐसा न हो कि वे बड़े खर्च करने वालों को भगा दें।

मुझे उसे यह बताने का कोई तरीका ढूँढना होगा कि मैं उसे यह नहीं बता सकता... शब्द क्या है, ग्रंज लुक। शायद मैं इसे मज़ाक के तौर पर कहूँ। मुझे उसे अपना नाम सही तरीके से बोलने का तरीका भी सिखाना होगा। क्या श्याम बोलना इतना मुश्किल है?

अगर वह हमारे साथ होता तो मैं यह सब कर सकता था। लेकिन इसके बजाय वह अंकल के साथ भाग गया।
और अपना बैग लाने के लिए हमें छोड़ दिया। कमीने!
हर बार जब मैं नियर-द-नीला को देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरे अंदर उत्साह की एक बड़ी लहर दौड़ गई है। मैं खुद से कहता हूँ, यह मेरा है, यह सब मेरा है, अवधारणा से लेकर आखिरी टाइल तक।
अगर मैं न होता तो शोरनूर एक मरता हुआ रेलवे शहर बनकर रह जाता। अब इसमें जीवन की एक बूँद है, जो मैंने इसमें फूंकी है। मैं, श्याम, बेचारा भतीजा और बाहरी व्यक्ति। यह सब मैंने ही किया है, राधा के परिवार के लोगों ने नहीं।

फाटक के बाहर हम रुकते हैं और मैं फाटक के खंभों पर बैठे दो शेरों को देखता हूं,
काले धातु के गेट के दोनों ओर सुनहरे रंग के स्पाइक्स लगे हुए हैं।
मैंने शेरों को कांटों से मेल खाते हुए सोने से रंगवाया। वे सूरज की रोशनी में चमकते हैं,
मेरे जुड़वां शेर, और मैं फिर से गर्व की भावना महसूस करता हूं।
राधा को मेरे शेरों से नफ़रत है। 'मैंने तुमसे कहा था कि सोना गलत रंग है। वे बहुत भड़कीले दिखते हैं। काश तुमने उन्हें वैसे ही रहने दिया होता। सफ़ेद। या, अगर तुम्हें रंग ही चाहिए था, तो टेराकोटा क्यों नहीं?' 'मुझे टेराकोटा से नफ़रत है,' मैंने कहा।

'ऐसी स्थिति में, आप छत की टाइलों को भी सुनहरे रंग से क्यों नहीं रंग देते?' वह उसी दूसरे स्वर में कहती है जो वह मेरे लिए बचा कर रखती है, जो तिरस्कार और अवमानना से भरा हुआ है।

मैं उसे अनदेखा करता हूँ। मैं नहीं चाहता कि हम झगड़ें। इसलिए मैं वही करता हूँ जो मैं आमतौर पर तब करता हूँ जब मैं किसी झगड़े को टालना चाहता हूँ। 'शशि,' मैं पूछता हूँ, 'क्या तुम्हारी पत्नी वापस आ गई है?' शशि की पत्नी एक दर्जी की
दुकान में काम करती है और अपनी आय को बढ़ाने के लिए कुछ पैसे कमाती है।

Machine Translated by Google

रिसॉर्ट के लिए बेडकवर और तकिए के कवर सिलना। मैं स्थानीय उद्योग को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ।

राधा बुदबुदाती है, 'भाड़ में जाओ!' मैं

दिखावा करता हूँ कि मैंने उसकी आवाज़ नहीं सुनी। मुझे नहीं लगता कि ड्राइवर ने भी उसकी आवाज़ सुनी होगी।
मुझे लगता है कि वह इस शब्द को जानता है। मुझे लगता है कि उसकी अंग्रेजी में बकवास शब्द नहीं आता।

'भाड़ में जाओ,' वह फिर से कहती है। 'भाड़ में जाओ टाइलें। भाड़ में जाओ शेर। भाड़ में जाओ तुम।' 'शशि!' मैंने

उसकी आवाज़ दबाने के लिए अपनी आवाज़ ऊँची कर दी। 'मैं चाहता हूँ कि अम्मू तुरंत तकिए के कवर पर काम शुरू कर दें। हमें छह सेट तुरंत चाहिए।' इससे राधा शांत हो गई, जैसा कि मैं जानता था।

हम रिसॉर्ट में जाते हैं और जब कार पोर्टिको में रुकती है, तो मैं दरबान को समय बताता हूँ। उसे मेहमान का स्वागत करने और मेहमान से पहले कार का दरवाज़ा खोलने के लिए दो मिनट का समय दिया जाता है।

सेबेस्टियन, जो कि नया भर्ती है, को चार मिनट लगते हैं। वह दिखने में बहुत ही प्रभावशाली है, छह फीट लंबा, चौड़े कंधों वाला और शानदार हैंडलबार मूंछों वाला।
हालाँकि मैंने उसे उसके रूप-रंग के कारण काम पर रखा था, लेकिन मुझे कुछ दक्षता की उम्मीद है। उसे यह बताया गया है। मुझे लगता है कि आज शाम को मुझे एक मीटिंग बुलानी होगी। राधा यहाँ बहुत कुछ कर सकती थी, लेकिन वह यहाँ-वहाँ उड़ती रहती है। इससे मुझे याद आता है - मुझे आश्चर्य है कि क्या माली के सहायक को कॉटेज नंबर 12 के आसपास फ्लिट स्प्रे करना याद है।

मच्छरों को क्रिस्टोफर स्टीवर्ट का खून और पौरुष शक्ति चूसने नहीं दिया जा सकता।
मैं चाहता हूं कि वह जीवित और स्वस्थ हो तथा नीर-द-नीला के बारे में स्तुति-गीत लिखने के लिए तैयार हो।

'यह क्या है?' राधा पूछती है।

मुझे उसकी आवाज़ में आश्चर्य की झलक मिलती है। मैं मुड़ता हूँ और उसके पास जाता हूँ। ड्राइववे के किनारे कई पेड़ हैं और पेड़ों के बीच पद्मनाभन खड़ा है, ताड़ के पत्ते से पत्ते तोड़कर अपने मुँह में डाल रहा है।

'ओह, क्या पद्मनाभन पहले से ही यहां हैं?' मैंने पूछा।

'यह हाथी यहाँ क्या कर रहा है?' राधा ने पूछा।

'कोई खास बात नहीं।' मैं अपनी आवाज में हल्की हवा भरने की कोशिश करता हूं।

'तो फिर यह यहाँ क्यों है?' मैंने कंधे

उचकाए। 'यह केरल है। जब तक हमारे पास हाथी नहीं है, यह केरल कैसे हो सकता है?' 'लेकिन हमारे पास हाथी नहीं है, श्याम।' वह मेरी

ओर देखती है। 'क्या तुमने इस जीव को खरीदा है?' 'मूर्ख मत बनो। मैं हाथी का मालिक बनना तो चाहता हूँ, लेकिन मैं इसे खरीद नहीं सकता। मैंने हाथी के मालिक के

साथ यह सौदा तय कर लिया है। हमारे पास ताड़ के पेड़ हैं, जिनसे हाथी खाना पसंद करते हैं और पेड़ों से कुछ पत्ते खरीदने पर मुझे कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। मैं महावत को भी थोड़ी मजदूरी देता हूँ। तो आप देखिए, हर कोई खुश है। हाथी, हाथी का मालिक और महावत। बदले में, हाथी को भी कुछ देना पड़ता है।

Machine Translated by Google

दिन में दो बार रिसॉर्ट में लाया जाता है, सिवाय तब जब उसे मंदिर में पूरम में भाग लेना होता है या किसी सांसद को माला पहनानी होती है। क्या आपको नहीं लगता कि यह एक अच्छा विचार है? मेरे मेहमान हाथी को बहुत करीब से देख पाएंगे, शायद उसे केले भी खिला सकें। यह सब माहौल को और भी बेहतर बनाता है।' 'लेकिन यह एक बहुत ही घिसा-पिटा मुहावरा है। केरल और हाथी...यह हमें देखने पर मजबूर करता है

मूर्ख.' उसके शब्दों में छिपा तिरस्कार मेरी मुस्कान को खा जाता है.

'क्लिच क्लिच ही होते हैं क्योंकि वे सच होते हैं। इसके अलावा, मैं यह कहने में गलत नहीं हूँ कि मेरे मेहमान इसकी उम्मीद करते हैं। देखिए, आप राजस्थान जाते हैं और आपको ऊँट देखने की उम्मीद होती है।
आप केरल आते हैं और हाथियों को देखने की उम्मीद करते हैं। पर्यटकों को ये चीजें पसंद आती हैं।
इससे उनके लिए यात्रा रोमांचक हो जाती है। वे ऐसी चीजें देखते हैं जो वे घर पर नहीं देखते, वे ऐसी चीजें करते हैं जो वे घर पर नहीं करते।' 'अगर आप मुझसे पूछें, तो मुझे लगता है कि यह खराब स्वाद

है!' मैं हार मान लेता हूँ। राधा, मैंने सीखा है, अक्सर असहमति के लिए

असहमति जताती है। इसलिए मैं मुस्कुराता हूँ और कहता हूँ, 'कोई बात नहीं।' और फिर, मेरे अंदर कुछ विकृत मुझे यह कहने पर मजबूर करता है, 'क्या आप सच में कह सकते हैं कि आप लगभग हर दिन सड़क पर एक हाथी को नहीं देखते?' राधा आह भरती है। 'यह वही हाथी हो सकता है। भगवान के लिए!' 'आपको कैसे पता?' मैं चालाकी से पूछता हूँ।

'बड़ा हो जाओ, श्याम!' वह पैरों तले रौंदते हुए कहती है।

मैं पद्मनाभन को निहारता हुआ वहीं खड़ा रहा। उसके दाँत रोशनी में चमक रहे थे।
मैं उसकी ओर बढ़ता हूँ। महावत मुस्कुराता है। वह पूछता है, 'क्या तुम परिचय नहीं करवाना चाहते?'

मैं मंजूरी।

हाथी चलता है। उसके पैरों में बंधी जंजीरें खनकती हैं।

मैं पूछता हूं, 'क्या उसके पास जाना सुरक्षित है?' वह बहुत बड़ा लगता है।

महावत मुस्कुराया, 'वह एक बच्चे की तरह कोमल है।'

मैं बच्चे की सूंड को सहलाती हूँ और महसूस करती हूँ कि मेरे अंदर कुछ गर्माहट सी उठ रही है। एक दिन
तुम मेरी हो जाओगी, ऐसा मुझे लगता है।

मैं रिसेप्शन की ओर जाता हूं और पूछता हूं, 'क्या वे यहां हैं?'

रिसेप्शन क्लर्क उन्नी मुस्कुराता है। उन्नी एक राजकुमार है; इस क्षेत्र में रहने वाले शाही परिवार की एक शाखा का वंशज। उसके पास विश्वविद्यालय की डिग्री है और कुछ नहीं। जब मैंने रिसॉर्ट शुरू करने का फैसला किया, तो मैंने उसे नौकरी की पेशकश की। वह होशियार और कुशल है, और अपने मेहमानों के साथ बातचीत के दौरान, मैंने उसे यह बता दिया कि वह एक राजकुमार है। उन्हें भी यह विचार पसंद है। एक राजकुमार द्वारा उनके लिए टैक्सी बुलाना और खरीदारी अभियान की व्यवस्था करना और उन्हें पोस्टकार्ड बेचना। उनमें से कुछ दूसरे चरम पर चले जाते हैं और उनसे अपने पैसे मांगने के लिए लगभग माफ़ी मांग लेते हैं।

Machine Translated by Google

कमरे की चाबी। उन्नी को किसी भी तरह से कोई आपत्ति नहीं है। मेरे लिए कुछ दिनों तक काम करने के बाद, उन्होंने कहा, 'मैं बस यही चाहता हूँ कि मैं एक पूर्ण राजा बनूँ। उन्हें यह कहने में अधिक खुशी होगी कि "महाराजा, दो पोस्टकार्ड कृपया।"

उन्नी ने रजिस्टर बंद कर दिया जिसमें वह लिख रहा था और बोला, 'चाचा और साहिव आ गए हैं। वे रेस्टोरेंट में हैं। साहिव ने कहा है कि वह अपना वाद्य यंत्र कार में छोड़ दे और वह अकेले ही उसे बाहर ले जाएगा और कोई और नहीं ले जाएगा।'

मैं पीछे मुड़ता हूँ। सेबेस्टियन ने मेरी कार का दरवाज़ा खोलने में हुई देरी की भरपाई करने और मुझे खुश करने की उम्मीद में कार से इंस्ट्रूमेंट केस पहले ही निकाल लिया है। धिक्कार है! 'इसे वापस रख दो,' मैं जल्दी से कहता हूँ। 'साहिब इसे खुद ही निकाल लेंगे।

आप सामान कॉटेज नंबर 12 में ले जा सकते हैं। और अगर माली दिख जाए तो उसे कॉटेज के चारों ओर फ्लिट स्प्रे करने के लिए कहें। अंदर नहीं। सिर्फ़ बाहर। साहिव को इसकी गंध आ गई तो वह एक मील भाग जाएगा!' मैं अपनी आवाज़ में तीखापन लाने के लिए मुस्कुराता हूँ।

सेबेस्टियन ने पूछा, 'साहिब कहां से है?'

मैं कहता हूं, 'अमेरिका।' मुझे लगता है कि अमेरिका उसे अधिक प्रभावित करेगा।

साहिव और मादामा। चाहे मैं उन्हें कितनी भी बार विदेशियों को पर्यटक कहना सिखाऊं, वे उन्हें साहिव और मादामा ही कहते हैं। मैं रेस्टोरेंट में जाता हूं, जहां राधा क्रिस और अंकल के साथ बैठी है। मुझे देखते ही स्टीवर्ड मेरी तरफ दौड़ता है। 'साहिव ने उबला हुआ अंडा और टोस्ट और कॉफी मांगी है,' वह मलयालम में बड़बड़ाता है।

क्रिस ने मुझे एक मनोरंजक नज़र से देखा. 'साहिव क्या है? मैंने इसे रेलवे पर सुना था
मंच पर भी।'

राधा मुस्कुराती है, 'यह साहिब शब्द का अपभ्रंश है, जिसका हिंदी अर्थ स्वामी होता है।
साहिव और मदामा, उन दिनों से जब गोरे लोग राज करते थे, न कि आते थे।' मैं उसकी बात सुनता हूँ। अगर वह चाहे तो आकर्षक हो सकती

है। आज वह कितनी सुंदर लग रही है। उसके कमर तक लंबे बाल सीधे और रेशमी हैं, जैसे बारिश का पानी उसकी पीठ पर बह रहा हो। उसने हल्के गुलाबी रंग की सूती साड़ी पहनी हुई है, जो उसके गालों पर गुलाबी रंग की लाली बिखेर रही है। उसकी आँखें खुशी से चमक रही हैं और उसके होंठ मुस्कान में फैले हुए हैं। अगर वह अक्सर इतनी आकर्षक होती, तो मैं रिसॉर्ट चलाने के प्रशासनिक विवरणों पर ध्यान केंद्रित कर सकता था।

क्रिस मुस्कुराता है और कहता है, 'ठीक है!' 'हमने
यंत्र कार में ही छोड़ दिया है,' मैं थोड़ा अलग-थलग महसूस करते हुए कहता हूं।

'क्या तुम्हें हम पर भरोसा नहीं है?' चाचा चिढ़ाते हुए कहते हैं।

मैं उनकी तरफ देखता हूँ। मैंने अंकल को कभी अंग्रेजी बोलते नहीं सुना। मुझे नहीं पता था कि वे इतनी अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं। फिर वे अपने छात्रों को मलयालम बोलने और उनकी जीभ को लकड़ी के टुकड़ों की तरह लपेटने पर क्यों जोर देते हैं?

'झा,' वह उन्हें तोता बना देता है। 'झा जैसे माझा, पज़हम, वाझी...'

Machine Translated by Google

माझा-वर्षा; पजहम-फल; वझि-मार्ग: वह अपने हाथों से शब्दों का संकेत करता था, मुद्राओं से वे उसे समझ सकते थे, जबकि उनकी जीभें फड़फड़ाती, लटकती और झा की ध्वनि के बीच से सरकने की कोशिश करती थीं।

'नहीं, ऐसा नहीं है,' क्रिस समझाने की कोशिश करता है। 'बस बात यह है कि सेलो बहुत कीमती है। मैंने हमेशा से सपना देखा था कि मैं इस तरह का सेलो खरीद पाऊँगा और अब जब यह मेरे पास है, तो मैं अपने सपने को लेकर बहुत सतर्क हूँ।'
'धीरे से चलो क्योंकि तुम मेरे सपनों पर चल रहे हो।' राधा की आवाज़ धीमी है।

मैं सोच रहा हूँ कि उसका क्या मतलब है? चाचा की आँखों में एक अजीब सा भाव है।
केवल क्रिस ही खुश नजर आ रहा है। 'हाँ, है न?'
मैं अपनी आह को दबाता हूँ। उसकी एक शायरी। मुझे लगा कि वह इन सब से आगे निकल चुकी है।
'क्या आप बस इतना ही खा रहे हैं?' मैंने पूछा, तभी स्टीवर्ड ट्रे लेकर अंदर आया। 'आप केरल के कुछ व्यंजन क्यों नहीं आजमाते?' क्रिस ने अपने अंडे के ऊपरी हिस्से को चतुराई से
काटा और कहा, 'ओह, मैं जरूर खाऊंगा। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।
बहुत। अब मुझे बहुत भूख नहीं लग रही है।'
रेस्तराँ आधा भरा हुआ है। अभी सुबह के आठ ही बजे हैं। थोड़ी देर में ज़्यादातर मेहमान नाश्ते के लिए आ जाएँगे।

हमारे कमरे भरे नहीं हैं। वास्तव में, बारह कमरों में से केवल छह और आठ कॉटेज में से तीन ही भरे हुए हैं। बाद में, जर्मनों के एक समूह के आने की उम्मीद है।
कल जब क्रिस्टोफर जागेगा तो रिसॉर्ट में चहल-पहल होगी और जर्मनों की जय-जयकार होगी। इससे उसे पता चलेगा कि हम कितने लोकप्रिय हैं।
मैं उठकर रसोई में चली जाती हूँ। 'तुम भूल गए...' मैं रसोइए बेबी जॉर्ज से कहती हूँ।
वह मेरी ओर शून्य भाव से देखता है।

एक शाम, मैं और वर्गीस, जो कोलापुल्ली के लघु उद्योग परिसर में मशीन-टूल्स इकाई के मालिक हैं, अलप्पुझा से वापस आ रहे थे।
वर्गीस की बहन और उनके पति के पास बैकवाटर में एक छोटा सा द्वीप है। उन्होंने अपने पारिवारिक घर को रिसॉर्ट में बदल दिया है और अब यह साल भर के लिए बुक रहता है।
वर्गीस ने मुझे वहाँ ले जाने की पेशकश की ताकि मैं देख सकूँ कि वहाँ सब कुछ कैसे व्यवस्थित था। वहाँ हमारे दूसरे दिन, वह मुझे ताड़ी की एक दुकान पर ले गया। ज़्यादातर ताड़ी की दुकानों के विपरीत, जहाँ सिर्फ़ नंबर होता है, इस दुकान का एक नाम था: चक्करा पंडाल।
मुझे ताड़ी पसंद नहीं है। कभी नहीं, सिवाय तब जब इसे ताज़ा निकाला गया हो। तब इसका स्वाद नारियल के पानी जैसा होता है और बदबूदार, खट्टे ताड़ी से इसका कोई मेल नहीं होता। लेकिन वर्गीस ने कहा कि चक्करा पंडाल का खाना देखने लायक था।
'यह किस तरह का भोजन है?' मैंने पूछा, यह सोचकर कि चक्करा पंडाल नामक जगह पर शायद केवल मीठी चीजें ही परोसी जाती होंगी।
'हमेशा की तरह - मट्ठी-पूला, मीन पप्पा, एराची ओलारथियाथे - ताड़ी की दुकान का खाना,' वर्गीस ने कहा जब हम नहर पर नाव चला रहे थे - या नीचे; मुझे नहीं पता।

Machine Translated by Google

मैं तो बस यही सोच रहा था कि, काश ये मछलियां इस गंदे पानी से नहीं आतीं।

'मालिक को पुराने गाने पसंद हैं। उन्होंने इसका नाम एक गाने के नाम पर रखा- चक्करा पंडालिल, फिर माझा पोझियुम ...' वर्गीस ने गाना गुनगुनाया।

जब हम वहां पहुंचे तो चक्करा पंडाल नाम से ही पता चल रहा था कि यह चीनी के बागान जैसा नहीं है। यह अंधेरा और सीलन भरा था और इसमें बासी पसीने और किण्वित नारियल के रस की गंध आ रही थी। लेकिन वहां बेबी जॉर्ज था, जो बेहतरीन खाना परोस रहा था। मुझे बस एक कौर बीफ ओलारथियाथे खाने की जरूरत थी, तभी पता चला कि यह नियर-द-नीला के लिए सही आदमी है।

'आप यहां अपनी प्रतिभा बर्बाद कर रहे हैं; मेरे रेस्तरां में आओ और तुम
'मैंने कहा, 'मैंने उसे तीन गुना वेतन और सभी सुविधाएं देने की पेशकश की।'

बेबी जॉर्ज ने तुरंत हामी भर दी। मुझे लगा कि अब सब कुछ तय हो गया है। बस एक बात का मुझे ध्यान रखना था कि बेबी जॉर्ज शेफ मैथ्यू के साथ ज़्यादा दोस्ताना व्यवहार न करें।

शेफ मैथ्यू कैटरिंग कॉलेज में पढ़ चुके थे; उन्हें सूफले और पुडिंग, सूप और स्टेक बनाना आता था - वह सब कुछ जो एक मेहमान चाहता है, लेकिन शायद ही कभी मांगता है। ज़्यादातर वे बेबी जॉर्ज की बनाई चीज़ों पर ही खाना पसंद करते थे। और फिर भी, मैंने शेफ मैथ्यू को बेबी जॉर्ज से बारह गुना ज़्यादा पैसे दिए। अगर बेबी जॉर्ज को कभी पता चल गया ... तो मैं उनके जाने के ख़याल से काँप उठता हूँ।

पहले तो मैं इस रेस्टोरेंट का नाम बेबी जॉर्ज किचन रखना चाहता था। फिर मुझे लगा कि शेफ मैथ्यू नाराज़ हो सकते हैं। इसके अलावा, कुछ दिनों बाद बेबी जॉर्ज रेस्टोरेंट के मालिकाना हक का दावा कर सकते हैं। आखिरकार यह केरल है, जहाँ अवैध रूप से रहने वालों के भी अधिकार हैं। इसलिए मैंने ताड़ी की दुकान से प्रेरणा लेने का फैसला किया, जहाँ मैंने बेबी जॉर्ज को पाया था और अपने रेस्टोरेंट का नाम मुल्ला पंडाल रख दिया।

मैंने चमेली को जाली के सहारे रेंगने और हवा को खुशबूदार बनाने के लिए प्रशिक्षित किया। हर टेबल पर हमने एक छोटा सा कार्ड रखा जिस पर मुल्ला पंडाल की किंवदंती - चमेली के बौर की व्याख्या की गई थी।

'बेबी जॉर्ज, तुम नारियल तेल भूल गए,' मैंने फिर कहा।

बेबी जॉर्ज मुस्कुराता है। 'सर, आपने मुझे डरा दिया,' वह कहता है और इस उद्देश्य के लिए आरक्षित नारियल तेल का एक विशेष डिब्बा लेता है। 'मैं भूला नहीं था। मैंने सोचा कि मैं मेहमानों के आने का इंतज़ार करूँगा। तेल बर्बाद करने का कोई मतलब नहीं है।' वह एक सॉस पैन में नारियल का तेल डालता है। तेल गर्म होता है और धीरे-धीरे सुगंध फैलती है,

रसोई भर जाती है और रेस्तरां में फैल जाती है।

बस एक हल्की सी गंध। बहुत ज़्यादा, और यह उनके पेट में मरोड़ पैदा कर सकता है। लकड़ी की आग और कांसे के बर्तन, देहाती जीवन और खोज की छवियों को जगाने के लिए बस एक हल्की सी गंध। आम तौर पर मेहमान इसे अपनी नाक में जाने देते हैं और एक किफ़ायती नाश्ते के बजाय पूरे केरल के खाने की मांग करते हैं।

Machine Translated by Google

रिसॉर्ट का प्रबंधन करना आसान नहीं है। मुझे हर समय अपने मेहमानों के बारे में सोचना पड़ता है।

मैंने सुगंध को अपनी नाक में जाने दिया। मेरा पेट गुड़गुड़ाने लगा। 'बेबी जॉर्ज, मैं
मैं उससे कहता हूं, 'आज सुबह यहां खाना खाओ,' और मुझे इनाम में एक किरण मिलती है।
क्या राधा मेरे साथ आना चाहेगी? बहुत समय हो गया जब हमने रिसॉर्ट में साथ में खाना खाया था।

नदी के किनारे वाली मेज़, जो मेरी पसंदीदा मेज़ है, खाली है। बाकी लोग चले गए हैं, अपने खास ब्रेड क्रम्ब्स, अंडे के छिलके के टुकड़े और तीन इस्तेमाल किए गए कॉफ़ी कप छोड़कर। मुझे आश्चर्य है कि वे कहाँ हैं: अंकल, राधा और साहिव।

मेरे मन में क्रिस्टोफर को साहिव के रूप में सोचने लगा हूँ। उसने मेरे परिवार को कहाँ पहुँचा दिया है?

स्टीवर्ड मेरी तरफ़ आया। मैंने ऊपर देखा। यह प्रदीप है।
मैं एक छोटा सा, सुव्यवस्थित व्यवसाय चलाता हूँ। कुल पंद्रह कर्मचारी हैं, और उनमें से प्रत्येक को मैंने खुद चुना है। जो कोई भी आलस्य या अपने काम के दायरे से ज़्यादा काम करने की अनिच्छा दिखाता है, उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। मैं अन्यथा ऐसा नहीं कर सकता।

'उन्नी को देखो,' मैं उनसे कहता हूँ। 'वह एक राजकुमार है, लेकिन उसे रिसेप्शन क्लर्क, पोस्टकार्ड विक्रेता और ट्रैवल एजेंट बनने में कोई आपत्ति नहीं है। अगर दरबान किसी दूसरे मेहमान के बैग में व्यस्त है, तो वह सामान को कमरे या कार तक भी ले जाता है! मुझे पता है कि दूसरे रिसॉर्ट इस तरह नहीं चलते, लेकिन आपको समझना चाहिए कि इस शहर में कुछ भी नहीं है। और मेहमान उतने नहीं हैं, जितने हम चाहते हैं। मैं बहुत से लोगों को काम पर नहीं रख सकता और उन्हें इधर-उधर हाथ मलते हुए नहीं रख सकता। मुझे यह जगह बंद करनी पड़ेगी। इस तरह, आप एक नियमित वेतन के बारे में सुनिश्चित हो सकते हैं। बेशक, यह आप पर निर्भर है।' प्रदीप रसोई में मदद करता है और भोजन के समय एक वर्दी पहनता है और स्टीवर्ड में बदल जाता है। 'सर,' वह कहता है। 'मैडम ने कहा कि वे रिसेप्शन पर इंतजार करेंगे।' फिर वह चारों ओर देखता है और धीरे से कहता है, 'टेबल चार पर बैठा साहिव नारियल के तेल की गंध की शिकायत कर रहा था।' 'उसने क्या कहा?' 'उसने कहा कि यह उसके स्वाद के लिए बहुत
तेज़ था!' प्रदीप मेरे सबसे अच्छे कर्मचारियों में से एक है। बोलने में सक्षम होने के अलावा

अंग्रेजी, मेरे प्रति उसकी वफादारी पूरी है।
मैं हवा सूँघता हूँ। गंध थोड़ी ज़्यादा है। 'बेबी जॉर्ज से कहो कि कम इस्तेमाल करे
मैं कहता हूं, 'अगली बार तेल लूंगा।'
प्रदीप अपना सिर हिलाता है और चला जाता है। लड़का बिल्ली की तरह गेंदों पर चलता है

Machine Translated by Google

उसके पैरों का.

मैं मेज पर रखा कार्ड उठाता हूं।

एक बार की बात है, एक युवती को चाँद से प्यार हो गया।
हर रात वह आसमान के नीचे खड़ी होकर चाँद से विनती करती कि वह उसे अपना बना ले। चाँद उसकी खूबसूरती को अपनी रोशनी से नहलाता रहा, लेकिन दूर ही रहा। एक रात वह उसकी खूबसूरती को और नहीं रोक सका और उसके होठों को चूम लिया। उसे लगा कि वह फूल बन गई है और उसकी खुशी इतनी बढ़ गई कि वह चमेली बन गई। एक ऐसा फूल जो रात में तभी खिलता है जब चाँद उसे छूता है।

जैस्मिन बावर सांसारिक भूख का उत्सव है। जैस्मिन बावर को अपनी इंद्रियों पर हावी होने दें और हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि यह वाकई एक यादगार अनुभव होगा।

मैंने खुद ही यह पाठ लिखा था। राधा ने इसे पढ़ते हुए खिलखिलाकर हँस दिया था। उसने कहा, 'तुम यह बहुत अच्छा करते हो। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम कहानियाँ लिख सकते हो या तुम्हारी कल्पना इतनी, इतनी...'

'मैं एक व्यापारी हूँ, कहानीकार नहीं,' मैंने बीच में ही टोकते हुए कहा, हालाँकि मैं उसकी प्रशंसा से खुश था। 'यहाँ अंग्रेजी अनुवाद है। मैंने इसे खुद किया है। क्या आप इसे मेरे लिए पढ़ेंगे, कृपया? मैं आपके जैसे किसी शानदार स्कूल में नहीं गया; मेरा स्कूल बेसिक एसएसएलसी अंग्रेजी है! इसलिए इसमें गलतियाँ हो सकती हैं।' अंकल ने अपना चश्मा लगाया और मलयालम पाठ पढ़ा।

मैंने पूछा, 'क्या आपको लगता है कि मुझे इसमें कुछ जोड़ना चाहिए?'
चाचा ने ऊपर देखा। 'नहीं, यह बहुत बढ़िया है। मुझे नहीं लगता था कि तुममें यह कलात्मकता होगी!'

मैंने कुछ नहीं कहा। वे मेरे बारे में क्या जानते थे? मैं कविताएँ लिखता था। जब तक कि राधा के पिता को मेरी कविताओं की किताब नहीं मिल गई, तब तक मैं चौदह साल का था और उन्होंने कहा, 'यह सब बहुत अच्छा है, लेकिन कविता से तुम्हारा पेट नहीं भरेगा। इसके लिए तुम्हें पैसे चाहिए। यह बकवास छोड़ो और कुछ सार्थक करो, चेक्का।'

Machine Translated by Google

चेक्का। वह हमेशा मुझे इसी नाम से पुकारता था। मानो मुझे लड़का कहकर पुकारने से वह मेरे नाम की गरिमा भी छीन सकता था। चूँकि वह मेरे परिवार को खाना और कपड़े देता था, इसलिए मैंने विरोध नहीं किया, हालाँकि मुझे उस शब्द से नफरत थी।

'मैं लड़का नहीं हूँ; मैं लगभग एक आदमी हूँ,' मैंने अपनी माँ से गुस्से में कहा। उसने रिश्तेदारों के एक समूह की मौजूदगी में मुझे चेक्कन कहकर संबोधित किया था। उसने हमेशा की तरह मुझे चुप करा दिया। 'उसे अपनी बात सुनने मत देना, नहीं तो वह कृतघ्नों के बारे में अपनी बकवास शुरू कर देगा और कहेगा कि रिश्तेदारों की मदद करने की बजाय पत्थर को दूध में नहलाना बेहतर है...क्या तुम यह सब फिर से सुनना चाहते हो?'

फिर भी, जब उसे राधा द्वारा किए गए झमेले को सुलझाना था, तो वह मेरी माँ के दरवाज़े पर दस्तक देने आया था और फिर शब्द चेकन जादुई रूप से गायब हो गया था। पहली बार, उसने मुझे श्याम कहा। मैं श्याम था, वह आदमी जिससे वह आँखें नहीं मिला सकता था।

प्रदीप ने मेरे कान में कहा, 'आपका नाश्ता ठंडा हो रहा है।'

'तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो?' मैं अपने विचारों से बाहर निकलकर झल्लाया।

मैं उसकी आँखों में दर्द देख सकता हूँ। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं कभी अपना आपा नहीं खोता। गुस्से की भरपाई के लिए मैं मज़ाक करने की कोशिश करता हूँ। 'तुम अपने पिछले जन्म में बिल्ली रहे होंगे।' मैं रुकता हूँ और उसकी तरफ़ देखता हूँ। 'क्या बिल्ली किसी की नज़र में न होने पर कोई विदेशी दूध पी रही थी?' 'यह बिल्ली नहीं।' दबी हुई हँसी से उसका मुँह लड़खड़ाता है। 'यह बिल्ली गर्म पानी और एड्स से डरती है।' बकवास एक बेहतरीन संतुलन बनाने वाला है।

मैं अप्पम का एक छोटा टुकड़ा तोड़ता हूँ और उसे अंडे के मसाले में डुबोता हूँ। मेरे मुँह में, मुलायम फूला हुआ अप्पम ग्रेवी के मसाले के साथ मिल जाता है। यह स्वादिष्ट है। मैं धीरे-धीरे खाता हूँ, हर कौर का स्वाद लेता हूँ। मैं तय करता हूँ कि उन्हें इंतज़ार करने दो।

Machine Translated by Google

चाचा

मुझे यह समझ में नहीं आता। उस पहले पल में भी मुझे लगा कि मैं उसे जानता हूँ। ऐसा नहीं हो सकता।
ऐसा कैसे हो सकता है? वह कभी भारत नहीं आया। ऑटोरिक्शा में उसने मुझसे कहा, 'यह मेरी भारत की पहली यात्रा है।'

जब मैंने कुछ वर्ष पहले ह्यूस्टन में प्रस्तुति दी थी तो क्या वह दर्शकों में मौजूद थे?
उन्होंने कहा कि वे कुछ सालों से अमेरिका में रह रहे हैं। लेकिन मुझे सिर्फ़ एक पंक्ति में चेहरे याद हैं जो पूरी तरह से भारतीय हैं: मुंडू-वेष्टी पहने और आभूषणों से लदे हुए महिलाएँ और रेशमी जुब्बा और मुंडू पहने हुए पुरुष। मुझे कोई गोरा चेहरा याद नहीं है, नहीं, मेरी दृष्टि के परिधि में भी नहीं। तो मुझे ऐसा क्यों लगता है कि मैं उन्हें जानता हूँ?

जब मैंने उसका हाथ अपने हाथों में लिया, तो उसमें ऐसा क्या था जो मुझे अपनी ओर खींच रहा था, मेरे पेट के किसी कोने में? एक व्यापक कोमलता जिसने मुझे उसे गले लगाने के लिए मजबूर कर दिया। मेरे दिल में शब्द गूंजने लगे: अजित जयहरे माधव ...कृष्ण कई सालों के बाद अपने बचपन के साथी सुदामा से मिल रहे हैं। कृष्ण राजा हैं जो दरिद्र सुदामा के दुखों को पढ़ सकते हैं।

कृष्ण, जो भूल जाते हैं कि उनका जीवन प्रचुरता से धन्य है जबकि सुदामा का जीवन शून्यता से अभिशप्त है। इस पल में पवित्रता है। मैं बस यही सोच सकता हूँ कि वे यहाँ हैं। मैं कृष्ण हूँ। या वे हैं? धन्य कौन है? मुझे नहीं पता।

पिछले दो सालों से फिलिप ने अपने पत्रों में उसका जिक्र किया है। उसका नाम मुझे फिलिप के बच्चों थॉमस और लिंडा के नामों जितना ही जाना-पहचाना लगता है। क्या यह सिर्फ़ इतना ही है? ज्ञान से पैदा हुआ बंधन? कि क्रिस को शराब की बजाय बीयर ज़्यादा पसंद है; कि वह अपने खाने में हॉट सॉस डालता है; कि पिछले साल टेनिस खेलते हुए उसका लिगामेंट फट गया था; कि वह एक यात्रा पुस्तक पर काम कर रहा है जिसमें मुझे शामिल होना है। नहीं, ऐसा भी नहीं है। मैं इसे अपने दिमाग से निकालने की कोशिश करता हूँ। बुढ़ापे में मैंने पाया है कि कल्पना और वास्तविकता एक-दूसरे से मिलती-जुलती हैं।

लेकिन अब, जब वह धीरे से कार के पीछे से अपना सेलो निकालता है, तो ऐसा लगता है कि यह एक ऐसा इशारा है जिसे मुझे पहचानना चाहिए। कंधों का सीधा होना, उसकी पीठ का तनाव, उसके सिर का झुकाव। मुझे कल्याणसौगंधिकम का एक दृश्य याद आता है। मुझे आश्चर्य है कि क्या यह वही बेचैनी है जो भीम को महसूस हुई होगी, जब उसने पाया कि एक बूढ़ा बंदर दिव्य फूलों के बगीचे में उसका रास्ता रोक रहा है? जानबूझकर उसका रास्ता रोक रहा था, मानो अपनी प्यारी पत्नी की दिव्य फूलों की खुशबू से अपने बालों को सजाने की इच्छा को विफल कर रहा हो। क्या यही वह भावना है जो भीम की रीढ़ की हड्डी में रेंग रही थी? कि यह कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे मुझे पहचानना चाहिए। कि हम जितना जानते हैं उससे कहीं ज़्यादा हैं।

जब क्रिस्टोफर अपने कूल्हे को पीछे की ओर धकेलकर कार का दरवाज़ा बंद करता है, तो मैं

Machine Translated by Google

निश्चित: मैं उसे जानता हूँ।

राधा सीढ़ियों से उतरकर मेरे पास आती है। उसकी चाल संतुलित और सुस्त है। मेरी भतीजी के चेहरे पर असंतोष के निशान हैं। यह देखकर मुझे दुख होता है।

कुछ दिन पहले, जब मैं अपने बरामदे में बैठकर उनसे बातें कर रहा था, मैंने पूछा, 'राधा, क्या आप कथकली में कथ्यवेशम का महत्व जानती हैं?' वह मुस्कुराईं, मानो यह बताना चाहती हों कि मेरा सवाल मूर्खतापूर्ण है। 'बेशक, मैं जानती हूँ,' उन्होंने मुझे

जवाब दिया। 'भारतीय पौराणिक कथाओं के खलनायक; सभी अच्छी और नेक चीजों का विनाश करने वाले। है न?'

'मुझे नहीं लगता कि आप ऐसा सोचते हैं,' मैंने कहा। 'रावण, नरकासुर, हिरण्यकश्यप...आप जानते हैं कि इन राक्षस राजाओं को कथिवेशम क्यों कहा जाता है? वे महान रक्त के साथ पैदा हुए पुरुष हैं। वे नायक हो सकते थे। इसके बजाय, उन्होंने अपने भाग्य से असंतुष्टि को अपने दिमाग पर हावी होने दिया, और इसलिए वे अभिमानी, दुष्ट, राक्षस बन गए। जैसा कि आपने कहा, सभी अच्छी और महान चीजों का विनाश करने वाले।' 'आप मुझे यह क्यों बता रहे हैं?' राधा ने पूछा। उसकी आँखें मेरी आँखों में चमक उठीं। उसकी

उनकी आवाज़ धीमी और धीमी थी लेकिन मैं उनके अंदर का गुस्सा पढ़ सकता था।

मैंने आगे बढ़कर अपनी तर्जनी उंगली से उसके माथे को छुआ। फिर मैंने
उसके नथुनों के आस-पास की त्वचा को छुआ।

'यहाँ रेखाएँ असंतोष की बात करती हैं। वे ठीक वैसी ही सफ़ेद बल्ब हो सकती हैं जो एक कत्थिवेशम अपने माथे और नाक की नोक पर पहनता है,' मैंने रेखाओं को दूर करने की कोशिश करते हुए कहा।

राधा ने मेरी उंगली हटाई और उठ खड़ी हुई। 'कभी-कभी, अंकल,' उसने कहा, 'आप अपनी कल्पना को ऐसी चीजें देखने देते हैं जो वास्तव में मौजूद नहीं होती हैं। ये रेखाएं, जिन्हें आप असंतोष के निशान कहते हैं, इस बात का संकेत हैं कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। मुझे एंटी-एजिंग क्रीम खरीदनी चाहिए। मुझे यही चाहिए। असंतोष! मैं आखिर असंतुष्ट क्यों हो सकता हूँ?' मैं नहीं चाहता था कि हम झगड़ें, इसलिए मैंने इसे शांत रहने दिया। आप किसी को यह नहीं दिखा सकते कि वह क्या है।

सत्य तब तक नहीं जब तक वे ऐसा न चाहें।

राधा, मेरी प्यारी भतीजी, मेरी सरोगेट संतान, सच्चाई से नहीं डरती। वह हमेशा सच्चाई को आँखों में देखती रही है। हालाँकि, इस बार उसने ऐसा दिखावा किया कि सच्चाई है ही नहीं।

तब से, जब भी राधा मेरे साथ होती है, वह अपनी नाखुशी जाहिर नहीं होने देती।
उसकी क्रीमें अपना काम करती हैं; वे त्वचा की मरम्मत करती हैं, उसे स्वस्थ बनाती हैं और चमक लाती हैं, मानो किसी ने उसके चेहरे पर मुट्ठी भर अभरम छिड़क दिया हो।

लेकिन अभ्रक का चूर्ण मूर्खों के सोने जैसा है: एक झूठी चमक जो टिकती नहीं। और इसलिए, जब वह सोचती है कि मैं उसे नहीं देख रहा हूँ, तो निशान उभर आते हैं। मांसपेशियों में कसाव, त्वचा में कसाव, रंग में सफेदी, आँखों में स्थिरता।

उसके चेहरे पर फिर से असंतोष छा गया।

Machine Translated by Google

अब राधा की नज़र भी मेरी ओर है। मैं देखता हूँ कि मेरी तरह वह भी उससे नज़र नहीं हटा पा रही है।

वह आगे बढ़ती है। 'क्या तुम्हें कोई मदद चाहिए?' उसकी आवाज़
में एक लय है। असंतोष कहाँ चला गया? अब्राम की कोई ज़रूरत नहीं है। उसका चेहरा चमक रहा है। उसकी आँखें उसे तिरछी नज़र से देखती हैं।

क्रिस उसकी ओर मुड़ता है। उसकी मुस्कान उसे अपनी बाहों में समेट लेती है।
मैं नल और दमयंती के बारे में सोचता हूँ। कथकली के प्रेमी जो वास्तव में ऐसा किए बिना ही आलिंगन करते हैं। केवल एक अनुभवी वेषकरण, एक अभिनेता जो मात्र तकनीक से अधिक जानता हो, ही उस आलिंगन को कर सकता है। अपनी बाहों से जो स्त्री को स्पर्श नहीं करती हैं, और केवल अपनी आँखों से, वह उसे बताता है कि वह उसे चाहता है।
क्रिस, मैं समझता हूँ, राधा को चाहता है। और वह, उसे।
मैं फिर से सोच रहा हूँ कि वह कौन है? समुद्र पार से आया यह युवक,
सेलो बजाता है और मुस्कुराता है। और ज्ञान को वह अपने दिल में छुपाता है।

मेरे पास अब और सोचने का समय नहीं है। क्योंकि श्याम यहाँ है। दो-दो सीढ़ियाँ उतरते हुए, अपने पैरों के पंजों पर लड़खड़ाते हुए, अपनी बगल में कागज़ों का एक बंडल दबाए हुए, खुली हथेली पर मुट्ठी पटकते हुए, ऊर्जा और उद्यमशीलता की भावना का एक अंदाज़ा लगाते हुए। 'तो, क्या हम चलें?'

राधा सिहर जाती है। क्रिस अपनी आँखें नीची कर लेता है और गले लगना छोड़ देता है। और मैं देखता हूँ
इतने सालों बाद भी मुझे नहीं पता कि श्याम के बारे में मैं कैसा महसूस करती हूँ।
मैं उसका वर्णन कैसे करूँ?

मैंने उसका किरदार निभाया है। मैं विदर्भ राज्य के योग्य सेनापति कीचकन की भूमिका निभा चुका हूँ। कीचकन, जिसने अपनी ताकत और युद्ध की रणनीतियों से राज्य को अछूता रखा। लेकिन अपनी बहन की दासी सैरंधरी के लिए उसकी लालसा ने उसे अंधा कर दिया। वह यह नहीं देख पाया कि वह उससे घृणा करती है। उसे लगा कि यह उसका अभिमान है। उसे लगा कि वह उस अभिमान को तोड़ सकता है।

या फिर वह भीम है, मुझे आश्चर्य है। भीम, जल्दबाज़। भीम, जो बिना किसी आत्मनिरीक्षण के युद्ध और जीवन में कूद पड़ता है। भीम, जिसे यह एहसास नहीं है कि जब उसकी पत्नी ने उसे दिव्य फूलों की खोज के लिए भेजा था, तो वह सिर्फ़ उसके अनाड़ीपन, उसके असभ्यपन, उसकी चालाकी की कमी से दूर रहने के लिए समय निकाल रही थी। उसने ऐसा उसकी ताकत, उसके अहंकार को आकर्षित करके किया। उसने उसे दूर भेज दिया और उसे लगा कि यह प्यार है।

कभी-कभी मुझे लगता है कि श्याम भीम है। एक महान, विशाल, नेकदिल प्राणी जिसकी अच्छाई का राधा फायदा उठाती है। जिसकी दुष्टता से वह भागती है। और कभी-कभी मुझे लगता है कि शायद वह कीचकन है। वह बस उसे अपने वश में करना चाहता है। वह अपनी साज़िश को मोहग्रस्त प्रेम के मुखौटे के पीछे छिपाता है, और जब वह ऐसा करता है तो वह उसे अपने वश में कर लेता है।

Machine Translated by Google

उसे घुटनों पर बिठाने पर वह उसे लात मार देगा। तब मुझे लगता है कि राधा ने उसे अप्रतिसादी लालसा के बंधन में बांधकर रखना बुद्धिमानी भरा काम है।

'आप क्या सोच रहे हैं, अंकल?' श्याम की आवाज मंच पर आती है, जहां मैं उसे रखने की कोशिश कर रहा हूं।

'तुम', मैं अनुपस्थित भाव से कहता हूँ। 'तुम', मैं दोहराता हूँ, आत्मा और त्वचा को त्यागने में असमर्थ
उन पात्रों की, जिन्हें मेरा मन खोज रहा था।

'मैं?' शब्दांश भय से झटके खाता है, जिसे वह आश्चर्य में बदल देता है। 'क्या है?
'क्या तुम वहाँ मेरे बारे में सोचने के लिए आये हो?'

मैं उसकी आवाज़ में कंपन सुन रहा हूँ। उसे क्या लगता है कि मैं जानता हूँ?

अचानक मुझे पता चल गया कि वह कौन है। हर किसी की तरह, जो समानताएँ तलाश रहा है, मैंने भी उसे नायक और खलनायक के बीच खोजा। मुझे इसके बजाय, मंच के छायादार क्षेत्रों में, उन छोटे-छोटे किरदारों को देखना चाहिए था, जिनके कामों के कारण लोग जीते या मरते हैं। श्याम एक आशारी है।

सुपारी, पत्ता और तंबाकू की थैली, छेनी, हथौड़ा और पैमाना लेकर बढ़ई। हास्य कलाकार जो लोगों को हंसाता है। और फिर भी, उसके मज़ाकियापन के पीछे एक ऐसा ज्ञान छिपा है जो ठोस और चालाक दोनों है।

हर कोई आशारी का किरदार नहीं निभा सकता। मैं जानता हूँ; मैंने उसका किरदार निभाया है। इसके लिए ऐसी समझ की ज़रूरत होती है जो किसी नौसिखिए की समझ से परे हो। बढ़ई मूर्ख भी होता है और कुशल कारीगर भी। वह आसन्न मृत्यु की चेतावनी देता है, पांडवों के कानों में फुसफुसाता है कि उस रात मोम का महल चिता में बदल जाएगा। वह उनके भागने का रास्ता खोदता है और उसे छिपाता है। वह इशारों और अतिरंजित हरकतों के साथ उनके भागने की योजना बनाता है। वह सीढ़ियों को गड़बड़ कर देता है, फिसलता है, गिरता है, अपनी आँखें घुमाता है, इधर-उधर देखता है, और यह सब एकदम सही समय पर करता है। केवल एक ऐसा अभिनेता ही आशारी को संभाल सकता है जिसमें लय की बेजोड़ समझ और अभिव्यक्ति की बहुमुखी प्रतिभा हो। और श्याम वह आशारी है, जो मूर्ख का वेश धारण किए हुए है और एक भी कदम चूकता नहीं है।

'चाचा?' राधा चिंतित है।

'क्या वह ठीक है?' क्रिस ने पूछा।

'उनकी तबीयत ठीक नहीं है,' राधा मेरी इस आदत को समझाने की कोशिश करती है; वह इसे मेरी बेहोशी कहती है।

श्याम ने उँगली हिलाई। 'एक कुर्सी लाओ' मैं कुर्सी पर बैठ
गया। श्याम ने कागज़ों के बंडल को हाथ में लेकर मुझे पंखा झल दिया। हवा मेरे माथे को ठंडक पहुँचा रही थी। मुझे लगा कि मेरी मांसपेशियों में तनाव कम हो गया है। श्याम के चेहरे पर एक बच्चे की तरह ही पंखा झलने की मेहनत की वजह से खिंचाव आ गया है। मुझे अभी वह अच्छा लग रहा है। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। 'पानी...' कोई मेरे लिए पानी का गिलास लेकर आया। राधा ने उसे मेरे होंठों से लगा दिया। मैंने धीरे-धीरे पानी पिया।

Machine Translated by Google

राधा बुदबुदाती है, 'हमें उसे आराम करने देना चाहिए।' श्याम
मेरी ओर देखता है और कहता है, 'मुझे लगता है कि उसने आज सुबह बहुत काम कर लिया है।
मैंने तुमसे कहा था कि हमें उसे अपने साथ नहीं लाना चाहिए था।'
मुझे लगता है कि मेरी पसंद अंदर से बाहर हो गई है। मुझे इस तरह से नापसंद है कि वह मेरे बारे में बात करता है
मानो मैं वहाँ हूँ ही नहीं। मैं खड़ा हो जाता हूँ। अंधकार दलदल बनने की धमकी देता है, फिर शांत हो जाता है।
मैं कहता हूँ, 'मेरे बारे में ऐसे बात मत करो जैसे मैं मौजूद ही नहीं हूँ।' 'मैं अपना सुपारी का डिब्बा ले जाना भूल गया। अगर मैं कुछ चबा लूँगा
तो ठीक हो जाऊँगा।' 'बस गर्मी की वजह से मैं बीमार हो रहा हूँ,' मैं क्रिस को
समझाने की कोशिश करता हूँ, जो चिंतित दिखाई देता है।

मैं चाहता हूँ कि वे झल्लाहट बंद कर दें। मैं कोई बूढ़ा मूर्ख नहीं हूँ। अजीब बात है
बहुत हो गया, यह श्याम ही है जो मुझे बचाता है।
श्याम पूछता है, 'क्या तुमने मेरा हाथी देखा है?' मैं उस ओर देखता हूँ जहाँ वह इशारा कर रहा है।
वहां एक हाथी खड़ा है।
'किसका...' मैं पूछना शुरू करता हूं, लेकिन श्याम मुझे बीच में ही रोक देता है।
'क्या आप उसके करीब जाकर उसे देखना चाहेंगे?' उसने क्रिस से पूछा।
क्रिस मुस्कुराता है। वह कहता है, 'वह बहुत बड़ा है' और कुछ ऐसा है जो
उसकी आवाज़ में आश्चर्य था।
मैंने देखा कि श्याम राधा की ओर देख रहा है। उसकी आँखों में विजय है।
'वह वाकई बहुत बड़ा है। एक बहुत बड़ा बच्चा,' श्याम कहता है। 'बहुत अच्छा
'हाथी को पता है, वास्तव में!'
मैं सिर हिलाता हूँ। यह कौन सी नई योजना है? यह तो श्याम ही सोचेगा।
कुछ इस तरह।
'क्या हम आपके कॉटेज में चलें?' मैं कुर्सी से उठते हुए क्रिस से कहता हूं।
राधा और क्रिस एक दूसरे को देखते हैं। फिर वे मेरे दोनों ओर चले जाते हैं।
क्रिस श्याम की ओर मुड़ता है। 'क्या तुम किसी से मेरा सेलो उठाने के लिए कहोगे? कृपया ध्यान से।' इसलिए हम चलते हैं, राधा और क्रिस मेरे दोनों ओर
खड़े हैं। श्याम सेलो और उसके वाहक के साथ पीछे-पीछे चलता है।

मैं खुद से कहता हूँ कि मैंने श्याम की वह घिनौनी नज़र नहीं देखी जो क्रिस ने डाली थी। यह गर्मी है,
मैं सोचता हूँ। या शायद मेरी कल्पना।
जब हम झोपड़ी में पहुँचते हैं, तो श्याम जोर से दरवाजा खोलता है और कहता है, 'यह तुम्हारा घर है, घर से दूर।'

अंदर, कॉटेज में कई चीज़ों की हल्की-सी गंध आती है: फ़र्नीचर पॉलिश, रूम फ़्रेशनर, मच्छर भगाने वाली कॉइल और फ़्लिट। ये गंध एक-दूसरे से वर्चस्व के लिए लड़ती हैं, लेकिन नदी से आने वाली हवा अंदर आती है और सब कुछ दबा देती है। खिड़कियों पर लगे पर्दे जैसे ही श्याम एक-एक करके खोलते हैं, वे हिलने लगते हैं। 'कॉटेज में एयर कंडीशनर है, लेकिन मेरा सुझाव है कि आप इससे परेशान न हों।'

Machine Translated by Google

मैं राधा की नज़र पकड़ लेता हूँ। वह शर्मिंदा है। मैं जानता हूँ कि वह क्या सोच रही है। इतने कम पैसे में झोपड़ी देने के बाद श्याम किफ़ायती होने की कोशिश कर रहा है। फिर श्याम कहता है, 'अगर तुम्हें मच्छरों की चिंता है, तो मैं तुम्हारे बिस्तर के चारों ओर मच्छरदानी लगा सकता हूँ। लेकिन तुम्हें खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिए। रात की हवा ठंडी होती है और अपने साथ बगीचे और आस-पड़ोस के सभी फूलों की खुशबू लेकर आती है। तुम रात के पक्षियों की आवाज़ सुन सकते हो। और चाँदनी रात में, अगर तुम बिस्तर पर लेट जाओ, यहाँ,' वह बिस्तर के सिरहाने को थपथपाता है, 'और खिड़की से बाहर देखो, तो तुम चाँद को देख सकते हो और फिर अगर तुम बैठ जाओ, तो तुम नदी को उसकी रोशनी में झिलमिलाते हुए देख सकते हो। यह बहुत खूबसूरत है।' मुझे लगता है कि मेरी साँस गले में अटक रही है। कौन सोच सकता था कि असभ्य श्याम इतनी संवेदनशीलता में सक्षम होगा? मैं राधा की नज़र पकड़ने की कोशिश करता हूँ, लेकिन वह कहीं और देख रही होती है।

क्रिस मुस्कुराता है और कहता है, 'लेकिन यह तो कमाल है, शाम!' श्याम उसे बिना मुस्कुराए देखता
है। 'श्याम। यह श्याम है।' वह राधा से अपील करता है, 'क्या अंग्रेज़ी में श्याम जैसा कोई नाम नहीं है?' राधा कंधे
उचकाती है। श्याम अपनी बाहों को एक जीवंत लहर के साथ उपहास को टाल देता है।

'तो, क्या तुम्हें लगता है कि तुम यहाँ खुश रहोगे?' उसने क्रिस से पूछा।

क्रिस कंधे उचकाता है। एक लंबा, हाँ कंधे उचकाता हुआ। जब वह कहता है, 'बहुत बढ़िया! मुझे यह जगह बहुत पसंद है। ओह हाँ, मैं मच्छरदानी से संतुष्ट हो जाऊंगा, और अगर बहुत गर्मी हुई, तो मैं एयर कंडीशनिंग पर विचार करूंगा।' 'धन्यवाद।' 'मिस्टर कोमन।' वह मेरी ओर मुड़ता है।

मैं कहता हूँ, 'मुझे आशान कहो।' 'यहाँ सभी मुझे आशान कहते हैं।' 'आशान का मतलब है गुरु, गुरु,' श्याम
समझाता है। 'दरअसल, एक बार आशान बोलना सीख जाओ, तो श्याम भी ठीक से बोल पाओगे।' उसकी आवाज़ में एक चिढ़ाने वाला सुर है।

मैं मुस्कुराता हूँ। श्याम का एक पक्ष है, मुझे पता चल रहा है, जिसे राधा और मैं दोनों ही नहीं देखना चाहते। श्याम को पसंद करना सीखने के लिए एक प्रयास की आवश्यकता होती है, जो न तो वह और न ही मैं करना चाहता हूँ। शायद यह उसकी अपनी गलती है। वह हमारे लिए उसे नापसंद करना इतना आसान बना देता है। हालाँकि, ऐसे अन्य लोग भी हैं जो अलग तरह से सोचते हैं। मैंने सुना है कि उसके कर्मचारी उससे प्यार करते हैं और शहर में उसकी बहुत प्रशंसा की जाती है। वे उसमें ऐसा क्या देखते हैं जो हम नहीं देखते?

श्याम अपनी घड़ी देखता है। 'मुझे पौने बारह बजे नगरपालिका अध्यक्ष के साथ मीटिंग करनी है। मुझे जल्दी ही निकल जाना चाहिए। मेरा सुझाव है कि आप नहाकर आराम करें।
चाचा को भी आराम की ज़रूरत है। आप रूम सर्विस या रेस्टोरेंट में लंच के लिए फ़ोन कर सकते हैं। यह आप पर निर्भर है। और मुझे किसी भी समय फ़ोन करने में संकोच न करें।'

श्याम अपने बटुए से एक कार्ड निकालता है। 'इसमें मेरा मोबाइल नंबर है।

Machine Translated by Google

वैसे, क्या आप यहाँ रहते हुए मोबाइल कनेक्शन चाहेंगे?'

क्रिस ने हाथ बढ़ाया और आलस से जम्हाई ली। 'नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। लेकिन पूछने के लिए शुक्रिया।' राधा ने श्याम से कार्ड

लिया और उस पर अपना मोबाइल नंबर लिख दिया। 'और यह मेरा है,' उसने कहा। 'अगर तुम खो जाओ या कोई मदद या कुछ भी चाहिए, तो तुम मुझसे इस पर संपर्क कर सकते हो।'

'मैं पास में ही एक छोटे से घर में रहता हूँ,' मैंने क्रिस से कहा। 'यह रिसॉर्ट के बगल में है। आओ
दोपहर तक।' 'मैं उसे ले आऊंगी,' राधा

ने कहा।

श्याम ने मुंह बनाया, लेकिन कुछ नहीं बोला।

मैं खड़ी हो गई। श्याम मेरी तरफ दौड़ा। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया।

'मैं थक गया हूँ,' मैंने उससे कहा। 'क्या तुम ड्राइवर से कह सकते हो कि वह मुझे मेरे घर तक छोड़ दे?' 'हाँ, बिलकुल,' श्याम ने कहा।

'तुम्हें आज सुबह की तरह खुद पर ज़ोर नहीं डालना चाहिए।' 'मुझे पता है,' मैंने स्वीकार किया। 'कभी-कभी मैं भूल जाता हूँ कि मैं अब जवान नहीं रहा।' फिर से हम

रास्ते पर चल पड़े। श्याम और राधा मेरे दोनों ओर खड़े थे। मुझे लगा कि क्रिस की नज़र हम पर है। वह किसे देख रहा है?

राधा को? या मुझे? या हम तीनों की बनाई तस्वीर को?

मैं बिस्तर पर लेटा हूँ और छत को घूर रहा हूँ। मेरी खिड़की से एक छोटी दीवार दिखती है जिसके पार नदी की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ हैं। जब नीला भर जाता है, तो पानी ऊपर की सीढ़ी तक पहुँच जाता है और छोटी दीवार को चाटता है। लेकिन अब यह लगभग सूख चुका है और वहाँ सिर्फ़ एक हरा तालाब है जो आगे चलकर एक भूरे रंग की धारा में बदल जाता है।

गहरे हरे तालाब में कुछ जल पक्षी हैं। तैरते हुए, नहाते हुए,
मछली पकड़ना...जो उनके पास है उसी से काम चलाना। मैं पक्षियों की आवाज़ें सुन सकता हूँ।

कमरा अँधेरा और खाली है। मुझे यह तरीका पसंद है। कमरे में बहुत सी चीज़ें होने से मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं भीड़ भरे बाज़ार में हूँ। मैं अपना हाथ ऊपर उठाता हूँ और खिड़की की लकड़ी की सलाखों को छूता हूँ, जो उम्र के साथ घिस गई हैं। लकड़ी की छत और जिस बिस्तर पर मैं लेटा हूँ, उसकी तरह। और मालिनी, मेरी तोता। वह अपने सिर को अपने पंख के नीचे छिपाकर सो रही है। एक पंख उड़ता है। एक हल्का हरा पंख। वह उम्र के साथ अपने पंख झड़ रही है, ठीक वैसे ही जैसे मैं झड़ रहा हूँ।

मैं नींद के आगोश में समा जाता हूँ और जाग जाता हूँ। मैं अपने मन को शांत नहीं कर पाता।

मैं सुबह के बारे में सोचता हूँ। उस युवक के बारे में। राधा और श्याम के बारे में। हम तीनों और क्रिस के बारे में।

मैं सोचने के लिए बहुत थक गया हूँ। मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और पक्षियों की आवाज़ सुनकर शांत हो जाता हूँ।

Machine Translated by Google

मैं उनका इंतज़ार करता हूँ। शाम गर्म और शांत होती है। फिर मैं उन्हें देखता हूँ। मुझे लगता है कि वे एक दूसरे के पूरक कैसे हैं। मुझे बहुत दुख होता है। इसमें दुख है, मैं पहले से ही इसे घटित होते हुए देख सकता हूँ।

वे दोनों, क्रिस और राधा, भाग्य द्वारा मचाई जाने वाली शरारतों से बेखबर, एक-दूसरे को, शाम को, मुझे देखकर खुशी से मुस्कुराते हैं।

'तुम तरोताजा दिख रहे हो।' राधा की आवाज मुझे भी अपनी खुशी के घेरे में शामिल करने के लिए ऊंची हो जाती है।

उसके चेहरे पर मिनुक्कुवेशम की चमक है: कथकली की प्यारी युवतियाँ जिन्हें आंतरिक कृपा का अनुभव हुआ है। जहाँ तक क्रिस की बात है, वह हीरो है।
नल ने अपनी दमयंती को। अर्जुन अपनी सुभद्रा से. कृष्ण अपनी राधा को.

वह कहती है, 'क्रिस को आपसे बहुत कुछ पूछना है।'

वह लगभग शर्मीलेपन से मुस्कुराते हैं। 'मैं वास्तव में आपको थकाना नहीं चाहता, लेकिन मेरे पास कुछ, बल्कि कई, सवाल हैं।'

मैं सिर हिलाता हूँ। वह यहाँ इसीलिए आया है। 'आप क्या जानना चाहेंगे?' क्रिस एक फाइल निकालता

है। 'फिलिप ने इसे एक साथ रखने में मेरी मदद की।' वह प्लास्टिक की शीट पलटता है। 'इसमें प्रदर्शनों की तारीखों, तथ्यों और विवरणों के साथ एक बायो है जो बहुत प्रभावशाली हैं, लेकिन मुझे और अधिक जानने की आवश्यकता है।'

राधा तीन गिलास चाय लेकर रसोई से बाहर आती है।
गिलास से पियो। चाचा के रसोईघर में कोई कप नहीं है।'

क्रिस ने गिलास को सावधानी से पकड़ रखा है। यह गर्म है और चाय उसके मुंह को जला देगी। मैं चाय का स्वाद तभी ले सकता हूँ जब यह मेरी जीभ को जला दे। तम्बाकू ने मेरी स्वाद कलिकाओं को सुन्न कर दिया है और अब केवल गर्मी ही उन्हें खिलने में मदद कर सकती है।

'क्या आप चाहेंगे कि मैं आपके लिए चाय ठंडी कर दूं?' राधा पूछती है।

क्रिस अपना गिलास नीचे रख देता है। 'ओह, मैं इसके ठंडा होने का इंतज़ार करूँगा,' वह कहता है। मुझे एहसास हुआ तो फिर उसे यह घुसपैठ पसंद नहीं है।

क्रिस हमारी बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए फ़ाइल को छूता है।

वह कहता है, 'मैं आपके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं।'

मैं अपना हाथ ऊपर उठाता हूँ। मैं इसके लिए तैयार नहीं हूँ। 'आप मेरी जीवनी नहीं लिख रहे हैं। या शायद यह किसी उपन्यास के लिए है?' उसकी आँखें झुक जाती हैं और फिर मेरी

आँखों से मिलने के लिए उठती हैं। 'मुझे नहीं पता कि मैं इस सामग्री का उपयोग किस लिए या कैसे करना चाहता हूँ। मैं बस इतना जानता हूँ कि आपको एक कलाकार के रूप में समझने के लिए मुझे उस व्यक्ति को जानना होगा। मैं बहुत से कलाकारों को जानता हूँ - लेखक, चित्रकार, संगीतकार, नर्तक - और वे सभी अपनी कला के बारे में ऐसे बात करते हैं जैसे कि वह एक जीवित प्राणी हो। कुछ ऐसा जो उन्हें बाकी सब चीज़ों से अलग करके अपने पास रखता है।'

'हाँ,' मैंने कहा। 'कला एक बहुत ही मांग करने वाली मालकिन हो सकती है ...'

क्रिस ने अधीरता से अपनी पेंसिल को मेज पर पटक दिया। 'मुझे लगता है कि मैं समझ पाऊंगा कि कला का आपके लिए क्या मतलब है, तभी जब मैं जानूंगा कि आपने अपनी कला को कितना हावी होने दिया है

Machine Translated by Google

आप। आपके सपने, आपकी उम्मीदें, आपके समझौते, आपके त्याग - वह सब कुछ जो आपकी कला ने आपसे मांगा है।'

राधा अपनी साँस रोक लेती है। वह जानती है कि मैं कितना चुप रहता हूँ और मुझे अपने बारे में बात करना कितना नापसंद है। 'मुझे नहीं पता कि अंकल करेंगे या नहीं...' वह कहती है, हमेशा की तरह मेरी रक्षा करने के लिए दौड़ती हुई।

मैं उसे मुस्कुराकर कहता हूँ। कोई बात नहीं, मैं मुस्कुराहट के साथ उससे कहता हूँ। उसके जवाब की ईमानदारी मुझे आकर्षित करती है। आदमी और कलाकार। मैंने कभी खुद को दो हिस्सों में विभाजित नहीं सोचा। क्या यह संभव है?

'शुरू करने से पहले, मुझे आपको कुछ ऐसा बताना चाहिए जो कथकली का अभिन्न अंग है। इस नृत्य शैली में कलाकार को व्याख्या करने की आवश्यकता होती है। यह मांग करता है कि वेशकारण कवि की कल्पना से परे कल्पना करें - आप किस शब्द का उपयोग करते हैं, लिब्रेटो ... मेरी कहानी में, जो मुझे वास्तविक लगता है वह शायद कल्पना हो सकती है, और इसके विपरीत। क्या आप समझे?

'मुझे सिर्फ़ अपने जीवन की ही कल्पना और व्याख्या नहीं करनी है, बल्कि उन सभी लोगों के जीवन की भी कल्पना और व्याख्या करनी है जो मेरे जीवन का हिस्सा रहे हैं। मेरे तथ्य ग़लत हो सकते हैं, विवरण गायब हो सकते हैं, लेकिन मैं कुछ भी नहीं छिपाऊँगा। इतना मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ। जब आप सब कुछ सुन चुके होंगे, तो आप मुझे बता पाएँगे कि आदमी और कलाकार एक हैं या दो प्राणी। आप मुझे बता पाएँगे कि कौन शासन करता है, आदमी या मालकिन।'

क्रिस अपनी पतलून की जेब का फ्लैप खोलता है। वह एक छोटा सा टेप निकालता है
रिकॉर्डर. 'क्या मैं?' वह पूछता है.

मैं सिर हिलाता हूँ। यह तरीका बेहतर है। मेरे लिए अपने जीवन की कल्पना करना और मेरे बोलते समय शब्दों का प्रवाह पकड़ लेना।

मैं अपना सुपारी का डिब्बा खोलता हूँ। भगवान जाने कब से मेरे पास यह डिब्बा है। मैं दो कोमल, हरे पान के पत्ते चुनता हूँ, उन पर थोड़ा सा चूना लगाता हूँ और पूरे पत्ते को अपने मुँह में रख लेता हूँ। फिर मैं एक पॉकेट चाकू से सुपारी के कुछ टुकड़े काटता हूँ। ताजा सुपारी का रस मेरे मुँह में भर जाता है जो पान के पत्तों की चुभन को कम करता है। मैं इसमें तम्बाकू का एक छोटा टुकड़ा मिलाता हूँ।

मैं सुपारी का डिब्बा क्रिस की ओर बढ़ाता हूं और उसे इशारा करता हूं कि वह खुद मदद करे।
वह नहीं करता.

पान और सुपारी मुझे आराम की चादर में लपेट लेते हैं।

मैं अब बात करने के लिए तैयार हूँ, ऐसा मुझे लगता है। मैं अपना मुँह धोता हूँ और थोड़ा पानी पीता हूँ।

क्रिस टेप रिकॉर्डर पर एक बटन दबाता है। राधा अपनी कुर्सी पर पीछे झुक जाती है।
कहीं-कहीं तालाब में रहने वाले बगुले के फड़फड़ाते पंख हवा को चीरते हैं।

मैं कहता हूं, 'शुरू में एक महासागर था।'

क्रिस अपनी भौहें ऊपर उठाता है। 'समुद्र?' मैं मुस्कुराता हूँ। मैं जानता

हूँ कि वह क्या सोच रहा है। शायद मैं नूह के जहाज़ या शायद वास्को दा गामा की बात कर रहा हूँ। लेकिन वह ज़्यादा कुछ कहने के लिए बहुत विनम्र है, या शायद वह ऐसा कर रहा है।

Machine Translated by Google

उसे डर है कि अगर उसने मुझे नाराज़ किया तो मैं चुप हो जाऊँगा। इसलिए वह अपनी घबराहट को निगल जाता है।

'हाँ,' मैंने कहा. 'एक महासागर.'

Machine Translated by Google

1937 विनम्र पहुँच की प्रार्थना

ऐसा नहीं था कि वह इस तरह मर जाए: पानी उसके सिर के ऊपर घूम रहा था, उसके कानों और नाक में बह रहा था, उसके मुंह में भर रहा था और उसके फेफड़ों में जा रहा था, जिससे उसके हाथ-पैर हमेशा के लिए रुक गए। उसकी आँखों में नमक, उसके गले के पिछले हिस्से में नमक, उसके खून में ज़हर भर गया था। वह एक बार फिर पानी की सतह पर आया और जानता था कि अगर उसने ऐसा होने दिया, तो उसे नमकीन पानी में डुबो दिया जाएगा।

फिर, अपने बचपन के वर्षों के अंतराल से, नदी में अपने हाथ-पैर पटकने में बिताए उन अनगिनत घंटों से, यह जानने के अपमान से कि वह अकेला नहीं है जो पानी पर नियंत्रण करना सीख गया है जबकि बाकी सभी ने सीख लिया है, वह एक ऐसी याद की तलाश में था जो उसे जीने की अनुमति दे, ताकि वह समुद्र और उसके नमक से बच सके।

यह तभी आया, टैडपोल की पूँछ की उन्मत्त फड़फड़ाहट के साथ उसके अस्तित्व में तैरता हुआ। यह एक सबक था जो उसके जीवन का मंत्र बन गया: इससे लड़ो मत। अपना मुँह बंद करो। अपनी साँस रोको। अपने शरीर को वैसे ही रहने दो।

धीरे-धीरे उसे लगा कि उसका शरीर हल्का हो रहा है। पानी की पकड़ ढीली हो गई और जैसे ही उसके हाथ लकड़ी के टुकड़े पर कस गए जो उसकी मुट्ठी में तैर रहा था, उसे एहसास हुआ कि अभी उसका समय नहीं आया है।

जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो उसके सिर के ऊपर मँडराता हुआ चेहरा मुस्कुरा उठा।
'प्रभु की जय हो!'

सेतु को आश्चर्य हुआ कि वह कहाँ है, लेकिन उसकी ज़ुबान पर पूछने के लिए शब्द नहीं आ रहे थे। नर्स, एक दयालु प्राणी जिसके बाल पीछे की ओर मुड़े हुए थे, चश्मा और रंगत उसकी माँ के खाना पकाने के बर्तनों के तले जैसी थी, ने उसकी कलाई पकड़ी और उसकी नब्ज़ देखी। उसे पहला मानवीय स्पर्श मिला जिससे उसकी आँखों में आँसू आ गए।

'मैं सिस्टर होप हूँ। हम तुम्हारे जागने का इंतज़ार कर रहे थे। जब मछुआरों ने तुम्हारे सिर पर घाव देखा तो उन्हें लगा कि तुम मर चुकी हो। फिर उनमें से एक को यकीन नहीं हुआ। इसलिए उन्होंने डॉक्टर के बारे में सोचा।' उसने डॉक्टर के लिए उसकी आवाज़ में विस्मय के स्वर सुने। लेकिन ज़्यादातर यह उसका उच्चारण था जिसने उसे उसे गले लगाने के लिए मजबूर

किया। यह कौन सी जगह थी जहाँ तमिल में मलयालम की झलक थी? गोल-गोल, स्वरों का जमावड़ा और उभरना, व्यंजनों का ढेर जैसे कि वे सूखे सागौन के पत्ते हों... वह घर से ज़्यादा दूर नहीं हो सकता था।

नर्स ने उसके चारों ओर चादर लपेट दी। 'मछुआरों ने डॉक्टर से कहा कि अगर कोई मदद कर सकता है, तो वह वही है... और वे सही थे। अब तुम यहाँ चुपचाप लेट जाओ

Machine Translated by Google

और मैं उसे ले आऊंगा।'

उसे। डॉक्टर अय्याह। ग्रामीणों के लिए भगवान का अवतार। नाज़रेथ का चमत्कारी कार्यकर्ता। पिता जैसा। सेतु को पता चलना था कि डॉ सैमुअल सागयाराज उसके लिए भी यह सब करेंगे। लेकिन सबसे पहले, डॉ सैमुअल को उसके नामकरण में पुजारी की भूमिका निभानी थी।

'आप कैसे हैं?' डॉक्टर ने पूछा.

सेतु ने अपने बिस्तर के पास बैठे आदमी को देखा। तो यह उसका रक्षक था। चौकोर सिर और समतल चेहरे वाला यह आदमी। उसकी त्वचा चिकनी थी और मूंछें कटी हुई थीं। अन्यथा अच्छी तरह से तैयार चेहरे पर उसकी भौंहें ही एकमात्र अनियंत्रित आवारा थीं - रोएँदार, मोटे कैटरपिलर उसकी नाक के पुल पर सींग लगाए हुए थे।

सेतु की कलाई थामे हुए हाथ मजबूत और सक्षम थे। डॉक्टर ने सींग के फ्रेम वाला चश्मा पहना हुआ था। उसकी उपस्थिति ऐसी थी कि सेतु खुद को उसके हवाले कर देना चाहता था और कहना चाहता था: मेरी देखभाल करो। मुझे तुम्हारी सुरक्षा चाहिए।

'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि हम कौन से वर्ष में हैं?' डॉक्टर ने तमिल में पूछा,
महिला की तुलना में उसका उच्चारण अधिक तटस्थ है।

'1937. यह 1937 है, है न?' डॉक्टर ने सिर
हिलाया। उसने अपने मुँह को नरम करके मुस्कुराने दिया और पूछा,
'क्या तुम्हें याद है कि क्या हुआ था?' सेतु ने अपने होंठ चाटे। वे
सूखे और पपड़ीदार लग रहे थे; नमकीन भी।
सेतु ने कहा, 'नहीं।' 'नहीं, मुझे याद नहीं।' सेतु झूठ नहीं बोल रहा था।
वह याद नहीं करना चाहता था।
'और तुम्हारा नाम क्या है?' 'मेरा नाम,' सेतु
ने झिझकते हुए कहा, एक ऐसे नाम की तलाश में जो परिचित हो और फिर भी उसका नाम न बताए, और उसे कोलंबो में अमेरिकी मिशनरी द्वारा बुलाए गए नाम की याद आई, 'सेठ।'

'हाँ,' सेतु ने अंग्रेजी में कहा। इससे डॉक्टर को पता चल जाता था कि वह एक शिक्षित व्यक्ति है। एक संपन्न व्यक्ति। 'मेरा नाम सेठ है। मैं सीलोन में स्वास्थ्य विभाग में काम करता था।' सेठ। यह एक भारतीय के लिए एक असामान्य नाम था। लेकिन यह एक आम ईसाई नाम था और डॉ. सैमुअल ने इसे पहचान लिया। और इसलिए डॉ.
सैमुअल की आँखें चौड़ी हो गईं।

क्या यह वही चमत्कार था जिसका वह इंतज़ार कर रहा था? एक ईसाई स्वास्थ्य कार्यकर्ता!

'तुमसे मिलकर खुशी हुई, सेठ। क्या तुम मुझे कोई पता देना चाहोगे? तुम्हारा परिवार चिंतित होगा। हमें उन्हें तुम्हारे ठिकाने के बारे में बताना चाहिए। तुम्हारे नियोक्ताओं के बारे में क्या?' सेठ ने अपनी आँखें बंद कर लीं। घर? 'नहीं,' उसने कहा। 'मैं एक अनाथ हूँ। और मैंने कुछ महीने पहले अपनी नौकरी छोड़ दी। कोई मेरा
इंतज़ार नहीं कर रहा है...' 'ऐसा मत कहो, सेठ,' डॉ. सैमुअल ने सेठू की बांह थपथपाते हुए धीरे से कहा। 'क्योंकि

Machine Translated by Google

जिनके पास कुछ नहीं है, उनके पास परमेश्वर है। जहाँ तू जाए वहाँ मैं भी जाऊँगा; जहाँ तू रहे वहाँ मैं भी रहूँगा; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।
रूथ 1.16.' नर्स

होप ने सहमति में सिर हिलाया।

'बहन, उसे बाइबल दे दो। सेठ, जब तुम ठीक हो जाओ, तो ईश्वर तुम्हारे साथ रहे। अच्छी किताब को मत छोड़ो और वह तुम्हें नहीं छोड़ेगी। ईश्वर का वचन तुम्हें वहाँ ले जाएगा जहाँ तुम्हारा दिल नहीं जाता। यह वैसा ही होगा जैसा 1 राजा 9.7 में कहा गया है: एक कहावत और एक कहावत।' सेठू ने निगल लिया। वह कब तक यह दिखावा कर सकता था?

वहां लेटे-लेटे वह सोच रहा था कि आखिर उसमें ऐसा क्या था जो इस प्रकार के चित्र खींचता था।
ये लोग उसका हाथ थामकर उसे उस रास्ते पर ले जाना चाहते थे जिसे वे अपना चुना हुआ रास्ता मानते थे। पहले माश, फिर बालू और अब डॉ. सैमुअल। उसने ऐसा क्यों होने दिया? उसे लगा कि उस पर बहुत थकान हावी हो गई है और उसे सोचने के बजाय सोना ज़्यादा आसान लग रहा था।

जब सेतु जागा तो उसके बिस्तर के पास बाइबल रखी थी और दो नर्सें मुस्कुरा रही थीं। सेतु ने पलकें झपकाईं।

नर्स होप ने कहा, 'यह मेरी बहन चैरिटी है। वह नर्स बनने की ट्रेनिंग ले रही है।
मेरी एक और बहन है। फेथ। वह भी नर्स है।'

उसने सेतु के बिस्तर के कपड़े ठीक किए, दवाइयां फिर से व्यवस्थित कीं और फिर बगल के बिस्तर पर लेटे एक आदमी के मुंह में थर्मामीटर लगा दिया।

नर्स होप ने अचानक कहा, 'दो दिन में आप यहां से बाहर हो जाएंगे।'

नर्स चैरिटी ने शर्मीलेपन से कहा, 'मैं आपके लिए बाइबल लेकर आई हूँ।' उसने अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया। उसकी नज़र ने उसे बेचैन कर दिया। वह मेरी तरफ़ ऐसे क्यों देख रही है जैसे उसने पहले कभी किसी पुरुष को नहीं देखा, सेतु ने सोचा, अपने हाथों में बाइबल का वज़न महसूस करते हुए। ताम्रपत्र पर छपे फ़्लाईलीफ़ पर उसका नाम लिखा था: चैरिटी विमला जयराज। 'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था,' सेतु ने कहा।

'ओह, मैं अक्का की बाइबल शेयर कर सकता हूँ। वैसे भी, यह एकमात्र अंग्रेजी बाइबल है
डॉ. सैमुअल्स से.

सेतु को याद आया कि अगले बिस्तर पर लेटे आदमी ने पहले क्या कहा था। 'काश कोंडाई बहनें मेरी बात पर ध्यान देतीं। जब तुम सो रहे थे, तब वे तीनों यहीं थीं, हर समय तुम्हारे इर्द-गिर्द मंडराती रहती थीं, जबकि मैं पूरी तरह जागकर बिस्तर के लिए कराहता रहता था।'

'कौन?' सेतु ने पूछा था।

'कोंडाई बहनें...और कौन?' सेतु मुस्कुराया। 'बन बहनें'।

'क्या उन्हें यही कहा जाता है?' 'पूरा शहर उन्हें कोंडाई बहनें कहता है। पेरिया कोंडाई, चिन्ना

कोंडाई और जड़ाई कोंडाई। उनके बालों का जूड़ा ही उन्हें अलग बताने का एकमात्र तरीका है।'

Machine Translated by Google

सेतु को अपने अंदर एक हंसी महसूस हुई। यह सच था। बड़ी बन, छोटी बन और चोटी वाली बन... लेकिन चोटी वाली बन कहाँ थी?

सेतु को लगा कि उसकी हंसी अब हंसी में बदल गई है और वह जल्दी से बाइबल पढ़ने लगा, जबकि वे वहीं खड़े थे। शायद तब वे उसे अकेला छोड़ देंगे।

उसने खुद को नया नाम देने का फैसला क्यों किया? ऐसा नहीं था कि वह एक ज्ञात डिफॉल्टर था। या अब वह एक है? केडी। उपद्रवी, गुंडा, अपराधी, असामाजिक तत्व का पर्यायवाची। तुम कैसे हो, सेतु, अंकल पूछते। मेरे परिवार का कोई सदस्य केडी कैसे बन सकता है?

सेतु चौदह साल और तीन दिन का था जब वह घर से भाग गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि और क्या करे।

वह स्कूल के नोटिसबोर्ड को घूरता हुआ खड़ा था। वह लगातार तीसरे साल फिर से अपनी परीक्षा में फेल हो गया था और अब उसे स्कूल से निकाल दिया जाएगा। पिछले साल हेडमास्टर ने उसके चाचा से यही कहा था। 'अगर कोई छात्र एक ही कक्षा में दो साल तक फेल हो जाता है तो हम उसे नहीं रखते। सेतु के मामले में मैं अपवाद करने को तैयार हूँ। आप देखिए, उसके बाकी सभी विषयों में अच्छे अंक हैं, लेकिन अगर वह गणित में भी पास नहीं हुआ तो मैं उसे अगली कक्षा में कैसे प्रमोट कर सकता हूँ? मुझे समझ में नहीं आता। उसकी याददाश्त कमाल की है। उसे बस एक बार पेज देखना है और वह आपको उस पर लिखी हर बात बता सकता है। फिर भी, गणित में वह अपनी कक्षा के सबसे बुरे मूर्ख से भी बदतर है। मुझे नहीं लगता कि वह खुद पर मेहनत कर रहा है। और क्या हो सकता है?' वह सेतु की ओर मुड़ा और उसे डराने वाली आवाज़ में बोला, 'यह तुम्हारा आखिरी मौका है। अगर तुम पर्याप्त मेहनत नहीं करोगे, तो मेरे पास तुम्हें निकालने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। समझे?'

सेतु ने सिर हिलाया। वह हमेशा सिर हिलाता था जब उसके पास स्पष्टीकरण या टिप्पणी के तौर पर कुछ नहीं होता था। तब भी उसे पता था कि गणित उसे कुचल देगा।

घर लौटते समय उसके चाचा ने एक शब्द भी नहीं बोला। बाद में, जब वे दोपहर का भोजन करने बैठे, तो उसने कहा, 'तुमने सुना कि हेडमास्टर ने क्या कहा, है न? अगर तुम जीवन में कुछ करना चाहते हो, तो तुम्हें शिक्षा की आवश्यकता है। या, अगर तुम मेरे जैसे किसान बनना चाहते हो, तो तुम कल ही स्कूल छोड़ सकते हो। यह तुम्हारा फैसला है।' यह उसके चाचा का तरीका था। दूसरे लोग इमली के पेड़ से एक छोटी शाखा तोड़ लेते, उसके पत्ते छील लेते और फिर अपने शिष्यों की पीठ की खाल उतार लेते। सेतु के चाचा ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपनी शांत फटकार से सेतु की आत्मा की खाल

उतार दी। सेतु ने कुछ नहीं कहा, उसे लगा कि उसके भीतर का भारीपन उसकी आँखों तक पहुँच गया है और उसका गला भींच लिया है।

सेतु को समझ में नहीं आया कि आखिर संख्या या पानी में क्या अंतर था, जिससे वह पराजित हो गया।

Machine Translated by Google

ऐसा नहीं था कि उसने पर्याप्त प्रयास नहीं किया। उसने किया। उसने काम किया, उसने बहलाया-फुसलाया, उसने वह सब कुछ किया जो वह कर सकता था ताकि वे उसकी आज्ञा का पालन करें। लेकिन न तो संख्या और न ही नदी का पानी उसके आगे झुक गया।

वे ज़्यादातर उसे नज़रअंदाज़ करते थे, या सिर्फ़ उसे निराश करते थे। जैसे कि अभी। सेतु जानता था कि उसे अपने चाचा की तिरस्कार भरी नज़रों से और नदी के पानी से भागना होगा जो दिन-ब-दिन उसकी योग्यता पर सवाल उठाती रहती थी।

वह नदी के किनारे-किनारे चलता रहा। कभी-कभी उसे बेचैनी का अहसास होता और वह नदी के किनारे-किनारे चलता रहता। उसे नहीं पता होता कि वह कहाँ जा रहा है या वहाँ पहुँचने पर वह क्या करेगा। बस इतना ही काफी था कि वह चलता रहा। फिर उसके पैर थक जाते और वह वापस लौट आता, घर जाने की खुशी में।

अब वह रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा। वह मद्रास के लिए ट्रेन पकड़ेगा। यहीं पर सभी भाग गए थे। मद्रास में, वह एक ऐसा जीवन जीएगा जिसमें उसे अंकों या पानी में महारत हासिल करने की ज़रूरत नहीं होगी। या कभी अपने चाचा की आँखों में निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा। शायद वह अपने पिता से भी मिल जाए, जो पाँच साल पहले मद्रास चले गए थे और कभी वापस नहीं लौटे। उसकी माँ के पास अब एक नया पति था, और सेतु को उम्मीद थी कि उसके पिता उसे अपने साथ ले जाएँगे।

उसने अपनी शॉर्ट्स की जेब थपथपाई। उसके पास कुछ पैसे थे। अगले साल की फीस और किताबों के पैसे, और कुछ पैसे जो उसकी माँ ने उसे एक जोड़ी चप्पल और शहर में कुछ किराने का सामान खरीदने के लिए दिए थे। यह ज़्यादा नहीं था, लेकिन मद्रास के लिए ट्रेन का टिकट और नौकरी मिलने तक एक-दो खाने के लिए काफ़ी था।

उसे ट्रेन आने का ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा। वह एक डिब्बे में चढ़ गया और उसे एक सीट मिल गई। उसके सामने एक आदमी और एक औरत बैठे थे। औरत ने उसे देखकर मुस्कुराया।
वह मुस्कुराया और अपनी आँखें नीचे झुका लीं। ट्रेन चलने लगी और सेतु खिड़की से बाहर देखने लगा। 'तुम कहाँ जा रहे हो?' महिला ने पूछा।

सेतु ने अपनी नजरें खिड़की से हटा लीं, जहां परिदृश्य में एक विशेष सौंदर्य आ गया था, जिस पर उसने वहां रहते हुए ध्यान नहीं दिया था।
'मद्रास,' उसने अनुपस्थित भाव से कहा।

महिला ने उस आदमी की तरफ देखा। वह आगे झुका और बोला, 'लेकिन यह ट्रेन मद्रास नहीं जाती।' सेतु को लगा जैसे किसी ने उसके पेट में लात

मार दी हो। 'लेकिन यह ट्रेन मद्रास जाने वाली है।'
मद्रास,' उन्होंने कहा, ऐसा ही हो। 'मैंने समय सारिणी की जांच की।'

'नहीं, यह मद्रास जाने वाली ट्रेन नहीं है,' उस आदमी ने कोमल स्वर में दोहराया। उसकी आँखों में सहानुभूति थी। 'मद्रास जाने वाली ट्रेन एक घंटा देरी से चल रही है। इस लाइन पर सभी ट्रेनें ऐसी ही हैं। क्या आपने घोषणा नहीं सुनी? यह ट्रेन कहीं और जाती है और जिस डिब्बे में हम हैं, उसे कोयंबटूर में दूसरी ट्रेन से जोड़ दिया जाएगा। यह रामेश्वरम का डिब्बा है।'

'अब मैं क्या करूँ? मेरे पास बहुत कम पैसे बचे हैं।' सेतु की आवाज़ भर्रा गई।

Machine Translated by Google

तुम ऐसा कैसे कर सकते हो, सेतु, एक आवाज़ बुदबुदाई। उसके चाचा की आवाज़, फटकार और दुख से भरी हुई। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो कि ट्रेन का नाम नहीं पढ़ सकते? या यह नहीं पूछ सकते कि वह कहाँ जा रही है? इस बारे में बात करते हुए, तुम कैसे भाग सकते हो और अपनी माँ, अपने परिवार और मुझे कैसे छोड़ सकते हो? तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?

यह उस आवाज़ और उन आँखों से सामना करने का विचार था जो आँसू ला देती थीं
चौदह साल और तीन दिन के सेतु की आँखों में उभरने के लिए।

'मत रोओ,' वह आदमी अपनी सीट से उठते हुए बोला। उसने सेतु के कंधे पर हाथ फेरा और उसके पास बैठ गया। 'रोने की क्या ज़रूरत है? रोने से क्या मदद मिलेगी? बताओ, क्या मद्रास में कोई तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है? कोई चाचा, कोई बड़ा भाई, कोई?' सेतु ने सिर हिलाया। 'नहीं।' 'क्या तुम घर वापस जाना चाहते हो?' सेतु ने फिर सिर हिलाया। 'नहीं, नहीं।' 'ऐसी स्थिति में, हमारे साथ रामेश्वरम चलो।'

'लेकिन मैं वहाँ क्या करूँगा?' 'क्या मद्रास में

तुम्हारे लिए कोई नौकरी है?' सेतु ने फिर सिर हिलाया।

'हम सीलोन जा रहे हैं। कोलंबो,' महिला ने कहा। 'हमारे साथ आओ।' सेतु ने उन्हें घूरकर देखा। अपनी

पूरी ज़िंदगी में, जब भी कोई कोलंबो का ज़िक्र करता था, तो वह काँप उठता था। ऐसा लगता था जैसे यह शब्द समुद्र की गड़गड़ाहट के साथ गूंज रहा हो। एक के बाद एक लहरें एक छोटे से द्वीप के किनारों पर जमा हो रही थीं। लहरों के बाद लहरें नावों और उन पर सवार लोगों की ज़िंदगी को अपने अंदर खींचने की साजिश कर रही थीं। कोलंबो। लेकिन उसने कितनी आसानी से यह कह दिया। कोलंबो। मानो, शब्द के अंत में 'ओ' को निगलने से, द्वीप को घेरने वाला पानी उसके गले से नीचे चला गया हो। उसके सबसे बुरे डर से यात्रा को मुक्त कर दिया। पानी।

'हाँ,' उस आदमी ने कहा। 'हम तुम्हें सीलोन ले जाएँगे और मैं वहाँ तुम्हारे लिए नौकरी ढूँढ़ दूँगा।' सेतु ने समुद्र

पार करने के अपने डर को निगल लिया और उसके मुँह में अनगिनत सवाल घूम रहे थे। लेकिन अब वह सिर्फ़ यही पूछना चाहता था कि क्यों। उसके चाचा की आवाज़ उसे शांत नहीं होने देती थी: तुम एक बिलकुल अजनबी पर इतना भरोसा कैसे कर सकते हो?

सेतु ने अपना गला साफ किया और अत्यंत विनम्र स्वर में पूछा, 'आप क्यों?
तुम यह सब क्यों कर रहे हो? तुम मेरी मदद क्यों कर रहे हो?'

वह आदमी मुस्कुराया। उसने अपनी उंगलियों को देखा और कहा, 'मुझे नहीं पता। मैं कोई आवेगशील व्यक्ति नहीं हूँ। लेकिन तुम्हारे बारे में कुछ ऐसा है जो मुझे आवेगशील बनाता है। तुम्हें एक ऐसी जगह खोजने में मदद करने के लिए जहाँ तुम अपने पैरों पर खड़े हो सको। मैं अपने आवेग पर सवाल नहीं उठा रहा हूँ; शायद, तुम्हें भी नहीं करना चाहिए।' इसलिए सेतु ट्रेन में सवार हुआ और आवेग से प्रेरित होकर पानी पार

कर गया। और वहाँ कोलंब में - क्योंकि उसने भी घूमते पानी के विचार को मिटाने के लिए 'ओ' निगल लिया था - उसने पाया कि जीवन जीना संभव था। अनियंत्रित होने के बावजूद

Machine Translated by Google

संख्या। कठोर जल के बावजूद।

बाद में अपने जीवन में, जब कभी सेतु उन वर्षों का जिक्र करता, तो रहस्यमय ढंग से कहता, 'माश एक अच्छा आदमी था।'

ट्रेन में बैठे आदमी को वह माश कहकर पुकारता था। गुरु। गुरु। 'माश और उसकी पत्नी ने मेरी बहुत अच्छी तरह से देखभाल की। मुझे उनके घर में कभी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ी,' अगर कोई और पूछता तो वह कहता। 'माश ने मुझे स्वास्थ्य विभाग में नौकरी दिलवाई। मुझे स्वास्थ्य निरीक्षक का कोर्स करना पड़ा, फिर एक साल की ट्रेनिंग लेनी पड़ी, और जब मैं अठारह साल का हुआ, तब मैं वास्तव में कमाने लगा था।'

सेतु उन वर्षों के बारे में किसी को कैसे बता सकता था? कोलंबो में 'ओ' की तरह, वे अस्तित्व में थे, भले ही उसने उनके बारे में कभी बात न की हो... जब तक कि सादिया नहीं आई, यानी सादिया। सादिया। सादिया मेहरुन्निसा। अच्छी लड़की। महिलाओं में बेमिसाल। आसमान की रोशनी। सादिया, जिसने एक प्रकाश स्तंभ जलाया और मांग की कि वह उसे अपने अतीत में ले जाए। लेकिन यह कई सालों बाद होना था।

सबसे पहले, सेतु को उस नए नाम से चिपके रहना था जो उसकी जीवन रेखा थी और फिर से जन्म लेना था। सेतु जानता था कि कम से कम कुछ समय के लिए उसे सेठ बनना होगा और अच्छी किताब से उसे प्रकाश और डॉ सैमुअल के राज्य में जगह मिलनी होगी।

डॉ. सैमुअल के घर के चारों ओर एक ऊँची दीवार थी। गेट की जगह हरे रंग से रंगा हुआ एक दरवाज़ा था। एक दरवाज़ा जिसमें ताला और जंजीर लगी हुई थी। उन दीवारों के बीच सेतु को सुरक्षित महसूस होता था।

जब सेथु इतना स्वस्थ हो गया कि अस्पताल से छुट्टी पा सके, तो डॉ. सैमुअल ने उसे नौकरी का प्रस्ताव दिया। उन्होंने बस इतना ही कहा, 'मुझे तुम्हारे जैसे किसी व्यक्ति की ज़रूरत है।'

सेतु ने डॉक्टर के चेहरे की ओर देखा और उसके शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश करने लगा।

'लेकिन मैं इस तरह का काम करने के लिए प्रशिक्षित नहीं हूं,' उन्होंने अचानक डरते हुए कहा।

डॉ. सैमुअल केवल मुस्कुराये। 'तुम जैसे-जैसे आगे बढ़ोगे, वैसे-वैसे सीखोगे। जैसे तुम्हारे दिन होंगे, वैसे-वैसे तेरी शक्ति होगी। व्यवस्थाविवरण 33:25. इसके बारे में सोचो।'

सेतु डॉक्टर के कमरे के बाहर बैठा था। वह उन रोगियों के साथ बैठा था जो डॉक्टर से मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। उसने अपने चारों ओर देखा। यह एक छोटा शहर था, इस तथ्य के लिए महत्वपूर्ण कि एक मिशनरी संगठन ने यहाँ एक अस्पताल बनाने का फैसला किया था। शहर में कई अजनबी लोग देखे गए: जो लोग आस-पास के गाँवों और आस-पास के जिलों से आए थे। जन्म। मृत्यु। शहर में लोगों का आना-जाना लगा रहा, और किसी ने कोई सवाल नहीं पूछा। सेतु फर्श पर घूरता रहा। उसे एक पंक्ति याद आई जो उसे बाइबल में संयोग से मिली थी: मैं एक अजनबी देश में अजनबी रहा हूँ।

शायद उसमें उसके लिए कोई संदेश था। वह एक अजनबी देश में अजनबी होगा। एक बार फिर, जीवन उसे एक रास्ता दिखा रहा था। इससे मत लड़ो। इसे रहने दो, उसने खुद से कहा। वह धारा के साथ बह जाएगा।

Machine Translated by Google

डॉ. सैमुअल ने उसे अपने घर के सामने वाले बरामदे से सटा हुआ एक कमरा दे दिया। यह एक बहुत बड़ा घर था जिसमें कई कमरे और बहुत सारा फर्नीचर था। डॉ. सैमुअल ने मुश्किल से दो कमरों का इस्तेमाल किया। 'यहाँ हम दोनों के लिए पर्याप्त जगह है।' डॉक्टर ने लगभग माफ़ी मांगते हुए हँसा।

सेतु को आश्चर्य हुआ कि क्या डॉक्टर अकेला है। और पत्नी और बच्चों का क्या? सेतु ने अपने शब्द वापस ले लिए। वह डॉक्टर से कोई सवाल नहीं पूछेगा और उम्मीद है कि डॉक्टर उससे कोई सवाल नहीं पूछेगा। उसने अपने चारों ओर देखा और कहा, 'धन्यवाद।' उसे लगा कि उसने डॉक्टर की आँखों में कृतज्ञता देखी है। डॉक्टर अकेला था, उसने फैसला किया।

इसलिए सेतु को अपने नए जीवन के लिए एक घर मिल गया। वहाँ, आम और इमली, पपीता और नारियल के पेड़ों से भरे बगीचे में, उसने एक कॉर्क का पेड़ देखा और देखा कि वह फल-फूल रहा था, मूल निवासियों के बीच एक विदेशी। उसे इस सबक से तसल्ली मिली। दरवाज़े वाली ऊँची दीवार के पीछे, उसके लिए एक जगह थी, जैसे कि डॉ. सैमुअल के अनुयायियों होप, चैरिटी और फेथ के लिए थी। सेतु भी उसी तरह का था, जैसे वे थे।

जैसे-जैसे दिन हफ़्तों में बदलते गए, सेतु को यह चिंता कम होती गई कि उसे खोज लिया जाएगा। डॉ. सैमुअल ने उसे काम करने के लिए चीजें बताईं। वह कुछ हद तक सचिव था, कुछ हद तक दवाओं का कंपाउंडर, कुछ हद तक नुस्खे बांटने वाला, कुछ हद तक अजीबो-गरीब काम करने वाला, कुछ हद तक रिकॉर्ड रखने वाला, कुछ हद तक नौकर; उसका दिन इतने सारे हिस्सों में बंटा हुआ था कि उसे पता ही नहीं चलता था कि वह कहां भागता है। वहां, नाज़रेथ में, सेंट पॉल अस्पताल की सभी बाहों में लिपटा हुआ, सेतु को संतुष्टि का एहसास था।

जब दिन गर्म होने लगे और पीने का पानी कम होने लगा, तो डॉ. सैमुअल ने सेथु को अपने दिन का एक और हिस्सा दे दिया। हर सुबह, डॉक्टर के घर के आस-पास रहने वाली महिलाएँ दीवार में लगे दरवाज़े के पास एक कतार में खड़ी हो जाती थीं और सेथु उनमें से हर एक के लिए पानी का एक बर्तन निकालता था। 'उन्हें बाकी सब चीज़ों के लिए खारे पानी को लाने के लिए मीलों चलना पड़ेगा। जब तक हमारे कुएँ में पर्याप्त पानी है, हम उन्हें एक-एक बर्तन देंगे। पीने और खाना पकाने के लिए इतना ही काफी होगा। लेकिन आपको यह देखना होगा कि उन्हें सिर्फ़ एक-एक बर्तन ही मिले, नहीं तो यह ज़्यादा दिन तक नहीं चलेगा,' डॉ. सैमुअल ने कहा।

फिर कुएं में पानी का स्तर भी कम होने लगा और सेतु डॉक्टर को दिखाने ले गया कि कितना पानी बचा है। सेतु ने कहा, 'हमें अब पानी देना बंद करना होगा।'

डॉ. सैमुअल ने चिंतित भाव से कुएं में झाँका। 'यह मूर्खतापूर्ण लग सकता है, लेकिन अगर पानी उस स्तर से नीचे चला गया, तो हम मुसीबत में पड़ जाएँगे। मुझे लगा कि इस साल हम बच जाएँगे, लेकिन अगर जल्दी बारिश नहीं हुई तो...'

'सूखा?' सेतु ने पूछा, पहली बार उसे सूखे के निहितार्थ का एहसास हुआ।

Machine Translated by Google

घटती जल आपूर्ति.

'सूखा, और हैजा। अभी पिछले साल ही इस जिले में हैजा महामारी फैली थी।' सेतु ने सोचा कि आगे क्या होगा। हैजा महामारी कैसी होगी?

उसे जल्द ही पता चल गया।

वे कहाँ से आए थे, फटी एड़ियों और सूखे होंठों वाले ये झुंड, जिनके मुँह से पानी बह रहा था, पेट में ऐंठन थी और शरीर तरल पदार्थ के लिए तरस रहा था लेकिन उसे रोक नहीं पा रहा था? ये लोग कौन थे जो उस देहात से निकले थे जो उनके सभी दृश्यों में जीवन से खाली लग रहा था?

वे आते रहे। बूढ़े, छोटे बच्चे, स्वस्थ शरीर वाले पुरुष और भूरे बालों वाली महिलाएं, एक जीवाणु से बंधी हुई। दुख में डूबे हुए आत्मीय आत्माएं, उन्हें एक अनाम भय सता रहा था: क्या अगली बारी उनकी होगी?

फिर सेतु के पास सोचने का समय नहीं था। डॉ. सैमुअल ने अपनी उन्मत्त इच्छाशक्ति से उन्हें भगाया। 'हमारे पास कुछ भी पर्याप्त नहीं है - लोग, दवाइयाँ या ऊर्जा। लेकिन हमें सामना करना होगा। हमें किसी तरह से काम चलाना होगा,' वह आशा और मदद का संदेश देते हुए चिल्लाया।

बिस्तर भरे हुए थे और यहां तक कि गलियारे में भी ताड़ के पत्तों की चटाई बिछी हुई थी।
सेंट पॉल्स में जगह का हर इंच बीमारी और निराशा से भरा हुआ था। सेथु ने कभी इतने बड़े पैमाने पर दुख नहीं देखा था। फिनाइल और ताड़ के पत्तों की चटाई की गंध से उसे जीवन भर हैजा की बदबू और मौत का डर सताता रहा।

'अब हम क्या करें?' सेतु ने स्टोररूम से वापस आते हुए पूछा।
दवाइयां लगभग पूरी तरह खत्म हो चुकी हैं। हमें अब चमत्कार की जरूरत है।'
डॉ. सैमुअल अपनी कुर्सी से उठे। उन्होंने कहा, 'मेरे साथ आओ।' नाज़रेथ की सुनसान सड़कों से होते हुए डॉ. सैमुअल उन्हें एक छोटे से चर्च में ले गए, जिसकी ऊंची मीनार थी। इसकी भीतरी दीवारें और खंभे एक अजीब सफेद रंग से चमक रहे थे।

'तुम कुछ महीनों से नाज़रेथ में रह रहे हो, लेकिन तुम कभी यहाँ आना नहीं चाहते थे। और मैंने इसे रहने दिया क्योंकि मैं जानता था कि जब तुम ईश्वर के घर की तलाश करने के लिए तैयार होगे, तो तुम ऐसा करोगे,' डॉक्टर ने कहा।

सेतु ने अपने होंठ काटे। वह कहना चाहता था कि तुम मुझे यहाँ लाए हो। लेकिन उसने हमेशा की तरह शब्दों को शांत रहने दिया।

सेतु ने दीवार को छूने के लिए हाथ बढ़ाया। 'प्लास्टर इतना चिकना और मोती जैसा बनाने के लिए उन्होंने चूने में कम से कम दस लाख अंडे की सफेदी मिलाई होगी।' उसकी आवाज़ में उसकी आँखों में विस्मय झलक रहा था।

डॉ. सैमुअल ने एक मक्खी को भगाया मानो सेतु की टिप्पणी को खारिज करना चाह रहे हों। 'मैं सहमत हूं,

Machine Translated by Google

दीवारें बहुत अद्भुत हैं, लेकिन मैं तुम्हें इसीलिए यहां नहीं लाया हूं।'

वह रुक गया। एक बार फिर, उसका हाथ हवा में उड़ गया ताकि भटकी हुई मक्खी को दूर भगाया जा सके।

सेतु ने मुस्कुराहट दबा ली और सोचा कि कभी-कभी अच्छे डॉक्टर
डॉक्टर ने कहा, "कुछ साल पहले।"

सेतु दीवार के सहारे झुक गया। अब तक उसे डॉक्टर की कहानी सुनाने की आदत का पता चल चुका था। कैसे हर पल, हर भावना, हर भाव, यहाँ तक कि हर अनकही बात पर भी वह ध्यान देता था।

'कुछ साल पहले,' डॉक्टर ने कहा, एक बेंच पर बैठते हुए। उसकी बेंच। बेंचों की सिर्फ़ चार पंक्तियाँ थीं। बाकी लोग फर्श पर बैठते थे।
'नासरत भगवान के श्राप से पीड़ित था। भगवान ने नासरत को श्राप क्यों दिया, मुझे नहीं पता। इस शहर में पापियों की संख्या उतनी ही है जितनी इस आकार के किसी भी अन्य शहर में है।
नाज़रेथ सोडोम नहीं है, और फिर भी हमारे यहाँ एक वर्ष में चार बार हैजा की महामारी फैली और...' डॉक्टर उस स्मृति की भयावहता से अभिभूत होकर

रुक गया।

'और...' सेतु ने कहा। क्योंकि यह भी सेतु की भूमिका थी जिसे निभाना था: मंत्रमुग्ध दर्शक और मुख्य अनुबोधक।

'और जब ऐसा लगा कि ईश्वरीय हस्तक्षेप के अलावा कुछ भी मदद नहीं करेगा, तो यहाँ के पादरी, फादर हॉवर्ड ने एक भेंट चढ़ाई। उन्होंने कसम खाई कि पूरा पैरिश हर दिन पाप स्वीकार करने आएगा। हमें छोड़ दो, हम अपने पापों को स्वीकार करेंगे और अपने अपराधों के लिए प्रायश्चित करेंगे, उन्होंने प्रार्थना की। वह अपने घुटनों पर गिर गए और मुझे बताया गया कि वह पूरे एक सप्ताह तक वहाँ रहे, विनती करते रहे और प्रार्थना करते रहे। और महामारी खत्म हो गई। अब हैजा साल में सिर्फ एक बार आता है।'

'मैंने सोचा था कि भगवान ने हैजा को हमेशा के लिए खत्म कर दिया होगा,
अब यहाँ कोई पापी नहीं है,' सेतु खुद को रोक न पाते हुए बुदबुदाया।

डॉ. सैमुअल ने भौंहें सिकोड़ीं। 'सेठ, मैं तुमसे इस बारे में कुछ समय से बात करना चाह रहा था। मैंने देखा है कि तुम मुश्किल से अपनी बाइबल जानते हो। तुम प्रार्थना करने में कोई रुचि नहीं दिखाते। और सबसे बुरी बात यह है कि तुम ईश्वर की इच्छा पर सवाल उठाते हो। वास्तव में, तुम एक सच्चे ईसाई की तरह व्यवहार नहीं करते। तुम सोच सकते हो कि ईश्वर के अस्तित्व पर सवाल उठाना फैशन बन गया है। लेकिन यह सही नहीं है, मेरा विश्वास करो। मैंने इतनी सारी बीमारियाँ और निराशाएँ देखी हैं, और फिर भी मैंने कभी ईश्वर से नहीं पूछा कि ऐसा क्यों है। तुम देखते हो, ईश्वर रहस्यमयी तरीके से काम करता है।' सेठू को एहसास हुआ कि वे खतरनाक क्षेत्र में कदम रख रहे थे, इसलिए उसने चर्चा को दूसरी दिशा में

मोड़ दिया। 'डॉक्टर, मैं चिंतित हूँ। महामारी मुझे डराती है। हम क्या करने जा रहे हैं?' डॉ. सैमुअल उठे और सेठू के पास आए। उन्होंने अपने कंधों को सीधा किया और अपना गला साफ किया। फिर उन्होंने सेठू के गले में हाथ डाला और कहा, 'थोड़ी देर यहाँ रुको। अपने

घुटनों पर बैठो और प्रार्थना करो। ईश्वर से बात करो ताकि वह तुम्हारा मन ठीक कर सके।

Machine Translated by Google

आराम करो। जहाँ तक महामारी का सवाल है, चिंता मत करो। हम हमेशा की तरह इसका सामना करेंगे।
कल हमें सीमांत क्षेत्रों में जाना है। रिपोर्टें मिली हैं कि पूरे के पूरे गांव प्रभावित हैं।'

'बिना दवाइयों के हम क्या करेंगे?' सेतु की आवाज़ तेज़ हो गई। लेकिन डॉ. सैमुअल पहले ही चले जा रहे थे। वे इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं, सेतु ने गुस्से में कहा।
वह खुद को कैसे धोखा दे सकता है कि हम इसका सामना कर सकते हैं? वह पागल है।
सुबह-सुबह होप और चैरिटी डॉ. सैमुअल के दरवाजे पर आईं, डर के मारे उनकी आवाज़ें पतली तीखी हो गईं। वे चिल्लाईं, 'डॉक्टर, यह फेथ है।'

फेथ अपने बिस्तर पर लेटी हुई थी, थकावट से लंगड़ा रही थी। 'पेचिश बहुत गंभीर है। उसे अभी तक उल्टी नहीं हुई है,' होप ने बड़बड़ाते हुए कहा।
'क्या उसे टीका नहीं लगा था?' डॉ. सैमुअल ने अस्थायी IV लाइन ठीक करते हुए पूछा।

'नहीं।' दोनों महिलाओं ने सिर हिलाया। 'जब टीके लगाए जा रहे थे, तब उसे बुखार था। इसके अलावा, आप जानते हैं कि वह कैसी है। उसने कहा कि यह बीमारी उसे नहीं होगी, भगवान उसे सुरक्षित रखेगा।'

सेतु ने उन्हें चौंककर देखा। 'तुम्हें पहले से पता होना चाहिए था। क्या तुम उसे मना नहीं सकते थे?' डॉ. सैमुअल ने कुछ नहीं कहा। फिर उसने आह भरी और कहा, 'शायद
भगवान ने उसे थोड़े और समय तक अपनी सेवा में रखने के लिए कहा था। तुम देखो, मैंने हम पाँचों के लिए पर्याप्त दवाएँ रखी थीं।

महामारी के चलते मैंने सोचा कि अगर हममें से कोई एक मर भी गया तो कोई मदद नहीं मिलेगी।'
फेथ ठीक हो गई, लेकिन डॉक्टर और सेथु को जाने में तीन दिन लग गए। उनके जाने से एक दिन पहले, आपूर्ति की एक खेप और पाँच डॉक्टरों की एक टीम पहुँची। 'अब तुम्हें समझ में आया कि मैं क्या कहना चाहता हूँ?' डॉ. सैमुअल ने सेथु से कहा। 'ईश्वर के अपने कारण हैं, अपने तरीके हैं।'

डॉ. सैमुअल ने उन तीन डॉक्टरों से कहा, जो उनके साथ एम्बुलेंस में गांव गए थे, 'हम एक गांव में शिविर लगाएंगे और वहीं से काम करेंगे।' फेथ, होप और चैरिटी को अस्पताल में दो डॉक्टरों की मदद के लिए छोड़ दिया गया था।

डॉ. सैमुअल ने कहा, 'काश, हम बहनों में से किसी एक को साथ ले आते, लेकिन अस्पताल में उनकी ज़रूरत है।' उन्होंने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, 'इसके अलावा, अगर वे हमारे साथ जंगल में रातें बिताती हैं, तो इससे उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान होगा।

'कैंप के पास के गांव में एक महिला है। मैरी। वह हमारी मदद करेगी। वह बहुत ही धार्मिक और मेहनती महिला है। मैंने उसे कल सुबह कैंप में रिपोर्ट करने के लिए पहले ही संदेश भेज दिया है।'

मैरी ने ऐसा नहीं किया। तभी सेतु को एहसास हुआ कि उससे मैरी की जगह लेने की उम्मीद की जाएगी।

Machine Translated by Google

पहले टेनेमेंट में डॉ. सैमुअल ने उसे हैजा के पर्यायवाची शब्द से परिचित कराया: चावल के पानी जैसा मल। 'यह देखो।' उसने बहुत ही तथ्यात्मक ढंग से एक आदमी की ओर इशारा किया जो मल में लेटा हुआ था। अस्पताल के वार्डों में कितनी ही तकलीफें क्यों न हों, सेतु ने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था। 'बलगम के कुछ अंशों के साथ साफ़ तरल पदार्थ। कोई गंध नहीं।

कोई खून नहीं। सिर्फ़ शरीर से तरल पदार्थ का बहना। क्लासिक हैजा पेचिश!'

सेतु उल्टी करने के लिए झोपड़ी से बाहर भागा।

डॉ. सैमुएल ने अपना चश्मा नीचे खिसकाया और अपनी नाक को रगड़ा।

'तुम्हें इसकी आदत डालनी होगी,' उसने कहा। 'अब मुझे IV लाइन दे दो। बैक्टीरिया उसे नहीं मारेंगे, लेकिन निर्जलीकरण उसे मार देगा। संतुलन को बहाल करने और रक्त की मात्रा बढ़ाने के लिए इलेक्ट्रोलाइट्स के साथ IV तरल पदार्थ, और बैक्टीरिया के आगे प्रसार को रोकने के लिए दवा। हम बस इतना ही कर सकते हैं। अगर भगवान चाहेंगे, तो वह बच जाएगा।' भगवान ने चाहा, और तीन दिनों तक सेतु गांव की झोपड़ियों और घरों में डॉ. सैमुअल के पीछे-पीछे चलता रहा। उसने अपने मुंह में पित्त को निगल लिया, हर बार कीटाणुनाशक से अपने हाथों को अच्छी तरह से धोया और डॉ. सैमुअल को

आशा, विश्वास और दान प्रदान करने के लिए इधर-उधर भागता रहा। 'जब मैं कर सकता हूँ, मैं भाग जाऊंगा,' सेतु ने एक मरीज को साफ करते हुए खुद से कहा। 'मैं अपने चाचा के खेतों में बंधुआ मजदूर बनकर रहना पसंद करूंगा, बजाय मल साफ करने और उल्टी पोंछने के।'

घृणा लचीली होती है। यह फैलती है, हर विचार में घुस जाती है, मन को नष्ट कर देती है और हर जागते पल को अपनी अजीबोगरीब बदबू और स्वाद से भर देती है।

घृणा आपके मुंह को दूषित करती है, आपकी नाक को भर देती है और आपके नथुने बंद कर देती है और फिर एक दिन यह खत्म हो जाती है। और इस तरह सेतु ने भी उस जगह करुणा की खोज की जहां घृणा थी। घृणा की जगह चिंता ने ले ली और डर की जगह इस चिंता ने ले ली कि वह पर्याप्त काम नहीं कर पाएगा।

दवा लगभग खत्म हो चुकी थी और IV बोतलें घटकर एक दर्जन रह गई थीं। डॉ. सैमुअल को उनकी कम बोतलें दिखाते हुए उन्होंने कहा, 'यह पर्याप्त नहीं है।'

भंडार.

डॉ. सैमुअल ने सिर हिलाया और 'अगर भगवान यही चाहते हैं...' के अलावा कुछ नहीं कहा। उस रात सेतु सो नहीं सका। वह कैसे सो सकता था? पिछले कुछ

दिनों में मौत ने खुद को उसके सामने प्रकट कर दिया था। मौत का एक नया चेहरा जिसे तरल पदार्थों से पराजित किया जा सकता था।

अगली सुबह डॉ. सैमुअल उसे वापस पहले वाले घर में ले गए। उन्होंने सेतु द्वारा देखे गए पहले मरीज़ की ओर इशारा करते हुए कहा, 'इसे देखो।' अरासु। राजा। सेतु ने उसे चावल के पानी के मल वाला अरासु समझा।

वह आदमी उठकर बैठ गया। कुछ दिनों में वह काम पर वापस आ जाएगा। 'तुम हो

Machine Translated by Google

'भगवान का भेष बदला है,' अरासु ने डॉक्टर के पैर पकड़ते हुए रोते हुए कहा।

डॉक्टर ने विरोध करते हुए कहा, 'चुप रहो। भगवान हमारी शरणस्थली और शक्ति हैं, जो हमारे लिए सदैव उपस्थित रहते हैं।'
संकट में सहायता करो। 21 भजन 46.1. मैं तो बस परमेश्वर का एक साधन हूँ।'

सेतु ने फर्श की ओर देखा और सोचा कि अगर उसके पास IV बोतलें नहीं होंगी तो भगवान का यंत्र कुछ खास नहीं कर पाएगा। इसलिए सेतु ने वह करने की ठानी जो उसे पता था कि उसे करना ही चाहिए। वहां मौजूद किसी और से ज़्यादा, सेतु को समझ में आया कि ज़िंदगी कितनी कीमती है। बीमारी के उसे घेरने से पहले, उसे आसन्न संकट से निपटने का कोई रास्ता निकालना था ताकि वे सभी बच सकें। और इसलिए सेतु ने अपनी पुनर्जन्म वाली पहचान में एक और हिस्सा जोड़ दिया।

उसने एम्बुलेंस को क्षितिज की ओर बढ़ाया। उसके पास कोई योजना नहीं थी, लेकिन जब तक वह वहाँ पहुँचेगा, उसके पास एक योजना होगी, उसने खुद से कहा।

पम्बन क्वारंटीन कैंप में काफी सामान था। उसे यह भी पता था कि स्टोरकीपर की चाबियाँ कहाँ हैं। आखिरकार, यही उसका काम था। वह उस जगह के हर कोने को जानता था, और हालाँकि उसने खुद से कहा था कि वह कभी वापस नहीं जाएगा, लेकिन उसे यह आखिरी बार वहाँ जाना था।

सेतु छत्तीस घंटे बाद शिविर में वापस लौटा। उसने सोचा कि शायद बहुत देर हो चुकी है। या शायद नहीं। अभी भी बहुत से लोग अपने घरों में बीमार पड़े थे। डॉ. सैमुअल ने सेतु द्वारा लाए गए सामानों को देखा। वह सेतु की आँखों में आँखें नहीं मिला रहा था और इसके बजाय जितनी जल्दी हो सके दवाइयाँ देने में लग गया।

उस रात बाद में, उसने सेतु को अपने तंबू में बुलाया। 'यह वह दिन है जिसे प्रभु ने यादगार बनाया है। हमारे लिए कितनी बड़ी खुशी है। भजन संहिता 118.24 जेरूसलम बाइबिल,' उसने शुरू किया। 'जब परमेश्वर ने तुम्हें मेरे पास भेजने का फैसला किया, तो मुझे संदेह था। तुम्हारा मन एक अनिच्छुक आत्मा था, भले ही तुम्हारा शरीर स्वेच्छा से काम करता था। लेकिन अब मैं संतुष्ट हूँ। परमेश्वर जानता था, भले ही मैं न जानता हो, कि तुम एक सच्चे ईसाई हो। मैं यह नहीं पूछूँगा कि तुम कैसे या कहाँ से सामान लाए। मैं परमेश्वर की उदारता पर सवाल नहीं उठाऊँगा।

आप सबसे बेहतर जानते हैं। यह आपका रहस्य है, लेकिन अगर इसमें कोई पाप शामिल है, तो मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं भी उतना ही बोझ उठाऊँगा जितना आप। क्या हम प्रार्थना करें?'

आज्ञाकारी होकर सेतु घुटनों के बल बैठ गया। उसे खुशी थी कि डॉक्टर उससे बहुत नाराज़ नहीं था। और उसने वह चीज़ वापस नहीं भेजी जिसके लिए उसने अपनी जान जोखिम में डाली थी।

अगले दिन डॉक्टर ने उसके लिए खबर दी। 'फ्रांसिसकन सिस्टर्स कल यहाँ आएंगी। वे डॉक्टरों और सामान की एक टीम लेकर आएंगी। हम वापस जा सकते हैं।
एक बार जब सब कुछ ठीक हो जाए, तो हमें एक और यात्रा करनी होगी। इस बार अरबीपट्टनम। यह आपके लिए काफी अनुभव होगा। जब मैं पहली बार वहां गया, तो मुझे लगा कि मैं किसी दूसरी जगह पर आ गया हूं। लोग, घर, गलियां, सब कुछ अरेबियन नाइट्स के पन्नों से निकला हुआ है। बहुत अजीब! यह एक छोटे से राज्य की तरह है जिसके अपने नियम हैं। उदाहरण के लिए, सभी अजनबी लोग अजीब होते हैं।

Machine Translated by Google

मुझे सूर्यास्त तक शहर छोड़ने की उम्मीद थी। लेकिन वे मुझ पर पूरा भरोसा करते हैं और इसलिए मुझे वहाँ रात बिताने की अनुमति है।'

सेतु मुस्कुराया। उसे खुशी हुई कि वे अपने रिश्ते में दूसरे स्तर पर पहुंच गए हैं। डॉक्टर ने उस पर इतना भरोसा किया कि उसे अरबीपट्टनम ले गया। सेतु ने कोंडाई बहनों से अरबीपट्टनम के बारे में बहुत कुछ सुना था। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ किसी अजनबी का स्वागत नहीं किया जाता था। जहाँ की गलियाँ रहस्य में डूबी हुई थीं और उन लोगों के वंशजों से भरी हुई थीं जो घोड़ों और घोड़ों दोनों पर सवार थे।

समुद्र.

Machine Translated by Google

हास्यं

ध्यान से देखो। यह वह नहीं है जो तुम सोच रहे हो। यह तो उल्लास है - इसमें क्या है, तुम्हें लगता है? हंसी तो हंसी है। चेहरे की मांसपेशियों में ऐंठन, आंखों का सिकुड़ना, मुंह का वेश्या की जांघों की तरह खुला रहना...

वहाँ रुकें।

मुझे देखो। यही तुम करो। अपनी भौंहों को थोड़ा ऊपर उठाओ, अपनी नाक के पुल पर ऊपर और दूर के कोनों पर नीचे। पलकों को थोड़ा बंद रखें और होंठों को दोनों तरफ़ नीचे की ओर खींचें। ऊपरी होंठ की मांसपेशियों को अंदर की ओर दबाएँ।
यह हास्य है।

मुंह पर ध्यान दें। यह केवल खाने, थूकने और आवाजें निकालने का एक छिद्र नहीं है। यह मुंह ही है जो हास्य की तीव्रता पर मुहर लगाता है।
अपनी सांस को गले से नाक की ओर जाने दें। दबाव हास्य की डिग्री है।

अब इसे देखिए। यह उल्लास है। आप इसे दिसंबर की हवाओं के साथ आने वाली शरारतों में देख सकते हैं। तमिलनाडु के मैदानी इलाकों से, वे पलक्कड़ के दर्रे से होकर रेंगते हुए इस तरफ आते हैं, और एक नए नाम के साथ इस तरफ आते हैं: थिरुवधीरा काटू। हवाएँ जो थिरुवधीरा के त्यौहार के लिए तैयार होकर आती हैं, जब पेड़ों पर विशाल झूले सजते हैं। हवाएँ जो युवतियों और उनके सपनों को झुलाने के लिए तैयार होकर आती हैं।

लेकिन सबसे पहले हवा पेड़ों के बीच से चटकती है; पत्तियों में एक खास तरह की भंगुरता होती है, जो गर्मी के महीनों की तीव्रता का पूर्वाभास कराती है। यह शाखाओं को उखाड़ती है, झाड़ियों को हिलाती है, सूखे पत्तों को पलटती है, सामने के आँगन से धूल के छोटे-छोटे गुबार उठाती है जिसे अभी तक झाड़ा नहीं गया है। ताड़ और नारियल के पत्ते टूटते हैं; गोभी की तितलियाँ घुटनों के स्तर पर मंडराती हैं जैसे कि उन्हें पता हो कि अगर वे विपरीत दिशा की हवाओं में फंस गईं, तो हवा उन्हें इधर-उधर फेंक देगी। यह सब भी आनंद है।

खुशी की खड़खड़ाहट से अलग शांत मुस्कान होती है। धूप में सूख रही काली मिर्च और पेड़ों पर पक रही इमली की फलियों, शाखाओं पर बिखरे आम के फूलों, पेड़ों पर लटकते काजू के फूलों और चुपचाप बड़े होते कटहल के फलों के बारे में सोचिए।

फिर उपहास होता है। आप इसे तब देखेंगे जब दिन के अंत में, हवा नए जोश के साथ पहाड़ी से ऊपर उठती है और गर्मी को दूर ले जाती है। इसे एक निश्चित हाथ से तितर-बितर करते हुए, सभी और हर चीज के प्रति स्पष्ट उपेक्षा दिखाती है।

Machine Translated by Google

जो हमें तिरस्कार की ओर ले जाता है - नीची नज़र से देखना। निंदा करना। और तिरस्कार का एक और रूप है। इसके लिए मैं आपको नारियल के ताड़ के पत्तों की तलाश करने का सुझाव देता हूँ। देखिए, यह वहाँ है, ओलानजाली। भारतीय वृक्ष पाई। क्या आपको इसकी पूंछ के पंख दिखाई दे रहे हैं? अब इसकी कर्कश ध्वनि सुनें। कि-कि-कि...क्या यह तिरस्कार की आवाज़ नहीं है?

पक्षियों का रिवाज है कि वे बैठते हैं। लेकिन यह नहीं। इसमें रिवाज के प्रति कोई सम्मान नहीं है। इसके बजाय, पक्षी की बेपरवाही को देखिए, जब वह ताड़ के पत्ते की नोक पर स्केटिंग और फिसलता है और उससे लटकता है।

तो आप देखिए, हास्यम् भी यही हो सकता है। परंपरा के प्रति अवमानना।

राधा

मैं श्याम के बगल में लेटी हूँ, सो नहीं पा रही हूँ। श्याम और मैं, हम दोनों सोने से पहले की रस्में निभाते हैं।
आखिरकार, हमारी शादी को आठ साल हो गए हैं, और दिनचर्या के रीति-रिवाजों से बचना संभव नहीं है।

मैं बिस्तर के बाईं ओर लेटती हूँ और वह दाईं ओर। मैं बिस्तर पर तब तक पढ़ती हूँ जब तक मेरी आँखें झुकने न लगें और फिर मैं बेडसाइड लैंप बंद करके सो जाती हूँ। आमतौर पर तब तक श्याम सो चुका होता है। वह अपनी बाँह मेरे मध्य में रखकर करवट लेकर सोता है, उसकी ठोड़ी मेरे कान को सहलाती है। रातों को जब वह कामुक महसूस करता है, तो वह मेरी ऊपरी बाँह को तब तक सहलाता है जब तक मैं यह दिखावा नहीं कर सकती कि मुझे नहीं पता कि वह मुझसे क्या उम्मीद करता है। फिर मैं किताब नीचे रख देती हूँ और उसकी ओर मुड़ जाती हूँ। यह सब इस रस्म और दिनचर्या का हिस्सा है जिसे विवाह कहा जाता है। हर चीज़ का अपना स्थान और क्षण होता है।

मैं यह नहीं कह सकता कि मैं श्याम से नाखुश हूँ। अगर कोई ऊँचाई नहीं है, तो कोई भी नहीं है
कुछ लोग इसे कंटेंट भी कहेंगे।

श्याम सो रहा है। उसकी बाँह मुझे बिस्तर से चिपकाए हुए है। उसका बिस्तर। मुझे लगता है कि श्याम के लिए मैं एक संपत्ति हूँ। एक बहुत ही प्रिय संपत्ति। उसके जीवन में यही मेरी भूमिका है। उसे कोई बराबरी नहीं चाहिए; उसे एक मालकिन चाहिए। कोई ऐसा जो उसे खुश करे और कोई ऐसा जो उसे अपनी स्त्रैण हरकतों से खुश करे। मैं स्कूल में जीवविज्ञान परियोजनाओं के दौरान किए गए कुछ क्रूर कृत्यों के बारे में सोचती हूँ। मैं उस तितली के बारे में सोचती हूँ जिसे मैंने जीवित रहते हुए पकड़कर बोर्ड पर पिन किया था, उसके पंख इस तरह फैले हुए थे कि उस पर निशान दिखाई दे रहे थे, इस बात से बेखबर कि कहीं भीतर, एक छोटा सा दिल धड़क रहा था, जो उड़ने के लिए तरस रहा था। अब मैं वही तितली हूँ।

एक दिन।

क्रिस को आए हुए सिर्फ़ एक दिन हुआ है। मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ और स्टेशन पर उसकी छवि फिर से देखता हूँ, उसके बालों में रोशनी फँसी हुई है, उसके चेहरे पर मुस्कान की परछाई है

Machine Translated by Google

मैं उस असंतुलित मुस्कान और ढीले-ढाले चाल को देखता हूँ।

चौबीस घंटे हो गए जब से वह कॉटेज नंबर 12 में आया और मेरी आत्मा में समा गया।

छियासी हजार चार सौ सेकंड हो गए जब से मुझे एहसास हुआ कि मेरा जीवन खत्म हो जाएगा
दुबारा ऐसा कभी मत करना।

मुझे समझ नहीं आ रहा कि मुझ जैसे विवाहित महिला और पत्नी के साथ क्या हो रहा है।
जब मैंने श्याम से शादी की थी, तो मैंने कसम खाई थी कि मैं कभी भी रीति-रिवाजों का उल्लंघन नहीं करूंगी। मैं सम्मान के प्रति इतनी घृणा करने वाली, परंपरा के प्रति इतनी अवमानना करने वाली कैसे हो गई?

आज शाम को हम चाचा के घर से नदी में उतरने वाली सीढ़ियों पर बैठ गए। शाम ढल रही थी। पक्षियों के झुंड की सिल्हूट, जो घर की ओर उड़ रहे थे, शांत गोधूलि आकाश के खिलाफ स्पष्ट और अंधेरे में दिखाई दे रही थी। रिसॉर्ट के मैदान से, हवा ने चमेली की खुशबू को अपने साथ खींच लिया और इसे अपने साथ फैला दिया।

हम पर शांति छा गई, और वह सब शांत हो गया जो केवल मित्रवत था।

मैं आसमान की ओर देखता रहा, एक शब्द, एक मुहावरा खोजता हुआ, जो हमारे बीच के मूक तनाव को तोड़ सके। पश्चिमी क्षितिज गुलाबी लाल रंग की लकीरों से घिरा हुआ था और उस पर पीतल के रंग के बादलों का ढेर था। मेरी माँ के पास एक साड़ी थी जो उसी रंग से बनी थी। मैंने सोचा कि क्या मैं उसका ज़िक्र कर सकता हूँ। कुछ सामान्य सी बात, जैसे कि प्रकृति साड़ी के डिज़ाइन को भी कैसे प्रेरित करती है। फिर मैंने देखा कि रंग बह गया था जिससे बाकी आसमान गुलाबी रंग का हो गया था।

मैंने कहा, 'आज रात को मैकेरल की अच्छी पकड़ होगी।'

मैंने शांति को भरने की कोशिश करते हुए कहा, 'इसे मैकेरल स्काई कहते हैं।' मेरे कानों को मेरी बात मूर्खतापूर्ण लगी।

लेकिन इस चुप्पी ने मुझे डरा दिया। अगर चुप्पी का मतलब दो लोगों के बीच दूरी पैदा करना होता है, तो यह चुप्पी उस दूरी को पाटने का काम करती है, जो सही मायने में मौजूद होनी चाहिए।

क्रिस ने मेरी तरफ देखा। अंधेरे में मैं उसका चेहरा साफ नहीं देख पाया। लेकिन मैं
जब उन्होंने पूछा, 'क्या आप मछली पकड़ते हैं?' तो मैं उनकी आवाज़ में हंसी सुन सकता था। मैंने ऐसा दिखावा किया कि
मैंने उनकी चिढ़ाने वाली आवाज़ नहीं सुनी।

'मैं सिर्फ़ सुनी-सुनाई बातें दोहरा रहा हूँ,' मैंने कहा। मेरी उंगलियाँ सागौन के पत्ते को टुकड़े-टुकड़े कर रही थीं। 'मेरे दादाजी हर बार यही कहते थे कि आसमान का रंग इस रंग का हो जाता है।' और फिर, अपना सिर हिलाते हुए, क्योंकि मैं इस आदमी के साथ मज़ाकिया मज़ाक करने से खुद को रोक नहीं पा रहा था, जो मेरे अंदरूनी अंगों के साथ अजीबोगरीब हरकतें कर रहा था, मैंने कहा, 'और नहीं, मुझे नहीं लगता कि वह मछली पकड़ता था।'

मैंने अपने होंठ काटे। मेरा ऐसा कहने का कोई इरादा नहीं था। वैसे भी, मैं क्या कर रहा था, बैठा हुआ
यहाँ शाम के अंधेरे में उसके साथ? अगर किसी ने हमें देख लिया तो क्या होगा? श्याम को यह अच्छा नहीं लगेगा।

क्रिस उठ खड़ा हुआ। मैं स्तब्ध रह गई। क्या वह जाने के लिए तैयार हो रहा था? कृपया, नहीं, थोड़ी देर रुको, मैंने अपने मन में विनती की। मैं इस बेचैन मूड को नहीं समझ पा रही थी। मैं जानती थी कि मुझे नहीं रुकना चाहिए और फिर भी मैं नहीं चाहती थी कि वह जाने की इच्छा करे।

Machine Translated by Google

वह कुछ देर तक दूर तक देखता रहा और फिर दीवार पर जाकर बैठ गया।

जो ढलान पर था। मैं अब उसकी आँखों से बच नहीं सकता था।

'क्या तुम्हें कोई बात परेशान कर रही है?' उसने पूछा।

मैंने सीढ़ियों के नीचे पानी के कुंड को देखा। मैं कहना चाहता था, तुम।
तुम मेरे सिस्टम में घुसने की कोशिश कर रहे हो। तुम यह सब किसी ऐसे व्यक्ति की तरह सहजता से कर रहे हो जो यह सब करना जानता हो। क्या तुम एक अनुभवी फ़्लर्ट हो? महिलाओं को बहकाने वाले? या यह ऐसा कुछ है जिस पर न तो तुम्हारा और न ही मेरा कोई नियंत्रण है?

मैंने गहरी साँस ली। अपने पति श्याम के बारे में सोचो। श्याम के बारे में सोचो, जो
उसने तुम्हारे लिए बहुत कुछ सहा है। तुम उसके साथ ऐसा कैसे कर सकते हो, मैंने खुद से पूछा।

'नहीं, तुम क्यों पूछ रहे हो? मैं ठीक हूं,' मैंने कहा।

'तो फिर क्या हुआ? तुम अचानक चुप हो गए हो। क्या मैंने तुम्हें बुरा मानने के लिए कुछ कहा?' मैंने मुँह फेर लिया, अपने भारीपन को

समझाने की कोशिश करते हुए। एक शब्द, एक मुहावरा, एक सहारा जो उनका ध्यान भटका सके। मैं देख सकता था कि चाचा अपने बरामदे में खड़े थे। वे हमारी तरफ देख रहे थे।

'मैं समझ नहीं पाया,' मैंने कहा। 'क्या कोई ऐसी बात है जो आप हमें नहीं बता रहे हैं? क्यों?
क्या तुम्हें अंकल के जीवन के बारे में सब कुछ जानने की ज़रूरत है? इसका क्या महत्व है?'

'राधा, हर लेखक का काम करने का अपना तरीका होता है। यह मेरा तरीका है। मुझे जिस व्यक्ति की प्रोफ़ाइल बनानी है, उसके बारे में मुझे सब कुछ जानना होगा। आप यकीन नहीं करेंगे कि जब मैं किसी विषय पर शोध कर रहा होता हूँ, तो मैं किस हद तक जाता हूँ; मैं किस तरह की बकवास सहने को तैयार रहता हूँ। लेकिन ऐसा ही है। मुझे पता है कि मेरे द्वारा एकत्र की गई अधिकांश जानकारी अप्रासंगिक हो सकती है, लेकिन मुझे यह सब जानने की ज़रूरत है, तभी मैं यह तय कर सकता हूँ कि मुझे क्या रखना है और क्या त्यागना है।' क्रिस की आवाज़ में कोई भाव नहीं था।

मुझे लगा कि हमारे बीच दूरियाँ बढ़ गई हैं। मैं चाहती थी कि उसका हाथ अपनी साड़ी के पल्लू से बाँधकर उसे अपने साथ बाँध लूँ। 'ओह, मेरा ऐसा मतलब नहीं था,' मैंने जल्दी से उसे समझाया।

मैंने कहा, 'मैंने कभी अंकल को अपने बारे में बात करते नहीं सुना।' 'मैं उनके बारे में वही जानता हूँ जो परिवार में हम सभी जानते हैं। लेकिन आज उन्होंने जो कुछ आपको बताया, मैंने उन्हें उसके बारे में कभी बात करते नहीं सुना।'

क्रिस ने सोच-समझकर अपनी ठोड़ी खुजाई। 'क्या तुम्हें यकीन है कि यह उसके बारे में है? मुझे इतना यकीन नहीं है... मैं उसकी बातचीत में बाधा नहीं डालना चाहता था या उसे नाराज़ नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा।
लेकिन ईमानदारी से, यह सब क्या है? आप जानते हैं, जब मैंने उसे यह कहते हुए सुना कि "शुरुआत में एक महासागर था", तो मैं लगभग दंग रह गया। वह क्या कहना चाह रहा है, मैंने सोचा...यह किसी दक्षिण अमेरिकी उपन्यास की तरह है!' मैंने उसे बीच में रोकने के लिए आगे झुककर कहा। 'यह आसानी से समझा जा सकता है। यदि आप

कथकली नाटक का लिब्रेटो पढ़ते हैं, तो यह हमेशा एक श्लोक से शुरू होता है जो नाटक की कहानी को संदर्भ में रखता है। श्लोक बल्कि साहित्यिक है; यह कहानी को एक नयापन देता है।

Machine Translated by Google

सेटिंग... बस यही सब है। सच में! यह जादुई यथार्थवाद नहीं है। बस शुद्ध कथकली तकनीक है।'

मैं मुस्कुराया। क्रिस का हैरान होना जायज़ था। कौन नहीं होगा?

'राधा।' जब क्रिस ने मेरा नाम लिया तो मैं काँप उठी। उसकी आवाज़ गुप्त स्थानों को खोजने वाली उँगली की तरह थी। 'राधा, सेतु कौन है जो सेठ बन गया? क्या संबंध है?'

क्रिस ने अपनी जेब से टेप रिकॉर्डर निकाला और कुछ सेकंड के लिए रिवाइंड बटन दबाया। फिर उसने टेप चलाया। चाचा की आवाज़ उभरी, थोड़ी पतली, फिर भी सच्ची: सेतु छत्तीस घंटे बाद शिविर में वापस आया। शायद बहुत देर हो चुकी है, उसने सोचा। या शायद नहीं। अभी भी बहुत से लोग अपने घरों में बीमार पड़े थे। डॉ. सैमुअल ने सेतु द्वारा लाए गए सामानों को देखा। वह सेतु की आँखों में आँखें नहीं मिलाना चाहता था और इसके बजाय जितनी जल्दी हो सके दवाइयाँ बांटना शुरू कर देता था। उस रात बाद में, उसने सेतु को अपने तंबू में बुलाया। “यह वह दिन है जिसे भगवान ने यादगार बनाया है। हमारे लिए कितनी बड़ी खुशी है।”

'सेठ कौन है?' क्रिस ने फिर पूछा।

मैंने सुधारते हुए कहा, ‘सेतु, चाचा के पिता हैं। मेरे दादाजी हैं।’ ‘ओह, मैं समझ गया।’ क्रिस राहत महसूस कर रहा
था।

'मुझे नहीं लगता कि तुम ऐसा सोचते हो,' मैंने आगे झुकते हुए कहा। 'क्रिस, क्या तुम्हें याद है कि अंकल ने तुम्हें अपनी कहानी सुनाने के लिए सहमत होने पर क्या कहा था? कि वह न केवल अपने जीवन की व्याख्या करेंगे, बल्कि इसमें शामिल सभी लोगों के जीवन की भी व्याख्या करेंगे। यह कथकली तकनीक का हिस्सा है। किरदार के प्रकट होने और वास्तविक कहानी सामने आने से पहले दृश्य को सेट और समझाया जाना चाहिए। तभी दर्शक समझ पाएंगे कि कोई किरदार किसी खास तरीके से क्यों व्यवहार करता है।' मैं रुका और उसके चेहरे को देखा। क्या वह ऊब गया था?

'नहीं, नहीं,' क्रिस ने कहा, एक और जेब से नोटपैड निकालते हुए। उसके हाथ में एक पेंसिल का छोटा सा टुकड़ा था। 'आगे बढ़ो, यह दिलचस्प है।' मैं पत्थर की सीढ़ियों पर पीछे झुक गया। 'मेरा सुझाव है कि आप भारतीय पौराणिक कथाओं

का एक क्रैश कोर्स करें, अन्यथा आप जो मैं अभी कह रहा हूँ या जो अंकल आपको अगले कुछ दिनों में बताएंगे, उसमें से ज़्यादा कुछ नहीं समझ पाएँगे।' वह मुस्कुराया। 'भारतीय पौराणिक कथाओं का मेरा ज्ञान पर्याप्त है। आप कह रहे थे...' 'मैं उदाहरण के लिए रामायण में कह रहा था - आप रामायण जानते हैं, है न? या, कम से कम, इसके बारे में? खैर, वैसे भी, राम के एक

पत्थर पर पैर रखने और पत्थर के जीवित होकर अहल्या बनने का एक प्रसंग है। कहानी यह है कि ऋषि गौतम की पत्नी अहल्या को उसके पति ने देवताओं

के राजा इंद्र के साथ बिस्तर पर पाया था, और इसलिए उसने उसे पत्थर बनने का श्राप दिया था।

Machine Translated by Google

केवल जब राम ने अनजाने में उस पर पैर रखा - और राम कई युगों बाद आए - तब वह श्राप से मुक्त हुई। कथकली नाटक का लिब्रेटो यही कहता है। लेकिन एक अच्छा कथकली नर्तक यह व्याख्या कर सकता है कि यह प्रकरण कैसे हुआ। वह दिखाएगा कि कैसे एक दिन, जब अहिल्या फूल तोड़ रही थी, भगवान इंद्र, जो अपने सफेद हाथी पर आसमान में भ्रमण कर रहे थे, ने नीचे देखा और देखा कि यह महिला उन्हें बुला रही है। ऊपर से फूल तोड़ने के लिए आप जो इशारा करते हैं, वह उस इशारे जैसा लग सकता है जिसका उपयोग आप किसी को ऊंचाई से नीचे बुलाने के लिए करते हैं। इंद्र महिला की ओर आकर्षित होते हैं। फिर भी, वह खुद की ओर इशारा करते हुए पूछते हैं - मैं? क्या तुम मुझसे बात कर रहे हो?

'और अहल्या ने वही दोहराया जो उसे आमंत्रण लगा। इसलिए वह उसके पति का रूप धारण कर लेता है और जब उसका पति दूर होता है तो उसके बिस्तर पर लेट जाता है। शायद उसने सोचा कि यह भेष उसके मन में मौजूद किसी भी संदेह को दूर कर देगा।'

मैं हैरान होकर रुक गया। अपनी बात समझाने के लिए मैंने यह किस्सा क्यों चुना?
क्या क्रिस इसे निमंत्रण समझेंगे?

मैंने अपने होठों को सिकोड़ते हुए कहा, 'मेरे चाचा को एक नर्तक और एक आदमी के रूप में समझने के लिए, आपको उनके माता-पिता के बारे में जानना होगा।' क्रिस ने टेप रिकॉर्डर और नोटबुक को एक तरफ रख दिया। 'मुझे

लगता है कि यह एक बोझ है,' उसने धीरे से कहा। 'हममें से कोई भी इससे मुक्त नहीं है और फिर भी, अगर हम होते, तो हम वह नहीं होते जो हम हैं।' मैं हँसा। 'यह देखते हुए कि आपने सेलो के साथ कई महाद्वीपों की यात्रा की है,

आप बोझ या उससे मुक्ति के बारे में बात कैसे कर सकते हैं?'

क्रिस ने हाथ बढ़ाकर मेरे बालों की एक लट को खींचा। मैं फिर हँसा। मुझे ऐसा लगा जैसे कोई बच्चा इंद्रधनुष देख चुका हो। फिर मैं अचानक रुक गया। मैंने कहा, 'मुझे जाना चाहिए।'

'जाने से पहले मुझे बताओ कि इंद्र नामक इस आदमी का क्या हुआ। क्या वह इसलिए बच गया क्योंकि वह भगवान था? या उसे पत्थर बनने का श्राप मिला था?' 'इंद्र भी श्रापग्रस्त था,' मैंने कहा। 'हिंदू पौराणिक कथाओं में किसी को भी नहीं बख्शा

जाता।
हिंदू धर्म सिखाता है कि हम अपने कर्मों से बच नहीं सकते। कहा जाता है कि ऋषि के श्राप के कारण उस पर हज़ार दाग लग गए।'

'किस तरह के निशान?' मैं शरमा गया।

'योनि। उसके शरीर पर हज़ारों योनियाँ अंकित थीं, ताकि उसे देखने वाला हर कोई जान सके कि वह व्यभिचार कर रहा है।' 'बेचारा आदमी! और फिर?' 'और फिर, उसे माफ़ कर दिया गया क्योंकि हिंदू धर्म का दूसरा पहलू यही है: मुक्ति। तो

योनियाँ हज़ार आँखें बन गईं, जिससे उसे बेहतर

देखने में मदद मिली, मुझे लगता है,' मैंने आगे कहा।

क्रिस मुस्कुराया। 'तो वह भाग गया?' वह दीवार से कूद गया और भाग गया।

Machine Translated by Google

मैं चुपचाप उठ गया। मैं क्या कह सकता था? वह सही था। इस बारे में सोचते हुए, इंद्र शर्मिंदगी से बच निकलने में कामयाब रहे। यह बेचारी अहल्या थी जिसने श्राप का खामियाजा भुगता। मैंने खुद से कहा, इसे अपने लिए एक अनुस्मारक बना लो।

क्रिस ने मुझे उठने में मदद करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

मैं झिझक गया। उसके देश में, यह सिर्फ़ एक विनम्र इशारा था जो एक पुरुष किसी महिला के लिए करता है, जैसे उसके लिए दरवाज़ा खोलना। मैंने खुद से कहा कि मुझे इसमें कोई मतलब नहीं निकालना चाहिए। इसलिए मैंने अपना हाथ उसके हाथ में रख दिया।

उसकी पकड़ और मजबूत हो गई। मुझे तब पता चला कि वह जानता है कि मैं क्या महसूस कर रही हूँ। और इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है।

मैं यहाँ हूँ। लेकिन मैं कहीं और भी हूँ। मुझे आश्चर्य है कि क्रिस क्या कर रहा है। क्या उसने अपना बैग खोल लिया है? क्या वह अपना सेलो बजा रहा है? शायद वह उस महिला को ईमेल लिख रहा है जिससे वह प्यार करता है। क्या उसके जीवन में कोई महिला है? कोई गर्लफ्रेंड? कोई लिव-इन पार्टनर?
पत्नी?

मुझे ईर्ष्या महसूस हो रही है। वह कौन है?

फिर मुझे श्याम की साँसें मेरे बालों में हिलती हुई महसूस होती हैं। मैं खुद से पूछती हूँ कि मैं क्या कर रही हूँ। मैं यहाँ अपने बिस्तर पर अपने पति की बाहों में लेटी हूँ और दूसरे आदमी के बारे में सोचती हूँ। मैं किस तरह की औरत हूँ? मुझे खुद से घृणा होने लगती है।

मैं श्याम के बालों को सहलाती हूँ। श्याम, मैं फुसफुसाती हूँ। श्याम, उठो। श्याम, उठो और मुझसे प्यार करो। श्याम, तुम्हें यह करना ही होगा।

श्याम ने अपनी आँखें खोली। उसकी पुतलियाँ नींद से धुली हुई थीं।

'क्या तुम अभी तक सोये नहीं?' वह बुदबुदाता है और मुझसे और भी चिपक जाता है।

सुबह उठते ही मैं यह सोचता हूं कि मैं रिसॉर्ट से दूर रहूंगा।

श्याम अपने अख़बार के ऊपर से मेरी ओर देखता है। वह नाश्ते के समय मलयालम अख़बार पढ़ता है। यह विचित्र और सामान्य ज्ञान के प्रति उसकी लालसा को बढ़ाता है। कुत्ते ने बच्चे को काटा - बच्चे की माँ ने कुत्ते को काटा और इसी तरह की अन्य बातें। जब मैंने पूछा कि वह ऐसी बकवास कैसे पढ़ सकता है, तो श्याम ने अपने चयन का बचाव करते हुए कहा, 'यदि आप केरल में रहते हैं, तो आपको सभी स्थानीय समाचार देने के लिए एक मलयालम अख़बार की आवश्यकता है।'

हालांकि, श्याम चाहते हैं कि सार्वजनिक तौर पर यह बात जगजाहिर हो कि वह हिन्दू अखबार पढ़ते हैं और रविवार को न्यू इंडियन एक्सप्रेस भी पढ़ते हैं।

वह अखबार को मोड़कर अपनी प्लेट के पास रख देता है। फिर वह वह अखबार लेता है जिसे मैं पढ़ रहा हूँ और उसे भी मोड़ देता है। वह केले को उठाता है, छीलता है और धीरे-धीरे खाता है। वह छिलका अपनी प्लेट में ही छोड़ देता है। ऐसा लगता है जैसे केला बिना किसी की नज़र पड़े बाहर निकल गया हो, छिलका इतना बढ़िया तरीके से सजा हुआ है। श्याम बहुत नकचढ़ा है। अखबारों को मोड़कर रखना पड़ता है; कपड़ों को इस्त्री करके शेल्फ़ पर रखना पड़ता है; सभी सतहों से धूल साफ करनी पड़ती है; और गिलासों को प्लेट में रखना पड़ता है

Machine Translated by Google

कोस्टर इसलिए ताकि वे पानी के निशान न छोड़ें। मोमबत्तियों को टपकने की अनुमति नहीं है और न ही मृत पत्तियों को पौधे पर रहने दिया जाता है। उनका संगीत संग्रह वर्णमाला क्रम में व्यवस्थित है और उनकी कार्यालय की मेज ऐसी दिखती है जैसे कि वह उस पर कभी काम ही नहीं करते। सब कुछ अपनी जगह पर और क्रम में है।

मैं अव्यवस्था में ही पनपती हूं और श्याम को मेरी अलमारी और बेडसाइड टेबल देखकर चिढ़ होती है।
'तुम्हें कैसे पता कि क्या कहाँ है? तुम इतने अव्यवस्थित कैसे हो सकते हो?'
श्याम को अपने और मेरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करते हुए देखना मुझे परेशान करता है। लेकिन आज सुबह, उसकी समरूपता की ज़रूरत और व्यवस्था के प्रति प्रेम ने मुझे सुकून दिया।
वे मेरे विचारों को अपने में समाहित करते हैं और मेरे मन की अनियंत्रित उथल-पुथल को गति देते हैं।
उन्होंने कहा, 'ओप्पोल इस सप्ताह के अंत में यहां आएंगे।'
मैं अपनी प्लेट की तरफ देखता हूँ और अपना मुंह छिपाने की कोशिश करता हूँ। रानी ओपोल। श्याम की बहन। वह एक अच्छी महिला है, लेकिन उसकी असंवेदनशीलता एक भैंस को भी डरा सकती है। उसके आने से आमतौर पर मैं क्रोधित हो जाता हूँ और खुद को पूरी तरह बेकार महसूस करता हूँ। लेकिन वह श्याम की बहन है और मुझे पता है कि मैं उसे हमारे पास आने से रोकने के लिए कुछ नहीं कह सकता।

श्याम कहते हैं, 'वे विशाखापत्तनम जा रहे हैं, जहां मनोज हैं, और वह वहां रुककर हमारे साथ कुछ समय बिताना चाहती थीं।'

मेरा दिल बैठ गया.
मैंने पूछा, 'रानी कब तक रहेंगी?'
'बस कुछ दिन। राधा, तुम्हें उसे उसके नाम से नहीं पुकारना चाहिए। यह बहुत अपमानजनक है, और तुम्हें पता है कि उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं है।' मैं सहमत हूँ, मैं उसे बताना चाहता हूँ। उसे रानी नहीं कहा जाना
चाहिए। उसे हार्पी, विक्सन, व्हिंगर, नग, बिच कहा जाना चाहिए...

मैं अपने दिमाग में उसकी आवाज़ सुन सकता हूँ। वह प्रभावित, छोटी लड़की की आवाज़ जो मेरी नसों को परेशान करती है। मुझे आश्चर्य है कि ऐसा कैसे है कि वह ठीक वही बात जानती है जो मुझे कहने के लिए कहनी है, ताकि मेरा सारा आत्म-सम्मान छीन लिया जाए? अब सालों से, मैं इसे सह रहा हूँ।
'लेकिन राधा, तुम गाड़ी क्यों नहीं चलाती? तुम्हारी पीढ़ी की सभी लड़कियाँ चलाती हैं।' 'मैं चलाती हूँ। मैं
बैंगलोर में चलाती थी,' मैं विरोध करती। 'लेकिन श्याम मुझे नहीं चलाने देता। वह कहता है...' 'आह, श्याम के पास शायद कोई कारण
होगा।' एक और बार, उसने मुझसे कहा, 'एक दिन मैं
सूसी से मिली, वह लड़की जो तुम्हारे साथ कॉलेज में थी। वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम कर रही है। लड़कियों को ऐसा ही होना चाहिए। होशियार और स्वतंत्र। अगर तुम घर पर बैठोगी, तो तुम दोपहर में बस सोओगी, टीवी देखोगी और मोटी हो जाओगी। यह बहुत दुख की बात है कि तुम बिना कुछ किए अपना समय बर्बाद कर रही हो।' मैंने अपना पेट अंदर खींच लिया और दोपहर में झपकी न लेने का संकल्प लिया।

बाद में मैंने अंकल से अपनी नाराज़गी जाहिर की। 'वह बहुत घिनौनी है, वह सच में

Machine Translated by Google

है। मैंने यह चिकन डिश खास तौर पर उसके लिए बनाई है, जिस तरह से उसे पसंद है। रात के खाने के समय, जब हम टेबल पर बैठे थे, मेरे लंबे समय से पीड़ित देवर ने कहा, "रानी, थोड़ा चिकन खाओ, यह तुम्हारी पसंद के हिसाब से पकाया गया है। लकड़ी की आग पर मैरिनेट करके डीप फ्राई किया गया है।" और क्या आप जानते हैं कि उसने क्या किया? उसने अपनी नाक सिकोड़ ली जैसे कि मैंने उसे मरा हुआ चूहा पेश किया हो और कहा, "क्या मुझे लेना चाहिए? आखिरकार यह चिकन ही है।"

'मुझसे क्या उम्मीद की जा रही थी? एक हाथी का अंडा, कड़ा उबला हुआ?' चाचा हंसते रहे।

मैंने कहा, 'तुम्हें यह मज़ाक लगता है, है न? लेकिन मुझे दुख हुआ। अगर कोई उसके खाने की आलोचना करे, तो वह शायद गुस्सा हो जाए। हम सभी को सावधान रहना चाहिए कि हम उससे क्या कहते हैं। मेरी बहन बहुत संवेदनशील है, श्याम कहता है। क्या उसे एहसास नहीं है कि वह कितनी क्रूर महिला है?'

मुझे लगता है अब मुझे उसके आने के लिए खुद को तैयार करना होगा। मैं उसे फिर से मुझे चोट नहीं पहुँचाने दूँगा।

'क्या तुम आ रही हो?' श्याम ने मुझे नाश्ते से खेलते हुए देखकर पूछा।

'नहीं,' मैंने कहा.

'अच्छा। तुम्हें हर दिन वहाँ जाने की कोई ज़रूरत नहीं है,' वह कहता है। 'मैं सिर्फ़ एक घंटे के लिए जाने का इरादा रखता हूँ। मैं तुम्हारे लिए कार और ड्राइवर यहीं छोड़ दूँगा, और जीप लेकर जाऊँगा। मुझे लगता है कि तुम पूरी सुबह ब्यूटी पार्लर में बिताने वाली हो।'

मैं मुस्कुराती हूँ। श्याम को यह सोचना अच्छा लगता है कि मैं उसके लिए खुद को सजाती हूँ। वह एक घरेलू, व्यावहारिक पत्नी की तुलना में एक चमकदार, मूर्ख पत्नी को पसंद करता है। चमकदार, मूर्ख पत्नियाँ लचीली होती हैं।

वह बाहर जाते समय रुकता है और मेरे गाल को सहलाता है। 'हालाँकि मैं वास्तव में नहीं जानता कि तुम्हें ब्यूटी पार्लर जाने की क्या ज़रूरत है। तुम जैसी हो वैसी ही खूबसूरत हो।' बेचारा श्याम। उसे लगता है कि अतिशयोक्तिपूर्ण तारीफ़ मुझे खुश कर देगी और वैवाहिक सुख सुनिश्चित करेगी। वह इतनी मेहनत

करता है कि कभी-कभी मैं थक जाता हूँ। हालाँकि, आज सुबह मैं दुखी हूँ। उसके लिए। हमारे लिए। हमारी शादी के लिए। वह इससे बेहतर का हकदार है।

श्याम को शिकायत है कि मैं उसकी गतिविधियों में कोई वास्तविक रुचि नहीं दिखाता।
वह सच बोलता है।

श्याम महत्वाकांक्षी है, और मुझे लगता है कि वह अपनी महत्वाकांक्षा को छिपाने को तैयार नहीं है।
एक बार, हमारी शादी के शुरुआती दिनों में, मैंने उसे यही बात बताई थी।

'पैसे कमाने की चाहत में क्या बुराई है? तुम नहीं जानते कि गरीब होना कैसा होता है। वैसे भी तुम कैसे जानते? तुम्हारे पास हमेशा से पैसा रहा है। तुम्हारे परिवार ने तुम्हें एक राजकुमारी की तरह पाला है। तुम जो कुछ भी चाहती थी, वह सब तुम्हें उपलब्ध कराया गया। मेरे लिए ऐसा नहीं है। मैं जानती हूँ कि किसी चीज़ की चाहत रखना और उसे न पा पाना क्या होता है क्योंकि वह "हमारे बस की बात नहीं है"। मेरी माँ के पास इस "हमारे बस की बात नहीं" को समझाने के लिए बहुत सी कहावतें थीं। चाँद के लिए रोने का कोई मतलब नहीं है! चाँद के लिए रोने का क्या मतलब है?

Machine Translated by Google

एक खरगोश हाथी की तरह मल त्यागने की कोशिश कर रहा है, वगैरह, वगैरह। और यह सब इसलिए क्योंकि मैंने कोई खिलौना या कलम या ऐसी ही कोई मामूली चीज मांगी थी जो मेरी नजर में आ गई थी।' श्याम का चेहरा विकृत होकर मुंह बिचकाने लगा था। फिर, जैसे उसने अपने चेहरे पर हाथ फेरा हो, वह चिकना हो गया और उसने ठंडी लेकिन सम आवाज में कहा, 'मुझे अभी भी "पर्याप्त" शब्द का अर्थ समझना बाकी है। जब मैं समझ जाऊंगा, तो मैं वादा करता हूं कि मैं यह "धन संचय करने की उन्मत्त दौड़" जैसा कि आप इसे कहते हैं, बंद कर दूंगा।' मैंने इसे फिर कभी नहीं उठाया। जैसे-जैसे साल बीतते गए, एक-एक करके, हमने उन सभी विषयों को दूर कर दिया जिन

पर हम बात कर सकते थे। हम किसी भी चीज़ पर सहमत नहीं हो पाए

आज सुबह, मुझे श्याम की नज़रों में खुद को सुधारने के लिए प्रयास करने की ज़रूरत महसूस हो रही है। क्रिस के लिए मेरे अंदर जो अजीब आकर्षण है, उसे अपने अंदर पनपने देने के लिए प्रायश्चित करो। मुझे लगता है कि मैं रिसॉर्ट से बचूँगा। क्योंकि वहाँ क्रिस और प्रलोभन इंतज़ार कर रहे हैं।

श्याम के पास कई व्यवसाय हैं। लेकिन उनमें से किसी को भी मेरी किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।
वे अपने आप चलते हैं और उन्हें मालिक की पत्नी की, मेरे आसपास मंडराने की जरूरत नहीं पड़ती।
जब मैं कभी-कभी जाता हूँ, तो एक कर्मचारी मुझे कुर्सी और स्ट्रॉ वाली बोतल में सॉफ्ट ड्रिंक देता है और जब तक मैं उसे पीता हूँ, तब तक वहीं रहता है, ताकि वह मुझे कार तक छोड़ सके। वह मेरे लिए दरवाज़ा खोलता है, मेरे बैठने का इंतज़ार करता है, दरवाज़ा बंद कर देता है और शशि से कहता है, 'ध्यान से गाड़ी चलाना।' उसके चेहरे पर राहत है; एक राहत जो कार के जाने से पहले ही उसके चेहरे पर मुस्कान ला देती है। मुझे पता है। मैंने इसे

देखा है।

मैं सोचता हूँ कि मैं कहाँ जा सकता हूँ। फिर मैं माचिस की फैक्ट्री के बारे में सोचता हूँ।

शायद फैक्ट्री शब्द का मतलब शेड और सुपरवाइजर के साथ काम करने वाले लोगों का समूह होता है। लेकिन यह छोटी सी जगह भी श्याम को मुनाफा देती है। उसे पैसे कमाने का हुनर आता है। मेरे दादाजी उसे और उसके तरीकों को पसंद करते।

श्याम चार ब्रांड की माचिस बनाते हैं। इनमें से दो, जैस्मीन और नीअर-द-नीला, खास तौर पर रिसॉर्ट के लिए बनाई जाती हैं। विदेश यात्रा के दौरान उन्हें कस्टमाइज्ड माचिस बनाने का आइडिया आया था। तीसरा ब्रांड हर कुछ महीनों में बदल जाता था, क्योंकि यह मौसम के हिसाब से होता था, फिर चाहे वह राजनीति हो या फिल्में।

इस सीजन में हमारे पास एक माचिस है जिसका नाम है लज्जावती, जो एक लोकप्रिय गीत पर आधारित है।
शर्मीली लज्जावती बहुत मशहूर है। फिर श्याम के शब्दों में 'अम्ब्रेला ब्रांड' है। श्याम अक्सर हिंदुस्तान लीवर में मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव के तौर पर अपने दिनों के दौरान सीखे गए मार्केटिंग शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। अम्ब्रेला ब्रांड को विदेशी कहा जाता है। 'लोगों को दुकानों में जाकर विदेशी माचिस मांगना पसंद है और दुकानदारों को विदेशी माचिस बेचना पसंद है। दोनों पक्ष खुश हैं।

क्या तुम समझ गये?' श्याम ने मुझे समझाया।

Machine Translated by Google

मैं तब मुस्कुराया था। अब मैं यह सोचकर मुस्कुराता हूँ। फिर से वही उदासी। श्याम, जो खरीद-फरोख्त के मामले में लोगों के रवैये के प्रति बहुत संवेदनशील है, उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि मेरा दिमाग कैसे काम करता है।

मैंने उस विचार को दूर फेंक दिया और शशि से कहा कि वह मुझे माचिस की फैक्ट्री में ले चले।

मुझे नहीं पता कि मैं वहां क्या करूंगा। लेकिन वहां कुछ तो होगा जो मैं कर सकता हूं प्रस्तावित कुर्सी पर बैठने और अनिवार्य शीतल पेय पीने से परे।

ऐसा कोई तरीका होना चाहिए जिससे भले ही मैं क्रिस के विचार को दूर न कर सकूं, लेकिन मैं उस विचार के हृदय में एक कील ठोक कर उसे जमीन पर गिराया जा सकता है।

Machine Translated by Google

श्याम

मैं प्लेट एक तरफ रख देता हूं, एक-एक करके अपनी उंगलियां चाटता हूं, अपने गंदे हाथ से गिलास उठाता हूं और एक ही घूंट में पानी पी जाता हूं, फिर जोर से डकार लेता हूं।

चाटना और डकार लेना एक दुर्लभ आनंद है, लेकिन मैं अकेला हूँ और राधा की तीखी नज़रों की चिंता किए बिना इसमें लिप्त हो सकता हूँ। ऐसे प्राकृतिक सुखों के प्रति उसकी नापसंदगी मुझे रोकती है और आमतौर पर, एक शानदार भोजन के बाद भी, मैं अधूरा महसूस करता हूँ। लेकिन अभी के लिए मैं तृप्त हूँ।

जब मैं गेट पर पहुंचा तो लगभग दोपहर का समय हो चुका था। दोपहर की धूप में मेरे जुड़वां शेर सोने की तरह चमक रहे थे। मुझे लगा कि मेरा दिल धड़क रहा है। मुझे नहीं लगता कि मैं उन्हें देखते-देखते कभी थक जाऊंगा। वैसे, मुझे नहीं लगता कि हर बार जब मैं नीर-द-नीला के गेट से गाड़ी चलाता हूं तो मुझे जो उपलब्धि का अहसास होता है, वह कभी कम होगा।

जब मैं रुका तो दरबान कार के दरवाज़े पर खड़ा था। वह सही समय पर गाड़ी चला रहा था। मैंने उसे देखकर मुस्कुराया। मैंने देखा कि सुबह पद्मनाभन को कहाँ बाँधा गया था। मैंने कहा, 'किसी से उस गंदगी को साफ करवाओ।' ज़मीन पर गोबर के ढेर पड़े थे। मैंने पूछा, 'वह किस समय गया था?'

'बस एक घंटा पहले। वह चार बजे वापस आएगा, उसने कहा।' 'कौन? हाथी? क्या वह बोलता
है?' मैंने मज़ाक में पूछा।
सेबेस्टियन मुस्कुराया। 'नहीं, नहीं...मेरा मतलब महावत से है।' मेरे राजसी रिसेप्शन क्लर्क
उन्नी ने मुझे बताया कि जर्मन समूह आ गया है और हमें कुछ मेहमानों को वापस भेजना पड़ा है। हमारे पास पूरी तरह से बुकिंग हो चुकी थी। मुझे लगा कि मेरी मुस्कान बढ़ गई है। मैंने रेस्टोरेंट में झाँका। सभी टेबल भरी हुई थीं।

यह ऑफ-सीजन था, लेकिन आप इसे देखकर नहीं जान पाएंगे, मैंने राहत भरी सांस लेते हुए सोचा। पिछले कुछ दिन शांत रहे थे और मुझे चिंता होने लगी थी।

जब मैं आखिरकार अपने दफ़्तर में बैठ गया, तो उन्नी यह जानने के लिए अंदर आई कि क्या मैं दोपहर का खाना चाहता हूँ। मैं अनिश्चित था, भौंहें सिकोड़ ली। फिर मैंने रिसॉर्ट में दोपहर का खाना खाने का फ़ैसला किया और एक बार फिर अपने अस्वास्थ्यकर भोजन के विकल्प के बारे में चिंता नहीं की और न ही इस बात की कि क्या यह मुझे चालीस साल की उम्र से पहले दिल का दौरा पड़ने वाला है।

मैं अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया। मेरी सुबह व्यस्त और व्यस्त थी, फिर भी मैं पूरी तरह से शांत महसूस कर रहा था। ऐसा लग रहा था कि राधा ने खुद को पा लिया है।

कल रात मैं घर वापस आया तो उसे अजीब मूड में पाया। कुछ उसे परेशान कर रहा था। मुझे पता था कि उसने शाम को अंकल और क्रिस के साथ बिताया था। मैंने अपनी शाम की मीटिंग रद्द करने की कोशिश की थी, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। मुझे आश्चर्य हुआ कि आखिर ऐसा क्या हुआ था

Machine Translated by Google

उनके बीच क्या हुआ। मुझे पता था कि अंकल ने अपनी ज़िंदगी की कहानी सुनानी शुरू कर दी है। लेकिन क्या इससे उस पर कोई असर पड़ेगा?

या साहिव ने कुछ कहा था? मुझे यकीन नहीं था कि क्रिस ने मेरी राधा को जिस तरह से देखा, वह मुझे पसंद आया। या जिस तरह से वह उसकी मौजूदगी में खिलती हुई लग रही थी। औरतें चापलूसी की बहुत शौकीन होती हैं। मेरी राधा जैसी खुदगर्ज औरत भी।

मैंने अपने लिए एक ड्रिंक बनाई और सुबह की मीटिंग के लिए एक फाइल लेकर बैठ गया। वह टीवी देख रही थी - या मुझे ऐसा लगा। फिर मैंने देखा कि वह सिर्फ़ चैनल बदल रही थी। उसने एक पत्रिका उठाई, एक पेज पढ़ा और उसे पटक दिया; उसने एक और पत्रिका उठाई और उसे वापस रख दिया; वह बरामदे की ओर ऐसे चली गई जैसे वह कहीं जा रही हो, वापस आकर कुर्सी पर सिमट गई; उसने अपने खाने के साथ खिलवाड़ किया और उसे बिना खाए ही छोड़ दिया; और बिस्तर पर वह भगवान जाने कितनी देर तक जागती रही।

लेकिन आज सुबह वह एक अलग महिला थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसने अपने अंदर के सभी राक्षसों को बाहर निकाल दिया हो। वह शांत थी। उसने रिसॉर्ट जाने की भी इच्छा नहीं दिखाई, और तभी मैंने खुद को सांस लेने की अनुमति दी।

मुझे पता था कि मैं बेवकूफ़ी कर रहा था, लेकिन मैं चिंतित था। मुझे हर जगह ख़तरा नज़र आ रहा था। मुझे चिंता थी कि राधा किसी दिन मुझे छोड़ कर चली जाएगी। कि एक मीठी-मीठी बातें करने वाला, सुंदर लड़का उसका ध्यान अपनी ओर खींच लेगा और वह उसकी चापलूसी और आकर्षण के बहकावे में आकर चली जाएगी। फिर मैंने खुद को संभाला। मैं दिखने में बुरा नहीं था और जब मैं चाहता था, तो मैं किसी और से बेहतर मीठी-मीठी बातें कर सकता था।

मैं दोपहर के भोजन के लिए घर चला जाता, लेकिन राधा अभी भी घर पर नहीं थी। मैंने अपनी मेज़ पर रखी उसकी तस्वीर को देखा। उसकी भौहें, उनके बीच के सारे बिखरे बाल हटा दिए गए थे, जो उसकी बड़ी भूरी आँखों के ऊपर झुके हुए थे। उसके बाल, वे बाल जो मुझे बहुत पसंद थे, उसके चेहरे को ढँक रहे थे। वह उन्हें सबसे गर्म दिनों में भी खुला रखती थी, लेकिन बिस्तर पर वह उन्हें चोटी बनाकर रखती थी। 'क्या तुम अपने बाल खुले नहीं रखोगी? यह बहुत सुंदर है,' मैंने कहा जब मैंने उसे एक रात चोटी बनाते हुए देखा। मुझे उसके बालों के मेरे ऊपर रेंगने, मेरे चेहरे को उस सुगंधित गुच्छे में छिपाने के दृश्य दिखाई दिए। लेकिन उसने अपने बालों की चोटी बना ली, उन्हें अपने कंधे पर फेंक दिया और कहा, 'अरे नहीं, यह उलझ जाएगा और सिरे अलग हो जाएँगे।' मुझे पता है कि मुझे उठकर अपने हाथ धोने चाहिए। लेकिन मैं भरा हुआ महसूस कर रहा हूँ। बेबी जॉर्ज तेल या नारियल, मसाले या मात्रा पर कंजूसी नहीं करता। घर पर, राधा

जोर देती है कि हम कम वसा, कम कोलेस्ट्रॉल, उच्च फाइबर वाला भोजन खाएं। इसका मतलब है कि बहुत सारी सब्जियाँ। सप्ताह में केवल दो बार ही मेज़ पर मांस परोसा जाता है। और मछली हमेशा करी में तैरती रहती है। जब मैं विरोध करता हूँ, तो वह कहती है, 'तुम लगभग चालीस की हो चुकी हो। तुम्हें खाने-पीने के मामले में सावधान रहना चाहिए।'

Machine Translated by Google

मुझे अच्छा खाना पसंद है और मुझे यह व्यवस्था कष्टदायक लगती है। लेकिन मैं उसकी चिंता से खुश हूँ। इसलिए मैं अपनी सब्जी खाता हूँ, हफ़्ते में एक अंडा खाता हूँ और रात में एक पैग पीता हूँ।

अपनी राधा के लिए मैं जीवन की खुशियों से वंचित रहने को भी तैयार हूं।

जब मैं घर पहुँचता हूँ, तो शाम होने को होती है। बरामदे में लकड़ी के बीम से लटका हुआ थूकुविलक्कू जलाया जा रहा है। मैं हैरानी से लैंप को देखता हूँ। मुझे अपने भीतर एक गर्म चमक महसूस होती है।

थूकुविलक्कु एकमात्र ऐसी विरासत थी, सिवाय एक कांस्य कड़ाही के, जिसे मेरी माँ ने संभाल कर रखा था। जब उनकी मृत्यु हुई, तो रानी ओपोल ने कड़ाही ले ली और मैं इसे घर ले आया - राधा का घर और अब हमारा। उन्होंने इसे मुझसे लिया और इसकी जांच की। 'यह बहुत सुंदर है। ऐसी उत्कृष्ट कारीगरी,' उन्होंने कहा।

मैंने उसके कांस्य किनारों को सहलाया और कहा, 'बहुत कीमती है।' 'क्या हर चीज पैसे के बारे
में ही होनी चाहिए?' वह झल्लाई।
तभी फोन की घंटी बजी और मैंने जल्दी से फोन उठाया। मैं उसे यह समझाना चाहता था कि मैंने फोन की कीमत रुपयों में नहीं बताई थी। लेकिन जब तक मैंने फोन खत्म किया, वह पल खो चुका था।

पहले राधा हर शाम दीपक जलाती थी। फिर उसने ऐसा करना बंद कर दिया। जब मैंने उससे दो दिन बाद पूछा तो उसने कहा, 'मुझे लगा कि दीपक घर की सजावट का सामान है। मुझे नहीं पता था कि आप इसे इतना धार्मिक महत्व देते हैं।'

'दीपक जलाने में कोई धार्मिकता नहीं है,' मैंने गुस्से को अपनी आवाज़ से दूर रखने की कोशिश करते हुए कहा। 'यह अच्छा लगता है। घर की शोभा बढ़ाता है।' वह मुस्कुराई। 'मुझे खेद है। मैं नहीं भूलूँगी। मैं नौकरानियों में से किसी को दीपक जलाने
का निर्देश दूँगी।
'हर शाम इसे ईमानदारी से पढ़ो। खुश हो?'
मैंने सिर हिलाया। कुछ नहीं कहा। क्या मतलब था? वह घर की औरत थी। उसे ही दिया जलाना चाहिए था, नौकरानी नहीं।

लेकिन मैं झगड़ा शुरू नहीं करना चाहता था.
आज रात को राधा ही दीपक जला रही है।
मैं खुद को धन्य मानता हूँ। मेरे पास एक सुंदर घर और समृद्ध व्यवसाय है। और मेरे पास राधा है। मेरी राधा।

दीपक उसकी आँखों को रोशन कर देता है। उसके बाल उसकी पीठ पर लहराते हैं। वह मुस्कुराती है
मुझे।
रात में जब मैं उससे प्यार करता हूँ, तो वह इतनी जोश से जवाब देती है कि मैं हैरान रह जाता हूँ। उसके बाल तकिये पर फैले हुए हैं; जब मैं उसकी आँखों में देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि यह उसकी खुशी की आभा है।

मैं उसका सिर अपनी बांह की कोहनी में टिका लेता हूं और जब मैं सो जाता हूं, मैं फिर से सोचता हूं: मैं

Machine Translated by Google

मैं धन्य हूँ.

सुबह राधा मेरे साथ रिसॉर्ट तक आने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाती।

'मुझे यह देखना होगा कि साहिव ठीक है या नहीं,' मैंने उससे कहा।

वह खाना जारी रखती है। मुझे उम्मीद है कि वह कहेगी कि वह मेरे साथ चलेगी। लेकिन ऐसा लगता है कि वह अब उसकी डोसा में और भी दिलचस्पी है। मुझे फिर से राहत मिली।

क्रिस का उसके प्रति जो भी आकर्षण था, वह अल्पकालिक ही प्रतीत हुआ।

'मुझे आश्चर्य है कि वह अंकल के साथ कैसे घुल-मिल रहा होगा,' मैंने पूछा। 'मैं उनसे पूछूंगा।' क्या मैं उसे दोपहर के भोजन के लिए ले आऊं?'

'कौन?' उसकी आवाज़ चीख़ने जैसी थी। उसका गला घुट गया होगा, क्योंकि वह खाँसने लगी थी।

'अंकल.' 'यह

अच्छा रहेगा,' वह गला साफ करने के लिए पानी की चुस्की लेते हुए कहती है. 'लेकिन दोपहर के भोजन के लिए नहीं. रात का खाना बेहतर होगा. मुझे आज सुबह कुछ काम करने हैं.' मैं मुस्कुराता हूँ. 'अब क्या? दर्जी के पास जाना है, है न?' वह भी मुस्कुराती है.

'मम्म्म...यह और वह!' 'मैं तुम्हारे लिए कार छोड़ दूँगा,' मैं बाहर जाते हुए कहता हूँ.

इतने समय के बाद, अंततः हम सही राह पर आगे बढ़ते दिख रहे हैं।

जब मैं वहाँ पहुँचा तो क्रिस बरामदे में बैठा था। उसके बाल गीले और चमक रहे थे, मानो उसने अभी-अभी नहाया हो। उसकी ठोड़ी चिकनी थी। भगवान का शुक्र है कि उसने दाढ़ी बना ली थी। लेकिन दाढ़ी न होने के कारण उसकी ठोड़ी में दरार की ओर ध्यान जाता है। मुझे लगता है कि वह बहुत सुंदर है। मर्दाना रूप से सुंदर नहीं, लेकिन लड़कों जैसा सुंदर। काफी सुंदर लोलन।

'सब ठीक है?' मैं पूछता हूँ और उसकी ओर चलता हूँ। वह मुस्कुराता है और उठता है। मैं एक पल के लिए बरामदे में खड़ा रहता हूँ और फिर उसके पीछे से कॉटेज में चला जाता हूँ। दरवाज़ा खुला है, आखिरकार। ऐसा लगता है कि वह खुद को घर जैसा महसूस कर रहा है। उपकरण एक अंधेरे कोने में रखा हुआ है। उसका लैपटॉप मेज पर है और खिड़की के किनारे कुछ किताबें रखी हुई हैं। मैं किताबों को करीने से सजाता हूँ। क्रिस मेरे पीछे आता है। वह इस बात से बहुत खुश नहीं है कि मैं कॉटेज में चला आया हूँ या मैं उसकी चीज़ें संभाल रहा हूँ, लेकिन उसे यह जानने की ज़रूरत है कि मैं इस जगह का मालिक हूँ और भले ही वह यहाँ रहे, लेकिन मेरे पास अपने विशेषाधिकार हैं।

क्रिस ने कहा, 'धन्यवाद। सब ठीक है। क्या राधा यहाँ है?' मुझे लगा कि मेरी आँखें सिकुड़ गई हैं।

'वह घर पर है। वह व्यस्त है,' मैंने कहा। फिर, उसे राधा के बारे में और बात करने से रोकने की उम्मीद में, मैंने पूछा, 'तो, तुम अंकल के साथ समय बिता रहे हो। वह तुम्हें क्या बता रहा है? वह कितनी दूर तक पहुँच गया है? मुझे बताओ।' क्रिस मुस्कुराया। एक व्यंग्यात्मक मुस्कान। 'मैं कल वहाँ गया था। लेकिन वह मूड में नहीं था, उसने कहा। इसके बजाय, उसने मुझे कहानी सुनाई कि उसने अपना तोता कैसे हासिल किया।

Machine Translated by Google

बहुत रोचक कहानी है, बेशक, लेकिन वह नहीं जो मैं जानना चाहता था। मैं आज शाम को वापस जाने का इरादा रखता हूँ। मुझे उम्मीद है कि तब वह और भी आगे आएगा।' मुझे लगता है कि मेरे चेहरे पर मुस्कान आ रही है। मैं

खुश हूँ। मैंने सोचा था कि वह और अंकल अविभाज्य होने जा रहे हैं। गुड़ और मक्खी की तरह। एक साथ रहना किस्मत में है। लेकिन जाहिर है ऐसा नहीं है। मैं अपनी खुशी को छुपाता हूँ और अपनी लेकिन-यह-बहुत-भयानक अभिव्यक्ति को चालू करता हूँ।

मैं कहता हूँ, 'इन कलात्मक लोगों के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। हमें धैर्य रखना होगा।
लेकिन तैयार रहना सबसे अच्छा है। मैं बस यही उम्मीद करता हूँ कि आपका समय यहाँ बर्बाद नहीं होगा।'

मुझे उम्मीद है कि अंकल चुप हो जाएँगे। मुझे उम्मीद है कि आप उनकी बात करने की अनिच्छा से इतने निराश हो जाएँगे कि आप हार मान लेंगे और वापस चले जाएँगे, मुझे लगता है। आप जितनी जल्दी चले जाएँगे, हम सबके लिए उतना ही अच्छा होगा। जब मैंने आपको कॉटेज किराए पर देने के लिए हामी भरी थी, तो शायद मेरी अच्छी समझ पर कोई बुरा असर पड़ा होगा। लेकिन मैंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि वह ज़्यादा मददगार होंगे।' 'क्या आपको लगता है कि राधा आज शाम को आएगी?' वह पूछता है।

मैं सोचता हूँ कि अगर मैं कुछ कर सकता हूँ तो ऐसा नहीं होगा। इस आदमी को क्या हो गया है? क्या उसे एहसास नहीं है कि राधा एक शादीशुदा महिला है? मेरी पत्नी के पास करने के लिए दूसरे काम हैं, मिस्टर, मैं उसे बताना चाहता हूँ। 'नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। वास्तव में, उसे यहाँ फिर से आने में कई दिन लग सकते हैं,' मैं कहता हूँ, यह छिपाने की कोशिश करते हुए कि मैं राधा को देखने की उसकी ज़रूरत से कितना परेशान हूँ।

'ओह,' वह कहते हैं।

मैंने उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने उसकी हथेली को जोर से दबाते हुए कहा, 'तो मैं तुमसे विदा लेता हूं।' मैं अब जिम नहीं जाता, लेकिन मेरे हाथों की ताकत कम नहीं हुई है।

जब मैं अपने कार्यालय पहुंचता हूं तो सवा बारह बज रहे होते हैं।

उन्नी अंदर आता है और कहता है, 'यूसुफ ने बुलाया है।'

मैं भौंचक्का रह गया। यूसुफ़ को क्या चाहिए?

यूसुफ़ माचिस की फ़ैक्ट्री चलाता है। वह कोलापुली के लघु उद्योग एस्टेट में कृषि उपकरण बनाने वाली एक छोटी इकाई का सुपरवाइज़र हुआ करता था। जब इकाई बंद हो गई, तो यूसुफ़ को लगा कि उसके पास कोई काम नहीं है। तभी वह मेरे पास आया और सुझाव दिया कि मैं माचिस की फ़ैक्ट्री खोलूं।

मैं उस लंबे और मजबूत चेहरे वाले आदमी को घूर रहा था, जो लगता था कि सब कुछ समझ गया था। वह एक कुलीन व्यक्ति की तरह दिख रहा था, उसका व्यवहार बहुत ही शानदार था। जहाँ तक उसकी आवाज़ की बात है, वह फुसफुसाते समय गड़गड़ाहट जैसी थी और जब वह बात करता था तो गड़गड़ाहट जैसी।

मैंने पूछा, 'आपको क्या लगता है कि मुझे माचिस की फैक्ट्री की क्या जरूरत है?'

'मैंने सुना है कि आपने स्थानीय माचिस फैक्ट्री से पूछा था कि क्या वे आपके लिए कुछ बना सकते हैं
'विशेष मैच और आप अभी भी कीमत पर बातचीत कर रहे हैं।'

'यह सच है, लेकिन कोई भी व्यक्ति सिर्फ एक दर्जन आम खाने के लिए बाग नहीं खरीदता, क्या यह सच है?

Machine Translated by Google

वे?' 'यह

सही हो सकता है, लेकिन मैं आपको आश्वासन देता हूं कि आप कोई पैसा नहीं खोएंगे।' 'आप माचिस

के बारे में क्या जानते हैं?' 'बहुत कम। लेकिन मेरी

भतीजी माचिस की फैक्ट्री में काम करती है। वह कई सालों से वहां है और वह अपने साथ सभी अन्य अनुभवी कर्मचारियों को भी लाएगी। मैं आपको इसका आश्वासन दे सकता हूं। आपको कोई पैसा नहीं खोना पड़ेगा और निवेश भी बहुत ज्यादा नहीं है। आपके पास कोलापुली के पास जमीन का एक टुकड़ा है। पुराने टायरों को फिर से जोड़ने की जगह। तो शेड भी तैयार है।'

ऐसा लग रहा था कि वह जानता था कि वह किस बारे में बात कर रहा है और इस तरह मैंने माचिस की फैक्ट्री स्थापित की। यूसुफ ने अपना वादा निभाया। मैंने कोई पैसा नहीं खोया और केवल लाभ और शुभचिंतक बनाए। वहां काम करने वाली महिलाएं अपने भाइयों और बेटों और कभी-कभी अपने पतियों को मेरे दूसरे व्यवसायों में काम करने के लिए भेजती थीं।

मेरे मित्र जिन्हें हमेशा प्रसव पीड़ा होती है, मुझसे पूछते हैं, 'श्याम, ऐसा कैसे है कि तुम्हें हमेशा अच्छे, मेहनती लोग मिल जाते हैं?' और मैं उनसे कहता हूं, 'परिवार की महिला को अपना सहयोग करने के लिए कहो और वह सुनिश्चित

करेगी कि उसके पुरुष भी अपना सहयोग करें।'

तब मुझे अंदर से एक झटका सा महसूस होता था, क्योंकि मैं अपने घर की महिला से किसी भी काम में सहयोग नहीं ले पाता था।

लेकिन अब सब कुछ बदल गया है, मुझे लगता है कि खुशी की शुरुआत हो गई है।

मैं फ़ोन को कान से दूर रखता हूँ ताकि यूसुफ़ की आवाज़ मेरे कान के परदे को न फाड़ दे। 'हाँ, यूसुफ़, बताओ।' 'मैं जो बताने जा रहा हूँ, उसे तुम ग़लत न समझो। मेरा

कोई मतलब नहीं है।

यूसुफ़ कहते हैं, "यह अपराध है, लेकिन यह ज़रूरी है कि मैं आपसे इस बारे में बात करूँ।"

मैंने पूछा, 'अच्छा बताओ, तुम्हारे मन में क्या है?'

'अच्छा, यह मैडम के बारे में है।' 'हाँ?'

मुझे लगता है कि मेरा पेट खाली हो गया है। अब उसने क्या किया है? जब मैंने रिसॉर्ट शुरू किया, तो राधा ने मेरे कर्मचारियों को यह बताने का बीड़ा उठाया कि उसे और मुझे हमारे नामों से बुलाया जाना चाहिए: 'यह सर और मैडम का मामला नहीं है।' मुझे उसे यह समझाने में बहुत समय लगा कि वे ऐसा कभी नहीं करेंगे। हालाँकि वह इस तरह के विभाजन का सम्मान नहीं करती, लेकिन वे इतने मूर्ख नहीं थे कि उनका उल्लंघन करें।

'हाँ,' मैं अपने आप को ख़यालों से बाहर निकालते हुए कहता हूँ।

'मैडम कल यहाँ थीं।' 'ओह।' उन्होंने मुझे

क्यों नहीं बताया?

'वह पूरी सुबह वहीं रही। वह कुछ देर तक बैठी रही और फिर उसने कहा कि वह किसी और को ऐसा करने देने के बजाय अखबारों को जोर से पढ़ेगी। वास्तव में, उसने जोर दिया और हमें सहमत होना पड़ा। फिर उसने किसी को अपने लिए खाना लाने को कहा

Machine Translated by Google

पास के एक रेस्टोरेंट में जाकर महिलाओं के साथ लंच किया। ऐसा लगता है कि उसने उनसे कहा कि जो खाना उन्होंने खाया वह पौष्टिक नहीं था। वह बहुत विनम्र थी। मैडम हमेशा विनम्र रहती हैं। लेकिन कुछ महिलाएं बहुत नाराज थीं। उन्हें लगा कि यह उनके खाना पकाने पर एक कलंक है।' मैं आहें भरता हूँ।

यूसुफ़ ने मेरी आहें दोहराईं। 'देखा, है न? और फिर भी, मुझे वास्तव में किस बात की चिंता है
वह उन्हें जोर से पढ़कर सुनाना चाहती है।'

यूसुफ़ दूसरे उद्योगों में काम करने के तौर-तरीके अपनाते हैं, लेकिन किसी तरह वे हमेशा उन्हें काम में लाने में कामयाब हो जाते हैं। इसी तरह हमारे यहां अख़बार और पत्रिकाएँ मज़दूरों को पढ़कर सुनाने की व्यवस्था थी। यूसुफ़ ने बताया कि कन्नूर में बीड़ी बनाने वाली फ़ैक्ट्रियों में ऐसा किया जाता था और इससे ऐसे गहन शारीरिक काम की नीरसता और उबाऊपन से राहत मिलती थी। मज़दूर बारी-बारी से पढ़ते थे और उन्हें काम के लिए पूरी मज़दूरी दी जाती थी। इसलिए वे सभी इस व्यवस्था से खुश थे। दोपहर में रेडियो चालू किया जाता था; उन्हें खुश रखने के लिए पर्याप्त कार्यक्रम होते थे। यह व्यवस्था अब तक काम कर रही थी।

'महिलाओं को यह पसंद नहीं है। उन्हें यह पसंद नहीं है कि जो उन्हें लगता है कि उनका अधिकार है, उससे उन्हें वंचित किया जाए। उन्हें यह भी पसंद नहीं है कि वह कैसे पढ़ती हैं। आप देखिए, वे पढ़ने की एक खास शैली की आदी हैं। लेकिन सबसे बढ़कर, उन्हें यह पसंद नहीं है कि उनके कानों में साहित्य ठूंसा जाए। मैंने हमेशा से ही उनके लिए मंगलम और नाना जैसी पत्रिकाएँ लाकर रखी हैं। आसान पढ़ने वाली, अगर आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है। कल मैडम ने संपादकीय पृष्ठ जोर से पढ़े, और उन सभी रोचक बातों को अनदेखा कर दिया जिन्हें वे पसंद करती हैं। वे एक दिन के लिए इसे सहने को तैयार थीं। लेकिन आज सुबह वे फिर यहाँ हैं और वे अपने साथ टॉल्स्टॉय की वॉर एंड पीस लेकर आई हैं । मैं देख सकता हूँ कि वे बहुत नाखुश हैं। क्रोधित कर्मचारी अच्छे नहीं होते।'

मैंने उसे भरोसा दिलाया कि मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि राधा फिर से उनकी दिनचर्या में खलल न डाले। फिर मैंने फोन रख दिया।

मैं क्या करने जा रहा हूँ?

मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ और फिर से पाठक की नीरस आवाज़ सुनता हूँ। उसकी आवाज़ में किसी भी तरह की भावना का अभाव श्रोताओं को शब्दों को अपने तरीके से समझने की अनुमति देता है। और यहाँ राधा अपनी कॉन्वेंट-शिक्षित मलयालम और अपने युद्ध और शांति और आहार चार्ट के साथ है, जो योगदान देने की कोशिश कर रही है, लेकिन केवल उन चीज़ों को हड़प रही है जिन्हें कर्मचारी अपना विशेषाधिकार मानते हैं। मैं राधा को कैसे समझाऊँ कि वे उसे वहाँ नहीं चाहते, उसे अपमानित या चोट पहुँचाए बिना, या हमारे नए बने सौहार्द को बर्बाद किए बिना?

जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे गुस्सा आने लगता है। क्या बात है। मुझे बताए बिना माचिस की फैक्ट्री में जाना। और फिर मुझसे सलाह किए बिना मनमाना फैसला लेना। जब वह मेरी व्यावसायिक गतिविधियों से दूर रहती थी, तो यह बेहतर था। अब मुझे उसकी गंदगी साफ करनी होगी।

Machine Translated by Google

क्या वह कभी सोचती है कि ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकतों के क्या परिणाम होते हैं? इसके अलावा, अगर मेरे दोस्तों और उनकी पत्नियों को पता चल गया तो वे क्या कहेंगे? समाज में हमारा एक स्थान है। एक ऐसा स्थान जिसके साथ राधा ने हमेशा लापरवाही बरती है। लेकिन यह उससे कहीं ज़्यादा है जिसे मैं सहने को तैयार हूँ।

मैं राधा को उसके मोबाइल पर कॉल करता हूँ। मैं लंच के लिए घर आ रहा हूँ, कहता हूँ। मुझे पता है कि वह तब घर वापस आ जाएगी।

राधा बरामदे में बैठी है। वह मेरा इंतज़ार कर रही है। यह नई राधा है।
कोई है जो मेरे आने का इंतज़ार करता है, मेरी मौजूदगी के लिए उत्सुक है। उसके मुँह से शब्द तेज़ी से निकलते हैं, उसके गाल चमकते हैं, उसकी आँखें चमकती हैं। मैं देखता हूँ कि वह क्या सोचती है कि उसका दिन अच्छा बीता है। मेरे मुँह से गुस्से भरे शब्द रुक जाते हैं। मैं उससे यह कैसे छीन सकता हूँ?

खाना खाने के बाद हम बैठक कक्ष में चले गए। यह एक सुंदर कमरा है।
यहाँ सब कुछ पुराना और आलीशान है: शीशम के सोफे और सीधी कुर्सियाँ, छोटी सागौन की मेजें और एक लंबा लड़का। एक पुरानी घड़ी समय बताती है और एक क्यूरियो कैबिनेट में कांच और चीनी मिट्टी के कुछ खूबसूरत टुकड़े हैं। सब कुछ वैसा ही है जैसा राधा के दादा के समय में हुआ करता था। जब मैं बच्चा था, तो मुझे कभी इस कमरे में कदम रखने की अनुमति नहीं थी। अक्सर, मैं दरवाजे से चुपके से एक नज़र डालता था। अब जब मैं घर पर होता हूँ तो यहीं बैठता हूँ। यह वह कमरा है जिसे मैं सबसे ज़्यादा पसंद करता हूँ। मैं अपनी पोस्ट पर नज़र डालता हूँ।

राधा ने टीवी चालू कर रखा है। मैं देख सकता हूँ कि वह बात करने के लिए उत्सुक है। मैं पत्रों को एक ढेर में जमा कर देता हूँ।
वह कहती हैं, 'आपको विश्वास नहीं होगा कि मैं आज सुबह और कल कहां थी।'
मैं आश्चर्य का नाटक करता हूँ। 'क्या तुम ब्यूटी पार्लर और दर्जी के यहाँ नहीं गई थीं?' 'तुम यही सोच रही हो। मैं माचिस की फैक्ट्री में था।' 'और?' 'और मुझे लगता है कि मुझे आखिरकार कुछ काम मिल गया है। क्या तुम्हें पता
है कि वहाँ

एक अच्छी सी व्यवस्था है? उनमें से एक जोर से पढ़ता है जबकि बाकी काम करते हैं।

मैंने कहा है कि अब से मैं ऐसा ही करूँगा। मेरी योजना वहाँ रोज़ाना जाने और उन्हें साहित्य से परिचित कराने की है। अभी वे धारावाहिक रोमांस और फ़िल्मी सितारों के बारे में गपशप सुनते हैं। वास्तव में, आज सुबह मैंने वॉर एंड पीस पढ़ा। आपको क्या लगता है कि उसके बाद मुझे क्या शुरू करना चाहिए? काफ़्का बहुत रुग्ण होगा। मार्केज़ अच्छा होगा। हाँ, वह एकदम सही होगा...'

मैं कराहता हूं। वह किस दुनिया में रहती है?
मैंने कहा, 'आप गंभीर नहीं हो सकते।'
'क्यों? क्या हुआ?' वह मेरी ओर देखती है।
'सब कुछ। क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि ये औरतें टॉल्स्टॉय या मार्केज़ या तुम्हारे किसी भी बौद्धिक लेखक को सुनना नहीं चाहतीं? वे अपनी रोमांटिक फिक्शन और सिनेमा गॉसिप चाहती हैं।' मैं रुकता हूँ और फिर वह कहने का फैसला करता हूँ जो मुझे वाकई परेशान कर रहा है। 'कुछ और भी है। मुझे यह पसंद नहीं है। तुम मेरी पत्नी हो और

Machine Translated by Google

समाज में तुम्हारा भी एक स्थान है। जब मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम मेरे काम में कुछ दिलचस्पी दिखाओ, तो मेरा मतलब बस यही होता है। दिलचस्पी दिखाओ और मेरे कर्मचारियों के साथ घुलमिल मत जाओ या उनके साथ खाना मत खाओ।' मैंने अपनी जीभ काट ली। मेरा इरादा यह बात कहने का नहीं था।

'तो तुम्हें सब पता था और तुम दिखावा कर रहे थे कि तुम्हें कुछ नहीं पता।' उसके नथुने फड़क उठे।

'मैंने सुना है। मेरे कर्मचारी मुझे जानकारी देते रहते हैं। मैं और कैसे इतने सारे काम चला सकता हूँ?
व्यापारिक प्रतिष्ठान?

'तुम मुझे घिन आती हो।' उसकी आवाज़ ऊँची हो जाती है। 'ये लोग हैं। इंसान जैसे
आप और मैं। लेकिन आप खुद को एक श्रेष्ठ प्राणी मानते हैं, है न?'

'मूर्ख मत बनो,' मैंने झट से कहा। 'यह श्रेष्ठ या हीन होने की बात नहीं है। आप प्रोटोकॉल तोड़ रहे हैं; आप नियोक्ता और कर्मचारी के बीच की रेखाएँ मिटा रहे हैं। आप मेरी स्थिति को नकार रहे हैं और मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।'

राधा ने रिमोट कंट्रोल पटक दिया। 'तुम्हें अपनी आवाज़ सुननी चाहिए। जाने दो! तुम एक घमंडी हो, एक बहुत बड़ा घमंडी! ठीक है। मैं नहीं जाऊँगी।'

वह शयन कक्ष की ओर चली जाती है।

मैं वहीं बैठा रहता हूँ। मुझे पता है कि थोड़ी देर में उसका गुस्सा शांत हो जाएगा। मैं टीवी के ऊपर रिमोट रख देता हूँ, अख़बारों को दरवाज़े के पास छोड़ देता हूँ ताकि नौकरानी उन्हें रख सके और अपने बेडरूम में चला जाता हूँ। दरवाज़ा अंदर से बंद है।

मैं दरवाज़ा खटखटाने के बारे में सोचता हूँ, लेकिन नहीं खटखटाता। मुझे माफ़ी क्यों मांगनी चाहिए? मैंने कुछ नहीं किया
गलत।

बरामदे में एक दिन का बिस्तर है। हमारे पास चार अन्य बेडरूम हैं, जिनमें से प्रत्येक में अलग बिस्तर बना हुआ है, लेकिन अगर मैं उनमें से किसी एक का उपयोग करता हूं, तो यह नौकरों को बात करने पर मजबूर कर देगा।
वे रानी ओपोल के यहाँ आने पर उनसे भी इस बारे में बात कर सकते हैं। इसलिए मैं दिन के बिस्तर पर लेट जाता हूँ और मुझे लगता है कि एक बार फिर हम इसे सही तरीके से करने में विफल रहे हैं।
शाम को राधा जल्दी ही बरामदे में आती है। उसका चेहरा पीला है, लेकिन वह नाराज़ नहीं दिखती।

'क्या आप चाहते हैं कि आपकी चाय यहीं पर परोसी जाए?' वह पूछती है।

मैं उठकर अपने शरीर को तानता हूँ। 'नहीं, मैं अंदर आता हूँ।' मैं उसके

पीछे डाइनिंग रूम में चला जाता हूँ।

हम चाय की चुस्की लेते हैं और मैरी बिस्किट खाते हैं। एरोरूट बिस्किट बहुत स्वादिष्ट होते हैं।
मेरे मुंह में आटा.

वह कहती है, 'मैं अंकल से मिलने जा रही हूं।'

मैं मंजूरी।

'मुझे उम्मीद है कि इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा कम नहीं होगी। क्या ऐसा कुछ है जो मैं कर सकता हूँ जिससे आपकी प्रतिष्ठा कम न हो? मैं एक प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाना चाहता था और आपने कहा कि यह बहुत कम पैसे के लिए बहुत ज़्यादा काम है। जब मैं शुरू करना चाहता था

Machine Translated by Google

ट्यूशन क्लास, तुमने भी यही कहा। फिर मैं एक क्रेच शुरू करना चाहती थी और तुमने कहा कि तुम नहीं चाहते कि घर रोते हुए बच्चों से भर जाए। इसलिए मैंने सोचा कि मैं कुछ और काम ढूँढूँगी जिसमें पैसे कमाने की ज़रूरत न हो, लेकिन वह भी सही नहीं है। क्या मुझे राय रखने का अधिकार नहीं है? मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। तुम्हारी पत्नी, क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो? लेकिन तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हो जैसे मैं एक रखैल हूँ। तुम्हारी यौन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक ख़ूनी रखैल और जिसके पास कोई अधिकार नहीं है।

'फिर तुम्हारी बहन यहाँ आती है और मुझसे कहती है कि मैं अपनी पढ़ाई और समय बरबाद कर रही हूँ। क्या सही है? ब्यूटी पार्लर और दर्जी के यहाँ जाना? घर के पौधों की पत्तियों को धोना और क्यूरियोस को झाड़ना? सुपरमार्केट में रुकना और अपने दोस्तों की पत्नियों से मिलना? वे तुम्हारी दोस्त हैं, मेरी नहीं। क्या तुम नहीं देखते कि वे मुझे बोर करती हैं? वे छोटे शहर के लोग हैं और हमेशा ऐसे ही रहेंगे, छोटे दिमाग और उससे भी छोटे जीवन के साथ... मैंने अपने जीवन को इस तरह जीने की उम्मीद नहीं की थी। यह वह नहीं है जो मैं जीवन से चाहता हूँ, क्या तुम नहीं देखते?'

मैं उसे अनदेखा करता हूँ। मैंने यह सब पहले भी सुना है। इसके अलावा, एक बार जब वह यह कह देती है, तो वह आमतौर पर बेहतर महसूस करती है। मुझे आश्चर्य है कि क्या मुझे उसे पूरी सच्चाई बता देनी चाहिए थी। वह शर्मिंदा और परेशान होती, लेकिन उसका गुस्सा मुझ पर नहीं होता। लेकिन फिर, यह भी सच है कि अगर कार्यकर्ताओं ने उसकी उपस्थिति का स्वागत किया होता तो भी मैं उसे जारी नहीं रहने देता। मुझे यह पसंद नहीं है, और बस यही है।

मैं कहता हूं, 'मैं रिसॉर्ट वापस जा रहा हूं।' 'हम पंद्रह मिनट में निकल जाएंगे।' 'मैं अकेले ही जाना पसंद करूंगा,' राधा बुदबुदाती
है।

मैं अपना मग नीचे रख देता हूँ। मैं अब बहुत थक चुका हूँ। 'एक ही समय में एक ही जगह जाने के लिए दो गाड़ियों की ज़रूरत नहीं है। हो सकता है कि आपके परिवार ने आपको बहुत सी चीज़ें छोड़ी हों, लेकिन उन्होंने आपके लिए तेल का कुआँ नहीं छोड़ा। चूँकि मैं ईंधन का भुगतान करता हूँ, इसलिए मैं तय करूँगा कि हमें एक गाड़ी चाहिए या दो।' वह कार में चुप है। मैंने जो कहा उसके लिए मैं खुद को छोटा महसूस कर रहा हूँ, लेकिन मेरा सिर चकराने लगा है।

धड़कने लगती है और मुझमें ये बचकाने खेल खेलने की कोई ऊर्जा नहीं है।

वह मेरे साथ रिसॉर्ट में आती है। मुझे आश्चर्य है कि क्या वह माफ़ी मांगेगी। या शायद वह बहुत ज़्यादा उम्मीद कर रही है। राधा यह दिखावा करेगी कि उसने कभी भी वो कठोर शब्द नहीं कहे। मुझे पता है; यह पहली बार नहीं है जब हम झगड़ रहे हैं। मैंने साथ देने का फैसला किया।

'मैं वर्षा जल संचयन के बारे में बहुत कुछ सुन रहा हूँ। इसलिए मैंने जानकारी माँगी। मुझे लगता है कि हमें इसे लागू करना चाहिए। विस्तृत जानकारी यहाँ है,' मैंने फ़ाइल निकालते हुए कहा।

'एक एकड़ के प्लॉट के लिए हमें सौ गड्ढे बनाने होंगे, जिनमें से प्रत्येक लगभग तीन मीटर गुणा तीन मीटर का होगा। इसका मतलब है...' मैंने देखा कि राधा सुन नहीं रही है। वह खिड़की के पास खड़ी होकर बाहर देख
रही है।

साहिव वहाँ से गुज़र रहा है। अचानक वह मुड़ता है और उसे देखता है। उसका चेहरा चमक उठता है।

Machine Translated by Google

उसका भी.

और मुझे ऐसा महसूस होता है कि मेरी आंखों में अंधेरा छा गया है।

Machine Translated by Google

चाचा

मालिनी भौंकती है। मैं उसकी इस चीख-पुकार को पहचानता हूँ; यह आमतौर पर गेट के पास किसी के मंडराते रहने की सूचना देती है। वह एक चौकीदार की तरह है। 'कौन है वहाँ?' मैं उससे पूछता हूँ।

वह फिर भौंकती है। मैं सब्जी के खेत में कद्दू की बेलें बांधना बंद करके उसे देखने लगता हूँ। दोपहर और रात में वह घर के अंदर रहती है। मैंने उसके लिए एक छोटा सा बसेरा बनाया हुआ है, जिस पर वह बैठती है। बाकी समय वह पिंजरे में रहती है। यह एक बहुत बड़ा पिंजरा है, लेकिन मैंने कभी-कभार यह टिप्पणी सुनी है कि पक्षियों को पिंजरे में रखना कितना क्रूर है। फिर मैं टिप्पणी करने वाले व्यक्ति से पूछता हूँ, 'यह अपनी पत्नी और बेटियों को घर पर रखने से कितना अलग है? क्या यह भी एक पिंजरा नहीं है?' और वह, क्योंकि यह हमेशा एक पुरुष होता है, अविश्वास में हँसता है। 'आप दोनों की तुलना कैसे कर सकते हैं? पक्षी स्वतंत्र रहने के लिए बने हैं।'

'और औरतें नहीं?' 'औरतों का ख्याल

रखना चाहिए,' वह मुझसे कहते और उनकी आंखें पूछतीं: तुम्हें इसके बारे में क्या पता? तुम्हें न तो बीवी है और न ही बच्चे, जिनकी तुम्हें चिंता करनी पड़े।

'अगर आप ऐसा कहते हैं तो.' मैं ऐसा ही करूंगा.

लेकिन मालिनी, मुझे पता है, अपने पिंजरे में खुश है। मैंने उसे आज़ाद करने की कोशिश की थी, लेकिन कुछ दिनों बाद मैंने पाया कि वह लगभग मर चुकी थी। वह मेरे बिना ज़िंदा नहीं रह सकती थी और इसके अलावा, उसका परिवार उसे अब और नहीं चाहता था। इसलिए अब वह अपने पिंजरे में बैठी है और कौवों से बातें कर रही है।

उसके पास आवाज़ों का एक संग्रह है, जिनमें से ज़्यादातर भद्दी हैं। जब वह गेट के पास किसी को देखती है तो कुत्ते की तरह भौंकती है, परेशानी पैदा करने वाले कुत्तों पर मिमियाती है, और जब वह बरामदे के पास आम के पेड़ पर दूसरे तोते को देखती है तो फैक्ट्री के सायरन की तरह चीखती है या पिस्तौल की गोली जैसी आवाज़ निकालती है।

मैंने पाया है कि मालिनी को ज़्यादातर जीव-जंतु, चाहे वे जीवित हों या नहीं, नापसंद हैं। उसे रेडियो से भी नफ़रत है, और वह इतनी ज़ोर से चीखती-चिल्लाती है कि उसकी आवाज़ दब जाती है। अपने नाम के बावजूद, वह न तो मधुर स्वभाव की है और न ही सुंदर। मालिनी एक दुष्ट बूढ़ी औरत है, लेकिन वह मुझे किसी और से ज़्यादा हंसाती है जिसे मैं जानता हूँ।

मैं सब्जी के खेत के अंत तक जाता हूँ और बाड़ के ऊपर से झाँकता हूँ। मैं गेट के पास खड़े आदमी को देखता हूँ। वह मध्यम कद का है, उसके सिर पर घने बाल और दाढ़ी है; उसके काले बाल सफ़ेद होने का नामोनिशान नहीं रखते। मुझे अपने चेहरे पर मुस्कान आती हुई महसूस होती है। यह ए.के. है। वह यहाँ क्या कर रहा है?

Machine Translated by Google

'ए.के.?' मैंने पुकारा।

वह मुस्कुराता है और गेट खोलता है। 'मुझे यकीन नहीं था कि यह तुम्हारा घर है, लेकिन यहाँ
अब आगे जाने के लिए कुछ नहीं था। तभी मैंने आपके कुत्ते को भौंकते हुए सुना। क्या वह काटता है?'

'वह मेरा कुत्ता है।' मैंने मालिनी की ओर इशारा किया।

मैं जानता हूँ कि मालिनी आगे क्या करने वाली है। जब कोई गेट से अंदर आता है, तो वह चिल्लाती है, 'कल्लन! कोंधन!' ज़्यादातर आगंतुकों को यह देखकर बुरा लगता है कि उन्हें चोर घोषित कर

दिया गया है, और वह भी एक मूर्ख चोर। मैं पश्चाताप करने का नाटक करता हूँ, लेकिन ज़्यादातर मैं मन ही मन हँसता हूँ। 'पक्षी मूर्ख है,' मैं आधे मन से कहता हूँ।

मालिनी अपना सिर झुकाती है, अपनी मनमोहक आँखों से उन्हें घूरती है और चुप हो जाती है। इसके बाद, हर कुछ मिनट में, वह बसेरे के अंत तक पहुँचती है और धीरे से कहती है, 'कल्लन! कोंधन!' मेरे आगंतुक कभी भी ज़्यादा देर तक नहीं रुकते, और मुझे कोई शिकायत नहीं है। वैसे भी, ज़्यादातर लोग

वे किसी अच्छे उद्देश्य के लिए, जैसा कि वे इसे कहते हैं, दान मांगने आते हैं।

'सुनो, ए.के.,' मैंने जल्दी से कहा। 'कृपया उसे अनदेखा करो। वह सिर्फ़ दो शब्द जानती है, लेकिन वे बहुत असभ्य हैं।'

ए.के. मुस्कुराता है। 'वह मेरे कुछ कला समीक्षकों से ज़्यादा असभ्य नहीं हो सकती।' मैं भी उसे प्यार से देखकर मुस्कुराता हूँ।

मैं ए.के. से कई साल पहले मद्रास में संगीत अकादमी में मिला था। मुझे याद नहीं कि हमें किसने मिलवाया था, लेकिन हमें तुरंत एहसास हो गया था कि हम एक-दूसरे को समझते हैं। ए.के. एक कलाकार है। उसकी पेंटिंग्स रोशनी से भरी हैं और मैंने कहीं पढ़ा था कि 'उसका स्पर्श ध्वनियों के साथ भी उतना ही जीवंत था।' मैं ऐसे वाक्यांशों को नहीं समझता, लेकिन मैं जानता हूँ कि वह अपनी कला को वैसे ही देखता है जैसे मैं अपनी कला को देखता हूँ। यह मांग करता है कि उसे इसके साथ संघर्ष करना पड़े। कि वह चाहे तो एक चालबाज हो सकता है - कोई ऐसा व्यक्ति जो कैनवस को शानदार ढंग से भर दे और हर स्ट्रोक को एक सर्कस में बदल दे जिससे उसे वह कीमत मिले जो वह चाहता है - और फिर भी, वह अभिव्यक्ति की ऐसी सहजता को अनदेखा करना चुनता है ताकि वह अपनी ईमानदारी को बनाए रख सके।

मालिनी अपनी अनिवार्य चीख़ें निकालती है और फिर चुप हो जाती है।

'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' मैंने उत्सुकता से पूछा।

'परिवार में शादी है। मैंने सोचा कि मैं तुमसे मिलने आऊँ।' वह मेरे बगीचे में लगे पौधों को देख रहा है।

वह एक पत्ते को छूता है, नीचे झुकता है और
फूल सूँघता है, पेड़ की छाल को सहलाता है। मैं मुस्कुराता हूँ।

हम नदी की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर चलते हैं।

'क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारा घर और मेरा घर एक सीधी रेखा पर हैं? ओह, मुझे पता है कि तुम किसी भी दो बिंदुओं के बीच एक सीधी रेखा खींच सकते हो, लेकिन यह लगभग 180 डिग्री है। सिवाय इसके कि मेरा घर नदी के किनारे है,' वह अचानक कहता है।

आशान को ए.के. पसंद होता। आशान की तरह उसे भी ए.के. पसंद नहीं है।

Machine Translated by Google

पूर्वनियोजित प्रतिक्रियाएँ या जानबूझकर विचार।

'क्या तुम यहीं रहना चाहती हो, या मैं तुम्हें बगल वाले रिसॉर्ट में ले जाऊं? मेरी भतीजी का घर है। हम कुछ खाने-पीने का प्रबंध कर सकते हैं,' मैंने मालिनी के पिंजरे पर कपड़ा डालते हुए कहा। शाम का सूरज पिंजरे को गर्म कर देता था और मालिनी को गर्मी से नफरत थी।

'लेकिन रुको, ए.के., मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ,' मैंने कहा। 'मेरे मित्र फिलिप अंग्रेज ने मुझे एक किताब के कुछ पन्नों की फोटोकॉपी भेजी थी जिसे वह पढ़ रहा था। जब मैं उन्हें पढ़ रहा था तो मुझे तुम्हारा ख्याल आया और वास्तव में मैंने सोचा कि मैं उन्हें तुम्हें एक दिन भेज दूँगा।

'ये कलाकार पिसारो द्वारा अपने बेटे को लिखे गए पत्र हैं। इसे सुनिए: क्योंकि एक कलाकार को केवल अपने आदर्श को ध्यान में रखना चाहिए। वह गरीबी में जी रहा है, हाँ, लेकिन उसके दुख में एक उम्मीद उसे सहारा देती है, किसी ऐसे व्यक्ति को पाने की उम्मीद जो उसे समझ सके।'

मैं उन रिसेप्शन के बारे में सोचता हूँ, जिनमें मैं शामिल हुआ हूँ। मैं एक महिला के बारे में सोचता हूँ, जिससे मैं पहली बार कुछ साल पहले एक वार्षिक नृत्य समारोह में मिला था। उसके बाद से हर साल, वह एक ही शब्द दोहराती थी: 'ओह, मिस्टर कोमन, मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। मैंने सभी बड़े नामों को नृत्य करते देखा है। बिरजू महाराज, अलारमेल वल्ली, मल्लिका सरुक्कई, धनंजयन, पद्मा सुब्रमण्यम, कलामंडलम गोपी... नृत्य जगत की सभी नामचीन हस्तियाँ। आप एकमात्र ऐसी हस्ती हैं, जिन्हें मैंने नहीं देखा है। आपको प्रदर्शन करते देखना, मेरी प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर है। तो आप अगली बार कब और कहाँ प्रदर्शन करेंगे?'

पहली बार मैंने उसे बताया। दूसरी बार भी। तब मुझे एहसास हुआ कि यह सिर्फ़ एक मज़ाकिया अंदाज़ था और इससे ज़्यादा कुछ नहीं। जब वह मुझसे बात कर रही थी, तब भी उसकी नज़र रिसेप्शन हॉल में मौजूद छोटे-छोटे समूहों को खोज रही थी, यह मूल्यांकन करते हुए कि उनमें से कौन सा समूह खेती करने लायक है।

वह कला के बारे में कुछ भी नहीं समझती थी। और जब मैं ज़ोर से कुछ पढ़ता हूँ तो मैं उसके बारे में सोचता हूँ जो मुझे बहुत पसंद है।

'और भी बहुत कुछ है,' मैं कहता हूँ। 'तो देखो, पूंजीपति वर्ग, असली पूंजीपति वर्ग कितना मूर्ख बन गया है, कदम दर कदम वे नीचे और नीचे जा रहे हैं, एक शब्द में वे सुंदरता की सारी धारणा खो रहे हैं, वे हर चीज के बारे में गलत हैं।

जब कोई चीज प्रशंसा योग्य होती है तो वे उसे अस्वीकार कर देते हैं!
जहाँ मूर्खतापूर्ण भावुकताएँ होती हैं, जिनसे आप घृणा के साथ दूर जाना चाहते हैं, वे खुशी से उछल पड़ते हैं या बेहोश हो जाते हैं।' आप सोच सकते हैं कि पिछली एक सदी में चीजें बदल गई हैं; लोगों में संवेदनशीलता आ गई है, लेकिन रुकिए जब तक हम अगले दरवाजे पर न चले जाएँ...' जब हम रिसेप्शन से आगे बढ़े, मैंने क्रिस को देखा।

'वह कौन है?' ए.के. पूछता है। 'वह आपकी ओर देख रहा है।' मैं हाथ हिलाता हूँ। 'वह
क्रिस स्टीवर्ट है। वह एक यात्रा लेखक है और एक यात्रा पर शोध कर रहा है।

Machine Translated by Google

केरल के बारे में कौन सी पुस्तक है जिसमें मेरा नाम है!' मैं अपनी भौंहें उठाकर यह बताने की कोशिश करता हूं कि मैं इसके बारे में क्या सोचता हूं।

ए.के. खुश दिखाई देता है। 'क्या तुम्हें डर है कि वह उससे ज़्यादा देख लेगा जो तुम बताना चाहती हो?' मैं कंधे उचकाता हूँ। अपने बारे में बात करने के लिए

सहमत होने के बाद, अब मैं इतना निश्चित नहीं हूँ। मैंने उसे कल ही भेज दिया था, लेकिन मैं ऐसा हर रोज़ नहीं कर सकता।

क्रिस मुड़ता है और हमारी ओर चलता है। फिर मैं राधा को देखता हूँ। वह खिड़की के पास खड़ी है और जल्द ही वह भी सीढ़ियों से नीचे गिर जाती है। क्रिस राधा के लिए रुकता है।
वे एक दूसरे को देखते हैं। मैं उनके चेहरों पर चमक देखता हूँ, एक दूसरे की गर्मजोशी से
निकटता.

मैंने उन्हें दो रात पहले सीढ़ियों पर बैठे देखा था, एक दूसरे से लिपटे हुए। एक पल के लिए मैंने सोचा था कि क्या मुझे राधा को सावधान करना चाहिए। नहीं, मैं उसे बताना चाहता था।
यह सब बहुत तेजी से हो रहा है। इसके अलावा, मैं देख सकता हूँ कि तुम हमेशा सोचते रहते हो, और वह यहीं और अभी सोचता है। तुम उसके लिए उसे दोष नहीं दे सकते। लेकिन यह तुम ही हो जो चोटिल होगे... फिर मैंने फैसला किया कि ऐसा नहीं करूंगा। हर किसी को अपनी गलतियाँ करने का अधिकार है। मैं उससे कोई अनुभव नहीं छीन सकता था, भले ही वह गलती ही क्यों न हो।

इसके अलावा, जो कुछ भी होना था वह होकर रहेगा।

मैंने उसे बहुत समय से इस तरह से उत्साहित नहीं देखा था। जो चीज उसे इतनी खुश करती है, वह निश्चित रूप से बुरी नहीं हो सकती। भले ही वह शादीशुदा थी? तो क्या हुआ, मैंने खुद से पूछा। तुमने इतना उच्च नैतिक रुख कब से अपनाना शुरू कर दिया? वह अपनी शादी से नाखुश थी और अगर उसे व्यभिचार में खुशी मिलती है, तो ऐसा ही हो। मुझे तब एहसास हुआ कि उसके प्रति मेरा प्यार मुझे उसकी किसी भी गलती को माफ करने की अनुमति देगा।

'यह ए.के. है। वह एक कलाकार है। वह मद्रास में रहता है, लेकिन वास्तव में वह कुडल्लूर नामक एक नज़दीकी जगह से है,' मैंने ए.के. का परिचय उन्हें कराया। मुझे अचानक संतुष्टि की लहर महसूस हुई। मैं उन लोगों से घिरा हुआ हूँ जिन्हें मैं प्यार करता हूँ।

प्यार? मैं खुद को पकड़ता हूँ। क्या मैं क्रिस से प्यार करता हूँ? मैं उसे मुश्किल से जानता हूँ। फिर भी, जब भी मैं उसे देखता हूँ या उसके बारे में सोचता हूँ तो मुझे गर्मजोशी की लहर महसूस होती है। मैं फिर से सोचता हूँ: वह कौन है? वह मुझसे क्या छिपा रहा है?

तभी श्याम हमारे पास आ गया। 'हेल्लो, हेलो,' उसने कहा। 'कौन है यह? लगता है कोई है।'
एक छोटा सा सम्मेलन चल रहा है।'
मैं ए.के. का उनसे परिचय कराता हूँ। श्याम कहते हैं, 'बेशक मैं उन्हें जानता हूँ।' 'तो ए.के. सर, आजकल कला जगत कैसा है? मैं दूसरे दिन हुसैन की नीलामी में मिली कीमतों के बारे में पढ़ रहा था। आधुनिक कला को सही मायने में सराहा जाना बहुत उत्साहवर्धक होगा।' मैं लगभग जोर से हँस पड़ा। श्याम को कला के बारे में कुछ भी नहीं पता।

वास्तव में, श्याम ने मेरे द्वारा परिचय कराए गए प्रत्येक व्यक्ति से यही कहा होगा।

Machine Translated by Google

उसे कला के स्थान पर संगीत या साहित्य या लकड़ी या एल्युमीनियम पाइप या कांच की चूड़ियां दी जाती थीं, जो इस बात पर निर्भर करता था कि व्यक्ति किस प्रकार का कार्य करता था।

ए.के. अपनी दाढ़ी में मुस्कुराता है। वह एक नकली कला प्रेमी को उतनी ही आसानी से पहचान सकता है जितनी आसानी से मैं एक नकली कथकली प्रशंसक को पहचान सकता हूँ। वे हर जगह हैं, ये कीड़े-मकोड़े कलाकार की उपलब्धियों के बारे में सोचते हैं। वे उसकी कला को इस आधार पर मापते हैं कि वह कितना सफल है। सफलता को पैसे, पुरस्कार और कितनी बार अखबारों और पत्रिकाओं में उसके बारे में लिखा जाता है। वे जो कुछ भी पढ़ते और सुनते हैं, उसमें से वाक्यों को रटते हैं और तकनीकों और रूपों के बारे में बिना एक दूसरे को जाने ही जानबूझ कर सिर हिलाते हैं। ए.के. और मैंने इन जीवों को इतना देखा है कि हम यह भी जानते हैं कि वे आम तौर पर हानिरहित होते हैं। इसके अलावा, थोड़ी-बहुत प्रशंसा किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचाती...खासकर एक कलाकार को नहीं जिसे एक बहुत ही निजी दुनिया के बारे में लोगों की राय का सामना करना पड़ता है।

'चाचा, क्या हुआ?' श्याम ने पूछा।

मैं खुद को झकझोरता हूँ। जैसे ही मैं इन आंतरिक स्थानों में वापस जाता हूँ, मेरी आँखें चमकने लगती हैं
मैं अधिकांश समय इन्हीं दुनियाओं में रहता हूँ।

'मैं समझ गया कि आपका क्या मतलब है। मुझे लगता है कि यह वही व्यक्ति है जिसकी आप बात कर रहे थे,' ए.के. ने मुझसे कहा।

मैं उसकी आँखों में चमक देखता हूँ। 'हाँ, अब तुम्हें पता चल गया...' श्याम मुस्कुराता है। 'क्या
तुम रेस्तराँ जाना चाहोगे?' वह पूछता है।

क्रिस ने पूछा, 'क्या आप मेरी कॉटेज में जाना पसंद नहीं करेंगे?'

राधा कहती हैं, 'मुझे लगता है कि कॉटेज बेहतर होगा।'

'कुटीर', मैं कहता हूं।

श्याम क्रोधित हो जाता है, लेकिन हमारे साथ चलता है।

जब हम कॉटेज के बरामदे में बैठे होते हैं, तो श्याम रूम सर्विस को बुलाता है। 'आप क्या खाना पसंद करेंगे? फिंगर चिप्स? सैंडविच? या कुछ पकौड़े? चाय या कॉफी?' श्याम एक मिलनसार मेजबान है, और उसे ऐसा होने की ज़रूरत नहीं है; मेरे मेहमान उसके नहीं हैं। फिर से मुझे उसके बारे में अपनी पिछली अटकलों पर शर्म आती है।

क्रिस कहता है, 'मैं तुमसे मिलने आया था।' 'मुझे उम्मीद थी कि तुम फिर से आओगे...' वह अचानक रुक जाता है।

मैं आहें भरता हूँ। मैं दो मन में हूँ। इन यादों को खंगालना व्यर्थ लगता है, लेकिन जब मैं उन्हें पीछे मुड़कर देखता हूँ और प्रकाश में देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गया हूँ जहाँ मैं पहले कभी नहीं पहुँचा था।

'बाद में,' मैं कहता हूँ। 'बाद में। कल तक आ जाना।' फिर मुझे राधा का

चेहरा दिखाई देता है। नलचरितम में एक दृश्य है जहाँ दमयंती अपने पिता के राज्य से आए एक दूत को अपने दुर्भाग्य का वर्णन करती है। वह

Machine Translated by Google

कहानी उस समय से शुरू होती है जब उसका पति अपने भाई के साथ पासा का खेल खेलने का फैसला करता है, अपना राज्य खो देता है और जंगल में जाने के लिए मजबूर हो जाता है, अंततः उसके पति द्वारा त्याग दिया जाता है और उसके बाद उसे तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

उस दृश्य में, दमयंती कुछ ही क्षणों में नुकसान के तैंतीस भावों को दर्शाती है। इन भावनाओं में दुख शामिल नहीं है, क्योंकि दुख एक निरपेक्ष है और नुकसान की भावना क्षणभंगुर है। राधा के चेहरे पर नुकसान की वे तैंतीस भावनाएँ दिखाई देती हैं, जब उसे एहसास होता है कि उसके पास कल क्रिस के साथ रहने का कोई बहाना नहीं है। मेरा दिल उसके लिए रोता है। मैं हस्तक्षेप न करने, न ही सहायता करने और न ही रोकने के अपने निर्णय को अलग रखने का फैसला करता हूँ, और कहता हूँ, 'मैं चाहता हूँ कि तुम वहाँ रहो, राधा।'

वह चमकती है.

'मुझे जाना होगा,' जब खाना परोसा गया और स्टीवर्ड ने कहा
'राधा, क्या तुम आ रही हो?'

'नहीं।' वह अपना सिर हिलाती है। 'मैं थोड़ी देर बाद घर आ जाऊँगी। चिंता मत करो। मैं लड़कों में से किसी एक से ऑटोरिक्शा बुलवा लूँगी।' मुझे ऑटोरिक्शा शब्द का उच्चारण समझ

में नहीं आता, लेकिन श्याम को साफ समझ में आता है। वह उसे एक पल के लिए घूरता है और कहता है, 'मैं तुम्हारे लिए कार वापस भेज दूँगा।' 'शायद तुम्हें जाना चाहिए था,' मैं कहता हूँ।

'नहीं, किसलिए? और टीवी देखने के लिए? घर पर मेरे पास करने को कुछ नहीं है,'
वह कहती है। उसकी आवाज़ में कड़वाहट मुझे चौंका देती है।

श्याम के चले जाने से माहौल में राहत मिलती है। ऐसा लगता है जैसे कोई जूआ उतर गया हो। क्रिस और राधा एक दूसरे को देखकर मुस्कुराते हैं। उन्होंने अभी तक एक शब्द का आदान-प्रदान नहीं किया है, लेकिन उनकी मुस्कुराहट में सभी अनकहे शब्द और विचार समाहित हो गए हैं।

फिर एके पूछता है, 'तो कोमन तुम्हें अपने बारे में क्या बता रहा है?' 'क्या तुम सुनना चाहोगे?' क्रिस
पूछता है।

मैं क्रोधित होता हूं।

'क्या तुम्हें कोई आपत्ति है?' क्रिस मेरी ओर मुड़ा, उसे एहसास हुआ कि शायद मैं अपने जीवन के बारे में इस तरह की बात को स्वीकार न करूं।

'नहीं, उसे बजाओ। फिर मैं तुम्हें कुछ और बताऊंगा। अब समय आ गया है कि तुम सादिया के बारे में सुनो और यह भी कि शुरुआत में जहाज क्यों था...'

देर रात को मुझे नींद नहीं आती। ए.के. कुछ देर पहले ही चले गए थे। हम डिनर के बाद अपने घर वापस आ गए थे। उन्होंने कहा, 'मैं अक्सर अपनी ज़मीन पर ऐसी ही झोपड़ी बनाने के बारे में सोचता हूँ। लेकिन जब आप कुंवारे होते हैं, तो हर कोई कहता है, हमारे साथ रहो, तुम्हें अपना घर क्यों चाहिए? ऐसा नहीं है कि तुम्हारे बच्चे हैं जो वहाँ रहना चाहेंगे। कभी-कभी मुझे लगता है कि वे मेरे मरने का इंतज़ार कर रहे हैं।'

ए.के. बहुत चिंतित था। वह अक्सर इस मूड में नहीं होता था। शायद उसकी उम्र की वजह से ऐसा हुआ हो, मैंने सोचा।

Machine Translated by Google

विचार। पचास की उम्र के मध्य में, जीवन और मृत्यु के बारे में विचार अक्सर मन की सतह पर तैरने लगते हैं।

मैं मद्रास में उनके घर के बारे में सोचता हूँ: बोगनविलिया से सजा हुआ दरवाज़ा और कई कोणों वाला घर जिसमें रोशनी को रोकने के लिए दरारें और दरारें हैं। हर जगह ढेर सारे कैनवस भरे पड़े हैं। खुद के लिए, उनके पास एक छोटा सा लिविंग एरिया है जिसमें एक संकरा बिस्तर, एक टेबल और कुछ अन्य चीजें हैं... इतने समृद्ध जीवन के लिए इतनी कम संपत्ति। घर का बाकी हिस्सा उनकी कला के औजारों के लिए समर्पित है। उन्होंने अपनी जगह पा ली है। हालाँकि, यह आसान नहीं रहा होगा। वह राज्य विभाग में काम करते हैं और कला प्रतिष्ठान और उसके गुटों से पूरी तरह दूर रहते हैं। उनकी कला उनकी अपनी है और शायद इसीलिए वह अपनी त्वचा से इतने संतुष्ट हैं।

मैं अपने चारों ओर देखता हूँ। यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जो मेरी कला की उपस्थिति का संकेत दे।
मेरे पास केवल मेरे स्टील के नाखून और घी का एक छोटा सा डिब्बा है जिसमें मेरे चंदापू के बीज रखे हुए हैं।

मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ। मैं अपने पिता के बारे में सोचता हूँ। अपने अंतिम वर्षों में, वे अक्सर यहाँ आते थे और कुछ दिन वे बहुत बातें करते थे। मुझे नहीं पता कि उन्होंने मुझसे जो कहा वह अपना बोझ हल्का करने के लिए था या मेरा।

उन्होंने कहा, "वह मेरी कला को बोझ समझते थे। यह मुझे हमेशा दबाए रखेगी। यह मुझे हमेशा खुद बनने से रोकेगी।"

'मैंने कई चेहरे पहने हैं, कई भूमिकाएँ निभाई हैं, लेकिन मैंने ऐसा जीवित रहने के लिए किया। ताकि मैं अपने भीतर के 'मैं' को बचा सकूँ। मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। लेकिन आप क्या करते हैं... मुझे यह समझ में नहीं आता। आप हर समय किसी और की तरह रहना कैसे चुन सकते हैं? आपको हमेशा किसी और की त्वचा में रहने की ज़रूरत क्यों है? क्या यही एकमात्र तरीका है जिससे आप जीवन से संतुष्ट हो सकते हैं?'

मैंने उसे समझाने की कोशिश की थी, लेकिन मुझे लगा कि यह उसके बस की बात नहीं है। उसका जीवन मेरा नहीं था। वह कभी नहीं समझेगा कि मुझे अपने शरीर से संतुष्ट होने से पहले किसी और की तरह बनना होगा।

फिर मैं सोचता हूँ, अपनी कहानी सुनाते समय मुझे अपने पिता और माँ दोनों का वेश धारण करना होगा। तभी मैं उनके प्यार को समझा पाऊँगा। और जब उनकी कहानियाँ सुनाई जाएँगी, तभी मैं खुद को कहानी में शामिल होने की इजाज़त दे पाऊँगा। उनके बिना, मेरा कोई अस्तित्व नहीं है।

क्या क्रिस इतना धैर्य रखेगा? क्या वह समझ पाएगा?
मुझे लगता है कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं उसे बता दूँ, यही काफ़ी है। लेकिन पहले उसे पता होना चाहिए
कि कैसे मेरे पिता सेतु, जो स्वयं को सेठ कहते थे, मेरी मां सादिया से मिले।

Machine Translated by Google

1938 द प्लैंक ऑफ़ एविडिटी

वे साइकिल चलाते थे। डॉ. सैमुअल सागयाराज और सेथु, दोनों ही हर जगह साइकिल से जाते थे। दूसरे लोग बैलगाड़ी या टट्टू के साथ ढकी हुई झुटका गाड़ी चुनते थे, या अगर वे इसे वहन कर सकते थे, तो कार। लेकिन डॉ. सैमुअल सागयाराज को अपनी साइकिल को छोड़कर सभी तरह के परिवहन से नफरत थी। 'मैं अपनी साइकिल से खुश हूँ; आप अपनी साइकिल से खुश होंगे, मैं आपको आश्वासन देता हूँ। मेरी साइकिल ने मेरी अच्छी सेवा की है,' उन्होंने प्यार से साइकिल को देखते हुए कहा था। फिर उन्होंने एक बार फिर पैसे गिने।

सेतु ने पूछा, 'जब एम्बुलेंस मौजूद है तो मुझे साइकिल की क्या ज़रूरत है?' उसे भीषण गर्मी में साइकिल चलाने का ख़याल अच्छा नहीं लगा। इसके अलावा, उसे डॉक्टर के सामने यह स्वीकार करना भी अच्छा नहीं लगा कि उसे साइकिल चलाना नहीं आता। इससे चर्चाओं का दौर शुरू हो जाता, जिसके बारे में सेतु ने तय किया कि उसके पास न तो हिम्मत है और न ही सहनशक्ति।

'एम्बुलेंस!' डॉक्टर ने आश्चर्य से अधिक आक्रोश की चीख निकालते हुए कहा।
उसकी भौंहें और भी ज़ोर से टकराने लगीं। 'एम्बुलेंस मरीज़ों और आपातकालीन स्थितियों के लिए है। फिर भी, मैं इसका इस्तेमाल अनिच्छा से ही करता हूँ। एम्बुलेंस चलाना महंगा है। और स्वस्थ शरीर वाले लोगों के लिए इसे चलाना पाप है,' उसने नोट सेतु की हथेली में थमाते हुए कहा।

तब डॉक्टर ने अपना सिर घुमाया और धीरे से कहा, 'जाओ, जो कुछ तुम्हारे बस में है वह करो।
क्योंकि यहोवा तेरे संग है।

सेतु ने सोचा, एक बच्चे कबूतर की तरह, डॉक्टर के सिर को देखते हुए, जो उम्मीद में झुका हुआ था। उसने आह भरी। वह इस खेल से थक गया था, लेकिन जवाब देने के लिए काफी आज्ञाकारी था। यह महान हैजा महामारी के समय शुरू हुआ था जब डॉक्टर ने कहा था कि उसे लगता है कि सेतु बाइबल से अच्छी तरह परिचित नहीं है। सेतु को तब डर का एहसास हुआ था। क्या होगा अगर डॉक्टर ने उसकी असलियत पहचान ली? इसलिए उसने पवित्र पुस्तक को लगन से पढ़ना शुरू किया और पाया कि उसने जो कुछ भी पढ़ा था, उसमें से अधिकांश को उसने सहजता से याद कर लिया। यह उसके दिमाग में रहा और, बिना जाने कैसे, उसने एक बार डॉक्टर द्वारा कही गई एक पंक्ति को उसमें रख दिया। उसके बाद, डॉक्टर ने उससे हर बार ऐसा करने की अपेक्षा की, और जल्द ही सेतु ने अपना सारा खाली समय बाइबल पढ़ने और उसे याद करने में लगा दिया। 'शमूएल की दूसरी पुस्तक, जिसे राजाओं की दूसरी पुस्तक भी कहा जाता है। अध्याय 7: दाऊद से परमेश्वर के वादे।'

'तुम वाकई कमाल हो। तुम यह सब कैसे कर लेते हो?' डॉक्टर की आवाज़ में खुशी देखकर वह

सिहर उठा। 'जब तुम भी उतनी ही अच्छी किताबें पढ़ते हो जितनी मैं पढ़ता हूँ, तो यह मुश्किल नहीं है,' सेतु ने कहा, उसे पता था कि उससे यही उम्मीद की जाती है।
विशेषकर जब आप शमूएल की पुस्तक से उद्धरण चुनते हैं,

Machine Translated by Google

उसके दिमाग में आवाज ने जोड़ा.

जब से वह नाज़रेथ आया था, उसके दिमाग में एक नई आवाज़ गूंजने लगी थी। यह उसके चाचा की आवाज़ से बदलकर उसकी अपनी आवाज़ बन गई थी। एक ऐसी आवाज़ जो अक्सर उसका मज़ाक उड़ाती थी कि वह क्या बन गया है। एक ऐसी आवाज़ जो उसे सच्चा अनुयायी नहीं बनने देती थी।

जब सेतु की काली रैले आई, तो डॉक्टर ने उसे साइकिल चलाना सिखाया, जैसे उसने महामारी के दौरान उसे सिखाया था, सिरिंज लोड करना और इंजेक्शन देना। एक बार जब उसने खुद को कोई काम सौंप दिया तो वह अथक हो गया।

'मुझे तुम्हारे साथ कई जगहों पर जाना है, और पैदल चलने में बहुत समय लगेगा। यहाँ, पहिए को मत घूरो। आगे देखो,' उसने सेतु को थोड़ा धक्का देते हुए कहा, जबकि वह ऊंची सीट पर अनिश्चित रूप से बैठा हुआ था। साइकिल डगमगाने लगी, लेकिन डॉ. सैमुअल हैंडल बार को पकड़कर उसे स्थिर करने के लिए वहाँ मौजूद थे।

सेतु ने ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। सिर्फ़ डॉ. सैमुअल ही नहीं बल्कि फेथ, होप और चैरिटी भी उसे साइकिल चलाते हुए देखने की इच्छा रखते थे। वे चहकते, चिल्लाते और प्रोत्साहन के शब्द बोलते। सेतु ने उन्हें घूरते हुए सोचा, अगर मैं कभी इस यंत्र पर विजय प्राप्त करना सीख गया, तो मैं उनके दुलार से दूर क्षितिज में चला जाऊंगा।

कुछ बार गिरने, घुटने में चोट लगने और हथेली में खरोंच लगने के बाद सेथु ने अपना 'संतुलन' हासिल कर लिया, जैसा कि डॉ. सैमुअल ने कहा था।

'उसने अपना संतुलन पा लिया है,' फेथ ने होप और चैरिटी को बताया।

'प्रभु की स्तुति हो,' होप, जो तीनों में सबसे अधिक धर्मपरायण थी, चिल्लाई।

'हे पवित्र पिता, हमारे सेठ को उसका संतुलन देने के लिए धन्यवाद।' चैरिटी ने प्रार्थना शुरू कर दी।

सेठ शर्म से लाल हो गया। उन्होंने ऐसा दिखाया मानो वह तैरकर आया हो।
सीलोन और वापस। 'अरे चुप हो जाओ, तुम मोटी बूढ़ी मुर्गियाँ!' वह चीखना चाहता था।
लेकिन उनके चेहरों पर भय के भाव को सोचकर उसने अपनी जीभ और चिड़चिड़ाहट पर काबू पा लिया।

'हां, प्रभु और हमारे डॉक्टर सैमुअल की स्तुति हो,' सेतु ने आज्ञाकारी ढंग से कहा।

औरतें एक दूसरे को खुशी से देखने लगीं। यही कारण था कि उन्हें सेठ इतना पसंद था।
वह एक अच्छा ईसाई और एक वफादार अनुयायी था, ठीक वैसे ही जैसे वे थे।

साइकिल पर सवार सेतु को वह आज़ादी मिली जो पिछले कुछ महीनों में उसे नहीं मिली थी। बाहरी दुनिया में अपनी यात्राओं के लिए उसे डॉ. सैमुअल पर निर्भर रहना पड़ता था। अब वह अपनी साइकिल पर सवार होकर तेज़ी से पैडल चलाते हुए अकेले ही निकल पड़ा।

चढ़ाई पर वह सीट से उठकर और भी अधिक तेज़ी से पैडल चलाता, अपनी पिंडलियों की मांसपेशियों में खिंचाव महसूस करता। और नीचे उतरते समय, वह उस प्रयास की गति पर फिसलता, हवा उसके बालों में से गुज़रती, उसकी शर्ट को लहराती और उसके कानों में फुसफुसाती। कौन सोच सकता था कि दो पहिये और एक हैंडल

Machine Translated by Google

क्या ऐसा कोई उपाय है जो मुक्ति की ऐसी भावना प्रदान कर सके?

सेतु ने नाज़रेथ की परिधि से आगे जाने का साहस नहीं किया।
यहाँ, नाज़रेथ में, उसे एक ऐसी सुरक्षा मिली जो उसने पहले कभी नहीं पाई थी, यहाँ तक कि अपने घर में भी नहीं। और फिर भी, एक खास बेचैनी ने उसके शांत जीवन के ढांचे को चोट पहुँचाई, जिससे उसे और अधिक की चाहत हुई। और क्या, उसे नहीं पता था। लेकिन वहाँ वह था।
उसे भागने, भागने, बाहर निकलने और टूटकर अलग हो जाने की आवश्यकता महसूस हुई।

महामारी के कुछ महीनों बाद, नवंबर में, जब मानसून आ गया और अपने पीछे नमी छोड़ गया, तो डॉ. सैमुअल ने निर्णय लिया कि अब अरबिपटनम जाने का समय आ गया है।

'यह कितनी दूर है?' सेतु ने आशा, विश्वास और दान की टोकरियों को देखते हुए पूछा।
हम सामान पैक कर रहे थे। दवाइयाँ, अतिरिक्त कपड़े और खाने के पैकेट।
होप ने कहा, 'डॉक्टर अपने कुएं के अलावा कहीं और पानी नहीं पीता।'
अपने सुरुक्कु सेम्बू में पानी डालते हुए। उसके तांबे के किनारे चमक रहे थे।

'और पलैयामकोटई के पास अपने धान के खेतों में उगाए गए चावल के अलावा कोई चावल नहीं खाता। हर फसल के समय उसकी माँ उसके लिए अनाज का एक बड़ा बोरा भेजती है।' 'मोटा भूरा चावल; यही उसकी ऊर्जा और कर्तव्य के प्रति समर्पण का रहस्य है,' फेथ ने सेतु की पॉलिश किए हुए

चावल के प्रति पसंद को जानते हुए कहा।

डॉ. सैमुअल ने कहा, 'सावधान रहना समझदारी है।' डॉक्टर के पास तामझाम के लिए बहुत कम धैर्य था और बहनों ने उन्हें एक झगड़ालू, एक मूर्ख झगड़ालू व्यक्ति बना दिया।

'इस क्षेत्र का अधिकांश पानी पीने योग्य नहीं है। मुझे पता है कि यहाँ का पानी पीने योग्य नहीं है।
खैर, मैं सुरक्षित हूँ। जहाँ तक चावल की बात है, तो वह मेरी कमजोरी है।'
चैरिटी ने बड़बड़ाते हुए कहा, 'अगर वह कोई और चावल खा लेता है तो उसे कब्ज़ हो जाता है।'
सेतु मुस्कुराया। डॉ. सैमुअल ने एक मक्खी को भगाया। और बाकी दो ने उसे धक्का दिया।
दान चुप रहना है।
डॉ. सैमुअल की साइकिल पर उनके पेशे की छाप थी - उनका डॉक्टर बैग। हैंडल बार पर एक छोटी टोकरी रखी थी जिसमें उनका सुरुक्कू सेम्बू था, जिसका ढक्कन कसकर बंद था ताकि पानी की एक बूँद भी न गिरे।

सेतु ने अपनी साइकिल के कैरियर के दोनों ओर लटकी दो टोकरियों को देखा। डॉक्टर और उसका खच्चर, उसने कड़वाहट से सोचा।
धीरे-धीरे उसे लगा कि पित्त उसकी सोच को नष्ट कर रहा है। उससे मांगी गई पूर्ण अधीनता ने उसे एक ऐसे आक्रोश से भर दिया जिसे वह समझा नहीं सकता था। उसके दिमाग में आवाज़ ने उसे पहले से कहीं ज़्यादा मज़ाक में उड़ा दिया: तो क्या तुम यही चाहते हो? डॉक्टर के पैक जानवर के रूप में हमेशा के लिए यहाँ रहना जब तक कि इन दिनों में से एक दिन, वह तुम पर कोंडाई बहनों में से एक को थोप न दे? वाह, क्या तुम भाग्यशाली नहीं हो? अपनी पसंद का चुनाव करने के लिए

Machine Translated by Google

तीन बन। तो कौन सा बन होगा? बड़ा बन, छोटा बन या चोटी वाला बन?
और आपके हनीमून के लिए डॉक्टर एक स्वास्थ्य शिविर लगा सकते हैं, जहां आप पांचों जाकर एक-दूसरे के दिल की धड़कन पढ़ सकते हैं।

वे साइकिल से जा रहे थे। दो आदमी, डॉ. सैमुअल और सेथु।

डॉ. सैमुअल ने चलते हुए कहा, 'हमें साइकिल से तिरुचेंदूर जाना है।'

सेतु ने डॉक्टर के चेहरे को पढ़ने की कोशिश की। क्या उसने किसी तरह से सेतु के मन को पढ़ लिया था और उसके भटकाव वाले झुकाव को पहचान लिया था? क्या इसीलिए उसने अरबिपट्टनम की यात्रा का प्रस्ताव रखा था? अगर ऐसा है, तो डॉक्टर ने सब कुछ गलत समझ लिया था। उसके पास ग्रामीण इलाकों पर नज़र डालने के लिए भी समय नहीं था। भारी भरकम साइकिल पर उसका पूरा ध्यान था।

लेकिन धीरे-धीरे उसे लगा कि अब साइकिल इतनी भारी नहीं लगती। अगर वह दवा की बोतलों के टूटने या खाने के पैकेट के खुलने के बारे में न सोचे, तो साइकिल इतनी भारी नहीं लगेगी। और जल्द ही, वह उस परिदृश्य को देखने लगा, जिसमें से वे साइकिल चला रहे थे।

उसे एहसास हुआ कि यह नाज़रेथ से अलग नहीं था। समतल झाड़ियाँ बीच-बीच में बबूल के पेड़ों की एक झुरमुट से टूट गई थीं। अचानक वहाँ हरे-भरे खेत दिखाई देने लगे जिनमें धान उग रहा था और ताड़ के पेड़ों की एक कतार, जिनमें से कुछ की चोटियाँ बिजली गिरने से टूट गई थीं। सेतु को गर्मी और गंदगी महसूस हुई। भूदृश्य का भूरापन देखकर उसका गला दुखने लगा।

घर पर कभी भूरा रंग नहीं देखा। यह हमेशा हरा ही रहता था। हरे रंग के लाखों शेड्स। लेकिन यहाँ, सब कुछ मिट्टी के रंग का था, सूखी मिट्टी का। मिट्टी के रंग की चट्टानें। मिट्टी से लिपटे पत्ते। मिट्टी के रंग के बारिश के पानी के गड्ढे। सुनसान भूरेपन के विशाल रास्ते।

अचानक, सड़क के बीच में, डॉ. सैमुअल ने ब्रेक लगा दिया।

'अपनी बाईं ओर देखो, सेठ,' उन्होंने मिट्टी और पत्थरों के एक छोटे से टीले की ओर इशारा करते हुए कहा।

'कुछ साल पहले जब लोक निर्माण विभाग ने यहां सड़क बनाना शुरू किया तो मजदूरों को एक कलश मिला। जब उन्होंने इसे खोला तो उसमें एक कंकाल और कई कीमती चीजें मिलीं।

'इसके बाद मजदूरों ने काम करने से मना कर दिया। फिर एक पुरातत्वविद्, एक अंग्रेज ने खुदाई का आयोजन किया। उन्होंने कई ऐसे कलश निकाले। और जब उन्होंने काम पूरा किया, तो एक हिंदू पुजारी और एक ईसाई पादरी भूत-प्रेत को भगाने के लिए आए। उसके बाद ही मजदूर वापस लौटने को राजी हुए।' सेतु ने दिलचस्पी से अपने चारों ओर देखा। 'क्या उन्हें कभी पता चला कि वे कंकाल किसके थे? मेरा मतलब है, क्या वे किसी प्राचीन जाति या खानाबदोश जनजाति के थे?'

'सेठ, दफ़न कलश इतने दुर्लभ नहीं हैं। इन्हें असाधारण बनाने वाली बात यह है कि

Machine Translated by Google

हर एक कलश में एक महिला का कंकाल था। एक भी नर का नहीं था। यहां तक कि एक भी बच्चे का नहीं। यह आपको सोचने पर मजबूर करता है, है न? वे किस तरह के लोग थे?

इतिहास हमें यह विश्वास दिलाता है कि एक समय में, शायद एक हज़ार साल पहले, यहाँ एक निश्चित आदिम जनजाति रहती थी। लेकिन मुझे लगता है कि यह उन महिलाओं की कब्रगाह थी जो कभी अरबपटनम में रहती थीं। मूल निवासियों की पत्नियाँ और बेटियाँ। लेकिन मैं इतिहासकार नहीं हूँ, इसलिए मेरे निष्कर्ष को कौन स्वीकार करेगा!' डॉ. सैमुअल ने फिर से अपनी साइकिल पर सवार हो गए, लेकिन सेथु वहीं जड़वत खड़ा रहा।

अचानक ही धरती पर एक भयावह रंग छा गया। उस शांत भूरेपन के नीचे एक अँधेरा छाया हुआ था। सेतु काँप उठा।

'जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, मैं तुम्हें और भी अजीबोगरीब चीजें दिखाऊंगा। ऐसी चीजें जो तुम्हें हैरान कर देंगी...' सेतु ने साइकिल चलाते हुए सिर्फ़ आधी बात सुनी।

उन्होंने अपनी औरतों को क्यों दफनाया?

क्या ये महिलाएँ जीवित थीं या मृत जब उन्हें कलशों में भरा गया?

सेतु को अपने अंदर घबराहट की भावना बढ़ती हुई महसूस हुई। उसने डॉक्टर की तरफ एक नज़र डाली। अचानक उसे एहसास हुआ कि ज़मीन अब उतनी वीरान नहीं रही। उसने कुछ इमारतें देखीं। फिर और भी कई घर, छोटे और खपरैल की छतों वाले, पेड़ों के झुंड से घिरे हुए, ज़मीन पर दिखने लगे। दोनों आदमी एक ऐसी जगह पर मुड़े जो किसी गाँव की मुख्य सड़क जैसी लग रही थी। सड़क के दोनों तरफ़ घर बने हुए थे। घर जो सिंदूर और सफ़ेद रंग के निशानों से सजे हुए थे।

सेतु ने आश्चर्य से अपने चारों ओर देखा। इस ईसाई गढ़ में एक छोटी सी ब्राह्मण बस्ती? जल्द ही वे एक मंदिर के पास से गुजरे। उसने फिर से डॉ. सैमुअल के चेहरे पर नज़र डाली। कोई आश्चर्य नहीं कि वह गंभीर दिख रहा था। 'इस जगह का नाम क्या है?' उसने पूछा।

'इस पर ध्यान दो, क्योंकि बुराई तुम्हारे सामने है,' डॉक्टर ने बुदबुदाया।

सेतु थका हुआ डॉक्टर की प्रोफ़ाइल को देखता रहा। क्या वह कभी इससे थकेगा नहीं?

दोपहर की धूप की तपती धूप में भी, वह सेतु से यह अपेक्षा रखता था कि वह उद्धरण, अध्याय और श्लोक लिख देगा।

'निर्गमन 10; टिड्डियों का प्रकोप।' 'नहीं, नहीं,' डॉक्टर ने फुसफुसाते

हुए कहा। 'मिस्र के लोग बच्चों की तरह मासूम थे।

बकरियों की तुलना में ये जगह बहुत बुरी है।'

सेतु ने अपने होंठ चबाए। डॉक्टर का क्या मतलब था? उसे इस जगह से नफरत होगी, बुतपरस्तों की इस बस्ती से, जहाँ यीशु के झुंड के लिए एक भी मेमना नहीं था।

अन्यथा वह गांव को बुरा क्यों कहेगा?

सेतु ने गला साफ करते हुए फिर पूछा, 'इस गांव का नाम क्या है?' डॉ. सैमुअल ने धीरे से कहा, 'बाद में। बाद में!'

जब वे गांव और उसकी मुख्य सड़क को पीछे छोड़ चुके थे, तो डॉक्टर

Machine Translated by Google

इमली के पेड़ की छाया में रुक गया। उसने सुरुक्कु सेम्बू से भरपूर घूंट पिया और बोला, 'उफ़! हर बार जब मुझे उस गाँव से गुज़रना पड़ता है, तो मेरा पेट उबकाई लेता है। उनका पाखंड मुझे घिनौना लगता है! और मुझे आश्चर्य है कि उन दीवारों के भीतर कौन सी बीमारी छिपी है...' सेतु ने कुछ नहीं कहा। उसने सोचा कि यह कट्टरता की सीमा है। वह ऐसा कैसे कर सकता था

एक हिंदू गांव पर इतनी तीखी प्रतिक्रिया कैसे हो सकती है? उनके अंदर कुछ विद्रोह हो रहा था।

'उन्हें हिंदू होने का उतना ही अधिकार है जितना दूसरों को ईसाई या मुसलमान होने का है।

उन्होंने कहा, 'मुसलमानों.'

डॉक्टर ने उसकी ओर देखा.

'क्या मतलब है तुम्हारा? क्या तुम्हें लगता है कि उनका हिंदू होना मुझे घिनौना लगता है?' सेतु ने कंधे उचका दिए। वह स्पष्ट बात नहीं कहने वाला था।

'यह कोई साधारण हिंदू गांव नहीं है, सेठ,' डॉक्टर ने समझाने की कोशिश की।

ऐसा लग रहा था जैसे वह युवक की बेचैनी को समझ रहा था।

सेतु ने डॉक्टर की बयानबाजी को रोकने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया।

'नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम्हें अपने विश्वासों का हक है।' जैसे कि मुझे अपने विश्वासों का हक है, उसने बिना कुछ कहे ही यह बात छोड़ दी।

'नहीं, आपको सुनना चाहिए। यह सिर्फ़ हिंदुओं का गांव नहीं है। यह ब्राह्मणों का गांव है, सबसे रूढ़िवादी ब्राह्मण जिन्हें मैंने कभी जाना है। वे अपनी "माडी" में इतने सख्त हैं कि जब हम पैदल या साइकिल से गुजरेंगे तो वे सड़क पर चानी छिड़क देंगे। वे गोबर से हमारी मौजूदगी मिटाना चाहेंगे और

पानी।

'पहले, अगर उनमें से कोई बीमार होता था, तो वे मुझसे इलाज करवाने के लिए कहते थे। चूँकि मैं उनमें से नहीं हूँ, इसलिए वे मरीज़ को किसी गौशाला में ले जाते थे - अगर घर में कोई गौशाला होती। चानी की मौजूदगी शायद मेरी मौजूदगी की हवा को साफ कर देती थी। मुझे गाय के गोबर की गंध से उल्टी न करने के लिए अपनी हिम्मत जुटानी पड़ती थी, लेकिन वे इसे किसी और तरीके से नहीं करते थे। अगर कोई गौशाला नहीं होती, तो वे मरीज़ को सड़क के किनारे ले आते और वहीं मुझे उसकी जाँच करनी पड़ती।

'हर बार जब मैं जाता था, तो कसम खाता था कि मैं कभी वापस नहीं आऊंगा। फिर मैं सोचता था

रोगी और मेरी हिप्पोक्रेटिक शपथ और मैं अपने क्रोध को मरने दूंगा।

'लेकिन यह वह बात नहीं है जिससे मुझे इतना गुस्सा आता है। यह वह है जो वे खुद को ऐसे रीति-रिवाजों और रीति-रिवाजों में लपेटते हुए करते हैं। यह कि पुरुष अपनी भतीजी से शादी करते हैं और विधवाओं को अपने सिर मुंडवाने के लिए मजबूर किया जाता है, यह सब हम सभी जानते हैं। लेकिन यह...यह मैं नहीं जानता, अगर मैं एक मरीज नहीं होता।' डॉ. सैमुअल को कहानियाँ पसंद थीं। उन्हें कहानियाँ सुनाना और भी अच्छा लगता था। सेतु को अक्सर उन पर कहानियाँ गढ़ने का शक होता था। उन्होंने पाया था

कि ज़्यादातर कहानियाँ बाइबल के कम प्रसिद्ध भागों से उत्पन्न हुई थीं। लेकिन उन्होंने अपनी कहानी को गुप्त रखा।

Machine Translated by Google

खोज शांत थी। वह डॉक्टर को आरोन बनने देने के लिए पूरी तरह से तैयार था: 'मुझे पता है कि वह अच्छी तरह से बोल सकता है,' आदि।

सेतु ने अपनी रुचि दिखाने के लिए आगे झुककर कहा।

'उन्होंने मुझे बताया कि महिला पर भूत सवार था: उसने दावा किया कि वह ही भूत-प्रेत की शिकार थी।
साँपों की माँ। उसके गर्भ में बच्चे साँप पैदा हुए।

'वह गौशाला में बैठी थी। मैंने कभी उसके जितना पतला कोई नहीं देखा था।
वह कपड़ों से ढका हुआ एक कंकाल था।

मैंने कहा, 'मुझे उसकी जांच करनी है।' वे लोग पीछे हट गए और महिला की चाची वहीं रुक गईं।

'उसका पेट फूल गया था और मुझे कुछ गांठें महसूस हो रही थीं। अगर कोई और होता, तो मैं तुरंत ही उसे टेपवर्म संक्रमण मान लेता। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? ये लोग सख्त शाकाहारी थे। मैं हैरान था।

"तुम अपना समय क्यों बर्बाद कर रहे हो?" उसने कहा। "क्या तुम इसे महसूस नहीं कर सकते? वे हैं
"मेरे साँप के अंडे। मैं उनकी माँ हूँ।"

'जब मैंने कहा कि यह संभव नहीं है, तो वह नाराज़ हो गई। उसने कहा कि अगली बार जब वह ऐसा करेगी, तो वह नाराज़ हो जाएगी। उसने अपने साँप के बच्चे को जन्म दिया, वह मुझे दिखाएगी।

'औरत गौशाला की दीवार की ओर मुड़ी और रोते हुए बोली: "मुझे पता है कि मैं बांझ हूँ। मैं मानव शिशुओं को जन्म नहीं दे सकती। लेकिन देवताओं ने मुझे आशीर्वाद दिया है। अब मैं साँपों की माँ हूँ।"

'मैं अपनी जांच में मदद के लिए मल और मूत्र के नमूने लेना चाहता था। लेकिन मैं कैसे पूछ सकता था? फिर भी, मैंने पूछा। मैं कल सुबह वापस आऊंगा, मैंने कहा। मैं एम्बुलेंस में आऊंगा, किसी और चीज की अनुपस्थिति में एक छोटी सी अस्थायी प्रयोगशाला। मैं अपना माइक्रोस्कोप ले जाऊंगा और एक चैंबर अध्ययन करूंगा। मैं उत्सुक था, आप समझ गए होंगे।' 'और फिर...' सेतु ने पूछा, यह जानते हुए कि डॉक्टर को कहानी को कैसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना पसंद है। अगर वह उसे जल्दी नहीं करता, तो वह कुछ और महत्वहीन छोटी-छोटी बातें बताता।

डॉक्टर ने भौंहें सिकोड़ीं। उसे जल्दबाजी पसंद नहीं थी। वह दूर तक देखता रहा, जैसे अपने विचारों को समेट रहा हो। फिर उसने आह भरी और सेतु की ओर मुड़ा।
'अगली सुबह, जब मैं वहाँ पहुँचा, तो उसकी चाची जो शायद उस महिला की देखभाल करने वाली एकमात्र व्यक्ति थी, ने मल का नमूना माचिस की डिब्बी में और मूत्र को मिट्टी के एक छोटे बर्तन में रखा था। ये सब बहुत ही सामान्य काम था। और फिर उसने फुसफुसाकर कहा कि मरीज़ मुझसे मिलना चाहती है। उसके पास मुझे दिखाने के लिए कुछ था।

'उस गौशाला के बारे में सोचकर मुझे उल्टी सी होने लगी। उसमें गाय के मूत्र की बदबू आ रही थी। लेकिन मैंने सोचा कि मैं इसे अपने रास्ते में नहीं आने दूंगा और चला गया।

'गौशाला पहले से कहीं ज़्यादा अंधेरी लग रही थी। मुझे नहीं पता कि यह मुझे प्रसव कक्ष की याद क्यों दिला रही थी। मुझे पता था कि मैं कल्पनाशील हो रहा था, यहाँ तक कि अतार्किक भी, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं सका।

Machine Translated by Google

'वह महिला मेरा इंतज़ार कर रही थी। उसने मेरे चेहरे पर कपड़ा ठूंस दिया।

''यह मेरा बच्चा है,'' उसने कपड़ा खोलते हुए कहा।

'सेठ, एक डॉक्टर के रूप में अपने पूरे जीवन में मैंने कभी इतना बड़ा टेपवर्म नहीं देखा। यह कम से कम चार मीटर लंबा था, और पट्टियाँ लगी हुई थीं - आप जानते हैं इसका क्या मतलब है, है न? जैसे टेप की पट्टियाँ आपस में चिपकी हुई हों।

"कैसे?" मैं आश्चर्य से हकलाया।

'"कैसे से तुम्हारा क्या मतलब है?" उसने पूछा। "मैंने तुमसे कहा था, है न? अपने साँप के बच्चों के बारे में। लेकिन कोई मेरी बात पर यकीन नहीं करता। यही वजह है कि मैंने तुम्हें दिखाने के लिए इसे रखा है। मैं आमतौर पर उन्हें घर के दक्षिण में दीमक के टीले पर रखती हूँ। "जाओ, मेरे बच्चे," मैं उनसे कहती हूँ, और हर दिन मैं उनके लिए दूध और हल्दी वाला नारियल का खोल ले जाती हूँ।"

'मैं वहीं हैरान रह गया। बेचारी महिला के मस्तिष्क में भी शायद एक सिस्ट था। वह टेपवर्म का चलता-फिरता झुंड थी। अगर वह उन्हें अपनी योनि से बाहर निकाल रही थी, तो इसका मतलब शायद यह था कि उसे गंभीर रेक्टो-एनल फिस्टुला भी था। और यह अपने आप में एक दुर्लभ बात है। लेकिन इनमें से किसी ने भी मुझे परजीवी की मौजूदगी से उतना आश्चर्यचकित नहीं किया।

'मैंने उसकी चाची की ओर मुड़कर कठोर स्वर में कहा, "सच बताओ। क्या उसका कोई प्रेमी है?"

'महिला की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। "वह एक विवाहित महिला है," उसने कहा।

'"इससे कब से एक महिला को प्रेमी बनाने से रोका गया?" मैंने पूछा। "आपको मुझे बताना होगा, क्योंकि मुझे यह जानना है कि उसे मांस कौन खिला रहा है। उसे टीनिया सेस्टोडेस है। वह जिस चीज को कपड़े में लपेटकर अपना बच्चा कहती है, वह टेपवर्म है, जो केवल गोमांस या सूअर के मांस से ही आ सकता है।"

'तुम्हारा क्या ख्याल है कि अगर मैं उस पर इस तरह का आरोप लगाता तो क्या होता? वह अपनी छाती पीटती और हंगामा मचाती।

मुझे बुरा भला कहने लगी और अपने आदमियों से ऐसी पाखंडी बातें कहने के लिए मुझे बाहर निकलवा दिया।
इसके बजाय, चाची ने मुझसे आँखें नहीं मिलायीं।

'"नहीं, नहीं," वह बुदबुदाई।

'"तो फिर आप इसे कैसे समझाएंगे? आपको यह संक्रमण तभी होता है जब आप मांस खाते हैं।
और आप ब्राह्मण हैं, शाकाहारी हैं," मैंने कहा।

'उसने अपने पैरों की ओर देखा और कहा, "हम सूअर का मांस खाते हैं।"

'"क्या?" मैं सदमे में चिल्लाया। मुझे नहीं लगता कि मैं पहले कभी किसी चीज़ से इतना सदमे में आया था। मुझे लगा कि मेरे पैर अब मुझे संभाल नहीं पाएँगे। ये ब्राह्मण सूअर का मांस खाते हैं! मुझे लगता है कि मैंने हकलाते हुए कहा होगा, "मुझे समझ में नहीं आ रहा ..."

'"कई साल पहले, जब चेचक की महामारी फैल रही थी, हमारे पुजारी को एक सपना आया। उन्होंने हमें बताया कि चेचक की देवी, पेरिया अम्मान ने कहा कि अगर हम चेचक को अपने से दूर रखना चाहते हैं, तो हमें सूअर का मांस खाना चाहिए। चेचक की मोटी परत

Machine Translated by Google

सुअर एक ताबीज की तरह काम करेगा। यह हमारी रक्षा करेगा। यह हमें जीवित रखेगा और हमारी त्वचा कोमल और चिकनी रहेगी, उस पर कोई निशान नहीं होगा।

"जब पुजारी ने अपना सपना बताया तो वे उसे लगभग मार ही डालने वाले थे। लेकिन हर रात अम्मा उनके पास आती थीं। उन्होंने बुजुर्गों की एक परिषद बुलाई और कहा, आप जानते हैं कि मैंने कभी ब्राह्मणवादी मार्ग से विचलित नहीं हुआ। मैंने हमारे हर आदेश का पालन किया है। अम्मा पूरे एक सप्ताह तक मेरे सपनों में आती रहीं। हर रात उनका गुस्सा बढ़ता ही जाता है। कल रात वे बहुत गुस्से में थीं। उन्होंने कहा, क्या ऐसा है कि आपको मुझ पर भरोसा नहीं है या फिर आपको लगता है कि आप बेहतर जानते हैं? मैं फिर कभी नहीं आऊँगी, लेकिन अगर आप मेरी बात नहीं मानेंगे तो एक महीने से भी कम समय में आपका पूरा गाँव खत्म हो जाएगा।

'"उसके बाद किसी ने उसकी बात को अनसुना करने की हिम्मत नहीं की। लेकिन सूअर का मांस खरीदने और उसे पकाने का काम कौन करेगा? पुजारी ने सुझाव दिया कि हम लॉटरी निकालें। आप देखिए, कोई भी खुद को अपवित्र नहीं करना चाहता था। लेकिन ऐसा होने से पहले, कुछ युवकों के समूह ने जाने की पेशकश की। उन्होंने कहा कि जब सूअर का मांस लाया जाएगा, तो सभी को इसे खाना होगा। तो अपवित्र होने की चिंता क्यों? वे चले गए और मांस और इसे पकाने की विधि लेकर वापस आए। सभी महिलाओं को बुलाया गया और बताया गया कि मांस के साथ क्या करना है। हमने मांस पकाने के लिए अलग बर्तन और इसे खाने के लिए कटोरे अलग रखे। हममें से किसी ने इसकी परवाह नहीं की; हमने ऐसा इसलिए किया क्योंकि यह स्वर्ग से आया आदेश था और कोई भी अवज्ञा करने की हिम्मत नहीं करता था। उसके बाद से, हर कुछ महीनों में, हमारे पुरुष ऐसी जगह जाते हैं जहाँ कोई उन्हें नहीं जानता और गाँव के लिए पर्याप्त मांस वापस लाते हैं। चेचक, हैजा, प्लेग, पीलिया, इनमें से कोई भी हमें प्रभावित नहीं करता। जैसा कि आप देख सकते हैं, यह हमारे लिए काम करता है। हम कभी बीमार नहीं हुए," उसने विद्रोही भाव से कहा।

'मैंने कुछ नहीं कहा। उनके पाखंड से मुझे घिन आती थी। आज भी मुझे घिन आती है।
वे सोचते हैं कि हम सभी अछूत हैं। लेकिन अपनी खाल बचाने के लिए वे सूअर का मांस भी खा लेंगे।' सेतु कांप उठा। यह डॉक्टर की सबसे बेहतरीन कहानियों में से एक
थी।

'तुम्हें क्या लगता है उन्होंने सूअर का मांस कैसे पकाया होगा?' सेतु ने पूछा।

'मुझे कैसे पता?' डॉक्टर के व्यंग्य से सेतु झेंप गया।

'पर्याप्त रूप से, क्योंकि वे मांस पकाना कैसे जानते होंगे?'

'फिर क्या हुआ? क्या तुमने उस औरत को ठीक कर दिया?' सेतु ने पूछा।

डॉक्टर ने अपना माथा पोंछा। 'मैंने उनके प्रति अपनी घृणा छिपाई थी - या ऐसा मैंने सोचा था।
मैं अगले दिन उस महिला और पूरे गांव के लिए पर्याप्त दवाइयां लेकर वापस गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि बाकी लोगों की आंतें कैसी होंगी। क्या उन सभी पर टी. सोलियम का हमला हुआ था?

'शायद, मैंने सोचा, यह महिला सबसे गरीब लोगों में से एक थी और उसे कोई चिकित्सा सुविधा नहीं मिली थी, जबकि अन्य लोग अपना इलाज खुद कर रहे थे।

Machine Translated by Google

कहीं और, जैसे कि वे अपना मांस किसी दूर स्थान से लाते हैं। यह एक सामान्य घटना है, आप जानते हैं। क्यों, यहाँ नाज़रेथ में कोई भी व्यक्ति मेरे पास नहीं आता अगर उसमें कुष्ठ रोग के कोई लक्षण दिखाई देते। वे कहीं और चले जाते। कुष्ठ रोग इस क्षेत्र में स्थानिक है। क्या आप यह जानते हैं? पिछले महीने...' सेतु ने बीच में टोकते हुए कहा, 'डॉक्टर, जब आप गाँव वापस गए तो क्या हुआ?' 'उन्होंने मुझे उस महिला से मिलने नहीं दिया। उन्होंने कहा कि उनके पास पागलपन का इलाज करने के अपने तरीके हैं और उन्हें अब मेरी सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। महिला की चाची ने किसी व्यक्ति को उसके

कबूलनामे के बारे में बताया होगा। वे नहीं चाहते थे कि मैं फिर से वहाँ आऊँ। और उन्होंने कहा कि अगर मैं किसी को इसके बारे में बताऊँगा, तो वे सब कुछ नकार

देंगे और कहेंगे कि मैं उन्हें बदनाम कर रहा हूँ क्योंकि उन्होंने उन्हें बदलने के मेरे प्रयासों का विरोध किया था।

"मैं एक डॉक्टर हूँ," मैंने कहा। "और एक सज्जन व्यक्ति भी।"

'"यह सब ठीक है," उनमें से एक ने कहा। "लेकिन अगर हम आपके बारे में जो जानते हैं उसके बारे में कहानियाँ सुनते हैं, तो हम यह सुनिश्चित करेंगे कि आप फिर कभी बात न करें। हमने पहले ही एक हुक्म तोड़ दिया है और पाप किया है। क्या आपको लगता है कि हम अब पाप से डरते हैं?"

'यही बात मुझे डराती है। वे कानूनविहीन प्राणी हैं। ब्राह्मणवादी वेश में बर्बर लोग। उन्हें किसी बात का डर नहीं है और यही बात डरावनी है। यह सच है।'

'तो क्या मैं पहला व्यक्ति हूँ जिसे तुमने यह बताया है?' सेतु ने गाँव की ओर देखते हुए पूछा। यह हानिरहित लग रहा था। बंजर जंगल के एक इलाके में एक छोटा सा नीरस गाँव।

'मैंने मद्रास में अपने कुछ दोस्तों को बताया। मुझे बताना ही था। मुझे किसी को बताना ही था। लेकिन वे मेरी कहानी पर यकीन नहीं करते। उन्होंने कहा कि मुझे डॉक्टर बनने के बजाय लेखक बनना चाहिए था। कि मेरी कल्पना मेरे शरीर रचना विज्ञान के ज्ञान से बेहतर थी... मूर्ख!' सेतु ने गाँव की ओर देखा। डॉक्टर की कहानियाँ आम तौर पर दृष्टांत होती थीं। उनके अंत में एक नैतिकता होती थी, एक अच्छा ईसाई उपदेश। यह कहानी उससे मुक्त थी, इसलिए उसे डॉक्टर

पर यकीन हो गया। उसने खुद से पूछा, मुझे किस तरह की जगह पर निर्वासित किया गया है, पहले से कहीं ज़्यादा फँसा हुआ महसूस करते हुए। एक ऐसी जगह जहाँ महिलाओं को कलशों में भर दिया जाता है और ब्राह्मण सूअर का मांस खाते हैं। जहाँ आस्था, आशा और दान के पैर हों और परिदृश्य सपाट भूरा हो?

तभी सेतु को अपना पहला नमक का तालाब दिखा और उसे पता चल गया कि अगर वह जल्दी ही भाग नहीं निकला तो उसे जान से हाथ धोना पड़ेगा। कभी नहीं होगा। क्योंकि यहाँ तो नमक भी ज़मीन में फँस गया था।

सेतु को तब यह पता नहीं था, लेकिन वह सही था जब उसने सोचा कि भूमि में एक ऐसी शक्ति है जिसे समझना आसान नहीं है। इसने उन सभी चीज़ों को फँसा लिया जो

Machine Translated by Google

इसकी परिधि में आ गया।

बहुत पहले, या शायद यह कहना आसान है कि शुरुआत में, एक जहाज था। एक जहाज जिसमें प्रार्थना डेक और पाल थे जो अल्लाह सर्वशक्तिमान के आशीर्वाद और हवाओं को नियंत्रित करते थे। एक जहाज जिसने अतुलनीय मालिक की कप्तानी में अपना रास्ता तय किया, जिसमें उसका सबसे कीमती माल था - सहाबक्कल: अबू बकर, उमर, अली और उस्मान। पैगंबर के अनुचर, जिन्हें खलीफा ने संदेश को आगे बढ़ाने और फैलाने के लिए नियुक्त किया था।

शुरुआत में, वे वचन के लिए नए घरों की तलाश में समुद्र में नौकायन करते थे। वे मालाबार के तट के साथ नौकायन करते थे, एक कोने को मोड़ते थे और पूर्वी तट के साथ नौकायन करना चुनते थे। वे बहुत दूर नहीं गए थे जब उन्होंने पवित्र हीरे के शहर- पवित्रमणिक्का पटनम की खोज की। एक तरफ, समुद्र शहर के दोनों ओर था और दूसरी तरफ ताम्रबरनी नदी थी। मलिक ने अनुयायियों से कहा, 'यहां आप पैगंबर से अपनी प्रतिज्ञा का एक हिस्सा पूरा कर सकते हैं। यहां आप शैतान के सभी निशान मिटा सकते हैं और वह कर सकते हैं जो पैगंबर ने आपसे करने की उम्मीद की थी।' यह क्या था, यह न तो अतुलनीय मलिक और न ही साहबक्कल को पता था।

फिर भी, वे डटे रहे।

जब अनुयायियों को एक भी व्यक्ति को धर्मांतरित करने में निराशा होने लगी, तो मलिक ने वापस लौटने का फैसला किया। उसने अपने आदमियों से पालों की मरम्मत करवाई और डेक को साफ किया और फिर उसने अनुयायियों से कहा, 'अपने आस-पास देखो। क्या यहाँ ऐसा कुछ है जो इस क्षेत्र के काफिरों को ईश्वर के बारे में सोचने पर मजबूर करता है? कोई ईश्वर? उनका या हमारा? शायद हमें इस्लाम के बीज बोने के लिए नई ज़मीन तलाशने की ज़रूरत है।'

अनुचरों ने झाड़ियों, उफनते समुद्र और मीलों तक फैले रेत के टीलों को देखा और उन्हें घर की याद आने लगी। उन्होंने सोचा: हमारे रेगिस्तानी राज्यों में भी सुंदरता है। यहाँ रेगिस्तान बंजर भूमि है। लेकिन वे हार नहीं मान सकते थे।

और इसलिए उन्होंने वही सब प्रचार किया जो उन्हें सिखाया गया था। जब वे चले गए, तो भूमि और लोगों के लिए उनकी विरासत अबू बकर का शव था, जिसे ग्रामीणों ने अकेले छोड़ी हुई ज़मीन के एक टुकड़े में दफना दिया। इस प्रकार, अनुयायियों ने अरबों के शहर, अरबिपटनम के बीज बोए।

काहिरों के आने में दो सौ साल लग गए। वे मिस्र के लोग थे जो समुद्र में ऐसे बंदरगाहों की तलाश में थे जो उनके जहाजों को मसालों की खुशबू से भर दें और उनके खजाने में धन-संपत्ति भर दें। मोहम्मद खलीफी कोई बेमिसाल मलिक नहीं थे, लेकिन उनके पास भी प्रार्थना डेक और पाल था और उससे भी बढ़कर, उनके अंदर साहस की भावना थी जिसने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पवित्रमणिका पत्तनम से आगे बढ़कर एक प्राकृतिक बंदरगाह देखा। ऐसा बंदरगाह जो उनके लिए लंगर डालने के लिए पर्याप्त था। उन्होंने देखा कि बंदरगाह के पार की भूमि में उनके लोग फिर से खोज लेंगे कि धरती थी

Machine Translated by Google

उनके पैरों के नीचे सपाट और स्थिर था। जब वे नमाज़ पढ़ने के लिए काबा की ओर मुड़े, तो वह उनके शरीर के नीचे नहीं हिली और न ही मुड़ी।

प्राकृतिक बंदरगाह के पार रेत में, उन्होंने एक अरबी शिलालेख के साथ एक मकबरा खोजा। यह अबू बकर का मकबरा था। मोहम्मद खलीफी ने एक ऐसी उदासी का अनुभव किया जैसा उसने पहले कभी नहीं किया था और उसी क्षण उसने निर्माण करना शुरू कर दिया

एक मस्जिद.

उसके आदमी नाविक थे, लेकिन खलीफी ने उन्हें पत्थर और गारा ढोने के लिए कहा था, और दिन में पाँच बार वे अपने कामों को रोककर घुटनों के बल गिरकर प्रार्थना करते थे। क्षेत्र के लोग मस्जिद से ज़्यादा उन आदमियों को घूरते थे। यह कौन सा धर्म था जो यह माँग करता था कि एक आदमी दिन के अंतराल के लिए ईश्वर को विराम चिह्नों के रूप में सोचे? वे हैरान होकर उन आदमियों को घूरते रहे, और तुरंत उनका नाम अंजुवनथानार रख दिया - वे जो दिन में पाँच बार प्रार्थना करते थे।

अरबीपट्टनम, जो अनुयायियों का सपना था, अरबीपट्टनम बन गया, एक जीवंत सांस लेने वाला शहर। खलीफी का जहाज आगे-पीछे चलता रहा और धीरे-धीरे और लोग आते गए, अपने जहाजों के पेट में माल लेकर जो उन्हें मनचाही बढ़िया मसाले लाकर देता था। व्यापारियों ने अपना माल दिखाते हुए कहा, इसे देखो: अरब के सबसे बेहतरीन घोड़े। हमारे रेगिस्तानी इलाकों में इन घोड़ों से ज़्यादा कीमती कुछ नहीं है जो सोलह हाथ ऊँचे हैं! उनके कोट को देखो, साटन की तरह। और इस अयाल को देखो... जब तुम इसे मोड़ोगे, तो यह रेशम की बेहतरीन लट से मुकाबला करेगा!

क्षेत्र के राजा ने घोड़ों और अंजुवनथानर को देखा। घोड़ों की पंक्तियाँ सफ़ेद वस्त्र पहने पुरुषों की सीधी नज़र से मेल खाती थीं। राजा ने दस हज़ार घोड़ों का बेड़ा मंगवाया और वादा किया कि वे जहाजों के पेट में काली मिर्च, इलायची और अदरक भर देंगे।

घोड़े आ गए, और अस्तबल में उनके साथ, व्यापारियों ने काठी, लगाम, रकाब और लगाम में तेजी से व्यापार किया। दस हजार अरब घोड़ों ने राजा की सेना को मजबूत किया, सेनापति ने कहा, लेकिन उसके आदमी सवारी नहीं कर सकते थे। 'हमें घोड़ों के साथ क्या करना है?' उन्होंने अंजुवन्थनार के नेता से पूछा।

नेता ने आह भरी। उसने अपने आदमियों को, जो घोड़ों के साथ-साथ समुद्र पर भी सवारी करते थे, राजा के आदमियों को सवारी करना और जानवरों को सजाना सिखाया। फिर अंजुवनथानार ने यह वादा करते हुए प्रस्थान किया कि जब मानसून की हवाएँ फिर से चालू हो जाएँगी, तब वे वापस आएँगे।

दस हज़ार मिस्री अरब घोड़े, सभी शुद्ध नस्ल के केहेलान के वंशज हैं। हर एक घोड़े का वंशज है जो फिरौन के शाही अस्तबल का हिस्सा था और उसे इतना प्रिय था कि उसने, रामसेस द्वितीय ने घोषणा की: अब से इन घोड़ों को मेरे मरने से पहले खिलाया जाएगा। हर दिन।

दस हज़ार मिस्री अरब घोड़े, जिनमें से प्रत्येक पर निर्माता की छाप है

Machine Translated by Google

आँख से नाक तक फैली हुई रेखा में, लहराते हुए अयाल और ऊँची पूंछ। घोड़ों ने राजा और उसके आदमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। और उनका जादू ऐसा था कि सैनिक, जिन्होंने अपनी महिलाओं के अलावा किसी और प्राणी पर सवारी नहीं की थी, अब अपनी काठी से दूर नहीं रह सकते थे।

काठी पर सवार हर सैनिक, चाहे वह कितना भी कमजोर या डर से भरा हुआ क्यों न हो, एक बदलाव महसूस करता था। उसके पैरों के बीच घोड़े की मांसपेशियों की ताकत, राजसी कद, इस प्राणी पर महारत जो अपने पैरों पर इतना हल्का और फिर भी इतना स्थिर था, बिना किसी थकान के लंबी दूरी तय कर रहा था, उसने उसे अपने मन में एक योद्धा राजकुमार बना दिया था। देवताओं द्वारा आशीर्वादित, भाग्य की अनिश्चितताओं से अछूता।

दस हज़ार मिस्री अरब घोड़े। एक साल से भी कम समय में, नौ हज़ार नौ सौ निन्यानवे घोड़े मर गए। और जो बच गया वह सिर झुकाए, अपंग और लंगड़ा होकर खड़ा था।

अंजुवन्थनार को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। नौ हजार नौ सौ निन्यानवे घोड़े मरे! 'तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?' उनके नेता ने रोते हुए कहा। 'मेरे दिल को यह जानकर दुख हो रहा है कि तुमने इन घोड़ों को मार दिया है। यह मेरे दिल को तुम्हारे किसी भी बुरे काम से ज़्यादा दुखी करता है।'

'हमने कुछ भी गलत नहीं किया,' कमांडर-इन-चीफ ने विरोध किया। 'हमने उन्हें खिलाया, तैयार किया और उन पर सवारी की... और फिर वे मर गए। एक घोड़ा बचा है।
आओ और स्वयं ही देखो कि तुमने हमें यह अद्भुत नमूना दिया है!'

व्यापारियों का नेता अस्तबल में गया। अस्तबल में भूत-प्रेत का साया था।

भूतिया हिनहिनाहट। एक खलिहान में एक अकेला घोड़ा खड़ा था।

नेता ने अरबी में यह गीत गाया। घोड़ा लंगड़ाता हुआ उसके पास आया। नेता ने उसके सिर पर हाथ फेरा और जब घोड़े ने उसकी आँखों में देखा मानो पूछ रहा हो, तुमने मुझे और मेरे परिजनों को इन बर्बर लोगों के साथ क्यों छोड़ दिया, तो उसका दिल लगभग टूट गया।

नेता घुटनों के बल गिरकर इस शानदार जानवर से क्षमा मांगने लगा और उसने देखा कि घोड़े के पास केवल एक ही जूता बचा है।

वह अपने साथ गए सिपाही की ओर मुड़ा और चिल्लाया, 'तुम मुझे बताते हो कि तुम इन घोड़ों की देखभाल करते हो, लेकिन मैं तो सिर्फ़ उपेक्षा ही देख रहा हूँ। अपने लोहार से इस घोड़े पर जूता लगवाओ।' 'कौन सा जूता?' सिपाही ने पूछा। 'क्या घोड़े जूते पहनते हैं?' 'असली जूते नहीं, मूर्ख काफ़िर,' नेता गुस्से में अरबी

में चिल्लाया।

'यह', उसने घोड़े के पैर की ओर इशारा करते हुए कहा।

सैनिक ने कहा, 'यहां कोई नहीं जानता कि यह कैसे करना है।'

तभी नेता को यह बात समझ में आई कि नौ हजार नौ सौ निन्यानवे घोड़ों को इन मूर्ख लोगों ने कुचल कर मार डाला था, जो यह नहीं जानते थे कि

Machine Translated by Google

घोड़ों को जूते पहनाने पड़ते थे।

उसने राजा से मुलाक़ात की इच्छा जताई। बाद में उसने कहा, 'अपने कुछ आदमियों को हमारे साथ भेजो और हम उन्हें अपने अरब घोड़ों के घोड़ों की नाल लगाना सिखा देंगे।'

राजा ने छत की ओर देखा और फिर नेता के कान के पीछे एक बिंदु पर। उसने अपनी नाक के किनारे को खुजलाया और अपने बालों के एक ताले को खींचा। राजा को निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पसंद नहीं था। इसके अलावा, उसे अपने आदमियों को दूर देश भेजने का विचार पसंद नहीं था। भगवान जाने कि वे क्या नए विचार लेकर वापस आएंगे। उसने कुछ देर सोचा और कहा, 'यह असंभव होगा। हमारे लिए समुद्र पार करना पाप है। इसके बजाय अपने कुछ आदमी हमें भेजो और उन्हें घोड़ों की नाल लगाना सिखाओ।'

नेता ने सोचा कि यहाँ कौन आना चाहेगा। कौन ऐसा करने के लिए सहमत होगा? फिर उसे पैगंबर की शिक्षा याद आई: हर आदमी को अपने घोड़े से प्यार करना चाहिए। उसने नौ हज़ार नौ सौ निन्यानवे मरे हुए घोड़ों और एकमात्र अपंग जीवित बचे घोड़े के बारे में सोचा। उसने सोचा कि घोड़ों के बेड़े का भूत उसे हमेशा के लिए परेशान कर देगा, और उसने सहमति दे दी।

कुछ महीनों बाद वे लोग वहाँ पहुँचे। घोड़ों की तरह ही उनके नथुने भी जो उन्होंने देखे, उन्हें देखकर फड़कने लगे। हवा के रेत को ऊपर उठाने पर बनने वाले वृत्तों की कविता को देखने की उनकी आँखें, टीलों के क्षितिज तक पहुँचने और गिरने को देखने की आदी थीं, लेकिन वे इस समतल भूरी भूमि को देखकर व्यथित हो गईं, जो सिकुड़ी हुई झाड़ियों से भरी हुई थी; यहाँ-वहाँ, चौदह साल के बच्चे की ठोड़ी पर बालों की तरह एक झुरमुटदार पेड़ खड़ा था। और लोग और भी बदतर थे। कोयले की तरह काली त्वचा वाले काफिर, और ऐसी शारीरिक गंध छोड़ते हुए जो उन्होंने पहले कभी नहीं सूँघा था। यहाँ तक कि उनके घरों से भी वही बदबू आती थी।

उन्होंने नेता से कहा, 'हमें अलग रहना चाहिए। ऐसी जगह जहां हम घर जैसा माहौल बना सकें।' 'हां, आपको रहना चाहिए,' नेता ने सहमति जताई। 'मैं राजा से पास में कुछ जमीन

मांगूंगा।

जुमा। तुम एक राज्य के भीतर एक राज्य हो जाओगे।'

वे लोग मुस्कुराये। उन्हें राज्य के भीतर एक राज्य का विचार पसंद आया।

फिर एक व्यक्ति जो दूसरों की तरह शर्मीला नहीं था, उसने जोर से कहा कि उनके मन में क्या चल रहा था। 'यह जरूरी है कि हम वही रहें जो हम हैं। लेकिन हम पुरुष हैं, पुरुष जिनकी जरूरतें पुरुष हैं। हम इसके बारे में क्या कर सकते हैं?' थके हुए नेता ने मेहर के रूप में विशाल खजाने की पेशकश की और महिलाओं को मर्दाना जरूरतों को पूरा करने के लिए पाया। उन लोगों के

लिए दुल्हनें जिनकी कोई पत्नी नहीं थी, और उन विवाहित पुरुषों के लिए दूसरी पत्नियाँ जिनकी पत्नियाँ अपने पतियों की रोमांच की लालसा को साझा करने में कोई रुचि नहीं दिखाती थीं।

Machine Translated by Google

इसलिए जहाज ने फिर से लंगर डाला और इस बार उसके पेट में महिलाएँ थीं। हर एक का रंग गोरा था और उसकी आँखें पीली, काजल से भरी हुई थीं, कभी भूरी तो कभी ग्रे। अपने बालों में मेंहदी लगाकर और हर कदम पर गुलाब की खुशबू बिखेरती हुई, महिलाओं ने पुरुषों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिससे उनके दिलों में एक अजीब सी खुशी भर गई। जल्द ही पुरुषों को पता चल गया कि स्थानीय लोग भी महिलाओं से उतने ही मोहित थे और इसलिए अरबिपटनम का पहला नियम बनाया गया: इन दीवारों के अंदर किसी भी अजनबी को आने की अनुमति नहीं है।

फिर, क्योंकि वे स्वभाव से सतर्क थे, पुरुषों ने अपनी महिलाओं से कहा,
'जब तक हम तुम्हारे साथ न हों, तुममें से कोई भी बाहर नहीं जाएगा।'
'हम अपने घरों से बहुत दूर हैं। हमारे पास एक-दूसरे के अलावा कोई नहीं है। आप हमें उस थोड़ी-सी खुशी और आराम से कैसे वंचित कर सकते हैं जो हमें एक-दूसरे की संगति में मिलता है,' महिलाएँ विलाप करती रहीं।

पुरुषों ने खुद को राजी होने दिया। कुछ समय तक उन्होंने अपनी महिलाओं को बाहर निकलने दिया, जब तक कि एक आदमी ने अपनी पत्नी को दूसरे आदमी की पत्नी को देखते हुए नहीं पकड़ लिया। इस प्रकार दूसरा नियम आया: 'कोई भी पुरुष किसी महिला को नहीं देख सकता जब तक कि वह उसकी पत्नी, बहन, माँ या बेटी न हो। अगर कोई महिला उसके रास्ते में आती है, तो उसे अपनी पीठ मोड़कर उसे जाने देना चाहिए।'

लेकिन कौन सी पुरुष आँख खुद पर ऐसे प्रतिबंध लगा सकती है? हथेली पर मेहंदी के नाजुक डिजाइन को न देखना, या जब कोई हाथ ऊपर उठाकर स्तन को आकार देता है तो एक खास तरह की गर्मी महसूस न करना? पायल की झंकार को सुनने के लिए अपनी आँखें न उठाना और स्कर्ट के दायरे में इधर-उधर झूलते नितंबों के घुमाव को सहलाना न?

नेता, अरबपटनम की अपनी अगली यात्रा पर खुद ही हंस पड़े। 'तुम भी इन काफिरों की तरह मूर्ख बन रहे हो। पहले तुम सिर्फ लोहार थे, लेकिन अब तुम व्यापारी हो। जब तुम घोड़ों की तरह अंधे हो, तो तुम सफल व्यापारी कैसे बन सकते हो?' 'तो फिर हम क्या करें?' 'महिलाओं के इस्तेमाल के लिए गली-कूचे बनाओ, जो साइड डोर या किचन के दरवाजे को जोड़े। पुरुष मुख्य प्रवेश द्वार और सड़कों का इस्तेमाल करेंगे। महिलाएँ गलियों में रहेंगी। इस तरह, उन्हें अपनी आज़ादी मिलेगी और आपको अपनी। और यह क्या है कि "यहाँ
किसी अजनबी को आने की अनुमति नहीं
है"? क्या तुम मेरे बेटों को मेरे समय के बाद यहाँ आने की अनुमति नहीं दोगे? इस शहर में जिसे मैंने बसाया है?'

'इसके अलावा,' नेता ने आगे कहा, 'यह एक बढ़ता हुआ समुदाय है। हमें अधिक से अधिक आपूर्ति की आवश्यकता होगी। भोजन, कपड़े, जूते। अगर यहाँ किसी अजनबी को आने की अनुमति नहीं है तो हम ये सब कैसे प्राप्त करेंगे?'

वे लोग एक दूसरे को निराशा से देखने लगे। उन्होंने इस घटना के बारे में नहीं सोचा था।

Machine Translated by Google

'नियम ज़रूरी हैं। मैं सहमत हूँ कि हमें अपने सामान को अलग रखना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए। लेकिन मेरा सुझाव है कि हम इसमें संशोधन करके कहें कि "दिन में जुमा के बाद किसी अजनबी को आने की अनुमति नहीं है और कोई भी रात में नहीं रुक सकता।" फिर आप चुन सकते हैं कि आप अपने घर में किसे आमंत्रित करते हैं,' नेता ने चर्मपत्र पर नियमों को सूचीबद्ध करते हुए कहा।

नियम में संशोधन किया गया और महिलाओं के लिए गलियाँ बनाई गईं। दो फ़ीट चौड़ी और पत्थरों से पक्की ये गलियाँ शहर से होकर गुज़रती थीं, रसोई की गंध और चोटिल दिलों को जोड़ती थीं।

यहीं पर, गलियों से घिरा हुआ, सादिया, अच्छी लड़की, की वंशज
उन प्राचीन काहिरों और अरबिपटनम के नेता की बेटी, इंतजार कर रहे थे।
क्या वह घोड़े पर सवार होकर आएगा, जैसा कि वापा ने उसे बताई कहानियों में राजकुमार ने किया था?
या फिर वह अतुलनीय मलिक की तरह माणिक, नीलम और पन्ना का माल लेकर आएगा?

वह आएगा, इतना तो वह जानती थी।
और उसने ऐसा ही किया। साइकिल पर।
शाम होते-होते पानी की गाड़ियां अरबपत्तनम के ऊंचे द्वारों में प्रवेश कर गईं।
उनके पीछे दो आदमी आये, डॉक्टर आगे चल रहा था।
'यहाँ रुको,' उसने सेठ से कहा, अपनी साइकिल को दीवार से टिकाते हुए। 'मैं उन्हें बता दूँगा
हम पहुंच गये हैं।'

सेतु ने डॉ. सैमुअल को एक छोटी मस्जिद की ओर जाते देखा। उसने उत्सुकता से अपने चारों ओर देखा।

सड़क के किनारे दुकानें थीं, और दुकानों में और सड़क पर बहुत से लोग थे, सभी ने सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे। सड़क के एक तरफ़ खेल खेल रहे छोटे लड़के भी सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे और उनके सिर पर सफ़ेद लेस की टोपी थी। जब एक झुटका गुज़रा, तो उसने देखा कि टट्टू सफ़ेद पंखों से सजी हुई थी। सेतु के होठों पर मुस्कान आ गई। ऐसा लगा जैसे अरबपटनम के दरवाज़े में घुसकर वह किसी कहानी की किताब में घुस गया हो, जहाँ सब कुछ अजीब और रहस्य से भरा हुआ था। उसे उत्साह का एक झोंका महसूस हुआ और उसके तुरंत बाद उसे एहसास हुआ कि वहाँ एक भी महिला नहीं थी - बच्ची, लड़की या औरत।

सभी महिलाएँ कहाँ थीं?

सादिया अपने सिर के ऊपर नीले रंग के चौकोर हिस्से को घूर रही थी। बीस फ़ीट गुणा तीस फ़ीट।
वह उसके आकाश का माप था, उसके जीवन की परिधि। उसने छत की भूरी दीवारों को छुआ। अगर वह अपने पैरों पर खड़ी भी होती, तो भी वह दीवार के पार नहीं देख सकती थी। यह दीवार छह फीट और दो इंच ऊँची थी, यह सुनिश्चित करते हुए कि वह कभी भी वह नहीं देख पाएगी जो उसकी आँखों के लिए नहीं है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वह किसी को दिखाई नहीं दे रही है। सादिया को अब तक निराशा का एक जाना-पहचाना एहसास हुआ।

Machine Translated by Google

क्या वह अपनी बहनों और यहाँ जन्मी हर दूसरी महिला की तरह इन दीवारों के बीच छुपकर जिएगी और मरेगी? क्या यहाँ से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था?

उसने फिर से नीले आसमान की ओर अपनी आँखें उठाईं। वापा ने इतिहास के बारे में बताते हुए, मराकरों के बारे में बात की - नाविक जिन्होंने नीले समुद्र को पार किया और यहाँ तक पहुँचे। 'यह उनका खून है जो हमारी रगों में बहता है। क्या आप इसे समझते हैं? हम शुद्ध अरब वंश के हैं ... इन स्थानीय "तुलकानों" की तरह नहीं जो हिंदू धर्म में परिवर्तित हो गए हैं। हम खुद पैगंबर के वंशज हैं और रक्त की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, 'उन्होंने बार-बार कहा।

सादिया रोना चाहती थी, 'लेकिन वापा, तुम नहीं देखते, अगर यह उनका खून है जो हमारी रगों में बहता है, तो यह अपरिहार्य है, जैसा कि मैं महसूस करती हूँ। मेरे दिमाग में एक गाना बज रहा है जो कहता है, देखने के लिए बहुत कुछ है, करने के लिए बहुत कुछ है, जानने के लिए बहुत कुछ है। यह उचित नहीं है कि तुम लोग जहाँ चाहो वहाँ जाओ, जो चाहो देखो और करो, और मुझसे उम्मीद की जाती है कि मैं इस नीले रंग के टुकड़े और गलियों की भूलभुलैया से संतुष्ट रहूँ।' लेकिन सादिया कभी अपने मन की बात नहीं कहती। वह अपने पिता, अपने आदरणीय वापा हाजी नजीब मसूद अहमद, जो शहर के छह सरदारों में से एक और सबसे सम्मानित व्यक्ति थे, के प्रति बहुत अधिक आदरभाव रखती थी। वह

उन्हें कैसे बता सकती थी कि क्या सही है और क्या गलत?

इसके अलावा, वापा ने उसके साथ काफी नरमी बरती थी। उसकी तीन बड़ी बहनों की शादी तेरह साल की उम्र में ही कर दी गई थी। लेकिन वह यहाँ थी, पंद्रह साल की और अविवाहित, और उसके पास एक शिक्षक भी था जो उसे अरबी सिखाता था। वापा अकबर शाह के दूसरे बेटे के हांगकांग से लौटने का इंतज़ार कर रही थी ताकि उसका निकाह तय कर सके।

सादिया जानती थी कि उनके बगल वाला घर पहले ही खरीद लिया गया है और उसके नाम पर दस्तावेज़ बन चुका है। मरम्मत के लिए मज़दूर बुलाए गए थे और जब उसका दूल्हा आएगा, तो उसे उसके आभूषण पहनाए जाएँगे और एक ऐसे आदमी से शादी कर दी जाएगी जिसे उसने कभी नहीं देखा था। उसकी ज़िंदगी वैसे ही चलती रहेगी जैसे हमेशा चलती रही है। यहाँ तक कि वह जिस गली में जाती थी, वह भी वैसी ही रहेगी। बस एक बदलाव यह होगा कि वह अपने नीले रंग के पैच को एक छोटे से पैच से बदल लेगी। उसका नया घर उसके पिता के घर जितना बड़ा नहीं था।

सादिया अपने पिता और उनकी कहानियों के बारे में सोचती थी। वापा एक कथाकार थे। जब वे कोई कहानी सुनाते थे, तो आप सुनते थे और आपको लगता था कि आप कहानी का हिस्सा बन गए हैं। उनकी कहानियाँ हमेशा दूर देशों की यात्रा करने वाले लोगों, यात्रियों और उनकी अद्भुत खोजों की होती थीं। सादिया की अपनी पसंदीदा कहानी थी, जो दस हज़ार घोड़ों की कहानी के बाद दूसरी सबसे पसंदीदा थी।

'बहुत दूर एक ऐसा इलाका है, जहाँ ज़्यादातर रात होती है और दिन कभी-कभार ही होता है। ठंड हड्डियों में जम जाती है और आपके बाल भी धारदार ब्लेड में बदल जाते हैं। वहाँ इतनी ठंड थी। पूरे दिन, समुद्र से नमक से ज़्यादा बर्फ़ से भरी तेज़ हवा चलती रही और लोग अपने घरों में ठिठुरते रहे।

Machine Translated by Google

चूँकि सूरज कभी चमकता ही नहीं था, इसलिए पूरे साल सभी को खिलाने के लिए पर्याप्त फसल उगाने का कोई तरीका नहीं था। लोग ज़्यादातर समुद्र के किनारे रहते थे। पुरुष अपनी नावों को चलाते थे और समुद्र में गहराई तक जाते थे और जब वे वापस आते थे तो वे बहुत ज़्यादा मछलियाँ पकड़ कर लाते थे, जो पूरे गाँव को कई दिनों तक खिलाने के लिए काफ़ी होती थीं। लेकिन कुछ दिन मछलियाँ इतनी अच्छी नहीं होती थीं, या मौसम तूफ़ानी होता था और कोई भी समुद्र में जाने की हिम्मत नहीं करता था। तो फिर वे क्या कर सकते थे?

'नावें लकड़ी की बनी थीं, और क्या आप जानते हैं कि उन्होंने क्या किया? उन्होंने कील को लंबा कर दिया। अब, जब उन्हें पता चला कि उनके पास सामान्य से ज़्यादा मछलियाँ हैं, तो अतिरिक्त मछलियों को वापस समुद्र में फेंकने के बजाय, उन्होंने नाव के किनारे एक अतिरिक्त तख्ता जोड़ दिया और उसकी ऊँचाई बढ़ा दी। तब वे ज़्यादा संख्या में मछलियाँ ले जा सकते थे। उन्होंने इसे प्लांक ऑफ़ एविडिटी कहा।'

सादिया को यह वाक्य बहुत पसंद था। यह उन सभी बातों का प्रतिनिधित्व करता था जो उसे लगता था कि जीवन में सच हैं।
जीवन हमसे यह मांग करता है कि हमारे पास लालच की एक तख्ती हो। अगर हम अपनी उम्मीदें नहीं बढ़ाएंगे तो हम और कैसे पा सकते हैं? हम सिर्फ़ उसी से संतुष्ट कैसे हो सकते हैं जो हमारे पास है और जो हम जानते हैं? यहाँ तक कि वापा, जो कहानियाँ सुनाने वाले थे, कल्पना के समुद्र में नौकायन करने से संतुष्ट थे। लेकिन वह वास्तविक नहीं था। वास्तविकता देखने, छूने, सुनने, महसूस करने, समझने, जानने, अनुभव करने में सक्षम होना था।

सादिया अपने पैरों की ओर देखती रही। दो दिन पहले, अपनी बहन नादिरा के घर में, उसने एक किताब देखी थी। यह नादिरा के पति की थी, जो सिंगापुर की अपनी हालिया यात्रा के दौरान मिली थी। सादिया शब्दों को पढ़ नहीं पाई, लेकिन उसमें तस्वीरें थीं। जगहों, नीले समुद्र और हरी पहाड़ियों की। अंतहीन सड़कों और बिना दीवारों वाले बगीचों की। सादिया तस्वीरों को देखना बंद नहीं कर सकी। उन्होंने उसकी तड़प को और भी धार दी, एक तीखी परिभाषा दी।

अब उसे फिर से तस्वीरें देखने की तीव्र इच्छा हुई। उसने छत का दरवाज़ा बंद किया और अपने कमरे में चली गई। दरवाज़ों में कई कुंडी लगी हुई थीं और खिड़कियाँ बंद थीं। हर रात उनकी नौकरानी ज़ुलेका इसी कमरे में उसके साथ सोती थी। घर से निकलने से पहले सादिया दरवाज़े बंद करके खिड़कियाँ बंद कर देती थी। अरबिपटनम में कोई भी जोखिम नहीं उठाता था।

उसने अपना बुर्का पहन लिया। उसकी काली धारियाँ उसकी आँखों को छोड़कर बाकी सब कुछ छिपा रही थीं।
'मैं नादिरा के घर जा रही हूँ,' उसने अपनी दादी से कहा और चुपचाप बाहर निकल गई।
दोपहर बाद, उसके दरवाजे से नादिरा के घर तक जाने वाली गली शांत हो गई।
सभी महिलाएँ घर के अंदर थीं। कोई भी पुरुष इस तरफ़ नहीं आ सकता था; उन्हें आने की अनुमति नहीं थी। सादिया ने चारों ओर देखा। कोई नहीं था। उसने अपने चेहरे को ढँकने वाले कपड़े की काली तह हटाई और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर वह नादिरा के घर की ओर चल पड़ी। दरवाज़ा बंद था। सादिया ने दरवाज़े के पीछे रखी किताब के बारे में सोचा और इंतज़ार करने का फ़ैसला किया। उसने सोचा कि नादिरा जल्द ही वापस आ जाएगी।

और जब सादिया वहाँ खड़ी थी, उसने महसूस किया कि एक दुष्ट इच्छा उसके पैरों को खींच रही है। अगर वह

Machine Translated by Google

इस गली से होते हुए बायीं ओर मुड़ती तो वह एक आम गली में पहुँच जाती। चौड़ी आम गली आगे चलकर सड़क की ओर जाती थी।

मैं सिर्फ़ आम गली तक ही जाऊँगी, उसने खुद से कहा। कोई मुझे देख ले, उससे पहले ही मैं वापस भाग जाऊँगी। आम गली में पुरुषों को जाने की अनुमति थी और वापा को अगर पता चलता कि वह अकेली वहाँ गई है तो वह क्रोधित हो जाता।

सादिया जल्दी से गली से नीचे चली गई और बाईं ओर मुड़ गई। उसने आम में झाँका
गली भी सुनसान थी।

सब कहाँ थे? क्या होगा अगर वह कुछ कदम चले, बस कुछ कदम, सड़क पर नज़र डाले और वापस भाग जाए? किसी को पता नहीं चलेगा और वह अपने भीतर की उस आवारा आवाज़ को शांत करने में सक्षम होगी।

इसलिए सादिया, जिसकी आज़ादी अब तक सिर्फ़ बीस फ़ीट गुणा तीस फ़ीट तक सीमित थी, आम गली में चली गई। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था और उसे लगा कि उसका मुँह सूख गया है, लेकिन अब वह पीछे नहीं मुड़ सकती थी। वह तब तक चलती रही जब तक वह सड़क पर नहीं पहुँच गई। फिर उसने अपने चारों ओर देखा और साँस फूलने लगी।

जीवन। इतने सारे रंगों और आकारों में जीवन। जीवन जो सांस लेता था और चलता था। जीवन जो चबाता था और थूकता था। जीवन जो चीखता और चिल्लाता था। जीवन जो बुदबुदाता था और लड़खड़ाता था, फुफकारता था और रेंगता था। जीवन जो इंतजार करता था। जीवन जो कभी उसका नहीं होगा।

सादिया ने अचानक सूख चुके अपने होठों पर जीभ फिराई और अपने उठे हुए चेहरे पर समुद्री हवा को महसूस करने के लिए आसमान की ओर देखा। हवा उसके गालों को सहला रही थी, जिससे उसकी रीढ़ की हड्डी में खुशी की लहर दौड़ गई। धीरे-धीरे उसने अपना चेहरा नीचे किया और ऐसा करते ही उसकी आँखें एक युवक की आँखों से टकराईं। वह वहाँ दीवार के सहारे खड़ा था, उसके दोनों ओर दो साइकिलें थीं, और वह उसे उसी तरह से घूर रहा था जैसे उसे सड़क पर पहली नज़र में लगा था।

सादिया ने अपने चेहरे को ढँके कपड़े को खींचा। उसे यह देखकर बहुत डर लगा कि उसका चेहरा खुला हुआ है और दुनिया को दिखाई दे रहा है - और उस युवक को भी जिसकी आँखें उसके नग्न रूप को देख रही थीं। सादिया को लगा कि शर्म ने उसे डुबो दिया है।

दबी हुई चीख के साथ उसने अपने चेहरे पर से घूंघट खींचा और पीछे की ओर लड़खड़ा गई।

वह महिलाओं की गली की संकरी सीमा की ओर भागने के लिए मुड़ी, और उसने ज़ुलेका को आम गली में प्रवेश करते देखा। ज़ुलेका वहाँ एक चिकन विक्रेता के साथ मोल-भाव कर रही थी। जब उस आदमी ने उसे काले कपड़े पहने हुए देखा, तो वह दीवार की ओर मुड़ गया ताकि वह आगे निकल जाए।

ज़ुलेइका ने काले कपड़े पहने व्यक्ति को देखा।

'वह कौन है?' उसने उसकी ओर बढ़ते हुए पूछा।

उसने फिर पूछा, 'नादिरा, क्या यह तुम हो? मुझे लगा सादिया तुम्हारे साथ है?' सादिया रुक गई। ज़ुलेका
से भागना संभव नहीं था। कोई फायदा नहीं था, वह जानती थी। आसमान की एक झलक, जीवन का एक झोंका, बचने की एक साँस... बस इतना ही था

Machine Translated by Google

उसने इस जीवन में जो सपना देखा था, वह अब दीवार की ओर मुड़ चुका था, और अपने हाथों में लाशों का भार लटकाए हुए था।

एक बार का अतिक्रमण। सादिया अपना चेहरा उघाड़ रही है, सेतु उसे देख रहा है।
यह उनके अतिचार की सीमा थी। प्राचीन संहिताओं के इस उल्लंघन के बारे में किसी और को पता नहीं था, और फिर भी यह पर्याप्त था।

अगर सादिया ने अपना चेहरा ढक रखा होता, तो सेतु कभी नहीं देखता। और सेतु, अगर उसे पता होता कि उससे यह अपेक्षा की जाती है, तो जब सादिया अपने नंगे चेहरे और भूखी आँखों के साथ उसके सामने आती, तो वह अपना चेहरा दीवार की ओर कर लेता।
लेकिन जब सेतु ने सादिया के चेहरे पर शर्म की लाली देखी, तो उसे लगा कि उसके अंदर कुछ जल रहा है। एक ज्वाला जो धधकती शर्म से जल उठी और उसके अंदर की गर्मी को बढ़ा दिया। और सादिया, जिसे अपने हीरो को अकबर शाह के दूसरे बेटे का चेहरा देना चाहिए था, अब उसके पास एक चेहरा था, एक रूप जो उसके खाली घंटों और भगोड़े सपनों को भरता था।

Machine Translated by Google

करुणाम

हममें से कौन इस भावना को नहीं जानता? क्यों, मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि यह क्या है, जब मेरी भौहें नीचे की ओर झुक जाती हैं, मेरी आँखें कोनों में सिकुड़ जाती हैं और मेरा मुँह लटक जाता है। मेरी साँस छाती की गुहा से रीढ़ की हड्डी के आधार तक जाती है। क्या आप देखते हैं कि मेरा पेट कैसे नीचे गिरता है और मेरे कंधे कैसे झुकते हैं?

करुणाम। हम सभी ने कभी न कभी दुःख का अनुभव किया है। मैं आपको एक छोटी सी कहानी सुनाता हूँ। एक महिला बुद्ध के पास गई और उनसे अपने बेटे को जीवित करने के लिए कहा, जो अभी-अभी मरा था। बुद्ध ने कहा कि अगर वह किसी ऐसे घर में जाए जहाँ मृत्यु एक बार भी न आई हो और एक मुट्ठी सरसों लेकर आए, तो वह उसके बेटे को जीवित कर देंगे। इसलिए महिला चल पड़ी। वह अपने गाँव के हर घर में गई। एक घर में माँ मर चुकी थी, दूसरे में चाचा।

एक परिवार ने दादा खो दिया था, दूसरे ने बच्चा। ऐसा कोई घर नहीं था जिसने मृत्यु को न देखा हो। तब बुद्ध ने उससे कहा, हमें मृत्यु को अपने अस्तित्व का हिस्सा मान लेना चाहिए। मृत्यु से मुक्त जीवन नहीं हो सकता। करुणाम के साथ भी ऐसा ही है।

यह हर जगह है। जुलाई का महीना है, कर्किटकम का महीना, जब गर्मी के मौसम से राहत की सांस खत्म हो जाती है और आसमान में एक धूसर रंग फैल जाता है, जैसे सूरज के चेहरे पर राख उड़ेल दी गई हो। जमीन गीली और गीली है। छत से पानी टपक रहा है, और पत्ते भी। एक निरंतर टपक-टपक। कपड़े कभी सूखते नहीं, हर जगह काई उग आती है। अलमारियों में नमी और नमी की बदबू आती है।

आप इसे तब महसूस कर सकते हैं जब आप एक कोमल नारियल को हिलाते हैं और उसे अपने कान के पास रखते हैं। यह नारियल के पानी की लहरों में भी मौजूद है, जब यह कोमल आंतरिक मांस के मोड़ों के बीच इधर-उधर बहता है...दुख के तरल रास्ते।

आप इसे करिन्कुयिल के गीत में सुन सकते हैं जब नोट आसमान में उड़ते हैं।
आप पूछ सकते हैं कि कोयल इतनी उदासी से क्यों गाती है। वह फूहड़, लापरवाह कोयल जो कौवे के घोंसले में अंडे देती है और खुद को सारी जिम्मेदारी से मुक्त कर लेती है, उसे क्या दुख हो सकता है? इस प्राणी में सनकीपन स्वाभाविक रूप से आता है, जो बचपन में भी, अभी तक फूटे हुए अंडों और कौवे के बच्चों को अपनी पीठ पर उठाती है और उन्हें घोंसले से बाहर फेंक देती है। शायद पश्चाताप ही वह चीज है जिसके साथ कोयल का गाना धड़कता है जब वह पेड़ की शाखा पर अकेली बैठती है और सोचती है। जो कुछ भी हुआ है उसके लिए पश्चाताप। क्योंकि वह भी करुणा है। पश्चाताप।

Machine Translated by Google

राधा

क्रिस का चेहरा गंभीर है। मैं उसे बरामदे में एक टेप सुनते हुए पाता हूँ। मुझे अंकल की आवाज़ सुनाई देती है। अंकल की कहानी के इस अध्याय को बताने में एक हफ़्ते से ज़्यादा का समय लगा है।

चाचा ने दिन में क्रिस से मिलने से मना कर दिया। 'रोशनी मेरी आँखों को सफेद कर देती है
'मैं कल्पना नहीं कर सकता,' उन्होंने कहा। 'मैं तब नहीं सोच सकता; जब सूरज ढल जाए तब आना।'

तो शाम के समय क्रिस और मैं अंकल के पास गए। श्याम ने असहमति जताई। उसने कई तरीकों से अपनी असहमति दिखाई, लेकिन उसे व्यक्त नहीं किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्यों। आमतौर पर वह बहुत वाक्पटु होता है, खासकर जब बात किसी ऐसी चीज की आती है जो उसे पसंद नहीं होती। लेकिन इस बार उसने मुझे बस यह बता दिया। पिछले एक हफ्ते से हर शाम वह मुझसे पहले घर आ रहा है। वह मुझे मोबाइल पर कॉल करता है और हर बार उसका कोई न कोई कारण होता है। 'तो तुम कितने बजे घर आ रहे हो? मुझे भूख लगी है।' 'रानी ओपोल बोर हो रही है।' 'क्या तुम अगले आधे घंटे में आओगे? एसपी और उनकी पत्नी ने कहा है कि वे आएंगे।' 'क्या यह अभी खत्म नहीं हुआ है?' 'रानी ओपोल कह रही थी कि तुम्हारा साहिब की संगत में इतना समय बिताना ठीक नहीं है...' और जब मैं वापस आता हूं, तो वह आमतौर पर लिविंग रूम में मुंह बनाए बैठा होता है और उसके पास एक ड्रिंक होती है। वह मुझे न देखने का नाटक करता है और मैं भी कुछ नहीं कहता। इस खेल में दो लोग खेल सकते हैं। वह भले ही पिता हों, लेकिन मैं कांपता हुआ, पश्चाताप करने वाला बच्चा बनने से इनकार करता हूं।

हालाँकि, हाल ही में मैं श्याम द्वारा खेले जा रहे इस खेल के बारे में सोच रहा था।
ऐसा लगता है जैसे वह इंतज़ार कर रहा है। लेकिन किस बात का इंतज़ार? मैं इसे अपने दिमाग से निकालने की कोशिश करती हूँ। मैं श्याम और उसके मूड को अपने विचारों से दूर रखना सीख रही हूँ।

क्रिस ने मुझसे पूछा था कि क्या मैं अंकल की आवाज़ को ट्रांसक्राइब कर सकता हूँ। 'मैं उनके उच्चारण को ठीक से नहीं समझ पाता, खासकर जब वे भारतीय शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। क्या तुम समझ पाओगे? मैं तुम्हें पेज या घंटे के हिसाब से पैसे दे सकता हूँ...जो भी तुम चाहो,' उसने कहा।

'मैं यह करूँगा,' मैंने कहा, और मुस्कुराया। 'लेकिन मैं बहुत धीमा हूँ। मैंने अब बहुत समय से कुछ भी नहीं लिखा है। कभी-कभी, मैं अंकल को ईमेल भेजने में मदद करता हूँ और कभी-कभी मैं किसी मित्र को पत्र लिखता हूँ...और आपको मुझे पैसे नहीं देने होंगे।' क्रिस अनिश्चित था। 'लेकिन आप इसे बिना किसी शुल्क के नहीं कर सकते।' 'मैं यह अंकल के लिए कर रहा हूँ,' मैंने कहा। 'मुझे यकीन है कि उन्हें
अपनी कहानी की एक प्रति चाहिए होगी। मैं

मुझे पता था कि मैं ऐसा करूँगा।'

इस तरह बात तय हो गई। मैंने काम शुरू कर दिया, लेकिन इसे गुप्त रखा।

श्याम को पता चलेगा तो वह बहुत क्रोधित होगा। 'उसकी हिम्मत कैसे हुई?' वह गुस्से से कहेगा। 'क्या तुम उसके सचिव हो या क्या? अगर तुम सचिवीय काम करने के लिए इतने ही उत्सुक हो, तो मेरे लिए क्यों नहीं करते?'

Machine Translated by Google

अगर उसे कभी पता चल गया तो मैं जवाब देने के लिए तैयार हूँ। मैं पूछूँगी, 'मैं नहीं चाहती कि अंकल की बातों का गलत मतलब निकाला जाए। क्या यह कोई अपराध है?' श्याम को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता अगर उसे लगता कि मैं इसे एक कठिन परीक्षा मानती हूँ।

मैंने पाया कि मुझे काम में मज़ा आ रहा था। कुछ सुबह, जब मैं टाइप कर रहा था, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैं मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट बन सकता हूँ। ऐसे कोर्स थे जो मुझे वो सब सिखाते थे जो मुझे जानना ज़रूरी था और मैंने सुना था कि कुछ मामलों में आपको घर से काम करने की अनुमति थी ... श्याम इस पर आपत्ति नहीं कर सकता था। मुझे लगा कि काम पर वापस लौटने की ज़रूरत मुझे पहले से कहीं ज़्यादा खाए जा रही थी। जब मैं इन टेपों को पूरा कर लूँगा, तो मैं उस दिशा में पूछताछ शुरू करूँगा, मैंने खुद से कहा।

हर शाम चाचा टेप रिकॉर्डर में थोड़ी देर बात करते थे। कई बार वे पान चबाने के लिए रुक जाते थे। जब लगभग अंधेरा हो जाता, तो वे रुक जाते। 'अभी के लिए इतना ही काफी है,' वे कहते। 'मालिनी को खिलाने का समय हो गया है।' चाचा मालिनी के बारे में ऐसे बात करते जैसे वह कोई बच्ची हो। लेकिन उन्हें मजबूर करने की कोशिश करना बेकार था। वे चुप रहकर विरोध करते। मालिनी अपनी जगह पर कूद जाती और सीटी

बजाती और चीखती। हमें जाते देखकर वह हमेशा खुश होती। लेकिन कम से कम उसने क्रिस को बुरा-भला कहना तो बंद कर दिया था। उसने उसे अपना सिर खुजलाने भी दिया। 'उसे तुम पसंद हो,' चाचा ने आश्चर्य से कहा। मालिनी आमतौर पर किसी के हाथ से मांस का टुकड़ा चोंच मार लेती थी अगर कोई उसकी ओर थोड़ा भी इशारा करने की हिम्मत करता।

एक बार श्याम की उंगली बुरी तरह से घायल हो गई थी और जब हम अस्पताल जा रहे थे, तो उसने अपनी उंगली ऊपर उठाई और बुदबुदाया, 'जैसा मालिक, वैसा पक्षी...'

मैंने पूछा, 'तुमने क्या कहा?'

'कुछ नहीं। बस यही सोच रहा था कि जब आपके पास इतना खूंखार पक्षी है तो कुत्ते की क्या जरूरत है।' 'लेकिन मैंने आपको बताया था कि वह बहुत गुस्सैल है। आपको

उसे क्यों धकेलना पड़ा?
अपनी उंगली उसके पिंजरे में डालो?'

'मैं जानवरों के साथ आमतौर पर अच्छा व्यवहार करता हूँ।' श्याम ने गुस्से से कहा। 'लेकिन यह पक्षी नहीं है।
यह एक खूनी पिशाच है।'

लेकिन मालिनी भी, अन्य सभी की तरह, क्रिस के सामने झुक गई।

क्रिस खुश दिख रहा था। 'वह बहुत ही चुलबुली है,' उसने कहा और मालिनी के सिर को खुजलाना जारी रखा, जबकि उसने खुशी में अपनी आँखें बंद कर लीं।

क्रिस और मैं नदी की सीढ़ियों पर कुछ देर तक बैठे रहते थे जब तक रात नहीं हो जाती थी। हम ज़्यादा बात नहीं करते थे। रात की आवाज़ों में डूबे रहना, अंधेरे में लिपटे रहना ही काफी था। यह एक ऐसी अंतरंगता थी जिसमें लाखों तंत्रिका सिरे जुड़े हुए थे।

और फिर मैं अपने अंदर एक ऐसी चाहत लेकर घर लौटूंगा जो मेरी जान लेने की धमकी देती है

Machine Translated by Google

ऊपर।

एक दिन श्याम ने पूछा, 'यह कहानी-कहानी कब तक चलेगी?'

'मुझे नहीं पता,' मैंने कहा। यह सच था। मैं चाहता था कि यह कभी खत्म न हो।
जब तक अंकल अपनी कहानी बताते रहे, क्रिस उनका बंदी रहा।

'ये क्या है? महाभारत? वो इसे ऐसे क्यों बढ़ा रहा है जैसे कोई महाभारत हो?

'क्या आप टेलीविजन पर धारावाहिक देखना पसंद करेंगे?' श्याम ने बुदबुदाया।

श्याम को चिंता थी कि कॉटेज नंबर 12 पर उसे नुकसान हो रहा है। 'आपको पता है कि जब मैंने कॉटेज की पेशकश की थी तो मुझे लगा था कि यह ऑफ सीजन होगा, है न? लेकिन सीजन पहले से कहीं बेहतर रहा है,' उन्होंने कहा। 'हमें कुछ बुकिंग को मना करना पड़ रहा है और लोगों को वापस भेजना पड़ रहा है। मुझे ऐसा करना पसंद नहीं है।'

मैंने कंधे उचका दिए। 'आप जानते हैं अंकल। वह कभी नहीं बताते कि वह जो करते हैं, वह क्यों करते हैं। मुझे लगता है कि उनके अपने कारण हैं।'

अंकल के लिए यह मुश्किल नहीं था। मैं देख सकता था कि यह उनके लिए कठिन था।
अपने पूरे जीवन में अंकल ने ऐसे किरदार निभाए थे जिनके कार्य उनके लिए परिभाषित थे।
यहां उन्हें निर्माता और अभिनेता दोनों बनना था, और यह उनका अपना इतिहास था, उनका जीवन था, जिसे वे उजागर कर रहे थे।

'क्या गड़बड़ है?' मैंने क्रिस से पूछा।

वह अपनी ठोड़ी खुजलाते हुए कहते हैं, 'मैं पिछले कुछ दिनों की रिकॉर्डिंग सुन रहा था।
मुझे नहीं पता कि इसमें कितना सच है और कितना वह बना रहे हैं।'

मैं अपनी प्रिंटआउट टेबल पर देखता हूँ। हर शाम मैं टेप घर ले जाता हूँ और अगली शाम को ट्रांसक्रिप्ट प्रिंट करके वापस लाता हूँ।

क्रिस एक पन्ना उठाते हुए कहता है, 'एक बात यह है कि साइकिल की सवारी की जाती है।
कलश, ब्राह्मण ग्रामीण जो सूअर का मांस खाते हैं। उनकी प्रासंगिकता क्या है?'

मुझे उसकी हैरानी पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मैंने वह एपिसोड सुना था और
मुझे भी आश्चर्य हुआ। इसका अंकल से क्या संबंध है?

उस रात बाद में मुझे यह बात समझ में आई। फिर सब कुछ ठीक हो गया।

एक बार फिर अंकल ऐसा माहौल बना रहे थे जहाँ वास्तविकता और अवास्तविक के बीच टकराव हो रहा था। अगर सेथु सादिया से एक नीरस और उबाऊ साइकिल यात्रा के बाद मिला होता, तो उस मुलाकात का प्रभाव इतना जोरदार या मार्मिक नहीं होता।

अरबिपटनम उनके लिए एक और मुस्लिम बस्ती की तरह ही था। लेकिन जिस वास्तविक दुनिया से वे गुज़रे, उसकी अवास्तविकता ने अरबिपटनम को एक जादुई बढ़त दी।
यह एक जादुई जगह थी और सादिया वहां फंसी राजकुमारी थी। मैंने क्रिस को यह समझाया। 'क्या तुमने इसे देखा?' मैंने पूछा।

क्रिस अपनी आँखें सिकोड़ लेता है। एक हफ़्ते में उसका रंग सांवला हो गया है और उसकी त्वचा का लालपन उसकी आँखों को गहरे हरे रंग में बदल देता है। 'तुम्हारी आँखें बहुत खूबसूरत हैं,' मैंने कहा।

Machine Translated by Google

वह मुस्कुराता है। 'मुझे लगा कि मुझे यह कहना चाहिए था।' मैं शरमा
जाता हूँ और दूसरी ओर देखता हूँ, फिर एक गहरी साँस लेता हूँ और कहता हूँ, 'क्या तुम समझती हो?
मैं क्या कह रहा हूँ?' 'नहीं,
सच में। वह ऐसा क्यों करेगा?' 'वास्तव में, वह
फिर से अपनी कला से एक तकनीक का उपयोग कर रहा है,' मैंने कहा। 'क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको इसके बारे में समझाऊँ?' मैं जानकारी देने में संकोच करता हूँ। मुझे चिंता है कि मैं ऐसा लगने लगा हूँ कि मैं उसे उपदेश दे रहा हूँ।

'क्या आपको कोई आपत्ति है अगर मैं इसे भी रिकॉर्ड कर लूं?' वह मशीन में एक नया टेप डालता है।

'महाभारत में एक छोटा सा प्रसंग है। यह पूरे महाकाव्य के दायरे में बहुत महत्वहीन है, लेकिन कथकली में यह बहुत लोकप्रिय है। इसे बक वध कहते हैं। जिसका अर्थ है बक का वध।

'बका एक दुष्ट राक्षस था जो एक ब्राह्मण गांव में आतंक मचा रहा था। गांव के लोग, जो खुद की रक्षा करने में असमर्थ थे, उनसे विनती करने लगे कि वे उन्हें अकेला छोड़ दें। बका एक शर्त पर सहमत हुए: हर दिन एक परिवार उन्हें एक गाड़ी भरकर खाना भेजेगा और गाड़ी चलाने वाले और गाड़ी खींचने वाले बैल उनके खाने के तौर पर होंगे।

'अब, पांडव, जो उस समय वनवास में थे, इस गांव में पहुंचे और उन्हें आश्रय दिया गया। एक शाम, वे अपने भटकने से घर लौटे तो मेजबान परिवार को शोक में पाया। भोजन और अपने परिवार के एक सदस्य को बाका भेजने की बारी उनकी थी। जब हर पुरुष सदस्य ने जाने की पेशकश की तो परिवार रो पड़ा। तब भीम ने आगे बढ़कर कहा कि वह गाड़ी चलाने वाला होगा। भीम, अगर आपको याद हो, तो पांडवों में सबसे शक्तिशाली था, जिसे भोजन और युद्ध से बहुत प्यार था।

'अब लिपि में भीम की उस वन की यात्रा का वर्णन है जिसमें बका रहता था।

'भीम को गीदड़ों की चीख और गिद्धों की चीख सुनाई देती है। जब वह ये बदसूरत और डरावनी आवाजें सुनता है, तो उसे ऐसा लगता है जैसे जानवर राक्षस की पूजा कर रहे हैं। भीम आगे बढ़ता है और पागलों की हंसी और भूतों और दूसरे दुष्ट प्राणियों की खून जमा देने वाली चीखें सुनता है। हवा चलती है और उसमें मौत की बदबू आती है, सड़ते हुए मानव अवशेषों की। फिर भीम को ब्राह्मणों द्वारा पहने जाने वाले पवित्र धागे के टुकड़े दिखाई देते हैं और वह और भी क्रोधित हो जाता है।

'मेरा कहना यह है कि यदि लिब्रेटो में ऐसा कोई प्रसंग नहीं होता, तो भीम-
बाका युद्ध एक चरमोत्कर्ष होगा।'

क्रिस ने धीरे से सीटी बजाई। 'ठीक है। मैं इसे मानता हूँ। लेकिन कुछ और भी है जो आपको चाहिए
'जरूर सुनें...'

मेरा दिल धड़क रहा है। मैं सोचता हूँ कि एक रात जब हम एक कमरे में बैठे थे तो उन्होंने क्या कहा था।

Machine Translated by Google

नदी। 'कभी-कभी मैं बीच में ही रास्ता छोड़ देता हूँ। या तो विषय मुझे पकड़ नहीं पाता, या मुझे पता चलता है कि मैंने गलती की है और मेरा विषय बकवास है।' अब मुझे चिंता होती है। क्या वह सोचेगा कि अंकल प्रयास के लायक नहीं हैं?

यह एक गर्म शाम है। मैं अपने बालों को अपने चेहरे से दूर करती हूँ। मैं देखती हूँ कि उसकी आँखें मेरे चेहरे को चूम रही हैं।
स्तन और मैं अचानक सीधा।

'क्या मैं आपका बाथरूम इस्तेमाल कर सकता हूँ?' मैं माहौल को बदलने के लिए पूछता हूँ।

'लो, ये चप्पल पहन लो,' वह अपने रबर के सैंडल उतारते हुए कहता है। 'मैं अभी-अभी नहाकर आया हूँ और पूरा फर्श गीला है।'

मैं उनके पैरों में पैर रखती हूँ। मेरे पैर उनकी गर्माहट को महसूस करते हैं। मैं बाथरूम में शेल्फ़ को देखती हूँ। मैं उनके कोलोन को सूँघती हूँ और उनके टूथब्रश को छूती हूँ। मैं अपना चेहरा उनके तौलिये में छिपाती हूँ और उनकी खुशबू को साँसों में भरती हूँ। फिर मैं खुद को आईने में देखती हूँ। मैं क्या कर रही हूँ?

टेप में जान आ जाती है: 'सादिया को यह वाक्य बहुत पसंद था। यह उन सभी बातों का प्रतिनिधित्व करता था जो उसे लगता था कि जीवन में सच है। जीवन हमसे यह मांग करता है कि हमारे पास उत्सुकता का एक तख़्त हो।
अगर हम अपनी उम्मीदें नहीं बढ़ाएँगे तो हम और ज़्यादा कैसे पा सकते हैं? जो हमारे पास है और जो हम जानते हैं, उससे हम कैसे संतुष्ट रह सकते हैं?' मुझे लगा कि मेरे माथे पर एक सवाल उठ रहा है। 'तो फिर इसमें

क्या है?' मैं पूछता हूँ।

क्रिस अपना हाथ अपने चेहरे पर फेरता है। वह मेरी तरफ देखता है और पूछता है, 'क्या उसने बहुत यात्रा की है?' मैं सिर हिलाता हूँ।

'इसका क्या मतलब है? हाँ या नहीं?' इससे पहले कि मैं कुछ कहूँ, वह

अचानक आगे झुकता है और मेरा हाथ छूता है। 'अरे, मेरा इरादा झपटने का नहीं था। मुझे सच में नहीं पता कि मेरे अंदर क्या आ गया है...' वह अपना सिर अपने हाथों में छिपा लेता है।

'सब ठीक है,' मैंने कहा। मैं उसकी रूखी-सूखी हरकतों को माफ़ करने को तैयार हूँ। यह क्या है?
वह मेरे चारों ओर क्या जादू बुन रहा है?

वह ऊपर देखता है। 'वह मुहावरा...प्लैंक ऑफ एविडिटी। क्या तुम्हें पता है कि मैं इसे सबसे पहले कहां से मिला था? डेनमार्क के रोस्किल्डे में वाइकिंग म्यूजियम में।' उसकी आवाज शांत है।

मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूं। मैंने कहा, 'वह बहुत यात्रा कर चुका है।'

क्रिस मुस्कुराता है। 'तुम्हें लगता है कि मैं अधीर हो रहा हूँ, है न? यह उसकी कहानी है। मैं
उसे अपनी पसंद के हिसाब से बात कहने देना चाहिए। इसके अलावा...' वह रुकता है।

'इसके अलावा, क्या?'

'इसके अलावा, मुझे तुम्हारे साथ समय बिताने का मौका मिलता है।'

मैं दूसरी तरफ देखता हूँ। मुझे लगता है कि वह मेरे पास है। वह यहाँ कैसे आया?

मैं पीछे हट जाता हूँ। वह मुझे देखता है।

Machine Translated by Google

'चाचा जानना चाहते थे कि क्या तुम कल एक प्रदर्शन देखने जाना चाहोगे,'
मैं कहता हूं। 'वह परसों अपनी कहानी फिर शुरू करेगा,' मैं जोड़ता हूं।

वह मेरी शर्मिंदगी से खुश है। वह आगे झुकता है और अपनी उंगली से धीरे से मेरे गाल को सहलाता है। 'तुम किस बात से डर रही हो? मैं जाऊंगा, लेकिन तभी जब तुम भी जाओगी।' मुझे पता है कि मुझे विरोध करना चाहिए। कुछ ऐसा कहो जिससे उसे यह

भ्रम न हो कि हमारा रिश्ता किसी और रूप में विकसित हो रहा है। इसके बजाय, मैं पूछती हूँ, 'क्या तुम डांस देखना चाहती हो या मैं?' वह अपनी हरी आँखों से मुझे देखता है और कहता है, 'तुम क्या सोचती हो?'

जब मैं क्रिस के कॉटेज की ओर चल रहा था, तब सात बजने वाले थे। रात के आसमान में चाँद काफी चमकीला था, हालाँकि उसके किनारे धुंधले थे। मैं खुद को देखता हूँ।

आज शाम सौवीं बार मैं सोच रहा हूँ कि क्या मुझे कुछ और पहनना चाहिए था।

मैंने खुद को आईने में देखा था। मैंने खुद से कहा था कि मैं एक प्रदर्शन के लिए जा रही हूँ और अगर मैं साधारण कपड़ों में आऊँगी तो यह कला और कलाकार का अपमान होगा। मानो उसका प्रदर्शन प्रयास के लायक नहीं था। लेकिन मैं यह भी जानती थी कि मैं उसके लिए तैयार हो रही हूँ। मेरी आँखों में काजल, मेरे बालों में फूल, मेरे नाखूनों पर वार्निश, मेरी नाड़ी बिंदुओं पर इत्र, मेरी कमर की वक्रता को दिखाने के लिए नीचे लपेटी गई साड़ी... मैं चाहती थी कि वह मेरी ओर देखे।

जैसे ही मैं उसकी झोपड़ी के पास पहुंचा, मुझे संगीत सुनाई दिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह क्या सुन रहा है। संगीत रुक जाता है और फिर शुरू हो जाता है।

यह क्रिस खेल रहा है.

मैं जल्दी से चलता हूँ। मैं सावधानी से, चुपचाप उसकी झोपड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ता हूँ, ताकि उसे पता न चले कि मैं वहाँ हूँ। फिर मैं बरामदे में बैठकर सुनता हूँ।

मैं पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के बारे में कुछ नहीं जानता, लेकिन मुझे पता है कि जब मैं किसी संगीत के अंश पर प्रतिक्रिया करता हूँ। अब मैं उस उत्तेजना को महसूस करता हूँ। मानो मेरे अंदर जो कुछ भी दबा हुआ है, वह बाहर आने के लिए तड़प रहा है।

मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और संगीत को अपने ऊपर बहने देता हूँ। मैं क्रिस की कही बात याद करता हूँ
यहाँ अपनी पहली रात को। 'सामान! हममें से कोई भी इससे मुक्त नहीं है।' मेरे पास भी

मेरा सामान है।

मेरी उम्र कितनी थी? बाईस। इतनी कम उम्र, इतनी वयस्क संभावनाओं से भरी हुई, और अपने तरीके से जीने के लिए इतनी दृढ़ निश्चयी। मैं परिपक्व थी और प्यार में पड़ने के लिए तैयार थी; वह मुझसे बहुत बड़ा आदमी था, शादीशुदा था और जिस कंपनी में मैं काम करती थी, उसमें सीनियर मैनेजर था।
आम तौर पर, हम कभी नहीं मिलते। मैं एचआर विभाग में प्रशिक्षु था और वह एक वरिष्ठ तकनीकी विशेषज्ञ। लेकिन एचआर विभाग द्वारा आयोजित एक सेमिनार था और फिर शाम को एक कॉकटेल पार्टी थी। वह वहाँ था और मैंने

Machine Translated by Google

खूब शराब पी और जब मज़ाक-मस्ती इशारों में बदल गई, तो मैंने देखा कि वह एक आकर्षक आदमी था। मैं उसके ध्यान से खुश था और उसकी बातचीत से मंत्रमुग्ध था। मैंने खुद को झुकने दिया।

क्या प्यार में पड़ना यही होता है? हार मान लेना, त्याग देना, लचीला होना, आज्ञा पालन करना, रास्ता देना। मैंने यह सब किया, यह जानते हुए कि वह एक शादीशुदा आदमी था और 'मेरी पत्नी और मेरा विवाह केवल नाम के लिए है' सबसे पुराना और सबसे नीरस मुहावरा था।

मैं बहुत छोटी थी और इतनी झुकी हुई थी कि मुझे एहसास ही नहीं हुआ कि मैं एक आदर्श प्लेमेट हूँ और कभी भी इससे बेहतर नहीं हो सकती। दो साल तक, वह और मैं प्रेमी थे। 'जैसे ही मेरा बेटा घर छोड़ेगा, मैं तलाक ले लूँगी,' उसने कहा, और मैंने उसकी बात पर यकीन कर लिया। मेरा पूरा जीवन मेरे सामने था। मैंने खुद से पूछा, एक या दो साल क्या होते हैं।

मैंने उस पर विश्वास किया क्योंकि वह मुझसे उतना ही प्यार करता था जितना मैं उससे करती थी। इतना कि वह इसका दिखावा करना चाहता था। हमारे रिश्ते में कोई रहस्य या गुप्त बात नहीं थी। हमने वह सब कुछ किया जो दूसरे जोड़े करते थे।

हम पब और रेस्तराँ में जाते थे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि हम अपने परिचित लोगों से मिल सकते हैं। वह अपनी प्लेट से मेरे मुँह में निवाला डालता और मेरे गिलास से घूँट भरता और वह ऐसा करता जैसे उसे ऐसा करने का पूरा अधिकार हो। मैं इसमें आनंद लेती थी। वह मुझे अपने दोस्तों से मिलने ले जाता और उनके घरों में वह अपना हाथ मेरे हाथ में डाल देता और कभी-कभी बेखबर होकर मेरे बालों की एक लट को अपनी उँगली में घुमाता। जब हम ओपन-एयर कॉन्सर्ट में जाते, तो वह कार के सहारे झुक जाता और मुझे अपनी छाती से लगा लेता। उसने मुझे लिफ्ट में चूमा और कार की सीट को पीछे धकेला और अपनी कार में मुझसे प्यार किया।

और मुझे हमेशा से ही वह उत्साह, वह उत्साह पता था जो विद्रोह से आता है। मैं वयस्कों के रूप में वही कर रही थी जो मैंने किशोरावस्था में किया था: लड़कियों के बोर्डिंग स्कूल से चुपके से निकलकर एक लड़के के साथ हवा में उड़ती साइकिल की सवारी करना जिससे मैं मिली थी।

मूवी थियेटर में सिगरेट पीना और गले मिलना। लेकिन यह वही आदमी है जिससे मैं प्यार करती हूँ, मैंने खुद से कहा और और भी ज़्यादा झुक गई।

हमने कुछ भी नहीं छुपाया। उसने मुझे अपनी कल्पनाएँ बताईं और मैंने उनका पालन किया। शायद अनुपालन ही इसे इतना रोमांचक बनाता था। उसने मेरे शरीर को यौन ऊर्जा के बुखार के लिए तैयार कर दिया था और उसने ऐसी भूख जगाई जो कभी तृप्त नहीं होती थी। वह जानता था कि प्यार को कई अलग-अलग तरीकों से कैसे बनाया जाता है, एक ही समय में निपुण और कोमल। और चूँकि वह जानता था कि यह हमेशा के लिए नहीं होगा, इसलिए उसने जीवन भर के प्यार को यथासंभव चुराए हुए क्षणों में भर दिया।

फिर उसकी पत्नी मुझसे मिलने आई। शायद उसने पहले भी ऐसा किया हो। पहले तो वह इस बारे में बहुत ही तेज और तथ्यात्मक थी, जैसे कि वह टूटी हुई सीवर पाइप से निपट रही हो: इसमें कुछ बदबू और गंदगी होगी, लेकिन यह हो सकता है

Machine Translated by Google

'तुम्हें नहीं लगता कि यह पहली बार है, है न?'

मैं उससे नज़रें नहीं मिला पा रहा था। वह बहुत सुंदर थी, और मुझे लगा कि मैं एक बेढंगा किशोर हूँ। 'वह मुझसे प्यार करता है। और मैं उससे।' मैंने उसे चुनौती दी कि वह मेरी अवज्ञा करे।

उसने अपने होंठ काटे। मैंने उसकी तरफ देखा। वह नाराज़ नहीं थी, दुखी भी नहीं थी, बस पूरी तरह से, बेहद निराश थी। 'ऐसा लगता है कि वह छोटी से छोटी लड़कियों को चुनता है।

तुम्हें उसमें क्या दिखता है? उसके लिए अपनी ज़िंदगी बर्बाद मत करो। उसने क्या कहा- जैसे ही मेरा बेटा घर से चला जाएगा, मैं तलाक ले लूँगा?' मैं शरमा गया।

'मैंने भी यही सोचा था। उससे पूछो, कौन सा बेटा? पंद्रह साल का, ग्यारह साल का-

'क्या वह बच्चा पांच साल का है या पांच साल का?'

मुझे लगा कि मेरे अंदर एक सिसकी सी बढ़ रही है। मुझे छोटे बच्चों के बारे में पता नहीं था।

'मुझे पता है कि उसने तुमसे छोटे लड़कों का ज़िक्र नहीं किया है। यह भी, पैटर्न का हिस्सा है। मुझे उस पर दया आती है। ऐसा लगता है कि उसे हर बच्चे के जन्म के बाद खुद को छुड़ाने की ज़रूरत है। शायद अपनी जवानी वापस चुराना चाहता हो। मुझे नहीं पता। वह बुरा आदमी नहीं है, बस कमज़ोर है, और वह मुझे कभी नहीं छोड़ेगा। उसे मेरी ज़रूरत है...और मुझे उसकी। वह मेरे बच्चों का पिता है, आप देखिए।'

मैं नहीं सुन पाई कि वह क्या कह रही थी। मुझे बस इतना पता था कि मैं घर जाना चाहती थी।

मैं खुद को ऐसी जगह छिपाना चाहता था जहाँ इस तरह का कोई धोखा या समझौता न हो। मुझे लगा कि मेरे साथ धोखा हुआ है। मुझे लगा कि मेरा इस्तेमाल किया जा रहा है। मुझे लगा कि मैं मूर्ख हूँ। किसी भी चीज़ से ज़्यादा, मुझे पता था कि अगर मैं रुका तो मैं उसके झूठ को माफ़ करने का कोई रास्ता ढूँढ लूँगा और उसका साथी बना रहूँगा। यह इस बात का माप था कि मैंने उसके सामने कितना झुकना स्वीकार किया था।

कई दिनों तक मैं बिस्तर पर लेटी रही। यहाँ तक कि उठना भी मेरे लिए एक प्रयास था। मैं सुस्ती में डूब गई - या फिर निराशा? मेरे पास जागने के लिए क्या था? यहाँ तक कि सोचना भी मेरे लिए एक प्रयास था। फिर मुझे पता चला कि मैं गर्भवती थी। मेरे पास वास्तव में कोई विकल्प नहीं था। मुझे गर्भपात करवाना होगा। इसके अलावा और कुछ नहीं किया जा सकता था। मैंने अपनी अनामिका के चारों ओर सोने की अंगूठी और गले में काले मोतियों और सोने की चेन पहनी और अपने बालों के बीच में सिंदूर की लाली लगाई।

मैंने डॉक्टर की आँखों में जितना हो सका, उतनी निडरता से देखा और कहा, 'मैं इस बच्चे को जन्म नहीं दे सकती; मेरे पति और मैं अलग हो चुके हैं।' 'क्या तुम निश्चित हो?' उसने पूछा। 'यह मेरी पहली गर्भावस्था है, और मैं

गर्भपात के खिलाफ सलाह दूँगी। क्या तुमने खुद से पूछा है कि क्या यह बच्चा तुम्हें अपने पति के साथ सुलह करने में मदद कर सकता है?'

'नहीं, ऐसा नहीं होगा,' मैंने कहा। 'वह अब किसी दूसरी औरत के साथ है।' 'उस स्थिति में...' इसलिए मैंने उस प्यार के
सारे निशान मिटा दिए जो

होना नहीं था, और घर चला गया।

जब श्याम को पति के रूप में सामने लाया गया, तो मैं झिझकी। तब मेरे पिता ने कहा, 'मैंने तुम्हारे बारे में कुछ बहुत ही निराशाजनक बातें सुनी हैं। क्या तुम

Machine Translated by Google

क्या आप मेरा अच्छा नाम बर्बाद करने पर तुले हुए हैं?'

मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने क्या सुना होगा। मुझे परवाह नहीं थी। ऐसा नहीं था कि मेरे पिता का चरित्र बेदाग था। लेकिन मुझे पता था कि अगर मैंने खुद को श्याम से नहीं जोड़ा, तो मैं एक कमज़ोर क्षण में अपने प्रेमी के पास वापस चली जाऊँगी। मैंने सहमति जताई।

मैंने अपना स्वाभिमान बचा लिया था और अपनी ईमानदारी बनाए रखी थी। मैं फिर से सो सकता था बिना उसकी पत्नी की छवि देखे, उसकी निराश आँखों और आवाज़ में निराशा के भाव के साथ। तीन महीने बाद, मुझे पता चला कि मैंने गलती की है, लेकिन मैंने अपने दिमाग में इस विचार को दबा दिया। यह वहीं पड़ा रहा और असंतोष के बीज में बदल गया, मेरे जीवन को नष्ट कर रहा था और मेरी हड्डियों को चूस रहा था। मैंने इस शादी के लिए हाँ क्यों कहा था? एक आदमी के साथ रहने के लिए सिर्फ़ इसलिए क्योंकि मैं अपनी अंतरात्मा से भागना चाहती थी?

मैं फिर से उदासीनता में डूब गया। दिन सालों में बदल गए और मैं अपनी सुस्ती में खो गया। आगे क्या उम्मीद थी?

'क्या अब समय नहीं आ गया है कि आप बच्चा पैदा करें?' रानी ओपोल ने हमारी शादी के दूसरे साल में पूछा।

मैंने कंधे उचका दिए। मैंने कहा, 'जब हम तैयार होंगे, तब हम एक बना लेंगे।'

'इन बातों पर कुछ नहीं कहा जा सकता। आपको नहीं पता कि आप गर्भवती हो सकती हैं या नहीं
जब तक कि आप गर्भवती न हो जाएं।'

मैं सोच रहा था कि क्या मुझे उसे यह बात बता देनी चाहिए। लेकिन मैंने अपना जवाब दबा लिया।

'क्या अब समय नहीं आ गया है कि हम बच्चा पैदा करें?' श्याम ने कुछ साल बाद कहा।

मैंने सोचा कि एक बच्चा हमारे बीच की दूरियों को पाट सकता है। वह हमारे जीवन को भर देगा। मैंने सोचा कि मैं एक बच्चे का स्वागत करूंगी।

लेकिन मैं गर्भवती नहीं होऊंगी.

इसलिए हम डॉक्टरों के पास गए। कुछ महीनों तक यह एक सामान्य दिनचर्या बन गई। डॉक्टरों ने कहा, 'इसके बारे में मत सोचो और यह हो जाएगा।'

इसलिए मैंने इसके बारे में नहीं सोचा। लेकिन मैं गर्भवती नहीं हुई।

फिर एक दिन हम रानी ओपोल से मिलने गए। उनके पड़ोसी, पलक्कड़ के एक ब्राह्मण परिवार, अपनी बेटी के लिए सीमंतम का आयोजन कर रहे थे। मुझे लगा कि मुझे भी साथ जाना चाहिए, इसलिए मैंने रेशमी साड़ी पहनी और कुछ गहने पहने। आखिरकार यह एक उत्सव का अवसर था: गर्भावस्था के पूर्ण अवधि के करीब आने का उत्सव।

तब रानी ओपोल ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि तुम्हें हमारे साथ आना चाहिए। तुम्हें पता है कि लोग कैसे होते हैं; वे सोचते हैं कि एक विवाहित महिला जिसके इतने लंबे समय से बच्चे नहीं हुए हैं, वह मच्छी है। उन्हें यह पसंद नहीं आएगा। ऐसे समारोहों में एक बांझ महिला का होना अशुभ होता है...बुरी नज़र, वगैरह।'

मैंने कुछ नहीं कहा। मुझे बस इतना पता था कि मेरे अंदर एक ठंडक सी जम गई है।

अब, जब मैं क्रिस का संगीत सुनता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं पिघल रहा हूँ। मैं इस विचार को दबा नहीं सकता

Machine Translated by Google

फिर से। मैं इससे मुक्त होना चाहता हूँ। मैं बीस साल बाद एक सुबह जागना नहीं चाहता और खुद से पूछना चाहता हूँ: तुमने अपनी खुशी का मौका कैसे खो दिया?

जब मैं शिष्टाचार की सावधानी से संरक्षित बाड़ के बीच से गुज़रता हूँ तो ये नोट मेरे कानों में भर जाते हैं। अगर कोई विचार मेरे साथ चलता है, तो वह सिर्फ़ इस बात का दुख है कि क्या हो सकता था।

मैं दरवाजे पर खड़ी हूँ। क्रिस मुझे देखता है लेकिन रुकता नहीं है। मैं उसे देखता हूँ कि वह मुझे मना रहा है
साधन उसका होना चाहिए।

वह एक कुर्सी पर बैठा है। यंत्र उसके घुटनों के बीच बहुत धीरे से फंसा हुआ है; इसकी गर्दन उसके कंधे पर टिकी हुई है। उसके हाथ हिल रहे हैं, उसका बायाँ हाथ खोज रहा है, दायाँ हाथ बीन रहा है। वे एक हो गए हैं, यंत्र उसके शरीर, उसके स्पर्श के आगे झुक गया है।

मैं खुद को उसकी बाहों में देखती हूँ। मैं ही सेलो हूँ। वह मुझे ही दुलार रहा है। मैं ही हूँ जो प्रतिक्रिया दे रही हूँ।

मेरी इच्छा की तीव्रता मुझे चौंका देती है। मैं उस छवि को बाहर निकालने के लिए अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ।

संगीत अचानक बंद हो जाता है। मैं अपनी आँखें खोलता हूँ। वह सेलो को एक तरफ रख देता है। वह कुर्सी पर बैठा रहता है, उसके पैर अभी भी थोड़े फैले हुए हैं, उसकी आँखें गहरी हैं।
संगीत हवा में लटका हुआ है।

वह मेरी ओर देखता है.

मैं उसकी ओर चलता हूं.

Machine Translated by Google

श्याम

मुझे रोटरी क्लब की मीटिंग में जाना है। हम एक प्रोजेक्ट पर चर्चा करना चाहते हैं। तीन प्रोजेक्ट पर विचार किया जा रहा है और आज रात हम तय करेंगे कि कौन सा प्रोजेक्ट होगा। मैं चाहता हूँ कि राधा मेरे साथ जाए। बाकी सभी पदाधिकारी अपनी पत्नियों को साथ लाएँगे। मुझे राधा को देखना अच्छा लगता है जब वह महिलाओं के समूह के साथ होती है। मेरी राधा चमकती है।

जब हम साथ में बाहर होते हैं, तो मैं उसे देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि जब वह सुन रही होती है तो वह किस तरह अपनी ठोड़ी को आगे की ओर झुकाती है, और किस तरह वह हँसते समय अपना सिर पीछे की ओर झुकाती है। मैं देखता हूँ कि वह अपने हाथ से अपना मुँह ढँक लेती है और अपने बालों को अपने चेहरे से हटा देती है। और मैं फिर से उस गर्व की भावना को महसूस करता हूँ। वह मेरी है। मैं दूसरे पुरुषों की आँखों में प्रशंसा की भावना और महिलाओं के चेहरों पर ईर्ष्या की लहर देखता हूँ। मेरी राधा चमकती है।

मैंने पूछा, 'क्या तुम्हें यकीन है कि तुम नहीं आओगे?'

वह कहती है, 'नहीं, मैंने तुमसे कहा था कि मैं अंकल के साथ बाहर जा रही हूं।' मैंने उसकी आवाज में झुंझलाहट पढ़ी।

'क्या साहिव भी जा रहा है?' 'मुझे लगता है

हाँ। चाचा को लगता है कि अगर वह क्रिस को अपना लेख बेहतर ढंग से लिखने में मदद करेंगे तो वह उसे बेहतर ढंग से लिख सकेगा।
कुछ प्रदर्शन देखने को मिले।'

'मैं समझता हूँ।' लेकिन मैं नहीं समझता। मैं समझता हूँ कि क्रिस को कथकली का प्रदर्शन क्यों देखना पड़ता है। लेकिन मैं नहीं समझता कि राधा को क्यों साथ जाना पड़ता है। मैं अपनी माँ की कहावतों के बारे में सोचता हूँ: तिलों को धूप में भिगोने की ज़रूरत होती है ताकि वे ज़्यादा तेल पैदा कर सकें, लेकिन मूर्ख भृंग भी ऐसा ही क्यों कर रहा है?

'तुम क्या बुदबुदा रहे हो?' राधा पूछती है।

'मैं बस यही सोच रहा था, क्या तुम देर तक जागने से थक नहीं जाओगी? तुम्हें पता है कि हमें कल एसपी की बेटी की शादी में जाना है, है न?' मैंने उसे फिर से रोकने की कोशिश की।

वह भौंहें सिकोड़ती है। 'यह पहली बार नहीं है कि मैं देर तक जागी हूँ। भगवान के लिए,
अब क्या हुआ? कोई गपशप नहीं करेगा, अगर यही बात तुम्हें परेशान कर रही है।'

यह बात मेरे दिमाग में नहीं आई थी, लेकिन अब जब उसने मेरे दिमाग में यह विचार डाला है, तो मुझे चिंता हो रही है।

मैंने कहा, 'अगर आपको मेरी जरूरत हो तो फोन कर दीजिए, मैं आ जाऊंगा।'

वह एक पल के लिए मेरी तरफ देखती है। मैं उस नज़र का मतलब नहीं समझ पाता; क्या यह सच है?
लेकिन क्यों?

'नहीं, मैं ठीक हो जाऊँगी।' उसने मेरी कोहनी को छुआ। 'चाचा ने टैक्सी बुक कर ली है। वह

Machine Translated by Google

मुझे वापस छोड़ दो।' मैं

मुस्कुराता हूँ। शायद सब कुछ ठीक हो जाएगा, आखिरकार।

मैं उसे अपनी बालियाँ पहनते हुए देखता हूँ। आज रात वह और भी ज़्यादा खूबसूरत लग रही है।
मुझे लगता है कि वह मेरी श्यामंतक मणि है। लेकिन मैं उसे बताने की हिम्मत नहीं कर सकता। वह मुझ पर हंसेगी और पूछेगी, 'श्यामंतक मणि? तुम इसके बारे में क्या जानते हो?' राधा और अंकल दोनों ही यह मानना पसंद करते हैं कि मैं पौराणिक

कथाओं या अचेतन को आकर्षित करने वाली किसी भी चीज़ के बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं जानता। यह उनका क्षेत्र है और वे इसकी सख्ती से रक्षा करते हैं। अपने दिमाग में उन्होंने दुनिया को दो हिस्सों में बांट रखा है: वे जो उनके दायरे में आते हैं और वे जो उनके दायरे में नहीं आते। जहाँ तक उनका सवाल है, मैं एक व्यापारी हूँ और मैं जो एकमात्र संगीत सुनता हूँ वह है कैश रजिस्टर की घंटियाँ, मैं जो एकमात्र साहित्य पढ़ता हूँ वह है करेंसी नोटों पर लिखी बातें; मेरी पसंदीदा पेंटिंग औद्योगिक चिमनियों के ढेर हैं और मेरी लय की समझ कोग और पहियों की घिसाई से प्राप्त होती है। मैं उनकी दुनिया का हिस्सा नहीं हूँ और वे चाहते हैं कि मैं अतिक्रमण करने की कोशिश न करूँ।

जब हमारी पहली शादी हुई थी, तो मैंने चाचा और राधा के बीच रामायण के एक पात्र के बारे में हो रही चर्चा में शामिल होने की कोशिश की। उन्होंने मुझे ऐसे देखा जैसे मैंने कोई बहुत ही बेवकूफी भरी बात कह दी हो। फिर चाचा ने हँसी उड़ाई और राधा ने कहा, 'मूर्ख मत बनो। ऐसा नहीं है।'

मैं यह मांग करना चाहता था कि ऐसा क्या नहीं है। पौराणिक कथाएँ कविता की तरह होती हैं। इसे कहने से ही आकार मिलता है। अंकल और आप व्याख्या के महत्व के बारे में बात करते हैं, लेकिन आप बहुत घमंडी हैं। मैं कलाकार या कला पारखी नहीं हूँ, लेकिन इससे मेरी राय अमान्य नहीं हो जाती। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि आपको लगता है कि केवल कला में डूबे लोगों को ही अपने विचार व्यक्त करने की अनुमति होनी चाहिए?

और यह कि आपकी रीडिंग स्वीकार्य है और मेरी मूर्खतापूर्ण? लेकिन मैं हमारे रिश्ते की नई शुरुआत से भयभीत था और मैंने अपना गुस्सा रोक लिया।

तो फिर मैं राधा को कैसे बताऊँ कि वह मेरी स्यामंतक मणि है, 'जो प्रतिदिन आठ भार सोना देती है और भूत-प्रेत, जंगली जानवर, आग, लुटेरों और अकाल के सभी भय को दूर करती है'? जब तुम मेरे साथ होती हो, तो मैं उसे बताना चाहता हूँ कि मैं प्रकाश की माला पहने हुए सूर्य हूँ।

इसके बजाय मैं कहता हूँ, 'जब हम क्लब में डिनर के लिए जाते हैं तो तुम इस तरह क्यों नहीं कपड़े पहनती? तब तुम सिर्फ़ अपने सख्त खादी के कुर्ते पहनती हो। मुझे उनसे नफ़रत है; वे मुझे उन कार्यकर्ता महिलाओं की याद दिलाते हैं जो ज़हर और एक मुद्दे से जलती हैं। महिलाओं को रेशम, गहने और बालों में फूल पहनने चाहिए।'

वह चुप है.

जब शशि उसके लिए दरवाज़ा खोलता है तो मैं उसकी आँखों में आश्चर्य देखता हूँ। और प्रशंसा भी।

'मैडम कथकली प्रदर्शन के लिए जा रही हैं। यही कारण है कि वह

Machine Translated by Google

मैं कहता हूं, 'तुम तैयार हो जाओ।' वह मुस्कुराता है।

'मैं गाड़ी चलाऊंगा। आप घर जा सकते हैं,' मैंने कहा।

जैसे ही मैंने कार स्टार्ट की, राधा मुझ पर झल्ला उठी। 'तुम्हारा क्या मतलब है, पूरी तरह तैयार होकर? तुम ऐसा दिखा रहे हो जैसे मैं कुछ असाधारण कर रही हूँ। क्या मैं ड्राइवर से बात किए बिना रेशमी साड़ी नहीं पहन सकती?' मुझे आश्चर्य है कि वह इतनी परेशान क्यों है। मैंने क्या कहा?

मैं अंकल के गेट पर रुकता हूं। 'क्या तुम्हें यकीन है कि टैक्सी बुक हो गई है? क्या तुम्हें चाहिए?

मैं पूछता हूं, 'क्या आप मुझे जांचने के लिए बुला रहे हैं?'

वह बाहर निकलते हुए कहती है, 'झंझट मत करो।'

'राधा,' मैं कहना शुरू करता हूं।

'क्या?' 'कुछ

नहीं। अच्छा समय बिताओ।' मैं अंकल के दरवाज़ा खोलने और राधा के अंदर आने का इंतज़ार करता हूँ। फिर मैं गाड़ी पीछे करके चला जाता हूँ।

उसकी खुशबू कार में अभी भी बनी हुई है। मुझे फिर से उस खोने का एहसास हुआ। ऐसा क्यों है कि शादी के आठ साल बाद भी राधा पर मेरा नियंत्रण इतना कमज़ोर है?
मैं उसके अस्तित्व के सार तक क्यों नहीं पहुँच पाता? क्या इसलिए कि वह मुझे ऐसा करने नहीं देती?

मेरे पिता और राधा की माँ गौरी चचेरे भाई-बहन थे। वे एक ही घर में पले-बढ़े। जब मेरे पिता अठारह वर्ष के हुए, तो वे सेना में भर्ती हो गए। वे दो युद्धों में बच गए और फिर, जब मैं नौ वर्ष का था, तो एक अजीब सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। लोहे के पाइपों से लदा एक ट्रक बहुत तेजी से मोड़ ले रहा था। पाइपों में से एक गोली निकल गई और मेरे पिता अपने स्कूटर से गिरकर बस के रास्ते में जा गिरे। मैंने एक पिता को खो दिया और भाग्य में एक अटूट विश्वास हासिल किया।

मेरी माँ के पास कोई परिवार नहीं था, इसलिए हम मेरे पिता के घर चले गए, जहाँ मेरी दादी अभी भी रहती थीं। यह बात समझ में आ गई थी कि मेरी दादी के मरने के बाद घर गौरी अम्मई को मिल जाएगा, लेकिन उन्हें घर की ज़रूरत नहीं थी। उनकी शादी अच्छी तरह से हुई थी। इसलिए मेरी दादी के मरने के बाद भी हम वहीं रहते रहे। गौरी अम्मई ने अपने पति को हमारी मदद करने के लिए राजी किया। हमें सिर्फ़ आत्मसम्मान चाहिए था।

मेरी बड़ी बहन रानी सोलह साल की थी। रेलवे में काम करने वाले एक रिश्तेदार के बेटे ने उससे शादी कर ली। मेरे पिता की मृत्यु पर हमें जो भी पैसे मिले थे, वे सब उसकी शादी में खर्च हो गए।

मेरे पिता को मुझसे बहुत उम्मीदें थीं। वे कहते थे कि मेरा बेटा डॉक्टर या इंजीनियर बनेगा। न तो मेरी माँ और न ही मैंने गौरी अम्मई के पति से पेशेवर कॉलेज में शिक्षा के लिए पैसे माँगने की हिम्मत की। इसलिए मैंने अर्थशास्त्र में बीए किया और खुद को सेल्स में नौकरी मिल गई। अब हमें उनकी मदद की ज़रूरत नहीं थी।

Machine Translated by Google

जब मुझे मेरी पहली तनख्वाह मिली, तो मैंने उसके लिए एक शर्ट खरीदी और उसे उसके घर ले गया।

मैंने उसे मेरी मौसी से कहते सुना, 'तुम्हारे चचेरे भाई का चेकन यहाँ है।' मैं चौंक गया।

चेकन। बेटा। मैं अब बड़ा हो गया हूँ, मैं उसे बताना चाहता था।

'यह क्या है?' उसने मेरे द्वारा दिए गए पैकेट की ओर देखते हुए पूछा।

'एक शर्ट। मुझे इस हफ़्ते की शुरुआत में ही पैसे मिल गए थे और मैं उन पैसों से तुम्हारे लिए कुछ खरीदना चाहता था।' 'तुम्हें समझदारी से खर्च

करना सीखना चाहिए; फिर तुम्हें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा,' उसने कहा। 'गौरी, देखो इस चेकन ने मेरे लिए क्या लाया है।'

वह मेरा नाम क्यों नहीं इस्तेमाल कर सकता था?

मैंने उसे वह शर्ट पहने कभी नहीं देखा.

मैं अपने काम में अच्छा था और महत्वाकांक्षी भी। मैंने मैनेजमेंट की डिग्री ली

उन्होंने यूनिवर्सिटी खोल ली और नौकरी बदल ली।

मेरी माँ ने देखा कि मेरी संभावनाएँ उज्ज्वल हैं और उन्होंने विवाह का विषय उठाया। 'तुम किसका इंतज़ार कर रहे हो?' 'राधा की उम्र कितनी है?' मैंने पूछा।

'राधा? तुम्हारी शादी से उसका क्या लेना-देना है? मुझे उम्मीद है कि तुम नहीं हो

उससे शादी करने की कोई इच्छा नहीं है।' मेरी माँ शिकायती स्वर में बोलीं।

'क्यों नहीं? मुझे क्या हो गया है?' 'मूर्ख मत बनो। केवल

एक बच्चा ही चाँद के लिए रोता है।' 'मुझे यकीन है कि गौरी अम्मई सहमत होंगी,'

मैंने कहा।

'वह तो शादी कर लेगी, लेकिन वह नहीं करेगा। वह उम्मीद करता है कि उसकी बेटी एक ऐसे परिवार में शादी करके खुश होगी जो हैसियत और धन-संपत्ति में उनसे मेल खाएगा। हम कोई नहीं हैं। हमारे पास अपना घर भी नहीं है।'

मैं चुप रहा। यह सच था। हमारे पास अपना कहने को कुछ भी नहीं था, यहाँ तक कि हमारे सिर पर छत भी नहीं थी।

अगली बार जब उसने शादी की बात की तो मैंने कहा, 'अम्मा, मैं शादी तभी करूंगी जब हमारा अपना घर होगा।' फिर मुझे मेरी मां का पत्र मिला। उसमें लिखा था: दो दिन की छुट्टी लेकर

आ जाओ।

तुरंत घर जाओ।

मैं उन दिनों त्रिवेंद्रम में काम कर रहा था। मुझे आश्चर्य हुआ कि यह क्या है, लेकिन मैं चला गया। इसके अलावा, मेरे पास अपनी खुद की खबर थी। मेरे पास दुबई की एक ट्रेडिंग फर्म से अनुबंध पत्र था। मैं आखिरकार बहुत पैसा कमाने जा रहा था। मैं आखिरकार कुछ बनने जा रहा था।

'तुम्हारे चाचा लगभग दस बजे तक तुमसे मिलने आएँगे,' मेरी माँ ने कहा, जब मैं अंदर गया। वह चिंता से भरी हुई लग रही थी। क्या गड़बड़ हो सकती है? क्या वह घर बेचने की योजना बना रहे थे?

'क्या गलत?'

Machine Translated by Google

'गलत?' उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। 'यह अच्छी खबर है। वह एक साथ आया था।
पिछले हफ़्ते शादी का प्रस्ताव आया था।' 'क्या तुमने उसे
नहीं बताया कि मैं अभी शादी करने की योजना नहीं बना रहा हूँ?' 'तब तक रुको जब तक तुम सुन न लो
कि लड़की कौन है...यह राधा है।' मेरी माँ ने भाग-दौड़ की। उसने अपने हाथ मरोड़े और
अपनी साड़ी के छोर से अपना चेहरा पोंछा। उसने बड़बड़ाया और सिर हिलाया, मुस्कुराई और भौंहें सिकोड़ीं, और वह घबराहट की स्थिति में थी।

'मेरे लिए एक कप चाय लाओ,' मेरे चाचा ने अपनी झुंझलाहट को छिपाने की जहमत नहीं उठाते हुए कहा।

मैं दीवार के सहारे झुकी हुई थी। मैं सीधी हुई और मुझे नहीं पता कि कैसे, लेकिन मुझे यह कहने का साहस मिला, 'मैं नहीं चाहती कि तुम मेरी माँ से कभी भी इस तरह की आवाज़ में बात करो।' उसने मेरी तरफ़ ऐसे देखा जैसे वह मुझे पहली बार देख रहा हो। मैं

अब वह चेकन नहीं थी जिसे वह अपनी ठोड़ी झुकाकर खारिज कर सकता था। मैं इकतीस साल की थी, मेरे पास दो डिग्रियाँ थीं और जल्द ही, दुबई में नौकरी भी मिल गई।

'ओह, मेरा ऐसा मतलब नहीं था। वह मेरी छोटी बहन की तरह है,' उसने धीरे से कहा।

'अगर आपकी बहन होती तो आप उससे कभी इस तरह बात नहीं करते। मेरी माँ आपकी नौकरानी नहीं है...मुझे पता है कि आपने हमें तब अपने घर में रखा था जब हमारे पास कोई नहीं था। आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी। हम सिर्फ़ शादी के ज़रिए आपके रिश्तेदार हैं। इसके लिए मैं और वह दोनों आपका आभार मानते हैं। लेकिन इससे आपको उनसे या मुझसे अपमानजनक तरीके से बात करने का अधिकार नहीं मिल जाता।'

'श्याम,' उसने कहा। अब वह कितनी आसानी से मेरा नाम बोल रहा था। 'श्याम, अगर मैं सोचता कि तुम मेरे बराबर के नहीं हो, तो क्या मैं तुम्हें अपनी बेटी की शादी देने के लिए यहाँ आता?' वह मेरे पास आकर खड़ा हो गया। लेकिन उसकी नज़रें टेढ़ी थीं।

जैसे ही मेरी माँ ने मुझे खबर दी, मुझे तुरंत पता चल गया था कि कुछ गड़बड़ है
अचानक राधा चाँद नहीं बल्कि तोड़ने के लिए पका हुआ आम बन गई।

मैं फिर बैठ गया। मैंने पहले कभी ऐसा नहीं किया था - उसके साथ बैठना। मुझसे उम्मीद की जाती थी कि मैं खड़ा रहूँ या सीढ़ी पर बैठूँ। सिर्फ़ बराबर के लोग ही एक दूसरे के साथ बैठते हैं। वह एक पल के लिए घूरता रहा और मैंने देखा कि वह अपनी नाराज़गी छिपाने की कोशिश कर रहा था।

मैंने पूछा, 'क्या उसकी कुंडली में कोई समस्या है?'

'नहीं, नहीं, उसकी कुंडली बहुत अच्छी है और वह आपकी कुंडली से बहुत अच्छी तरह मेल खाती है।' 'तो क्या उसे कोई बीमारी है?
ल्यूकोडर्मा, या शायद उसके गर्भाशय में कुछ गड़बड़ है?'

'क्या बात कह रहे हो! वह बिल्कुल स्वस्थ है।' 'तो वह गर्भवती होगी,'

मैंने कहा। मेरी आवाज़ मेरे अपने कानों को ठंडी लग रही थी।

'श्याम, तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इतनी ढीठ बनने की? अपने ही चाचा का अपमान करने की, जो हमारे प्रति इतने दयालु रहे हैं...' दरवाजे से मेरी माँ की भयभीत आवाज़ गूंजी। ट्रे पर रखे कप उसकी भावनाओं के ज़ोर से हिल रहे थे।

'अम्मा,' मैंने कहा। 'मुझे जानना है कि मैं, जो एक मामूली व्यक्ति हूँ और जिसके पास एक घर भी नहीं है, क्यों

Machine Translated by Google

मेरे अपने, मुझे राधा से शादी करने के लिए कहा जा रहा है, जिसके बारे में आपने कहा था कि यह एक शानदार शादी होगी। हम उनके स्तर के नहीं हैं, आपने कहा। तो अब यह अलग क्यों है? मुझे यकीन है कि ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि उन्हें एहसास हो गया है कि मैं उनके बराबर की हैसियत या धन नहीं रख सकता, लेकिन फिर भी मैं राधा के लिए सबसे अच्छा आदमी हूँ।' 'मुझे उससे बात करने दो,' राधा के पिता ने कहा।

मेरी माँ हमें अकेला छोड़कर चली गईं। उन्होंने चाय का प्याला लिया और चुस्कियाँ लीं। उन्होंने सिगरेट का एक पैकेट निकाला और कुछ देर झिझकने के बाद मुझे दिया। 'क्या तुम एक सिगरेट पीना चाहोगे?'

'नहीं,' मैंने कहा। मैंने नज़रें फेर लीं। मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। वह मुझे अपने पैरों को उस पर पोंछने देने के लिए तैयार था। उसमें कोई गर्व नहीं बचा था, और मैं अभी भी उसे ज़मीन पर रौंद रहा था।

'क्या बात है?' मैंने यथासंभव विनम्रता से पूछा।
'वह एक आदमी के साथ संबंध में है।' 'तो तुम उनकी शादी

क्यों नहीं करवा देते?' उसने रूमाल से अपना चेहरा पोंछा। 'काश यह

इतना आसान होता। वह एक शादीशुदा आदमी है और उसके तीन बच्चे हैं। उसकी पत्नी ने मुझे लिखा है कि अपनी बेटी को ले जाओ, इससे पहले कि वह उसकी ज़िंदगी बर्बाद कर दे और वह मेरा परिवार। यह जानते हुए भी, मैं उसकी शादी में देरी कैसे कर सकता हूँ?'

'तो तुम किसी और को गंदा माल देने से डरते हो और मेरे पास आने का फैसला किया। श्याम वही करेगा जो हम कहेंगे, क्योंकि वह हमारे प्रति कृतज्ञता के ऋण से बंधा हुआ है - क्या तुमने ऐसा सोचा?'

मेरे मुँह में कड़वाहट थी। राधा मेरी होगी क्योंकि वह किसी और की नहीं होगी।

'ऐसा मत कहो। यह एक मासूम रिश्ता था। एक जवान लड़की का मोह
एक वृद्ध व्यक्ति के लिए.'

मैं समझ सकता था कि वह कुछ और ही सोच रहा था, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि मैं ऐसा नहीं सोचूंगा।

उन्होंने विनती की, 'आपको मेरी प्रतिष्ठा और समाज में मेरी प्रतिष्ठा बचानी होगी।'
'श्याम, तुम ही मेरी एकमात्र आशा हो।'

मैंने सोचा, मासूमियत इतनी ही है। मैं खड़ा हो गया। 'तुम्हें कुछ तो पता होना चाहिए। मैं हमेशा से राधा से प्यार करता रहा हूँ। मेरी माँ ने कहा था कि मुझे बेवकूफ़ाना सपने नहीं देखने चाहिए। लेकिन मैं जानता था कि वह मेरी किस्मत में थी। मेरे लिए यह मायने नहीं रखता कि उसका किसी और आदमी से रिश्ता है। मैं उससे शादी करके खुश होऊँगा। लेकिन क्या वह करेगी?' 'वह वैसा ही करेगी जैसा मैं उसे कहूँगा,' उसने कहा।

मैंने कहा, 'मुझे दुबई से नौकरी का ऑफर मिला है।' 'मुझे जल्दी ही जाना है, इसलिए तुम्हें उससे पहले शादी कर लेनी चाहिए।' मैं अचानक डर गया। क्या होगा अगर कोई मुझे छोड़ दे?

Machine Translated by Google

क्या मुझसे अधिक उपयुक्त कोई और निकला?

'क्या वह आपके साथ जा सकेगी?' उसने पूछा।

'तुरंत नहीं। शायद बाद में।' 'ओह,' उसने कहा। उसने मेरी

आँखों में आँखें नहीं मिलाते हुए दूसरी ओर देखा। 'क्यों न यहाँ कुछ किया जाए? युवा पत्नियों को अकेला नहीं छोड़ा जाना चाहिए।' उसने मेरे हाथ अपने हाथों में ले लिए। 'मेरे पास जो कुछ भी है वह उसका है, और इसलिए तुम्हारा है,' उसने

कहा।

'क्या यह रिश्वत है?' 'श्याम,

तुम मेरे बेटे हो,' उन्होंने कहा।

'ऐसी स्थिति में, मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे कुछ पैसे एडवांस में दो। मेरे पास एक बिज़नेस वेंचर का आइडिया है। लेकिन मैं तुम्हें हर एक रुपया ब्याज सहित लौटा दूँगा,' मैंने कहा। फिर मैंने कहा, 'लेकिन एक बात का वादा तुम्हें मुझसे करना होगा। कि तुम राधा को कभी नहीं बताओगे कि आज यहाँ क्या हुआ। मैं नहीं चाहता कि उसे पता चले कि मैं उसके अतीत के बारे में जानता हूँ। या कि तुमने मुझे बिज़नेस शुरू करने के लिए पैसे दिए हैं।' मेरी माँ ने इस शादी को पूरी तरह से मंज़ूरी दे दी। केवल रानी ओपोल ने इतना स्वागत नहीं किया। उसे शक था कि मुझे सहमत होने के लिए मजबूर किया गया था। 'क्या तुम्हें यकीन है कि तुम यही चाहते हो?' जब शादी तय हुई तो उसने कहा।

मैंने उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुराया। वह मेरे लिए बहुत सुरक्षात्मक थी। 'चिंता मत करो। मुझे यकीन है।' 'तुम जो भी लड़की चाहो

पा सकते हो। तुम्हें सिर्फ़ इसलिए उसके साथ रहने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हम उसके पिता के आभारी हैं।' 'मुझे वह पसंद है। मुझे वह बहुत पसंद है, ओपोल,' मैंने कहा। मैं एक शब्द भी इस्तेमाल करने की हिम्मत नहीं कर सकता

था

ओप्पोल के साथ प्यार की तरह। उसे यह पसंद नहीं आएगा, मुझे सहज रूप से पता था।

हमारी शादी की रात, राधा हमारे विवाह कक्ष में एक टोपी के साथ मेरा इंतज़ार कर रही थी।
चेहरा ऐसा लग रहा था मानो पत्थर से तराशा गया हो।

'तुम इतने गंभीर क्यों लग रहे हो?' मैंने मज़ाक करने की कोशिश की।

'मैं कुंवारी नहीं हूँ,' उसने कहा। 'मैं चाहती हूँ कि तुम जान लो कि मैंने सेक्स किया है।' मैंने पीछे हटने की कोशिश नहीं की और

इसके बजाय एक केला छील लिया। बेडसाइड टेबल अनिवार्य पहली रात के सामान से भरी हुई थी। मुझे लगा कि मेरी चाची ने बहुत सारी फ़िल्में देखी हैं। फलों की एक प्लेट, अगरबत्ती, एक गिलास दूध और फूलों से सजा बिस्तर।

'यह सब एक तमाशा है,' उसने कहा, फूलों की एक माला दूर फेंकते हुए।

मैंने उसे फल दिया और कहा, 'केला खाओ।'

उसने मेरी तरफ देखा। 'क्या तुम्हें लगता है कि यह मजाक है?' 'नहीं, मुझे नहीं लगता,'

मैंने कहा। मैंने इस बारे में बहुत सावधानी से सोचा था। मैं राधा को इतना अच्छी तरह जानता था कि मैं यह अनुमान लगा सकता था कि वह मुझसे कुछ कहना चाहेगी, आगे बढ़ने से पहले अपनी आत्मा को प्रकट करेगी। मैं जानता था कि बेपरवाही दिखाना ही एकमात्र तरीका था

Machine Translated by Google

उसके कबूलनामे के महत्व को कम करने के लिए। 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने भी सेक्स किया है। मैं दूसरी महिलाओं के साथ भी सोया हूं।'

'क्या मेरे पिता ने मुझसे शादी करने के लिए तुम्हें पैसे दिए थे?' मैंने उसे

ध्यान से देखा। 'तुम मेरा अपमान कर रही हो,' मैंने धीरे से कहा। मैं उसे झगड़ा करने की इजाज़त नहीं दूँगा। आज रात नहीं। 'मुझे तुमसे शादी करने के लिए पैसे की ज़रूरत नहीं है। क्या तुम नहीं जानती कि तुम कितनी खूबसूरत हो?' उसने मेरी नज़रों से नज़र नहीं मिलाई।

'लेकिन तुमने मुझसे शादी क्यों की? तुम इस शादी से बहुत खुश नहीं लगती हो,' मैंने कहा।

वह फर्श पर घूरती रही। 'मुझे नहीं पता था कि और क्या करना है,' उसने कहा, और रो पड़ी।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। शायद मुझे उसे बता देना चाहिए था कि मैं उससे प्यार करता हूँ। मैं हमेशा से उससे प्यार करता रहा हूँ। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसने पहले क्या किया है, मायने यह रखता है कि हमने साथ मिलकर अपनी ज़िंदगी में क्या बनाया।

मैंने पति जैसा व्यवहार किया। मैंने उससे प्यार किया और उसने बिना किसी विरोध के मुझे ऐसा करने दिया। जब उसने मेरे स्पर्श का जवाब दिया और मुझे पता चला कि वह किसी याद को छिपाने की कोशिश कर रही है, तो मैंने अपना दिमाग बंद कर लिया। वह तब की बात है। यह अब है। तुम मेरी हो, मैंने सोचा, जैसे ही मेरे कूल्हे उसके साथ जुड़ गए और मेरा मुँह उसके मुँह की तलाश में लग गया।

मैं बिस्तर पर पीठ के बल लेटा हूँ। अभी सवा ग्यारह बजे हैं। राधा कहाँ है? मैं उसकी बेडसाइड टेबल पर देखता हूँ, जहाँ एक किताब औंधे मुँह पड़ी है। इसमें ट्रेन के डिब्बे में बैठी एक महिला की तस्वीर है। मैं उसे पलटता हूँ और पीछे लिखा हुआ पढ़ता हूँ: 'एक महिला की शक्ति और स्वतंत्रता की खोज की कहानी...' मैं किताब नीचे फेंक देता हूँ। क्या यह सब इसी बारे में है, आधी रात की भटकन और साहिव के साथ बंद घंटों की कहानी?

मैं प्लेयर में सीडी लगाता हूँ। एआर रहमान का जन गण मन ...राधा को मेरे द्वारा सुने जाने वाले अधिकांश संगीत पसंद नहीं हैं। उसे लगता है कि मेरी पसंद साधारण है।

वह सोचती है कि यह शर्मनाक है कि मैं बेवॉच और डब्ल्यूडब्ल्यूएफ का आनंद लेता हूं। 'आप इसे देखना भी कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं?' वह अविश्वसनीय रूप से कहती है। 'यह बहुत अवास्तविक है। क्या आपको लगता है कि लाइफगार्ड ऐसे दिखते हैं? जहां तक उन कुश्ती मैचों की बात है, तो उनके बारे में सब कुछ काल्पनिक है!'

मुझे लगता है कि वह अपने दोस्तों और हूज लाइन इज इट एनीवे के साथ एक अवास्तविक दुनिया में रह रही है? होस्ट, मोटे आदमी डू कैरी, शो के बारे में क्या कहते हैं ... जहाँ अंक मायने नहीं रखते! यही उसकी सारी प्राथमिकताएँ हैं। ऐसी चीज़ें जो मायने नहीं रखतीं।

लेकिन मैंने सोचा था कि वह रहमान में कोई दोष नहीं निकाल सकती।

मैंने उसे गाना सुनाते हुए कहा था, 'उसने सभी बेहतरीन नामों को अपने साथ जोड़ लिया है, इसे सुनो।'

Machine Translated by Google

वह कुछ मिनट तक सुनती रही और फिर जाने के लिए उठ खड़ी हुई।

'क्यों? तुम्हें यह पसंद नहीं है?' 'यह तो बहुत

चालाक है। तुम इसे कैसे बर्दाश्त कर सकती हो?' उसने अपनी नाक सिकोड़ी।

'वह बहुत प्रतिभाशाली है। उसने लंदन के एक संगीत नाटक के लिए संगीत तैयार किया है। एंड्रयू लॉयड वेबर की बॉम्बे ड्रीम्स।' 'तो?' 'पूरी दुनिया सोचती है कि वह बहुत बढ़िया है।' 'मेरे लिए इसका

कोई

मतलब नहीं है।' इसलिए अब मैं अपनी पसंद का संगीत या तो कार में

सुनता हूँ या फिर घर पर अकेले।

घड़ी बजती है। साढ़े ग्यारह बज रहे हैं। मैं सोच रहा हूँ कि क्या मुझे एसपी से क्रिस के बारे में बात करनी चाहिए। कुछ साल पहले, एक युवा पोलिश महिला अंकल के पास पढ़ने आई थी।

वह उनकी निजी छात्रा थी और ऐसा लग रहा था कि वह उससे बहुत ज़्यादा प्यार करने लगे थे। मुझे नहीं लगता कि बूढ़े आदमी को कोई जुनून था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह उससे बहुत ज़्यादा प्यार करता था। मैं हस्तक्षेप नहीं करता, लेकिन इस तथ्य के कारण कि वह जिस ज़मीन पर रहता है, वह सोने की खान के बराबर है। जब वह मरेगा, तो वह राधा की होगी। मैं नहीं चाहता कि उसकी विरासत को कोई ख़तरा हो। इसलिए मैं एसपी के दफ़्तर गया और उनसे बात की और उन्होंने सुनिश्चित किया कि महिला का वीज़ा रिन्यू न हो।

मुझे एक कार की आवाज़ सुनाई देती है। वह वापस आ गई है। मैं उठकर बैठ जाता हूँ। फिर मैं फिर से लेट जाता हूँ, लाइट बंद कर देता हूँ और सोने का नाटक करता हूँ।

Machine Translated by Google

चाचा

रात की खुशबू हवा में भर जाती है। मैं धीरे-धीरे चलता हूँ, सुखमो नी देवी ... क्या आप ठीक हैं, मेरी स्वामिनी? सीता को संबोधित हनुमान का यह शब्द, जब वह राज्य से निर्वासित होने के कई साल बाद संयोग से उनसे मिलते हैं। उस पदम के शब्दों ने हमेशा मेरी आँखों में आँसू ला दिए हैं, लेकिन आज रात मैं अपने सिर में उन शब्दों को सुनता हूँ और मुझे पता है कि वे माया के लिए हैं।

पिछले दस सालों से माया हर महीने के दूसरे और चौथे मंगलवार को पौने आठ बजे मुझे फ़ोन करती है। उस समय उसके पति ब्रिज गेम खेलते हैं और घर में वह अकेली होती है। हम एक दूसरे से ऐसे बात करते हैं जैसे हम एक ही कमरे में हों। पिछले दस सालों में हम बातचीत में इतनी सहजता से आगे बढ़ गए हैं जो मैंने कभी किसी और के साथ नहीं देखी। वह मुझसे कहती है कि उसके लिए भी यही बात है।

आज सुबह जब माया ने फ़ोन किया, तो मैंने तय किया कि मैं उसे राधा और क्रिस के बारे में बताऊँगा और बताऊँगा कि उनके बीच क्या चल रहा है। 'तुम क्या सोचती हो?' मैंने पूछा।

'मुझे नहीं पता, कोमन। कौन बता सकता है? वे दोनों इतने बड़े हैं कि वे जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, और इसके क्या परिणाम होंगे। हमारी तरह, कोमन। हम जानते थे, है न?' 'मुझे चिंता है कि राधा इसे अपने विचारों में ही रहने देगी और इसके बारे में कुछ नहीं करेगी।'

'कोमन, ऐसा लग रहा है जैसे तुम चाहते हो कि वह व्यभिचार करे। यह आसान काम नहीं है
'इस स्थिति में होना चाहिए।'

'माया, तुम्हें राधा को देखना चाहिए। मुझे उसमें आए बदलाव पर यकीन नहीं हो रहा।
कई वर्षों में पहली बार ऐसा लग रहा है कि उसे आगे बढ़ने का कारण मिल गया है।'

'तो फिर वह उससे तलाक क्यों नहीं ले लेती? ऐसा नहीं है कि उनके बच्चे हैं।' 'श्याम बुरा आदमी नहीं है। पति के तौर पर उसमें कोई दोष

नहीं है। लेकिन मैं देख सकता हूँ कि राधा उससे खुश नहीं है। उसे तलाक देना क्योंकि वह उसे बोर करता है - कौन सी अदालत इस पर सुनवाई करेगी?' 'उनके पास बोरियत के लिए एक मुहावरा है। कभी न सुलझने वाले मतभेद।' 'मुझे नहीं पता, माया, मुझे नहीं पता कि वे तीनों कहाँ जा रहे हैं।' 'कोमन, मैं जानता हूँ कि तुम उससे बहुत

प्यार करते हो। लेकिन यह उसका जीवन है। तुम उसका जीवन नहीं जी सकते,' माया ने कहा, और मैं जानता था कि
वह सही थी।

फिर माया ने वही कहा जो मैं सात साल पहले उससे सुनने की उम्मीद कर रही थी। 'कोमन,
मैं आपसे मिलना चाहूंगी,'उसने कहा.

मैं उसकी आवाज़ में उसकी ज़रूरत को सुन सकता था। मैं भी उससे मिलना चाहता था।

लेकिन मुझे डर भी था। सब कुछ फिर से शुरू करने के लिए: क्या मैंने सोचा था?

Machine Translated by Google

क्या मुझमें हिम्मत है? क्या मुझमें सहनशक्ति है?

मैंने उसकी तड़प को दबाने की कोशिश की। 'माया,' मैंने कहा। 'मुझे पता है कि हम मिले हुए बहुत समय हो गया है। लेकिन मैं इन दिनों बहुत कम यात्रा करता हूँ।' 'मैं तुम्हारे पास आऊँगा। मुझे बस तुम्हारे साथ रहना है,' उसने

कहा और उसकी आवाज़ टूट गई। 'बस कुछ दिनों के लिए।' मैंने उसकी आवाज़ में विनती सुनी। 'मुझे भीख माँगने पर मजबूर मत करो, कोमन। मुझे इतनी गरिमा दो।'

मैं चुप था। मैंने खुद से पूछा, मैं उसके साथ क्या कर रहा था। यह माया थी। यह वही औरत थी जिससे मैं पिछले दस सालों से प्यार करता था। मैं फ़ोन पर मुस्कुराया।

'तो फिर आ जाओ। तुम्हें पता है कि मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा मेरे साथ रहो।' मैंने क्या किया है? मुझे आश्चर्य है।

मुझे याद आता है कि श्याम ने राधा से शादी के कुछ महीने बाद मुझसे क्या कहा था। 'मेरा हमेशा से मानना रहा है कि अगर आप किसी चीज को बहुत शिद्दत से चाहते हैं और लंबे समय तक इंतजार करते हैं, तो वह आपके पास जरूर आएगी। मुझे हमेशा से पता था कि राधा मेरी पत्नी बनेगी। मैं इंतजार करने के लिए तैयार था और ऐसा ही हुआ।' मुझे आश्चर्य हुआ कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है या एक अविश्वसनीय मूर्ख। फिर उत्सुकतावश मैंने पूछा, 'लेकिन क्या यह एक जैसा ही लगता है? क्या आपको नहीं लगता कि इंतजार करने से

सपने टूट जाते हैं?' 'तुम्हारा क्या मतलब है?' उसने मुझे दुखी नज़र से देखा। 'मुझे भी ऐसा ही लगता है

राधा के बारे में वैसा ही सोच रहा हूँ जैसा मैंने नौ साल पहले किया था।'

मैंने कहा, 'आप भाग्यशाली हैं कि आप अपने सपने को वैसे ही बनाए रख पाए हैं जैसा आपने देखा था, इतने सालों के इंतजार के बावजूद उसे पाने की चाहत रख पाए हैं।' मैं जानता हूं कि मेरे सपने उन तमाम और-और-मगरों

के कारण धुंधले पड़ गए हैं जिनके लिए मुझे जगह बनाने के लिए मजबूर किया गया है।

मुझे उम्मीद थी कि राधा और क्रिस लॉबी में होंगे। लेकिन वह खाली थी, इसलिए मैंने क्रिस के कॉटेज तक चलने का फैसला किया।

राधा आज शाम को जब घर में आई तो बहुत खूबसूरत लग रही थी। मैंने उसके मन में जो दृश्य देखा था, उसे देखकर मैंने कहा था, 'तुम्हें अक्सर ऐसे ही कपड़े पहनने चाहिए।' राधा ने मुंह बनाया। 'तुम्हें भी नहीं, अंकल। पुरुषों में क्या खराबी है? वे ऐसा क्यों करते हैं?

उन्हें रेशमी वस्त्र पहने महिला को देखना इतना अच्छा क्यों लगता है? मुझे वास्तव में समझ में नहीं आता।'

मैंने उसे मेरे बेडरूम में लगे आईने की ओर धकेला। मैंने कहा, 'अपने आप को देखो।' उसने अपनी साड़ी की तहों को ठीक किया।

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि पुरुषों को लगता है कि महिलाओं ने उन्हें खुश करने के लिए बहुत प्रयास किए हैं। यह तब पता चलता है, जब आप रेशम और आभूषण पहनते हैं और अपने बालों में फूल लगाते हैं। मुझे महिलाओं के बालों में फूल बहुत पसंद हैं।'

'एक बूढ़े आदमी के लिए आप बहुत रोमांटिक हैं,' राधा ने चिढ़ाते हुए कहा।

Machine Translated by Google

'मैं बूढ़ा नहीं हूँ,' मैंने कहा। 'मैं सिर्फ़ चौसठ साल का हूँ। यह बूढ़ा नहीं है।' मैंने खुद को आईने में देखा। मेरे सारे बाल और ज़्यादातर दाँत अभी भी थे। मेरे चेहरे पर कोई झुर्रियाँ नहीं थीं, सिवाय मेरी आँखों और मुँह के पास कुछ झुर्रियाँ। मेरा मांस ढीला नहीं था, न ही मेरी मांसपेशियाँ ढीली थीं। 'क्या मैं बूढ़ा दिखता हूँ, राधा?' मैंने पूछा।

'देखो, मैं जानता था। तुम घमंडी हो।' मैंने उसके गाल पर
चुटकी काटी। 'आज रात तुम बहुत खुश हो।' 'मैं खुश हूँ,' उसने कहा, जैसे कि यह बात
अभी-अभी उसके दिमाग में आई हो।
'अच्छा।' मैं बरामदे में वापस चला गया। 'यह मुझे अच्छा लगता है। अब सुनो, मैं एक कॉल का इंतज़ार कर रहा हूँ। तो क्यों न तुम क्रिस के साथ मेरा इंतज़ार करो?
उसे अपना वीडियो कैमरा लाने की याद दिलाओ। और मेरा एक काम करो। उसे कलामंडलम गोपालकृष्णन के बारे में थोड़ा बताओ, वह कौन है और उसका वेशम देखना क्यों मजेदार होगा।'

चाँद बादलों के पीछे चला गया है। मैं आसमान की ओर देखता हूँ। क्या बारिश होगी? ये दोनों कहाँ हैं? फिर मैं उन्हें देखता हूँ। राधा और क्रिस। एक दूसरे में लिपटे हुए, आत्मीयता की झलक में।

वह एक कुर्सी पर बैठा है और वह उसके पैरों के बीच खड़ी है, उसका सामना कर रही है। उसकी साड़ी का पल्लू उसके घुटनों पर पड़ा है और फर्श पर और उसके वाद्य यंत्र पर फैला हुआ है। वह अपना चेहरा उसके पेट में दबाता है, और उसके हाथ उसके नितंबों पर फैले हुए हैं, उसे अपने करीब खींच रहे हैं। वह अपना सिर पीछे की ओर झुकाती है और मैं उसके खुले हुए होंठ और उसके शरीर की कांपती हुई हरकतें देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि उसके हाथ उसके बालों को सहला रहे हैं

...

मेरी साँस गले में अटक जाती है। मैं वहीं खड़ा रहता हूँ, दूर जाने में असमर्थ हूँ या अपनी आँखें भी बंद नहीं कर सकता। मुझे पता है कि मुझे ऐसा करना चाहिए, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरे पैर पत्थर की तरह हैं। मैंने कभी किसी पुरुष और महिला को एक-दूसरे की ज़रूरतों में इतने डूबे हुए नहीं देखा।
तब मुझे पता चला कि मेरे पास है।

उत्तर स्वयंवरम में एक ऐसा दृश्य है जिसे कोई भी ज़्यादा महत्व नहीं देता। यह कथकली के कई अन्य दृश्यों की तरह ही एक प्रेम दृश्य है। लेकिन आज रात मुझे समझ में आया कि यह दृश्य वास्तव में किस बारे में है।

क्रूर कौरव राजकुमार दुर्योधन और उसकी पत्नी भानुमती एक सुंदर बगीचे में हैं। रात हो चुकी है। उस पल की खूबसूरती और उसकी पत्नी की खूबसूरती का मेल दुर्योधन में उससे प्यार करने की तीव्र इच्छा जगाता है। वह अपनी इच्छा की नग्नता दिखाते हुए उसकी ओर मुड़ता है। कल्याणी, वह उससे कहता है, उसके स्तनों की परिपूर्णता और पूर्णता को देखते हुए और अपनी आँखों से उसके शरीर के वक्रों को सहलाते हुए, मैं तुमसे प्यार करने के लिए इससे अधिक उत्तम स्थान या समय के बारे में नहीं सोच सकता।

भानुमती न तो शर्मीली है और न ही अपनी लालसा की तीव्रता को छिपाती है। वह उससे कहती है, मुझे इच्छा के तीर महसूस हो रहे हैं। हम यहाँ अकेले हैं। और मैं तुम्हारी हूँ।
क्या तुम नहीं देख सकते कि मैं तुम्हारे लिए कितना तरसता हूँ? मधुमक्खियाँ, वे कहते हैं, अमृत चूसती हैं

Machine Translated by Google

आधी-अधूरी कलियाँ भी; तुम इंतज़ार क्यों कर रहे हो, मेरे प्रियतम? क्या तुम नहीं देखते कि मैं तुम्हारे होंठों का रस पीने के लिए, तुम्हें अपने से सटाने के लिए कितना प्यासा हूँ? मुझे थाम लो... मुझसे प्यार करो।

इच्छा की पूर्णता। क्रिस और राधा। मैं उनकी अंतरंगता की तीव्रता से अभिभूत महसूस करता हूँ।

मैं एक पेड़ के नीचे एक छोटी सी बेंच पर चला जाता हूँ। मैं वहाँ बैठकर अपने विचारों को समेटने की कोशिश करता हूँ। तुम क्या कर रही हो, राधा? मैं चिंतित हूँ। क्या तुम्हें एहसास है कि तुम यहाँ क्या शुरू कर रही हो?

मैं वापस झोपड़ी की ओर चल देता हूँ। मैं खाँसता हूँ और अपने पैरों को घसीटता हूँ ताकि मैं अपने आने का संकेत दे सकूँ। वे मेरी उपस्थिति से अलग हो जाते हैं।

मैं बीच में नहीं आता। 'हमें जाना चाहिए।' वे एक-दूसरे की

ओर देखते हैं। क्या उसने हमें देखा, उनकी आँखें पूछती हैं।

मैं कार के आगे बैठ जाता हूँ ताकि वे पीछे एक साथ बैठ सकें। उनके बीच इतनी बिजली है कि पूरे शहर को रोशन किया जा सकता है।

मुझे नहीं पता कि वे इस प्रदर्शन से क्या समझेंगे। मेरा मन भी माया से भरा हुआ है।

मुझे ओपन एंडिंग पसंद नहीं है। उनके रिश्ते के बारे में कुछ भी स्पष्ट नहीं है। मुझे लगता है कि माया और मेरे रिश्ते के बारे में भी कुछ निश्चित नहीं है।

मुझे लगता है कि मेरे अंदर एक बड़ा डर पनप रहा है। इस प्यार का क्या होगा?

फिर मैं सोचता हूँ, मैं उन्हें एक और समय और एक और प्यार के बारे में बताऊंगा। मैं उन्हें सेठ और सादिया के बारे में बताऊंगा, और प्यार के नतीजों के बारे में बताऊंगा।

Machine Translated by Google

1938–1940 एक नज़र का वजन

मैं, सादिया, अच्छी लड़की, साहबक्काल की वंशज, अतुलनीय मलिक की वंशज, काहिरों के नेता की वंशज, मेरी रगों में शुद्धतम अरब रक्त है, मैं यहाँ एक नज़र के भार से गिरी हुई पड़ी हूँ।

यह कहाँ से आता है? यह दर्द, यह पीड़ा। मैं इसे अब महसूस कर रहा हूँ क्योंकि यह मुझे जकड़ने के लिए फिर से उठ रहा है। मेरी रीढ़ की हड्डी के पीछे से निकले हुए धातु के दो पंजे मेरे अंदरूनी अंगों को जकड़ रहे हैं, चीखने न देने के मेरे संकल्प को तोड़ रहे हैं, मेरे मांस को चीर रहे हैं, मेरी कूल्हे की हड्डियों को अलग कर रहे हैं। मैं अपने होठों को काटता हूँ क्योंकि दर्द मुझमें घुस जाता है।

मैं इस कमरे में बिलकुल अकेला हूँ जो कीटाणुनाशक की बदबू और बहते खून और चीखों के अंधेरे से भरा हुआ है। यह सब इन दीवारों में समा गया है, मुझे पता है। मैं इसे वैसे ही सूंघ सकता हूँ जैसे मैं अपने डर को सूंघ सकता हूँ। काश वे मेरे साथ होते - मेरी बहनें, उम्मा और ज़ुलेका। वे मेरे माथे को सहलातीं, मेरे चेहरे से पसीना पोंछतीं, मुझे पकड़ने के लिए एक हाथ देतीं और अपनी देखभाल से मेरे दर्द को दबा देतीं। मैंने कभी इतना अकेलापन महसूस नहीं किया जितना अब महसूस कर रहा हूँ।

मैं पिछले दो वर्षों की तरह ही अपना बकाया चुका रहा हूँ। मैं पिछले दो वर्षों की तरह अपना बकाया चुका रहा हूँ।
एक नज़र के वजन को मेरे पूर्वजों के वजन को नकारने देना।

ज़ुलेका ने वही किया जो उससे अपेक्षित था। उसने उम्मा को बताया कि उसने मुझे सड़क से आते हुए आम गली में पाया। उम्मा ने वही किया जो उससे अपेक्षित था। उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और अपनी उफनती छाती को पीटा। 'तुमने क्या किया है, सादिया? जब मैं तुम्हारे पिता को बताऊंगी, तो वे क्रोधित हो जाएंगे।' वह ज़ुलेका की ओर मुड़ी और उसकी बांह पर चुटकी काटी। 'और तुमने? उसे वहां और किसने देखा? सच बताओ, तुम आलसी गाय। तुम कहाँ थीं जब उसने परिवार की इज्जत को खतरे में डालने का फैसला किया?' ज़ुलेका ने अपनी बांह को रगड़ा जहां उम्मा ने उसे चुटकी काटी थी और रो पड़ी, 'कोई नहीं, कोई भी नहीं था। मैं उन सभी चीजों की कसम खाती हूं जो मुझे कीमती लगती हैं। किसी ने उसे नहीं देखा। कोई नहीं जानता था कि यह वह थी सिवाय मेरे।' तब मेरे आदरणीय वापा नजीब मसूद अहमद ने वही किया जो उनसे अपेक्षित था उन्होंने कहा, 'इससे मुझे आपसे ज़्यादा

दुख होगा।' 'लेकिन मैं अपने परिवार के सम्मान को खतरे में डालने के लिए आपको सज़ा दिए बिना नहीं छोड़ सकता।'

अपने दर्द के बीच मैंने देखा कि उसने रॉड उठाई और जले हुए मांस की रेखा के पास दूसरी बार उसे रखा। मैं चिल्लाई। उसने दूसरी तरफ देखा और कहा, 'तुम्हारी उम्र हो गई है, मैं जानता हूँ। तुम्हें नियम तोड़ने की ज़रूरत महसूस होती है। यह, मेरी सादिया, अच्छी लड़की, अभी भी है

Machine Translated by Google

तुम्हारे अंदर की बेचैनी। अगली बार जब तुम्हें अपनी लगाम तोड़ने की जरूरत महसूस हो, तो याद रखना कि कैसे तुम्हारा मांस पिघल गया था और कैसे मेरा दिल टूट गया था।' फिर आखिरी बार, मेरे

आदरणीय वापा ने अब इतनी गर्म नहीं रही छड़ को जले हुए मांस की दो सलाखों के साथ दबाया और अपनी सबसे ठंडी आवाज में कहा, 'यह तुम्हारे लिए उतना ही सबक है जितना कि मेरे लिए, कि लड़कियों को थोड़ी सी भी रस्सी देना मूर्खता है। कि महिलाओं में स्वतंत्रता की बारीकियों को समझना नहीं है। अब से, तुम्हारे बछड़े पर ये निशान तुम्हें अपनी जगह याद दिलाने में मदद करेंगे।' मैंने वही किया जो मुझसे अपेक्षित था। मैं दर्द से बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया, तो मैं रोया। मैं वापा की आंखों में पीड़ा और उसे चोट पहुंचाने के लिए

रोया। मैं अपने शरीर के लिए रोया जो उसके गुस्से से चिह्नित था और उसके बारे में, मलिक, क्योंकि यह नाम मैंने उसे दिया था, और कैसे उसने अपनी आँखों से मुझे दुलारा था।

उस रात जब मैं सो रहा था, वापा सीढ़ियाँ चढ़कर मेरे कमरे में आया। उसने अपनी प्यारी बुलबुल-तारा को गोद में उठा रखा था।

उसने दरवाज़ा और खिड़कियाँ खोल दीं। वापा बंद कमरे में रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता था। फिर वह मेरे बिस्तर के पैर में बैठ गया और संगीत वाद्ययंत्र के तारों को छेड़ना शुरू कर दिया। बुलबुल-तारा के कोमल स्वरों में एक लोरी की गूँज थी और वापा ने धीमे स्वर में गीत के शब्द गाए। मुझे शब्दों का अर्थ नहीं पता था, न ही वापा को। शायद पिता से बेटे को दिए जाने वाले कई वर्षों में शब्द भ्रष्ट हो गए थे। लेकिन धुन एक लोरी की थी और जब मैं छोटा बच्चा था और बीमार था, तो वापा मुझे सोने में मदद करने के लिए इसे गाते थे। जैसे-जैसे शब्द और संगीत मेरे चारों ओर घूमते रहे, मेरी आँखों में आँसू की बाढ़ आ गई।

वापा हमारे इस वंश को बहुत महत्व देते थे। वे केवल वही गीत गाते थे जो उनके पूर्वजों ने उन्हें विरासत में दिए थे। वापा मुझे अपने सभी अन्य बच्चों से अधिक प्यार करते थे, लेकिन वे अपने पूर्वजों से अधिक प्यार करते थे।

संगीत माफ़ी मांगने का उनका तरीका था। लेकिन वापा, मैं रोना चाहता था, यह
मैं ही हूँ जिसे आपसे क्षमा मांगनी चाहिए।

क्योंकि मैंने जो किया उसके लिए मुझे कोई खेद नहीं है।

वापा, संगीत बंद करो। वापा, चले जाओ। तुम्हारा संगीत मुझे सब कुछ याद दिलाता है।
जिसे आप चाहते हैं कि मैं भूल जाऊं.

जितना आप अपने पूर्वजों से प्यार करते हैं, उतना ही मैं भी करता हूँ। जब मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ, तो मैं देखता हूँ
मेरे पूर्वजों की कहानियाँ आकार ले रही हैं।

मैं जहाज़ को लहराते पालों के साथ देखता हूँ। मैं घोड़े को देखता हूँ। सफ़ेद घोड़ा गैंगप्लैंक से नीचे सरपट दौड़ता हुआ और हवा के विरुद्ध दौड़ता हुआ। मैं सवार को देखता हूँ...

Machine Translated by Google

और मैं वहीं रुक जाता हूँ। क्योंकि मैं उसे ही देखता हूँ। लेकिन मैं कहानी को जारी रखता हूँ और वह मुझे मेरी जेल की छत से ऊपर उठाता है और मुझे एक ऐसी दुनिया में ले जाता है जहाँ आकाश का कोई अंत नहीं है।

मेरी चोली कसी हुई लगती है। मेरे अंदर अजीब सी हलचल मच जाती है। मेरी साँस तेज़ हो जाती है। मुझे यह सब समझ में नहीं आता। वापा, तुम्हें मुझे दाग देना चाहिए था ताकि मैं फिर कभी सपने न देख सकूँ।

वापा, चले जाओ और अपना संगीत अपने साथ ले जाओ।

उन्होंने दरगाह से जुड़े कमरे में रात बिताई। डॉ. सैमुअल ने सेतु को दरगाह में उपलब्ध कराए गए बिस्तर को बिछाते हुए देखा।

'आप शायद सोच रहे होंगे कि यह उनका बहुत ही अशिष्ट व्यवहार है,' उन्होंने सेतु के चेहरे की विशेषताओं को समझने की कोशिश करते हुए कहा। 'लेकिन मैं आपको बता दूं, यह एक सम्मान की बात है।
वे शायद ही कभी अजनबियों को अंदर आने देते हैं, फिर भी हम दोनों जो उनके धर्म के नहीं हैं, रात को दरवाजे के अंदर ही बिता रहे हैं।' सेतु ने ऊपर देखा।

'हाँ, वास्तव में, वे पहले तो तुम्हें रहने देने के लिए बहुत अनिच्छुक थे। लेकिन जब मैंने समझाया कि तुम मेरे सहायक हो, तो वे मान गए। आप देखिए, उन्हें मेरी और मेरी चिकित्सा क्षमता की आवश्यकता है। वे यह जानते हैं, और वे यह भी जानते हैं कि अगर वे मुझे परेशान करेंगे, तो मैं यहाँ अपनी नियमित यात्राएँ नहीं कर पाऊँगा।' सेतु बिस्तर पर लेटा हुआ था और सो नहीं पा रहा था। वह आँखें बंद करके लेटा हुआ था, नींद का

बहाना कर रहा था, क्योंकि अन्यथा डॉक्टर चुप नहीं होते। और सेतु बस इतना करना चाहता था कि उस लड़की ने उसके अंदर जो अद्भुत अनुभूति पैदा की थी, उसे महसूस कर सके।

बार-बार उसके मन में उस चेहरे की खूबसूरती उभरी। उसने कभी ऐसा चेहरा नहीं देखा था जो जीवन से इतना अछूता हो। उसकी आँखों में नंगी उम्मीद। हवा में अपना चेहरा ऊपर उठाते हुए उसके गले की पतली रेखाएँ। उसके होठों का हल्का सा खुलना मानो उस पल के आश्चर्य को अपनी ओर खींचना हो। और जब उसकी जीभ उसके होठों के मोड़ पर आकर चाटती थी, तो उसे वह होंठ बनने की इच्छा होती थी, उस प्राचीन प्राणी को अपनी ओर खींचने और उसे जीवन भर के लिए अपना बनाने की।

'इस छोटी सी बस्ती में सबसे बड़ा स्वास्थ्य खतरा पोलियो है,' डॉक्टर ने अपने बैग की जांच करते हुए कहा।

सेतु ने डॉक्टर को दवा की शीशियाँ गिनते हुए देखा। सेतु ने बैग पैक किया था जैसा कि होप ने उसे सिखाया था। लेकिन डॉक्टर तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक वह खुद यह न देख ले कि सब कुछ वैसा ही है जैसा होना चाहिए। सेतु ने अपनी चिड़चिड़ाहट को रोकने की कोशिश की। यह कहने का कोई मतलब नहीं था कि सब कुछ वहीं है। धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा कि डॉक्टर और उसके बीच छोटी-छोटी झड़पें हो रही हैं। डॉक्टर की इच्छा प्रबल थी क्योंकि सेतु जानता था कि डॉक्टर को उसकी ज़रूरत से ज़्यादा उसे डॉक्टर की ज़रूरत है। सेतु ने कड़वाहट से सोचा, यही तो सबसे बड़ी गलती थी।

Machine Translated by Google

डॉक्टर की ताकत.

'ये सभी हज़ारों बार एक ही नस्ल के होते हैं। नमी की तो बात ही छोड़िए - आप खुद ही देख सकते हैं। उनके घरों में ताज़ी हवा की कमी उन्हें बीमारी के लिए प्रजनन स्थल बनाती है। और सोचिए कि समुद्र तट उनकी दहलीज़ के ठीक बाहर है। मैं उन्हें हर रोज़ महिलाओं को टहलने के लिए जाने देने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा हूँ, और वे मुझे खुश करने के लिए हाँ भी कर देती हैं, लेकिन मुझे पता है कि इसकी अनुमति नहीं दी जाएगी,' डॉक्टर ने चलते हुए कहा।

वह सेतु की ओर मुड़ा और बोला, 'कृपया याद रखें कि आपको बाहरी कमरे में प्रतीक्षा करनी होगी। और किसी भी समय आपको किसी भी महिला से आँख नहीं मिलानी चाहिए, भले ही वह आपकी परदादी जितनी उम्र की क्यों न हो।'

सेतु ने सिर हिलाया। वह बस यही सोच रहा था कि क्या वह उसे फिर से देख पाएगा?

जिस पहले घर में वे गए, वहां सेतु बाहरी कमरे में बैठा था, जो अंदर से लकड़ी की छत और संकरी खिड़कियों की कठोरता से खामोश था।

सीमित स्थान का भार उस पर दबा हुआ था। कुछ मिनट बाद डॉक्टर बाहर आया। 'यहाँ कुछ भी जटिल नहीं है। मेरे पास साइटिका से पीड़ित एक बुजुर्ग मरीज है। लेकिन हमें अब पाशा के पास जाना चाहिए। उनके बेटे को बुखार है, उन्होंने मुझे बताया। मुझे उम्मीद है कि यह पोलियो का फिर से उभरना नहीं है। अगर ऐसा है, तो भगवान हमारी मदद करें। और वह करेगा। मुझे इस बात का यकीन है। "यह ईश्वर है जो मुझे शक्ति से बाँधता है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है। वह मेरे पैरों को हिरणों के पैरों जैसा बनाता है, और मुझे मेरे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है।

वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है, ताकि मेरी भुजाओं से इस्पात का धनुष टूट जाए।'' डॉक्टर सेतु के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। 'भजन,' उसने उकसाया।

लेकिन सेतु सुन नहीं रहा था। वह बस आगे बढ़ना चाहता था। वह यहीं कहीं थी, यह उसे पता था। 'क्या हम इस तरफ़ चलें?' उसने आम गली की ओर बढ़ते हुए पूछा।

'नहीं, नहीं,' डॉक्टर ने कहा, यह छिपाने की कोशिश करते हुए कि वह कितना परेशान था। सेठ को क्या हो गया है, वह हैरान था। 'हम इस तरफ़ से जाते हैं,' उसने कहा, और एक संकरी गली में कदम रखा।

'यह महिलाओं का रास्ता है। केवल महिलाएं ही इस रास्ते पर चलती हैं। एक डॉक्टर के रूप में, मैं एक अलैंगिक प्राणी बन गया हूँ। अभी के लिए, तुम भी एक हो,' डॉक्टर ने कहा, सेतु को जो भूलभुलैया लग रही थी, उसमें से अपना रास्ता बनाते हुए।

हालाँकि डॉक्टर ने मना किया था कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, फिर भी सेतु ने हर महिला का चेहरा चुपके से देखा। क्या वह वही थी? क्या वह लड़की थी?

'हमें हाजी के घर पर भोजन करना है। वह अपनी मां और सबसे छोटी बेटी के साथ रहता है। लेकिन उससे पहले हमें रजिया के घर जाना होगा। वह उसकी दूसरी बेटी है और आठ महीने की गर्भवती है। उसे पहले दो बार गर्भपात हो चुका है और मुझे नहीं लगता कि इस बार भी गर्भपात हो रहा है,' डॉक्टर ने शाम को करीब छह बजे कहा।

सेतु ने अपना माथा पोंछा। दिन बहुत लम्बा और थकाने वाला था, क्योंकि उसे नींद नहीं आ रही थी।

Machine Translated by Google

कुछ भी करने को नहीं था। उसने बस इंतज़ार किया था। वह पहले से कहीं ज़्यादा फँसा हुआ महसूस कर रहा था। एक अजीब सी थकान उसके अंदर समा गई, और एक गहरा अकेलापन। अगर वह मौजूद थी, तो वह कहाँ थी? क्या वह कोई ऐसी थी जिसे उसने अपनी ज़रूरत के हिसाब से बनाया था कि कोई उसे छुए और पकड़े? कोई ऐसा जिसके गाल पर वह अपना गाल रखे और अपना सिर टिकाए?

मेरे पैर में ऐसा लग रहा था जैसे उसमें आग लगी हो। मेरा पेटीकोट छालों से टकरा रहा था और हर हरकत में दर्द हो रहा था। क्या यही वो नरक था जिसके बारे में वापा ने बात की थी?

रसोई में बहुत चहल-पहल थी। ज़ुलेका मटन और चिकन पका रही थी। चावल और इडियप्पम और चावल के आटे से बनी रोटियाँ भी बननी थीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि कौन आ रहा है।

ज़ुलेका और उम्मामा मेरे पास से गुज़रते हुए मेरी तरफ़ देखते रहे, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। उनकी खामोशी ने मुझे मेरे ज़ख्मों की कड़वाहट से ज़्यादा तकलीफ़ पहुँचाई।

मैंने ज़ुलेका द्वारा लाई गई प्लेट को दूर धकेल दिया। 'आओ सादिया, प्यारी, प्यारी,' उसने खुश होकर कहा। 'कुछ खाओ। तुमने कल रात से कुछ नहीं खाया।' उसने अपनी आँखें मेरी ओर से हटा लीं। 'तुम किससे नाराज़ हो? मुझसे?' 'मुझसे बात करो,' मैंने कहा। 'फिर मैं खाऊँगा।' उसने आह भरी। 'लेकिन मैं तुमसे बात कर रहा हूँ।' 'नहीं, जैसा तुम हमेशा करते हो,' मैंने कहा।

'तुम्हारा क्या मतलब है, सामान्य रूप से? इस लड़की की बात सुनो, बीबी,' उसने कहा। 'वह कहती है कि हम बात नहीं कर रहे हैं ... यही तो कहती है वह।' यह उम्मा के लिए
चुप्पी तोड़ने का संकेत था। वह मेरी ओर आई। 'कैसे
क्या हम तुमसे बात नहीं कर सकते, प्यारे बच्चे?' 'क्या तुम मुझसे
नाराज़ हो?' मैंने पूछा।

जवाब में उसने मुझे अपनी बाहों में भर लिया। उसकी बाहों की गर्माहट और खाना पकाने की खुशबू, उसके प्यार के घेरे में शामिल होने की मेरी राहत, ने मुझे कमज़ोर महसूस कराया। मैं उसकी बाहों में निढाल हो गया।

उन्होंने मेरे चेहरे पर पानी छिड़का। ज़ुलेका ने कहा, 'वह भूख के कारण बेहोश हो गई है।'

'बेचारी चीज़,' उम्मामा बुदबुदाई।

'मेरा पैर,' मैंने फुसफुसाते हुए कहा। 'इसमें आग लग गई है।'

ज़ुलेका ने मेरा पेटीकोट ऊपर उठाया। उसने अपनी साँस अंदर खींची। 'मुझे यह पसंद नहीं है। अगर यह संक्रमित हो गया तो क्या होगा? काश मैंने तुमसे कुछ न कहा होता।' उम्मा ने मेरे पैर को देखा। उसकी आँखों में अपराधबोध था। 'मुझे माफ़
कर दो, मेरे बच्चे,' वह रो पड़ी। 'मुझे नहीं पता कि नजीब को क्या हो गया।' मैंने कुछ नहीं कहा।

Machine Translated by Google

ज़ुलीका ने आंसू पोंछे और कहा, 'बीबी, डॉक्टर को देखने दो। वह जल्दी ही यहाँ आ जाएगा। वह पहले रजिया को देखने गया है।' उम्मा ने सिर हिलाया। 'मैं नजीब से कहूँगी कि डॉक्टर को उसे देखना है।' उम्मा

ने मुझे नहीं बताया कि उसने वापा से क्या कहा, लेकिन रात के खाने से ठीक पहले, जब

डॉक्टर के आने पर वह उसे अंदर ले गई।

उसने कहा, 'डॉक्टर को अपना पैर दिखाओ।'

डॉक्टर सैम्युअल ने मेरे छालों को देखा और कहा, 'कृपया मेरे सहायक को यहाँ बुलाएँ।'

ज़ुलेका और उम्मा ने एक दूसरे की ओर देखा। उन्होंने पूछा, 'क्या हम वह नहीं कर सकते जो ज़रूरी है?'

'अगर आप कर सकते, तो क्या मैं उसे बुलाता? कृपया उसे ले आओ। यह महत्वपूर्ण है। वह दूसरे दर्जे की जलन से पीड़ित है,' डॉक्टर ने झल्लाकर कहा।

उन्होंने तुम्हें अंदर ले जाया। तुम्हारी एक झलक ने मेरे अंदर हज़ारों इच्छाएँ जगा दी थीं और शालीनता के सारे विचार चूस लिए थे। वे तुम्हें चुपचाप अंदर ले गए और डॉक्टर ने कहा, 'सेठ, मुझे तुम्हारे लिए एक स्टेराइल पैड ड्रेसिंग तैयार करने की ज़रूरत है।'

तुमने डॉक्टर के बैग से अपनी आँखें नहीं उठाईं। उसने तुम्हें अच्छी तरह से पढ़ाया है

मैंने सोचा, "हमारे तरीके अलग हैं। अचानक डॉक्टर ने पूछा, 'यह कैसे हुआ?'

वापा, जो उस समय ही अंदर आ गया था, ने जल्दी से कहा, 'मुझे लगता है कि वह लकड़ी की आग के बहुत करीब चली गई और एक जलती हुई टहनी उसके ऊपर गिर गई।' डॉक्टर ने वापा को घूरते हुए कहा, 'अगर तुम जोर देते हो। हालांकि

मुझे तुम्हें बताना चाहिए कि यह पहली बार है जब मैंने एक टहनी को तीन आसन्न सलाखों में इतनी समान रूप से गिरते देखा है।' वापा ने कुछ नहीं कहा। और मैंने अपनी निराशा को निगल लिया। डॉक्टर को पता था कि मुझे सजा दी गई है, लेकिन उसने भी आगे जांच करने की हिम्मत नहीं की। बिना

कहे, मैंने तुम्हारी ओर एक नज़र डाली। तुम मेरी ओर देख रहे थे। फिर से वही नज़र।

दया। दुख। सहानुभूति। गुस्सा। मैंने तुम्हारी नज़र में यह सब देखा। और कुछ और भी।

मुझे एक अपरिहार्यता का एहसास था। तुम्हारी नज़र का वज़न ऐसा था।

डॉक्टर ने सेतु से पैड लिया। उसने अपना गला साफ किया और अंग्रेजी में बोला। बाद में तुमने मुझे बताया कि डॉक्टर ने क्या कहा। 'मुझे आश्चर्य है कि लड़की ने क्या किया।

उसने ऐसा क्या किया होगा जिसके लिए उसे इतनी क्रूर सजा देनी पड़ी?'

सेतु को लगा कि उसकी आँखों में क्रोध के बादल छा गए हैं। उसने बूढ़ी औरतों और बूढ़े आदमी की तरफ देखा और दबी हुई आवाज़ में कहा, 'मुझे लगता है कि वह अकेले ही टहलने गई थी। कल शाम को मैंने उसे सड़क पर कुछ देर के लिए देखा था।

वह वहां खड़ी थी और किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा रही थी। बस खड़ी होकर देख रही थी।'

'तुम्हें कैसे पता कि यह वही थी?' डॉक्टर ने फुसफुसाते हुए छाले वाले स्थान पर बहुत धीरे से मरहम लगाया।

Machine Translated by Google

'मैंने उसका चेहरा देखा,' सेतु ने बहुत धीरे से कहा।

डॉक्टर चुप हो गया। फिर उसने कहा, 'अरे, वह बहुत बहादुर है। अगर उन्हें पता होता कि उसने अपना चेहरा दिखाया है, तो वे उसका चेहरा भी दाग देते। और तुम, अगली बार जब तुम गली में या सड़क पर किसी औरत को देखो, तो भगवान के लिए, अपना चेहरा दीवार की तरफ़ करना याद रखना।' सेतु ने अपनी आँखें उठाईं और उन्हें लड़की की ओर सरका दिया। उन्होंने बात की थी

अंग्रेजी में कुछ नहीं कहा, लेकिन उसके चेहरे पर ऐसा भाव था कि मानो वह सब कुछ समझ गई हो।

सेतु, जो अपने जीवन में बहुत कम जोखिम लेता था, ने उसकी आँखों में देखा और तमिल में कहा, 'क्या तुम मुझे चाँद की सुंदरता को देखने के लिए अपनी आँखें बंद करने के लिए कह रही हो? मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?' डॉक्टर ने नाक भौं सिकोड़ी।

लेकिन जैसा कि सभी लोग जो जोखिम उठाते हैं, पाते हैं कि मूर्खता का भी प्रतिफल मिलता है। सेतु को उसके गालों पर एक हल्की सी मुस्कान, एक छुपी हुई मुस्कान और उसकी पलकें झुकने के साथ पुरस्कृत किया गया। यह सिर्फ़ उनके साझा धोखे से कहीं ज़्यादा की स्वीकृति थी।

और सेतु को लगा कि उसकी इंद्रियाँ तेज हो गई हैं।

डॉ. सैमुअल को कामदेव के अवतार के रूप में कौन सोच सकता था? प्रेम के देवता, जिनके धनुष में गन्ने का बना धनुष, धनुष की डोरी पर मधुमक्खियों की कतार और सुगंधित फूलों से बने तीर हैं।

सिवाय इसके कि तोते की जगह डॉ. सैमुअल साइकिल चलाते थे और उनकी अनुचर के रूप में होप, फेथ और चैरिटी नामक अप्सराएं होती थीं।

लेकिन कहा जाता है कि कामदेव छिपने के लिए सबसे अजीब जगह चुनते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह जो करने की ठान लेता है, उसे कैसे करता है, जब तक वह पूरा हो जाता है। और यही डॉ. सैमुअल के साथ हुआ। क्योंकि केवल कामदेव ही डॉ. सैमुअल को यह कहने पर मजबूर कर सकते थे, 'रजिया के बच्चे का जन्म अस्पताल में ही होना चाहिए। मेरा सुझाव है कि आप उसे जल्द से जल्द नाज़रेथ भेज दें। कोई घर किराए पर ले लें या कुछ और। दरअसल, मैंने सुना है कि अस्पताल के पास एक घर खाली है। अगर वह घर पर ही बच्चे को जन्म देती है, तो मैं उसकी या उसके बच्चे की ज़िंदगी के लिए ज़िम्मेदार नहीं हो सकता।'

डॉ. सैमुअल ने बाद में कहा, 'मुझे उसके पैर को देखना होगा। इसलिए उसे भी आना चाहिए।' हाजी इस सुझाव से खुश नहीं दिखे। लेकिन पश्चाताप ने

अनुचित व्यवहार के बारे में उनकी चिंता को दबा दिया। उन्होंने गंभीरता से सिर हिलाया। 'मैं इसकी व्यवस्था करूंगा। शायद उनकी चाची या उनकी दादी उनके साथ जा सकती हैं, और मैं अपने बेटे सुलेमान को भी भेजूंगा।' डॉक्टर ने भोजन के लिए तैयारी में अपने हाथ धोए। उन्होंने सेतु को भी ऐसा ही करने का इशारा किया। सेतु ने दूर की निगाह से देखा।

अगर उसने सादिया को देखा होता, तो वह

Machine Translated by Google

उसके चेहरे पर भी यही भाव देखने को मिलते। ऐसा लग रहा था जैसे सेतु और सादिया दोनों जानते थे कि जो होने वाला है, वह पहले से तय है।

मैं, सादिया, अच्छी लड़की, जिसकी रगों में अरबों का सबसे शुद्ध खून है, मेरे वापा और एक नज़र से दागदार, जागती रही। मुझे नहीं पता था कि ऐसा क्या था जो मेरे शरीर को इतना परेशान कर रहा था। क्या यह वापा के गुस्से की छाप थी? या यह तुम्हारी जलती हुई नज़र थी?
या फिर यह विचार था कि एक या दो दिन में मुझे अरबपटनम के द्वार के बाहर की दुनिया की झलक देखने को मिलेगी?

मैं अभी सोलह साल की भी नहीं हुई थी। मैं कैसे जान सकती थी कि देह की पुकार की कीमत होती है? मैं कैसे जान सकती थी कि मैं क्या कर रही हूँ? घोड़ागाड़ी में हम सात लोग थे। सुलेमान और ड्राइवर आगे थे, और ज़ुलेइका, उम्मा, नादिरा, रज़िया और मैं पीछे। वापा चाहता था कि उसकी औरतें साथ रहें, ज़ुलेइका ने मज़ाक में कहा। लेकिन रज़िया ही थी जो अपने परिवार के साथ रहने के लिए ज़ोर लगा रही थी। 'मैं चाहती हूँ कि तुम सब मेरे आस-पास रहो। अगर मैं मर गई तो क्या होगा? क्या तुम चाहते हो कि मैं अकेली चली जाऊँ, जैसे कि मैं अनाथ हूँ?' जब वापा ने कहा, 'लेकिन तुम सब को नाज़रेथ जाने की क्या ज़रूरत है?' तो वह रो पड़ी।

ज़ुलेका ने कहा कि जब रज़िया बच्ची थी, तब भी वह सबसे ज़्यादा रोती थी। ऐसा लगता था कि जब वह सिर्फ़ कुछ सेकंड की थी, तब किसी फ़रिश्त ने उसके कानों में फुसफुसाया था, 'ज़ोर से रोओ, छोटी सी। मैं तुम्हारा अभिभावक देवदूत हूँ और मैं तुम्हें यह रहस्य बता रहा हूँ जो तुम्हारे जीवन में मदद करेगा। ज़ोर से और ज़ोर से रोओ। केवल बच्चे जो चिल्लाते हैं और अपना विरोध जताते हैं, उन्हें ही भोजन मिलता है, इसलिए रोओ, रोओ, जब चाहो तब रोओ।' इसलिए रज़िया रो पड़ी और वापा जो इस बात से चिंतित थी कि यह सब रोना-धोना जल्दी ही खत्म हो जाएगा।

बच्चे का आगमन गलत तरीके से हुआ, इस पर तुरंत सहमति दे दी गई।

सीमित जगह में शायद ही कोई रोशनी या हवा थी। मुझे बेहोशी सी महसूस हुई। ड्राइवर की तरफ़ एक मोटा कपड़ा था जो हमें उससे बचा रहा था और दूर की तरफ़ एक और मोटी चादर थी जो हमें दुनिया से छिपा रही थी। वहाँ झाँकने के लिए छेद थे, लेकिन कुछ मिनटों तक उनमें से झाँकने की कोशिश करने के बाद, मैं गाड़ी के किनारे पर झुक गया और सोचा कि अगर गाड़ी हिलती नहीं होती, तो मैं शायद घर पर ही होता। मुझे नादिरा के टैल्कम पाउडर, रज़िया के अत्तर, उम्मा की मोथबॉल की गंध, ज़ुलैका के पसीने और घोड़ा गाड़ी की सीलन की गंध आ रही थी। मैंने अपने पेट में मचलने की इच्छा की। मैंने सोचा कि कब तक और आराम मिलेगा।

फिर हम उस घर के बाहर थे जिसे वापा ने किराए पर लिया था। सुलेमान गाड़ी से कूद गया और ऊंची दीवार में गेट खोल दिया। मैं उसके पीछे-पीछे चला गया, अपने आस-पास जो कुछ भी मैंने देखा, उसे देखता रहा। मैं कैसे देखता रहा। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि ऐसे घर भी होते हैं। एक घर जो अपने आप में खड़ा था। एक घर जो ज़मीन से घिरा हुआ था

Machine Translated by Google

चारों तरफ़ से और गेट से सामने के दरवाज़े तक एक छोटा सा रास्ता था। एक घर जिसमें खिड़कियाँ खोली जा सकती थीं और छत पर एक छोटी सी छत थी जिसकी दीवार कमर से थोड़ी ऊँची थी। घर के ऊपर आसमान की कोई सीमा नहीं थी। मुझे लगा कि मेरा दिल खिल रहा है। मैं अपनी बाहें फैलाकर दुनिया को अपने पास समेटना चाहता था।

सुलेमान ने पड़ोसी के घर की ओर देखा और कहा, 'यह ठीक बगल में है
डॉक्टर के घर पर। इसलिए हमें किसी की नजरों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी।'

मैं पत्थर की सीढ़ी पर बैठ गया। क्या मैं तब तुम्हें देख पाऊंगा? नियति मेरे जीवन का मार्ग तय कर रही थी और मैं उसका अनुसरण करने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था।

लेकिन जल्द ही भाग्य या उसके आदेशों के बारे में सोचने का समय नहीं बचा, क्योंकि रजिया कराहने लगी और मांग करने लगी कि उसे लेटने की इजाजत दी जाए।

ज़ुलेका रसोई में आग जलाने और रज़िया और उसके अजन्मे बच्चे को होश में लाने के लिए शोरबा पकाने के लिए दौड़ी। उम्माह रज़िया के बगल में जल्दी से बिछाए गए बिस्तर पर लेटी हुई थी, अपनी पीठ में दर्द की शिकायत कर रही थी। नादिरा और मैं चुपचाप साथ काम करते रहे। नादिरा कम बोलती थी। उसे अपने घर से घसीटे जाने पर खुशी नहीं थी। वह अपने पति से दूर रहना पसंद नहीं करती थी, रज़िया के विपरीत जो अपने घर से ज़्यादा वापा के घर में रहती थी।

जब हमने सामान खोला, रजिया को नहाने में मदद की और खाना खाया, तो सुलेमान
उन्होंने कहा कि वे टहलने जा रहे हैं। उन्होंने कहा, 'मुझे समुद्र की आवाज़ की याद आती है।'

मैंने अपने होंठ काटे ताकि खुद को यह कहने से रोक सकूं, 'आप कितनी आसानी से बात करते हैं कि आप मुझे खो चुके हैं।
समुद्र। हालाँकि हम इसके इतने करीब रहते हैं, फिर भी हमें इसे कभी देखने का मौका नहीं मिलता।'

अरबिपटनम के सभी पुरुष हर रोज़ समुद्र तट पर जाते थे, जैसे वे मस्जिद जाते थे। यह उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। हमें साल में शायद एक बार बाहर जाने की अनुमति दी जाती थी। अन्य समय में, हमें समुद्र के अस्तित्व का पता तभी चलता था जब दोपहर के समय हवा चलती थी, जो हमारे घरों में नमक की गंध और गर्मी के दिनों में खारेपन की गंध लाती थी, जो कुछ हद तक मछली, कुछ हद तक सड़न और कुछ हद तक रहस्य थी।

मैं खिड़की पर खड़ा था और देखा कि सुलेमान ने ऊंची दीवार में से दरवाजा बंद कर लिया। मैंने उसे गेट बंद करते हुए सुना। चाबी जेब में होने के कारण उसे भरोसा था कि उसकी महिलाएँ सुरक्षित हैं। मेरी बहनें धीमी आवाज़ में बात कर रही थीं। मैंने उम्मा की ओर मुड़कर पूछा, 'क्या मैं छत पर जा सकता हूँ?'

उम्मा ने चिंतित भाव से मेरी ओर देखा। 'सादिया, बच्ची, वापा...' 'ओह, उसे जाने दो,' नादिरा ने कहा। 'वहां उसे कौन देखेगा? आगे कोई नहीं है

दरवाज़ा बंद करो, लेकिन डॉक्टर साहब। इसमें क्या बुराई है?' ...

सीढ़ियाँ घर के बाहर एक साइड की दीवार तक जाती थीं। मैं धीरे-धीरे ऊपर गया। रात का आसमान जहाँ तक मेरी आँखें देख सकती थीं, मेरा मन कल्पना कर सकता था, फैला हुआ था। एक रात

Machine Translated by Google

आसमान में लाखों तारे बिखरे हुए थे। हवा चल रही थी। यह समुद्री हवा नहीं थी, जिसे मैं जानता था, तेज़ और नमक से भरी हुई। यह डॉक्टर के बगीचे से चमेली की खुशबू से भरी एक हल्की हवा थी। मैं उस तरफ मुड़ा जहाँ डॉक्टर का घर था।

अंधेरे में, मैंने एक चमकती हुई नोक देखी। यह हर कुछ सेकंड में एक चाप में घूम रही थी। मुझे लगा कि मेरा दिल धड़क रहा है। फिर मैं मुस्कुराया। यह कोई शैतान नहीं था जो वापा की कहानियों की तरह बुराई करने निकला था। यह कोई धूम्रपान करने वाला व्यक्ति था।

जब धूम्रपान करने वाला सिगरेट चूसता था तो लाल सिरा चमक उठता था। फिर धीरे-धीरे लाल सिरा दीवार के करीब आ जाता था।

'क्या यह आप हैं?' आपकी आवाज़ ने पूछा।

मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा दिल जल रहा है।

मैंने खुद को तुम्हारे चेहरे की बनावट, तुम्हारे शरीर की लंबाई, तुम्हारी ढीली-ढाली चाल और तुम्हारी मुस्कान की धीमी चमक से तृप्त किया। दिन में मैंने तुम्हारी रेखा और रूप को और यहाँ तक कि सुबह की धूप में तुम्हारी परछाई की धुंधली रूपरेखा को भी निगल लिया। और रात में, जब मेरे पास तुम्हारी आवाज़ ही थी जो निषिद्ध भावनाओं के कुंडल में मेरे चारों ओर और ऊपर रेंगती थी, मैंने अपने दिन के लूटपाट की यादों को तुम्हें देखने की भूख को तृप्त करने दिया।

हर सुबह हम, रजिया, नादिरा, सुलेमान और मैं, अस्पताल जाते थे।
हर दिन जाने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन डॉक्टर ने कहा कि टहलना उसके लिए अच्छा है। मैंने ज़ोर दिया, क्योंकि तुम वहाँ थे। 'नहीं, रजिया,' मैं झल्लाती। 'डॉक्टर ने कहा कि अगर तुम नहीं चलोगी, तो बच्चा आसानी से बाहर नहीं आएगा और फिर उन्हें तुम्हें चीरना पड़ सकता है।' रजिया को ध्यान पसंद था; उसका लालची छोटा मन और अधिक की माँग कर रहा था। हालाँकि,

वह भी सर्जरी के दर्द को सहन करने के लिए तैयार नहीं थी, भले ही इससे उसे बहुत ध्यान मिल रहा हो। इसलिए वह मान गई और हम अस्पताल गए, हममें से हर एक ने अपने-अपने जीवन का बोझ उठाया: रजिया उसका बच्चा; नादिरा उसका आक्रोश और बहन का कर्तव्य; सुलेमान समय बर्बाद करने की अपनी झुंझलाहट; और मैं, केवल मैं ही अपना बोझ आसानी से उठा रही थी। मैं इस महान आशा, इस उम्मीद की भावना, इस ज्ञान को कि तुम मेरा इंतज़ार कर रही हो, बोझ कैसे कह सकती हूँ? यह खुशी थी; यह वापा की कहानियों से मुझे मिलने वाली उम्मीद से भी ज़्यादा थी।

फिर मैं वापा और इस भावना के बारे में सोचता, यह महान खुशी एक भार की तरह लगती जो मुझे चेतावनी देती: सादिया, अच्छी लड़कियों को ऐसी कोई भावना नहीं होती। और मैं निराश होने लगता। लेकिन फिर मैं तुम्हें देखता। मेरे अतुलनीय मलिक। मेरे साहब। तुम्हारे होंठ एक धीमी मुस्कान में खुलते जो सिर्फ़ मेरे लिए थी, और तुम सुलेमान का अभिवादन करने के लिए आगे बढ़ती और उसका हाथ थाम लेती। और यह मैं ही था जिसने अपनी त्वचा पर तुम्हारी त्वचा का स्पर्श महसूस किया। तुम कहती, 'मैं सोच रहा था

Machine Translated by Google

जहाँ तुम थे ...'

अपने घूंघट के पीछे, मैं चमकती रहती थी। उस पहली सुबह, जब कोई नहीं देख रहा था, मैंने एक रूमाल गिरा दिया जिसे मैंने पिछली रात कढ़ाई करके रात भर अपने गाल पर रखा था और फिर सोते समय। तुमने उसे उठाया और अपनी जेब में रख लिया। बाद में, तुमने कहा कि तुमने पूरे दिन उसे बाहर निकाला और मेरी खुशबू को गहराई से महसूस किया। और तुम उसे अपने गाल पर रखकर सोई थी।

अगले दिन तुमने उसे उठाया और कहा, 'तुममें से किसी ने इसे यहाँ गिरा दिया। मैंने इसे इसलिए रखा ताकि मैं तुम्हें दे सकूँ।' मैं किसी और के आगे बढ़ने से पहले ही आगे बढ़ गया

और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। 'यह मेरा है।' तुमने इसे मुझे दे दिया और भले ही हमारी उंगलियाँ एक-दूसरे को छू भी नहीं पाईं, लेकिन मैंने महसूस

किया कि तुम्हारी उंगलियाँ मेरी आत्मा का अनुसरण कर रही हैं।

उस रात तुम्हारी आवाज़ ने कहा, 'मैं तुम्हारी खुशबू जानता हूँ।' मैंने फुसफुसाते हुए कहा,

'और मैं तुम्हारी खुशबू जानता हूँ।' उस छोटे से

चौकोर रूमाल पर, जिसके किनारे स्कैलप्ड थे, हमारी खुशबूएँ आपस में मिल गई थीं और जब मैंने उसे अपने चेहरे पर रखा, तो मुझे एक बड़ी तड़प महसूस हुई। क्योंकि तुम मेरे पति थे और मैं तुम्हारी पत्नी और यह सफ़ेद कपड़े का टुकड़ा हमारा विवाह-बिस्तर था।

तुमने कहा था, 'मैं तुम्हारे बारे में सोचते हुए सारी रात सो नहीं सका।'

मैंने कहा, 'मैं सारी रात तुम्हारे बारे में सोचते हुए सो नहीं सका।'

आपने पूछा, 'हम क्या करने जा रहे हैं?'

मैंने पूछा, 'हम क्या करने जा रहे हैं?' वैसे मैं और क्या कह सकता था?

आपने कहा, 'मैंने कभी किसी के बारे में ऐसा महसूस नहीं किया।'

मैंने कहा, 'मैंने कभी किसी व्यक्ति या चीज़ के बारे में ऐसा महसूस नहीं किया।'

'तुम तोते हो या क्या?' तुम्हारी आवाज़ में शिकायत थी।

मैं अंधेरे को देखता रहा जब तक मुझे वापा की कहानी की एक नायिका याद नहीं आ गई। मैंने उसके शब्द कहे। 'मैं तुम्हारी आत्मा का दर्पण हूँ,' मैंने कहा। 'मैं वह सब देखता हूँ जो तुम देखते हो।

मैं आपके विचार सोचता हूँ। मैं भी वैसा ही महसूस करता हूँ जैसा आप करते हैं। मैं आप ही हूँ।'

'अगर यह प्यार नहीं है, तो क्या है?' आपने कहा।

मैंने सहमति जताते हुए कहा, 'अगर यह प्यार नहीं है तो और क्या है?'

मैं कैसे निश्चित हो सकता था? मुझे प्यार और जीवन के बारे में कुछ भी नहीं पता था। और फिर भी, मुझे पता था। ऐसा कोई प्यार नहीं हो सकता। आपके और मेरे अलावा कोई और कैसे जान सकता है कि प्यार क्या होता है?

हमने प्यार बनाया। हमने इसे जन्म दिया। हमने इसे खिलाया और इसका पालन-पोषण किया। यह हमारा प्यार था।
और किसी और का नहीं.

'मुझे अब जाना होगा, मेरे प्रिय,' तुमने कहा। छाया से एक आवाज।

जब तुम चले गए, मैं छत पर अकेला खड़ा था,
इस भव्य प्रेम पर आश्चर्य.

Machine Translated by Google

छह दिनों तक हमने अपने प्यार को शब्दों और हज़ारों आहों के साथ हवा दी। छह रातों तक, तुम और मैंने अपनी आत्माएँ खोलकर रखीं। छह दिनों तक तुम्हारी मेरी ज़रूरत ने मेरे अंदर एक ज़रूरत जगा दी। सातवीं रात को, जब मैं इसे और सहन नहीं कर सका, मैंने कहा, 'क्या तुम यहाँ आओगे?' एक लंबी खामोशी छा गई। जब मुझे कोई जवाब नहीं मिला, तो मुझे ऐसी शर्म महसूस हुई जैसी मैंने कभी महसूस नहीं की थी। मैंने तुम्हें अपनी भूख दिखाई थी

और तुम्हें घृणा हो रही थी, मैंने सोचा। मैंने महसूस किया कि मेरी आँखों में आँसू जमा हो गए हैं और मेरा सिर उनके नमक के वजन से झुक गया है। जब पहली बूँद गिरी, तो तुमने उसे अपनी हथेली में पकड़ लिया। 'क्यों?' तुमने पूछा। 'तुम क्यों रो रहे हो?' मुझे यह जानकर इतनी राहत मिली कि तुमने मुझे नहीं छोड़ा

तुमने मुझे अपनी ओर खींचा और मैंने अपना सिर तुम्हारी छाती पर टिका दिया। मैंने सुना
तुम्हारा दिल धड़क रहा था या मेरा?

तुमने कहा था, 'मुझे तुम्हें अपनी बाहों में पकड़ना था।'

मैं और करीब आ गया, मेरी मुट्ठियाँ तुम्हारी त्वचा पर टिकी थीं।

तुमने अपनी ठोड़ी खोली और मेरी आँखों में देखने के लिए मेरी ठोड़ी उठाई। 'और अब...' तुमने कहा।

'और अब...' मैंने पूछा.

'और अब मैं तब तक चैन से नहीं बैठ सकता जब तक तुम जिंदगी भर के लिए मेरी नहीं

हो जाती।' फिर चाँद बादलों के पीछे से निकल आया और तुम उन परछाइयों की ओर बढ़ गए जो तुम्हें ढकने वाली थीं। फिर से तुम दो प्राणी हो गए। आदमी। आवाज़।

मैं तुम्हारे पास पहुँचा। तुम्हें एक बार फिर से थामने के लिए ताकि कम से कम एक पल के लिए तो तुम
वह आदमी और वह आवाज, जिसे मैं बहुत अच्छी तरह से जानता था, एक हो जाएंगे।

तुमने मेरा हाथ थाम लिया और मुझे फिर से अपनी बाहों में भर लिया। तुमने अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए।

फिर तुम चले गए, मेरे होठों पर एक हल्के दबाव की याद छोड़ गए।
जब आप ऊंची दीवार से ज़मीन पर गिरे तो एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी।

मुझे राहत मिली। तुम सुरक्षित थे।

मैं सोच रहा था, आगे क्या होगा? लेकिन मैंने सोचा कि आगे क्या होगा, यह तो तुम्हें ही पता होगा। तुम रास्ता दिखाओगे और मैं पीछे चलूँगा।

सेतु छत को घूर रहा था। इन दिनों वह छत और दूसरी खाली जगहों को घूरने का आदी हो गया था, मानो अपनी इच्छाओं के रंगों को उनके खालीपन में प्रक्षेपित करना चाहता हो।

यह कहाँ से आता है, उसने खुद से हैरानी से पूछा। सादिया के लिए इस भावना का भार। उसकी त्वचा की खुशबू को साँस में लेने की ज़रूरत, उसे अपने साथ समेटने की ज़रूरत

Machine Translated by Google

अपनी उंगलियों में बालों को समेटे, उसकी ठुड्डी को सहलाए और उसकी मासूमियत को पिए। जिन शब्दों के अस्तित्व के बारे में उसे पता नहीं था, वे उसकी जुबान से सहजता से निकल गए। मेरा प्यार, मेरे दिल की छोटी चिड़िया, मेरा कबूतर, मेरी नसों में बहता गाना, सुंदर वाक्य जिन्हें उसने टॉकीज़ में सुनकर मज़ाक उड़ाया था। अब जब वह उन्हें बोलता था, तो वे उसकी भावनाओं को प्रतिध्वनित करते प्रतीत होते थे।

उसने कहा कि वह उसकी आत्मा का दर्पण है। तुम मेरी आत्मा हो, वह रोया।

फिर एक भयावह आशंका आई। यह प्रेम कैसे हो सकता है?

कुछ भी नहीं, यहाँ तक कि उसका असली नाम भी नहीं। वह ऐसा कैसे होने दे सकता था?

सेतु ने खुद से कहा, किसी को पता नहीं चलने वाला। वह सेठ होगा, डॉक्टर का सहायक। वह सादिया को अपने पास रखेगा, भले ही इसके लिए उसे जान से क्यों न गंवाना पड़े। उसके लिए उसके प्यार का यही पैमाना था। सादिया के लिए वह मरने को तैयार था।

मैं लगभग पच्चीस साल का हूँ। मैं कोई मूर्ख लड़का नहीं हूँ; मैं एक आदमी हूँ। यह एक परिपक्व प्रेम है, वह किसी भी व्यक्ति से कहेगा जो विरोध करता है। सबसे बढ़कर, उसने अपने दिमाग में आवाज़ को बताया। फिर सावधान रहो, आवाज़ ने कहा। सावधान रहो। सावधानी से चलो। अगर तुम मर गए तो तुम्हारा प्यार बेकार है। इसके अलावा, यह समय है कि तुम उसे अपने बारे में बताओ। तुम रेत पर प्रेम का निर्माण नहीं कर सकते, आवाज़ ने कहा, और वह एक डर को जानता था जो डर में बदल गया। जब वह जान जाएगी कि तुम कौन हो, तभी तुम्हें उसके बाद के दिनों के बारे में सोचना चाहिए, आवाज़ ने कहा।

उस रात तुम चुप थे। चुप, मानो तुम्हारी जुबान पर मौजूद सारे शब्द किसी अजीब सी आशंका से स्तब्ध हो गए हों। मैं उस खामोशी का बोझ महसूस कर सकता था।

मेरी चोली के अंदर, मेरे स्तनों के बीच की उथली जगह में, चमेली की कलियों की टहनी थी जिसे तुमने अपनी मेज़ पर बहुत ही कलात्मक ढंग से रखा था। चमेली मेरी त्वचा को छू रही थी। मैंने अपनी हर साँस के साथ तुम्हें महसूस किया।

जब तुम्हारी आवाज़ बाहर आई तो वह तुम्हारी चुप्पी से भी धीमी थी। तुमने पूछा, 'क्या तुम जानते हो मैं कौन हूँ?'

मेंने कुछ नहीं कहा।

तुमने कहा, 'मैं वह नहीं हूं जो तुम सोचते हो।'

'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?' मैंने पूछा.

'हाँ,' तुमने कहा। 'मैं केरल में पला-बढ़ा हूँ। क्या तुम्हें पता है कि वह कहाँ है? दूसरे तट पर। जब मैं चौदह साल का था, तो मैं घर से भाग गया। मैं कोलंबो पहुँचा,' तुमने कहा और रुक गया। फिर तुमने अपनी साँस समेटी और कहा, 'कोलंबो।' मैंने तुम्हें घूरते हुए कहा, 'मुझे समझ में नहीं आ रहा।' 'यह यहीं खत्म नहीं होता,' तुमने मेरे सवाल पर ध्यान न देते हुए कहा। 'बाद में, जब मैंने काम करना शुरू किया, तो मैं वहाँ से चला गया। मैं पंबन क्वारंटीन कैंप

में था।

वहाँ मेरा एक आदमी से झगड़ा हुआ था। मैंने उसे चाकू मार दिया। अगर वह मर गया है, तो मैं हत्यारा हूँ।'

Machine Translated by Google

मैंने तुम्हारे लिए पहले से कहीं ज़्यादा प्यार महसूस किया है। तुम्हारे लिए मुझे यह बताना कितना मुश्किल रहा होगा। मुझे परवाह नहीं थी। मैं तुम्हें जानता था। मैंने अपना गाल तुम्हारी छाती पर रखा था और तुम्हारे दिल की धड़कन सुनी थी। मैंने तुम्हारे होंठों को अपने होंठों पर महसूस किया था और प्यार का स्वाद चखा था। मैं बस यही सोच सकता था कि अगर मैं तुमसे अलग हो गया तो मैं कितना अकेला रह जाऊँगा।

मैंने तुम्हारा हाथ छुआ। तुम छाया में खड़े थे। मैं तुम्हें मुश्किल से देख पा रहा था। लेकिन मुझे पता था कि तुम मुझसे बस कुछ इंच की दूरी पर थे।

फिर तुम मेरी ओर मुड़े और बोले, 'सुनो। मेरे पास एक और रहस्य है। मेरा नाम सेठ नहीं है। यह सेतु है। क्या तुम जानते हो इसका क्या मतलब है?' मैं कुछ नहीं बोला। मुझे समझ नहीं आया।

'सादिया.' तुम्हारी आवाज़ में बहुत ज़ोर था. 'मैं हिंदू हूँ. तुम क्या शब्द इस्तेमाल करती हो, काफ़िर...तुम्हारा प्यार कभी स्वीकार नहीं किया जाएगा.' तब मुझे पता चल गया था कि तुम मुझसे

चुनने के लिए कह रही हो. मेरे वंश का वज़न,
या हमारे प्यार का चमत्कार.

मैंने कहा, 'तो फिर हमें एक ऐसी जगह ढूंढनी होगी जहां हमारा प्यार जिंदा रह सके।'

अगर आदरणीय हाजी नजीब मसूद अहमद की वसीयत लोहे की बनी थी, तो सादिया मेहरुन्निसा की वसीयत स्टील की बनी थी। गर्मी और दर्द से मुक्त, जंग और दलीलों से प्रतिरोधी।

जब रजिया के बच्चे का जन्म हुआ और उसके आगमन की खुशी में उत्सव मनाया गया
अंत में, वापा ने सादिया के निकाह का आयोजन शुरू कर दिया।

घर से दूर रहने के दिनों ने उसे एक औरत बना दिया था, उसने सोचा। वह अब बच्ची नहीं रही। उसकी आँखें और उसके शरीर की धीमी हरकतें एक औरत की सुस्ती को दर्शाती थीं, एक प्राणी की जो अपने पास एक रहस्य छिपाए हुए थी, उसने एक सुबह उसे सीढ़ियों से उतरते हुए देखा। उसे इतने लंबे समय तक अविवाहित छोड़ना एक गलती थी।

फिर एक रात सादिया उसके पास गयी जब वह घर के सामने वाले कमरे में बैठा था।
उसके चेहरे पर जो कुछ उसने देखा, उससे वह घबरा गया। यह एक विद्रोही जैसा दृढ़ संकल्प था।

'वापा, मैं यह निकाह नहीं चाहती,' उसने कहा, इस विषय पर बात करने की भी जहमत नहीं उठाई।

हाजी ने अपनी बुलबुल-तारा की ओर देखा। ऐसा लग रहा था जैसे, उसकी मधुर ध्वनि के बजाय,
ढोल की आवाज़ तेज़ हो गई थी। उसने ज़ुलेका की साँस की आवाज़ न सुनने का नाटक किया।

'वापा, मैं अकबर शाह के दूसरे बेटे से शादी नहीं करना चाहती।' उम्मा कमरे में घुसी और

सादिया की बांह खींची। 'चलो, लड़की।
तुम्हारे साथ क्या गलत है?'

लेकिन सादिया ने अपना हाथ झटककर छुड़ा लिया। 'वापा, तुम बहाना बना सकती हो कि तुमने मेरी बात नहीं सुनी। लेकिन मैं काजी से कह दूंगी कि मैं उस आदमी से शादी करने को तैयार नहीं हूं जिसे तुमने रखा है।

Machine Translated by Google

मेरे लिए चुना गया है।'

हाजी ने अपनी बुलबुल-तारा से आँखें उठाईं। उसने उसे धीरे से नीचे रख दिया।
सलीम को क्या हो गया है?' उसने नरम स्वर में पूछा।

सादिया ने रोते हुए कहा, 'मैं सलीम को नहीं जानती। मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानना चाहती। देखो, मेरा दिल उसे स्वीकार नहीं करेगा।' उसका चेहरा लाल हो गया और माथे पर पसीने की बूंदें उभर आईं।

'तुम्हारा दिल! तुम्हारा दिल वही स्वीकार करेगा जिसे मैं कहूँगा। क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो? मेरे पास तुम्हारी मूर्खता के लिए समय नहीं है,' वापा ने बिना अपनी आवाज़ ऊँची किए कहा। उसने अपना हाथ हिलाया जैसे कि उसे विदा करना चाहता हो और अपने तकियों के ढेर से उठ खड़ा हुआ।

'मैं नहीं जाऊँगी, वापा,' सादिया ने कहा। उसकी आवाज़ भी उसकी तरह ही नरम थी। 'तुम मुझे मजबूर नहीं कर सकते।' उम्मा ने विनती की। नादिरा ने मना

लिया। रजिया रो पड़ी। सुलेमान ने धमकी दी। और वापा: उसने उसे पीटा और धमकाया, उसे भूखा मारने का आदेश दिया और फिर दीवार की ओर मुँह करके बैठ गया और रोने लगा। उन्होंने वह सब करने की कोशिश की जो उन्हें लगा कि उन्हें करना चाहिए, ताकि वह समझ सके और अपने तरीकों की गलती समझ सके। लेकिन सादिया अपरिवर्तनीय थी।

नादिरा अपने पिता के पास जाकर बोली, 'कोई फायदा नहीं है, वापा। वह दिन-ब-दिन और दृढ़ होती जा रही है। उसमें अब कोई जान नहीं बची है, लेकिन वह अपना मन बदलने से इनकार करती है।'

वापा अपनी बड़ी बेटी की ओर मुड़े। 'तो फिर हम क्या करें?' 'मुझे पता लगाना है कि उसके मन में क्या है,' नादिरा

ने अपने पिता के आंसू पोंछते हुए कहा।

अगले दिन पूरे दिन नादिरा अपने पिता की नज़रों से बचती रही। हाजी नादिरा के उसके पास आने का इंतज़ार करता रहा। लेकिन वह दूर रही और इसलिए हाजी ने उसे ढूँढ़ना शुरू कर दिया, क्योंकि वह अब अपने डर को रोक नहीं पाया था।

'मैं क्या कह सकती हूँ, वापा?' नादिरा चिल्लाई।

हाजी ने अपनी बेटी के चेहरे को पढ़ने की कोशिश की, जो उसकी पत्नी से काफी मिलती जुलती थी।
'उसने कुछ कहा? उसने क्या कहा?' 'वह अपने मलिक के बारे में बात

करती है। एक आदमी जिस पर उसका दिल हार गया है। वह कहती है कि उसके पास उसकी आत्मा है।' 'क्या वह पागल हो गई है? कौन आदमी?

यह मलिक कौन है?' 'सेठ। डॉक्टर का सहायक,' नादिरा ने कहा, उसकी आवाज़ फटी हुई थी।

'लेकिन यह कैसे हो सकता है?' हाजी ने भौंहें सिकोड़ीं। 'यह कैसे हो सकता है?' उसकी आवाज़ ऊँची हो गई।

'मुझे नहीं मालूम, वापा, मुझे नहीं मालूम,' नादिरा चिल्लाई, उसे डर था कि कहीं उसे जिम्मेदार न ठहराया जाए।

'क्या वह हम में से एक है?' हाजी ने खुद से पूछा। 'लेकिन अगर वह है भी, तो कैसे?
क्या ऐसा हो सकता है? मैं अपने रिश्तेदारों का सामना कैसे करूँगी? मैं उनकी उपेक्षा के साथ कैसे रहूँगी?'

'वापा, वह हम में से नहीं है,' नादिरा ने बड़बड़ाते हुए कहा। 'मुझे लगता है कि वह ईसाई है।'

Machine Translated by Google

फिर हाजी घुटनों के बल गिरकर रोने लगा। उसकी आत्मा में इतनी गहरी सिसकियाँ फूट पड़ीं कि घर की दीवारें हिल गईं। जब उसे लगा कि अब वह और नहीं रो सकता, तो वह अपने घर वापस चला गया और खुद को एक कमरे में बंद कर लिया।

वे बाहर इकट्ठे हो गए और उससे बाहर आने की विनती करने लगे। नादिरा और रजिया।
सुलेमान, उम्मामा और ज़ुलेइका। वापा की परेशानी से बेपरवाह केवल सादिया ही अपने कमरे में रुकी रही।

वापा कई घंटों तक वहाँ रहा और अचानक जैसे उसने खुद को बंद कर लिया था, वह बाहर निकल आया। उसने अपने परिवार के लोगों के चेहरों को देखा जो वहाँ खड़े थे: आँखें और गाल आँसुओं से तर थे, आवाज़ें निराशा से भरी थीं, हाथ मरोड़ रहे थे, कपड़े अस्त-व्यस्त थे और बाल बिखरे हुए थे। फिर उसने फिर से ढूँढा कि क्या वह वहाँ है।

'मेरे नहाने के लिए गरम पानी लाओ,' उसने कहा। 'मुझे भूख लगी है। मैं नहाने के बाद कुछ खाना चाहता हूँ।' वे एक-दूसरे की ओर देखने लगे, उसके

शब्दों की साधारणता से चौंक गए।

'वापा,' सुलेमान ने कहना शुरू किया।

हाजी ने अपना हाथ ऊपर उठाया। 'अब और कुछ नहीं है जिस पर बात की जाए।' शाम ढलने पर हाजी मस्जिद में

गए। नमाज़ खत्म होने पर उन्होंने वहाँ जमा लोगों से कहा, 'मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बात कहनी है।' उन्होंने एक-दूसरे की तरफ़ देखा। उन्होंने पहले ही एक अफ़वाह सुनी थी। लेकिन चूँकि यह हाजी की बेटी के बारे में थी, इसलिए उन्होंने अफ़वाह को बेबुनियाद अफवाह समझकर खारिज कर दिया।

'मेरे भाईयों,' उन्होंने कहा, यह दिखाने की कोशिश नहीं की कि उनके सामने अपमान की छाया में खड़े होने से उन्हें कितना दुख हुआ। 'जब से मैं याद कर सकता हूँ, मैंने अपने पूर्वजों के महत्व को स्वीकार किया है। जब से मैं याद कर सकता हूँ, मैंने अपने रक्त की पवित्रता को अक्षुण्ण रखने की कोशिश की है। हमारे पूर्वज हमारे धर्म के बाद दूसरे स्थान पर आते हैं, लेकिन वे दूसरे स्थान पर हैं। इसलिए जब आपने मुझे अपना नेता बनाने का फैसला किया, तो मुझे पता था कि मुझ पर एक बड़ी जिम्मेदारी निहित है। जब तक मैं आपका नेता हूँ, मुझे उन सभी मूल्यों का संरक्षक बनना होगा जिन्हें हमारे पूर्वजों ने बनाए रखने के लिए उपयुक्त माना है। मैं यह सुनिश्चित करने वाला व्यक्ति हूँ कि किसी का भी उल्लंघन न हो, और अगर ऐसा हुआ भी, तो उल्लंघनकर्ता को उचित रूप से दंडित किया जाएगा। लेकिन अब, अपने ही घर में, अपने ही सीने में, मैंने अनजाने में एक बुराई को बढ़ावा दिया है। एक ऐसा प्राणी जो हमारे कानून के सिद्धांतों का उल्लंघन करना चाहता है, वह सब कुछ नष्ट कर देता है जो हमारे लिए कीमती है।

'इसलिए यह उचित है कि मैं कबीले का मुखिया होने के सम्मान से पीछे हट जाऊं।' पुरुषों ने फर्श की ओर देखा और फिर एक-दूसरे की ओर। सुलेमान ने

अपनी कलाई पकड़ ली।

Machine Translated by Google

उसने अपने हाथों से उनका चेहरा ढकने से रोका।

'मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी अपने धर्म और वंश के प्रति सच्चे रहकर जी है। मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी अल्लाह से कभी कुछ नहीं माँगा, बस इतना माँगा कि मुझे एक इज्जतदार इंसान बनने की ताकत दी जाए। मेरी इज्जत तार-तार हो चुकी है, लेकिन मुझे आत्म-सम्मान का यह आखिरी निशान दे दो।
मुझे आपसे माफ़ी मांगने दीजिए और जान लीजिए कि आप अपने दिल में मेरे परिवार को उस अपमान के लिए माफ़ करने की उदारता पाएंगे जो उसने हमें पहुंचाया है।' बड़बड़ाहट तेज़ हो गई। 'साफ़-साफ़ बोलो, हाजी,' किसी ने

कहा।

हाजी ने अपने पैरों की ओर देखते हुए कहा, 'मेरी बेटी सादिया कहती है कि वह ऐसा नहीं करेगी।
अकबर शाह के बेटे सलीम से शादी कर लो।' 'बस

इतना ही?' कोई और हंसा। 'उसके लिए दूसरा दूल्हा ढूंढो।' 'नहीं, बस इतना ही नहीं,' हाजी ने

कहा, उसका चेहरा गुस्से से पीला पड़ गया था, उसके नथुने फड़क रहे थे।

'क्या तुम मुझे मूर्ख समझते हो कि मैं तुम्हारे सामने खड़ी होकर नाटक कर रही हूँ? मेरी बेटी हमारे समुदाय के हर कानून को तोड़ना चाहती है। वह एक काफिर की पत्नी बनना चाहती है।' 'कौन?' सभी की आवाज़ें एक साथ उठीं।

हाजी ने सोचा कि अगर उससे उस आदमी का नाम पूछा जाए तो वह क्या कहेगा। डॉक्टर को दोष नहीं दिया जाना चाहिए था। अगर वह उसके प्रेमी का नाम बता देता, तो डॉक्टर को फिर कभी अंदर नहीं आने दिया जाता। और इसका खामियाजा महिलाओं और बच्चों को भुगतना पड़ता। सादिया, तुम नहीं जानती कि तुम्हारे विश्वासघात की वजह से मुझे और हमें क्या नुकसान हो रहा है।

...

'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?' हाजी ने पूछा। 'वह उसका नाम लेने से इनकार कर रही है।' 'उसे

मारो,' किसी ने कहा।

हाजी के बहनोई मोहम्मद ने चिल्लाते हुए कहा, 'उसे दाग दो और भूखा मार दो; इससे वह ठीक हो जाएगी।'

एक बूढ़े आदमी ने कहा, 'उससे कहो कि तुम आत्महत्या कर लोगे।'

'मैंने कोशिश की। यकीन मानिए, मैंने कोशिश की,' हाजी ने धीरे से कहा। 'लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी हुई है।' 'तो उसे कुंवारी ही रहने दो।' 'वह कहती है कि

वह आत्महत्या कर लेगी।' हाजी की आवाज टूट गई।

'लड़की को क्या हो गया है? शायद उसके अंदर कोई जिन्न है। शायद उसे भूत-प्रेत से मुक्त करने की जरूरत है,' मोहम्मद ने कहा।

'तुम क्या करोगे?' अकबर शाह ने पूछा.

'मैं उसे अस्वीकार कर दूँगा। कल सुबह उसे गेट के बाहर छोड़ दिया जाएगा और उसके बाद, न तो मैं और न ही मेरे परिवार का कोई और सदस्य उससे कोई संबंध रखेगा। हम उसे अपने जीवन और यादों से मिटा देंगे। अपने पूर्वजों का अपमान करने के प्रायश्चित के रूप में, आप हमें जो भी सजा देना उचित समझेंगे, हम उसे स्वीकार करेंगे।'

Machine Translated by Google

हाजी ने बुजुर्गों की परिषद की प्रतीक्षा की। अकबर शाह ने अपना फैसला सुनाया। 'हाजी नजीब मसूद अहमद, हमने आपका फैसला सुन लिया है। अब हमारा भी फैसला सुनिए। आप अपनी बेटी के साथ क्या करते हैं, यह आपका मामला है। घर के मुखिया के रूप में आप जो उचित समझें, वह कर सकते हैं। उसे घर में रखें या उससे संबंध तोड़ लें। परिवार के मुखिया के रूप में यह आपकी पसंद है। हालांकि, हमें आपके पद से हटने की कोई आवश्यकता नहीं दिखती। आपने समुदाय के मुखिया के रूप में अपनी स्थिति को गरिमा के साथ बनाए रखा है। आपने अपने कर्तव्यों को दोषरहित तरीके से पूरा किया है। आपका चरित्र बेदाग है। फिर हम आपकी बुद्धिमत्ता और ज्ञान से खुद को क्यों वंचित रखें? हम चाहते हैं कि आप हमारे मुखिया बने रहें।' हाजी जहां बैठे थे, वहां से उठ खड़े हुए। 'मैं जो अपनी बेटी को अपने वंश या धर्म की महानता नहीं सिखा सकता, वह बाकी समुदाय के लिए इसे कैसे कायम रख सकता हूं?' सुलेमान ने कराहते हुए कहा। परिषद वह कर रही थी जो उन्होंने पहले कभी नहीं किया था, हाजी और उसके परिवार को दण्डित किए बिना जाने देना तथा उसे मुखिया के पद पर बने रहने देना, और यहाँ वापा उनसे बहस कर रही थी।

'कृपया, हाजी,' परिषद के एक बुजुर्ग ने कहा। 'हमें आप पर भरोसा है। क्या हमें और कुछ कहने की ज़रूरत है?' हाजी नजीब मसूद अहमद ने गंभीरता से अपना सिर

हिलाया। वह समझ गया। यही उसकी सज़ा थी। अब से, उसे परिषद के फ़ैसलों को बिना किसी सवाल के स्वीकार करना होगा। उल्लंघनों पर आँखें मूंद लेना, जहाँ ज़रूरत न हो वहाँ माफ़ी की पेशकश करना। उसे कानून तोड़ने और नए कानून बनाने का गवाह बनना होगा, विरोध करने या अपनी असहमति व्यक्त करने में असमर्थ होना होगा। उसे उनके वंश का संरक्षक बनने की अनुमति नहीं दी जाएगी। वह नाममात्र का मुखिया होगा और इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

हाजी ने सुलेमान को इशारा किया। 'मैं चाहता हूँ कि तुम अब घर जाओ। सादिया से कहो कि उसके पास फैसला करने के लिए पूरी रात है। सुबह होते ही उसे मुझे बताना होगा कि उसने क्या फैसला किया है। अगर वह अपनी राह पर चलना चाहती है तो उसे बताना कि आगे क्या होने वाला है। उसे साफ-साफ बता दो, ताकि उसे पता चले कि वह हमें क्या करने के लिए मजबूर कर रही है।'

'वापा,' सुलेमान ने पूछा, 'क्या होगा अगर...' हाजी ने अपने बेटे की ओर

देखा। 'हम अभी इस पर विचार नहीं करेंगे। अगर कोई 'क्या होगा अगर' है, तो अब यह हमारी चिंता का विषय नहीं है। अब जाओ। मैं समय आने तक यहीं रहूंगा। मैं अल्लाह से प्रार्थना करूंगा कि वह उसे सद्बुद्धि दे और मुझ पर दया करे ताकि यह कभी न कहा जाए कि हाजी नजीब मसूद अहमद की बेटी ने हमारे वंश की पवित्रता को नष्ट कर दिया।'

Machine Translated by Google

पुस्तक 2

काणानमिथेन्नलेन्थाधिकम् भीथिथमल्ले,
कानेनम थेलिनजुल्ला वज़िकल,
नूनामी वज़ी चेनल काणम पयोश्नीयारुम
एनाक्षी, दूरेयल्ला चेन्नार्न्ना कुंडिनवुम

यद्यपि यह जंगल है, फिर भी यह इतना डरावना नहीं है कि हमें
साफ रास्ते मिल जाएं।
यदि हम इस ओर चलें, तो यह निश्चित है, हे मृग-नेत्र वाले, कि भूख-
प्यास मिटाने वाली नदी तथा प्रसिद्ध कुंडिनम भी दूर नहीं हैं।

—नालचरितम् [दूसरा दिन]
उन्नायी वारियर

Machine Translated by Google

रौद्रम

आह, और अब हम रौद्रम पर आते हैं। आम भ्रांति यह है कि रौद्रम को क्रोध का पर्यायवाची माना जाता है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि रौद्रम क्रोध का रूप धारण करता है। क्रोध भी। इसे देखें: आप आँखों से शुरू करते हैं। उन्हें इतना चौड़ा करें कि वे पूरी तरह से खुल जाएँ, जब तक कि आपका सिर पीछे की ओर न झुक जाए, नाक के छिद्र न फैल जाएँ, मुँह बंद न हो जाए और जबड़े न कस जाएँ। आपको हमेशा की तरह साँस लेनी चाहिए, लेकिन कोशिश करें कि आँखों से साँस छोड़ें। तीव्रता से। शक्तिशाली तरीके से। फिर गालों में खुद ही गतिशीलता आ जाएगी।

अब आप समझे कि मेरा क्या मतलब है? यह वह चेहरा है जो आप तब बनाते हैं जब आप क्रोधित होते हैं, जब आप क्रोधित महसूस करते हैं, और यह वह चेहरा भी है जो आप तब बनाते हैं जब क्रोध आपके दिमाग पर हावी हो जाता है। तो क्रोध क्या है?

क्रोध की कई डिग्री होती हैं। चलिए मैं आपको समझाता हूँ।

पहले मैंने आपको बताया था कि कैसे कर्किटकम में बारिश दुख का प्रतीक है। लेकिन एक और तरह की बारिश होती है। दोपहर ढलते ही भूरे बादलों के जमने से इसकी शुरुआत होती है। एक सन्नाटा होता है जो सिर्फ़ कौवों की कर्कश आवाज़, गरजने की गड़गड़ाहट, एक बूढ़े आदमी की गहरी साँस लेने और सोते हुए खर्राटे लेने से टूटता है। पत्तियाँ खामोशी से गूंजती हैं। फिर बारिश होती है। पत्तियों पर, पेड़ों की चोटियों पर, सूखे ताड़ के पत्तों पर। झाड़ियों के बीच से बारिश। छतों से टपकती बारिश। मोटी फुहार। क्रिस्टल की बूँदें।

रात में, अँधेरा एक मोटी मखमली चादर की तरह होता है, जो तारों और शोर को दबा देता है।
केवल बारिश की स्थिर बूँदें ही अंदर तक पहुँचती हैं। क्योंकि यह बारिश क्रोध से भरी होती है। जब गरज होती है और बादल फटते हैं। जब बिजली की चमक आसमान को चीरती है, पेड़ों पर गिरती है, तनों को चीरती हुई पत्तियों को भूरा कर देती है ... अक्टूबर का अंत तुलावर्षम लाता है। और यह वह बारिश है जो चुपचाप नहीं गिरती, बल्कि उग्र और गरजती है।

रौद्रम का एक और संस्करण है। इसके लिए आपको अपने किचन गार्डन में जाकर एक चीनामोलागु, मोम जैसी त्वचा वाली छोटी हरी और सफेद मिर्च तोड़नी होगी, जो देखने में बहुत ही हानिरहित लगती है। आपको शायद खुद को एक निवाला खाने के लिए राजी करना पड़े। लगभग तुरंत ही आपके मुंह में इतनी तेज जलन होगी कि आपका दिल तेजी से धड़कने लगेगा, आपके मुंह से लार टपकने लगेगी, नाक बहने लगेगी और आपके सिर और चेहरे पर तेज पसीना आने लगेगा। तो आप देखिए, क्रोध को जानने के लिए आपको क्रोध या क्रोध महसूस करने की जरूरत नहीं है।

Machine Translated by Google

अब अपनी आँखें बंद करो और पेड़ों से आती आवाज़ों को सुनो। क्या तुम सुन रहे हो? टुक-टुक की आवाज़? क्या तुम्हें आश्चर्य नहीं होता कि हवाई बढ़ई कौन है? यह मरमकोठी है। क्या तुम सोच रहे हो कि कठफोड़वा का रौद्रम से क्या लेना-देना है? सुनो। क्या तुम सुन रहे हो? ढोल की आवाज़ जैसी आवाज़। पहले धीमी, फिर तीव्र, मानो क्रोध से प्रेरित हो। और फिर भी, क्रोध ऐसा नहीं है कि इससे धरती टूट जाए या खून बहे। यह जुनून का क्रोध है। क्योंकि, जबकि अन्य पक्षियों के पास साथी को आकर्षित करने के लिए संभोग की पुकार होती है, कठफोड़वा के पास केवल अपने ढोल की थाप होती है जिससे वह बुलाता और बुलाता है। यह एक शांत क्रोध है, अपनी शक्ति में कम तीव्र या उग्र नहीं,

श्याम

मैं आगे झुकता हूँ और पर्दे को एक तरफ खींचता हूँ। मैं सोचता हूँ कि क्या मुझे उठकर हाथ धोने चाहिए। भगवान जाने इन मोटे बदसूरत पर्दों पर क्या-क्या पोंछा गया है- आँसू, नाक से पानी, खाने की चर्बी, च्युइंग गम... मैं एक सिहरन को दबाता हूँ और शीशे से बाहर देखता हूँ। मैं अपने नीचे ट्रेन के पहियों को महसूस करता हूँ, चटकने और पीसने की आवाज़, धीमी गति। प्लेटफ़ॉर्म पीछे हटने लगता है। मुझे लगता है कि मुझे एक चेहरा दिखाई देता है जिसे मैं पहचानता हूँ, लेकिन यह कहना मुश्किल है क्योंकि खिड़की में रंगीन शीशा गंदा है।

दरवाज़ा खुलता है और गर्म हवा का झोंका अंदर आता है। दो परेशान करने वाले बच्चे गलियारे से नीचे की ओर चलते हैं, खिलखिलाते हुए और एक-दूसरे को धक्का देते हुए। उनके हाथों में एक केला, एक बड़ी चॉकलेट बार, चिप्स का एक पैकेट और एक कप कोक है। वे किसकी तैयारी कर रहे हैं? घेराबंदी? उनके साथ शॉर्ट्स और धूप का चश्मा पहने एक आदमी है, जो एक बैग और मिनरल वाटर की बोतल पकड़े हुए है। मैंने तय किया कि वे शहर से बाहर के लोग हैं। मुझे उम्मीद है कि उनकी सीटें डिब्बे के दूसरे छोर पर होंगी। पीछे कहीं से एक बच्चा रोता है। एक महिला हंसती है। ट्रॉली बैग के पहिए चरमराते हैं। बिस्किट के रैपरों की सरसराहट सुनाई देती है। फिर एयर कंडीशनर की गुनगुनाहट फिर से शुरू हो जाती है।

मुझे रेलगाड़ियाँ पसंद हैं। मुझे हमेशा से पसंद हैं। जब मैं चलती हुई रेलगाड़ी में बैठता हूँ, तो मुझे बहुत उम्मीद की भावना महसूस होती है। एक ऐसी ऊर्जा जो मेरी नहीं है, मुझे गंतव्य की ओर ले जा रही है। रेलगाड़ी में, मेरा दिमाग दौड़ता रहता है और सिर्फ़ मेरा शरीर ही रहता है। सीट 12 ए.

घर पर मुझे कभी भी आराम का एक पल भी नहीं मिलता। हमेशा कोई न कोई मेरे आस-पास रहता है। कोई मदद मांगता है, कोई टिप्पणी मांगता है, कोई राय व्यक्त करता है, मेरा ध्यान आकर्षित करता है। कुछ दिन, जब मैं अपने मन को भटकने देना चाहता हूँ, तो मैं अख़बार के पीछे छिप जाता हूँ। इन लक्ष्यहीन भटकनों के दौरान ही मेरे मन में सबसे अच्छे विचार आते हैं, लेकिन इसे समझने वाला कौन है?

Machine Translated by Google

एक बार राधा ने मुझे ऐसी नज़र से देखा जिसे मनोरंजन या घृणा के रूप में समझा जा सकता था, और कहा, 'क्या तुमने उल्टा पढ़ना सीख लिया है? देखो तुमने अख़बार को कैसे पकड़ा हुआ है। इसके पीछे तुम क्या साज़िश रच रहे हो?'

मैं इधर-उधर देखता हूँ। डिब्बा लगभग खाली है। स्कूल खुल चुके हैं और सबरीमाला तीर्थयात्रियों के लिए सड़कों और ट्रेनों में भीड़भाड़ का मौसम अभी नहीं आया है। इसके अलावा, मानसून शुरू हो चुका है और बहुत कम लोग अब एसी चेयर कार से यात्रा करना चाहेंगे। आखिरकार, यह कर्कटकम का महीना है। दरिद्रता का महीना।

मुझे एम.टी. वासुदेवन नायर की कहानी 'कार्कीटकम' याद आती है। मैं बहुत ज़्यादा नहीं पढ़ता, लेकिन यह मेरी पसंदीदा कहानियों में से एक है। छोटा लड़का उन्नी मैं भी हो सकता था।
हमेशा भूखा। हमेशा गर्वित।

जब मैं और मेरी माँ राधा के पिता द्वारा दिए गए टुकड़ों पर जी रहे थे, तो मेरी माँ को यह बर्दाश्त नहीं था कि मैं भूख या गर्व जैसे शब्दों का इस्तेमाल करूँ। मुझे किसी भी ज़रूरत के बारे में बोलने की इजाज़त नहीं थी।

अगर मैं कभी अपनी मां से खाना मांगता तो वह झल्लाकर कहती, 'तुम इतने गरीब कैसे हो सकते हो?'
भूख लगी है? क्या तुमने कुछ घंटे पहले खाना नहीं खाया? क्या तीन बार खाना काफी नहीं है?'

मेरी मां हमारे भोजन का सावधानीपूर्वक वितरण करती थीं, लेकिन मैं एक बढ़ती हुई बच्ची थी, और पूरे दिन और कभी-कभी रात में, भूख चूहे जैसे दांतों से मेरी अंतड़ियों को कुतरती रहती थी।
मेरी माँ ने मुझे कीड़े मारने की दवा दी और कहा कि मेरे अंदर राक्षस रहते हैं, जो दिन-रात खाना मांगते हैं। मेरी बेचारी माँ ने अपना गुजारा करने के लिए हर संभव कोशिश की, हमें जो भी दिया जाता था, उसी से काम चलाया। मेरी भूख ने उनकी योजना को तहस-नहस कर दिया, और वह इससे निपटने के लिए केवल क्रोध ही कर सकती थी।

'भूख? यह कैसी राक्षसी भूख है? यह ऐसी भूख है जो एक कुल को एक परिवार में बदल देती है, सुन रहे हो?' मेरी माँ के पास मेरी भूख मिटाने के लिए भोजन की कमी रही होगी, लेकिन उनके पास लोक ज्ञान की कभी कमी नहीं

रही। जैसे-जैसे उनकी हताशा बढ़ती गई, वैसे-वैसे उनकी कहावतों का भंडार भी बढ़ता गया, जिनमें से प्रत्येक पहले वाले से अधिक क्रूर रूप से निंदात्मक थी। और फिर भी, ऐसा नहीं था कि वह एक निर्दयी या कठोर महिला थीं। वह एक ऐसी महिला थीं जो एक पुरुष की ज़िम्मेदारियाँ उठाने के लिए मजबूर थीं और उनकी अधीरता इस तथ्य से उपजी थी कि वह वित्तीय चिंताओं के बोझ तले दबी हुई थीं और उन्हें इस बात का अपराध बोध था कि वह मेरे लिए अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं कर रही थीं। मेरे अलावा, मेरी दादी की देखभाल करना था। 'क्या तुमने यह देखा?' वह मुझे कागज का एक टुकड़ा दिखाती थीं जिस पर घर का हिसाब लिखा होता था। 'पैसा कहाँ है?' छोटे-छोटे टुकड़े जिन पर वह लिखती और काटती, जोड़-तोड़ करती और अंकों को इधर-उधर घुमाती... सामना करती, सामना करती, जीवित रहती।

Machine Translated by Google

मैं उसकी मदद करने या उसका बोझ उठाने के लिए बहुत छोटा था। इसके बजाय, मेरा युवा अभिमान सिर उठाने लगा और वह बस उसे रोक सकती थी ताकि हम बच सकें। पीछे मुड़कर देखने पर, मैं समझता हूँ। लेकिन मैंने तब कभी नहीं समझा, और कभी-कभी उसकी असंवेदनशीलता पर मेरा गुस्सा इतना कड़वा होता था कि मैं चाहता था कि मेरे पिता की जगह वह मर जाती।

कुछ दिन अम्मा मुझे गाय का दूध दुहने और चाय की दुकान पर ले जाने के लिए कहती थीं। पहले तो मैंने मना कर दिया। मेरा नाज़ुक अहंकार इस विचार से ही डर गया। 'मैं ऐसा करते हुए नहीं दिख सकता,' मैंने अपनी कांपती हुई किशोर आवाज़ में विरोध किया। उन दिनों, मेरे जीवन में सब कुछ अराजकता से शासित लगता था, जिसमें मेरी आवाज़ भी शामिल थी; यह बगीचे की नली की लंबाई की तरह थी। बेढंगी, फिसलती हुई और मेरे नियंत्रण से परे।

चाय की दुकान के बाहर बेंच पर चार-पांच बदमाश बैठे थे, जो हर आने-जाने वाले पर नज़र रखते थे। मैं उनके लिए तब से ख़ास तौर पर उपहास का पात्र बन गया था, जब मेरी माँ ने बाड़ की टूटी हुई लंबाई को लेकर हुए विवाद में हमारे पड़ोसियों से कहा था कि उन्हें उनके पुरुषों का हमारे बगीचे से गुज़रना पसंद नहीं है। 'हम अगले सीज़न में ही बाड़ को ठीक कर पाएँगे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आपके पुरुष हमारे बगीचे को मुख्य मार्ग के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। हम गरीब हैं, लेकिन हमारा खानदान कुलीन है।' पड़ोसियों को यह निहित अपमान पसंद नहीं आया। उन्हें लगा कि हम दिखावा कर रहे हैं। चाय की दुकान के बाहर मौजूद बदमाशों में से एक पड़ोसी का बेटा था। और उसने किसी भी तरह से बदला लेने की कोशिश की।

'मैं दूध चाय की दुकान पर नहीं ले जा सकता। मैं गाय का दूध निकालूंगा। कोई और नहीं निकाल सकता।
इसे ले लो? नयादी ले सकता है, है न? मैं बस नहीं कर सकता...' मैंने समझाने की कोशिश की।

मेरी माँ का चेहरा काला पड़ गया। 'नयादी के पास खेतों में करने के लिए बहुत कुछ है। तुम्हें क्या हो गया है? तुम इसे क्यों नहीं संभाल सकते? क्या तुम सोचते हो कि तुम ऐसा करने के लिए बहुत ऊँचे और शक्तिशाली हो? जिनके पास कुछ नहीं है, वे गर्व नहीं कर सकते। क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो?' जब उन्होंने मुझे दूध के डिब्बे के साथ देखा तो वे बदमाश ठहाके लगाने लगे और बोले, 'देखो यहाँ कौन है। कोचीन के महाराजा। महामहिम श्याम। और उनके

हाथ में यह क्या है? एक राजदंड...अरे नहीं, यह एक दूध का डिब्बा है।' उन्होंने एक-दूसरे की पीठ थपथपाई और अपने मूर्खतापूर्ण मजाक पर हँसे।

हर दिन, वे मेरे लिए कोई नई टिप्पणी करते और मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाते। मुझमें न तो इतनी हिम्मत थी कि मैं उन्हें पीट पाता और न ही उनके चुटकुलों का मुकाबला करने की बुद्धि।
इसलिए मैंने वही किया जो मेरे लिए करने को बचा था: मैंने ऐसा दिखावा किया कि मैंने उनकी बात नहीं सुनी।
महाराज! मैं अपनी भूख और अहंकार के अलावा किस चीज़ का राजा था?

अब ये बदमाश मेरे लिए काम करते हैं। शायद उन्हें याद नहीं है कि उन्होंने मेरी किशोरावस्था को यातना बना दिया था। वे शायद उस डरपोक हकलाने वाले लड़के को मुझसे, उनके मोडालली, उनके स्वामी और मालिक से नहीं जोड़ते, लेकिन मैं जानता हूँ, और यही काफी है।

Machine Translated by Google

एक विक्रेता मेरी सीट के पास रुकता है। उसकी टिन की ट्रे मुझे मेरी यादों से बाहर निकालती है। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो अपने बचपन के बारे में प्यार से बात करते हैं। जब वे बीते दिनों के बारे में बात करते हैं तो उनकी आवाज़ में पुरानी यादों की लहर दौड़ जाती है। जब मैं अपने बचपन के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे बस राहत महसूस होती है। वैसा ही जैसा आप तब महसूस करते हैं जब आप कोई हॉरर फिल्म देखते हैं जिसके बारे में हर कोई बात कर रहा होता है। अब जब आपने इसे सहन कर लिया है, तो आपको खुद को फिर से उस स्थिति में नहीं डालना पड़ेगा। भगवान का शुक्र है कि मैं उन सालों से बाहर निकल आया हूँ। भगवान का शुक्र है कि मुझे उन्हें फिर कभी नहीं जीना पड़ेगा। मैं एक वयस्क होने और अपने जीवन पर नियंत्रण रखने के लिए खुश हूँ।

विक्रेता मेरे चेहरे पर देखता है और चिल्लाता है, 'मसाला डोसा।' ट्रेन रुकती है। हम
पहले से ही त्रिशूर में हैं। दरवाज़ा खुलता है और एक आदमी अंदर आता है। वह जाना-पहचाना लगता है। वह गलियारे के दूसरी तरफ़, आगे की पंक्ति में एक सीट पर बैठ जाता है।
मैं विक्रेता को दूर भगाता हूँ और खिड़की से बाहर देखता हूँ। बारिश अभी भी अपनी लय में है।

रसोई में विक्रेता की वर्दी की महक हवा में घुली रहती है। मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्यों है कि शायद हमारी किसी भी अन्य इंद्रिय से ज़्यादा, यह गंध की भावना ही है जो हमें समय और दूरी के बारे में बताती है? तेल के गर्म होने की गंध, गहरे तले हुए बेसन की गंध, अतीत को जगाती है। यादें फिर से एक पंक्ति में आ जाती हैं।

मैं पंद्रह साल का था जब अम्मा सेना में भर्ती की खबर लेकर आईं।
'जानू का बेटा मुरली जा रहा है। मेरा सुझाव है कि तुम वहाँ जाओ और उससे सारी जानकारी ले लो। तुम्हें सिपाही के तौर पर नीचे से शुरुआत करनी होगी। लेकिन सेना एक अच्छी माँ है। वह तुम्हारा ख्याल रखेगी। तुम्हारे पिता हमेशा यही कहते थे।'
मैंने उसे घूर कर देखा। क्या वह वाकई ऐसा मानती थी? लेकिन शायद सेना को दोष नहीं देना चाहिए था। मेरे पिता की मृत्यु उनके कुछ भी करने से पहले ही हो गई थी। तब मैंने उनके बारे में सोचा, सूबेदार गोपालन के बारे में। उनके कंधे पर लाल पट्टी, एक सितारा और एक कलाईबंद जो उनके पद को दर्शाता था। उनके जूते चमकते थे, उनके बकल चमकते थे, उनकी खाकी में स्टार्च की सरसराहट होती थी, और जब वे मरे तो मेरे सपने उनके शरीर की तरह ही शिथिल हो गए।

'सिपाही,' मैंने गुर्राहट के साथ कहा। 'मैं सिपाही नहीं बनना चाहता।' मेरी आवाज़ तीखी और ऊँची निकली।

'सिपाही बनकर शुरुआत करने में कोई बुराई नहीं है। वैसे भी तुम सेना के बारे में जानते ही क्या हो? तुम्हारी आवाज़ भी अभी तक नहीं बनी है।' 'मैं नहीं जा रहा,' मैंने कहा।

'तो फिर तुम क्या करने की योजना बना रहे हो? मैं तुम्हें कॉलेज भेजने का खर्च नहीं उठा सकता। पैसे कहाँ हैं? कम से कम सेना में तुम्हारा भविष्य तो है। जो तुम्हारे हाथ में है उसे छोड़कर आसमान में जो है उसे पकड़ने की कोशिश करने का कोई मतलब नहीं है।'
मैंने कहा, 'एक ऐसा भविष्य जिसमें मुझे हर चथन और पोथन को सलाम करना होगा,'

Machine Translated by Google

एक कहावत के साथ अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए।

'क्या तुम अपनी बाकी की जिंदगी अपने चाचा पर गुजारना पसंद करोगे? जाओ, बेटा, सेना में भर्ती हो जाओ। यह हमारे जैसे लोगों के लिए है जो इससे ज्यादा की ख्वाहिश नहीं रख सकते। जब हमारे पास कुछ नहीं होता, तो हम गर्व नहीं कर सकते।' मैं चला गया। मुझे पता था कि मुझे कुछ करना होगा।

अगर मैंने अपना भविष्य तय नहीं किया, तो मेरी माँ मुझे सलामी, पीतल के बकल और अनंत सिपाहीपन की जिंदगी जीने के लिए मजबूर कर देंगी।

मेरी बहन से मदद मांगने का कोई मतलब नहीं था। उसका पति रेलवे में सिर्फ़ क्लर्क था और उनके तीन बच्चे थे। उस शाम मैं अपनी मौसी गौरी से मिलने गया। मैंने वह समय चुना जब मुझे पता था कि उसका पति घर से बाहर होगा। आखिरकार मेरी माँ सही थी। मेरा अभिमान मुझे कहीं नहीं ले जा सकता था। मैंने अभिमान त्याग दिया और अपनी मौसी से उधार माँगा।

'मेरी मां चाहती हैं कि मैं सेना में भर्ती हो जाऊं। सिपाही बन जाऊं। लेकिन मैं जानता हूं कि मैं
मैं बेहतर कर सकता हूँ। मुझे इस बात पर विश्वास है। और मैं हर एक रुपया वापस करने का वादा करता हूँ।'

मेरी चाची ने हाथ बढ़ाकर मेरे कंधे पर थपथपाया। 'क्या बस इतना ही है? तुम्हें कितना चाहिए?' मैंने उन्हें अपना हिसाब दिखाया। मैंने

बचपन में कागज़ के उन छोटे-छोटे टुकड़ों से बहुत कुछ सीखा था। मैंने छोटी-छोटी बातों का हिसाब लगाया था, आंकड़ों को बार-बार जाँचा था। फीस। बस का किराया। किताबें। मैं बहुत सख्त था और खुद को सिर्फ़ बहुत कम चीज़ें लेने की इजाज़त देता था।

'मैं तुम्हें पैसे दूंगी,' उसने कहा। उसने मेरी तरफ़ ऐसे देखा जैसे
कई वर्षों बाद मुझे लगा कि यह पूर्वज्ञान था और मैंने कहा, 'लेकिन...'

मेरी उम्मीदें उस शब्द से लटकी हुई थीं। मैंने सोचा कि वह कितने बहाने बना सकती है: मुझे राधा के पिता से पूछना चाहिए। इस साल हमें बहुत नुकसान हुआ है। तुम्हारी माँ बहुत गुस्सा होगी।

'लेकिन क्या?' मैंने पूछा.

'लेकिन इसके लिए तुम्हें मेहनत करनी होगी। मैं राधा के पिता से कहूँगा कि छुट्टियों में तुम्हारे लिए कुछ काम ढूँढ़ें। मुझे पैसे वापस नहीं चाहिए, लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम समझो कि तुम्हें बिना कुछ किए कुछ पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। और इसी तरह, जब तक तुम्हें यकीन न हो जाए कि तुम्हें बदले में कुछ मिलेगा, तब तक कुछ मत दो। पैसा, वस्तु, चाहे वह कुछ भी हो, तब उसका मूल्य और सम्मान बढ़ेगा।'

मैंने सहमति जताई और आज तक मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। मैं तब तक कुछ नहीं देता जब तक मुझे यकीन न हो कि मुझे बदले में कुछ मिलेगा और मैं तब तक कुछ नहीं मांगता जब तक मुझे यकीन न हो कि मेरे पास देने के लिए कुछ है।

यह कार्किटकम का महीना था। एमटी की कहानी में उन्नी की तरह, मुझे मानसून के हमले का डर था। मुझे डर इस बात से नहीं था कि बारिश हो रही है। मेरे पास सैंडल थे जो मैंने बनाए थे।

Machine Translated by Google

रिसाइकिल किए गए रबर के टायर जो आसानी से पोखर में भीगने पर भीग जाते थे, और पॉलिएस्टर शर्ट जो मेरी पीठ पर सूख जाती थी। मुझे डर था कि कॉलेज के बगल में मुदलियार की चाय की दुकान से एक कप चाय और एक गरमागरम बोंडा की मेरी लालसा होगी। वैसे भी, फिजूलखर्ची का एक छोटा सा काम मेरे मासिक बजट को बर्बाद कर सकता था। मुदलियार के बोंडा मेरे जीवन में अब तक खाए गए सबसे अच्छे थे और कर्किटकम के गीले महीने के दौरान, मैंने बस के किराए और कॉलेज गाइड पर कंजूसी की और जितनी बार संभव हो सके बोंडा और चाय के लिए अपनी भूख मिटाई। पूरे साल, मैं उस भोजन की यादों में खोया रहा।

मैं बेंच पर बैठकर चाय की चुस्की लेता और हर घूंट के बीच में एक छोटा सा टुकड़ा भी लेता। बेसन की परत कुरकुरी और सुनहरी थी और आलू और प्याज की स्टफिंग पूरी तरह से पकी हुई थी। मैं हर घूंट का स्वाद लेता और चाहता कि यह और भी बढ़ता रहे।

मैंने अपनी नज़र खाने पर रखी। मैं किसी की नज़र में नहीं आना चाहता था। मैंने कोई दोस्त नहीं बनाया और न ही बनाना चाहता था। कॉलेज में दोस्ती के लिए साझा करना, साथ मिलकर काम करना ज़रूरी है। कॉलेज के पहले साल में छात्र संघ मेरे पास सदस्यता मांगने आए। स्टूडेंट्स फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडिया। केरल स्टूडेंट्स यूनियन।

कम से कम तीन या चार यूनियनें थीं, जिनमें से प्रत्येक छात्र जीवन को बेहतर बनाने का दावा कर रही थी। उन्होंने कहा कि पहचान के लिए आपको किसी पार्टी से जुड़ना होगा। आपकी राजनीति क्या है, उन्होंने पूछा। मैंने पूछा, जीवनयापन। क्या आपकी यूनियन में शामिल होने से मेरी फीस भरने में मदद मिलेगी, मैंने पूछा। लेकिन इसके और भी फायदे हैं, उन्होंने कहा। मैंने कहा, मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे छात्र राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं है।

मेरे विश्वविद्यालय के वर्ष बिना किसी स्मृति के बीत गए, सिवाय उस स्मृति के जो
मुदलियार के बोंडास.

कभी-कभी मैं किसी बैच-मेट या जूनियर से मिल जाता हूँ, और फिर मुझे याद आता है कि मैं भी उसी कॉलेज में पढ़ा हूँ। एक बैच-मेट पास की एक पंचायत का अध्यक्ष है। मैं उसे शोरनूर में कभी-कभी देखता हूँ। एक और, एक लड़की, एक लेखिका है। उसकी किताबों का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है, मैं पढ़ता हूँ। मैं उसका चेहरा अख़बार में देखता हूँ और सोचता हूँ कि क्या वह भी मुदलियार की बेंच पर बैठती थी। एक अख़बार के लेख में, उसने एक बार उनके बोंडा के लिए बहुत प्यार जताया था। उनमें से कोई भी मुझे नहीं जान पाएगा, मैं एक आदमी बन गया हूँ। मैं केवल लिनेन पहनता हूँ, और सबसे गीले दिनों में भी, मैं अपने पैरों में चमड़े के जूते पहनता हूँ। मेरे पास एक AMEX गोल्ड कार्ड और ब्लूटूथ वाला एक सेलफ़ोन है। आईने में, और दूसरों की आँखों में, मैं एक ऐसे आदमी को देखता हूँ जिसे भूख का डर नहीं है या जिसे अपने अभिमान को निगलने की बेइज्जती नहीं झेलनी पड़ती।

एक विक्रेता मेरी सीट के पास रुकता है। वह घुटी हुई आवाज़ में चिल्लाता है, 'पज़म पोरी।'

मैं यादों के सुनहरे भूरे आवरण से बाहर निकलता हूँ और केले के पकौड़े देखता हूँ। वे बहुत ही आकर्षक लगते हैं। मोटे, तले हुए आटे के टुकड़ों के साथ

Machine Translated by Google

सुनहरा कुरकुरा.

मैंने देखा कि गलियारे के उस पार वाला आदमी भी उनकी तरफ देख रहा है। मुझे पता है कि मुझे उसे पहचान लेना चाहिए।

एक और विक्रेता आता है। वह चिल्लाता है, 'ब्रेड ऑमलेट', एक और संस्करण में
ऐसा लगता है कि सभी रेलवे विक्रेता इसी गला घोंटने वाली आवाज में अपनी आवाज ढालते हैं।

मैं अपनी घड़ी देखता हूँ। यह एक लोअर एंड रोलेक्स है, लेकिन यह रोलेक्स है। कोच्चि तक पहुँचने में एक घंटा और लगेगा। लंच काफ़ी समय पहले हो चुका था। मेरा पेट गुड़गुड़ाने लगा। मैं एक फ्रिटर की ओर इशारा करता हूँ और फिर दूसरे विक्रेता से ब्रेड ऑमलेट माँगता हूँ। मैं कहता हूँ, 'चाय वालों में से किसी को यहाँ आने के लिए कहो।'

विक्रेता मेरी बोली लगाने के लिए दौड़ पड़े। मुझे लगा कि उस आदमी की नज़र मुझ पर है, और मैं भी उस पर नज़र रख रहा हूँ।
ट्रे पर रखी प्लेटें और पेपर नैपकिन देखकर मुझे एहसास हुआ कि वह कौन है।

मैं उसे कैसे नहीं पहचान पाया? वह एक सुंदर शरीर वाला आदमी है जिसका चेहरा चाँद की सतह जैसा है। फिल्म स्क्रीन पर, आप इनमें से हर एक गड्ढे को बड़ा करके देखते हैं। मुझे लगता है कि गेंद के साथ उसके पैर के हर संपर्क के लिए एक गड्ढा है।

आई.एम. विजयन। फुटबॉल हीरो से फिल्म स्टार बने। मैंने उन्हें खेलते और अभिनय करते देखा है। वे मैदान पर शानदार हैं और स्क्रीन पर भी सक्षम हैं, लेकिन मैं उनकी दृढ़ता की सबसे अधिक प्रशंसा करता हूँ। वे एक जीवित व्यक्ति हैं।

मैं कोयंबटूर में उस दिन स्टेडियम में था जब वह संतोष ट्रॉफी में केरल के खिलाफ खेल रहा था। मैं सेल्समैन के एक समूह के साथ था, जो उसके खून के प्यासे थे। उन दिनों मैं तमिलनाडु क्षेत्र को कवर करता था।

उनमें से एक ने गुर्राते हुए कहा, 'वह देशद्रोही है।'
एक अन्य ने झल्लाते हुए कहा, 'वह केरल के खिलाफ कैसे खेल सकता है?'
मैंने कहा, 'इस आदमी को एक मौका दो।' 'उसने किसी कारण से केरल की टीम छोड़ी होगी।'

'उसके पास क्या कारण हो सकता है? लालच, यही तो है,' किसी और ने कहा।
मैंने पूछा, 'क्या आप उस व्यक्ति को लालची कहते हैं जो अपनी संभावनाओं को बेहतर बनाना चाहता है?'
वे इतने आलोचनात्मक कैसे हो सकते हैं?

जब वह केरल के खिलाफ पेनल्टी शूट करने में विफल रहा, तो मेरे साथी उत्साह में भर गए। विजयन विफल हो गया था। देशद्रोही को सजा मिली। उन्होंने हूटिंग की, उपहास किया और एक-दूसरे की पीठ थपथपाई। मैं भी उनके साथ शामिल हो गया। ऐसा न करना भीड़ के गुस्से का कारण बनता। लेकिन मुझे उस आदमी पर दया आ गई। मैंने उसे वहीं खड़े देखा, उसकी आँखें झुकी हुई थीं। बस एक पल के लिए उसने ऊपर देखा, इस सामूहिक घृणा को समझने में असमर्थ। मैंने क्या गलत किया, उसकी आँखें भीड़ से पूछ रही थीं। यह एक खेल है, युद्ध नहीं। मैं एक फुटबॉल खिलाड़ी हूँ, दुश्मन नहीं।

मैं उसकी प्रोफ़ाइल देखता हूँ। क्या मुझे उसे अपना परिचय देना चाहिए?
शायद मैं उसे रिसॉर्ट में आमंत्रित कर सकूं। मैं सोच रहा हूं कि मैं उसे कैसे संबोधित करूं।

Machine Translated by Google

विजयन बहुत अहंकारी होगा। सर बहुत चापलूस होंगे। मैं उनकी तरफ देखता हूँ।
उसकी आँखें बंद हैं। मैंने उसे परेशान न करने का फ़ैसला किया। मेरे पास काफ़ी समय है।

मेरा फोन बजता है। एक बिज़नेस कॉल। मैं भौंककर बात को शांत करता हूँ। 'जब आपकी बोली ज़्यादा यथार्थवादी होगी, तब हम बात करेंगे।' मैं धीरे-धीरे अपना नाश्ता खाता हूँ। मेरा

दिमाग घूम रहा है। क्या यह योजना बनाना है जिसे राधा महत्वाकांक्षा कहती है? क्या यह आगे की ओर देखना है जिसे मेरे बिज़नेस पार्टनर कुशाग्रता कहते हैं?
अगर मेरे पास इनमें से कोई भी नहीं होता, तो इस क्षेत्र के कई उद्यमों की तरह रिसॉर्ट को भी बंद करना पड़ता। मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा। मेरा रिसॉर्ट ही मेरा साम्राज्य है।

चार साल पहले, जब मैंने सुना कि नीला नदी के किनारे स्थित समर पैलेस बिक्री के लिए है, तो मैंने इसे खरीदने के लिए पैसे जुटाए। मैंने अपनी सारी बचत लगा दी और जितना हो सका, उतना उधार लिया। मेरे ऊपर इतना कर्ज है कि आम आदमी अपनी बाकी की जिंदगी में अपंग हो जाएगा। लेकिन मैं खुद को संभाल लेता हूं। मैं हमेशा ऐसा ही करूंगा। मैं एक उत्तरजीवी हूं। रीडर्स डाइजेस्ट के एक पुराने अंक से मैंने एक मंत्र बनाया है जिसके साथ मैं अपना दिन शुरू करता हूं। मैं हर सुबह शीशे के सामने खड़ा होता हूं और अपनी छवि की आंखों में झांकता हूं, मैं मुंह से कहता हूं, 'हर दिन और हर तरह से, मैं बेहतर और बेहतर होता जा रहा हूं।' मैं इस पर विश्वास करता हूं। मुझे ऐसा करना ही होगा, नहीं तो मैं डूब जाऊंगा।

मुझे आश्चर्य है कि अगले कुछ दिन कैसे होंगे। मुझे कई काम निपटाने हैं। एक टूर ऑपरेटर के साथ मीटिंग। एक वेबसाइट डिज़ाइनर के साथ चर्चा। नेहरू बोट रेस में साइट पर विज्ञापन के बारे में प्रारंभिक चर्चा। किताब के शौकीन शंकर के साथ मीटिंग। पलक्कड़ के एक होटल में उनकी किताबों की दुकान हुआ करती थी और अब एर्नाकुलम के एमजी रोड पर एक नई दुकान है।

हमारे पास पूरी तरह से किताबों की दुकान खोलने के लिए जगह या रिवाज नहीं है, लेकिन एक कियोस्क बहुत अच्छा काम करेगा। और फिर मुझे आर्ट ऑफ लिविंग पर एक परिचयात्मक व्याख्यान में भाग लेना है।

मेरा पूरा कार्यशाला में भाग लेने का कोई इरादा नहीं है। मैं अपने जीवन से संतुष्ट हूँ, लेकिन अगर सुविधाकर्ता सहमत हों, तो यह रिसॉर्ट में एक बड़ा आकर्षण होगा। मैं इसे पैकेज में शामिल कर सकता हूँ। मैं देख सकता हूँ कि यह मेरे विदेशी मेहमानों को कितना पसंद आएगा। मुझे इस भगवान के अपने देश में उन्हें कुछ देना है। वे इसे भगवान का अपना देश कहते हैं, लेकिन भगवान भी छुट्टी मनाने के लिए राज्य के मेरे हिस्से में नहीं आएंगे। दक्षिणी केरल के रिसॉर्ट्स में बहुत कुछ है। बैकवाटर। करीमीन।

चीनी मछली पकड़ने के जाल। समुद्र तट। वृक्षारोपण। वन्यजीव अभयारण्य। हमारे यहाँ क्या है?

एक नदी जो ज़्यादातर सूखी है, और एक छोटा रेलवे शहर। जब मैं इटली में पर्यटन के बारे में शोध कर रहा था, तो एक बार नेट पर मेरी नज़र एक मुहावरा पर पड़ी। एग्रोटूरिज्मो।
एक पल के लिए मुझे लगा कि कहीं मैं सोने की खान पर तो नहीं पहुँच गया हूँ। फिर मैंने इस विचार को छोड़ दिया। इटली में कृषि पर्यटन कारगर हो सकता है। अंगूर तोड़ना या कटाई करना

Machine Translated by Google

नीले समशीतोष्ण आकाश के नीचे फल उगाना छुट्टियों का काम था। कोई किसान बनकर खेल सकता था। मैं अपने मेहमानों से कैसे कह सकता था कि वे तपती धूप में घुटनों तक कीचड़ में खड़े होकर धान के पौधों को साफ-सुथरी कतार में रोपें? यह काम नहीं करेगा।

मंदिर सर्किट पर्यटकों के लिए एक आदर्श प्रस्थान बिंदु हो सकता था। मेरे पास इसके लिए एक पंक्ति भी थी: भगवान की अपनी राजधानी। गुरुवायुर, कदम्पुझा, वडक्कनाथन, थिरुविलुमाला, मोलयान कावु, पदिरीकुन्नाथु माना - इतने सारे मंदिर हैं कि एक दिन की यात्रा के रूप में जाया जा सकता है, लेकिन वे गैर-हिंदुओं को अंदर न जाने देने के बारे में इतने जिद्दी हैं कि इसके लिए आर्ट ऑफ लिविंग या ऐसी ही कोई चीज होनी चाहिए।

एसपी के रिश्तेदार जो बेंगलुरु में रहते हैं, इस बारे में बात करना बंद नहीं कर सकते। उन्होंने कहा, 'इस समय हमें अपनी मानसिक शांति बनाए रखने के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत है। गुरुजी ऐसी ही आस्था जगाते हैं।'

मैंने सफ़ेद वस्त्र पहने, मुलायम आवाज़ वाले और फैली हुई भुजाओं वाले उस आदमी के बारे में सोचा। उसकी पहुँच अकल्पनीय थी। यहाँ तक कि कॉर्पोरेट प्रमुख और व्यवसायी दिग्गज भी उसके सामने आत्मसमर्पण कर देते थे। मैं देख सकता हूँ कि उसकी आँखें दयालु हैं। लेकिन उन्होंने उसमें या उसकी शिक्षाओं में क्या देखा?

'लेकिन यह क्या है?' मैंने अचानक पूछा, मुझे लगा कि यह व्यवसाय का अवसर है। आध्यात्मिकता अभी भी एक बड़ा आकर्षण है। वास्तव में, यह रिसॉर्ट के लिए एक शानदार नारा होगा। नीला के पास। जीने की कला।

आदमी के चेहरे पर एक सुखद मुस्कान आ गई। 'मैं इसे बहुत सरलता से बताता हूँ। यह आपको सभी अप्रिय चीजों से दूर रखने और केवल सुखद और सकारात्मक चीजों के बारे में सोचने में मदद करता है।' 'मुझे और बताओ।' 'आप किसी कार्यशाला में भाग क्यों नहीं लेते और खुद ही पता लगा लेते?' उसने कहा।

मैंने बड़बड़ाते हुए कहा। मैंने इसे नहीं खरीदा, लेकिन मुझे पता था कि मेरे मेहमान इसे खरीद लेंगे। इसलिए मैंने परिचयात्मक व्याख्यान में भाग लेने और वहीं से इसे आगे बढ़ाने का फैसला किया।

मैं जानता हूँ कि अगर मेरे अतीत की अप्रियताएँ मुझे आगे नहीं बढ़ातीं, तो मैं जहाँ था, वहीं रहता। पचास साल की उम्र में भी दूध बेचता या किसी छोटी सी दुकान में सेल्स बॉय का काम करता।

मैं उस आदमी की बात याद करता हूँ: अतीत को भूल जाओ और केवल वर्तमान के बारे में सोचो।
जब कोई अप्रिय विचार मेरे मन में आता है, तो मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और उसे जाने देने की कोशिश करता हूँ। यह आमतौर पर काम करता है।

लेकिन दो रात पहले, मैं यह सोच कर खुद को रोक नहीं पाया कि साहिव ने किस तरह राधा को अपनी आँखों से देखा। मुझे यह अच्छा नहीं लगा। वह आदमी एक कामुक जानवर है, कोई भी उसे देख सकता है।
उसे अपनी मुस्कुराहट और शर्मीली क्षणभंगुर निगाहों से उसकी नज़रों का स्वागत क्यों करना पड़ा? हर बार जब मैं उनके साथ बैठता था, तो मुझे अलग-थलग महसूस होता था। मैं उसके कंधे पर हाथ रखकर कहना चाहता था, नमस्ते, मैं तुम्हारा पति हूँ और कोने से वो नज़रें

Machine Translated by Google

तुम्हारी आंखें और तुम्हारे होठों का फूलना, सब कुछ मेरा है।

लेकिन मैंने अपनी जुबान पर काबू रखा, क्योंकि मुझे पता था कि अगर मैं उसे डांटूंगा तो वह
वे ठीक वैसा ही करते रहते हैं, बस मुझे परेशान करने के लिए।

मैं सोच रहा था कि क्या मैं अंकल से बात कर सकता हूँ। बूढ़ा आदमी अजीब था। लेकिन वह आपकी कही हर बात को बिना कोई राय दिए सुन लेता था, और ऐसा ज़्यादातर श्रोताओं में दुर्लभ था। लेकिन मैं उसे क्या बता सकता था? कि मुझे क्रिस पसंद नहीं था? कि मुझे उसका मेरी पत्नी को देखने का तरीका पसंद नहीं था? या कि मुझे राधा का उसे इतना देखना पसंद नहीं था? यह मेरे कानों को भी दयनीय लगा।

जब राधा कथकली प्रदर्शन से घर लौटी, तो आधी रात के करीब थी, और मेरे अंदर कुछ टूट गया।

नौकरों में से एक ने उसके लिए दरवाज़ा खोला। मैंने हमारे बेडरूम का दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी।
वह चुपचाप अंदर आई। बिस्तर के उस तरफ़ का लैंप जल रहा था। उसने अपनी साड़ी उतारी और उसे कुर्सी की पीठ पर रख दिया। फिर वह अपने गहने उतारने लगी। 'मत करो,' मैंने कहा।

वह झटके से मुड़ी। उसकी आवाज़ में आश्चर्य था। 'मुझे लगा तुम सो रहे हो।' 'मैं नहीं सो रहा हूँ।' उसने अपने हाथ कानों पर रखे।

'मत करो,' मैंने कहा। 'यहाँ आओ।' वह

बिस्तर पर बैठ गई। मैंने उसके कंधे को छुआ। उसने जो ब्लाउज पहना था, उसका गला गहरा था। मैंने उसकी पीठ पर अपनी उंगली फिराई। उसने मुझे झटक दिया। 'नहीं, श्याम, मेरा मूड नहीं है,' उसने कहा।

'मैं तुम्हें मूड में ला दूंगा,' मैंने कहा और अपनी हथेलियां उसके स्तनों पर रगड़ दीं।
मैंने उसके कान को सहलाया। उसकी बाली मेरी जीभ से टकराई।

उसने मुझे धक्का देकर दूर कर दिया। 'मैंने तुमसे कहा था कि मैं नहीं चाहती।' 'तुम
मेरी हो,' मैंने कहा।

'तुम नशे में हो,' उसने कहा। 'और मैं कोई खूनी वस्तु नहीं हूँ।' मुझे लगा कि मेरे अंदर
एक गहरा गुस्सा इकट्ठा हो रहा है। 'तुम मेरी पत्नी हो।' मेरी आवाज़ ऊँची हो गई।
'क्या तुम्हें चिल्लाना पड़ेगा? नौकर हमारी आवाज़ सुन लेंगे।' उसकी आवाज़ धीमी थी।
'तुम मेरी पत्नी हो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे कुछ सम्मान दो।' 'तुम मुझसे क्या करवाना
चाहती हो? तुम्हारे पैर चाटना?' 'बस मुझे कुछ सम्मान दो। तुम
अजनबियों के साथ यहाँ-वहाँ घूमती हो, आधी रात को घर आती हो और उम्मीद करती हो कि मैं कुछ न कहूँ। कोई भी पति यह बर्दाश्त नहीं करेगा। तुम मुझे क्या समझती हो? एक कमबख्त हिजड़ा?' 'श्याम।' वह खड़ी हो गई। 'मैं यह नहीं सुनूँगी।' 'तुम कमबख्त सुनोगी,' मैंने कहा। मैं खड़ा हो गया और उसे धक्का देकर नीचे
गिरा दिया। 'मेरे पास मेरा अधिकार है।

Machine Translated by Google

'अधिकार,' मैंने कहा.

'क्या मुझे 'नहीं' कहने का अधिकार नहीं है?' उसने उग्रता से पूछा, और उठने का प्रयास करने लगी।

'आज रात नहीं,' मैंने कहा और उसे तकिए पर वापस धकेल दिया।

मैंने महसूस किया कि वह कठोर हो गई है। वह वहाँ लकड़ी के टुकड़े की तरह लेटी हुई थी, मेरी किसी भी तरह की हरकत से अछूती। लेकिन मैं उसकी परवाह नहीं कर सकता था। मैंने उसके पैरों को घुटनों से अलग किया और उसकी पैंटी को फाड़ दिया। वह सूखी और शुष्क थी। मुझे लगा कि मेरे दिमाग में फिर से गुस्सा छा गया है। मैंने अपने हाथ में थूका और उसे अपने थूक से सना दिया। 'तुम मेरी हो, क्या तुम मेरी बात सुन रही हो?' मैंने बुदबुदाया।

फिर मैंने उसे चोदा। प्यार के बजाय बर्दाश्त किए जाने पर मुझे जो नाराजगी महसूस हुई, जो तड़प मैंने झेली थी, इन आठ सालों का अकेलापन, सब मिलकर उसे पाने की तीव्र इच्छा बन गई। उसे अपना बनाने के लिए। भीतर तक पहुँचने और उस उदासीनता की परत को फाड़ने के लिए जो हर बार जब मैं उसे अपनी बाहों में लेता था तो उसकी आँखों पर छा जाती थी।

'तुम मेरी पत्नी हो, तुम मेरी हो,' मैंने कहा, और उसकी आँखों में देखा कि क्या मैं
अंततः तोड़ने में कामयाब रहे.

सुबह-सुबह मैंने उसे झूले वाली सीट पर सोते हुए पाया। उसे झूला वाली सीट कभी पसंद नहीं आई थी। जब उसे हमारे घर लाया गया था, तो वह उसके लाल और सफ़ेद कैंडी-धारीदार कुशन और शामियाना को देखकर हँसी थी। 'यह किसी पुरानी तमिल फिल्म की तरह लग रहा है,' उसने व्यंग्य किया था।

मैं चाहता था कि इसे सामने वाले बरामदे में रखा जाए।

'तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है,' उसने कहा।

'क्यों, इसमें क्या गड़बड़ है? मुझे तो यह बहुत बढ़िया लग रहा है,' मैंने फ्रेम को छूते हुए कहा।
एक चमकदार सफेद रंग.

'यह किसी स्टेज सेट की तरह दिखता है। यह शर्मनाक है।' और ऐसा ही हुआ
घर के पूर्वी हिस्से में एक कोने में रख दिया गया।

मैंने सोचा कि उसे जगाकर अपने बिस्तर पर ले जाऊँ, लेकिन मुझे डर था कि इससे हंगामा मच जाएगा। इसलिए मैंने उसे वहीं छोड़ दिया।

जब मैं उठा, तो वह मेरे बगल में थी, पूरी तरह से खुश और चहकती हुई। और अचानक मुझे लगा कि वह वास्तव में यही चाहती थी: एक अच्छी चुदाई। यह सोचकर मुझे शर्म आती है, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि यह सच है। महिलाओं को महिला होने का एहसास कराया जाना, उन पर हावी होना और उन्हें उनकी जगह पर रखना पसंद है। यहाँ तक कि मेरी राधा को भी। तो आखिरकार मैं गलत नहीं था।

सहज रूप से, मुझे पता था कि मुझे क्या करना है। अब मुझे पता है कि मैं और क्या करूँगा। मैं उसके लिए पन्ना की एक जोड़ी बालियाँ खरीदूँगा। हरे पत्थरों की चमक उसे खुश कर देगी।

कौन सी महिला आभूषणों की चमक का विरोध कर सकती है?

Machine Translated by Google

फ़ुटबॉलर की आँखें खुली हुई हैं। मैं आगे झुकता हूँ और कहता हूँ, 'माफ़ कीजिए...' वह मुड़ता है। वह प्रसन्न दिखता है। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे पहचाना जाना पसंद है। झूठी विनम्रता का कोई दिखावा नहीं। मुझे लगता है कि मैं उसे और भी ज़्यादा पसंद करता हूँ।

Machine Translated by Google

राधा

अभी दोपहर के साढ़े तीन बजे हैं, लेकिन घर का यह कोना अभी से छाया में नहा गया है। बारिश फिर शुरू हो गई है। श्याम थोड़ी देर पहले ही चला गया था।
दो दिनों में पहली बार मैं सुरक्षित महसूस कर रहा हूं।

झूले की सीट चरमराती है। मैं उसे स्थिर करने के लिए फ्रेम पर हाथ रखता हूँ। मुझे यह या वह कोना कभी पसंद नहीं आया जिसमें यह बैठा है। अब यह घर का एकमात्र हिस्सा है जहाँ मैं रह सकता हूँ। दो रातें बीत चुकी हैं जब श्याम ने मेरे शरीर को लूटा, ज़ब्त किया और ना कहने का मेरा अधिकार छीन लिया। समय ने इसे बेहतर नहीं बनाया है, बल्कि बदतर बना दिया है।

बलात्कार। यह शब्द फर और नुकीले दांत, पंजे और पंजे उगाता है। इसकी आंखें ठंडी हैं और इसकी जीभ कांटेदार है। इसका स्पर्श चिपचिपा है और इसकी गंध पसीने, अपशिष्ट, बल और क्रूरता की सड़ांध है। मुझे लगता है कि मेरे मुंह में पित्त की बाढ़ आ गई है।

बलात्कार। मैं फिर से शब्दकोश देखता हूँ। बलात्कार: एक संज्ञा। किया गया यौन कृत्य
बलपूर्वक, विशेषकर महिला पर।

बलात्कार की कोई श्रेणी नहीं होती। बलात्कार बलात्कार ही होता है, भले ही वह विवाह द्वारा पवित्र हो। और बलात्कारी को छाया से उभरने वाला कोई अजनबी नहीं होना चाहिए। वह आपका पति भी हो सकता है। श्याम ने जो किया वह मेरा बलात्कार करना था।

मैं अपनी आँखें बंद कर लेती हूँ, खुद को भूलने की कोशिश करती हूँ। लेकिन मैं उसकी आँखों में दिख रहे भावों को देखकर अपना दिमाग बंद नहीं कर पाती हूँ, क्योंकि उसका शरीर मेरे ऊपर उछल रहा था और उछल रहा था। उसकी आँखें जल रही थीं और जल रही थीं। वे कह रही थीं: तुम मेरी हो, तुम मेरी हो। श्याम की आँखों ने मुझे उसके शरीर से ज़्यादा प्रभावित किया।

बाद में, उसने मुझे अपनी बाहों में ऐसे खींचा जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसके होंठ मेरे माथे को छू गए। मैं सिहर उठी। मैंने उसकी सांसें स्थिर होने का इंतज़ार किया, फिर मैं अपनी तरफ़ मुड़ी और एक गेंद की तरह सिकुड़ गई। मैंने अपने घुटनों को अपनी छाती में दबा लिया और अपनी उंगलियाँ अपने मुँह में डाल लीं ताकि मैं रोते समय कोई आवाज़ न करूँ।

मुझे बहुत दर्द और चोटें महसूस हुईं, मेरे साथ मारपीट की गई और मुझे लूटा गया। क्या यह बलात्कार है, मैंने खुद से बार-बार पूछा।

फिर मुझे लगा कि मैं अब और वहाँ नहीं लेट सकता। इसलिए मैं उठा और एक शांत कोने की तलाश में चला गया जहाँ मैं अपनी बाहों को अपने चारों ओर लपेट सकता था और ज़ोर से रो सकता था। मैं एक कमरे से दूसरे कमरे में गया। मैं शब्दकोश खोजने के लिए कार्यालय के कमरे में रुका। मैंने सोचा कि अगर मुझे पता चल जाए कि यह क्या है, तो मैं बेहतर महसूस करूँगा। अगर मैं इस हमले को एक नाम दे सकता हूँ, तो मुझे पता चल जाएगा कि इससे कैसे निपटना है।

मैं सुबह होते ही उठ जाती और फिर से बिस्तर पर लेट जाती। मेरा मन पक्का हो चुका था। मैं दिखावा करती कि कुछ हुआ ही नहीं। मैं उसे उसकी मर्जी थोपने के सुख से वंचित कर देती।

Machine Translated by Google

हम एसपी की बेटी की शादी में गए थे। मैंने रेशमी साड़ी पहनी थी और गहने और बालों में फूल लगाए थे। मैंने अपनी चूड़ियों को अपने हाव-भाव गाने दिए। मेरे पायल की घंटियाँ मेरे कदमों को अपने कोरस से सजा रही थीं। मैंने महसूस किया कि श्याम की आँखें मुझ पर हैं, देख रही हैं। अगर उसे लगता है कि उसने मुझे मजबूर किया है, तो वह गलत था। मैंने उल्लास और जीवन का दिखावा किया और कहीं न कहीं मेरे भीतर दर्द की जड़ बढ़ती गई।

उस शाम मैंने क्रिस को देखा और मुझे शांति की एक किरण महसूस हुई।
मुझे लगता है कि वह मेरा मालिक है, लेकिन वह नहीं था। मैं कभी उसका नहीं था। और मैं कभी उसका नहीं होऊंगा।

मेरी आँखें क्रिस से बोलीं: मुझे याद है। क्या तुम्हें याद है?

उसकी आँखों ने उत्तर दिया: हाँ, मैं करता हूँ।

कल, मेरी आँखें कहती हैं, कल और भी कुछ होगा। हम बस यही उम्मीद कर सकते हैं। यही मेरी प्रार्थना है।

मुझे पता है, उसकी आँखों ने पुष्टि की।

उस रात मैं अजीब तरह से शांत महसूस करते हुए घर गया। श्याम ने मेरे चेहरे की तरफ देखा और कुछ कहने लगा। फिर वह रुक गया।

'तुम क्या कहने वाले थे?' मैंने शांत स्वर में पूछा।

वह घूरता रहा। पूरे दिन उसे क्रोध की उम्मीद थी, लेकिन मुझे क्रोध नहीं आया। घृणा, हाँ, और घृणा। लेकिन क्रोध नहीं।

मैंने उसका चेहरा साफ देखा। जब वह घर से निकला, तो श्याम को लगा कि सब ठीक है। मैंने उसे यह विश्वास दिलाया। क्योंकि अब क्रिस वहाँ था।

मैंने झूले वाली सीट को अपने ऊपर ले लिया। मैं क्रिस के बारे में सोचता हूँ। जब मैं उसके बारे में सोचता हूँ, तो मुझे श्याम के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ती। सब कुछ खत्म हो जाता है, सिवाय उस लंबे समय तक चलने वाले पल के जब क्रिस ने मुझे अपनी बाहों में जकड़ रखा था जैसे कि मैं उसका कीमती उपकरण हूँ।

फ़ोन बजता है। यह क्रिस है।

मुझे नहीं पता कि फ़ोन पर उससे क्या कहना है। उस रात के बाद से हम अकेले नहीं रहे।

'क्या आप आज शाम को रिसॉर्ट में आएंगे?' वह पूछता है।

मैं एक क्षण के लिए हिचकिचाया और कहा, 'हाँ।'

'ऐसी स्थिति में, क्या तुम मेरे साथ डिनर करोगे? मुझे यह बहुत पसंद आएगा।' मैं सोचती हूँ कि जब मैं उससे मिलूँगी तो

उससे क्या कहूँगी। फिर मैं सोचती हूँ, ऐसा नहीं है।
जब समय आएगा तो मुझे पता चल जाएगा कि क्या करना है।

शशि अपना शरीर घुमाता है ताकि वह मेरा चेहरा देख सके। 'क्या तुम चाहोगी कि मैं रुक जाऊँ?' वह पूछता है। 'कोई परेशानी नहीं है, सच में। सर के चले जाने के बाद, मुझे तुम्हें यहाँ छोड़ना ठीक नहीं लग रहा।' 'कोई बात नहीं,' मैं कहता हूँ। 'मैं कल सुबह ही वापस आऊँगा। चाचा की तबियत ठीक नहीं है। मुझे

यहाँ रहना है।'

Machine Translated by Google

शशि ने भौंहें सिकोड़ीं। 'क्या यह बेहतर नहीं होगा कि आप उसे घर ले जाएं?' 'वह जहां है, वहां से

हिलने से इनकार करता है,' मैंने कहा। मेरे मुंह से झूठ निकल गया। मैंने एक और झूठ बोला। 'उसकी छत टपकती है और उसे डर है कि अगर वह बाहर रहा तो बारिश में घर में पानी भर जाएगा।' और फिर एक और। 'इसके अलावा, उसका तोता भी है।'

शशि कुछ नहीं कहता। लेकिन मैं देख सकती हूँ कि वह खुश नहीं है। मैं अपने मुँह से निकले झूठ को निगल जाती हूँ। मुझे उसे मनाने की ज़रूरत नहीं है। वह ड्राइवर है, मेरा पति नहीं।

वह कहता है, 'मैं बैग लेकर आऊंगा।'

'इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं इसे खुद ले जा सकता हूँ,' मैं कहता हूँ और कार से बाहर निकलता हूँ। 'सुबह नौ बजे तक यहाँ पहुँच जाना।' जैसे ही मैं चाचा के घर में जाता हूँ, मुझे

कार के जाने की आवाज़ सुनाई देती है।

चाचा भी बरामदे में मेरे साथ आ गए। मालिनी अपने पिंजरे के अंदर एक पैर पर उछल रही है।

मैंने पूछा, 'आपने उसे अभी तक अपने साथ क्यों नहीं लिया?'

वह चीखकर स्वागत करती है। मैं उसके पिंजरे की सलाखें थपथपाता हूँ। मैं कहता हूँ, 'बुरी लड़की है।'

चाचा मेरी ओर देखते हैं। उनकी आँखें सवाल करती हैं कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ। मैं कुर्सी पर बैठ जाता हूँ। मैं अपना सिर पीछे की ओर झुकाता हूँ और फिर मैं हवा में आवाज़ लगाता हूँ। 'मैंने सोचा कि मैं रात यहीं बिताऊँगा। श्याम चला गया है।' वह एक खंभे के सहारे झुक जाता है। मैं खड़ा हो जाता हूँ।

'तुम बहुत बेचैन हो। तुम्हारे दिमाग में क्या है?' वह पूछता है।

'कुछ नहीं,' मैं मुस्कुराता हूँ। 'कुछ भी नहीं।' फिर मैं गहरी साँस

लेता हूँ और कहता हूँ, 'मैं रिसॉर्ट जा रहा हूँ। मैंने सोचा था कि मैं वहाँ जाऊँगा।

क्रिस के साथ डिनर करना है। मैं थोड़ी देर से वापस आऊँगा। क्या तुम्हें कोई आपत्ति है?'

उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं है। वह कहता है, 'मैं दरवाज़ा खुला छोड़ दूँगा। मैं तुम्हारे लिए सामने वाले कमरे में बिस्तर लगा दूँगा।'

मैं सिर हिलाता हूं और अपना रात भर का बैग रखने के लिए अंदर चला जाता हूं।

जब मैं बरामदे में वापस आता हूँ, तो देखता हूँ कि वह अभी भी खंभे की तरफ पीठ करके खड़ा है। उसकी आँखें मेरी तलाश में हैं। वे कहते हैं, सावधान रहना।

सीढ़ियों के ऊपर पहुंचकर मैं मुड़ता हूं और पूछता हूं, 'सादिया कौन है?'

वह कहते हैं, 'मेरी मां।'

मुझे लगता है कि मेरी आँखें चौड़ी हो गई हैं, मेरे जबड़े ढीले पड़ गए हैं। चाचा मेरे पिता के सौतेले भाई हैं। मैं

मैंने हमेशा यही मान लिया था कि वह मेरे दादा की पहली शादी से पैदा हुआ बच्चा है।

'मुझे नहीं पता था...' मैंने कहा.

'मेरे पिता, मेरे भाइयों और तुम्हारी दादी को छोड़कर किसी ने भी ऐसा नहीं किया। और डॉक्टर ने भी। मेरे पिता ने अपने अतीत को दफनाना पसंद किया।' उसका चेहरा विकृत हो गया।

'और मेरा।' मैंने देखा

कि वह खुद को संभाल रहा है। मैंने देखा कि उसके चेहरे से तनाव गायब हो गया है। 'मेरे पिता, तुम्हारे दादा' - उसके हाथ मेरे हाथों की तलाश में हैं। ऐसा लगता है कि उसे कुछ पकड़ने की ज़रूरत है

Machine Translated by Google

खुद को यह भरोसा दिलाने के लिए कि वह दफन अतीत के बावजूद मौजूद है, गर्मजोशी और जीवंतता से भरा हुआ - 'अक्सर कहा जाता है कि अतीत को दफन कर देना बुद्धिमानी है। यह जीवन के साथ समझौता करने का उनका तरीका था। पश्चाताप और अफसोस को दबाने के लिए। कई बार मुझे लगता है कि मेरे पिता बहुत बुद्धिमान व्यक्ति थे। भूल जाओ, भूल जाओ... हमें ऐसा करना चाहिए अगर हम अपने सपनों और उम्मीदों से चिपके रहना चाहते हैं। लेकिन आप देखिए, मैं भी कौन हूँ। एक वेशकारण। एक अभिनेता। मेरा हर किरदार जीवन के बारे में मेरी जानकारी से प्रभावित होता है, इसलिए मैं अपने अतीत को कैसे भूल सकता हूँ या दफना सकता हूँ? यही मेरी पहेली है। लेकिन आपको, आपको जो हो चुका है उसे अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए।'

वह मेरे हाथ छोड़ देता है। फिर वह अपना दाहिना हाथ एक विस्तृत मुद्रा में चलाता है।
'यह देखो,' वह कहता है, अपनी मध्यमा उंगली और अंगूठे को एक जोरदार क्लिक में मिलाते हुए। 'मुझे बताओ, अब क्या है? वह विचार जो मस्तिष्क में आवेग के रूप में दौड़ा, या उंगलियों की हरकत, या त्वचा के खिलाफ त्वचा का संपर्क, या फंसी हुई हवा का बाहर निकलना, या उस बाहर निकलने की प्रतिध्वनि... अब क्या है? यह सब, या केवल क्लिक?' मैं उसके इशारे को दोहराता हूँ। 'मुझे यकीन नहीं है...' 'क्लिक अब है। यही आपको स्वीकार करने की आवश्यकता है। पहले और बाद का कोई महत्व नहीं है।' वह फिर से मेरे हाथों को अपने हाथों में लेता है। मुझे एहसास हुआ कि इसमें कहीं

न कहीं एक कोडित संदेश है। एक संकेत जिसे मुझे पढ़ने में सक्षम होना
चाहिए।

क्या वह मुझे क्रिस की तलाश करने के लिए कह रहा है, या वह मुझे श्याम के साथ संतुष्ट रहने के लिए कह रहा है? मुझे समझ नहीं आ रहा।

'मुझे जाना चाहिए,' मैं कहता हूँ और धीरे-धीरे अपने हाथों को उसकी बाहों की गर्माहट से दूर ले जाता हूँ। मैं रात में बाहर निकलता हूँ, बरामदे में लगे बल्ब की रोशनी से दूर।

मैं रिसेप्शन क्षेत्र की ओर चलता हूं।

गहरे सरसों के पीले रंग से रंगी दीवार पर, शाम के समय पीले रंग से ज़्यादा सुनहरे रंग की, तस्वीरों का एक समूह है। दीवार के सामने पीतल के गमलों में ताड़ के पेड़ और एक विशाल वर्दिग्रीस-म्यूट कांस्य उरुली है जिसमें जल लिली तैर रही है। एक लक्ष्मी दीपक जिसमें एक बाती है, एक कोने को रोशन करता है। क्लासिक केरल रिसॉर्ट सजावट।

श्याम ने इस जीर्ण-शीर्ण पुराने महल को शोपीस में बदल दिया है। इमारतों को भी उसकी इच्छा के आगे झुकना पड़ता है, ऐसा मैं कड़वाहट से सोचता हूँ।

क्रिस बेंत के सोफे पर बैठा है और एक पत्रिका को बेपरवाही से देख रहा है। मैं दरवाजे पर खड़ा होकर उसे देख रहा हूँ। वह दीवारों का सोना है। उसके बाल, जो मंद रोशनी में गहरे सुनहरे रंग के हैं, पीछे की ओर खिंचे हुए हैं। उसने ऐसे कपड़े पहने हैं जो उसके लिए असामान्य हैं: क्रीम रंग की आधी आस्तीन वाली शर्ट और बेज रंग की पतलून। वह ऐसे चमक रहा है जैसे सूरज के दिनों ने उसके शरीर को एक ऐसी रोशनी से भर दिया हो जो भीतर से जल रही हो। मैं वहाँ खड़ा होकर उसके बारे में सब कुछ पी रहा हूँ।

मेरी चाहत की तीव्रता ने उसे छुआ होगा क्योंकि वह ऊपर देखता है

Machine Translated by Google

अचानक, जैसे किसी ने उसे उंगली से थपथपाया हो। 'अरे, राधा।' वह मुस्कुराता है।

मैं उसके सामने सोफे पर बैठ जाता हूँ। 'क्या आप बहुत देर से इंतज़ार कर रहे हैं?' मैं उसे समझाने की कोशिश करते हुए पूछता हूँ।
मेरी आवाज़ में अचानक जो अजीबपन आ गया है, उसे दूर भगाओ।

'कुछ मिनट।' वह कंधे उचकाता है।

'क्या तुम्हें भूख लगी है?' मैंने जो कुछ भी उससे कहने की योजना बनाई थी, वह मेरे गले में ही सूख गया।
मेरे मुंह में केवल सामान्य बातें ही भरी रहती हैं।

वह कहता है, 'आप बहुत सुंदर लग रही हैं।'

'यह पुरानी साड़ी है।' 'मैं साड़ी की

बात नहीं कर रहा था। मैंने कहा था कि तुम बहुत सुंदर लग रही हो। तुम, राधा, तुम...' उसकी आँखें सिकुड़ गईं।

मुझे अपने गालों में गर्मी महसूस होती है। मैं दूसरी तरफ़ देखता हूँ। मैं उसकी खुशबू सूँघ सकता हूँ।
कुचले हुए गेंदे के फूल। हल्दी की जड़ें। सुनहरी पीली खुशबू। मेरी उंगलियाँ उस सुनहरी भव्यता को छूने के लिए तड़प रही हैं।

मैं देखती हूँ कि उन्नी हमारी ओर देख रहा है। उस भावशून्य भाव के पीछे, मुझे पता है कि उन्नी हर शब्द को सुनने के लिए अपने कानों पर ज़ोर दे रहा होगा, हर हाव-भाव, हर मुस्कान, हर विवरण को नोट कर रहा होगा, मेरे ब्लाउज़ के कट से लेकर क्रिस के जूते तक। अचानक मैं श्याम की उपस्थिति से अभिभूत महसूस करती हूँ। उसकी दीवारें, उसके लोग, उसकी महत्वाकांक्षाएँ, उसकी निर्दयता, वे सब मुझ पर दबाव डालते हैं।

मैं कहता हूँ, 'चलो रेस्टोरेंट में चलते हैं।' मैं ऐसी जगह पर रहना चाहता हूँ जहाँ हम ध्यान का केन्द्र न हों।

'ये लोग कौन हैं?' क्रिस सोफ़े से उठते हुए पूछता है। वह उस व्यक्ति की ओर इशारा करता है जो
तस्वीरों का समूह. 'आपका परिवार? शम का?'

मैं मुस्कुराने की कोशिश नहीं करता। हमारी पूरी कोशिशों के बावजूद, क्रिस अभी भी श्याम नहीं बोल पाता।

'यह,' मैं एक जोड़े के स्टूडियो चित्र की ओर इशारा करते हुए कहता हूँ, 'मेरे दादा-दादी का एक सेट है। वैसे, यह आदमी सेतु है। अंकल की कहानी का सेतु। 'ये,' मैं एक और तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहता हूँ, जिसमें एक लड़के जैसा दिखने वाला लड़का और एक लड़की है, जिसके बाल छोटे से बन में बंधे हैं और जिसके सिर पर ढेर सारे गहने हैं, 'मेरे माता-पिता हैं। यह उनकी शादी की तस्वीर है।' मैं अपनी उंगली बाईं ओर ले जाता हूँ और वर्दी पहने एक आदमी की तस्वीर की ओर इशारा करता हूँ।

'ये श्याम के पिता हैं। वे सेना में थे।'

'और बाकी लोग? क्या वे आपके विस्तृत परिवार के सदस्य हैं?' 'मैं वास्तव में नहीं

जानता कि वे कौन हैं। मुझे लगता है कि वे कोई छोटे-मोटे राजघराने के लोग हैं।' पगड़ी पहने पुरुषों और साड़ियों पर पत्थर जड़े ब्रोच लगाए महिलाओं की तस्वीरें हैं। बीच में एक बड़ी तस्वीर है जिसमें एक दबंग व्यक्ति सीधी पीठ वाली कुर्सी पर बैठा है। वह एक छड़ी पकड़े हुए है और छड़ी पकड़े हुए हाथ की उंगलियों में अंगूठियां जड़ी हुई हैं। कुर्सी के पास एक कुत्ता बैठा है; आदमी और जानवर दोनों कैमरे की आंखों में घूर रहे हैं। 'श्याम ने उन्हें एक पुराने से खरीदा था

Machine Translated by Google

फोटो स्टूडियो में ले गया और उन्हें फ्रेम करवाकर लगवाया।' मैं अपनी शर्मिंदगी छिपाने की कोशिश करता हूं।

क्रिस चुप है। मैं लगभग सुन सकता हूँ कि वह क्या सोच रहा है। मैं भी यही सोच रहा हूँ: वह वास्तव में एक ढोंगी है। पुरानी तस्वीरें एक बात है। लेकिन किस तरह का आदमी अपनी दीवार पर अजनबियों की तस्वीरें लगाता है और दिखावा करता है कि वे परिवार के सदस्य हैं?

हम रेस्तरां में चले गए और कोने में एक टेबल पर बैठ गए। यहाँ से नदी दिखाई दे रही थी। हम बेतरतीब बातचीत कर रहे थे। क्रिस ने अपनी उंगलियाँ टेबल पर बजाईं। 'मैंने ऐसी बारिश कभी नहीं देखी। इंडोनेशिया में भी नहीं, जो केरल जैसा ही है।'

'तुम्हें अक्टूबर के तूफान देखने चाहिए। वे डरावने होते हैं। गरज के साथ बारिश होती है और आसमान में बिजली चमकती है।' तब मुझे लगता है कि शायद वह अक्टूबर के तूफान देखने के लिए यहाँ नहीं होगा।

मैं देख रहा हूं कि वह भी यही सोच रहा है।
उसकी उंगलियाँ मेरी उंगलियाँ छूती हैं। 'नहीं,' मैं अपना हाथ हटाते हुए कहता हूँ। 'कोई हमें देख लेगा।'

'बाद में', मैंने कहा, मुझे डर था कि मैंने उसे परेशान कर दिया होगा।
वह फिर से अपनी आंखें सिकोड़ता है और पूछता है, 'क्या बाद में भी कुछ होगा?' मैं अपनी आंखें झुका लेता
हूं।
मैं अपनी प्लेट में रखे खाने से खेलता हूँ। वह जिस तरह से खाना खाता है, उसे देखकर लगता है कि वह उसे बहुत पसंद करता है।
उसके जीवन को प्रभावित करें.
'क्या तुम्हें भूख नहीं लगी?' वह मेरी प्लेट से चिकन का एक टुकड़ा उठाते हुए पूछता है।
मैंने देखा कि प्रदीप कमरे के उस पार से हमें घूर रहा है। मुझे लगता है कि मास्टर को और भी नोट्स देने हैं। मैंने हिम्मत करके इस मामले को सुलझाने का फैसला किया। मैंने प्रदीप की नज़र पकड़ी। वह आगे बढ़ा। 'और कुछ, मैडम?'

मैं मलयालम में मज़ाक करते हुए कहता हूँ, 'साहिब को हमारा खाना बहुत पसंद है।' मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं जानबूझकर क्रिस के चारों ओर छोटी-छोटी दीवारें खींच रहा हूँ, उसे मुझसे अलग कर रहा हूँ।

प्रदीप मुस्कुराता है। मैं देखता हूँ कि उसकी आँखें साफ हो गई हैं। संदेह खत्म हो जाता है।
क्रिस भौंहें सिकोड़ता है। 'तुमने क्या कहा?' 'मैंने उससे कहा कि
तुम्हें खाना बहुत पसंद आ रहा है।' 'ऐसा मत करो। जब तुम अपनी भाषा बोलते हो, तो मैं खुद को
अलग-थलग महसूस करता हूँ।' क्रिस आगे झुकता है।

मैंने पूछा, 'क्या आप मिठाई लेंगे?'
'मोचा राधा।' उसकी आँखें चमक उठीं।
मैं मुस्कुराती हूँ, लेकिन नज़रें फेर लेती हूँ। उसकी चुलबुली बातें मुझे खुश करती हैं। साथ ही मुझे डराती भी हैं।
ऐसा लगता है कि वह यह काम बड़ी सहजता से कर रहे हैं।

Machine Translated by Google

'क्या आपके पास मेरे लिए टेप है?' मैं दरवाजे पर खड़े होकर पूछता हूँ। मैं देख सकता हूँ
क्रिस हमें कॉटेज में वापस जाने का सुझाव देने में हिचकिचा रहा है।

वह कहते हैं, 'यह झोपड़ी में है।'

'ऐसी स्थिति में, मैं आपके साथ चलूंगा।' मैं चलना शुरू करता हूं।

'क्या तुम्हें यकीन है?' वह बुदबुदाता है।

मैं जानता हूं कि वह उसके साथ झोपड़ी तक चलने की बात नहीं कर रहा है।

दोपहर भर बारिश होती रही और शाम ढलते ही अचानक आसमान साफ हो गया। रात आसमान में सितारों और पेड़ों पर जुगनूओं से जगमगा रही थी। उसका हाथ मेरे हाथ की ओर बढ़ा। मैंने अपनी उंगलियाँ उसकी मुट्ठी में ही रहने दीं।

क्या इसका मतलब यही है कि आप अपनी जान अपने हाथों में ले लें?

मुझे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे एक सिहरन ने मेरे दिल को राख के गोले में बदल दिया है, जिसके किनारे भूरे और टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं।
ठंड जो जलाती है। लपटें जो जम जाती हैं। मुझे लगता है...मुझे नहीं पता कि यह क्या है जो मैं महसूस करता हूँ
अधिक।

मुझे एक सावधान करने वाली आवाज़ सुनाई देती है: अंकल की। क्या इसीलिए वे हमें सेतु और सादिया की कहानी सुना रहे हैं? क्या वे मुझे समझदारी से काम लेने के लिए कह रहे हैं?

लेकिन सादिया सिर्फ़ सोलह साल की थी। उस उम्र में 'परिणाम' शब्द का कोई मतलब नहीं होता। मैं बत्तीस साल का हूँ। मैं जानता हूँ कि यह सब कहाँ तक ले जा सकता है। फिर भी, सादिया की तरह, शायद सेतु की तरह, मैं नहीं जानता कि मैं इस जुनून के प्रकोप को कम करने के लिए क्या कर सकता हूँ।

झोपड़ी में अँधेरा है। हम हाथ में हाथ डालकर चलते हैं और अँधेरे में ही हम एक दूसरे के कपड़े उतारते हैं। रात हर आवाज़ को तेज़ कर देती है। क्या यह उसकी साँस है या मेरी?

वह बहुत ही सौम्य है। बहुत धीरे से, वह मुझे अपनी ओर घुमाता है। उसका मुँह मिटा देता है
अपमान, मेरी आत्मा में दर्द को कम करता है।

मैं उसके पास पहुँचती हूँ, उत्सुक और भूखी। उसकी रीढ़ मेरी उँगलियों के नीचे दबी हुई है, उसके नितंबों की वक्रता ठंडी और चिकनी है। बाल चटक रहे हैं। स्थैतिक बिजली। उसका मुँह आग बुझाता है और फिर उसे हवा देता है। मुझे फिर से लगता है कि मैं उसके हाथों में एक यंत्र हूँ। मैं उसे अपने वक्र और उभारों से लुभाती हूँ, फिर भी उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर हूँ।

एक उल्लू बोलता है। चादरें सरसराती हैं। और मैं उसे बार-बार अपने अंदर स्वागत करता हूँ,
कई बार।

जुगनू खिड़की से अंदर आते हैं। एक जुगनू बिस्तर के फ्रेम पर बैठकर रोशनी बिखेरता है। एक और जुगनू मेरे बालों में फंस जाता है। एक और जुगनू कमरे में उड़ता हुआ आता है, एक चमकता हुआ हरा रत्न।

क्रिस मेरे बालों में फंसे एक बाल को पकड़ लेता है और पूछता है, 'क्या तुम्हें घबराहट हो रही है?'

मैं उसकी ओर देखता हूं। 'क्यों?' 'मत
हो जाओ,' वह कहता है और कीड़े को मेरे शरीर पर छोड़ देता है।

Machine Translated by Google

यह एक रास्ता रोशन करता है जिसका क्रिस अपने मुंह और हाथों से अनुसरण करता है। वह रावण है, राक्षस राजा जो अपने अभिमान को अलग रखता है और अपनी पत्नी मंदोदरी के सामने अपनी लालसा को स्वीकार करता है। वह रावण है, जिसके बीस हाथ और दस सिर हैं, जो मुझे पर्याप्त रूप से छू नहीं सकता, मुझे पर्याप्त रूप से चूम नहीं सकता; उसके हाथ और मुंह मुझे तलाशने वाले पहले व्यक्ति होने की होड़ में एक दूसरे से होड़ करते हैं। उनके अन्वेषणों में मुझे इच्छा की सीमा का पता चलता है। मैं अपने भीतर आनंद, विशुद्ध आनंद महसूस करता हूं। फिर मुझे अचानक दुख का पता चलता है, यह कितने समय तक चल सकता है? जुनून का यह प्रकोप, यह मेरी रगों में कैसे गरजता है, बाधाओं का सामना करता है, साहस को रास्ता दिखाने देता है। सोचना बंद करो, मेरे सिर में आवाज शिकायत करती है। बस रहो ... प्रकाशस्तंभ धारण करने वाला कीट और अतृप्त मनुष्य: मुझे लगता है कि हर तंत्रिका अंत जाग गया है और गा रहा है

जुगनू रात में भाग जाता है।

क्रिस मेरी तरफ़ देखता है। वह अपनी कोहनी पर टिका हुआ है।

वह पूछता है, 'आप उन्हें क्या कहते हैं?'

'मिन्नामिनुंगु', मैं कहता हूं।

वह इसे दोहराने की कोशिश करता है। लेकिन वह अपनी जीभ को शब्द के इर्द-गिर्द नहीं घुमा पाता। व्यंजन जुगनू के प्रकाश के चाप की तरह अंदर-बाहर बुनते हैं। 'मैं हार मानता हूँ,' वह हँसता है।

'मुझे लगता है कि मैं तुम्हें यही कहूंगा। तुम वही हो। मेरा मिन-मिन जो भी हो...' वह अपनी उंगली की नोक से मेरी प्रोफ़ाइल को ट्रेस करता ⋯ है।

अँधेरे में मैं चमकती हूँ, हरे रंग की चमक की ज्वाला।

मैं बिस्तर से उठता हूँ। उसका बिस्तर। हमारा बिस्तर।

क्रिस अपने अंगों को बिस्तर पर फैलाकर लेटा हुआ है। उसकी बाहें तकिये पर टिकी हैं; उसकी कोहनियाँ उसके चेहरे के चारों ओर एक कोष्ठक की तरह बनी हुई हैं। उसका एक पैर फैला हुआ है, पैर बाहर की ओर मुड़ा हुआ है। दूसरा घुटने पर मुड़ा हुआ है। एक चादर, मुड़ी हुई और गुच्छेदार, उसकी जांघों के ऊपर ढँकी हुई है। उसके दोनों ओर झुर्रियाँ उभरी हुई हैं।

मैं फर्श पर पड़े अपने कपड़े उठाने से रुकती हूँ और फिर से उसकी ओर देखती हूँ। मुझे लगता है कि वह एक पेंटिंग है। तृप्ति का एक चित्र, एक रात की बेपरवाही का। सुस्ती का एक पल जम गया। मुझे खुशी महसूस होती है: वह मेरा है।

मैं जल्दी से कपड़े पहनता हूँ। मैं अपनी गर्दन और जांघों पर चोट के निशान देखता हूँ। मैं उन्हें छूता हूँ। मेरा प्यार
मेरी त्वचा पर रहता है। एक जुनून का प्रकोप जिसे मैंने पहले कभी नहीं जाना।

मैं उसके पास बैठ जाती हूँ। मैं अपनी उंगलियाँ उसके बालों में फिराती हूँ। 'कहाँ जा रहे हो?' उसकी आवाज़ में नींद और सेक्स की खुशबू है।

'मुझे जाना होगा,' मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

'क्या तुम्हें ऐसा करना होगा?' उसकी उंगलियाँ मेरी बांह के अंदर से होकर मेरी कमर पर फ़ैल गईं। मैं काँप उठी।

Machine Translated by Google

‘मुझे जाना है,’ मैं कहता हूँ। ‘मुझे खेद है।’ ‘ठीक है, क्या
तुम मुझे आँख का कपड़ा दोगे? यह यहीं कहीं है।’ मैं आँख का कपड़ा ढूँढता हूँ, जो एक पुरानी फलालैन शर्ट से
कैंची से काटा गया एक पूरा आस्तीन का कपड़ा है।

'यह मेरी आँखों का कपड़ा है। मैं सुबह की रोशनी बर्दाश्त नहीं कर सकता। इससे मेरी आँखों में पानी आ जाता है,' उन्होंने तब कहा था जब मैंने पहली बार उन्हें अपना सेलो पोंछने के लिए यह कपड़ा दिया था, यह सोचकर कि यह एक ऐसा कपड़ा है जिसे वे इसी काम के लिए रखते हैं।

‘अगर तुम रुको... मैं तुम्हारे बालों को अपनी आँखों पर लपेट सकता हूँ और अपनी बाँहों में तुम्हें लपेट कर सो सकता हूँ... और जब सूरज तेज़ हो जाए, तो मैं अपना चेहरा तुम्हारी जाँघों के बीच छिपा सकता हूँ।’ मैं फिर से काँप उठा।

मैं उसकी आंखों पर पट्टी बांधती हूं, लाइट बंद करती हूं और दरवाजे की ओर चलती हूं।
मैं फिर रुक जाता हूँ। शुभ रात्रि, मैं फुसफुसाता हूँ और, सिर्फ़ एक पल के लिए, मेरे अंदर एक छोटी सी आवाज़ बुदबुदाती है: तुम मेरे जाने तक जाग सकती थीं।

Machine Translated by Google

चाचा

मैंने उसे अन्दर आते सुना। वह दबी हुई आवाज़ में गुनगुना रही है।

मैं दीवार पर लगी घड़ी पर नज़र डालता हूँ। अभी सवा ग्यारह बजे हैं। क्या वह अकेली यहाँ चली आई? या क्रिस उसके साथ चला आया? कौन-सा बुरा है? मुझे नहीं पता।

श्याम को इस बारे में पता चल जाएगा। उसकी नज़र हर जगह है। मुखबिर जो अपने स्वामी और मालिक को उसकी अनुपस्थिति में होने वाली हर चीज़ के बारे में बताते रहते हैं। मेरी बेचारी राधा। क्या उसे एहसास है कि उसे इस नए प्यार के साथ क्या करना पड़ रहा है?

कल पूरे दिन मैं राधा के बारे में चिंतित रहा। कथकली प्रदर्शन में जाने से ठीक पहले मैंने जो देखा उससे मैं परेशान था - राधा और क्रिस एक दूसरे की बाहों में थे।

अगली शाम राधा और श्याम मुझसे मिलने आए थे। राधा थकी हुई और कमज़ोर लग रही थी। उसके हाथ-पैर लड़खड़ा रहे थे और चेहरे से सारी चमक गायब हो गई थी।

क्या यह मेरी राधा हो सकती है?

प्रदर्शन की रात को, राधा हज़ारों सूर्यों की रोशनी से जगमगा उठी थी। वह अपने रेशमी वस्त्रों और नए-नए प्यार में चमक रही थी। लेकिन मेरे सामने राधा एक ऐसी महिला थी जो एक खोल में दुबकी हुई थी। एक पीड़ित महिला। यह क्या हो सकता है? अपराधबोध या निराशा? मुझे लगा कि मेरी आँखों में चिंता के बादल छा गए हैं। दिन के उजाले में जादू को दूर भगाने का एक तरीका था।

तभी मैंने श्याम को देखा। वह मुस्कुरा रहा था। यह अहंकार और विजय से भरी मुस्कान थी। यह एक विजेता की मुस्कान थी।

वह बाली वध में रावण था। अहंकार की चरम तस्वीर। रावण खुद से पूछकर अपनी सफलता का मूल्यांकन करता है: मुझे खुद से खुश क्यों नहीं होना चाहिए? मैंने भगवान सृष्टिकर्ता ब्रह्मा को प्रसन्न किया और उनसे मुझे वो वरदान दिलवाए जिनकी मुझे ज़रूरत थी। मैंने राजाओं और देवताओं को हराया और एक साम्राज्य की स्थापना की। मैंने अपने सौतेले भाई कुबेर, धन के देवता से स्वर्गीय रथ पुष्पक छीन लिया और मैंने कैलाश पर्वत को नीचे गिराकर सर्वोच्च विध्वंसक, आसानी से क्रोधित होने वाले शिव को खुश किया। मेरी प्रसिद्धि हर जगह और तीनों लोकों में फैल गई है, ऐसा कोई नहीं है जो मुझे या मेरी शक्तियों को न जानता हो।

श्याम के चेहरे पर अहंकार देखकर मैं चिंतित हो गया। यह रावण का चेहरा था: एक ऐसे व्यक्ति का चेहरा जो जो चाहता है, ले लेता है। उसके शरीर का हर रेशा विजय के भाव से धड़क रहा था। उसने क्या किया था? उसने राधा के साथ क्या किया था?

श्याम ने कुर्सी पर गिरकर कहा, 'इस दिन हम आपके कुछ साथियों से मिले थे।

Machine Translated by Google

उन्होंने कहा, 'सुबह 10 बजे।'

मैं उसे घूरता रहा। साथियों, मैं अपने जीवन के उस दौर के बारे में सब कुछ भूल चुका था।
मेरे भाइयों ने जंगलों में शिकार किया था और अवैध शराब पी थी और मारिजुआना के साथ प्रयोग किया था; मैंने साम्यवाद के साथ प्रयोग किया। मैं कार्ड-धारक सदस्य नहीं था, लेकिन मैं एक सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति था जो आंदोलन में इतना विश्वास रखता था कि मैं पर्चे और पोस्टर और अन्य 'भड़काऊ सामग्री' ले जाता था, जैसा कि सरकार उन्हें कहती थी। यह एक जोखिम था, लेकिन मैं काफी तैयार था।

मुझ नर्तकी पर किसी को शक नहीं था कि मैं आंदोलन से जुड़ी हुई हूं और हमने एक पासवर्ड भी बना लिया था। एक साथी मंच के पीछे आकर पूछता था, 'क्या आज रात चुवन्ना-थाडी वेशम है?' चुवन्ना-थाडी लाल दाढ़ी वाला होता था और सबसे बुरे चरित्र का प्रतीक होता था, लेकिन पासवर्ड काम करता था और जब मैं कुछ समय के लिए

मद्रास चली गई, तभी मेरे साथियों और मेरे रास्ते अलग हो गए।

श्याम ने पूछा, 'तुम ऐसे क्यों दिख रहे हो जैसे तुमने कोई भूत देख लिया हो?' 'मैं

केशवन का ज़िक्र करते हुए मैंने कहा, "क्या उसने आपके साथ परफ़ॉर्म नहीं किया?" मैंने सिर

हिलाया। "वह कैसा है?" मैंने पूछा।

'ठीक है। उसका बेटा मस्कट में है, उसने हमें बताया।' श्याम जाने के लिए उठा। उसने

बरामदे में रखी मेज़ पर नज़र डाली, जिस पर कुछ पत्रिकाएँ बिखरी हुई थीं। उसने मेज़ को ठीक किया और पत्रिकाओं को एक ढेर में जमा दिया। मैंने उसे देखा। मुझे फिर से बेचैनी का एहसास हुआ। उसे हर चीज़ पर अपनी छाप छोड़ने की ज़रूरत क्यों महसूस हुई? क्या वह राधा के साथ भी ऐसा ही था? अगर उसे कभी राधा और क्रिस के बारे में पता चला तो वह क्या करेगा?

श्याम के जाने के बाद मैंने राधा से पूछा, 'क्या तुम बीमार हो? या श्याम और तुम्हारा झगड़ा हुआ था? तुम बहुत थकी हुई लग रही हो।' 'श्याम कभी झगड़ा नहीं करता। अपनी बात

कहने के उसके पास दूसरे तरीके हैं,' उसने कहा।
'नहीं, कुछ नहीं।' उसकी आवाज़ में भी थकान झलक रही थी जो उसकी आँखों में थी। मैं फिर से सोचने लगा कि क्या यह थकान थी या निराशा।

मैंने देखा कि उसकी आँखें गेट की ओर दौड़ रही थीं। मैंने सुना कि वह हर कदम पर चौंक जाती थी। मुझे पता था कि वह क्रिस का इंतज़ार कर रही थी।

तभी क्रिस ने गेट की कुंडी खोली और अंदर चला गया। मैंने देखा कि राधा फिर से बाहर आ गई। राधा, जीवित और सचेत।

उनकी आँखें मिलीं और एक दूसरे से मिल गईं। मैंने इंतज़ार का बोझ उठते और खत्म होते देखा।

मैं उठकर खिड़की की ओर जाता हूँ। मैं सो नहीं पाता। मैं बहुत थका हुआ महसूस करता हूँ। सुबह माया यहाँ होगी। मुझे यकीन नहीं है कि मैं उन सभी भावनाओं से निपटने के लिए तैयार हूँ जो उसे फिर से देखने पर सतह पर आ जाएँगी।

मुझे एक लंबी जम्हाई सुनाई देती है। राधा। मुझे लगता है कि उसे भी नींद नहीं आ रही है। क्या मुझे जाना चाहिए?

Machine Translated by Google

और उससे बात करूँ? शायद यह सबसे अच्छा है कि मैं उसे उसके विचारों के साथ छोड़ दूँ। वह फिर से प्यार में पड़ी एक महिला है। मैं यह देख सकता हूँ। मैं सोचता हूँ कि मैंने उससे पहले क्या कहा था। कि अब केवल अब ही है।

मैं उसे यह बताने में विफल रहा कि 'अभी', उसके 'अभी' की दीवारें, मांग करती हैं कि उन्हें छल पर बनाया जाए। छल की वास्तविकता यह है कि यह अतीत और भविष्य में घुसने का एक तरीका है। क्या राधा इससे निपट पाएगी?

धोखे का अभिशाप यह है कि हम इसे अपने दिमाग से कभी नहीं मिटा सकते। मैंने एक आदर्श जीवन नहीं जिया है। ऐसा नहीं है कि मेरा विवेक साफ है। मैंने धोखेबाजी की है। और मुझे पता है कि मुझे इसकी कीमत चुकानी पड़ी है।

मैं कथकली के एकमात्र वेषम के बारे में सोचता हूँ जिसके प्रति मैं कभी उत्साहित नहीं रहा।
बाली वध में राम की भूमिका। यह कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है, फिर भी इस भूमिका में जिस हद तक छल-कपट की आवश्यकता है, वह मुझे बेचैन कर देता है। वास्तव में, पूरा प्रकरण मुझे असहज कर देता है। इसमें कुछ भी प्रेरणादायक या मुक्तिदायक नहीं है। सच कहूँ तो, यह एक ऐसा भाग है जिसे कभी इतना महत्व नहीं दिया जाना चाहिए था। इसमें सब कुछ छल-कपट और मिलीभगत की बू आती है।

मैं अपनी आंखें बंद करता हूं और रामायण से लिए गए उस अध्याय के बारे में सोचता हूं।
वानर-राज बाली, भारत के दक्षिणी भाग में स्थित किष्किन्धया नामक राज्य पर शासन करता था। जब बाली बहुत छोटा था, तो उसके पिता इंद्र, जो देवताओं के राजा थे, ने अपने बेटे को वरदान दिया कि चाहे कोई भी बाली से युद्ध करे, विरोधी की शक्ति आधी हो जाएगी और युद्ध के दौरान बाली के पास चली जाएगी। यह पहला धोखा था।

जल्द ही, कोई भी बाली को हरा नहीं सका। एक बार, राक्षस दुन्दुपी ने बाली को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी। राक्षस की धृष्टता से क्रोधित होकर बाली ने उसे सबक सिखाने का फैसला किया। उसने दुन्दुपी के साथ कुश्ती शुरू कर दी। लेकिन राक्षस बाली के चंगुल से खुद को छुड़ाने और भागने में कामयाब रहा। बाली उसे जाने नहीं देना चाहता था, इसलिए उसने राक्षस का पीछा करते हुए एक गुफा में प्रवेश किया। वह गुफा के मुहाने पर खड़ा हो गया और अपने छोटे भाई सुग्रीव को पुकारा, 'मैं राक्षस का पीछा कर रहा हूँ और जब वह मेरे हाथ में आ जाएगा, तो मैं उसके शरीर की हर हड्डी तोड़ दूँगा। मैं चाहता हूँ कि जब तक मैं वापस न आऊँ, तुम यहीं रुको। अगर दूध बहता है, तो तुम समझोगे कि मैं सफल हो गया हूँ। लेकिन अगर खून बहता है, तो तुम्हें तुरंत चले जाना चाहिए और हमारे परिवारों और रिश्तेदारों की रक्षा करनी चाहिए।'

सुग्रीव गुफा के मुहाने के बाहर प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ समय बाद उसने बाली को चिल्लाते हुए सुना, 'बचाओ! बचाओ! मैं मारा जा रहा हूँ!' फिर, सुग्रीव को यह देखकर बहुत डर लगा कि गुफा से खून की एक धारा बह रही है और उसे पता चल गया कि उसका भाई पराजित हो चुका है। असल में जो हुआ वह यह था कि राक्षस ने यह महसूस करते हुए कि वह मरने वाला है, एक आखिरी चाल चली थी। संघर्ष करते हुए उसने बाली जैसी आवाज़ में पुकारा और जब उसने देखा कि बाली दूध की एक धारा का आह्वान कर रहा है, तो उसने उसे खून जैसा दिखने के लिए जादू से बनाया। यह धोखे का दूसरा कार्य था।

Machine Translated by Google

क्रोध और दुःख में, सुग्रीव ने गुफा के मुख को एक शक्तिशाली चट्टान से बंद कर दिया।
फिर वह राज्य में वापस गया और राजा की भूमिका निभाई।

बाली को इस चाल का पता नहीं था और उसने दुन्दुपी को पीट-पीटकर मार डालना शुरू कर दिया।
राक्षस को मारने के बाद जब वह गुफा के मुहाने पर पहुंचा तो उसने देखा कि एक बहुत बड़ी चट्टान उसके रास्ते में खड़ी थी। उसने आश्चर्य से चट्टान को देखा और फिर उसे एक तरफ धकेल दिया।
'मेरे प्यारे भाई सुग्रीव, तुम कहाँ हो?' उसने पुकारा। लेकिन वहाँ कोई नहीं था। बाली को चिंता होने लगी। वह अपने महल में भागा और वहाँ उसने अपने भाई को सिंहासन पर बैठा पाया।

अचानक बाली को पता चल गया कि क्या हुआ था। उसका भाई सुग्रीव उसे मारना चाहता था और इसके लिए उसने गुफा के मुहाने को बंद कर दिया था। उसने अपने भाई को गुस्से से देखा। 'तो यही तो तुम चाहते थे। इस दौरान तुम एक प्यारे भाई होने का नाटक कर रहे थे और अपने दिमाग में मेरे पतन की साजिश रच रहे थे। तुम देशद्रोही हो!' उसने कहा। बाली को अपने भाई के बारे में एक गुप्त भय जरूर रहा होगा कि वह खुद के लिए सिंहासन चाहता है। क्या यही वजह नहीं है कि वह इतनी आसानी से धोखा खा गया और उसे लगा कि उसका डर सच हो गया है? तो फिर उसके भाई के लिए उसके प्यार की सच्चाई क्या थी? यह तीसरा धोखा था।

बाली ने सुग्रीव को राज्य से निकाल दिया और सुग्रीव वन में चला गया।
उनके वफादार अनुयायियों का एक समूह था, जिसमें वायु पुत्र हनुमान भी शामिल थे।

बाद में, जब राम और लक्ष्मण सीता की तलाश में जंगलों से गुज़रे, तो उनकी मुलाक़ात सुग्रीव से हुई, जिसने उन्हें अपने निर्वासन की कहानी सुनाई। उसने बताया कि कैसे बाली ने राजगद्दी वापस हथिया ली थी और मामले को और भी बदतर बनाने के लिए उसने सुग्रीव की पत्नी से शादी कर ली थी, जिससे वह अपने घर और परिवार से वंचित हो गया था।

सुग्रीव ने राम से कहा, 'मेरे पास जो कुछ भी है वह सब आपका है। लेकिन मेरे पास आपको देने के लिए कुछ भी नहीं है।'

राम ने कहा, 'हिम्मत मत हारो। मैं तुम्हें न्याय दिलाऊंगा।'

सुग्रीव ने कहा, 'बाली को कोई नहीं हरा सकता, वह बहुत शक्तिशाली है।' 'इसके अलावा, उसके पिता का वरदान यह सुनिश्चित करता है कि युद्ध में उसके प्रतिद्वंद्वी की शक्ति आधी रह जाएगी।' 'मेरी बात सुनो। मेरे पास एक योजना है। यह पारंपरिक युद्ध नहीं होगा।

'राम ने कहा.

धोखे का चौथा दृश्य। यहीं पर मुझे लगता है कि राख मेरी जीभ पर जम गई है।
यह धर्मी व्यक्ति, जो सभी अच्छाइयों और महानता का प्रतीक था, छल-कपट से परे नहीं था।

सुग्रीव महल के द्वार पर गया और बाली को युद्ध के लिए ललकारा।

बाली ने अपनी हरकत से सिर उठाकर कहा, 'इसमें गलत क्या है?
मूर्ख सुग्रीव? क्या वह पागल हो गया है? क्या वह सोचता है कि वह मुझे हरा सकता है?' बाली चिल्लाया, 'चले जाओ!'

Machine Translated by Google

लेकिन सुग्रीव ने चुनौती देना जारी रखा। बाली अपना आपा खो बैठा और महल से बाहर निकल गया और दोनों में कुश्ती शुरू हो गई। राम, जो एक पेड़ के पीछे छिपे हुए थे, ने एक तीर चलाया जो बाली के दिल में जा लगा और उसकी मौत हो गई। छल का पाँचवाँ कृत्य।

इस प्रकार सुग्रीव पुनः राजा बन गया और उसकी वानर सेना ने रावण के विरुद्ध युद्ध में राम की सहायता की।

कहानी में इस बात का कोई ज़िक्र नहीं है कि सुग्रीव और राम को कितना पश्चाताप होना चाहिए था। उन्होंने अपने द्वारा किए गए छल को कैसे स्वीकार किया? यह छल का छठा और कभी चर्चा में न आने वाला कृत्य है। क्या उन्होंने इसे अपने दिमाग से निकाल दिया और ऐसे चलते रहे जैसे कुछ हुआ ही न हो? अगर ऐसा था, तो उनमें विवेक का नामोनिशान तक नहीं था। और ये वे देवता हैं जिनकी हम सदियों से पूजा करते आए हैं। इसके बारे में सोचकर भी मैं डर जाता हूँ।

आप अपने जीवन के बाकी समय में इस तरह के धोखे के साथ कैसे जीते हैं? आप इसे अपने ऊपर हावी होने से कैसे रोकते हैं? आप अपने द्वारा किए गए सभी अच्छे कामों और उस एक धोखे के बीच संतुलन कैसे बनाते हैं?

यही बात मुझे परेशान करती है। राधा अपने आप के साथ कैसे रह पाएगी? या फिर मैं?

कल सुबह मैं अपनी छल-कपट की तीर्थयात्रा शुरू करुंगा। माया और मैं झूठ और मिलीभगत से गढ़े गए चुराए गए पलों और अपनी अंतरात्मा के साथ किए गए समझौतों की तलाश करेंगे।

जब मैं बिस्तर पर लेटा हूँ और मेरी आँखें अँधेरे और धोखे की ओर खुली हैं, तो मुझे लगता है कि अब समय आ गया है कि मैं
सेतु और सादिया की परीकथा की दुनिया में वास्तविकता का परिचय कराया।
तभी राधा और क्रिस, और मेरी माया - क्योंकि वह भी यह सुनेगी
कहानी - उन्होंने अपने लिए जो चुना है उसकी गंभीरता को समझें।

Machine Translated by Google

1938–1940 धोखे का व्याकरण

प्रसव कक्ष मुख्य अस्पताल भवन से अलग एक ब्लॉक में था। मानो इसे वहाँ रखकर, प्रसव की प्राकृतिक और आनंददायक घटना को बीमारी और आघात की भयावहता से दूर रखा जा सकता था।

चाहे मूल कारण कुछ भी रहा हो, डॉ. सैमुअल ने इस अलगाव को पूरी तरह से स्वीकार किया। चीखती-चिल्लाती महिलाओं को उनकी जगह पर रखा जाना चाहिए।

लेकिन अब, जब उसने सादिया के पीले चेहरे को देखा, तो उसने चाहा कि वह चीखे, चिल्लाए, अपने पति को कुछ खास नामों से पुकारे, जैसा कि उसके कुछ मरीज करते थे, और उस क्रोध की क्रूर शक्ति के साथ, बच्चे को बाहर धकेल दे।

इसके बजाय, सादिया वहीं लेटी रही, हर बार जब उसे संकुचन होता तो उसका चेहरा विकृत हो जाता, लेकिन वह रोती नहीं, कोई आवाज़ नहीं निकालती, यहाँ तक कि एक भी कराह नहीं। 'तुम्हें अपने दर्द को दबाने की ज़रूरत नहीं है,' डॉ. सैमुअल ने कहा। 'तुम चीख सकती हो और चिल्ला सकती हो; कोई भी तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनेगा। मेरे अलावा, और तुम मुझे जानती हो। है न? डॉ. सैमुअल सागयाराज। तुम्हें जितना ज़ोर से चिल्लाना है, चिल्लाने की अनुमति है, तुम्हें पता है,' उसने मज़ाक करने की कोशिश की।

सादिया ने अपनी आँखें उसकी ओर घुमा लीं जैसे वह उसका मतलब समझ नहीं पा रही हो।
डॉक्टर ने उसकी आँखों से आँखें मिलाईं और जो कुछ उसने देखा, उससे वह बेचैन हो गया। वहाँ हार मान ली गई थी, और निराशा थी। उसे दर्द से लड़ने की कोशिश करनी चाहिए थी, उसने सोचा। इसके बजाय, वह वहाँ ऐसे लेटी थी जैसे दर्द सहना उसके द्वारा किए गए अपराध का प्रायश्चित हो। डॉक्टर को तब डर का एहसास हुआ, जैसा उसने पहले कभी नहीं किया था। ऐसा लग रहा था जैसे लड़की खुद मरने के लिए तैयार थी।

सेठ कहाँ था, सेतु, उसने खुद को सुधारा। सेतु को पता होगा कि क्या गड़बड़ है। वह अपने शरीर के साथ हो रही घटनाओं से इतनी विमुख क्यों लग रही थी?

प्रसव वार्ड के बाहर एक बहुत बड़ा पुराना नीम का पेड़ था। सेतु पेड़ के नीचे खड़ा होकर एक डंठल चबा रहा था। उसकी कड़वाहट उसके मुँह में भर गई। वह सोच रहा था कि यह कब तक रहेगा।

आमतौर पर नीम के पेड़ के नीचे कम से कम एक दर्जन लोग इकट्ठे होते थे।
गर्भवती पिता और जल्द ही दादा-दादी बनने वाले, होने वाले चाचा-चाची, तमाशबीन बने लोग जो प्रसव कक्ष में जो कुछ हो रहा था, उसे सोचकर सिवाए घबराये हुए थे।

लेकिन इस दिन, नीम का पेड़ अकेला खड़ा था और लंबा गलियारा जो

Machine Translated by Google

लेबर वार्ड के दोनों ओर शाम की छाया थी, जहाँ मानवीय उपस्थिति का कोई असर नहीं था। सेतु लकड़ी की सीढ़ियों की ओर चला गया। वह सीढ़ियों में से एक पर बैठा था, अभी भी अपने डंठल को चबा रहा था। वह अब पाँच घंटे से ज़्यादा समय से लेबर रूम में थी। डॉ. सैमुअल उसके साथ थे। सब ठीक हो जाएगा। लेकिन उसे फिर से वह अजीब एहसास हुआ - कुछ डर, कुछ खुशी, कुछ अनिश्चितता और भय।

अपनी बेचैनी को शांत करने के लिए उसने सीढ़ियाँ गिनीं। छह सीढ़ियाँ। वे कितनी कम थीं।
सिर्फ़ छह कदम और फिर भी, जब वह अंदर गया था, तो उसे लगा था कि जैसे वे हमेशा के लिए चले गए हैं। समय की तरह, उसने सोचा। कल बहुत पहले लग रहा था, और उससे पहले का दिन तो और भी दूर था।

पहले तो सेतु को लगा कि वह अपने अंदर के इस दर्द से कैसे निपटेगा। सादिया वापस अरबिपटनम आ गई थी और उसे नहीं पता था कि वह उसे अगली बार कब देख पाएगा। कुछ हफ़्ते बाद, दर्द की तीव्रता कम हो गई। कई बार सादिया दूर लगती थी, लगभग एक सपना। शायद यही सबसे अच्छा था, उसने खुद से कहा। उनके जैसे प्यार की क्या उम्मीद थी? क्या भविष्य? यह सबसे अच्छा था कि यह शुरू होने से पहले ही मर गया।

शाम के समय सेतु ने दरवाजे पर दस्तक सुनी। डॉक्टर मदुरै में था।
वह अगली सुबह ही वापस आने वाला था। वह कौन हो सकता है, वह सोच रहा था।
वह सड़क के किनारे खड़ी थी, उसके दोनों हाथ बगल में थे, उसका चेहरा उदास और डरा हुआ था। वह उसे घूर रहा था, अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। उसका चेहरा पूरी दुनिया के लिए नंगा था और वह अकेली थी। 'क्या?' वह हकलाया, अचानक उसके दरवाजे पर उसकी उपस्थिति की विशालता से चौंक गया।

'मैंने आपके पास आने का फैसला किया,' उसने कहा, और उसके पैरों के पास एक छोटे से ढेर में खिसक गई।
अगली सुबह डॉक्टर मुस्कुराते हुए आए। सेतु ने दरवाज़ा खोला तो उसे आश्चर्य हुआ कि वह इतना घमंडी क्यों है।

डॉक्टर ने अभिवादन करते हुए कहा, 'वापस आकर बहुत अच्छा लग रहा है।' खुद को और रोक न पाने के कारण वह बोल पड़ा, 'मेरी शादी होने वाली है। मुझे एक मददगार मिल गया है।
मेरी हड्डियों की हड्डी और मेरे मांस का मांस। वह एक रिश्तेदार है - उसके पिता मेरे गाँव से हैं। उसके घर में, वे वही चावल खाते हैं जो मैं खाता हूँ। वास्तव में, वह कुछ और नहीं खाती। वह पढ़ी-लिखी है। आखिरकार, वह एक डॉक्टर की बेटी है, और उसके पिता ने कहा कि उन्होंने उसे उसकी सहायता करने के लिए पढ़ाया है। मैं इससे ज़्यादा और क्या माँग सकता हूँ? मेरी माँ ने फैसला किया कि हमें तुरंत सगाई की घोषणा कर देनी चाहिए और रात के खाने के बाद, वह और मैं मंत्री से मिले और क्या आप जानते हैं कि उन्होंने मुझसे क्या कहा?

उसने कहा, "मैं चाहती हूँ कि हम अपने घर को रहोबोथ कहें। क्योंकि अब प्रभु ने हमारे लिए जगह बना दी है और हम इस देश में फल-फूलेंगे।" आप शायद इसे आसानी से पहचान सकते हैं। उत्पत्ति 27. 22. यह जानकर मेरा दिल खुशी से झूम उठा कि मेरी मदद करने वाली एक महिला है जो पवित्र पुस्तक के अनुसार जीती है।'

सेतु मुस्कुराया। उसने मदद करने वाले को भी पहचान लिया। उत्पत्ति 2. 20. उसने नहीं पहचाना

Machine Translated by Google

हालाँकि, वह नहीं जानता कि इस नए घटनाक्रम के बारे में उसे क्या महसूस हुआ। उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि जिस डॉक्टर के बारे में उसने सोचा था कि वह हमेशा कुंवारा रहेगा, उसे आखिरकार कोई उपयुक्त व्यक्ति मिल गया, उसे इस बात की राहत मिली कि डॉक्टर अब शायद उसकी स्थिति को समझेगा।

तभी डॉक्टर ने सादिया को देखा, जो छाया में विलीन होने की कोशिश कर रही थी।
बरामदे पर छाया हुआ था। 'यह कौन है?'

अचानक उसने उसे पहचान लिया और उसकी आवाज अविश्वसनीय भय से भर गई। 'तुम हो
हाजी की बेटी। तुम यहाँ क्या कर रही हो? मुझे समझ नहीं आ रहा।'

सेतु ने डॉक्टर के हाथ से गिरी थैली ले ली और कहा, 'मैं समझाता हूँ।'
उन्होंने घर के अंदर जाते हुए कहा।

डॉक्टर ने सुना, उसकी हैरानी क्रोध में बदल गई क्योंकि सेतु ने ऐसे शब्द कहे जिन्हें वह समझ ही नहीं पाया। प्यार। जीवन। आत्मा। ये वे अवधारणाएँ थीं जिनका इस्तेमाल स्वर्ग के पिता के साथ अपने रिश्ते को बताने के लिए किया जाता था, न कि हाजी की सबसे छोटी बेटी के साथ।

'मैं यह समझने की कोशिश भी नहीं करूँगा कि तुम क्या कह रहे हो। तुम मुझसे यह कैसे उम्मीद कर सकते हो? इसका कोई मतलब नहीं है। तुम कहते हो प्यार। तुम प्यार के बारे में क्या जानते हो? तुम जिसे प्यार कहते हो वह वासना है। हाँ, मैं कहता हूँ वासना। क्या तुम्हें एहसास है कि तुमने एक लड़की को उसके घर और परिवार से बाहर निकाला है? और किस लिए?' 'लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया,' सेतु ने डॉक्टर की बात

काटते हुए विरोध किया।

डॉक्टर ने कहा, 'तुम्हें इसका मतलब समझ में आ गया है, है न?' उसने अपने चश्मे के लेंस को पॉलिश किया, जैसे कि अपने हाथों को कुछ काम देना चाहता हो। उसे डर है कि कहीं वह मेरा गला न घोंट दे, सेतु ने हंसते हुए सोचा।

वह चिंतित क्यों नहीं था? यहाँ वह एक ऐसी लड़की के साथ था जिसने अपनी ज़िंदगी उसके भरोसे छोड़ दी थी। अस्पताल में अपनी नौकरी के अलावा उसके पास कोई और संभावना नहीं थी, और डॉक्टर के गुस्से से उसे जो अंदाजा हो रहा था, उससे वह भी खतरे में था।

डॉक्टर ने युवती को बरामदे से बाहर निकलते देखा। उसने उसे कुएँ के पास आम के पेड़ की ओर जाते देखा। उसने साँस रोक ली। लड़की उसके घर में बहुत सहज लग रही थी। वह यहाँ कब से रह रही थी, उसने सोचा।

शायद वह उसे वापस आने के लिए राजी कर सके। सेठ इतना आवेगपूर्ण, इतना गैरजिम्मेदार कैसे हो सकता था?

यह वैसा नहीं है जैसा आप कल्पना करते हैं, सेठ कह रहा था। उसका क्या मतलब था?
डॉक्टर को लगा कि उसका गुस्सा सौ गुना बढ़ गया है। उसने नज़रें फेर लीं और कहा, 'उसे देखो। वह एक छोटी लड़की है जिसके दिमाग में मूर्खतापूर्ण कल्पनाएँ हैं। यह सिर्फ़ तुम्हारा ही काम हो सकता है। अगर तुमने उसे प्रोत्साहित न किया होता तो वह कभी अपने घर से दूर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाती। यह एक छोटा शहर है। क्या तुम्हें एहसास है कि तुमने जो किया है उसका क्या नतीजा होगा? लेकिन तुम कभी नहीं सोचते, है न? तुम हो।

Machine Translated by Google

हमेशा काम निपटाने की जल्दी में रहते हो, यह साबित करने के लिए कि तुम कितने काबिल हो। क्या तुम्हें लगता है कि मैं नहीं जानता कि तुमने क्वारंटीन कैंप में घुसकर वहां से सामान चुराया था? तुमने तब भी मेरा नाम खतरे में डाला था और अब भी ऐसा ही कर रहे हो।' सेतु ने डॉक्टर को घूरते हुए कहा, "उसके चेहरे पर गुस्से की कुरूपता थी और वह पशुता थी जो उसे परेशान कर रही थी। उसकी आंखें सिकुड़ी हुई थीं; उसके दांत नुकीले और तीखे थे;

उसका मुंह गुर्रा रहा था...यह आदमी कौन था?

उसने महसूस किया कि उसके अंदर क्रोध उमड़ रहा है। 'जब मैं दवाइयाँ लाया था, तब तुम बहुत खुश थे। जब तुम्हें यह ठीक लगता है, तो तुम इसे भगवान का हाथ कहते हो और जब नहीं लगता, तो इसे मेरी मनमानी कहते हो। तुम पाखंडी हो, क्या तुम्हें यह पता है? एक पाखंडी और कायर।'

सैमुअल सागयाराज का चेहरा पीला पड़ गया। उसने सेठ के चेहरे को घूरा। यह आदमी जिसने इतना ज़हर उगला, क्या वह सेठ था? उसने अपने अंदर ऐसी भावनाएँ कब से पाल रखी थीं? उसे मुझसे इतनी नफ़रत होगी, सैमुअल सागयाराज ने सोचा। यही वजह है कि उसे इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं है कि यह सब मेरी प्रतिष्ठा को कैसे प्रभावित करेगा। और यह विश्वासघात की भावना ही थी जिसने आखिरकार उसके मुखौटे को फाड़ दिया और उसे यह कहने पर मजबूर कर दिया, 'तुमने मेरा भरोसा तोड़ा है। यह प्रैक्टिस, यह अस्पताल, मेरी प्रतिष्ठा, सब कुछ दांव पर लगा है क्योंकि तुम हाजी की बेटी को चोदना चाहते हो।' सेठू को लगा कि उसकी आँखें चौड़ी हो गई हैं। बकवास। क्या डॉक्टर ने वाकई इस शब्द का इस्तेमाल किया था? उसने नहीं सोचा था कि डॉक्टर इस शब्द को जानता होगा। वासना से चुदाई तक पहुँचने में दो मिनट लगे थे।

'भाड़ में जाओ,' सेतु ने हैरानी से दोहराया।

'हाँ, बकवास। तुम्हारे दिमाग में बस यही चल रहा है। तुम चुदाई करना चाहते थे, लेकिन तुम्हें इस लड़की को क्यों चुनना पड़ा? क्या यहाँ कोई वेश्या नहीं है? उसके पास ऐसा क्या है जो यहाँ की औरतों के पास नहीं है? मोतियों से सजी चूत?' सेतु हँसने लगा। बकवास। चूत। क्या यह डॉ. सैमुअल सागयाराज था, जिसके पास स्वर्ग के राज्य की चाबियाँ थीं?

डॉक्टर चौंककर रुक गया। वह क्या कह रहा था? जब वह अपना आपा खो बैठा, तो अनायास ही उसके मुंह से विश्वविद्यालय के दिनों के शब्द निकल पड़े। उसने अपनी हथेली के पिछले हिस्से से अपना मुंह पोंछा।

'मुझे खेद है। मुझे अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए था। कोई बहाना नहीं है...' सैमुअल सागयाराज की आवाज़ में पश्चाताप था। सेतु ने उसे बहुत देर तक देखा।

'हाँ, तुमने जो कहा उसके लिए कोई बहाना नहीं है। वह लड़की मेरी पत्नी बनेगी।'

'सेठ।' डॉक्टर ने आगे बढ़कर सेठू की कलाई पकड़ ली। 'तुम गंभीर नहीं हो सकते। उसे वापस भेज दो और फिर सब ठीक हो जाएगा। मैं तुम्हें बताता हूँ।

मैं उसे वापस ले जाऊँगा। हाजी मेरी बात सुनेगा। वह उसे वापस ले जाएगा। इस घिनौने धंधे के बारे में किसी को पता नहीं चलना चाहिए।'

Machine Translated by Google

सेतु ने एक-एक करके उस पकड़ के जाल को खोला। 'मैं उसे जाने नहीं दूँगा। और वह इसके लिए राजी नहीं होगी, चाहे तुम उससे कुछ भी कहो। तुम नहीं समझते, है न? हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं।' उसके बाद जो सन्नाटा छाया, उसमें सेतु को एक बार फिर आज़ादी की हलचल महसूस हुई।

सादिया को अपनी बाहों में भरते हुए उसे ऐसा महसूस हुआ। अब दिखावा बंद करने का समय आ गया था।

इसलिए, जब डॉक्टर ने अपने चेहरे से सारी भावनाओं को मिटाते हुए कहा, 'ऐसी स्थिति में, आपको जाना ही होगा। आपको मेरे घर और अस्पताल से तुरंत निकलना होगा', तो सेतु ने इस अस्वीकृति का स्वागत किया।

तब उसे एहसास हुआ कि कभी भी सौहार्दपूर्ण विदाई नहीं हो सकती। चाहे उसके जाने का कारण कुछ भी रहा हो, डॉक्टर इसे विश्वासघात ही मानते। उसने सोचा कि अनुचरों को अपनी मर्जी से काम करने की अनुमति नहीं होती।

डॉक्टर अपनी लेखन मेज पर जाकर बैठ गया। कमरा अस्पताल में उसके कार्यालय की प्रतिकृति था। उसकी उंगलियाँ एक पल के लिए मेज के लकड़ी के शीर्ष पर फैली कांच की शीट पर ढोल बजाती रहीं। फिर उसने अपने हाथों को इस तरह से जोड़ लिया मानो अपने अनियंत्रित विचारों पर लगाम लगाना चाहता हो। 'तुम्हें एहसास है, है न? कि तुमने मेरे विश्वास को धोखा दिया है।' उसकी आवाज़ धीमी, समतल और कठोर थी।

सेतु को दुःख का एहसास हुआ। वह फिर सोचने लगा कि यह आदमी कौन है।

'मैंने तुम्हें वह बनाया जो तुम हो और मुझे कृतज्ञता की उम्मीद नहीं थी, लेकिन मैंने वफ़ादारी की उम्मीद की थी। इसलिए मैं तुम्हारी मदद करने के लिए कुछ नहीं करूँगा।' डॉक्टर ने अपना चश्मा उतारा और उसे सावधानी से पोंछा। 'तुम उससे शादी करने की बात करते हो। लेकिन तुमसे शादी कौन करेगा? तुम एक धर्म के हो और वह दूसरे धर्म की। तुम्हारे ईश्वर और उसकी नज़र में, यह कभी शादी नहीं होगी। शायद शरीर की। लेकिन आत्माओं की कभी नहीं।

और आपके बच्चों का क्या? आप अपने घर में किस धर्म का पालन करेंगे? उसकी किस धर्म का?
तुम्हारा? तुम्हारे बच्चों के लिए, वे ईश्वरविहीन हो जाएंगे।' डॉक्टर युवा मन के विचार से कांप उठे, जो एक दयालु, सर्व-क्षमाशील पिता के विचार में कोई सांत्वना नहीं खोज सकते। 'हर दिन तुम मतभेदों को खोजोगे। तुम पाओगे कि तुम्हारे पास मिलने का कोई आधार नहीं है। एक कैसे हो सकता है? कांटे, पसीना, धूल, यही तुम्हारे जीवन का योग होगा। हर दिन, तुम अपने किए पर पछताओगे, और इससे जो दुख होगा, उसमें खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहेगा।' सेतु ने झिझकते हुए कहा। बोले गए शब्दों की गणना की परिधि ने उनके बीच एक ऐसी दूरी पैदा कर दी जिसे वे कभी पाट नहीं पाएंगे। अगर यह ऐसे ही खत्म होना था, तो ऐसा ही हो। उसने डॉक्टर की नज़रों से नज़रें मिलाईं और कहा, 'मैं जानता हूँ कि तुम नाराज़ हो। तुम्हें नाराज़ होने का

पूरा अधिकार है। जैसे मुझे सादिया के साथ जीवन बिताने का अधिकार है। मैं चला जाऊँगा। मुझे उम्मीद थी कि तुम समझोगे, लेकिन मैं गलत था। मैं तुम्हारे प्रति कोई दुर्भावना, कोई गुस्सा नहीं रखता। तुमने मेरी मदद की जब मेरे पास कोई और नहीं था और मैं इसे कभी नहीं भूलूँगा। भगवान तुम्हारे साथ रहें और...' सेतु को वाक्यांश समझ में नहीं आया, 'तुम्हारा

Machine Translated by Google

मैं तुम्हारे रेहेबोथ में मिलने में मदद करूँगा।' वह

जाने के लिए मुड़ा, फिर रुक गया। 'एक और बात है। मेरा नाम सेतु है।
सेठ नहीं। मैं हिंदू हूं। ईसाई नहीं, जैसा कि आपने सोचा था। लेकिन मैंने किताब के हर शब्द पर विश्वास किया। मुझे विश्वास था कि आपका धर्म प्रेम और क्षमा सिखाता है। मुझे विश्वास था कि आप हमें उस बहुमूल्य ईसाई दान की भावना से कुछ देने में सक्षम होंगे, जिसके बारे में आप इतना बात करते हैं। लेकिन फिर, आप हमेशा बाइबल से वही निकालते हैं जो आपको उपयुक्त लगता है और बाकी को अनदेखा कर देते हैं। इसलिए अब मैं वही करूँगा जो आपकी बाइबल में अय्यूब की पुस्तक में सलाह दी गई है। "मैं ईश्वर की खोज करूँगा, और ईश्वर को अपना काम सौंपूँगा।" इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह उसका ईश्वर है, या मेरा, या यहाँ तक कि तुम्हारा भी। अगर कोई ईश्वर है, तो वह ईश्वर हमारी देखभाल करेगा।'

जब सेतु और सादिया चले गए, तो सैमुअल सागयाराज अपना सिर अपने हाथों में थामे बैठा रहा। वह थका हुआ और निराश महसूस कर रहा था। लेकिन वह और क्या कर सकता था? सेठ और लड़की की मदद करना स्वीकृति दिखाना होता, लेकिन वह स्वीकृति नहीं देता था। जहाँ तक उसके ईसाई न होने का सवाल है, सेठ-सेतु, उसने खुद को सुधारा- ने जो किया वह अक्षम्य था।

डॉक्टर ने अपने चेहरे से पसीना पोंछा और अपनी लेखन सामग्री निकाली।
उसने हाजी को पत्र लिखना शुरू किया। उसे अपनी गलती का स्पष्टीकरण देना था, अपनी गलती सुधारनी थी, जो कुछ हुआ था उससे खुद को अलग करना था। उसने शुरू किया कि उस आदमी ने मुझे भी धोखा दिया है। अब से मेरी पत्नी ही मेरे साथ रहेगी, उसने समाप्त किया।

सेतु ने कहा, 'आप चिंता न करें। सब ठीक हो जाएगा।'

वे घोड़ागाड़ी में थे। सादिया उनके सामने बैठी थी। गाड़ी की हर हरकत के साथ उनके घुटने आपस में मिलते और अलग होते थे।

'मलिक, मैं नहीं हूं,' उसने कहा।

सेतु चौंककर सीधा हो गया। 'मलिक? तुम मुझे ऐसा क्यों कहते हो? मेरा नाम मलिक नहीं है।' 'लेकिन है!' सादिया फुसफुसाई। 'तुम मेरे मलिक हो। समुद्र पार

से आए बेमिसाल व्यक्ति। मजबूत और सीधे, पुरुषों के बीच एक नेता, जिस पर समुद्र और हवाओं और अज्ञात रास्तों का सामना करने के लिए भरोसा किया जा सकता है। तुम मलिक हो। क्या तुम नहीं देखते?'

सेतु ने उसकी ओर बड़े प्यार से देखा। उसने उसे दस फीट की दूरी का अहसास कराया।
लंबा. फिर भी.

उसने अपनी उंगली से उसके गाल को सहलाया। 'मैं सेतु हूँ। सेठ नहीं। मलिक नहीं। मैं नाटक-नाटक से तंग आ चुका हूँ,' उसने कहा, जितना संभव हो सके उतना नरम रहने की कोशिश करते हुए।
'तुम्हें मुझे सेतु ही समझना चाहिए।'

सादिया मुस्कुराई। चाहे वह कुछ भी कहे, वह उसका मलिक था। अतुलनीय।

Machine Translated by Google

सेतु ने उसकी मुस्कान देखी। एक आंतरिक मुस्कान जो उसके शब्दों को झटकने के लिए प्रेरित कर रही थी।
उसे अचानक डर लगने लगा। क्या यही वह अंतर था जिसकी डॉक्टर ने भविष्यवाणी की थी, नहीं, उसे शाप दिया था?

'यह सिर्फ़ नाम का गांव है। इसमें बस कुछ गलियाँ और समुद्र है,' जेम्स राज ने कहा था। 'उस इलाके में बहुत कम लोग रहते हैं। और जो रहते हैं, वे आपको परेशान नहीं करेंगे। उनके अपने रहस्य और जीवन हैं। मैंने यह सोचकर घर बनवाया था कि समुद्र के किनारे रहना अच्छा रहेगा। समुद्र ने मुझे वह सब दिया है जो मेरे पास है। लेकिन मेरी पत्नी नाज़रेथ छोड़ने से इनकार करती है। उसे लोग और सड़कें चाहिए और वह चर्च में बहुत जाती है... इसलिए घर ज़्यादातर समय खाली रहता है। कभी-कभी वह मेरे साथ वहाँ जाने के लिए राज़ी हो जाती है, लेकिन फिर भी उसे बेचैनी होने लगती है। जब तक यह सब ठीक नहीं हो जाता, तुम वहाँ रह सकते हो और अगर तुम्हें यह उतना ही पसंद है जितना मुझे, तो तुम वहाँ बिना किराए के रह सकते हो। समझे?' सेतु ने उस आदमी के चेहरे को पढ़ने की कोशिश की। बदले में उससे क्या करने की उम्मीद की जा रही थी?

तब सेतु को समुद्र से मिली सीख याद आई: उससे लड़ो मत। उसे रहने दो।

इसलिए वह राजी हो गया। जैसे उसने जेम्स राज की नौकरी की पेशकश स्वीकार की थी। 'मुझे तुम्हारे जैसे आदमी की जरूरत है। कोई ऐसा जो अंग्रेजी बोल सके, हिसाब-किताब कर सके और मेरे व्यापार में मेरी मदद कर सके।' व्यापार शब्द से सेतु को चिंता होने लगी। कोई नहीं जानता था कि जेम्स राज

क्या करता है। कुछ लोगों ने कहा कि उसके पास मछली पकड़ने वाली नावों का बेड़ा है। दूसरों ने कहा कि वह हीरे और कीमती पत्थरों का व्यापार करता है। लेकिन उसे डॉक्टर जितना ही सम्मान दिया जाता था। क्योंकि जेम्स राज नाज़रेथ का सबसे अमीर आदमी था। शायद डॉक्टर को यह बात नापसंद थी, क्योंकि वह जेम्स राज को एक नवोदित व्यक्ति कहता था और जब वह जेम्स राज की अत्यधिक दयालुता की कहानी सुनकर परेशान होता था, तो वह बुदबुदाता था, 'नवोदित तस्कर इसे देने का जोखिम उठा सकता है। आखिरकार, यह गलत तरीके से कमाया गया पैसा है, आसानी से कमाया गया पैसा।' जेम्स राज पूरे नाज़रेथ में एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो डॉक्टर से प्रभावित नहीं था।

यही कारण है कि जब सेतु और सादिया डॉक्टर के घर से बाहर निकले, तो सेतु ने सोचा कि अब केवल एक ही काम करना है: जेम्स राज को ढूंढना और उसकी मदद मांगना।

सेतु जानता था कि वह एक गुरु को दूसरे से बदल रहा है। लेकिन जेम्स राज ने कोई सवाल नहीं पूछा था जब सेतु ने कहा, 'मुझे एक घर और नौकरी चाहिए। डॉक्टर को अब मेरी या मेरी सेवाओं की ज़रूरत नहीं है।' जेम्स राज ने सिर हिलाया। उसने पहले ही सुन लिया था, लेकिन उसने दिखावा किया कि उसे कुछ भी नहीं पता। जेम्स राज विवेक की शक्ति

को जानता था। इसके अलावा, उसे उस बाइबल-थंपिंग करने वाले डॉक्टर पर एक अंक हासिल करने में अच्छा लगा जो इस तरह व्यवहार कर रहा था जैसे कि वह प्रभु यीशु का प्रेषित हो।

'मनप्पाड़ जाओ। तुम वहाँ जाने के लिए मेरी घोड़ागाड़ी का इस्तेमाल कर सकते हो,' उसने कहा। 'तुम्हें शांति और सुकून मिलेगा। कुछ दिनों में मैं तुम्हें बुला लूँगा।' इसलिए सेतु और सादिया मनप्पाड़ चले गए, ताकि एक हवेली में अपने प्यार

को बसा सकें।

Machine Translated by Google

जो एक जंगली समुद्र की रेत पर बैठा था।

सादिया मंत्रमुग्ध हो गई। वह बार-बार कहती रही कि इससे अधिक परिपूर्ण क्या हो सकता है। उसने खिड़कियाँ खोल दीं और समुद्र की आवाज़ घर में फैल गई। घर और समुद्र के बीच मलाईदार रेत के अलावा कुछ नहीं था। पूरे दिन हवा चलती रही।

सेतु ने कहा, 'गर्मी शुरू होते ही हमें यहां से चले जाना होगा। यहां बहुत गर्मी होगी।'

'मुझे परवाह नहीं कि कितनी गर्मी पड़ती है,' सादिया ने कहा। 'सिर्फ समुद्र को देख पाना...सिर्फ दिन-ब-दिन क्षितिज को देखना, इससे बढ़िया और क्या हो सकता है? यह मेरी जन्नत है!' अपरिचित शब्द सुनकर सेतु के माथे पर झुर्रियाँ पड़ गईं। 'जन्नत?' 'स्वर्ग। पवित्र कुरान में इसे यही कहा गया है।' सेतु ने उसकी
आँखों में खुशी देखी और खुद भी खुशी को पहचाना। ईश्वर अच्छा है। बहुत पहले, जिस ज्योतिषी ने उसकी
कुंडली बनाई थी, उसने कहा था, 'यह लड़का किस्मत का बच्चा है। चाहे कुछ भी हो, यह हमेशा उसके
पैरों पर गिरेगा।'

यह सच था। पहले माश था। फिर डॉक्टर। और अब जेम्स राज। उनमें से हर कोई अपने जीवन में एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गया जहाँ उसे नहीं पता था कि किस रास्ते पर जाना है। उन्हें उनकी मदद के लिए कीमत चुकानी पड़ी, लेकिन यह अपेक्षित था: जीवन में कुछ भी बिना टैग के नहीं आता। यहाँ तक कि प्यार भी नहीं। क्योंकि सादिया ने भी भिन्नता के वस्त्र पहने थे।

सेतु ने सादिया के लिए केला छीला। 'यही सब है जो मुझे मिल सका,' उसने केलों के एक हाथ की ओर इशारा करते हुए कहा, जो उसने किसी तरह एक विक्रेता से खरीदा था।
'कल मैं हमें जो चाहिए वो सब ढूँढ़ लूँगा। कुर्सियाँ और मेज़, रसोई के लिए बर्तन और तुम्हारे लिए खाना बनाने की चीज़ें और...' उसने चुपके से कहा, 'एक बिस्तर।' जब सादिया का चेहरा रंगा, तो वह चमक उठा।

'अभी तो हमें इसी से संतोष करना होगा,' उन्होंने ताड़ के पत्तों की चटाई की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर उन्होंने एक मोटी सूती चादर बिछा रखी थी। 'यह चटाई ही हमारा गद्दा होगी और तकिया के लिए तुम मेरी बांह का इस्तेमाल कर सकते हो।' वह मुस्कुराए।

उसकी नज़रें चौड़ी हो गईं और नीचे झुक गईं। 'आओ,' उसने कहा, उनके अस्थायी बिस्तर पर फर्श पर बैठते हुए।

वह अनिश्चित और भयभीत खड़ी थी।
'आओ,' उसने फिर कहा.
जब वह नहीं हिली, तो वह उठकर उसके सामने खड़ा हो गया। 'मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ?' उसने धीरे से पूछा, अपनी तर्जनी से उसकी ठोड़ी को ऊपर उठाते हुए। उसके ऊपरी होंठ के ऊपर पसीने की एक लकीर थी। वह डर गई है, उसने सोचा। अपना सिर नीचे करते हुए, उसने अपने मुँह से पसीने की बूँदें इकट्ठी कीं, जैसे वे चावल के मोती हों। मेरे पास है

Machine Translated by Google

उसने उसकी त्वचा के नमक का स्वाद चखा, उसने बढ़ती खुशी के साथ सोचा। वह काँप उठी। क्या यह उसकी त्वचा पर उसके मुँह का स्पर्श था, या वह जिस तरह से खड़ा था ताकि रेशम की एक फुसफुसाहट भी उनके शरीर के बीच से न गुज़रे?

उसने महसूस किया कि वह उसकी ओर झुक रही है। फिर वह उसे अपने बिस्तर पर ले गया और उसे अपने साथ नीचे खींच लिया।

वह पीठ के बल लेटी हुई थी, फैली हुई और स्थिर, उसकी आँखें बंद थीं। सेतु ने उसे देखा और अपनी बेचैनी को निगल लिया - क्या यह अंतर का भूत था? फिर उसे लगा कि प्यार की एक लहर ने उसके डर को भगा दिया। वह कितनी खूबसूरत है, उसने सोचा। और वह मेरी है। मेरी अपनी।

उसने उसे दुलारने दिया, लेकिन जब उसका हाथ उसके स्तन पर पड़ा, तो वह उठ बैठी। 'नहीं,
'तुम ऐसा नहीं कर सकते,' उसने आतंक से भरी आवाज में कहा।

'क्यों नहीं? मैं तुम्हारा...' सेतु रुका, फिर उतने ही विश्वास के साथ बोला
उन्होंने जितना संभव हो सका, कहा, 'आपके पति।'

उसने देखा कि वह उसकी ओर देख रही है। उसने देखा कि उसकी आँखों में डर गायब हो गया है। उसने उसे फिर से अपनी बाहों में ले लिया। धीरे-धीरे, उसने अपनी उँगली उसकी गर्दन की रेखा पर फिराई और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से की त्वचा पर गोल-गोल निशान बनाए। उसने महसूस किया कि उसका शरीर उसके शरीर से सटकर आराम कर रहा है।
उसने अपने होंठ उसके माथे पर दबा दिए। वह और भी उसके करीब आ गई।
इससे हिम्मत पाकर उसने अपनी जीभ उसकी बंद पलकों के वक्र पर फिराई। वह उसकी बाहों में काँप उठी और मानो उसे यह सब, उससे बहुत कुछ मिल गया हो, उसने महसूस किया कि उसकी बाहें उसके चारों ओर लिपटी हुई हैं। वह उसकी त्वचा पर मुस्कुराया।

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि मेरे साथ क्या हो रहा है,' वह बुदबुदाई।

'चुप, चुप,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'समझने के लिए कुछ भी नहीं है। यह सिर्फ़ तुम और मैं हैं और हम एक दूसरे के बारे में कैसा महसूस करते हैं।' 'अब मेरी शर्ट के बटन खोलो,' उसने कहा।

जैसे ही उसने बटन-होल में बटन डाला, उसके हाथ कांपने लगे।

'क्या हमें सारी रात ऐसे ही रहना है? ओह सादिया, तुम कितना समय बरबाद करती हो!' हल्की हंसी के साथ उसने उसकी शर्ट उतारने में मदद की।

जब उसके हाथ उसके कपड़ों से टकराने लगे तो उसने उसके विरोध का इंतज़ार किया। लेकिन वह उसके सामने लेट गई और उसे एक-एक करके अपने कपड़े उतारने दिए।
उसने उसके कंधों पर लपेटे लंबे दुपट्टे को खोला। उसने उसके लंबे बाजू वाले ब्लाउज के बटन खोले और धीरे से उसकी कमर पर लगी गाँठ खोली। उसकी स्कर्ट उसके ऊपर से सरक गई।

'यह क्या है?' सेतु ने बुदबुदाया, जब उसकी उंगलियों ने त्वचा के बजाय कपड़े को छुआ।

नीचे उसने एक लंबी कमीज पहनी हुई थी और जब सेतु की उंगलियां उसकी गर्दन पर टिकी थीं, तो उसने अपने हाथों से उसका हाथ ढक लिया।

'मत करो,' वह फुसफुसाया.

Machine Translated by Google

'मुझे तुम्हें देखने दो,' उसने कहा और मजे से देखा कि सादिया ने अपना चेहरा ढक लिया। वह जिसने कभी किसी पुरुष को अपना चेहरा नहीं दिखाया था, उसके सामने नंगी लेटी थी।

उसने उसे तिरछी नज़र से देखा और फिर से प्यार की लहर महसूस की। उसका। वह उसकी थी। उसके बिखरे बाल और कपड़े उसके अतिक्रमणकारी हाथों और मुँह की हद दिखा रहे थे।

'मत करो,' उसने उसके चेहरे से उंगलियाँ हटाते हुए कहा। 'मैं तुम्हारा पति हूँ। तुम मेरी हो। तुम्हें शर्मिंदा या शर्मिंदा होने की कोई ज़रूरत नहीं है।'

जैसे ही वह उसके मुंह को अपने मुंह से ढकने के लिए नीचे झुका, उसने महसूस किया कि उसके निप्पल के सख्त उभार उसके मुंह को छू रहे हैं। उसने महसूस किया कि उसके होंठ अलग हो रहे हैं। नमी। उसके मुंह में, उसकी उंगलियों पर शानदार तरल नमी, उसे उसके अंदर समाहित कर रही थी। वह फिर से जीत की खुशी में हंसा, उसकी इच्छा की सीमा को जानते हुए।

सादिया और मेरे बीच ये सारे अंतर क्या मायने रखते हैं? इससे क्या फर्क पड़ता है, क्योंकि मेरे पास यह सब है, उसने सोचा। उसकी आंतरिक जांघों की कोमल त्वचा से अधिक परिपूर्ण कुछ और कैसे हो सकता है? या इससे अधिक आरामदायक कुछ और हो सकता है कि मैं उसकी पीठ से सटा हुआ लेट जाऊँ, मेरी साँसें उसकी गर्दन के पीछे हवा कर रही हों, मेरा हाथ उसके स्तन को थामे हुए हो, और मैं खुद को उसके प्यार की गिरफ़्त में महसूस कर रहा होऊँ?

उसने उसे कैसे अपने आगोश में ले लिया, उसकी आंतरिक जाँघों के बीच की वह अवतल जगह। एक घोंसला जहाँ वह अपनी लंगड़ाहट को छिपाकर नई ताकत ढूँढ़ सकता था। माँ। उम्मीद। दिलासा देनेवाला।
जैसे-जैसे उसने खुद को बड़ा और कठोर महसूस किया, वह नरम स्थान एक अनियंत्रित प्राणी बन गया, जो मखमली पंजे से उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था, और, और, और...
जैसे ही नींद आती, उसे आत्मा में एक शांति, एक अविश्वसनीय स्थिरता, एक शान्ति का अनुभव होता।

तो यह संतुष्टि है, सेतु ने अगले कुछ हफ़्तों में खुद को सोचते हुए पाया। यह विचार उसके मन में तब आया जब उसे इसकी उम्मीद नहीं थी, और इसने उसे और भी ज़्यादा कीमती बना दिया। यह विचार उसके मन में तब आया जब उसने खाने की प्लेट से अपनी आँखें उठाईं और पाया कि वह उसे अपनी आँखों से खा रही है। यह विचार उसके मन में तब आया जब दीवार में कील ठोकते समय उसकी उंगली में चोट लग गई और वह आँखों में आँसू लिए उसके पास दौड़ी और खून की बूँदें चाट लीं।

संतुष्टि। यह उसे तब महसूस हुआ जब वे रेत पर टहल रहे थे और वह सीपियाँ इकट्ठा कर रही थी जिन्हें उसने बाद में अपने बेडरूम की खिड़की पर सजा दिया। उसने हवा को उसके बालों को उछालते और उसकी आँखों को नाचते हुए देखा।

सामग्री। यह उनके घर में भरे गीतों में बजता था। केवल वह ही ऐसी चीज़ खरीदने के बारे में सोच सकता था, सादिया हँसी जब वह घर में सेकंड-हैंड, या थर्ड-हैंड, विंड-अप ग्रामोफोन और रिकॉर्ड का ढेर लाया। केवल सेतु को ही इतनी आसानी से बेवकूफ़ बनाया जा सकता था, सादिया ने बड़बड़ाते हुए कहा

Machine Translated by Google

उसने पाया कि लेखनी में सुई नहीं थी। बबूल की टहनी तोड़कर उसमें से एक काँटा निकालकर लेखनी में लगाने के बारे में केवल सेतु ही सोच सकता था, सादिया ने प्रशंसा में कहा, जब बबूल का काँटा रिकॉर्ड से नोट्स निकाल रहा था।

संतुष्ट। यह उस अनार के पौधे की तरह बड़ा हुआ जिसे वह उसके लिए घर लाया था
क्योंकि उसने कहा था कि अनार के पेड़ के बिना जन्नत अधूरी है।

संतुष्ट। यह कई रंगों से चमक रहा था क्योंकि यह एक तिरंगा लालटेन था जो सेतु को कबाड़खाने में मिला था, जिसे रेलवे पॉइंटमैन ने छोड़ दिया था, या शायद यह किसी से चुराया गया था। सेतु ने कांच के तीन टुकड़ों को साफ किया, एक नई बाती डाली, और सादिया को एकजुटता के लिए एक नया अक्षर दिखाया: हरा जब सेतु उसे चाहता था, लाल जब वह उसे चाहती थी, पीला जब दोनों में से कोई भी प्यार से विराम लेना चाहता था। उन पहले हफ्तों में, पीला रंग कभी नहीं चमकता था।

लेकिन संतोष एक लालची मुख वाली मांग करने वाली मालकिन है। जैसे-जैसे असाधारण दिनचर्या में शामिल होता गया, सेतु को बेचैनी होने लगी। 'क्या आपको लगता है कि जेम्स राज आज संदेश भेजेगा?' वह हर सुबह पूछता था।

सादिया ने सिर हिलाया। जेम्स राज कौन था, वह सोच रही थी। उसने ऐसा क्यों किया?
क्या आपको संदेश भेजना है?

एक दिन सादिया ने पूछा, 'क्यों?' 'क्यों?' सेतु ने आश्चर्य

से उसकी ओर देखा। 'मेरी प्यारी बच्ची, अगर मैं कमाना शुरू नहीं करूँ
जल्द ही हम भूखे मर जायेंगे। मेरे पैसे लगभग ख़त्म हो चुके हैं।'

उसने अपने पैरों की तरफ देखा। 'ओह,' उसने कहा। पैसा। उन्हें जीने के लिए पैसे की जरूरत थी। अरबिपटनम में, हर किसी के पास पैसा था और कोई भी कभी भी भूखा शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था। सादिया ने जितने दिन घर छोड़ा था, उनमें पहली बार उसे डर का एहसास हुआ।

'इतनी चिंतित मत दिखो।' सेतु ने हँसते हुए उसे अपनी बाहों में खींच लिया। 'मैं यहाँ हूँ।
मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगी। क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है? मैं तुम्हारी वापा से भी बेहतर देखभाल करूंगी।' सादिया मुस्कुराई। लेकिन यह उसकी अनिश्चितता को छिपाने के

लिए एक मुस्कान थी। जीवन उनके लिए क्या लेकर आएगा?

जेम्स राज ने संदेश भेजा। सेतु नाज़रेथ में उनके घर पर उपस्थित हुआ।
जेम्स राज ने सेतु को ऐसे देखा जैसे वह उसे पहचान ही न रहा हो। सेतु झिझकते हुए मुस्कुराया। क्या गड़बड़ हो सकती है? क्या डॉक्टर जेम्स राज को मना पाने में कामयाब हो गए थे? तब वह और सादिया क्या करेंगे? बूढ़ा आदमी अपनी कुर्सी पर खिसक गया और अपनी छाती की जेब से उसने कागज का एक टुकड़ा निकाला। उसने एक पल के लिए उसका अध्ययन किया और कहा, 'तुम्हारा रास्ता समुद्र में है, और रास्ता महान जल में है, और तुम्हारे पदचिह्न ज्ञात नहीं हैं।'

जेम्स राज ने अपनी भौंहें हिलाईं। 'क्या तुम उसे पहचानते हो?' सेतु ने आश्चर्य से बूढ़े आदमी की ओर देखा।

जेम्स राज ने सुना था,

Machine Translated by Google

उसने बहुत कम विश्वास जताया, खासकर बाइबल में। लेकिन उसने सिर हिलाया। 'भजन 77.19।'

जेम्स राज मुस्कुराया। 'तो यह सच है जो वे कहते हैं। कोंडाई बहनों में सबसे छोटी ने कहा कि आप बाइबल का हर शब्द जानते हैं। वह चुपके से यहाँ आई, मुझसे आपकी मदद करने के लिए कह रही थी। उनकी माँ मेरी दूर की रिश्तेदार है। डॉक्टर को यह पसंद नहीं है कि वे मेरे पास आएं, लेकिन मैरी पैटी को इस बात की परवाह नहीं है कि अच्छा डॉक्टर क्या सोचता है। छोटी कोंडाई भी वैसी ही है। बड़ी बहनें ही उसकी गुलाम हैं। लेकिन आप ईसाई नहीं हैं। फिर ऐसा कैसे है कि आप हर भजन, हर शब्द जानते हैं?' सेतु ने खुद को मुस्कुराने दिया। उसे राहत महसूस हुई। 'मैंने इसे बहुत बार पढ़ा है

और मुझे लगता है कि मुझे लगभग सब कुछ याद है। मुझे लगता है कि मेरी याददाश्त अच्छी है।'

'अच्छा!' जेम्स राज ने खड़े होकर कहा। 'तुम्हारी याद्दाश्त कमाल की है, मेरे बेटे। क्या तुम जानते हो इसका क्या मतलब है? मैं बहीखातों की जगह तुम्हारी याद्दाश्त का इस्तेमाल कर सकता हूँ।
सब कुछ बहुत सरल हो जाएगा!'

'लंबे समय के बाद पहली बार मुझे यकीन हो रहा है। जैसे कि मुझे पता है कि क्या करना है,' सेतु ने सादिया से कहा, जो पहाड़ियों के बीच रेत का एक ढेर थपथपाते हुए बैठी थी।

उसने ऊपर देखा.

वे समुद्र के किनारे रेत पर बैठे थे। शाम की धुंध लहरों को नहला रही थी।

रंगों की धुंध छंट गई और सेतु को शांति का अनुभव हुआ।

वह मुस्कुराया। 'तुम बहुत ही बच्ची हो। और मैं तुम्हारे लिए बहुत ज़िम्मेदार महसूस करता हूँ। मैं डर गया था, बहुत ज़्यादा। क्या होता अगर मैं तुम्हें ले जाकर ग़लत करता? क्या होता अगर जेम्स राज की नौकरी नहीं मिलती? इतने सारे 'क्या होगा अगर'... हर चीज़ मुझे डराती थी।' 'क्यों?' उसने पूछा। मलिक किससे डर सकता था? उसका

अतुलनीय, साहसी मलिक.

'क्या तुम सच में जानना चाहते हो?' 'मुझे बताओ।'

उसकी आवाज़ में धीरे से समझाने की शक्ति थी। 'मैं शायद न समझूँ, लेकिन मुझे बताओ।' सेतु ने अपने पैर फैलाए और अपनी कोहनियों पर पीछे

झुक गया। उसने क्षितिज की ओर देखा।

'समुद्र के उस पार सीलोन है। यह डर मुझे तब लगा जब मैं वहाँ नहीं गया था,' सेतु ने कहा, उसकी आवाज़ दर्द की यादों से भर गई थी। 'मैंने तुम्हें बताया था कि मैंने घर क्यों छोड़ा था, है न? जब मैं माश से मिला, तो मुझे लगा कि मैं असफलता के डर से बाहर निकल गया हूँ। फिर यह फिर से शुरू हुआ, लेकिन इस बार यह उसकी वजह से था। माश। वह आदमी जो मुझे सीलोन ले गया।

'वह सबसे अच्छे आदमी थे जिनसे मैं मिला हूँ। वह दयालु और उदार थे। उन्होंने मुझे सिखाया

Machine Translated by Google

मैं सिर्फ़ इतना ही जानता था और उसने मुझे अंकगणित की कठिनाई से उबरने में भी मदद की। लेकिन उसका एक पक्ष ऐसा भी था जिससे मैं खुद को दूर रखता था। और एक बार जब मैं उसका घर छोड़ देता, तो यह एक अनिश्चित याद बनकर रह जाता। कभी-कभी मुझे आश्चर्य भी होता था कि क्या मैंने यह सब कल्पना की थी।

'मैं कोलंबो से दूर चला गया और कैंडी में मेरी मुलाकात बालू से हुई। बालू शायद मेरा पहला दोस्त था। थोड़ी देर बाद, उसे पंबन क्वारंटीन कैंप में भेज दिया गया। उसके एक साल बाद, मैं वहाँ गया और हम फिर से साथ थे। मैं उससे ऐसे प्यार करता था जैसे वह मेरा भाई हो।

'एक रात हम कोलंबो में अपने बचपन के दिनों के बारे में बात कर रहे थे। बालू पूरी शाम लगातार शराब पीता रहा और जैसे-जैसे वह बोलता गया, उसके शब्द और भी कड़वे होते गए। फिर उसने कहा, "मैंने अपने जीवन में जो कुछ भी किया है, मैं उसके साथ जी सकता हूँ; मुझे यह विचार असहनीय लगता है कि मैंने खुद को बेच दिया है। मैं युवा था और मुझे पर्याप्त जानकारी नहीं थी, और वह आदमी..." जब उसने मेरी आँखों में खौफ देखा तो वह रुक गया।

'"हाँ," उसने धीरे से कहा। "वह आदमी कायल था - मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ, उसने कहा, मैं तुम्हारे लिए सरकारी नौकरी ढूँढ़ दूँगा - और मैंने सोचा, मैं कुछ भी नहीं खोऊँगा।
वह सिर्फ़ इतना चाहता है कि जब वह हस्तमैथुन करे तो मुझे पकड़ ले। वह मेरे लिंग को चूमना चाहता है और मेरी गेंदों को चाटना चाहता है। मैंने सोचा, इससे क्या फ़र्क पड़ता है, जब तक मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है। मेरा शोषण नहीं हो रहा था। उस आदमी ने अपनी बात रखी। उसने मुझे यह नौकरी पाने में मदद की।”

"आज जो सामान आया, उसमें एक अखबार का पुराना अंक भी था।"
बालू ने एक लंबी चुप्पी के बाद कहा, "मैंने एक रिपोर्ट देखी है कि वह मर चुका है।"

'और फिर बालू ने कहा, "वह अपने घर में ही मर गया। वह भी केरल से है, तुम्हारी तरह।"

'मुझे लगा जैसे मेरा दिल बैठ गया, सादिया, मुझे लगा जैसे कोई पर्दा हटा रहा है
मेरा अतीत। ऐसा नहीं हो सकता, मैंने खुद से कहा। "उसका नाम क्या था?" मैंने पूछा।

'तभी बालू ने माश का नाम लिया और मुझे फिर से डर लगा। यह सच नहीं हो सकता।
मैंने उन रातों के बारे में न सोचने की कोशिश की जब माश मेरे बिस्तर में घुस आया था। कैसे वह मेरे चारों ओर अपना हाथ रखता था और मैं उसकी मुट्ठी को हिलते हुए सुनता था। ऊपर और नीचे, ऊपर और नीचे। यह अब तक की सबसे भद्दी आवाज़ रही होगी। इसकी घिनौनी आवाज़ ने मुझे विचलित कर दिया, लेकिन बालू की तरह मैंने इसे जाने दिया। वह बस मुझे पकड़े हुए था, मैंने सोचा। मैं न तो पीड़ित था और न ही भागीदार। बाद में, जब मैं बड़ा हुआ, तो मुझे एहसास हुआ कि वह मेरा इस्तेमाल कर रहा था।

लेकिन मैंने इस विचार को अपने दिमाग में बंद कर लिया।

'बालू उस याद की खुरदरीपन को बाहर निकाल रहा था; उसकी बदबू और घिनौनापन...और मुझे लगा कि मेरे दिमाग में कुछ टूट गया है। मैं माश पर मेरे भरोसे का दुरुपयोग करने के लिए क्रोधित था। मैं बालू पर क्रोधित था कि उसने मुझे माश को उसके वास्तविक रूप में दिखाया। किसी भी चीज़ से ज़्यादा, मैं खुद पर क्रोधित था कि मैंने इसे जारी रहने दिया। मैं इतना कायर कैसे हो सकता था? मैं इतना डरपोक कैसे हो सकता था? मुझे पता था कि मैंने इसे होने दिया क्योंकि अगर मैंने विरोध किया होता, तो मैं

Machine Translated by Google

कहीं जाने के लिए कोई जगह नहीं होती।

'मैं ठीक से सोच नहीं पा रहा था, आप समझ रहे होंगे। मैंने इधर-उधर देखा। बालू ने टेबल पर एक पेन-चाकू छोड़ा था। मैंने उसे पकड़ लिया और मुझे याद है कि मैं चिल्लाया, "बंद करो, बंद करो!" और फिर मैंने उस पर चाकू से वार कर दिया।

'क्यों? मुझे नहीं पता। शायद इसलिए क्योंकि उसने आखिरी पर्दा हटा दिया था। फिर मैं भाग गई। मैं समुद्र में भाग गई जहाँ मछुआरे जाने वाले थे और मैं उनके साथ चली गई। मैं तब से भाग रही हूँ, सादिया। मैं अपने अतीत को कैसे भुला सकती हूँ?

माश के साथ मेरे रिश्ते की गंदगी है। बालू है। मुझे नहीं पता कि वह ज़िंदा है या मैं हत्यारा हूँ। और अब...' सेतु ने रुककर कहा।

सादिया आगे झुकी. 'और अब...'उसने कहा.

सेतु ने उसकी ओर देखा। उसे आश्चर्य हुआ कि क्या उसने जो कुछ भी कहा था, उसमें से कुछ भी समझ पाई है - उसके अतीत की उलझनें, उसके डर और चिंताएँ। वह एक बच्ची थी।

वह उसे बताना चाहता था कि जेम्स राज के साथ होने पर वह कैसे सुरक्षित और संरक्षित महसूस करता है। और उसने देखा कि वह उसके यह कहने का इंतज़ार कर रही थी कि यह वही थी जिसने अंतर पैदा किया।

सेतु ने उसका पैर अपने हाथ में लिया। कितना छोटा था वह, मेहराब कितना ऊँचा और घुमावदार।
उसने पैर पर हाथ फेरा, जिससे रेत के कण बरसने लगे और बोला, 'अब कोई बात नहीं। जब मैं तुमसे मिला, तो ऐसा लगा जैसे मेरी ज़िंदगी का चक्र पूरा हो गया हो। मैं शुद्ध हो गया था। और यह नौकरी, मुझे एहसास कराती है कि हमारे पास एक मौका है।'

सादिया मुस्कुराई। उसने सोचा कि उनके प्यार की जीत ऐसी ही थी। सेतु ने मुस्कुराहट को समझा और उस जीत की सीमा को समझा, क्योंकि यह उसकी भी जीत थी।

इसलिए सेतु काम पर चला गया और सादिया खाना बनाती, सफाई करती, समुद्र को देखती और इंतज़ार करती। अरबिपटनम में पत्नियाँ यही करती थीं और सादिया इसे आसानी से कर लेती थी। जब तक इंतज़ार देर शाम तक और कभी-कभी आधी रात से भी ज़्यादा और भोर के शुरुआती घंटों तक नहीं खिंच जाता। उन खामोश घंटों में, समुद्र भी उसे बेजान लगता था। जब वह खिड़की से बाहर देखती, तो आसमान का विस्तार और रेत की चमक उसकी आँखों को दुखाती थी।

दिन महीनों में बदल गए और सादिया को फिर से डर लगने लगा। यह गरीबी का डर नहीं था। यह एक और भूख का डर था। अपनी बहनों और उम्मा, सुलेमान और ज़ुलेका के साथ होने का। वापा के साथ होने का। उसे लगा कि उसके मन में दुख घुस रहा है। अपने परिवार के लिए जिसे वह फिर कभी नहीं देख पाएगी। उसने जो दर्द दिया था, उसके लिए। उसे डर लगने लगा कि उसे उन्हें छोड़ने की कीमत चुकानी पड़ेगी। उसने सोचा कि यही उसकी सज़ा होगी: अकेला रहना। अरबिपटनम की तरह सीमित और हवा की कमी वाली जगह में फंस जाना। वह रो पड़ी

Machine Translated by Google

और फिर जल्दी से अपनी आँखें पोंछ लीं, गेट की चरमराहट सुनकर। सेतु को गुस्सा आ जाता अगर उसे पता चलता कि वह उनके लिए रो रही है।

एक और रात, जब वह अपने बिस्तर पर अकेली लेटी हुई सोच रही थी कि सेतु कब आएगा, तो उसे याद आया कि कैसे उम्मा ने कहा था कि पवित्र कुरान में सुकून मिल सकता है। इसलिए अगले दिन, जब सेतु घर लौटा, तो सादिया ने उससे पूछा कि क्या वह उसके लिए एक प्रति लाएगा।

सेतु को लगा कि उसके माथे पर बोझ सा पड़ गया है। क्या यही वह अंतर है जिसकी भविष्यवाणी डॉक्टर ने की थी? 'तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत है?' उसने चाय का प्याला रखते हुए पूछा। 'मुझे लगा कि हमने एक-दूसरे से कहा है कि हमें धर्म या धार्मिक शिक्षाओं की ज़रूरत नहीं है।' 'इसका धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। मेरे पास बहुत समय है और मैं कुछ नहीं करता।' 'ऐसे में, तुम कुछ हाथ का काम क्यों नहीं करते? टोकरियाँ बुनना,

या रेशम के फूल बनाना, या सिलाई करना। तुम कुछ कढ़ाई कर सकते हो। मैं तुम्हारे लिए सुंदर धागे ला सकता हूँ। कुरान पढ़ने के अलावा कुछ और,' सेतु ने जल्दी से कहा।

'तुम इसे किसी और चीज़ में बदल रहे हो। मैं कितनी टोकरियाँ बुन सकता हूँ? मैं कितने फूल कढ़ाई करूँ? मैं सारा दिन अकेली रहती हूँ। मैं अकेली हूँ। क्या तुम नहीं समझते?' सादिया ने झल्लाकर कहा।

सेतु ने उसे संकुचित आँखों से देखा। उस रात उसने लालटेन का पीला पैनल चालू कर दिया। सेतु ने आह भरी। उनके बीच अक्सर होने वाली नोकझोंक के बावजूद, रात को सब कुछ भूल गया और उसका जुनून उसके जुनून से मेल खाता था। उसे उसके द्वारा सिखाई गई शब्दावली से दंडित करना क्रूरता थी। उसने पैनल को हरा कर दिया। उसने पैनल को वापस पीले रंग में बदल दिया। 'क्रूर मत बनो, सादिया,' उसने विनती की।

वह जवाब में अपनी तरफ मुड़ी। सेतु अंधेरे में मुस्कुराया और उसकी बांह को सहलाया। उसने उसका हाथ झटक दिया। उसने महसूस किया कि वह सख्त हो गई है। उसे लगा कि उसने एक दबी हुई सिसकी सुनी है। 'हे भगवान, सादिया, तुम क्यों रो रही हो?' उसने विनती की। 'तुम जो चाहो मैं लाकर दूंगा।'

जब सादिया उसकी ओर मुड़ी, तो उसे लगा कि उसका दुख दूर हो गया है। वह उसे मना नहीं कर सका। वह जो चाहती थी, लेकिन वह इस अस्वस्थ लालसा से बचने का रास्ता खोज लेता था।

वह उसके लिए कुरान, पवित्र बाइबिल, तिरुक्कुरल और रामायण लेकर आया। 'मैं जानता हूँ कि तुम कुरान अरबी में पढ़ती हो, लेकिन क्या तुमने मुझे नहीं बताया कि तुम्हारा समुदाय तमिल वर्णमाला का उपयोग करके अरबी लिखता है? तो तुम तमिल पढ़ सकती हो, है न? उस स्थिति में, तुम ये सभी किताबें पढ़ सकती हो। तुम अपने खाली समय को भरने के लिए दुनिया के धर्मों का सहारा ले सकती हो।' किताबों से लदी अपनी बाँहों में सादिया ने कहा, 'मुझे पढ़ना पसंद है और मैं उन सभी को पढ़ूँगी, लेकिन तुम मुझसे यह उम्मीद नहीं कर सकते कि मैं बचपन से जो कुछ भी सीखा है उसे भूल जाऊँ। कुरान एक किताब से कहीं बढ़कर है। कुरान जीवन जीने का तरीका

सिखाता है। क्या यह इतना गलत है?'

Machine Translated by Google

'हिंदू धर्म भी ऐसा ही है,' सेतु ने जवाब दिया। 'इसके अलावा, यह एक पुराना धर्म है।' 'तुम समझ नहीं
रहे हो कि मैं क्या कह रहा हूँ।' सादिया ने अपना सिर हिलाया। क्या यह सच है?
क्रोध या दुःख?

सेतु ने उसे बहुत देर तक देखा और फिर मुँह फेर लिया। अब उसे उसकी बात समझ में नहीं आ रही थी। वह इतनी परेशान क्यों हो रही थी? वह देख सकता था कि वह दुखी थी, लेकिन यह नहीं समझ पा रहा था कि उसकी परेशानी का कारण क्या था।
विशेषकर तब जब जीवन इतना आसान हो गया है।

जेम्स राज एक अच्छा नियोक्ता था। उसने कोई अनुचित मांग नहीं की और अगर सेतु लंबे समय तक काम करता था, तो ऐसा इसलिए होता था क्योंकि वह स्वेच्छा से ऐसा करने के लिए तैयार रहता था। नाम के बिना व्यापार के लिए, सेतु ने इसे व्यापार कहा, हालांकि इसमें लेन-देन का कोई बहीखाता या लिखित रिकॉर्ड नहीं था। कुछ लोग इसे तस्करी भी कह सकते हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं था। इसके अलावा, सेतु को चुनौती पसंद थी। वह पैसे भी कमा रहा था। जितना उसने कभी उम्मीद नहीं की थी, उससे कहीं ज़्यादा। जेम्स राज ने उसे हर सफल लेनदेन के लिए बोनस दिया और सेतु को वह आत्मविश्वास महसूस होने लगा जो बालू के पेट में चाकू घोंपने के बाद से ही उसमें नहीं था।

काश सादिया इतनी कोशिश न करती। वह शायद ही कभी मुस्कुराती थी, और उसकी आँखें
उन पर आरोप लगाये।

सेतु नाज़रेथ गया। उसे किसी से बात करनी थी। वहाँ सिर्फ़ जेम्स राज था। जेम्स राज चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा। 'मैं अब उसे समझ नहीं पाता,' सेतु ने कहा।

'लो, थोड़ा छाछ पियो,' जेम्स राज ने गिलासों की ओर इशारा करते हुए कहा।
छाछ जो किसी ने लायी थी।

'वह अकेली है। उसे लोगों के साथ रहने की आदत है। यहाँ, वह दिन के ज़्यादातर समय अकेली रहती है। इससे अजीबोगरीब विचार, अजीबोगरीब लालसाएँ पैदा होती हैं,' बुज़ुर्ग आदमी ने अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना मुँह पोंछते हुए कहा। 'एक बार जब उसका बच्चा हो जाएगा, तो वह ठीक हो जाएगी। अभी के लिए उसके लिए कोई पालतू जानवर ढूँढ़ो। शायद एक बिल्ली का बच्चा। वह जल्दी बड़ा हो जाएगा और उसके बाद उसे ज़्यादा देखभाल की ज़रूरत नहीं होगी। उस समय तक, अगर वह गर्भवती हो जाती है, तो वह बच्चे के बारे में सोचकर ही व्यस्त हो जाएगी।' सेतु मुस्कुराया। यही कारण था कि उसे जेम्स राज पसंद था। वह आदमी व्यावहारिक था, उस डॉक्टर से अलग जो
बाइबल से कोई आयत उद्धृत करके मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करने को कहता।

जब सादिया का मासिक धर्म दूसरी बार नहीं आया, तो दाई ने गर्भावस्था की पुष्टि की। सेथु ने अपने अहंकार को त्याग दिया और उसे नाज़रेथ, डॉ. सैमुअल सागयाराज के पास ले गया। चाहे उनके बीच कितने भी मतभेद क्यों न हों, डॉक्टर उनके इस बच्चे को दुनिया में लाने में मदद करने के लिए सबसे अच्छे व्यक्ति थे।

डॉक्टर ने उसकी जांच की, उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए की सूची दी, और मुस्कुराते हुए उसकी पीठ थपथपाई। उसने सेतु की तरफ देखा और बस एक बार उसका आभार माना,

Machine Translated by Google

नुस्खा समझाने के लिए.

घर लौटते समय सेतु चुप था। डॉक्टर के इनकार से उसे बहुत दुख पहुंचा था।
एक बार वह सादिया से इस बारे में बात कर सकता था। अब, ऐसा लग रहा था जैसे वह उससे दूर हो गई थी। पूरी तरह से। हमेशा के लिए।

उसकी सादिया कहाँ थी?

मैं उसे बता सकती थी। मैं, सादिया मेहरुन्निसा उसे बता सकती थी, अगर वह सुनने की परवाह करता।

मैं यहाँ इस बिस्तर पर लेटा हूँ। डॉक्टर ने मुझे बताया है कि मुझे दर्द से लड़ना चाहिए। वह सेतु को ढूँढने गया है। उसे मेरे पास लाने के लिए ताकि मैं अपना दर्द चिल्ला सकूँ, अपनी पीड़ा व्यक्त कर सकूँ।

मेरी पीड़ा लोहे की गेंद की तरह है। यह जड़ जमाए रहती है और हिलने से इंकार कर देती है।

मैं तिरस्कार देखता हूँ। उन पवित्र पुस्तकों में जो आप मेरे लिए लाए थे- आपकी, मेरी और
दूसरों के प्रेम में, मैं उस प्रेम के प्रति तिरस्कार देखता हूँ जिसे हमने बढ़ाने की कोशिश की थी। हमारा प्रेम अपवित्र है।

मैं अपने पड़ोसियों की आँखों में घृणा देखता हूँ। वे अपनी पत्नियों या बेटियों को मेरे साथ रहने नहीं देंगे। वह निर्दोष है; वह एक लापरवाह प्राणी है, वे कहते हैं। वह घर से भाग गई है। वह क्या कर सकता था? बेचारा आदमी। उसे उसे अपने घर में रखना पड़ा। यही वे कहते हैं।

मैं जहां भी जाता हूं, जो भी करता हूं, मुझे ये शब्द सुनने को मिलते हैं: इसके लिए आप ही जिम्मेदार हैं।

जब बच्चा मुझे लात मारता है, तो मुझे प्रतिध्वनि सुनाई देती है: इसके लिए आप जिम्मेदार हैं।

मैं प्रार्थना करने की कोशिश करता हूं, लेकिन भगवान भी अपना सिर फेर लेते हैं।

आप, मेरे पति - लेकिन आप मेरे पति नहीं हैं, क्योंकि हम विवाहित नहीं हैं - मुझे बताइए
मैं मूर्ख हूँ। ये अवमानना की आवाज़ें जो मैं सुन रहा हूँ, वे सिर्फ़ मेरे दिमाग की आवाज़ें हैं।

लेकिन मैं जानता हूँ। मेरी पीड़ा इसी से उपजती है।

आज दोपहर को जब मैं अस्पताल के गलियारे में आपका इंतजार कर रहा था और आप डॉक्टर को लाने गए थे, तो मैंने वापा और सुलेमान को देखा।

मैंने उन्हें मेरे फूले हुए पेट को देखते हुए देखा। मैंने वापा की आँखें सिकुड़ती देखीं और सुलेमान को हांफते हुए सुना। फिर सुलेमान की आँखें मेरी आँखों से मिलीं और मैंने उनमें अनिश्चितता देखी। मैंने देखा कि मेरे लिए उसका प्यार नफरत को परास्त कर रहा है और उसके होंठ कोमलता के चाप में फैल रहे हैं। मैंने देखा कि वह मेरी ओर झुका हुआ है और मैंने देखा कि वापा अपनी कोहनी को उंगली से छू रहा है।

वे अपनी एड़ियाँ घुमाकर तेजी से चले गए। मैं उनके पीछे भागना चाहता था। मैं वापा के पैरों पर गिरकर विनती करना चाहता था, 'मैंने पाप किया है, वापा। मुझे माफ़ कर दो, वापा। काश तुम माफ़ कर देते।'

दर्द मुझे चीरता है, लेकिन मैं अपने दांत भींच लेता हूँ।
बेबी चाहती है कि मैं इससे लड़ूं। यह सबसे अच्छा होगा कि बेबी और मैं यहीं मर जाएं।

आखिर उसका जीवन कैसा होगा, जब कोई वंश नहीं है, ...

Machine Translated by Google

क्या परिवार के पास अपना कोई धर्म या ईश्वर तक नहीं है?

बच्चे को क्यों जीना है? मुझे क्यों जीना चाहिए?

सेतु कहता है, 'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।' मैं उसकी आँखों को पढ़ने की कोशिश करता हूँ। वह मुझसे क्या चाहता है?

वह कहता है, 'सादिया, मेरी जान।' उसकी आवाज़ में भाव देखकर मैं भी शांत हो जाता हूँ।

काश, वह जानता कि वह मुझ पर कितना अधिकार रखता है।

'सादिया, मेरी प्यारी बेटी, क्या तुम हमारे सपनों को भूल गई हो? यह बच्चा भगवान की स्वीकृति की मुहर है। वह चाहता है कि हमारा प्यार बना रहे। यह बच्चा हम हैं, सादिया।

सादिया, प्लीज़, तुम्हें ज़रूर...' उसके शब्द अभी भी वही थे। मैं जानती हूँ कि वह क्या कहना चाहता है, भले ही उसे पता न हो।

मुझे लड़ना होगा। मुझे हार नहीं माननी चाहिए। मुझे ज़्यादा ज़िम्मेदार बनना होगा। बच्चे की ज़िंदगी मेरे हाथों में है। लेकिन मुझे यह बच्चा नहीं चाहिए। ऐसा बच्चा क्यों पैदा करना जिसे मेरे पापों की सज़ा भुगतनी पड़े? हमारे पाप।

मैं खुद को यह कहते हुए सुनता हूं, 'अगर यह बच्चा पैदा होता है, तो इसे एक सच्चे मुसलमान की तरह पालना होगा।'

सेतु मेरी ओर देखता है। वह चौंक जाता है। 'क्या यही है इसका मतलब? धर्म?' मुझे लगता है कि मेरे अंदर संकुचन शुरू हो गया है। मैं दांत पीसते हुए बुदबुदाता हूँ, 'क्या यही नहीं है इसका मतलब? आस्था। मैं किसी जीवन को जन्म कैसे दे सकता हूँ अगर मुझे नहीं पता कि उस जीवन में आगे क्या होने वाला है? क्या तुम नहीं देखते, मैं चाहता हूँ कि मेरा बच्चा ईश्वर को जाने, मेरे ईश्वर को। मैं चाहता हूँ कि मेरा बच्चा किसी से जुड़ा हो।'

सेतु ने अपना हाथ मेरे हाथ पर रखा और धीरे से कहा, 'जो भी तुम्हारी मर्जी हो। बस इस बच्चे को, हमारे बच्चे को, जन्म लेने दो।' संकुचन ने मुझे मेरी कूल्हों से पकड़ लिया और मुझे अलग कर दिया। मैं

चीखती हूँ। मैं फिर से चीखती हूँ।

Machine Translated by Google

वीरम

तो फिर, यह उतना मुश्किल नहीं है जितना तुम सोचते हो। वीरम: तुम इसे अभी वीरता के रूप में सोच सकते हो, और यही वह अभिव्यक्ति है जिसे हम यहाँ पूर्ण करेंगे। अपनी आँखें चौड़ी होने दो। हाँ, बिल्कुल रौद्रम की तरह। तुम्हारी आँखें चौड़ी होनी चाहिए, लेकिन चमकीली नहीं होनी चाहिए। अपनी नाक को फैलाओ, मानो जीत का एहसास हो। मुँह को कड़ा करो और जबड़े को कसो। तुम्हें साँस अंदर लेनी चाहिए जैसा कि तुम हमेशा लेते हो, लेकिन कोशिश करो कि साँस आँखों से बाहर निकालो। फिर गालों में खुद ही गतिशीलता आ जाएगी...लेकिन तुम पहले से ही यह जानते हो। अब, उस वीरता को ताज पहनाने के लिए, तुम्हें अपने कंधों और छाती को और अपनी नज़र को हमेशा धीरे से इधर-उधर घुमाना चाहिए। तुम अपनी विजय और साम्राज्य का निरीक्षण करने वाले राजा हो।

अब सोचो। वीरता कहाँ से आती है? हाँ, तुम सही हो। यह साहस है।
लेकिन साहस क्या है?

इसके लिए हमें पुनः प्रकृति की ओर देखना होगा।

ड्रोंगो को ही लीजिए। अनारांची। यह एक आम पक्षी है, छोटा, चमकदार काले शरीर वाला और कांटेदार पूंछ वाला। इसमें जो असामान्य बात है, वह है इसका साहस। यह कौवे को अपने आस-पास भी नहीं आने देता, और कौवों और यहां तक कि चीलों का पीछा करके उन्हें तब तक बेरहमी से चोंच मारता है, जब तक कि वे भाग न जाएं।
ड्रोंगो ऐसा क्यों करता है?
घोंसले बनाने के मौसम में तो यह अपने बच्चों की रक्षा करती है, लेकिन अन्य समय क्या होता है?
कौन जानता है? डरपोक पक्षी - बब्बलर, कबूतर और कबूतर - सभी अपना घोंसला वहीं बनाएंगे जहाँ ड्रोंगो बनाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि ड्रोंगो लुटेरे पक्षियों को दूर रखेगा और उनके बच्चों की रक्षा करेगा। शायद यह प्रकृति का तरीका है जो हमें अपने विश्वासों से साहस प्राप्त करना सिखाता है।

लेकिन जीवित रहना भी साहस का काम है। तुलावर्षम, अक्टूबर के तूफानों की दोपहरें और रातें भयंकर और डरावनी होती हैं, लेकिन यह वह दिन है जो आपको धीरज रखना सिखाता है। तूफान के बाद की सुबह, आसमान नीला होता है।
हवा ठंडी और नम है, भले ही सूरज साफ और चमकीला चमक रहा हो, जो झाड़ियों के बीच से होकर पत्तियों और टेढ़े-मेढ़े तनों के नीचे तक रोशनी पहुंचा रहा हो। धान के खेत पन्ना के साथ जुड़े जेड के वर्ग हैं।

वे चमकते हैं। पौधे भूरे रंग के कीचड़ भरे पानी में अपने टखने फैलाकर खड़े हैं; पानी की सतह पर छोटे-छोटे टुकड़े आसमान को दर्शाते हैं। ड्रैगनफ़्लाई मँडराते हैं। बगीचों में, बारिश के हमले और प्रहार से झुके हुए नारियल के गुच्छों को सहारा देकर बाँध दिया जाता है। ज़मीन खुद को ठीक कर लेती है।

Machine Translated by Google

लेकिन साहस की सबसे बड़ी उपलब्धि के लिए मैं काजू के फल का सुझाव दूंगा। इसे देखिए, गुलाबी लाल और पीले रंग का, कभी-कभी नारंगी रंग का, जैसे यह पेड़ से लटका हुआ हो। इसका उद्देश्य इसके अंदर उगने वाले अखरोट को बनाए रखना है, न कि इसके अंदर। यह वह अखरोट है जिसे हर कोई चाहता है। लेकिन उस फल के भीतर कहीं, इसकी पकी हुई सांसों में, खुद को साबित करने की ज़रूरत है। यही कारण है कि, जब यह अपने पकने के भार से ज़मीन पर गिरता है, तब भी यह अखरोट को नहीं छोड़ता। यह आगे बढ़ने का साहस है। सब कुछ के बावजूद। और यह भी वीरम है।

श्याम

मेरे सिर में दर्द हो रहा है। एक भयंकर धड़कन जो मुझे लगता है कि मेरे सिर को चीर कर हज़ार टुकड़ों में तोड़ देगी। मैं ऐंठन को सहने के लिए अपने जबड़े को भींचता हूँ। पर्दे के बीच से रोशनी की एक पतली सी किरण चुपके से अंदर आ रही है। उससे भी मेरी आँखें दुख रही हैं। मेरा मुँह सूख गया है, और मेरी जीभ भारी और लकड़ी जैसी लग रही है। काश राधा यहाँ होती और रोशनी की इस किरण को बंद कर देती। काश राधा यहाँ होती और मेरे लिए एक गिलास पानी और दो एस्पिरिन लाती। काश राधा यहाँ होती और बिस्तर के सिरहाने बैठती और मेरी धड़कती कनपटी पर बाम लगाती। काश राधा ऐसी पत्नी होती। काश मैंने कल रात इतनी शराब न पी होती।

मैं उठकर बैठ जाता हूँ। दुनिया घूम जाती है। एक हथौड़े से मेरी खोपड़ी के अंदर की तरफ़ ज़ोरदार प्रहार होता है। मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ और खुद को स्थिर करने के लिए बेडसाइड टेबल के किनारे को पकड़ लेता हूँ। सुबह दस बजे मेरी मीटिंग है। मैं इसे मिस नहीं कर सकता।

मैं बाथरूम में जाता हूँ। शीशे में मैं खुद को देखता हूँ, मेरी आँखें धुंधली हैं, बाल उलझे हुए हैं और दाढ़ी सफ़ेद हो रही है। मैं अपने चेहरे पर पानी छिड़कता हूँ। टूथपेस्ट की गंध मेरे पेट में हलचल मचा देती है। मुझे लगता है कि पिछली रात का बचा हुआ खाना मेरे मुँह में घुस रहा है। मैं टॉयलेट सीट ऊपर करके कटोरे के मुँह के पास बैठ जाता हूँ। मैं बार-बार उबकाई लेता हूँ जब तक कि मेरे अंदर कुछ भी नहीं रह जाता। मुझे उल्टी की खटास का स्वाद आ सकता है। मैं ढक्कन को बंद करके फ्लश करता हूँ। अतीत की सारी अप्रियताएँ दफ़न हो गई हैं, मैं गंभीरता से सोचता हूँ।

मेरे सिर में धड़कन कम हो जाती है। मैं अपने चेहरे पर ठंडा पानी छिड़कता हूँ और फिर से अपने दाँत ब्रश करता हूँ, फिर मैं रूम सर्विस को कॉल करता हूँ और एक बड़ा गिलास नींबू का रस, ब्लैक कॉफ़ी और कुछ सेरिडॉन मंगवाता हूँ।

मैं तकिए के सहारे पीठ टिकाकर आँखें बंद कर लेता हूँ। थोड़ी देर में कॉफ़ी आ जाएगी। मैं इसे पी लूँगा और बेहतर महसूस करने लगूँगा। उसके बाद ही मैं राधा से मिलूँगा।

कॉफी अपना जादू चलाती है। मुझे लगता है कि मेरी आँखें फिर से ध्यान केंद्रित करने लगी हैं। मैं नहाता हूँ, कपड़े पहनता हूँ और इतना सीके वन पीता हूँ कि बदबू की याद ही मिट जाए

Machine Translated by Google

उल्टी। मैं अपनी घड़ी देखता हूँ। अभी सवा नौ बजे हैं।

मैं फ़ोन उठाता हूँ और घर पर फ़ोन करता हूँ। कोई जवाब नहीं मिलता। मैं एक पल के लिए फ़ोन को देखता हूँ। क्या मेरी हिम्मत है? फिर मैं अंकल का नंबर डायल करता हूँ। राधा फ़ोन उठाती है।

'कल रात तुम कहाँ थे?' मैं झल्लाकर बोली। ऐसा लगता है कि ये शब्द मेरी इच्छा के बिना ही निकल आए थे।

मैं उसकी सांसों को अंदर की ओर खींचता हुआ सुनता हूँ। जब वह बोलती है, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरा सिर बर्फ के टुकड़ों की बाल्टी में घुसा दिया गया हो। उसकी आवाज़ ठंडी और तीखी है। 'यहाँ, अंकल के यहाँ। और कहाँ?' 'मैंने कल रात कम से कम आधा दर्जन बार फ़ोन किया। शांता ने कहा कि उसे नहीं पता

तुम कहाँ थे। उसने कहा कि तुम सूर्यास्त के समय गए थे।' मैं अपनी अधीरता को समझाने की कोशिश करता हूँ।

'शांता बेवकूफ है और तुम उससे भी बड़ी बेवकूफ हो कि तुमने मेरे मोबाइल पर फोन नहीं किया। चाचा पिछले दो दिनों से बीमार हैं और मैं यहां इसलिए आई हूं क्योंकि उन्होंने घर आने से मना कर दिया।'

मैं उसकी बात सुनता हूँ, लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि मैं उस पर यकीन कर पाऊँगा या नहीं। वह जो कुछ भी कहती है, वह सच लगता है।
यहाँ तक कि उसका आक्रोश भी।

'जब मैं जा रहा था तो तुमने मुझे क्यों नहीं बताया कि वह बीमार है? मैं नहीं बताता।
तब वह चला गया था। जब हम उससे पिछली रात मिले थे, तब वह बिल्कुल ठीक था।'

'कल सुबह जब मैंने उनसे बात की तो वे बेहतर लग रहे थे। फिर उन्होंने फोन करके बताया कि उन्हें फिर से अस्वस्थता महसूस हो रही है। इसलिए मैं कल रात यहाँ आया था। लेकिन आपने यहाँ फोन क्यों नहीं किया?'

मैं कुछ नहीं कहता। मैं उसे कैसे बताऊँ कि मैं डर गया था? मेरे दिमाग में यह विचार लाखों बार घूम चुका था: क्या होगा अगर वह अंकल के साथ न हो?
क्या होगा अगर वह क्रिस के साथ होती?

तभी मैंने शराब पीना शुरू कर दिया।

मैंने पूछा, 'अंकल को क्या हुआ है?'

'गैस्ट्रिक अटैक। उल्टी और पेचिश। वह बहुत कमज़ोर लग रहा है।' उससे पूछने का कोई मतलब नहीं था। अगर राधा
उससे पूछेगी तो बूढ़ा आदमी रेबीज़ की बात स्वीकार कर लेगा।

मैं कहता हूं, 'मुझे नहीं पता कि मैं कब घर पहुंचूंगा।'

मैंने कहा, 'मुझे एक या दो दिन और रुकना पड़ सकता है।' 'मैं दक्षिण में त्रिवेंद्रम भी जा सकता हूं।'

'ओह,' उसकी आवाज़ में बड़बड़ाहट होती है। मुझे निराशा होती है। मुझे उम्मीद थी कि वह मेरी अनुपस्थिति पर विरोध जताएगी। इसके बजाय, वह बहुत ही तथ्यात्मक लगती है।

'मेरा एक काम करो। क्या तुम देखोगे कि पद्मनाभन आया है या नहीं? और मुझे फोन करके बता दोगे,' मैं कहता हूँ। जब मैं वापस आऊंगा, तो मेरे पास राधा के आने-जाने के बारे में उन्नी से पूछने का एक अच्छा बहाना होगा।

Machine Translated by Google

‘कौन?’

‘पद्मनाभन, हाथी,’ मैं कहता हूं।

'ओह!' मैंने उसकी आवाज़ में नाराज़गी सुनी। 'कुछ और? क्या तुम मुझे पसंद करोगे?
यह देखने के लिए कि उसने कितने केले खाए?'

मैं उसकी आवाज़ में व्यंग्य को अनदेखा करता हूँ। 'हाँ, है,' मैं कहता हूँ। 'क्या तुमने नया गैस सिलेंडर बुक किया है? प्लम्बर का क्या? क्या वह आ गया है? उसे फ़ोन करके याद दिलाओ। और शशि को कार के टायरों में हवा जाँचने के लिए याद दिलाओ। उन्नी से कहो कि नए नारियल के पौधे जाँच लें।' हर बार जब मैं कहीं जाता हूँ, तो सोचता हूँ कि जब मैं राधा को फ़ोन करूँगा, तो उसे बताऊँगा कि मुझे दूर रहना कितना बुरा लगता है। कि मैं उसके बिना खोया हुआ महसूस करता हूँ।

और फिर मैं बस उससे झगड़ता रहता हूं या उसे निर्देश देता रहता हूं।

मैंने उसे कहते सुना, 'मैं शशि का इंतजार कर रही हूं।'

वह घर जा रही है। मुझे खुशी का एहसास हो रहा है।

'तो चाचा अब ठीक हैं?' मैंने पूछा।

‘वह तो है। लेकिन मैं थोड़ी देर में वापस आ जाऊँगा। मैं उसे अकेला छोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकता।’ मुझे यह पसंद नहीं है। मुझे तो यह सोचना भी पसंद नहीं है।

'क्या यह सचमुच ज़रूरी है? तुम्हें पता है कि मेरी अनुपस्थिति में नौकर तुम्हारे चले जाने की बात कैसे-कैसे फैलाएँगे।'

'भगवान के लिए, श्याम, मैं अपने चाचा के पास रहने जा रहा हूँ।' 'मुझे पता है। लेकिन...' 'मूर्ख मत बनो। यह हास्यास्पद है, जिस तरह से

तुम उपद्रव कर रहे हो। इसके अलावा, वहाँ क्या है?
मुझे घर पर ही रहने दोगे?’ जब मैं
फोन नीचे रखता हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरे सिर के पीछे हथौड़ा चल रहा है। मैं एक और सेरिडॉन निगलता हूँ और टैक्सी बुलाता हूँ।

मैं राधा की कही बात याद करता हूँ। उसकी आवाज़ में कड़वाहट है। वह पूछती है कि मुझे घर पर रखने के लिए क्या है?

वह कैसे जानती है? मैं तो बहुत सावधान रहा हूँ।

शादी के चार साल बाद मुझे चिंता होने लगी। ऐसा लग रहा था कि हमारे घर में कभी छोटे-छोटे पैर नहीं चलेंगे। हम प्यार करते थे। उतनी बार नहीं जितनी बार मैं चाहती थी, लेकिन इतना कि बच्चा पैदा हो जाए।

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह गर्भधारण रोकने के लिए कुछ कर रही है। 'क्या आप गर्भनिरोधक गोलियाँ ले रही हैं?' मैंने पूछा।

उसके चेहरे पर हैरानी थी, लेकिन उसने सिर हिला दिया। 'नहीं।' 'तो फिर...' मैं मुस्कुराया। मुझे लगा जैसे हम साथ मिलकर कोई प्रोजेक्ट शुरू कर रहे हैं।

प्रोजेक्ट लीडर के तौर पर मेरी कुछ ज़िम्मेदारियाँ थीं। मैंने उसके बेडसाइड टेबल की दराज और उसके वैनिटी केस और यहाँ तक कि उसके कपड़ों में भी तलाशी ली, ताकि पता चल सके कि वह सच बोल रही है या नहीं। वह सच बोल रही थी। एक साल बाद भी हम कोशिश कर रहे थे।

हम एक डॉक्टर से मिलने गए। वह स्त्री रोग विशेषज्ञ नहीं थी, लेकिन हम उसे अच्छी तरह जानते थे।

Machine Translated by Google

उन्होंने कहा, 'इसके बारे में मत सोचो और यह हो जाएगा।'

रानी ओपोल को इस बात पर यकीन नहीं हुआ। 'शायद कुछ गड़बड़ है'
आपको किसी विशेषज्ञ के पास जाकर इसकी पुष्टि करवानी चाहिए।'

रानी ओपोल उस दिन राधा से नाराज़ थी। हम दिन भर मेरी माँ के घर में रह रहे थे और मुझे पता चला कि राधा के घर में रहने से मैं बिगड़ गई थी।
मैं टाइल लगे बाथरूम साफ करने का आदी था, और मेरे घर का बाथरूम गंदा और थोड़ा बदबूदार भी था।

मैंने सोचा कि राधा क्या सोचेगी जब वह नल पर पड़े कपड़ों को देखेगी। वहाँ पेटीकोट और साड़ियाँ, ब्रा और पैंटी और मेरे जीजा की वाई-फ्रंट थीं। 'क्या तुम्हें इन्हें यहाँ रखना है?' मैंने रानी ओपोल से पूछा।

रानी ओपोल ने भौंहें सिकोड़ीं। मैंने उसके चेहरे पर गुस्सा देखा। 'मुझे लगता है उसने तुमसे यह बताने के लिए कहा है। तुम अपनी पत्नी से कह सकते हो कि मैं और मेरी बेटी साड़ी पहनते हैं और हमें धोने के लिए बहुत सारे कपड़े हैं। हम सभी उसके जैसे नहीं हैं, महीनों तक एक ही जोड़ी जींस पहनते हैं, और उन छोटे ब्लाउज़ के लिए, मैं अपनी दस साल की बेटी को उन्हें पहनने नहीं दूँगी। जब भी वह अपना हाथ ऊपर उठाती है, तो उसका पेट दिखाई देता है। और सारे बाल खुले हुए हैं...लड़की को कोई समझ नहीं है।

और तुम्हारा क्या? तुम अपनी पत्नी को वेश्या की तरह कपड़े पहनने की इजाज़त कैसे दे सकते हो?'

मैं चुप रहा। अगर उसे पता होता कि राधा का इससे कोई लेना-देना नहीं है, तो वह और भी ज़्यादा आहत होती। मेरी बहन बहुत संवेदनशील इंसान है। वह कहती, 'तो अब मेरा भाई मुझे पसंद नहीं करता।' शायद उसकी आँखों में आँसू भी आ जाते। उस समय वह सिर्फ़ आलोचना से नाराज़ थी। यह उसके आहत होने से बेहतर था। इसलिए मैंने उसे रहने दिया।

रानी ओपोल सही थीं, बेशक। अगर हम किसी विशेषज्ञ के पास जाते, तो हम पता लगा सकते थे कि आखिर समस्या क्या है। लेकिन मुझमें राधा से इस विषय पर बात करने की हिम्मत नहीं थी।

इसलिए मैंने गर्भधारण के बारे में जितना संभव हो सका, उतना पढ़ा और उसके मासिक धर्म का कैलेंडर रखना शुरू कर दिया।

मैं जानता था कि राधा क्रोधित हो जायेगी, इसलिए मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैं क्या कर रहा हूँ।
फिर एक सुबह वह मुझसे एक पत्रिका की सदस्यता के बारे में पूछने के लिए कार्यालय कक्ष में आई। 'मुझे लगता है कि यह पिछले महीने ही खत्म हो गई थी,' उसने डेस्कटॉप कैलेंडर को अपनी ओर खींचते हुए कहा। मुझे लगा कि मेरे अंदर सिकुड़न और सिकुड़न हो रही है।

'यह क्या है?' उसने पूछा, हर पन्ने पर लाल क्रॉस देखकर भौंहें सिकोड़ते हुए। फिर उसे समझ में आया। उसका मुँह कस गया। उसने तेज़ी से पन्ने पलटे।
जब उसने मेरी ओर देखा तो उसकी आँखों के भाव देखकर मैं डर गया।

'क्या तुम्हारे लिए कुछ भी पवित्र नहीं है?' उसकी आवाज़ ऊँची हो गई। 'ये लाल क्रॉस मेरे पीरियड्स हैं, है न? ये यहाँ क्यों हैं? तुम्हारे कैलेंडर पर? अगर किसी को चाहिए तो

Machine Translated by Google

नज़र रखो, यह मुझे ही होना चाहिए। तुम ऐसे क्यों हो, श्याम? तुम मुझ पर राज करना चाहते हो। तुम मुझे साँस नहीं लेने दोगे। यह ठीक नहीं है।' मैंने उसकी आवाज़ में सिसकी सुनी।

'यह वैसा नहीं है जैसा आप सोच रहे हैं,' मैंने समझाने की कोशिश की। 'इस तरह मैं जान पाता हूँ कि कब
आप ओवुलेट कर रही हैं और यह सबसे अच्छा समय है...' मैंने लंगड़ाते हुए कहा।

उसकी आँखों में गुस्सा देखकर मैं घबरा गया। मैंने अपनी नज़रें झुका लीं, उसकी नज़रों से नज़रें नहीं मिला पाया।

वह कुछ देर वहीं खड़ी रही। जब उसने बात की तो उसके शब्दों में जो व्यथा थी, उसकी जगह क्रोध ने ले ली।

'मैं एक बार गर्भवती हुई थी। तो ऐसा नहीं है कि मैं गर्भधारण नहीं कर सकती। शायद आपको इसकी ज़रूरत है
उसने जाने से पहले कहा, 'देखो कि क्या तुम बच्चे के पिता बन सकते हो।'

मैं दंग रह गया। मुझे नहीं पता कि मुझे किस बात ने सबसे ज़्यादा हैरान किया। यह सोचकर कि वह
मैं एक बार गर्भवती हो चुकी हूँ, या यह संभावना कि मैं बांझ हो सकती हूँ।

मैंने दूसरे शहर में एक प्रजनन क्लिनिक में जाने का फैसला किया। मैं चाहती थी कि जांच यथासंभव चुपचाप हो। जिस डॉक्टर की मुझे सिफारिश की गई थी, वह सबसे बेहतरीन में से एक थी। उसका रिकॉर्ड बहुत बढ़िया था और अगर कोई मेरी चचेरी बहन की मदद कर सकता है, तो वह वही होगी, मुझे बताया गया। मुझे इस क्षेत्र में अनुभव रखने वाले स्त्री रोग विशेषज्ञ के बारे में पूछताछ करते समय एक काल्पनिक चचेरी बहन का आविष्कार करना पड़ा।

टेस्ट के बाद उससे मिलने जाते समय, मैं कदमपुझा मंदिर में रुका और एक भेंट चढ़ाई। संथाना-मुत्तु। एक बच्चे के लिए नारियल। अगर नारियल साफ-सुथरे हिस्सों में टूट जाए, तो सब ठीक हो जाएगा। पुजारी ने नारियल तोड़ा और वह बराबर टूट गया। मैंने धन्यवाद की प्रार्थना की। अब सब ठीक हो जाएगा।

डॉक्टर की मुस्कुराहट से कुछ भी पता नहीं चला। 'यह अच्छा नहीं है, लेकिन बुरा भी नहीं है।
'या तो,' उसने कहा, चादरें सरकाते हुए।

'क्या मतलब है तुम्हारा?' यह महिला शायद इतनी बूढ़ी दिखती है कि मानो भगवान की हो
माँ, लेकिन वह भगवान नहीं थी। और भगवान गलत नहीं हो सकते।

'तुम्हारे शुक्राणुओं की संख्या बहुत ज़्यादा नहीं है। यह प्रति मिलीलीटर शुक्राणु में लगभग सोलह मिलियन शुक्राणु है। यह बुरा नहीं है, लेकिन बहुत बढ़िया भी नहीं है। इसके अलावा, शुक्राणुओं की कम संख्या एक अस्थायी परेशानी हो सकती है। इससे भी ज़्यादा गंभीर है शुक्राणुओं की गतिशीलता - शुक्राणुओं की गति करने की क्षमता। अगर गति धीमी है या सीधी रेखा में नहीं है, तो उसे गर्भाशय ग्रीवा के श्लेष्म से आगे निकलने या अंडे के कठोर बाहरी आवरण को भेदने में कठिनाई होगी।' मैं हैरान क्यों नहीं हूँ? राधा ने शादी के लगभग छह सालों में मुझे अपनी आत्मा में प्रवेश नहीं करने दिया, तो मेरे शुक्राणुओं के लिए उसके अंडे में प्रवेश करने का क्या मौका है? वह जिस किले की दीवार के पीछे छिपती है, वह मेरे शुक्राणुओं और मुझसे परे है।

'यह असामान्य नहीं है। एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि बांझपन की समस्या वाले पचास प्रतिशत पुरुषों में आपके जैसे दोहरे दोष होते हैं।'

Machine Translated by Google

मैंने अपनी परछाई को शीशे में देखा जो उसकी मेज़ के ऊपर लगा हुआ था। मुझे लगा कि मैं बेबस हो गई हूँ। ऐसा कैसे हो सकता है? मुझे बांझपन की समस्या कैसे हो सकती है? मुझे उसका यह शब्द इस्तेमाल करना भी पसंद नहीं आया। महिलाएँ बांझ होती हैं, पुरुष नहीं।

उन्होंने कहा, 'आप अपने शुक्राणुओं की संख्या में सुधार लाने के लिए कुछ चीजें कर सकते हैं।'
'एक के लिए ढीले अंडरवियर पहनें। जब आप तंग अंडरवियर पहनते हैं, तो हवा का संचार नहीं होता है और गर्मी शुक्राणु मृत्यु दर के लिए अनुकूल नहीं होती है। वास्तव में, अंडकोष शरीर के बाहर होते हैं क्योंकि शरीर के तापमान का शुक्राणु के जीवित रहने की संभावना पर सीधा प्रभाव पड़ता है। आपको यह जानकर दिलचस्पी होगी कि एस्किमो में शुक्राणुओं की संख्या सबसे अधिक होती है क्योंकि ठंडा तापमान उनके शुक्राणुओं को जीवित रहने की अनुमति देता है।' मुझे लगा कि मेरे चेहरे पर एक शर्मीली मुस्कान आ गई है। यह अवास्तविक था, मैंने सोचा। यहाँ मैं एक अजनबी महिला के साथ बैठा था, मेरी गेंदों की स्थिति पर चर्चा कर रहा था।

'धूम्रपान और शराब पीना छोड़ दें, साइकिल चलाने से बचें, लेकिन पर्याप्त व्यायाम करें।
इन सब से मदद मिलनी चाहिए।' मैंने उसके चेहरे की ओर देखा। वह शर्मिंदा क्यों नहीं होगी?
मैं इतना शर्मिंदा था कि मैं उससे आँखें भी नहीं मिला पा रहा था।
'मेरा सुझाव है कि आप एक महीने बाद पुनः आएं और हम पुनः नमूना लेंगे।
कृपया अपनी पत्नी को साथ लेकर आएं। मुझे उसकी मौजूदगी की ज़रूरत है। दोनों पार्टनर को सहयोग करने के लिए तैयार होना चाहिए। तभी हम योजना बनाना शुरू कर सकते हैं कि हम आपको माता-पिता कैसे बना सकते हैं।' मैंने रिपोर्ट ली और घर जाते समय मैंने एक मेडिकल पाठ्यपुस्तक
खरीदी।
मैंने पढ़ा है कि शुक्राणुओं का सिर अंडाकार और पूँछ लम्बी होनी चाहिए।
असामान्य शुक्राणुओं के विवरण ने मुझे मेडिकल कॉलेजों के एनाटॉमी विभाग में नमूना जार में फॉर्मेल्डिहाइड में संरक्षित विचित्र शिशुओं की याद दिला दी। जैसे-जैसे मैं पढ़ता गया, शुक्राणु शब्द धुंधला होकर शिशु बन गया। बेहद छोटे, नुकीले सिर वाले शिशु। पतले सिर और टेढ़े सिर वाले शिशु। जुड़वाँ सिर वाले शिशु। अंगों में टेढ़ेपन और उलझन वाले शिशु। इन दोषों वाले शुक्राणु के पास क्या मौका था?

पाठ्यपुस्तक ने मुझे उसके शब्दों से कहीं ज़्यादा आश्वस्त किया। उसने मेरे शुक्राणु के आकार के बारे में कुछ नहीं कहा था, जिसका मतलब था कि कम से कम मेरे शुक्राणु की आकृति विज्ञान ठीक था।

मैंने रिपोर्ट और पाठ्यपुस्तक को अपने महत्वपूर्ण व्यावसायिक कागजात के साथ लॉकर में रख दिया। मैं नहीं चाहता था कि राधा को सच्चाई का पता चले। मैं उसकी निंदा से नहीं डरता था।
अगर उसे पता चल जाता कि मैं ही दोषी हूं तो वह चिंता से मुझे परेशान कर देती।
मुझे डर था कि वह दया की भावना से ग्रसित हो जाएगी। जब राधा मेरी ओर देखती थी, तो मैं चाहता था कि वह एक हृष्ट-पुष्ट, लाल रक्त वाला अल्फा पुरुष देखे जो सौ से एक बच्चों का पिता बनने में सक्षम हो।

टैक्सी ड्राइवर ने अपना गला साफ करते हुए कहा, 'हम यहां हैं।'

Machine Translated by Google

मैं उठकर बैठ गया और खिड़की नीचे कर दी। टूर ऑपरेटर ने जोर देकर कहा था कि हम एक रिसॉर्ट में मिलें। वह मुझे कुछ ऐसी चीजें दिखाना चाहता था जो उसे बहुत सराहनीय और बिक्री योग्य लगीं।

मैंने पूछा, 'क्या आस-पास कोई चाय की दुकान है?'

ड्राइवर ने बताया, 'रिसॉर्ट के अंदर एक रेस्तरां है।'

'नहीं, वहाँ नहीं। रिसोर्ट के बाहर कहीं।' 'हम करीब दो किलोमीटर

पहले एक से गुजरे थे।' ड्राइवर हैरान है।

'मुझे वहाँ ले चलो,' मैं कहता हूँ। मुझे अपना दिमाग शांत करने के लिए कॉफ़ी चाहिए। मैं टूर ऑपरेटर से उस तरह की भावना के साथ मिलना नहीं चाहता जैसा मैं महसूस करता हूँ।

मैं चाय की दुकान पर बैठकर कॉफी पीता हूँ। मैं एक छिपकली को दीवार पर चढ़ते हुए देखता हूँ।

स्कूल में पढ़ते समय मुझे एक कहानी याद आई। महान मराठा राजा शिवाजी की सेना के सेनापति तानाजी की। उन्होंने दुश्मन के किले की दीवार पर एक इगुआना फेंका और उसकी पकड़ के बल पर अपनी सेना को लेकर एक अभेद्य किले में घुस गए।

मैं भी एक इगुआना ढूँढ़ लूँगा। डॉक्टर मुझे उसे ढूँढ़ने और पालने में मदद करेंगे।
मैं एक सेना को गर्भ धारण करने के लिए पर्याप्त शुक्राणु जुटाऊंगा। मैं उन्हें सिर के बल और सीधे दौड़ना सिखाऊंगा। मैं राधा को गर्भवती कर दूंगा। मैं उसे घर पर रहने के लिए एक स्वस्थ, रोती, चीखती, लात मारती और गुर्राती हुई वजह दूंगा। भगवान गलत नहीं हो सकते।

Machine Translated by Google

राधा

श्याम का फ़ोन सुनकर मेरा गुस्सा पहले से ज़्यादा बढ़ गया। मुझे लगता है कि मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं इस असहनीय आदमी की पत्नी बनकर नहीं रह सकती। मैं अपने होंठ काटती हूँ और अपने गुस्से को दबाने की कोशिश करती हूँ। चाचा की दोस्त माया कमरे के उस पार से मेरी तरफ़ देख रही है।

'सब ठीक तो है?' चाचा पूछते हैं।

'वह श्याम था। और...' मैं रुक गया। मैं माया के सामने उसकी आलोचना नहीं करना चाहता।

'और?' चाचा ने पूछा।

'वह इस बात से परेशान है कि मैं कल रात घर पर नहीं सोई।' माया अपनी कुर्सी से उठती है

और बरामदे की ओर चली जाती है।

'मैंने कहा था कि तुम बीमार हो, इसलिए मैं कल रात यहाँ आया था। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें बुरा नहीं लगेगा।' चाचा कुछ नहीं कहते। वे आह भरते हैं।

'मुझे क्या बीमारी है?' 'गैस्ट्राइटिस।' 'राधा, क्या तुम्हें पता है कि तुम क्या कर रही हो?' वे पूछते हैं। उनके
चेहरे पर चिंता की

लकीरें हैं।

'मैं जानता हूँ, अंकल। बहुत अच्छी तरह। मैं जानता हूँ कि दुनिया इसे गलत समझेगी। व्यभिचार का कोई औचित्य नहीं है, मुझे बताया जाएगा। लेकिन मैं उससे प्यार करता हूँ। वह मेरे खून में आग है,' मैंने कहा।

'मैं यह देख सकता हूँ,' वह व्यंग्यात्मक ढंग से कहता है। 'उसके बारे में क्या, राधा? क्या तुम भी उसके खून में आग हो?' 'हाँ, अंकल। वह मेरी परवाह करता है। हम एक ही

प्राणी के जुड़वाँ हिस्से की तरह हैं। हम एक ही तरह से सोचते हैं। मैं सोलह साल की लड़की नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मेरा यह प्यार सच्चा है।' मैं उसे समझाने की कोशिश करती हूँ कि मैं क्रिस के बारे में क्या महसूस करती हूँ, और मेरे लिए उसकी भावनाएँ क्या हैं। ऐसा करना राहत की बात है। क्रिस और मेरे बीच जो कुछ है, वह ज़्यादा वास्तविक है, जब मैं इसके बारे में बात करती हूँ। इसे मुँह और आँखें, दिल और आत्मा देना, इसे आकार देना है, इसमें जान फूंकना है।

'सावधान रहो राधा। श्याम की आँखें और कान हर जगह हैं। वे तुम्हारे पति को सूचित करना अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगे।' 'मुझे परवाह नहीं है,' मैंने कहा। 'मेरी शादी खत्म हो चुकी है। और श्याम का मेरे लिए कोई मतलब

नहीं है।' 'मुझे नहीं लगता कि तुम्हारा यह मतलब है। तुम अपने तरीके से श्याम की परवाह करती हो। क्या तुम यह कह रही हो कि शादी के आठ साल

तुम्हारे लिए कोई मायने नहीं रखते? लेकिन तुम्हारी भावनाओं को सुलझाना मेरा काम नहीं है। तुम्हें खुद ही यह करना होगा। सावधान रहो, मैं बस इतना ही कहता हूँ।'

Machine Translated by Google

घर लौटते समय मैं क्रिस के कॉटेज में रुकता हूँ। वह अपना सेलो बजा रहा है। मैं वहीं खड़ा होकर संगीत को अपने अंदर समा जाने देता हूँ। मैं उससे उस टुकड़े का नाम पूछूँगा। मैं एक सीडी खरीदूँगा और जब मैं उससे दूर रहूँगा तो उसे पूरे दिन बजाऊँगा। इस तरह, मुझे लगेगा कि वह हर समय मेरे साथ है।

मैं पीछे हट जाता हूँ। मैं नहीं चाहता कि उसे पता चले कि मैं यहाँ हूँ। मैं सिर्फ़ खुद को आश्वस्त करना चाहता हूँ कि पिछली रात कोई सपना नहीं था। दुनिया चाहे जो भी सोचे, जब तक मेरे पास क्रिस है, मैं खुद बनने का साहस पा लूँगा।

रिसॉर्ट में एक गहरी शांति छाई हुई है। मुझे याद आता है कि चाचा ने क्या कहा था: सावधान रहना। मैं सावधान हूँ। इसलिए मैं अंदर जाता हूँ, बिना किसी झिझक के, और उन्नी से पूछता हूँ, 'क्या चाचा अभी तक अंदर आए हैं? उन्होंने कहा था कि वे साहिव की झोपड़ी में मेरा इंतज़ार करेंगे।'

उन्नी कंप्यूटर स्क्रीन से ऊपर देखती है। 'मैंने उसे नहीं देखा है। क्या आप चाहते हैं कि मैं किसी को कॉटेज में जाँच के लिए भेजूँ?' 'नहीं, मैं जाऊँगा। मुझे वैसे भी कुछ टेप वापस करने हैं,' मैं कहता हूँ। मैं क्रिस के कॉटेज की
ओर चलते हुए जल्दी नहीं करता।

वह बरामदे में बैठकर लिख रहा है। मुझे चिंता होती है कि मैं दखल दे रहा हूँ। वह मेरे कदमों की ओर देखता है। 'मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था,' वह कहता है।
मुझे लगता है कि मेरी सारी चिंताएं दूर हो गई हैं।
वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे झोपड़ी के अंदर ले जाता है, और एक निर्णायक क्लिक के साथ दरवाजा बंद कर देता है।

पिछली रात, अंधेरे ने मुझे अपनी अनिश्चितताओं को भूलने, अपने डर को छिपाने का मौका दिया था। पिछली रात एक सपना था जिसमें मैं चला गया था। दोपहर के साढ़े तीन बजे, मैं खुद से यह नहीं कह सकता। मैं अनिश्चित महसूस करता हूँ, यहाँ तक कि डर भी लगता है, और मेरे दिमाग में एक आवाज़ मुझे रोकती है: तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

मैं इधर-उधर देखता हूँ और सेलो देखता हूँ। मैं सहजता से पेश आता हूँ। 'वह कौन-सा संगीत है जिसे तुम अक्सर बजाते हो?' 'कौन-सा?' वह अपनी आँखें सिकोड़ लेता है। मुझे लगता है कि मेरा
दिल उछल रहा है। यह एक अभिव्यक्ति है जिसे मैं अच्छी तरह से समझने लगा हूँ।

वह सेलो केस खोलता है और वाद्य यंत्र बाहर निकालता है। वह मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठ जाता है और सेलो को अपने पैरों के बीच रखता है। वह टुकड़े के शुरुआती हिस्से बजाता है।

'नहीं, यह नहीं,' मैंने जल्दी से कहा।
मैं एक धुन गुनगुनाता हूँ। 'वही।' वह मेरी
ओर देखता है, दिलचस्पी लेता है। 'तुम्हारी आवाज़ बहुत अच्छी है,' वह कहता है।
'बहुत अच्छी गुनगुनाती आवाज़। क्या तुम इसे मेरे लिए बजाओगे?' क्रिस धनुष को तारों पर
घुमाता है। वह इसे मेरे लिए बजाता है और मेरे अंदर एक बड़ी तड़प भर जाती है।

Machine Translated by Google

जब वह समाप्त कर लेता है, तो वह सेलो को सावधानी से नीचे रख देता है। 'मैं इस टुकड़े के बारे में ज़्यादा नहीं जानता। मुझे यह स्कॉटलैंड में लोच टे के किनारे एक लॉज की अलमारी में मिला था। मुझे लगता है कि इसे आर्डेनैग लॉज कहा जाता था। उन जगहों में से एक जहाँ लकड़ियों की आग जलती है, झील के आस-पास के पहाड़ों का एक शानदार नज़ारा दिखाई देता है... मुझे यह संगीत स्कोर सेलो के लिए लिखा हुआ मिला। मुझे पता है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन इसने मुझे आकर्षित किया और मैंने इसे ले लिया। मुझे इसे वापस भेजना चाहिए और उनसे पूछना चाहिए कि टी. लैविन कौन है। यह संगीतकार का नाम है। अक्सर आपको सेलो के लिए लिखा हुआ संगीत नहीं मिलता और यह मुझे बहुत पसंद आया।'

'ओह,' मैं कहता हूँ। मुझे फिर से डर का एहसास हो रहा है। मैं उसकी ज़िंदगी से बहुत दूर महसूस करता हूँ।

'राधा,' क्रिस पूछता है, 'क्या गड़बड़ है?' 'मुझे नहीं पता,' मैं कहती

हूँ। 'यह सब इतना अवास्तविक है। तुम, मैं, यह...हमारे जीवन इतने अलग हैं।' क्रिस कहता है, 'यहाँ आओ।' मैं उसकी ओर जाती हूँ और वह मुझे अपनी बाहों

में ले लेता है और मुझे इतना करीब से

पकड़ता है कि सब कुछ अलग हो जाता है।

दूरियां मिट जाती हैं और मैं जानता हूं कि मेरे खून की ज्वाला फिर से उछलकर धधक उठेगी।

मैं फुसफुसाकर कहता हूं, 'हम जोखिम नहीं उठा सकते।'

'तुम फुसफुसा क्यों रहे हो?' वह फुसफुसाकर जवाब देता है।

'क्योंकि हम जोखिम नहीं उठा सकते,' मैं उसकी त्वचा के खिलाफ बड़बड़ाया, और फिर खोल दिया

मैं अपने मुंह से उसका मांस काटता हूं।

वह चिल्लाता है, 'आउच'।

पर्दों ने दिन को रोक दिया। कमरे के अर्ध-स्वर में, प्रकाश और अंधेरे के मिश्रण में, मैं उसके कुछ हिस्से देख सकता हूँ। उसकी मुस्कान का कोना। एक उठा हुआ निप्पल। उसके घुटने की गेंद। टांग की एक रेखा। उसके छोटे बाएं पैर की अंगुली का घुमाव।

अँधेरी जगहें भी। उसकी बगल की उथली गुफा। उसकी त्वचा का रेशम। उसके पसीने का नमक। उसके कोलोन का बेस नोट। वह एक पहेली है जिसे मैं अभी भी दिन-ब-दिन जोड़ रहा हूँ... मैं उसके अहंकार पर मुस्कुराता हूँ।

'पहले वह मेरे मांस का एक टुकड़ा काटती है, फिर मुस्कुराती है। आखिर रहस्य क्या है?' एक और टुकड़ा अपनी जगह पर आ जाता है, एक अंधेरी जगह को परिभाषित किनारों से भर देता है। उसकी आवाज़। मैं अब कहीं भी उसे पहचान सकता हूँ।

'मैं सच कह रहा हूँ, क्रिस। हम जोखिम नहीं उठा सकते,' मैंने फिर फुसफुसाते हुए कहा।

'हंह?' वह भौंहें चढ़ाता है। अंधेरे में, उसकी आँखों का हरा रंग गहरा जैतून जैसा है, उसकी आँखों का सफ़ेद भाग जितना सफ़ेद है, उससे कहीं ज़्यादा सफ़ेद है।

'तुम्हें कुछ तो इस्तेमाल करना ही होगा।' मुझे कंडोम शब्द का इस्तेमाल करने में शर्म आती है।

'ओह, क्या आप कुछ उठा लेंगे?' उसका स्वर लापरवाही भरा था।

मैं चौंक कर उठ बैठा। 'क्या?' इसमें कोई

संदेह नहीं कि उनके देश में महिलाएं कंडोम खरीदने में कोई बुराई नहीं समझतीं।

Machine Translated by Google

मैंने सुना है कि वेंडिंग मशीन भी हैं। लेकिन यह भारत है। और छोटे शहरों वाला भारत। वह मुझसे ऐसा करने के लिए कैसे कह सकता है? इसकी भयावहता मुझे सिहरन पैदा करती है।

और फिर भी, जब मैं बोलता हूँ, तो मैं खुद को एक छोटे और क्षमाप्रार्थी स्वर में कहते हुए सुनता हूँ, 'मैं नहीं कर सकता। आपको क्या लगता है अगर मैं केमिस्ट के पास गया और कंडोम के लिए कहा तो क्या होगा?' वह मुझे अपनी ओर खींचता है। 'अरे, मैं तो बस मज़ाक कर रहा था। शांत रहो, मिन-मिन।'

उसका
आवाज़ मुझे दुलारती है.

वह कहता है, 'मैंने आज सुबह कुछ खरीदा।' एक पल के लिए उसका चेहरा गंभीर हो जाता है।
'लेकिन कल का क्या हुआ?' मैं उसके सीने से लग
गई। 'मेरे सुरक्षित पीरियड का आखिरी दिन। तो मैं ठीक हो जाऊँगी।' मैं उसे यह बताने की हिम्मत नहीं कर पाई कि कल सुबह मैंने घबराहट में यह हिसाब लगाया था।
'क्या हम इसका टेस्ट ड्राइव लें?' वह पूछता है।

मैं हँसता हूं।

मुझे यह नया रूप पसंद है। खिलखिलाती, चमकती राधा। मुझे लगता है जैसे मैंने फिर से खुद बनने का साहस पा लिया है।

बहुत बाद में मैंने उनसे पूछा, 'मुझे बताओ कि तुम कहाँ रहते हो।' 'यह एक सुंदर पड़ोस है,' उन्होंने कहा। 'आपको नहीं लगेगा कि यह मैनहट्टन है। वहाँ एक पेड़ है जो मेरे अपार्टमेंट को देखता है। मेरी बिस्तर खिड़की के पास है और मैं वहाँ से पेड़ को देख सकता हूँ। यह एक पुराना अपार्टमेंट है। मेरी माँ की सहेली इसका मालिक है; उसने इसे मुझे किराए पर दे दिया है। यह उन छोटी-छोटी चीज़ों से भरा हुआ है जो उसने वर्षों से एकत्र की हैं। किताबों की एक पूरी दीवार। कई पेंटिंग भी। वह एक चित्रकार है, इसलिए उसके कुछ काम हैं, और कुछ उसे दिए गए हैं या उसने हासिल किए हैं। एक सुंदर टब है। कास्ट-आयरन ग्रिफ़िन पैरों पर लगा एक पुराना चीनी मिट्टी का टब। एक स्क्रीन डोर है जिसमें पहिए हैं ताकि आप इसे इधर-उधर ले जा सकें, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे कहाँ रखना चाहते हैं। अजीब बात है, लेकिन अच्छी है। वह साल के कुछ समय के लिए वहाँ रहती है और मैं बाकी आधे समय के लिए वहाँ रहता हूँ। यह एक अच्छी व्यवस्था बन गई है। हम दोनों के लिए अपनी चीज़ें रखने के लिए पर्याप्त जगह है और हमारे पास वापस जाने के लिए एक घर है।' मैं ईर्ष्या के एक झटके को दबाता हूँ। मैं इस महिला के बारे में सोचता हूँ जिसे वह नाम भी नहीं देता। मैं उसे ग्लेन क्लोज़ जैसी प्राणी मानता हूँ। ठाठदार और भावुक, जैसे वह फ़ैटल अट्रैक्शन में थी। सभी घुंघराले बाल और चमकते हुए नाखून। मैं उन्हें 'मैडम बटरफ्लाई' के बैकग्राउंड में बजते हुए लंबे गिलास से शराब पीते हुए देखता हूँ। मैं उसे अपने सेलो के बजाय उसे बजाते हुए देखता हूँ।

मैंने पूछा, 'उसकी उम्र कितनी है?'

मुझे लगता है कि उसकी निगाहें मुझे जला रही हैं। 'तुम्हें जलन हो रही है।' मुझे उसकी आवाज़ में हंसी सुनाई देती है।

'नहीं, मैं नहीं हूं,' मैंने विरोध किया।

'झूठ मत बोलो। तुम ईर्ष्यालु हो। मैं यह देख सकता हूँ।' उसकी आवाज़ विजयी है। 'वह मेरी है।

Machine Translated by Google

गॉडमदर। वह 63 साल की है और उसका नाम हेलेन है। और अंदाज़ा लगाइए, वह आपके अंकल से मिल चुकी है। बहुत समय पहले। मुझे उनसे उसके बारे में पूछना चाहिए। हेलेन आलंकारिक काम नहीं करती; उसने जो एकमात्र आलंकारिक पेंटिंग बनाई है, वह हेलेन की है। यह एक अजीब पेंटिंग है। लगभग शैतानी। इसमें मौजूद ऊर्जा आपको जला देगी। किसी तरह मैं पेंटिंग में मौजूद आदमी और उसके असली आदमी के बीच सामंजस्य नहीं बिठा पा रहा हूँ।'

मैं कहता हूँ, 'अब वह इतना युवा नहीं रहा।' अब मैं मुस्कुरा रहा हूँ। चाचा का समकालीन।
शायद कोई पूर्व प्रेमी भी।

'क्या वह सुंदर है?' मैंने पूछा।

'जब आप उसे जानते हैं तो वह आकर्षक लगती है। लेकिन जब आप उसे पहली बार देखते हैं, तो आपको लगता है कि वह कितनी छोटी औरत है। उसकी ठोड़ी पर मस्सा है, उसके बाल खराब कटे हुए हैं और उसे कपड़े पहनने का कोई मतलब नहीं है। और वह पाइप पीती है, इसलिए उसमें पाइप के तम्बाकू की बदबू आती है।'

मैं मुस्कुराना चाहता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे उदार होना चाहिए। 'तुम दुष्ट हो। मुझे आश्चर्य है कि तुम अपने दोस्तों को मेरे बारे में क्या बताओगे।' वह अपने अग्रभागों पर खुद को उठाता है और मेरे ऊपर मंडराता है।

वह इतना करीब है कि उसका
जब मैं उसकी ओर देखता हूँ तो उसका चेहरा फोकस से बाहर रहता है।

'मुझे देखने दो,' वह बुदबुदाता है। 'मेरा मिन-मिन संगीत का एक टुकड़ा है जिसे मैं अभी भी बजाना सीख रहा हूँ। उसकी कुंजी हस्ताक्षर एफ शार्प मेजर है जिसमें शार्प और फ्लैट्स हैं जो आपको पागल कर देंगे। उसका समय हस्ताक्षर एडैगियो अप्पासियोनाटो है। धीमा और भावुक।' मैं उसके विवरण की जटिलताओं को नहीं समझ पाया। यह पर्याप्त है कि वह

मुझे ऐसा देखता है.

'ओह, क्रिस,' मैं बुदबुदाता हूं, क्योंकि मुझे नहीं पता कि और क्या कहना है।

'मुझे बात खत्म करने दो,' वह कहता है। 'मैं अभी शुरू ही कर रहा था।' 'परेशान मत होइए,'

मैं अपनी हथेली उसके होठों पर रखते हुए कहता हूँ। 'मैंने बहुत कुछ सुन लिया है।'
और फिर, एक ऐसे साहस के साथ जिसके बारे में मैंने सोचा भी नहीं था कि मुझमें है, मैं बड़बड़ाता हूँ, 'मुझे दिखाओ...' वह हँसता है। उसकी

हँसी साहस को सलाम करती है। उसकी और मेरी।

'तुम्हें कब पता चला?' 'तुम्हें कब पता

चला?' 'मैंने पहले पूछा।'

'क्या तब पता चला जब

हम नदी के किनारे बैठे थे?' 'नदी के किनारे बैठे थे...नहीं, उससे

बहुत पहले, लेकिन मैंने तुमसे पहले पूछा।' हम अपने कदमों को वापस पाने की कोशिश करते हुए प्रेमियों का खेल

खेलते हैं। हम इसे आँखों और जीभों को बंद करके, हाथों को जोड़कर और पैरों को एक दूसरे में लपेटकर खेलते हैं। हम उस समय को लेते हैं जब हम एक दूसरे को नहीं जानते थे और इसे एक उग्र नारंगी गेंद में बदल देते हैं। सेलोफेन रैपिंग में उबली हुई मिठाई, जिसे हम छीलते हैं। एक सख्त कन्फेक्शनरी बॉल जिसे हम अपने मुँह के बीच घुमाते हैं, अपनी जीभ से कैच खेलते हैं। उसके समय की एक परत मुझमें समा जाती है, मेरे समय का एक हिस्सा उसमें समा जाता है

Machine Translated by Google

हम अपनी यादों को एक दूसरे के साथ आगे पीछे घुमाते रहते हैं। हमारी जुबानें और यादें, हमारी लार और हमारा अतीत आपस में टकराते हैं, टकराते हैं और फिर एक शांत शांति में मिल जाते हैं, जिससे वह समय खत्म हो जाता है जब हम अजनबी थे।

हम संतुष्ट होकर लेटे रहते हैं। वह जानता है कि मेरे किशोरावस्था के वर्ष बीजीज़ के साथ बीते, जबकि मैं जानता हूँ कि उसके वर्ष पिंक फ़्लॉइड और ग्रेटफुल डेड से भरे हुए थे; हम दोनों ने काफ़्का और कैमस को पढ़ा और अस्तित्वगत चिंता को दूर करने के लिए चुपके से थ्रिलर में डुबकी लगाई; हम दोनों ने घास पी और ड्रग्स का प्रयोग किया। हम जानते हैं कि हमारे माता-पिता ने हमें बारी-बारी से शर्मिंदा और क्रोधित किया और कभी-कभी हमें तकिए में सिर छुपाने के लिए मजबूर किया कि वे हमें क्यों नहीं समझते?

हमारे प्रारंभिक वर्ष दो अलग-अलग महाद्वीपों में बिताए गए थे, जो एक दूसरे से बहुत दूर नहीं थे
...

फिर हम एक दूसरे के जीवन के भूले-बिसरे कोनों को टटोलना और टटोलना शुरू कर देते हैं, छुपे हुए कोनों और बदसूरत रहस्यों की तलाश करते हैं। केवल ऐसी जानकारी के साथ ही हम एक दूसरे को सही मायने में पा सकते हैं।

वह पूछता है, 'ऐसी क्या बात है जिसे तुमने कभी खुद से भी स्वीकार नहीं किया?'
मैं कहता हूँ, 'मेरे पास कोई रहस्य नहीं है।' 'मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है।' फिर मुझे
याद आता है। एक ऐसी याद जिसे मैंने अब तक अप्रासंगिक मानकर त्याग दिया था।
मैं उसे अपनी बाहों में भर लेती हूँ। मैं कहती हूँ, 'मैंने इस बारे में कभी किसी से बात नहीं की।'
वह मुझे अपनी बाहों में भर लेता है। मैं उसके आलिंगन से राहत महसूस करती हूँ।
मैं कहता हूं, 'सुनो.'

मैं सात साल का था जब एक दोपहर मैं स्कूल से वापस आया तो बैठक में एक अजनबी मिला। चौड़े कंधों वाला, हंसता हुआ अजनबी जिसकी मांसपेशियाँ लहरा रही थीं, बाल खड़े थे और दाँत चमक रहे थे। उसने मुझे दरवाज़े पर झिझकते हुए देखा और कुछ ही कदमों में मेरे पास आ गया। उसने मुझे हवा में उछाला, मेरे गालों को चुटकी काटी और फिर मुझे अपने घुटनों पर बिठाकर कुर्सी पर बैठाया, मेरी गोद में अपनी जेब से खाली की गई टॉफियाँ भर दीं। 'यह राजकुमारी कौन है?' उसने पूछा।

मेरे पिता गंभीर और अनिश्चित दिख रहे थे। मेरी माँ पीली पड़ गई। मेरे दादाजी मुस्कुराए जैसे कि उन्हें नहीं पता कि उनके चेहरे पर और क्या करना है। फिर चाचा आगे बढ़े, मुझे अजनबी की गोद से उठाया और कहा, 'यह राधा है। गौरी और बाबू की बेटी।'

उसने मेरे कान के पीछे बालों की एक लट को टिकाया और कहा, 'राधा, यह तुम्हारे चाचा मणि हैं, तुम्हारे पिता के भाई। वे कई सालों तक दुनिया भर में घूमने के बाद अभी-अभी वापस आए हैं।' मुझे पिता शब्द पर जोर दिए जाने पर आश्चर्य हुआ, लेकिन मैंने इसे अनदेखा

कर दिया। मैं उस अजनबी से बहुत अधिक प्रभावित था। उसके पास अजीबोगरीब और अनोखी चीजों से भरा एक ट्रंक था। एक जापानी छाता और एक पंखा। क्रेयॉन और हेयरबैंड और पैकेट

Machine Translated by Google

च्युइंग गम। उसके पास बताने के लिए कहानियाँ और रोमांच थे। शाम को, वह मेरे पिता और दादा के लिए गिलास में व्हिस्की डालता था, और अगर चाचा भी उनके साथ होते, तो उसके लिए भी। वह मुझे नदी और चाचा के घर की सैर पर ले जाता था। वह पहले मेरा प्लेमेट था, और उसके बाद ही मेरे पिता का भाई बना।

इसके अलावा, मेरे पास पहले से ही एक चाचा थे: चाचा। और मैं इस अजनबी को उस भूमिका में नहीं सोच सकता था।

एक दोपहर, जब मैं खाने के लिए कुछ ढूँढ़ रहा था, तो मुझे एक सरसराहट सुनाई दी। यह आवाज़ पथयाप्पुरा से आ रही थी। अन्न भंडार घर के एक तरफ था और रसोई के रास्ते से उस तक पहुँचा जा सकता था। मैंने एक कराह सुनी। मैंने एक आह भरी। फिर मैंने गुस्से में फुसफुसाहट सुनी। अंकल मणि और मेरी माँ। उन्होंने उसे दीवार से सटा दिया था। उनकी बाहें उसके दोनों ओर थीं। 'वह मेरी है, है न? मुझे बताओ। मैं देख सकता हूँ। वह न तो तुम जैसी दिखती है और न ही मेरे उस छोटे भाई जैसी।'

मेरी माँ ने कुछ नहीं कहा। उसने अपना सिर नीचे किया और उसके कान के सिरे को सहलाया। उसकी फुसफुसाहट गूंजी: 'क्या वह तुम्हारे साथ ऐसा करता है? क्या वह तुम्हें वैसे ही खुश कर सकता है जैसे मैं करता था, जैसा मैं अब करता हूँ? क्या वह करता है?' मेरी माँ वहीं खड़ी रही। उसकी आँखों में आँसू थे, लेकिन वह दूर नहीं

गई। वह उसके पास झुकी हुई लग रही थी। 'हम चले जाएँगे,' अंकल मणि ने कहा। 'तुम और मैं और हमारा बच्चा। हम एक ऐसी ज़िंदगी जीएँगे जैसा हमें सात साल पहले जीना चाहिए था।'

मैं दूर चला गया। मेरे अंदर कुछ रो रहा था। यह सही नहीं था, मुझे पता था। मेरी माँ को मेरे चाचा को ऐसा नहीं करने देना चाहिए। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। मुझे अपने पिता के लिए गुस्सा आ रहा था।

उस शाम, मैं अपने पिता के पास गया और पूछा, 'वह कब तक यहां रहेंगे?' 'कौन?' मेरे पिता ने भौंहें सिकोड़ीं।

'चाचा मणि। वह कब जाएगा?' 'तुम क्यों पूछ रहे हो? क्या तुम उससे

पहले ही थक चुके हो? मुझे लगा कि वह तुम्हारा है।

'मेरे पसंदीदा व्यक्ति।' उसकी मुस्कान में कोई हास्य नहीं था। मैं भी यह देख सकता था।

मैंने अपनी आँखें नीची करके कहा, 'वह मम्मी से कह रहा था कि वह चाहता है कि मैं और वह उसके साथ चलें। काश तुम और अंकल भी साथ आते।' उसने मुझे कंधों से पकड़ लिया और मुझे घूरने लगा। वह मेरे चेहरे को देख रहा था कि मैं सच

बोल रहा हूँ या नहीं। मैं चालाक था, लेकिन मैंने सच बोल दिया था।

फिर मेरे पिता ने मुझे धक्का देकर दूर कर दिया और कहा, 'जाओ अपनी गुड़ियों के साथ खेलो।'

अगले हफ़्ते मुझे ऊटी के एक बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया गया।

फिर से अंकल मणि। मुझे बताया गया कि कुछ सप्ताह बाद एक कार दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।

क्रिस ने पूछा, 'क्या तुमने अपनी माँ से नहीं पूछा?' 'वह तुम्हें सच बता सकती थी।

वह तुम्हारा ऋणी था।'

Machine Translated by Google

'मुझे लगता है कि मैंने इसे अपने दिमाग से निकाल दिया। अब मैं चाहता हूं कि मैं अधिक समझदार और कम आलोचनात्मक होता। मेरी मां बेहद दुखी थी। शायद अगर वह उसके साथ चली जाती, तो वह अधिक खुश होती,' मैं चुपचाप कहता हूं। मुझे समझ में आने लगा है कि मेरी मां को कैसा महसूस हुआ होगा, जब वह अपने जीवन को दो पुरुषों के बीच बांटने की कोशिश कर रही थी, जिनमें से प्रत्येक ने उस पर अपना दावा ठोंका था।

'तुम एक बच्चे थे। अपने आप को दोष मत दो।' क्रिस ने मेरा कंधा दबाया।

'मुझे पता है। लेकिन हम कितनी आसानी से अपने माता-पिता और उनके जीवन का न्याय कर लेते हैं।' क्रिस

हेडबोर्ड पर पीछे झुक जाता है। 'पिछले साल, मेरे पिता की मृत्यु हो गई। तब मेरी माँ ने मुझे बताया कि जिस व्यक्ति को मैं डैडी कहता था, वह मेरा पिता नहीं था। जब मैंने उनसे पूछा कि मेरा जैविक पिता कौन था, तो उन्होंने कहा कि उन्हें यकीन नहीं है। मुझे नहीं पता: यही उनका जवाब था। तो आप देखिए, हम दोनों में यह भी समानता है। अनिश्चित पितृत्व।

उन्होंने धीमे स्वर में कहा, 'वे तुम्हें, तुम्हारे माता-पिता को बर्बाद कर देते हैं।'

'हं?'

'लार्किन। फिलिप लार्किन,' वह कहता है।

मैं मुस्कुराता हूँ। मैं कहता हूँ, 'बच्चे अपने माता-पिता से प्यार करना शुरू करते हैं; कुछ समय बाद वे उनका मूल्यांकन करने लगते हैं; शायद ही कभी, यदि कभी, वे उन्हें माफ करते हैं।'

अब उसकी बारी है हैरान होने की। 'मैं जानता हूं, लेकिन मैं इसे पहचान नहीं पा रहा हूं।' 'वाइल्ड। ऑस्कर
वाइल्ड।' मैं उसकी आवाज की नकल करता हूं।

'इससे भी बेहतर एक है,' मैंने जोड़ा। 'अधिक उपयुक्त। 'सभी बच्चे हैं
उसकी दुनिया के भीतर दुनियाओं में भय सच हो गया।'' 'मुझे यह नहीं पता,' वह

कहता है।

'डोम मोरेस। भारतीय कवि। मेरे पास उनकी कविताओं का अंतिम संग्रह है। टाइप किया हुआ
एक उंगली। क्या आप इसे पढ़ना चाहेंगे?

क्रिस मेरी तरफ देखता है। वह मुझे अपनी छाती के पीछे की ओर खींचता है। 'सभी उपाय,
और सारी भाषा, मुझे बता देनी चाहिए, क्या मुझे बताना चाहिए कि वह क्या चमत्कार थी।'

'डॉन, है न? अब देखते हैं कि क्या आप यह जानते हैं। "वह मेरा उत्तर, मेरा दक्षिण, मेरा पूर्व और पश्चिम था/मेरा कार्य सप्ताह और मेरा रविवार का विश्राम/मेरा दोपहर, मेरी आधी रात, मेरी बातचीत, मेरा गीत ..."

मैं रुक जाता हूँ। मैं आखिरी पंक्ति बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाता: 'मैंने सोचा था कि प्यार हमेशा के लिए रहेगा
'मैं कभी गलत था।'

वह एक पल के लिए चुप हो जाता है। 'मुझे पता है। ऑडेन। लेकिन तुमने छंद पूरा क्यों नहीं किया? तुम्हें अब भी मुझ पर भरोसा नहीं है, है न?' मैं असहाय होकर कंधे उचकाता हूँ। 'तुम ऐसा कैसे कह सकते हो?

अगर मैं ऐसा नहीं कहता, तो क्या मैं यहाँ होता?' दोपहर की मस्ती खो जाती है। कुछ देर के लिए, जब हम यादें और उद्धरण

साझा कर रहे थे, मुझे लगा कि मैं उसकी बुद्धिमता से जुड़ा हुआ हूँ। हमारी दुनिया एक दूसरे में समा गई थी। हम एक दूसरे के थे, वह और मैं।

Machine Translated by Google

फिर क्रिस मेरे हाथ अपने हाथों में लेता है। 'साहस रखो, प्रेमी!/क्या तुम सहन कर सकते हो?
इतना दुःख/किसी और के हाथ में?'
मैं उसकी छाती को सहलाता हूँ। 'वह किसका है?' 'रॉबर्ट ग्रेव्स।
उसने आई, क्लॉडियस लिखा था।' 'मुझे पता है। मुझे संरक्षण मत दो।'
'मैं उसकी कविता के बारे में ज़्यादा नहीं सोचता।
लेकिन मेरी माँ सोचती है,' क्रिस कहता है।
'तुम्हारी माँ कैसी है?' 'फूलों की संतान समाज
का स्तंभ बन गई। उसने वह सब किया जो उसकी पीढ़ी ने किया। घास पीती थी, एसिड पीती थी, बीटल्स और रविशंकर को सुनती थी, भारत की यात्रा करती थी। वह कुछ समय के लिए यहाँ रही। फिर वह वापस चली गई, खुद को संभाला, प्रकाशन में नौकरी की, मेरे पिता से मिली, शादी की और हमेशा खुश रही। मैं भी इसी रास्ते पर कहीं आया। मेरी दो बहनें हैं। क्या मैंने तुम्हें यह बताया?' मैंने अपना सिर हिलाया।

'मुझसे छोटी। बड़ी एलिज़ाबेथ वकील है और छोटी डेबोरा बैंक में काम करती है। मेरे माता-पिता समुद्र के किनारे बसे छोटे से शहर बोशाम में सेवानिवृत्त हो गए। मेरी माँ अभी भी वहाँ एक बहुत बड़े घर में रहती हैं और एक बगीचे में रहती हैं जिसे वह खुद मुश्किल से संभाल पाती हैं। लेकिन वह अपनी कई समितियों और दोस्तों के साथ खुश हैं। कभी-कभी वह साहित्यिक लंच के लिए लंदन चली जाती हैं। बाकी समय वह एक सम्मानित माँ की भूमिका निभाने में संतुष्ट रहती हैं।'

मैं कहता हूँ, 'मुझे बोशाम के बारे में बताओ।' मेरे मन में एक छोटा सा शहर है जो दो
एक भाग एनिड ब्लाइटन, एक भाग जेन ऑस्टेन और एक भाग बारबरा पिम।
'यह बहुत सुंदर है। आपको यह पसंद आएगा। यहाँ एक सुंदर जल-तट है, जहाँ पानी में नावें तैरती रहती हैं। बोशाम से ही राजा हेरोल्ड ने 1064 में नॉरमैंडी तक यात्रा की थी। बोरहम चर्च बहुत पुराना है। वास्तव में, यह इंग्लैंड के सबसे पुराने चर्चों में से एक है।' उनकी आवाज़ में पुरानी यादों की कोमलता झलकती है।

मुझे लगता है कि मेरे अंदर डर समा रहा है। उसका जीवन मेरी समझ से परे है। 'क्रिस,' मैं
'कृपया मुझे पकड़ो।'
उसकी बाहों में, मुझे घबराहट महसूस होती है। उसकी निकटता की गोद में, मुझे लगता है कि हमारे बीच कुछ भी नहीं आ सकता। श्याम, हम जिस समानांतर दुनिया में रहते हैं, अपराधबोध। कुछ भी मायने नहीं रखता। जो सही लगता है वह गलत नहीं हो सकता। यही वह चीज है जिससे मुझे आगे बढ़ने का साहस मिलता है।

Machine Translated by Google

चाचा

दो दिन बीत गए और ऐसा लगने लगा कि माया यहाँ बहुत दिनों से है। सिर्फ़ अड़तालीस घंटों में ही हमारी ज़िंदगी एक रूटीन में बदल गई है।

माया बरामदे में बैठी किताब पढ़ रही है। उसके बाल, धुले हुए, कुर्सी के पीछे लटक रहे हैं। काले बालों में भूरे रंग की धारियाँ हैं। 'तुम्हारे बाल सफ़ेद हो रहे हैं,' मैं उससे कहता हूँ।

वह अपने चश्मे के ऊपर से मेरी ओर देखती है। 'मुझे पता है। मैं सोचती रहती हूँ कि मुझे इसे रंग देना चाहिए।' मैं उसकी आँखों में चिंता की झलक देखती हूँ।

'क्या यह तुम्हें परेशान करता है? कि मैं वह नहीं रहा जो मैं पहले था?' मैं हंसता हूं। 'मूर्ख मत बनो। मैं भी वह नहीं रहा जो मैं पहले था। हम सब बूढ़े हो रहे हैं। हम इससे इनकार नहीं कर सकते.'

मालिनी जोर से चिल्लाती है। उसे जलन हो रही है। वह माया को मेरे द्वारा दिए जाने वाले ध्यान से चिढ़ती है। 'यहां तक कि मालिनी भी,' मैं कहता हूं। 'लेकिन उम्र हमारे भीतर जो है, उसे नहीं मार सकती। उसे देखो। इतने सालों के बाद तुम सोचोगे कि वह शांत हो गई होगी, लेकिन वह अभी भी पहले की तरह ही मांग कर रही है, अभी भी उतनी ही क्रूर है, और बहुत ही ज्यादा अधिकार जताने वाली है। यद्यपि वह जानती है कि मैं उसका गुलाम हूं, फिर भी वह तुम्हारे यहां होने से नाराज है।'

मैं उसके पिंजरे के पास जाता हूँ और उसका सिर खुजलाता हूँ। मालिनी खुशी से अपनी आँखें बंद कर लेती है। 'मूर्ख लड़की,' मैंने बुदबुदाया। 'कोमन तुमसे प्यार करता है, क्या तुम्हें यह नहीं पता?'

माया घृणा से अपना सिर हिलाती है। 'तुमने उसे बिगाड़ दिया है, इसीलिए वह वह जैसी है, वैसी ही है। तुम्हें एक कुत्ता पालना चाहिए।' 'मेरे पास एक कुत्ता था।'

'उसका क्या नाम था?' 'एकलव्यन,'

मैंने कहा।

माया मेरी ओर देखती है। 'कुत्ते के लिए कितना अजीब नाम है।' 'जब मैं लंदन से वापस आई, तो मैंने तय कर लिया कि अब मुझे किसी से कोई संबंध नहीं रखना है। मेरे गुरु की मृत्यु हो चुकी थी। मेरा भाई मणि गायब हो गया था। मेरे पिता बीमार थे और कोई भी ऐसा नहीं था जिससे मैं बात कर सकूं। कुत्ता मुझसे चिपक गया। वह एक पिल्ला था जब उसने कक्षा के बाहर छिपना शुरू किया। हर सुबह वह वहाँ होता था, और जब तक मैं समाप्त नहीं कर लेता, तब तक वह वहाँ रहता था। जब मैं थ्योरी क्लास शुरू करता, तो वह शाम को वापस आ जाता। वह चुपचाप अकेले खेलता था और ऐसा लगता था कि उसे मुझसे कुछ नहीं चाहिए। कुछ दिन वह अपने पंजों पर सिर रखकर बैठा रहता था, और कक्षा में अभ्यास करते समय उसे घूरता रहता था। एक शाम, अचानक, जब मैं घर जा रहा था, तो मैंने उसे सीटी बजाई। उसने कपड़े का वह टुकड़ा नीचे रख दिया, जिससे वह परेशान था और मेरे पीछे-पीछे चला आया। और कभी मेरा साथ नहीं छोड़ा

Machine Translated by Google

उसके बाद।' 'क्या

इसीलिए तुमने उसका नाम एकलव्य रखा? तुम्हारे प्रति उसकी दृढ़ निष्ठा के कारण?' माया को आश्चर्य होता है।

'अरे नहीं,' मैंने विरोध किया। 'मैं किसी कुत्ते पर ऐसा नाम नहीं रखूँगा। मेरे छात्रों ने उसका नाम एकलव्य रखा था। वे उससे और मुझसे भी नाराज़ थे, शायद। मैं उन पर चिल्लाता था, "उस कुत्ते में तुम सबकी समझ से ज़्यादा समझ है।

वह कभी भी कोई पाठ नहीं छोड़ता, कभी मेरी अवज्ञा नहीं करता और मैं जो भी उससे कहता हूँ, वह करता है। उसने मुझे देखकर इतना कुछ सीखा है जितना तुम कभी नहीं सीख पाओगे।" मुझे लगता है कि महाभारत के आदर्श छात्र के नाम पर उसका नाम रखना उनके लिए बदला लेने का एक तरीका था।
जब वे उसे एकलव्य कहते थे तो वह अपनी दुम जोर से हिलाता था और जीभ बाहर निकालकर तथा कान पीछे करके उनकी ओर दौड़ता था। वे जानते थे कि इससे मुझे चिढ़ होती है, लेकिन उसे यह नाम पसंद था।' 'तो क्या तुमने भी उसे एकलव्य कहा था?' 'मैंने उसे कुत्ता कहा था।' 'तुमने उसका नाम क्यों नहीं रखा?' 'कुत्तों को नामों की जरूरत नहीं होती। क्या

तुम्हें लगता है कि कुत्ते एक-दूसरे को नाम से बुलाते हैं?' 'तो फिर

मालिनी के बारे में क्या? क्या तुम्हें

उसे तोता नहीं कहना चाहिए?' 'राधा ने उसका नाम मालिनी

रखा। अगर मैं होता तो मैं उसे तोता ही कहता।' 'तुम अजीब हो, कोमन। मुझे लगता है कि मुझे शुक्रगुजार होना चाहिए कि तुम

उसे एकलव्य नहीं कहते

मैं औरत हूँ,' माया हँसती है।

मुझे उसकी हंसी की आवाज़ पसंद है। यह धीमी और गले से निकलने वाली है।

शाम ढलने लगी है। मैं क्षितिज की ओर देखता हूँ। आसमान बादलों से घिरा हुआ है। पूरे दिन रुक-रुक कर बारिश होती रही। नदी का जलस्तर बढ़ रहा है। वह आखिरी तीन सीढ़ियाँ पार कर चुकी है। 'माया, क्या तुम सीढ़ियों पर जाकर बैठना चाहती हो?' मैं पूछता हूँ।

'बाद में। जब चाँद निकलेगा। मैं जुगनू देखना चाहता हूँ, जिनकी तुम बात कर रहे हो।' मैं अपनी घड़ी देखता हूँ। राधा कहाँ है?

और क्रिस? 'आज शाम मैं तुम्हें और बताऊँगा,' मैंने वादा किया था। अचानक, मुझे पता चलता है कि मैं उन्हें अपनी कहानी बताने के लिए अधीर हो रहा हूँ।

माया अपनी किताब बंद करते हुए कहती है, 'कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि आप मुझमें क्या देखते हैं।'

पहली दोपहर जब वह यहाँ आई, हम दोनों एक साथ लेट गए, माया और मैं। हम बस एक दूसरे की बाहों में लेटे रहे। साथ रहना ही काफी था, एक दूसरे की मौजूदगी से पोषण पाना। यह प्यार करने से कहीं ज़्यादा अंतरंग था।

इसके लिए पर्याप्त समय होगा।

उसका शरीर एक सुखद परिपूर्णता में बस गया है जो मोहक से ज़्यादा आरामदायक है। हम अपने शरीर को एक दूसरे से चिपका कर लेटे रहे; मेरी सांसों के कारण उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर बालों की लटें ऊपर-नीचे हो रही थीं, मेरा हाथ उसके बालों को पकड़ रहा था।

Machine Translated by Google

मांस का एक रोल जो उसके निचले पेट को ढक रहा था, उसकी टाँगें मेरे पैरों के बीच में फंसी हुई थीं।
पूरी दोपहर हम एक दूसरे के शरीर से लिपटे लेटे रहे, एक दूसरे के शरीर से शरीर की आत्मीयता से हमें सुकून मिला।

मैं कहता हूं, 'माया, मैं तुममें क्या देखता हूं? आराम।'

उसके होंठ मुस्कुराहट से खुल जाते हैं। वह खुश है।

माया मेरी कोहनी को छूती है। 'तुम्हें क्या लगता है कि उनका क्या होगा? क्रिस और राधा। वे एक दूसरे के साथ सो रहे हैं।' 'मुझे इस बारे में नहीं पता। उसने कल रात यहीं बिताई और रात

उससे पहले.' मैं हंसता हूं.

माया मुंह बनाती है। 'मजाक मत करो। तुम समझ रहे हो कि मेरा क्या मतलब है।' 'मैं समझती हूं।' 'अगर वे चाहें तो साथ
में जीवन बिता

सकते हैं। उसे रोकने के लिए कुछ भी नहीं है।
वापस आ जाओ। कोई बच्चा नहीं। कोई ज़िम्मेदारी नहीं।'

'क्या यही बात तुम्हें रोक रही थी, माया?' मैंने पूछा।

'हाँ,' वह कहती है। 'और मेरे जीवन में ऐसा कोई दिन नहीं है जब मैं यह न सोचती हो कि क्या मैं
मुझे खुद के प्रति ज़्यादा दयालु होना चाहिए था।' 'हम अभी भी साथ

रह सकते हैं।' माया उदास है। उसके चेहरे पर

दुख आसानी से झलकता है। 'मुझे पता है कि तुम ऐसा सोचते हो, कोमन। मुझे पता है कि तुम यह प्रस्ताव आसानी से नहीं देते, जब तुम कहते हो कि तुम हमारे साथ रहने से खुश होगे। लेकिन तुम्हें अपना एकांत बहुत पसंद है। तुम जो हमारे पास है, उसे पसंद करते हो, भले ही तुम इसे स्वीकार न करो। यह सबसे अच्छा है कि हम जैसे हैं वैसे ही रहें। इस तरह, हमारे पास जो है वह कभी फीका या फीका नहीं पड़ेगा।'

एक और महिला ने भी मुझसे यही कहा था। ललिता ने क्या कहा था? 'तुमने जिस दुनिया में रहने का फैसला किया है, उसमें किसी और के लिए कोई जगह नहीं है।'

मैं तब तक नहीं जान पाता कि मैं कौन हूँ जब तक कि मैं कोई और नहीं हो जाता। फिर मैं कैसे जान सकता हूँ कि मैं कौन हूँ?

क्या यह स्थान किसी अन्य की उपस्थिति के लिए उपयुक्त है?

'कुछ सालों तक मेरी साथी ललिता नाम की एक महिला थी। मैंने उससे शादी करने के लिए कहा, लेकिन वह नहीं चाहती थी। वह आने और जाने में खुश थी। उसने भी यही कहा। कि हम जैसे थे वैसे ही रहना सबसे अच्छा है।'

माया पूछती है, 'क्या वह नर्तकी थी?'

'नहीं,' मैंने कहा। 'जब मैं उससे पहली बार मिला था, तब वह एक वेश्या थी। वह मेरी रखैल बन गई। वह एक सिलाई इकाई में काम करती थी और अपने जीवन के अंतिम कुछ वर्षों में ही उसने मुझसे पैसे लिए।'

माया कहती हैं, 'वह बहुत ही विशेष व्यक्ति रही होंगी।'

मैं उठकर उसके पास जाता हूँ। मैं उसके बालों को सहलाता हूँ। उसकी यही शालीनता मुझे उससे बांधती है। यह राहत की बात है कि मुझे किसी और की तरह बनने का दिखावा नहीं करना पड़ता।

Machine Translated by Google

वरना जब मैं उसके साथ होता हूँ। शायद यही प्यार है।

'मैंने आज सुबह टेप सुने। क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ?' वह मेरी तरफ देखने के लिए मुड़ी। 'मुझे पता है कि तुम्हें अपने बारे में बात करना पसंद नहीं है। तो तुम अब ऐसा क्यों कर रहे हो?' मैंने अपना सिर हिलाया। 'मुझे नहीं पता। मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था। शायद मैं खुद को खोजने की कोशिश कर रही हूँ।' माया

हँसती है। उसे लगता है कि यह एक मज़ाक है।

मैंने कहा, 'मैं मजाक नहीं कर रहा हूं।'

'तुम गंभीर नहीं हो सकते। क्या तुम नहीं जानते कि तुम कौन हो?' 'माया, मैं तुम्हें रावण उद्भवम का

कथकली संस्करण बताता हूँ, रावण की उत्पत्ति। कहानी तीनों लोकों के राजा रावण से शुरू होती है, जिसे न तो हथियार और न ही देवता नष्ट कर सकते हैं, वह अपनी शक्ति में मगन है। मैंने जो हासिल किया है, उसके बारे में मुझे इतना विजयी क्यों महसूस होता है? वह खुद से पूछता है। वह जानता है कि उसने खुद पर विश्वास के कारण यह पद हासिल किया है। उसने उन वरदानों के लिए भीख नहीं माँगी और न ही विनती की, जो उसे तीनों लोकों का स्वामी बनाते हैं। उसने उन्हें अपनी तपस्या की शक्ति से हासिल किया। उसने अपने चारों ओर चार यज्ञ अग्नि जलाए और सूर्य को दूर जाने से मना किया; यह पाँचवीं यज्ञ अग्नि थी। वह धधकती गर्मी में एक पैर के अंगूठे पर खड़ा रहा और एक हजार साल तक निर्माता से प्रार्थना करता रहा। जब निर्माता अभी भी प्रकट नहीं हुआ, तो उसने अपने सिर काटने शुरू कर दिए और उन्हें एक-एक करके यज्ञ की आग में फेंक दिया। क्या आप इसे अनदेखा कर सकते हैं, उसने निर्माता से पूछा। एक के बाद एक उसने नौ सिर काटे जब तक कि उसके पास सिर्फ़ एक सिर नहीं बचा। फिर भी उसने संकोच नहीं किया। वह अपना बचा हुआ सिर काटने ही वाला था कि तभी विधाता प्रकट हुए और उसे हर वह वरदान दिया जो वह चाहता था। रावण खुद को जानता था। वह जानता था कि वह किस हद तक जा सकता है। वह अपनी शक्ति की सीमा जानता था। और अपने जीवन की। इसलिए उसे किसी चीज़ का डर नहीं था और किसी भी चीज़ का डर नहीं था।

एक।

'मेरे पास इस भूखे प्राणी को अर्पित करने के लिए दस सिर नहीं हैं, जिसे मैं अपने भीतर का प्राणी कहलाऊं।
लेकिन मैं जो कर रहा हूँ, वह है अपनी ज़िंदगी को सबके सामने रखना। शायद तब मुझे पता चलेगा कि मैं असल में कौन हूँ। 'अब क्या होगा?' मुझे नहीं पता। कुछ दिन

अतीत को खंगालना आसान होता है।

कुछ दिन यह दर्दनाक होता है। अब से, मुझे एहसास हुआ कि यह इतनी आसानी से पूरा नहीं होगा। मैं, जो हमेशा से कोई और रहा हूँ, मुझे खुद ही रहना होगा। मुझे आगे बढ़ने का साहस कहाँ से मिलेगा?

मैं उसके बालों की लट बनाना शुरू करती हूँ। बाल मुलायम और रेशमी हैं। 'मैं ऐसा ही करती हूँ,' मैं कहती हूँ। 'मैंने तुम्हें अपने जीवन के बारे में जो कुछ भी बताया और जो कुछ भी नहीं बताया, वह सब तुम सुन पाओगी अगर तुम थोड़ी देर रुकोगी।'

Machine Translated by Google

'कितनी देर, कोमन?' 'काफी
देर। याद रखना, मैं अभी-अभी इस कहानी में पैदा हुआ हूँ।'

Machine Translated by Google

1940–1952 आशा का ताज

लड़का लकड़ी के पुल पर खड़ा होकर नदी को घूर रहा था। जब डॉक्टर किसी आदमी से बात कर रहा था, तो उसने लकड़ी की रेलिंग पकड़ रखी थी जो रेलिंग का काम करती थी। लकड़ी उसकी हथेलियों में धंस गई; जब एक कांटा उसकी त्वचा में चुभ गया, तो उसे बहुत तेज दर्द हुआ। लेकिन वह उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। यही एकमात्र चीज़ थी जो वास्तविक लग रही थी; बाकी सब कुछ, स्टेशन, नदी, पुल जो उसकी हर हरकत पर कराहता था, यह शहर और यह ज्ञान कि यहाँ वह आदमी रहता था जो उसका पिता था, यह सब अवास्तविक था।

उसने डॉक्टर को सीढ़ियों से अपनी ओर आते सुना, लेकिन वह नदी को देखता रहा।

डॉक्टर ने कहा, 'यह समुद्र में जाता है।' 'वह नहीं जिसे तुम जानते हो, दूसरा।' लड़का मुड़ा।

'कोमन जानना चाहता है कि समुद्र का नाम क्या है?' 'अरब सागर,' डॉक्टर ने कहा। 'लेकिन
क्या तुम्हें स्कूल में यह नहीं पढ़ाया गया?' 'कोमन जानना चाहता है कि नदी का नाम क्या है?' डॉक्टर ने अपना सिर हिलाया।

'मुझे नहीं पता। तुम्हें अपने पिता से पूछना चाहिए। हाँ, वह यहाँ हैं। और जाहिर है,
वह इस छोटे से शहर में एक बड़ा शख्स है!'

लड़के ने डॉक्टर के चेहरे की ओर देखा। क्या वह व्यंग्य था जो उसने सुना था? डॉक्टर शायद ही कभी व्यंग्य करता था और शायद ही कभी किसी का या किसी चीज़ का मज़ाक उड़ाता था। लेकिन जब भी डॉक्टर उसके पिता का ज़िक्र करता, तो उसका मुँह सिकुड़कर गंभीर हो जाता और ऐसा लगता कि उसकी आँखें भी झुकी हुई थीं। लड़के ने अपने सिर पर लपेटे कपड़े को छुआ। उसे अजीब लगा और लोगों की आँखें खिंच गईं, लेकिन कम से कम वे हँसे नहीं।

जब उसके पिता उसे देखेंगे तो क्या सोचेंगे? क्या कहेंगे?

'तुम्हें पता है, है न, कि तुम्हारे पिता तुम्हें देखकर इतने खुश नहीं होंगे? हो सकता है कि वे असभ्य भी हों। लेकिन तुम्हें यह समझना चाहिए कि यह सब, तुम और मैं उनके दरवाज़े पर, उनके लिए एक सदमा होगा। और मनुष्य अचानक सदमा लगने पर अलग तरह से प्रतिक्रिया करते हैं।'

लड़के ने सिर हिलाया, पगड़ी ने उसकी सहमति को और भी ज़ोर दिया। उसने उसे फिर से छुआ।

डॉक्टर ने कहा, 'हमें अब जाना होगा।'
लड़के ने कुछ नहीं कहा। वैसे भी कहने को कुछ था ही नहीं।

Machine Translated by Google

इसलिए वह डॉक्टर के पीछे-पीछे प्लेटफार्मों को जोड़ने वाले लकड़ी के पुल के ऊपर से होते हुए, सीढ़ियों से नीचे उतरा और शोरानूर नामक छोटे से कस्बे में पहुंचा, जहां उसके पिता एक बड़े आदमी थे।

'कृपया यहीं रुकें,' आदमी ने कहा। 'वह नाश्ता कर रहा है। मैं उसे परेशान नहीं कर सकता।
मोडालली अपने आगंतुकों से यहीं अपने कार्यालय कक्ष में मिलते हैं।'

क्षण भर के लिए डॉक्टर की नज़रें लड़के से मिलीं। वे दोनों जानते थे कि दूसरा क्या सोच रहा था। वह। आदमी ने यह शब्द ऐसे बोला जैसे कि इसे राजसी अधिकार से तौला गया हो। उसने महामहिम का नाम भी लिया हो सकता है। मोडालली।

मालिक... उसके पास क्या है, वे सोच रहे थे।

डॉक्टर ने कमरे में चारों ओर देखा और अपने होंठ काटे। उसे समझ नहीं आया कि उसे नाराज़ होना चाहिए या खुश होना चाहिए। कमरा नाज़रेथ के अस्पताल में उसके कमरे जैसा ही था, मेज़ से लेकर पेपरवेट तक और कचरे के डिब्बे की स्थिति तक। यहाँ तक कि घड़ी भी उसके कमरे में टिक-टिक करती घड़ी की जुड़वाँ थी। क्या लड़का वही देख रहा है जो मैं देख रहा हूँ, उसने सोचा।

लड़के ने ऐसा ही किया। उसने देखा कि कमरा वैसा ही था जैसा वह दो दिन पहले बैठा था, जब डॉक्टर ने उसे यह यात्रा करने की ज़रूरत बताई थी। उसने देखा कि कमरे में डॉक्टर की तरह ही अधिकार का भाव था। उसने सोचा, अब मुझे पता चला कि जब डॉक्टर मेरे पिता का ज़िक्र करता है तो उसकी आवाज़ में वह अजीब सा भाव क्यों होता है। वे प्रतिद्वंद्वी होंगे। उसने सोचा कि क्या उसके पिता भी डॉक्टर थे?

उसने फिर से अपने सिर पर पगड़ी को छुआ, उसे महसूस हुआ कि वह फिसल रही है।

डॉक्टर ने कहा, 'मुझे आपके लिए एक टोपी लानी चाहिए थी।'

डॉक्टर ने उस खुशी को दबाने की कोशिश की जो उसे तब मिली जब उसने सोचा कि वह सेठ को, जिसे वह अब सेतु के रूप में जानता था, अपने बारह वर्षीय बेटे को उसके बेतुके बालों को ढकने के लिए कपड़े की पगड़ी पहनाकर कैसे पेश करेगा। उसने सोचा कि अगर कुछ और नहीं तो वह अपनी जगह पर खड़ा हो जाएगा।

लड़के को आश्चर्य हुआ कि एक पल में एक चेहरे पर इतनी सारी भावनाएँ कैसे उभर सकती हैं। उसने भावनाओं का खेल सबसे पहले डॉक्टर के चेहरे पर देखा जब वे इंतज़ार कर रहे थे। फिर उसने इसे उस आदमी के चेहरे पर देखा जो घर के अंदर से कमरे तक जाने वाले दरवाज़े से अंदर आया था। विस्मय, स्नेह, दुख, क्रोध, भय और फिर एक और... वह क्या था? उसने अपनी आँखें सिकोड़ लीं और अचानक उसे एहसास हुआ। अहंकार।

'अच्छा, अच्छा, अच्छा, मुझे इस आश्चर्य का क्या श्रेय है?' आदमी ने कर्कश स्वर में पूछा
जिससे सारी भावनाएं मिट गईं।

डॉक्टर खड़ा हो गया। उसने सोचा, यह सेठ नहीं हो सकता। यह मांसल चेहरे और मूंछों वाला आदमी कौन था? उसने सोने की घड़ी और रेशमी जुब्बा पहना हुआ था और सोने की चेन उसके सीने के बालों में भारी पड़ी थी। मेरा सेठ एक ताजा चेहरे वाला लड़का था और यह एक है - उसने शब्द टटोला:

Machine Translated by Google

मोडाललली. कोई कम नहीं. मालिक. अमीर आदमी. घमंडी जानवर.

तब उस आदमी ने अपनी आँखें नीचे कर लीं, और डॉक्टर को पता चल गया कि यह सेठ था।
कोई ऐसा व्यक्ति जो अपने और अपनी परिस्थितियों में स्पष्ट परिवर्तन के बावजूद भी अपनी नजरें नहीं हटा पा रहा था।

'मुझे लगता है कि मुझे यह पूछने की कोई ज़रूरत नहीं है कि आप कैसे हैं? मैं देख सकता हूँ कि आपने अपने लिए अच्छा किया है।' डॉक्टर ने कठोर व्यवहार किया। सेठ को यह सोचने देना उचित नहीं था कि वह अपनी स्पष्ट समृद्धि से अभिभूत है।

सेतु मुस्कुराया और बोला, 'तुम बिल्कुल नहीं बदली हो!'
डॉक्टर ने घूरकर देखा। क्या यह अपमान था?

'मैं देख सकता हूँ कि तुमने ऐसा किया है, सेठ,' उसने कहा। और उसका मतलब सबसे अपमानजनक तरीके से था। फिर उसने कहा, 'लेकिन यह सेतु है, है न?' सेतु ने दूसरी ओर देखा।

'ओह, आप यह आसानी से कर सकते हैं। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे, नए नाम और नई ज़िंदगी अपनाएँगे।
लेकिन मैं उसका क्या करूँ? वह तुम्हारी जिम्मेदारी है और उसका तो कोई नाम भी नहीं है जिसे वह अपना कह सके।'

सेतु को अपने माथे पर पसीने की लकीर महसूस हुई। क्या यह वही हो सकता है? उसने लड़के को ध्यान से देखा, उसके चेहरे और अंगों, उसके होठों की वक्रता, नाक की तिरछी बनावट, एक तिल, एक डिंपल, इलाके में कुछ ऐसा ढूँढ़ा जिससे उसे पता चले कि लड़का उसका है।

डॉक्टर ने अपनी झुंझलाहट को जाहिर न करने की कोशिश करते हुए कहा, 'आपको इस बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि मैं किसी और के बच्चे को आपका बच्चा बता दूँगा।' 'मैं नाज़रेथ छोड़ रहा हूँ। हम विदेश जा रहे हैं। इतने सालों तक आपका बेटा मेरा वार्ड था...' 'मैंने उसके रहने-खाने का खर्च उठाया। हर महीने मैं मनीऑर्डर भेजता था,' सेतु ने डॉक्टर को बीच में टोकते हुए कहा।

'मुझे पता है।' डॉक्टर ने ऊपर देखा। 'लेकिन उसे इससे ज़्यादा की ज़रूरत है। उसे ज़रूरत है
परिवार। मैं उसे अपने साथ नहीं ले जा सकता। और एक बार मैं चला गया, तो वहाँ कौन है?' 'विश्वास वहाँ है, है न?

'नहीं, फेथ वहाँ नहीं है। पिछले तीन सालों से उसकी माँ ने उसे पाला है। फेथ ने शादी की और चली गई। यह सिर्फ़ तुम्हारा जीवन नहीं है जिसका जीवन बदलता है, तुम्हें पता है। फेथ की माँ सत्तर साल की है। अगर वह मर जाती है, तो लड़का अकेला रह जाएगा। मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।' 'मुझे नहीं पता था,' सेतु ने कहा।

'मैं जानता हूँ।' डॉक्टर ने विनम्रता से कहा। 'वह आपका बेटा है। आपको उसे अपने पास रखना चाहिए।' 'लेकिन मैं अपनी पत्नी को क्या बताऊँ?'

'सच, या कम से कम सच का आपका संस्करण,'

डॉक्टर ने कहा और जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।
यह तुम्हारे लिए ज्यादा मुश्किल नहीं हो सकता, उसकी आँखों ने कहा।

'उसे देखो,' डॉक्टर ने लड़के की ठोड़ी को झुकाते हुए कहा। 'क्या तुम अपना सिर नहीं देख सकते?

Machine Translated by Google

सादिया उसमें है?' सेतु ने

चुपचाप सिर हिलाया। उसने बच्चे के गले में हाथ डाला। लड़का सख्त हो गया।

'यह तुम्हारा घर है,' सेतु ने अचानक अपने अतीत से भागते-भागते कहा। देवयानी को उसके अतीत और उसके बेटे को स्वीकार करना होगा।

'पराक्रमी पुरुषों के धनुष टूट गए हैं, और जो ठोकर खा गए थे वे कटिबद्ध हैं

डॉक्टर ने कहा, 'शक्ति के साथ।'

सेतु उसे शून्य भाव से देखता रहा।

डॉक्टर ने कहा, 'तुम्हें पता है।' 'इसमें मेरा नाम है।' सेतु ने हाथ हिलाकर कहा, मानो शब्दों को
रोकना चाहता हो।

'रहने दो। मैं अब उन दिनों के बारे में नहीं सोचता। मैं सब कुछ भूल गया हूँ। या शायद ज़्यादातर,' उसने दूसरी तरफ़ देखते हुए कहा।

जब डॉक्टर चले गए, तो सेतु ने लड़के की ओर देखा।

'यह किस लिए है?' उसने लड़के के सिर पर बंधे कपड़े को खींचते हुए पूछा।

कपड़ा उसके हाथ में आ गया और उसने देखा कि लड़के का सिर पूरी तरह से कटा हुआ था, सिवाय बालों के एक बैंड के जो उसके सिर के चारों ओर एक घेरे की तरह घूम रहा था। घुंघराले बालों का एक मुकुट जो उसके सिर पर लिपटा हुआ था। काँटों का एक घेरा जो प्रायश्चित की पेशकश कर रहा था। सेतु को लगा कि एक लोहे की मुट्ठी उसकी छाती को जकड़ रही है।

'उमर मसूद?' सेतु ने उस नाम को अपने मुँह में ऐसे घुमाया जैसे वह इमली का बीज हो। 'उमर मसूद। इसका क्या मतलब है?'

'यह एक नाम है। बहुत प्यारा नाम है। उसका कोई नाम होना चाहिए। चार दिनों से हम उसे बेबी कह रहे हैं। लेकिन वह जीवन भर बेबी नहीं रह सकता,' सादिया ने बच्चे के मुँह में अपना निप्पल फिट करते हुए कहा।

'हाँ, लेकिन उमर मसूद क्यों?' सेतु ने उस परिचित खिंचाव को महसूस करते हुए कहा।
जब उन्होंने सादिया को उनके बेटे को दूध पिलाते देखा तो उन्हें बहुत खुशी हुई।

'उमर अरबी भाषा में प्रथम पुत्र, शिष्य, प्रतिभाशाली वक्ता के लिए होता है। प्रसिद्ध। और मसूद का अर्थ है खुश, भाग्यशाली।' सादिया ने बच्चे की ओर देखा। 'मैं चाहती हूँ कि उसके पास सब कुछ हो। शोहरत। दौलत। खुशी। किस्मत!' सेतु मुस्कुराया और बच्चे के गाल को सहलाने लगा। 'बहुत महत्वाकांक्षी नाम है

इतने छोटे से प्राणी के लिए!'

'अल्लाह के सबसे करीब नाम अब्दुल्ला और अब्दुर रहमान हैं। सबसे सच्चे नाम हारित और हम्मान हैं। क्या आप इनमें से किसी एक को पसंद करते हैं?' सादिया ने एक छोटी सी किताब देखते हुए पूछा।

सेतु का चेहरा लाल हो गया। उसने सादिया को अब तक अपनी मर्जी से चलने दिया था।
उसने अपना वचन निभाया था। सादिया ने अपने बेटे को जीवित रखने के लिए संघर्ष करते हुए अपनी भागती आत्मा को काबू में लाने के लिए एक वादा किया था।

सादिया ने फुसफुसाते हुए कहा था, 'पहली चीख सुनते ही तुम्हें अंदर आ जाना चाहिए।'

Machine Translated by Google

सेतु ने डॉक्टर की तरफ देखा और उसने सिर हिला दिया।

और इसलिए, जब पहली चीख ने उसके विचारों को चीर दिया, भय को चीर दिया और भय को खत्म कर दिया, सेतु अंदर भागा। कमरे में गर्म खून, गीली मिट्टी, अंधेरे रहस्यमय चीजों और जन्म की मिठास की गंध थी। सादिया थकी हुई और पीली पड़ी थी। बच्चा दाई के हाथों में था।

'उसे ले जाओ,' सादिया ने कहा। 'अब उसके बाएं कान में फुसफुसाओ अल्लाहु अकबर। यह अज़ान है।'

सेतु ने बच्चे को उठाया और उसके बाएं कान में फुसफुसाया, 'अल्लाह महान है!' फिर, खुद को रोक पाने में असमर्थ, उसने अपने बचपन की एक प्रार्थना फुसफुसाते हुए, तीसरी आंख और विनाश की शक्ति वाले त्रिदेवों में से सबसे शक्तिशाली का आह्वान किया।

'ओम नमः शिवाय।' वह बच्चे को
नीचे रखने के लिए झुका, लेकिन सादिया ने कहा, 'नहीं, अभी नहीं। अब उसके दाहिने कान में यह प्रार्थना फुसफुसाओ। मेरे बाद दोहराओ।

'अश हदू अन ला लाहा ललल लाह ऐश हदू अन्ना
मुहम्मडन रसूल लाह ऐश हदू अन्ना अलुय्यन वलियाह लाह हय्या अलस सलाह
हय्या अलल फलेह हय्या अला खैरिल अनल अलहु अकबर ला
लल्ला ललल लाह।' सेतु को
अपने अंदर कुछ महसूस हुआ।
लेकिन उन्होंने आज्ञाकारी रूप से दोहराया:
'मैं उचित ठहराता हूं कि
अल्लाह के अलावा कोई
भगवान नहीं है, मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के दूत हैं, मैं गवाही देता हूं कि अली अल्लाह द्वारा संरक्षित
हैं, प्रार्थना करने में जल्दबाजी करें, मुक्ति पाने के लिए जल्दी करें,
सर्वोत्तम कार्य करने में जल्दबाजी करें, अल्लाह महान है, अल्लाह के अलावा कोई
भगवान नहीं है।' फिर पहले की ही तरह वह बुदबुदाया, 'ओम नमः
शिवाय' और हमेशा के लिए

उन्होंने आगे कहा, 'नारायणाय नाम, अच्युताय नाम, गोविंदाय नाम...'

उसे और कुछ याद नहीं आ रहा था, लेकिन उसने सोचा कि यह काफी है। अचानक उसे एक बड़ी उदासी का एहसास हुआ। बच्चा बस कुछ ही मिनट का था, और उसे पहले से ही अपने अंदर बसे दो देवताओं को संतुलित करना था।

दाई ने कहा, 'तुम्हें अब जाना होगा। यहाँ कुछ काम करना है।'

Machine Translated by Google

उसने बच्चे को दाई को सौंप दिया और उसके सिर के ऊपर से उसकी आँखें डॉक्टर की आँखों से मिलीं। उसे लगा कि उसने उनमें वे शब्द देखे हैं जिनसे वह डरता था: मुझे पता था कि ऐसा होगा। यह अंतर!

तीन दिन बाद, अस्पताल से घर लौटते समय सादिया और सेतु ने नाई को बुलाया।

सादिया ने कहा, 'ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि सभी दुर्भाग्य दूर हो जाएं।' सेतु ने ऐसा नहीं किया।
विरोध किया, हालांकि जब उसने नाई की ब्लेड देखी तो वह चौंक गया।

'उसके सिर पर अच्छे बाल होंगे।' वह मुस्कुराया।

'अकीकाह एक मुसलमान के जीवन में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। अब आपको इस बाल का वजन करना चाहिए और उसी राशि का दान देना चाहिए,' उसने कहा, बच्चे को उस महिला से वापस लेते हुए जिसे सेथु ने सादिया को बच्चे के साथ मदद करने के लिए पाया था।

सादिया मुस्कुराई। उसकी आवाज़ मधुर घंटियों की तरह ऊपर-नीचे हो रही थी। उसकी खुशी ने घर को रोशन कर दिया। सेतु को राहत मिली। उसकी सादिया वापस आ गई थी। सब कुछ फिर से ठीक हो जाएगा।

उन्होंने सोचा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके बेटे का नाम क्या था। हरित अच्छा था; यह
हरि की तरह लग रहा था। हालाँकि, वह उमर मसूद पर अड़ी हुई लग रही थी।

सेतु ने कहा, 'मुझे उमर मसूद पसंद है।'

सादिया फिर मुस्कुराई, इस बात से प्रसन्न कि उसके चुने हुए नाम को मंजूरी मिल गई।

सादिया ने बच्चे को अपने कंधे पर रखा और उसे थपथपाया जिससे वह डकार ले। उसकी हथेली
उसकी मुंडी हुई खोपड़ी को गोद में लिये हुए।

'अब बस एक और रस्म बाकी है।' 'वह क्या है?' सेतु ने ध्यान

से पूछा। 'तुम्हें पता है कि मैं दो दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ। मुझे कल सुबह जल्दी निकलना है।' 'तुम्हारे वापस आने तक यह इंतजार कर सकता है। पैगंबर ने सलाह दी है कि इसे सातवें दिन किया जाना चाहिए, लेकिन मुझे बताया गया

है कि हम इसे चालीसवें दिन तक बढ़ा सकते हैं।' सादिया ने बच्चे को अपनी बाहों में लिया और उसे धीरे से हिलाया।

'लो, उसे मुझे दे दो,' सेतु ने कहा। 'उमर मसूद, सादिया और सेतु का बेटा, मुझे उसे फिर से देखने में दो दिन लगेंगे।' सेतु ने अपने बेटे को अपनी बाहों में लिया और संतुष्ट महसूस किया, जो पिछले एक साल से उसे

नहीं मिला था।

'तो इस छोटे शैतान के लिए तुम्हारे पास और क्या है?' 'खितान,' सादिया ने कहा।

'वह क्या है?' सादिया ने

उसकी नज़रों से नज़रें नहीं मिलाईं। उसने दूसरी तरफ़ देखते हुए कहा, 'उसके, तुम जानते हो, उसके अंग के सिरे की त्वचा को हटाना होगा।' सेतु ने उसे देखा, हैरान। अचानक उसे समझ में आ गया कि वह क्या कह रही थी। उसे अपने लिंग में

झुनझुनी महसूस हुई, उसके अंडकोष में ऐंठन। खतना। यही उसका खितान था।

Machine Translated by Google

'मेरी लाश पर,' उसने धीरे से कहा।

सादिया ने भौंहें सिकोड़ीं। 'तुम नहीं समझ रहे हो...' 'नहीं, मैं नहीं

समझता,' सेतु ने बच्चे को कसकर पकड़ते हुए कहा। 'मुझे समझ में नहीं आता कि तुम, उसकी माँ, उसे अपंग करने की बात कैसे कर सकती हो। तुम कैसी माँ हो?' सादिया खड़ी हो गई। उसकी आँखें उसे समझने के लिए कह रही थीं।

'कृपया मेरी बात सुनो। इस्लाम में पाँच तरह के सफ़ाई के काम हैं। जघन के बाल मुंडवाना, बगल के बाल उखाड़ना, मूंछें मुंडवाना, नाखून काटना और खतना। तभी फ़ितरा मिलता है। फ़ितरा सफ़ाई की एक आंतरिक भावना है, जो उसे एक अच्छा मुसलमान बनाती है। ख़ितान के बिना उसका इस्लाम में स्वीकार नहीं होगा। तुमने मुझसे वादा किया था कि मैं उसे एक सच्चे मुसलमान के रूप में पालूँगा। तुमने वादा किया था। इसे मत भूलना!' सेतु वहाँ से चला गया। वह खिड़की के पास गया और वहाँ खड़ा हो गया। ज्वार बढ़ने लगा था।

'क्या मैंने अपना वचन तोड़ा है? मैंने वह सब किया जो तुमने कहा था। मुझे कुछ भी समझ नहीं आया, लेकिन मैंने विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा। और अब भी, सादिया, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उसे अपने सफ़ाई के काम नहीं करने चाहिए। उसका सिर मुंडवाओ, उसके नाखून काटो, वह सब करो जो तुम्हें करना है। लेकिन क्या तुम नहीं देखती, जब तुम मूंछ और जघन बाल और बगलों में बालों की बात करती हो, तो तुम एक आदमी की बात कर रही हो। या एक लड़का जो लगभग एक आदमी है। कोई ऐसा व्यक्ति जो अपने मन की बात जानता हो। लेकिन यह, खतना, मैं इसकी अनुमति नहीं दे सकता।

आपको तब तक इंतजार करना होगा जब तक वह खुद निर्णय लेने लायक बड़ा न हो जाए।'

सेतु ने कुछ देर रुककर कहा, 'जब मैं बड़ा हो रहा था, मैंने सुन्नत के बारे में सुना था, लेकिन यह सच नहीं था।

हमेशा किशोरावस्था से पहले के बच्चों पर प्रदर्शन किया जाता है। आपको कम से कम तब तक इंतजार करना चाहिए।'

सादिया चुप हो गई, फिर बोली, 'मैं मूल काहिरों की वंशज हूं।

मुझमें अरबों का सबसे शुद्ध खून है। इस्लाम, जैसा कि हम इसका पालन करते हैं, एक ऐसा धर्म है जो बलिदान की मांग करता है। आपके गाँव में, मुसलमान धर्मांतरित हैं। चाहे कुछ भी हो, वे कभी नहीं जान पाएंगे कि सच्चा मुसलमान होना क्या होता है। इसे स्वीकार्य बनाने के लिए हर चीज़ से समझौता किया जाता है। मेरा बेटा धर्मांतरित नहीं है। उसमें मेरा खून है।'

'क्या तुम इसे बंद करोगे?' सेतु ने उसकी आवाज ऊंची सुनी, मानो वह किसी और की हो।

'तुम कहते रहते हो, मेरा, मेरा, मेरा...वह भी मेरा बेटा है। उसमें मेरा खून है।

तुम्हें क्या हो गया है, सादिया? तुम एक कट्टरपंथी की तरह लगती हो; तुम अरबपटनम के उन बेवकूफों में से एक लगती हो। तुमने सब कुछ छोड़ देने का फैसला किया, तो तुम यह सब इस छोटे बच्चे पर क्यों थोप रही हो?' 'मैंने गलती की। मैं अपने बेटे को भी ऐसा करने की इजाज़त नहीं दे सकता।'

सेतु को लगा कि उसका गुस्सा गायब हो गया है। उसके चेहरे, उसके दिल, उसके विचारों

पर एक ठंडी परत जम गई। वह ठंडी और अलग-थलग दिख रही थी। जैसे वह लेबर रूम में थी। सिर्फ़

Machine Translated by Google

इस बार भी उसे ऐसा ही महसूस हुआ।

'यदि आपको लगता है कि आपने गलती की है, तो मैं आपसे ऐसा करने पर जोर नहीं दूंगा।
तुम जा सकते हो। तुम अपने परिवार और अपने धर्म में वापस जा सकते हो, लेकिन तुम इस बच्चे को नहीं ले जा सकते। तुम नहीं चाहोगे कि तुम्हें अपनी गलती की याद दिलाई जाए।' सेतु ने धीरे से कहा। उसे लगा कि उसके अंदर ऐसा दर्द हो रहा है जैसे किसी ने उसकी पसलियों पर वार किया हो।

उसने बच्चे को पुरानी साड़ी से बने रंगीन कपड़े के पालने में लिटाया और दूसरे कमरे में चला गया। दरवाज़े पर पहुँचकर उसने मुड़कर कहा, 'भगवान तुम्हारे साथ चले।'
तुम्हारा ईश्वर, मेरा नहीं, क्योंकि तुम्हारे संकीर्ण मन में तुम्हारे अलावा किसी अन्य ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है।'

मैं, सादिया, फर्श पर बैठ जाती हूँ। उसके शब्द मेरे सिर पर टैटू की तरह बन जाते हैं। वह कहता है, जाओ।
लेकिन मैं कहां जाऊं? मेरे पास कोई ठिकाना नहीं है। कोई घर नहीं...कोई नहीं।

मैं बच्चे को पालने से बाहर निकालता हूँ।

'उमर मसूद,' मैंने कहा। 'तुम्हारी उम्मा को जाना ही होगा। तुम्हारी वापा चाहती है कि वह जाए।' अगर वह मुझे अपनी

बाहों में ले ले, तो सब कुछ फिर से ठीक हो जाएगा। काश वह ऐसा कर पाता।
लेकिन यह सच नहीं है। इस तथ्य को कोई नहीं बदल सकता कि मैंने एक काफिर को ज़िंदा किया है।

उमर मसूद कराहने लगता है। मैं उसे अपने कंधे पर लिटाता हूँ। पिछले पाँच दिनों से, जब से मैं अस्पताल से वापस आया हूँ, मैं इस कमरे में हूँ, प्रसव की पीड़ा से आराम कर रहा हूँ। मेरे पैर अस्थिर महसूस होते हैं। मुझे ठंड लगती है।

समुद्र की हवा मेरे बालों को ऊपर उठाती है। मुझे समुद्र के पानी में अपने पैर धोने की बहुत इच्छा होती है। इसके आगोश में लेटना और फिर कभी एक पल की उलझन नहीं महसूस करना। अपने पूर्वजों और अपने जीवन के बीच इतना फटा हुआ महसूस न करना, जैसा कि अब है। बस

आराम।

सेतु को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। सादिया गायब हो गई थी। क्या वह वाकई अरबिपटनम वापस लौट सकती थी? वे उसे अपने साथ नहीं रखेंगे। वह भी यह बात जानता था।
लेकिन वह और कहां जा सकती थी?

तीन दिन बाद शव बरामद हुआ। सादिया का शरीर फूला हुआ था और उसका अंतिम संस्कार किसी भी धार्मिक अनुष्ठान से रहित था। सेतु ने बच्चे को गोद में लिया और चिता को आग लगाई।
'कृपया, भगवान,' उसने प्रार्थना की, अपने सिर में आवाज़ के कंपन को भी रोकने में असमर्थ। 'कृपया, भगवान, उसे स्वर्ग में स्वीकार करें। स्वर्ग का उसका संस्करण, चाहे वह कुछ भी हो। मैं बस यही माँगता हूँ।'

बाद में जब जेम्स राज उनसे मिलने आए तो वे टूट गए और रोने लगे। 'वह ऐसा क्यों करेगी? उस रात, हम झगड़ पड़े। मैंने उनसे कुछ बहुत कठोर बातें कहीं, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह इस हद तक पहुँच जाएगा। अगर मुझे पता होता, तो मैं उनकी हर बात मान लेता। काश मुझे पता होता। काश...'

Machine Translated by Google

जेम्स राज ने उसकी बांह थपथपाई और वही कहा जो वह शोक संतप्त रिश्तेदारों से हमेशा कहता था।
'कौन जाने? भगवान की यही इच्छा है कि वह हमसे दूर चली जाए।'

सेतु ने अपने आँसू पोंछे।

'तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए। कहीं ऐसी जगह जाओ जहाँ तुम्हारा मन भटकता न रहे।
जेम्स राज ने कहा, 'आपकी यादों की अप्रियता।'

'कहां जाएं?' सेतु ने पूछा।

'काम पर वापस आ जाओ,' जेम्स राज ने कहा, जैसे उसने अभी-अभी यह सोचा हो।

'लेकिन बच्चे का क्या?' जेम्स राज ने सोच-

समझकर अपनी ठुड्डी खुजाई। 'क्या तुम्हें फेथ याद है? वह अस्पताल से चली गई है। वह बच्चे को अपनी देखभाल में लेने के लिए तैयार हो सकती है। तुम उसे इसके लिए पैसे दे सकते हो और मैं अपनी पत्नी से उन पर नज़र रखने के लिए कहूँगा। सलाह के लिए मैरी पैटी भी वहाँ है। मैरी पैटी, मुझे नहीं पता कि मैंने तुम्हें यह पहले बताया है या नहीं, वह मेरी शादी की रिश्तेदार है।' सेतु की आँखें चमक उठीं। फेथ। जाडा कोंडई। लटों में लिपटा हुआ बन। तीनों में सबसे शांत। 'प्रभु की स्तुति करो' की चीखें निकालने वाली, चाहे वह मुर्गी के अंडे देने के लिए हो या आंधी के लिए, लेकिन अन्यथा हानिरहित और खुशमिजाज।

वह ऐसा करेगी।

'मैं उसका क्या नाम रखूं?' फेथ ने बच्चे को गोद में लेते हुए पूछा।

'ओम...' सेतु ने शुरू किया। फिर उसने एक निर्णय लिया। सादिया के साथ, उसका वादा भी मर गया था। 'मैंने अभी तक कोई नाम नहीं सोचा है। अभी के लिए, आप उसे कोमन कह सकते हैं।' फेथ ने अपनी नाक सिकोड़ी। 'यह कैसा नाम है?' 'यह मेरे चाचा का नाम था,' सेतु ने बच्चे के सिर पर एक चुंबन

छोड़ते हुए कहा, और फिर वह चला गया।

फेथ ने बच्चे की अच्छी तरह से देखभाल की। सेथु तीन दिन बाद वापस आया, उसे अपने बेटे की चिंता थी। लेकिन बच्चा ठीक लग रहा था। जब वह बच्चे को कंधे पर सुलाकर जाने लगा, तो फेथ ने कहा, 'शायद तुम्हें उसे यहीं छोड़ देना चाहिए। जब वह जागेगा तो वह परेशान हो जाएगा और तुम उसका सामना नहीं कर पाओगे।'

सेतु दरवाजे पर रुक गया। उसने रेत पर बने घर के बारे में सोचा। यह सादिया के सपनों का मकबरा था। उसकी अधूरी इच्छाओं और उनके गुस्से का। यह खाली भी था। वह अकेला होगा और उसकी मदद करने वाला कोई नहीं होगा। और जब तक वह बच्चे को अपने साथ रहने की आदत डालेगा और उसकी दिनचर्या सीखेगा, तब तक उसे फिर से जाने का समय हो जाएगा। फेथ सही था।

उसने उसे बच्चा लौटा दिया और कहा, 'मैं खुद को बहुत कमज़ोर महसूस कर रहा हूँ।' मैरी पैटी मुस्कुराई।

उसने कहा, 'मत करो।' उसने सेतु द्वारा लाई गई लंबाई से तम्बाकू का एक गोला उठाया। 'बच्चों को महिलाओं की ज़रूरत होती है। लड़कों को पुरुषों की ज़रूरत होती है। हम जब तक कर सकते हैं, उसकी देखभाल करेंगे, फिर वह तुम्हारा है। वह हमेशा तुम्हारा है। लेकिन तुम्हें उसकी ज़रूरत है

Machine Translated by Google

अब जीविका चलाओ.'

सेतु ने उन्हें पैसे भेजे। वह जितनी बार संभव हो उनसे मिलने जाता था; फिर धीरे-धीरे, मिलने के बीच का समय बढ़ता गया। और जब भी उसके मन में संदेह या अपराध बोध का कीड़ा पनपता, वह उसे कुचल देता। वे अच्छी महिलाएँ हैं। वे उसकी मुझसे बेहतर देखभाल करती हैं, उसने खुद से कहा।

शिशु को देखने के लिए अपनी अंतिम यात्रा पर, जो उस समय एक वर्ष से भी कम उम्र का था, फेथ ने कहा, 'उसने कहा था कि वह तुम्हें देखना चाहेगा।

'कौन?' सेतु

ने उत्सुकता से पूछा।

'वह। डॉक्टर।' 'क्यों? क्या

उसने कुछ कहा?' फेथ ने अपना सिर हिलाया।

उसकी आँखों ने कहा: मानो डॉक्टर कभी मुझे बताएगा कि क्यों। लंबे समय से, फेथ के मन में उसके लिए एक मोह था। किसी दिन वह पलटकर उसे देखेगा, उसने सोचा था। फिर वह घर पर एक पत्नी लेकर आया और फेथ, जिसका दिल टूट गया था, ने अस्पताल से इस्तीफा दे दिया। वह उस जगह पर रहना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी जहाँ वह था।

सेतु मेज के दूसरी ओर बैठा था। जब उसने दरवाजा खटखटाया तो डॉक्टर ने कहा,
'अंदर आइए।'

जब उसने देखा कि वह सेतु है, तो उसने कुर्सी की ओर इशारा किया और वापस फाइल की ओर देखने लगा। उसने अपने चश्मे के ऊपर से देखा और कहा, 'मुझे बस कुछ मिनट लगेंगे।'

सेतु को लगा कि उसके चेहरे की मुस्कान फीकी पड़ गई है। वह डॉक्टर की उदासीनता के लिए तैयार था, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, उसे लगा कि गुस्से का गुबार धीरे-धीरे कम हो रहा है। उसने उस आदमी के सिर के ऊपर एक बिंदु पर देखा। उसने खुद से कहा, मुझे अपना आपा नहीं खोना चाहिए। मुझे यह नहीं भूलना चाहिए कि एक समय में मैं इस आदमी का बहुत सम्मान करता था। उसने अपनी नज़र डॉक्टर के चेहरे पर डाली और उसकी आँखों से टकराया। यह उसे बेचैन कर रहा था, और वह जानता था कि डॉक्टर को यह पता है।

उन्होंने कहा, 'मुझे आपकी परेशानियों के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ।'

सेतु चुप रहा। फिर अचानक उसके मुंह से निकला, 'तुम सही थे।
तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि तुम्हारी भविष्यवाणी सच हुई। हमारी शादी कुछ नहीं थी। हमारा प्यार कुछ नहीं था। सब कुछ ग़लत था। तुम सही थे!'

डॉक्टर ने अपना चश्मा उतार दिया और अपनी नाक के पुल पर चुटकी ली। 'क्या तुम सोचते हो कि मैंने तुम्हें यहाँ तुम्हारे... पर गर्व करने के लिए बुलाया है?' उसने एक शब्द टटोला और उसे अनकहा ही रहने दिया।

'मुझे खेद है कि यह सब इस तरह से खत्म हुआ और यकीन मानिए, मैं चाहता तो यह कुछ और ही होता। लेकिन अब मेरी चिंता फेथ और उसके परिवार के लिए है। और आपके बेटे के लिए भी।'

Machine Translated by Google

'उनका क्या?' सेतु ने पूछा। औरतों ने बच्चे की अच्छी तरह से देखभाल की। डॉक्टर ने चाहे जो भी कहा हो, उसे यह बात पक्के तौर पर पता थी।

डॉक्टर अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया। उसने अपने चश्मे के लेंस को सफ़ेद रूमाल से पोंछा, शीशे का निरीक्षण किया और कहा, 'मेरे लिए सभी चीज़ें वैध हैं, लेकिन सभी चीज़ें लाभप्रद नहीं हैं; मेरे लिए सभी चीज़ें वैध हैं, लेकिन सभी चीज़ें शिक्षाप्रद नहीं हैं...' सेतु ने डॉक्टर को घूरते हुए पूछा, 'कोरिंथियन I?' डॉक्टर मुस्कुराया। 'आपकी याददाश्त हमेशा की तरह शानदार है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप

शब्दों की बुद्धिमत्ता को समझें। मैं आपकी स्थिति से सहानुभूति रखता हूँ, लेकिन दुनिया

नहीं रखेगी।'

'तुम्हारा क्या मतलब है?' सेतु ने छिपे हुए संदर्भों से हैरान होकर पूछा।

'क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे बेटे को ईसाई के तौर पर पाला जा रहा है?' सेतु आगे झुका। 'जब वह पैदा

हुआ था, तो तुमने मुझे उसके कान में मुस्लिम प्रार्थना की आवाज़ फुसफुसाते हुए देखा था। तुम और सादिया को यह एहसास नहीं हुआ कि मैंने एक हिंदू प्रार्थना भी फुसफुसा कर कही थी। इसलिए अगर फेथ या मैरी पैटी उसे कोई दूसरा धर्म सिखाना चाहती हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। एक और धर्म से कोई नुकसान नहीं होगा।'

'तुम्हें लगता है कि यह एक मज़ाक है, है न? अपने बेटे की परवाह मत करो; मुझे आशा नहीं मिल सकती
और चैरिटी का नाम बदनाम हो रहा है। इससे मेरे अस्पताल की प्रतिष्ठा पर असर पड़ रहा है।' 'क्या मतलब

है तुम्हारा?' सेतु और भी हैरान हो गया।

'यह स्वाभाविक है कि आप अपनी बच्ची से मिलना चाहेंगे, लेकिन फेथ के घर आपके आने-जाने के बारे में बहुत अटकलें लगाई जाती हैं। यहाँ तक कि उसकी बहनों को भी नहीं बख्शा जाता। यह सब आना-जाना दुनिया भर में चर्चा का विषय बना हुआ है।'

सेथु ने बचाव में कहा, 'लेकिन मैरी पैटी तो वहां है।'

'मेरी पैटी एक मूर्ख बूढ़ी औरत है। वे कहते हैं कि आपने चबाने वाले तंबाकू और कभी-कभार शराब की बोतल देकर उसकी सहमति खरीदी है।' सेतु ने अपना सिर अपने हाथों में दबा लिया। फिर वह अचानक

कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। 'मैं समझता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं समझता कि आप इस घिनौनी गपशप को रोकने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। अगर आप कहें कि आप उन पर भरोसा करते हैं, तो शहर आपकी बात पर यकीन कर लेगा!'

डॉक्टर का चेहरा सख्त था जब उसने कहा, 'मैं उन पर भरोसा करता हूँ। लेकिन मैं तुम पर कैसे भरोसा कर सकता हूँ? तुमने मेरा भरोसा तोड़ दिया।' उसकी आँखें गंभीर और तिरस्कार से भरी थीं।

सेतु कमरे से बाहर चला गया। कोई विदाई नहीं होगी, क्योंकि कोई नहीं था
अभिवादन के शब्द.

उसने फेथ को समझाने की कोशिश की कि वह कुछ समय के लिए फिर से क्यों नहीं आएगा। फेथ रो पड़ी। 'मुझे परवाह नहीं है कि कोई क्या कहता है। तुम जब चाहो यहाँ आ सकती हो।' 'धन्यवाद, फेथ।' सेतु मुस्कुराया। 'लेकिन मैं तुम्हारी शादी की संभावनाओं को

बर्बाद नहीं कर सकता।'

Machine Translated by Google

'यह सब होप की करतूत है। उसने अभी तक तुम्हें माफ नहीं किया है कि तुमने हमें यह नहीं बताया कि तुम ईसाई नहीं हो।' फेथ ने अपने हाथ मरोड़े।

'मुझे खेद है कि मैंने झूठ बोला। मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था। लेकिन उस समय, मैं बस यही सोच पा रहा था,' सेतु ने धीरे से कहा।

'तुमने झूठ नहीं बोला, है न? तुमने कहा था कि तुम्हारा नाम सेठ है। यह होप था और
चैरिटी और डॉक्टर जिसने तय किया कि तुम ईसाई हो।' 'इसे झूठ बोलना कहते हैं। लेकिन अब यह सब अतीत
की बात हो गई है। लगता है कि बहुत समय पहले की बात है, मेरा यहाँ आना, सादिया से मिलना, और अब मुझे यहाँ से जाना है... मैरी पैटी,' उसने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा। 'मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी बेटियों की प्रतिष्ठा धूमिल हो। जब मेरा बच्चा लड़का होगा, तो मैं उसके लिए वापस आऊँगा। तब तक तुम्हें उसे वह सब देना होगा जो मैं दे सकता हूँ। तीन साल, एक दिन भी नहीं, और तुम निश्चिंत हो सकती हो कि मैं वापस आऊँगा।'

सेतु ने यात्रा करना शुरू कर दिया। वह हर जगह गया जहाँ जेम्स राज के व्यापारिक हित थे। एक दिन, वह एक ट्रेन में था जो उसे उसके पुराने घर के पास ले जाती थी। अचानक, वह शोरनुर में ट्रेन से उतर गया। शहर उसके घर से कुछ दूरी पर था, लेकिन यह सबसे नज़दीकी रेलवे स्टेशन था।

वही जगह जहाँ से वह कई साल पहले ट्रेन में चढ़ा था। तब उसने अपने आस-पास मुश्किल से देखा था। अब, उसने हर छोटी-बड़ी चीज़ को ध्यान से देखा। बहती नदी। दूर-दूर तक फैली पहाड़ियाँ। हरे-भरे धान के खेत। नारियल के पेड़। नीला आसमान। इन सबकी खूबसूरती ने उसकी आँखों को चमका दिया।

सेतु को यह समझने में कुछ ही क्षण लगे कि वह अब कभी नहीं जायेगा।
यह घर था। जहाँ से वह भागा था, वहीं वापस आ गया था। उसे जेम्स राज से नाता तोड़ना होगा, जिसे यह स्वीकार करना होगा कि सेतु को अब उसके घर से अलग नहीं किया जा सकता। सेतु ने मन ही मन एक पत्र लिखना शुरू किया: नाज़रेथ से दूर गए मुझे दो साल हो गए हैं। 1940 से 1942। लेकिन इन सभी सालों में मैं कभी भी कहीं ज़्यादा समय तक नहीं रहना चाहता था। अब मैं ऐसी ही एक जगह पर पहुँच गया हूँ।

तब सेतु ने अपने जीवन में पहली बार भजन संहिता से बाइबिल का एक उद्धरण याद किया, जो उसके घर, उसके जीवन, उसके भविष्य के लिए एक प्रार्थना थी: तू जिसने मुझे बड़ी और भयंकर परेशानियाँ दिखाई हैं, मुझे फिर से जीवित कर देगा, और मुझे धरती की गहराइयों से फिर से ऊपर ले आएगा। तू मेरी महानता को बढ़ाएगा और हर तरफ से मुझे सांत्वना देगा।

सेतु ने वही किया जो वह हमेशा करता था, नए इलाके को जानने के लिए। वह टहलने निकला। स्टेशन पर काफी चहल-पहल थी। यह मालाबार, कोचीन और त्रावणकोर को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाला सबसे महत्वपूर्ण जंक्शन था। शोरनुर स्टेशन पर चहल-पहल थी। इंजन और यात्री, कुली और विक्रेता... ट्रेनें और जंक्शन शहर और उसके जीवन को निर्धारित करते थे।

Machine Translated by Google

लोग।

बाहर कुछ भी नहीं था। स्टेशन के उस पार बंजर ज़मीन के सिरे पर कुछ दुकानें थीं। सेतु ने रुककर गहरी साँस ली। उसके पास सिर्फ़ एक छोटा सा थैला था। वह उसे अपने साथ ले जा सकता था, लेकिन पहले, उसे किस तरफ़ जाना चाहिए? बाईं ओर की सड़क ज़्यादा जीवंत लग रही थी। इसलिए उसने बाईं ओर ही अपना रास्ता तय किया।

अवधि।

वह धीरे-धीरे चल रहा था और अपने रास्ते में आने वाली हर चीज के नाम और आकृतियाँ इकट्ठा कर रहा था।
इस आकार के कस्बे की जरूरत की लगभग हर चीज यहां मौजूद थी। अबू बकर बेकरी। चेरू की किराना दुकान। पप्पाचन टेक्सटाइल्स। पद्मनाभन नायर की स्वदेशी हैंडलूम। और कुंजू मोहम्मद का वैरायटी स्टोर जिसमें स्टेशनरी, जूते और टॉयलेटरीज़ उपलब्ध थे।

वहाँ स्कूल थे। एझुथाचन स्कूल और बेसल मिशन लोअर प्राइमरी स्कूल। सेंट थेरेसा कॉन्वेंट और शोरानूर हाई स्कूल फॉर बॉयज़।

चलते-चलते सेतु को पता चला कि सड़क नदी के चारों ओर एक वलय की तरह बनी हुई है।
जब तक वह रिंग में पहुंचा, उसका मन बन चुका था।

उसे खुद को फिर से नया रूप देना होगा। इसके लिए उसे बस एक ही काम करना था और वह था जनमी बनना। एक ज़मींदार, जो निरंतरता और पुरानी संपत्ति का प्रतिनिधित्व करता है। ज़मीन के साथ, वह एक ऐसा वंश प्राप्त करेगा जो उसके पास नहीं था, और सम्मान। वह खेत खरीदेगा जहाँ वह अपना चावल उगाएगा और ज़मीन के टुकड़े खरीदेगा जहाँ वह सागौन, रबर और नारियल उगाएगा। उसके पास इतना पैसा था कि वह अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकता था।

अपनी उपस्थिति की घोषणा करने के लिए, उन्होंने एक टॉकीज़ भी स्थापित की। शहर में केवल चलती-फिरती टॉकीज़ थीं। उन्होंने इसे बोलने वाली तस्वीरों के लिए पहला स्थायी घर दिया।

सेतु शहर में एक छोटे से बैंक चलाने वाले व्यक्ति के पास गया। उसने मालिक से मिलने के लिए कहा और एक हजार रुपए जमा करके अपनी मंशा बताई। बैंक के मालिक ने आश्चर्य से अपनी आँखें चौड़ी कर लीं। सेतु ने उसकी नज़र को पहचान लिया: यह आदमी कौन है जो इतना अधिकार और दुनियादारी दिखाता है?

सेतु मुस्कुराया। उसने तुरन्त ही उन्हें पहचान लिया। वे अपने से कमतरों को धमकाते थे।
और अपने वरिष्ठ अधिकारियों की चाटुकारिता करते हैं।

उन्होंने कहा, 'मैं सेतुमाधवन हूं। मैं कोलंबो से हूं। मैं एक व्यापारी हूं।
मैं एक ट्रेडिंग कंपनी चलाता हूं, लेकिन मैं हमेशा से अपने पैतृक स्थान पर वापस आना चाहता था। और इस बार मैंने फैसला किया कि मैं ऐसा करूंगा।'

'तुम्हारा थारवाड़ कहाँ है? तुम्हारा परिवार अभी भी वहाँ होगा?' उस आदमी ने विनम्रता और जिज्ञासा से भरी आवाज़ में पूछा।

सेतु ने बीच की दूरी पर देखा। यह एक ऐसी नज़र थी जो इन दिनों उसके मन में थी

Machine Translated by Google

जब वह अतीत के बारे में बात करता था। इसमें कुछ अवर्णनीय दुख के साथ पुरानी यादें भी शामिल होती थीं। आमतौर पर प्रश्नकर्ता उसके उत्तर से संतुष्ट हो जाता था। लेकिन यह चालाक है, यह मोटी आंखों वाला धूर्त, सेतु ने सोचा, और समय के साथ मेरा उद्देश्य पूरा करेगा। इसलिए उसने अपना हाथ हिलाया और कहा, 'मेरा परिवार यहीं से था, लेकिन यहां कुछ भी नहीं बचा है। मेरे माता-पिता कभी वापस नहीं आना चाहते थे। यह केवल मैं ही हूं जिसने अपनी भूमि पर लौटने की इच्छा को पोषित किया है ...'

बैंक के मालिक ने सहमति जताते हुए सिर हिलाया। 'मुझे खुशी है। इस शहर को आप जैसे लोगों की जरूरत है।' इसलिए सेतु ने खेतों और बागानों के लिए

जमीन खरीदी और शहर के भीतर उसने अपनी टॉकीज बनाने के लिए जमीन खरीदी। जब यह बन गई, तो उसने इसका नाम मुरुगन टॉकीज रखा। शहर में दूसरा बड़ा व्यवसाय मायिलवाहनम नामक एक बस सेवा थी। सेतु ने अपने नाम के चयन पर केवल कुछ सेकंड के लिए विचार किया।

मायिलवाहनम का मतलब था मोर का परिवहन और मोर पर सवार व्यक्ति योद्धा देवता मुरुगन था। अपनी टॉकीज़ को मुरुगन कहकर सेतु ने सोचा कि शहर को पता चल जाएगा कि यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसका व्यवसाय मायिलवाहनम के लोगों के बराबर है। या शायद उससे बड़ा और बेहतर।

इसके बाद सेतु ने सम्मान के अन्य साधन प्राप्त करने शुरू कर दिए।

बैंक के मालिक को एक ऐसे परिवार के बारे में पता था, जिसकी बेटी विवाह योग्य उम्र की थी। 'वे कैकुरुस्सी नामक एक छोटे से गांव में रहते हैं। लड़की सामान्य रूप से चुने जाने वाले व्यक्ति से बड़ी है; वह अठारह साल की है, लेकिन बहुत सुंदर है।'

सेतु ने अपनी राहत को जाहिर नहीं होने दिया। सादिया बहुत छोटी थी। यहीं से उनकी परेशानियों की शुरुआत हुई थी। इस बार उसे एक महिला चाहिए थी, न कि एक बच्ची। उसने उस आदमी की बातों पर कान लगाए। 'उसके चाचा ने तय कर लिया है कि वह किसी अमीर आदमी से शादी करे। अफवाह है कि उसने कहा कि ये सब संबंध कुछ नहीं हैं, जिससे कुछ मुट्ठी भर बच्चे ही पैदा होते हैं।' सेतु ने सिर हिलाया। वह लड़की के चाचा से सहमत था।

सेतु एक संबंधम का परिणाम था। उसके पिता उत्तरी मालाबार से थे। वह सेतु की माँ से मिलने आया था और उसे उससे प्यार हो गया था, जिसे उसने एक मंदिर उत्सव में देखा था। उसने उसका हाथ माँगा था और वह उसकी पत्नी बन गई।

उसकी माँ कभी पत्नी नहीं रही थी। उसने अपने पति के जीवन में कुछ भी साझा नहीं किया, सिवाय उसके बिस्तर के। सेतु ने सोचा कि इस तरह के विवाहों का वर्णन करने के लिए संबंधम शब्द एकदम सही है। एक बंधन, एक यौन बंधन, और इससे ज़्यादा कुछ नहीं। सेतु को यह नहीं पता था कि उसके पिता कौन थे। वह आगे बढ़ गया था, और उसकी जगह किसी दूसरे आदमी ने ले ली थी। एक महिला के लिए अपने पति को बदलना पूरी तरह से सामान्य माना जाता था, अगर यह उन दोनों में से किसी को भी रिश्ते को जारी रखने के लिए अनुकूल नहीं था। एक लड़का अपने पिता के बजाय अपने मामा को देखकर बड़ा हुआ, जो कि

Machine Translated by Google

वह एक आकस्मिक आगंतुक से अधिक कुछ नहीं था, और स्नान तालाब की सीढ़ियों पर बैठी महिलाएं अपने संबंधों के बारे में इस तरह बात कर रही थीं जैसे वे कांच की चूड़ियों पर चर्चा कर रही हों...उसने तब भी उसके दांत किटकिटाए थे और अब भी कर रहा हूं।

'मुझे नहीं लगता कि यह कोई समस्या होगी। मुझे उम्मीद है कि आपने उन्हें मेरे बारे में बता दिया होगा।
लड़की के चाचा की तरह, मेरे मन में भी इन संबंधों के लिए कोई सम्मान नहीं है। मुझे इस संबंध को आगे बढ़ाने में बहुत खुशी होगी।'

बैंक के मालिक ने कहा, 'इतनी जल्दी मत करो। क्या तुम्हें पहले लड़की को नहीं देखना चाहिए?' सेतु को शायद जल्दी निर्णय लेने की आदत है, लेकिन उसने सोचा कि यह थोड़ा जल्दबाजी थी।

'क्या मुझे ऐसा करना चाहिए?' सेतु ने पूछा।

'हाँ, तुम्हें ज़रूर जाना चाहिए। वे भी तुम्हें देखना चाहेंगे।' सेतु, तीन अन्य लोगों के साथ
शोरनुर से वल्लपुझा के लिए ट्रेन में सवार हुआ। धान के खेतों से होते हुए, एक नहर के पास से होते हुए, वे आखिरकार कैकुरुस्सी पहुँच गए।

सेतु ने अपना माथा पोंछा और सोचा, अगली बार जब मैं यहां आऊंगा तो यह
एक कार।

अतः मुरुगन टॉकीज के मालिक, धनी सेतु ने देवयानी से विवाह कर लिया।

वह शादी में क्रीम रंग का रेशमी जुब्बा और ज़री बॉर्डर वाला डबल मुंडू पहनकर आया था। उसने गले में सोने की चेन और दो सोने की अंगूठियाँ पहनी थीं। जिस मोटरकार में वह बैठा था, वह आगे चल रही थी और पीछे पेट्रोमैक्स लालटेन लिए लोग चल रहे थे। जब वे गाँव की सीमा पर पहुँचे तो अंधेरा हो चुका था।

गाड़ी रुकी और लालटेन लेकर आगे बढ़े। पूरा गांव दूल्हे को गाड़ी में सवार और लालटेन लेकर आगे बढ़ते हुए देखने के लिए उमड़ पड़ा। गांव के लोगों ने, जिन्होंने अपने जीवन में कभी ऐसा परिष्कार नहीं देखा था, फुसफुसाते हुए कहा, 'क्या तुमने देखा? किसने सोचा था कि कैकुरुस्सी कभी ऐसा कुछ देखेगा?'

शादी में उसने देखा कि एक लड़का और लड़की उसके बगल में बैठने की होड़ में लगे हुए हैं। वह मुस्कुराया। उसने लड़के से पूछा, 'तुम कितने साल के हो?'

'आठ,' उसने कहा। 'वह भी आठ साल की है।' उसने लड़की की ओर इशारा किया।

'हमने सुना है कि आप बहुत दूर स्थानों पर गए हैं। कोलंबिया के पार
लड़की ने कहा, 'समुद्र।'

'उसके पिता बर्मा में हैं। मुकुंदन, उन्हें बता दो,' उसने कहा।

लेकिन मुकुंदन केवल मुस्कुराया।

'तुम्हारा नाम क्या है?' सेतु ने उस बेपरवाह लड़की से पूछा।
'मीनाक्षी। क्या कोलम्ब बर्मा से बेहतर है?' सेतु मुस्कुराया। 'मुझे नहीं पता। मैं
कभी बर्मा नहीं गया।' 'ओह।' लड़की निराश दिखी।

Machine Translated by Google

लड़के ने आँखें उठाकर पूछा, 'इस गाँव के बाहर कैसा है?
सब कुछ बहुत अलग होगा।' उसकी आँखों ने सेतु को हाँ कहने के लिए प्रेरित किया।

सेतु को अजीब सी बेचैनी महसूस हुई। 'यह कहना बहुत मुश्किल है।' उसने सावधान रहने की कोशिश की। क्या होगा अगर लड़का उसकी बनाई तस्वीर के जादू से बहककर घर से भाग जाए? 'कभी-कभी मुझे लगता है कि हर जगह यही होता है।

कभी-कभी मुझे लगता है कि घर के दूसरे कमरे में प्रवेश करना ही एक अलग अनुभव है।' लड़के की आँखें और भी कुछ माँग रही थीं। सेतु ने अपने माथे से पसीना

पोंछा।
रात गर्म और चिपचिपी थी। 'तुम्हें अपने पिता से पूछना चाहिए। उनका नाम क्या है?' लड़के ने बुदबुदाते हुए कहा, 'अच्युतन नायर।' 'जब वे

अगली बार यहाँ आएँगे तो हमारे लिए उनसे मिलना अच्छा रहेगा,'

सेतु ने देवयानी की चचेरी बहन और लड़के की माँ पारू कुट्टी से कहा।

वह मुस्कुराई। छह महीने बाद, सेतु को उस अनिश्चित मुस्कान का मतलब समझ में आया।

सेतु और देवयानी बर्मा से लौटने पर अच्युतन नायर से मिलने गए। देवयानी ने उत्साह से कहा, 'वह बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हैं।' सेतु को आश्चर्य हुआ कि अच्युतन नायर कैसे होंगे। क्या वह उनके साथ व्यापारिक सहयोगी बनने पर विचार करेंगे, उन्होंने सोचा।

मुरुगन टॉकीज में दर्शकों की भीड़ उमड़ी, लेकिन असली पैसा काले बाजार में था।
चावल और चीनी की कमी थी। साहसी और कम-से-कम नखरे वाले लोग दुकानों में बिकने वाले कीड़ों से भरे चावल के बजाय विदेशी भूमि से आने वाली और आसानी से उपलब्ध मैकरोनी खाते थे। गरीब लोग उबले हुए टैपिओका खाते थे। अच्छा चावल केवल ब्लैक मार्केट में ही खरीदा जा सकता था। ज़्यादातर लोग अतिरिक्त पैसे देने को तैयार थे, क्योंकि चावल के बिना भोजन की कल्पना करना लगभग असंभव था। सेतु का मुनाफ़ा जल्दी और बड़ा था।

'युद्ध समाप्त होने पर यह सब समाप्त हो जाएगा। अभी लाभ कमाने का समय है,' सेतु ने देवयानी से कहा।

सेतु को आश्चर्य हुआ कि वह अच्युतन नायर के साथ इस विषय पर कैसे बात करेगा।
उन्होंने कहना शुरू किया, 'यार, गांधी।'

अच्युतन नायर ने उसे घूरकर देखा। फिर उसने आगे बढ़कर सेतु की कमीज़ के कपड़े को उँगलियों से छुआ। 'गाँधी या राष्ट्रवाद के बारे में तुम्हें क्या पता, जबकि तुम अभी भी विदेशी कपड़े पहने हुए हो? तुम्हारी कमीज़, तुम्हारी कार... हर चीज़ आज़ादी की लड़ाई के प्रति तुम्हारी उदासीनता को दर्शाती है। वरना तुम ऐसे समय में अपनी देशभक्ति की कमी क्यों दिखाओगे जब हमारे देश में लोग, यहाँ तक कि गरीब लोग भी, अपने विदेशी सामान की होली जला रहे हैं? और तुम विदेशी, मिल-बुनी हुई कमीज़ पहनते हो!'

सेतु का चेहरा लाल हो गया। उसने हाथ से बुने मुंडू में अच्युतन नायर को देखा और

Machine Translated by Google

लकड़ी के मोज़े। वह उठ खड़ा हुआ। 'देवयानी, अब समय आ गया है कि हम चले जाएँ,' उसने अचानक कहा।

वह ऐसे घमंडी प्राणियों के बिना भी काम चला सकता था। सेतु को एक परिचित क्रोध की लहर का एहसास हुआ।
उसने निश्चय किया कि वह डॉक्टर से भी बदतर है, और उसके बाद उसने परिचय बढ़ाने के लिए कुछ नहीं किया।

सेतु को फिर से संतुष्टि का एहसास हुआ। जीवन एक पठार था जिसमें कोई असमान ढलान या गड्ढे नहीं थे। देवयानी एक अच्छी पत्नी थी, प्यार करने वाली और विचारशील, और भावनात्मक अतिरेक में नहीं पड़ती थी। वह आसानी से मुस्कुराती थी और शायद ही कभी अपना आपा खोती थी।
वह अच्छा खाती थी, अच्छा सोती थी और अच्छा प्यार करती थी। सेतु अक्सर उसे देखता और सोचता: वह सादिया नहीं है। और कभी-कभी ही वह यह तय नहीं कर पाता था कि यह अच्छा है या बुरा। वह नाज़रेथ में बड़े हो रहे अपने बेटे के बारे में सोचता। वह सोचता कि मुझे उसे यहाँ लाना ही होगा। फिर वह निर्णय को स्थगित कर देता, खुद से कहता कि इस समय ऐसा करने से उसकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी। इसके अलावा, उसे पहले देवयानी को यह विचार बताना होगा। इस तरह समय बीतता गया और देवयानी ने दो लड़कों को जन्म दिया और नाज़रेथ में बच्चे को घर लाने का क्षण कभी नहीं आया।

तभी कैकुरुस्सी से एक घोटाले की खबर आई। लड़का मुकुंदन चला गया था
वह त्रिचनोपोलि में काम करने के लिए गई थी और उसके पिता ने एक रखैल रख ली थी।

पारू कुट्टी से मिलने का निमंत्रण आया।

'क्या मैं जा सकती हूँ?' देवयानी ने पूछा।

'क्या तुम चाहते हो?' सेतु ने पूछा।

'वह बहुत अकेली और दुखी है। यह मालकिन का धंधा बहुत अपमानजनक है।' 'अगर मैं मालकिन रख लूं तो तुम क्या करोगे?' सेतु ने पूछा।

देवयानी ने उसके चेहरे को देखा। 'मुझे नहीं पता...' 'जाओ और तैयार हो जाओ। मैं
तुम्हें कैकुरुस्सी ले जाऊँगी।' सेतु मुस्कुराया।

लड़के का सिर उसकी छाती पर आ गया। सेतु ने उसे अपनी छाती से लगा लिया और इस भाव से उपेक्षा के पाप को मिटाने की कोशिश की।
'तुम्हारे साथ यह किसने किया?' उसने लड़के के बालों को छूते हुए पूछा।

'मैरी पैटी,' लड़के ने कहा। 'फेथ अक्का की माँ। कुछ महीने पहले मैं बहुत बीमार था। तब मैरी पैटी ने चट्टान पर स्थित सेंट फ्रांसिस चर्च में एक भेंट चढ़ाई कि वह मेरे बाल कटवा देगी। चर्च के पास के गाँव में कुछ और लड़के हैं जिनके बाल भी इसी तरह के हैं। मैरी पैटी ने यही कहा। लेकिन मैंने मैरी पैटी को एक पड़ोसी से यह कहते हुए सुना कि उसने प्रार्थना की थी कि अगर मुझे वापस तुम्हारी देखभाल में ले जाया जाए, तो वह मेरे बाल कटवा देगी।' सेतु ने बालों की अंगूठी पर अपनी उंगलियाँ फिराईं। क्या तुम इसके लिए मुझे दोषी ठहराते हो, उसने कहा

Machine Translated by Google

लड़के से पूछना चाहता था। बारह साल की ज़िंदगी में तुम्हें इतना कुछ सहना पड़ा, इसकी वजह मैं ही हूँ। बालों की यह अंगूठी भी काफी तकलीफ़ और अपमान लेकर आई होगी। मैं इतना गैर-ज़िम्मेदार कैसे हो सकता हूँ?

सेतु ने अब वह किया जो उसने पहले कभी नहीं किया था, जब भी उसे कोई परेशानी हुई। उसने उसका सामना करने का फैसला किया।

उन्होंने लड़के की ठोड़ी ऊपर उठाते हुए कहा, 'पहले मैं नाई को बुलाता हूं।
वह तुम्हारा सिर मुंडवा देगा ताकि तुम्हें बाल कटाने की इस शर्मनाक स्थिति के साथ घूमना न पड़े। फिर हम कैकुरुस्सी जाएंगे और तुम्हारा...' सेतु सोच में पड़ गया कि उसे क्या कहना चाहिए और फिर उसने तय किया, 'तुम्हारी मां और भाइयों से।' अचानक उसने पूछा, 'क्या तुम कुछ जानना चाहते हो? तुम मुझसे जो चाहो पूछ सकते हो।' लड़के ने पहली बार उसकी नजरों से नजरें मिलाई और कहा, 'कोमन नदी का नाम जानना चाहता है।' सेतु ने अपने बेटे को

घूर कर देखा। फिर उसने धीरे से कहा, 'तुम्हें तीसरे व्यक्ति में खुद को संबोधित करना बंद करना चाहिए। यह अजीब लगता है। मैं कहो। मैं नदी का नाम जानना चाहता हूं। तुम्हें इसे इसी

तरह कहना चाहिए।' लड़के की आंखें झुक गईं। फिर उसने उन्हें उठाया और फिर से अपने पिता के चेहरे की ओर देखा, जैसे उन्हें पहली बार देख रहा हो। उन्होंने कहा, 'मैं नदी का नाम

जानना चाहता हूं।'

Machine Translated by Google

भयानकम

अब हम छठे भाव पर पहुँचते हैं जिससे हम अपने चेहरे को सजाते हैं।

भयानाकम। भय। क्या हम सभी भय को नहीं जानते?

भयानाकम के चेहरे पर यह याद रखना ज़रूरी है कि डर को दिखाना है। आपकी आँखें चौड़ी हो जाती हैं, आपका माथा सिकुड़ जाता है, आपकी नाक फैल जाती है, आपका मुँह लटक जाता है और आपकी गर्दन आपकी छाती में सिमट जाती है, लेकिन आपको साँस पर ही ध्यान केंद्रित करना है। इसे अपनी आँखों के दोनों ओर से निकलने दें और आप देखेंगे कि आँखें अपने आप ही घूम जाती हैं, स्वाभाविक रूप से डर पैदा करने वाली वस्तु की ओर जाती हैं।

डर की स्थिति कई चीज़ों से पैदा हो सकती है। कोई जंगली जानवर, कोई दुष्ट व्यक्ति, कोई प्राकृतिक आपदा, कोई अँधेरी रात। ये सभी चीज़ें हमें डर से भर सकती हैं। लेकिन एक और डर है, जिसके बारे में मैं यहाँ आपको बताना चाहूँगा।

आइए जंगली अनानास से शुरू करें। सबसे पहले, आपको इसे तलवार जैसी हरी पत्तियों के घोंसले से काटना होगा। आप एक डर जानते हैं; आपके टखनों के चारों ओर भय जैसा कुछ कुंडल बना हुआ है। आप नहीं जानते कि आपका क्या इंतजार कर रहा है। घाव और चोटें, झाड़ियों में छिपे हुए सांप, अनानास की ओर आपकी बाहें बढ़ने के बावजूद कई परीक्षण प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब आप अनानास को अपने हाथों में लेते हैं, तो एक और तरह का डर आप पर हमला करता है जब आप इसके कांटेदार किनारों को काटकर इसका गूदा बाहर निकालते हैं। मिठास आपके मुंह में भर जाती है, लेकिन आपके दिमाग के पीछे, आप चिंता करते हैं: क्या यह वही होगा जो आपके शरीर को सूजने का कारण बनेगा, जिससे आपकी आंखें सूजने लगेंगी? क्या यह वही होगा जो आपको खुजली के उन्माद में डाल देगा, जिससे आप अपने कपड़े फाड़ देंगे और अपने नाखूनों से अपनी त्वचा को खरोंच लेंगे और धूल में लोटेंगे? आप नहीं जानते, आप नहीं जानते ...

जैसे कि आपको नहीं पता कि गोधूलि के समय रोने का क्या मतलब है। उस समय जब प्रकाश छाया में बदल जाता है और हर कोने में एक काल्पनिक भूत छिपा होता है, छायादार आसमान में एक पतली सी कांपती हुई आवाज़ गूंजती है। पू-आह, पू-आह...कालान कोझी। हम इसे शैतान का पक्षी कहते हैं, हालाँकि यह सिर्फ़ एक धब्बेदार लकड़ी का उल्लू है। जब कालान कोझी रोता है, तो मौत भटकती है, दूसरे शिकार की तलाश में, हमारी दादी हमें सिखाती हैं। वे अपने मुंडू के अंत में गांठ बांधती हैं और लकड़ी के चूल्हे की राख में एक करछुल डालती हैं, यह सब कालान कोझी को भगाने के लिए। फिर भी, चीखें गोधूलि के दौरान गूंजती हैं और दिल तेज़ी से धड़कता है: अगला कौन होगा?

ऐसा ही कुछ मीनम यानी अप्रैल महीने की शांति के साथ भी है। जैसे ही सुबह होती है,

Machine Translated by Google

गर्मी पूरे दिन को ढक लेती है, हर पल को स्थिर कर देती है, हर विचार और सांस को बाधित करती है।
खेत भूरे और पके हुए पड़े हैं। धान के गुच्छे भूरे फूलों की तरह फैले हुए हैं जो देखने पर चटकते हैं। कुएं सूख गए हैं। हर माथे पर पसीना चुभ रहा है और कनपटी से बह रहा है। हर चेहरे पर थकान की लकीरें और हर कदम पर थकावट।

रातें शांत हैं। जुगनू छिप गए हैं। सुबह में, गर्मी फिर से प्रकट होती है, एक भूत घंटे की सांसों का गला घोंट रहा है, और भी अधिक कठोर। आपके दिल में एक डर है। सबसे भयानक डर: क्या यह कभी खत्म होगा? जब यह खत्म होगा, तो आगे क्या होगा?

याद रखें, आप अन्य सभी भावनाओं का दिखावा कर सकते हैं: साहस या प्यार, हँसी या दुख, घृणा या आश्चर्य, अवमानना या शांति, लेकिन आप डर का दिखावा नहीं कर सकते ... आप खुद को उजागर कर देंगे। डर खुद को छिपा नहीं सकता। यह आपसे निकलता है, भले ही आप इसे छिपाने की कोशिश करें।

डर का एक और पहलू है। जब आप डरते हैं, तो आप दो तरह से प्रतिक्रिया करते हैं - अत्यधिक साहस के साथ या कायरता के साथ। चुनाव आपका है, लेकिन केवल डर ही आपको यह निर्णय लेने से रोक सकता है।

श्याम

मैं बैठ कर उसे देखता हूँ। बार-बार। मेरे पेट के गड्ढे में एक खोखलापन है। मैं उस दूधिया तरल पदार्थ के घनत्व को जानता हूँ जो मेरे घुटनों में स्नायुबंधन की जगह लेता है। मैं उस तरल पदार्थ का स्वाद जानता हूँ जो मेरे मुँह में भर जाता है। मैं इस भावना को जानता हूँ। यह कभी मुझे लुभाता था। इसने मुझे अपनी बाहों में जकड़ लिया और मेरी आँतों को शून्य में बदल दिया। इसने मेरे घुटनों को खोखला कर दिया और मेरी जीभ को कड़वाहट से धो दिया।

जब मैं पंद्रह साल का था और नहीं जानता था कि कहाँ जाऊँ, तब मैं तुम्हें जानता था, पुराने दुश्मन। मैं तुम्हें पहचानता हूँ, हालाँकि हमें मिले हुए बहुत समय हो गया है। मैं तुम्हें जानता हूँ, डर।
मैं जानता हूं कि तुम फिर से मेरी जिंदगी में वापस आ गए हो।
वह करवट लेकर सो रही है। उसकी चोटी तकिये पर लटकी हुई है। वह एक बच्चे की तरह सो रही है। उसने एक बच्चे का नाइटगाउन पहना हुआ है, जो उसकी गर्दन तक बटन से बंधा हुआ है और घुटनों को ढकने के लिए विनम्रतापूर्वक नीचे खींचा हुआ है। हल्के गुलाबी फूलों की टहनियाँ, स्कैलप्ड किनारे और कैप स्लीव्स - उसने अपनी नारीत्व को कपड़े पहनाया है और खुद को एक बच्चे में बदल दिया है।

उसके सोते हुए चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। कभी-कभी वह अपना तकिया सहलाती है। कौन उसके सपनों में से गुज़रता है और उसके होठों पर मुस्कान लाता है? क्या वह उसे ढूँढ रही है?

मैं अपनी कुर्सी पर बैठ जाता हूँ और उसे बार-बार देखता हूँ।

Machine Translated by Google

फिल्मों में, अंतिम टकराव में, आदमी अपनी व्यभिचारी पत्नी से कहता है, 'क्या तुमने सोचा था कि मुझे कभी पता नहीं चलेगा? क्या तुमने सोचा था कि मुझे नहीं पता? मुझे तो उसी दिन पता चल गया था जब यह सब शुरू हुआ था। क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ?'

मैंने इस दृश्य को कई अलग-अलग अभिनेताओं द्वारा कई अलग-अलग तरीकों से अभिनीत होते देखा है। मैंने खुद से पूछा: क्या उसने वाकई ऐसा किया था? क्या मुझे पता होता?
क्या मैं बता पाता?

मैंने नहीं किया, है न, राधा? मुझे कभी पता नहीं चला। मुझे कभी एहसास नहीं हुआ। मुझे जलन हुई, लेकिन फिर, मुझे हमेशा जलन होती है। हमेशा होती है, जब मुझे लगता है कि कोई व्यक्ति या कोई चीज़ तुम्हारे जीवन में मेरी जगह को खतरे में डाल रही है। मुझे तुम्हारे बचपन के दोस्तों से जलन होती है। तुम्हारे चाचा से, जो तुम्हारी वफ़ादारी और विश्वास को नियंत्रित करते हैं जबकि मुझे अपने लिए कुछ खाने का इंतज़ार करना पड़ता है। उस संगीत से जिसे तुम सुनते हो, उन किताबों से जो तुम पढ़ते हो, यहाँ तक कि तुम्हारी उन यादों से भी जो मुझे बाहर रखती हैं। यही कारण है कि, हर बार जब तुमने कहा कि तुम अपने समय के साथ कुछ करने की योजना बना रहे हो, तो मैंने तुम्हारे लिए ऐसा न करने के कारण ढूँढ़ लिए। मुझे तुम्हें किसी के साथ साझा करना पसंद नहीं है। मुझे ऐसी कोई भी चीज़ पसंद नहीं है जो तुम्हें मुझसे दूर ले जाए।

बताओ राधा, यह सब कब शुरू हुआ? तुम मुझे कब से धोखा दे रही हो? क्या यह वह दिन था जब तुम उससे पहली बार मिली थी या वह दिन जब मैं तुमसे दूर चली गई थी? क्या यह तब था जब सूरज चमक रहा था, या जब बारिश ने तुम्हारे व्यभिचारी संबंध पर पर्दा डाल दिया था? क्या तुमने उसे खोजा था? या उसने तुम्हें खोजा था? क्या यह मेरे बिस्तर पर था या उसके?

क्या उसने तुम्हें दीवार के सहारे लेटा दिया या घास के एक टुकड़े पर लिटा दिया? क्या तुम चीखी और अपने नाखूनों से उसकी पीठ पर खरोंच लगाई? क्या तुमने उसके शरीर को काटा और अपने पैरों को उसके चारों ओर लपेटा? क्या उसने तुम्हारे बालों को तुम्हारे स्तनों पर खींचा और अपनी उंगलियाँ तुम्हारे गीलेपन में घुमाई? क्या तुमने अपना मुँह खोला और और माँगी? या क्या तुमने अपनी आँखें बंद की और अपने आनंद की आह भरी?

मैं यहाँ बैठा हूँ, राधा। मैं बार-बार तुम्हारी तरफ़ देखता हूँ। और सोचता हूँ कि जब डर मेरे दरवाज़े पर दस्तक दे रहा था...

मुझे कभी पता नहीं चलता, है न? अगर मैं जैकब से नहीं मिला होता और अचानक उसके साथ रबर के बागान में जाने का फैसला नहीं किया होता, जहां वह काम करता है।

'चलो,' जैकब ने मुझे समझाया। 'सिर्फ एक दिन के लिए। हमें मिले हुए बहुत समय हो गया है। तुम कल कोट्टायम से वापस उसी ट्रेन से आ सकते हो। मैं तुम्हें स्टेशन तक पहुँचाने का वादा करता हूँ।'

जैकब और मैं उस मकान में रूम-मेट थे जिसे हमने दो अन्य लोगों के साथ किराए पर लिया था।

हम रूम-मेट थे जब तक कि मैंने अपनी नौकरी छोड़ कर अपना खुद का व्यवसाय शुरू नहीं कर लिया। चार साल पहले, उसने नौकरी बदल ली थी और एक बागान में सहायक प्रबंधक बन गया था। जब हमने आखिरी बार बात की थी, तो उसने कहा था, 'यह कोई आसान काम नहीं है, लेकिन इसके अपने फायदे हैं।'

मैं इसके फायदे देख सकता था। सौ साल पुराना बंगला, जो एक खूबसूरत जगह पर स्थित है।

Machine Translated by Google

हरी-भरी घाटी। फायरप्लेस और खिड़कियाँ। प्राचीन फर्नीचर और नौकर जो सब कुछ साफ रखते हैं। एक लॉन और पुराने पेड़। वहाँ एक विशाल मंजड़ी का पेड़ था, और नीचे घास में सैकड़ों मंजड़ी के बीज थे, जो घास के पन्ने में माणिक की बूंदों की तरह चमक रहे थे। मैंने एक उठाया और उसकी लाल चमकती हुई चिकनी सतह को अपनी उंगलियों के बीच घुमाया।

मुझे उन पन्ना बालियों की याद आई जो मैंने तुम्हारे लिए खरीदी थीं। और मुझे पता था कि यहाँ
तुम्हें खुश करने का एक और तरीका मिल गया। मुझे एक काम मिल गया।

मैंने लाल मंजड़ी के बीज इकट्ठा किए। मैं लाल मखमली आभूषण बॉक्स को लाल मंजड़ी के एक बैग में छिपा दूंगा और आपकी उंगलियों को उस पर मौका दूंगा।

'तुम क्या कर रहे हो?' जैकब ने बरामदे से पुकारा।

'मेरी पत्नी को ये लाल बीज पसंद आएंगे,' मैंने बैग उठाते हुए समझाया।

'मैं किसी को आपके लिए इन्हें इकट्ठा करने के लिए भेज दूंगा,' उन्होंने कहा।

मैंने कहा, 'नहीं, यह काम मुझे स्वयं करना होगा।'

सूरज क्षितिज में लुप्त हो रहा था। अँधेरे की उंगलियाँ क्षितिज पर छा गईं।
आकाश में लालिमा.

'आज रात बारिश होने वाली है,' जैकब ने कहा। उसने आँख मारी। 'क्या मैं उससे पहले ही पानी डालना शुरू कर दूँ?' वहाँ नाश्ते थे- मुरुक्कू और फ्राइड चिकन,

मूंगफली मसाला और टैपिओका चिप्स। हमने बात की। व्हिस्की गायब हो गई। हड्डियों का ढेर लग गया। मैं अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुका और तम्बाकू की खुशबू को सूँघा। मैंने तीन साल पहले धूम्रपान छोड़ दिया था। मुझे एक बार भी सिगरेट की तलब नहीं हुई। लेकिन बिना किसी हिचकिचाहट के, जब उसने मुझे सिगरेट दी, तो मैंने उसके पैकेट से सिगरेट निकाली और जला ली।

एक।

बारिश ज़ोरों से बरस रही थी। हम बरामदे में बैठकर उसकी नमी को महसूस कर रहे थे।
बारिश की बूँदें मेरे चेहरे पर चुभ रही थीं। 'क्या तुम अंदर जाना चाहते हो?' जैकब ने पूछा।

'नहीं,' मैंने कहा। 'चलो बस बारिश से दूर चले जाते हैं। यहाँ बैठना कितना सुंदर है। भगवान जाने कि मुझे आखिरी बार कब इतना सुकून मिला था। कोई समस्या सुलझाने की नहीं, कोई कॉल लेने की नहीं।' तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरा मोबाइल पूरी शाम नहीं बजा। तुमने मुझे एक बार भी कॉल नहीं किया। क्या

गड़बड़ थी? मैंने अपना मोबाइल निकाला। स्क्रीन के बाईं ओर सिग्नल टावर एक सपाट ईंट जैसा था।

मैंने पूछा, 'क्या यह सिग्नल रहित क्षेत्र है?'

'हाँ। क्या तुम्हें पता नहीं था?' मैंने

अपनी घड़ी देखी। सवा बारह बज रहे थे। देर हो चुकी थी, लेकिन मुझे पता था कि मुझे तुम्हें फ़ोन करना है। 'मुझे राधा को फ़ोन करना चाहिए। उसने पूरी शाम मुझे फ़ोन करने की कोशिश की होगी।
मैंने कहा, 'वह चिंतित होगी।'

मैं घर के अन्दर गया। मैंने तुम्हारा मोबाइल डायल किया। मैंने ऐसा क्यों किया? मैंने फ़ोन क्यों नहीं किया?

Machine Translated by Google

घर? या अंकल? मुझे नहीं पता। मैं नशे में था। शायद मैं घर पर फोन करने और आपको गायब पाकर डर गया था। मैं बस आपकी आवाज़ सुनना चाहता था और खुद को आश्वस्त करना चाहता था।

मैंने कल्पना की कि फ़ोन की घंटी बजती रहेगी। मैंने तुम्हारी आवाज़ में नींद की कल्पना की।
मैंने सोचा कि तुम्हें जगाए जाने पर गुस्सा आएगा। और मैं हंस पड़ा।

तुमने दूसरी घंटी बजते ही फोन उठाया। तुम्हारी आवाज़ धीमी, लेकिन स्पष्ट थी।
तुम जाग रहे थे, तुमने कहा। तुम चाचा के घर पर थे। और कहाँ, तुमने पूछा। तुम उसे जगाना नहीं चाहते थे; वह अभी सो गया था, तुमने कहा। नहीं, तुमने फोन नहीं किया, तुमने कहा। अगर कोई महत्वपूर्ण बात होती, तो मैं फोन करता, तुमने कहा। मुझे चिंता नहीं थी, तुमने कहा। मुझे अब सचमुच सो जाना चाहिए, तुमने कहा।

तुमने कहा, शुभ रात्रि, और मेरे कान में तुम्हारी आवाज बंद हो गई।

क्या तब मैंने पहली बार भय का अनुभव किया था?

मैंने कल्पना की कि तुम उसकी बाहों में हो, फ़ोन छीनने के लिए मुड़ी हो और चाह रही हो कि वह मेरे साथ न हो। अपनी आवाज़ को इस तरह से व्यवस्थित करना कि तुम यह न बता सको कि वह तुम्हारे साथ है। मैंने कल्पना की कि जब तुम फ़ोन पर झूठ बोल रही हो तो वह तुम्हारे गले के वक्र को चाट रहा है। मुझे उन सभी प्रेम दृश्यों की याद आई जो मैंने किताबों में पढ़े थे और फ़िल्मों में देखे थे। मैंने कल्पना की कि तुम और वह उन्हें वास्तविकता में बदल रहे हैं।

सुबह सूरज चमक रहा था। यह जुलाई की उन गर्म सुबहों में से एक थी जब आपको लगता है कि मानसून कभी आया ही नहीं। गर्मी पसीने की धाराओं के रूप में मेरी पीठ से टपक रही थी। नौकरों ने कटे हुए अनानास का एक कटोरा लाया। फल पर चीनी चमक रही थी। मैंने गूदा चबाया और महसूस किया कि मिठास ने मुझे घेर लिया है। मुझे शराब पीना बंद कर देना चाहिए, मैंने सोचा। यह मेरे व्यक्तित्व को बदल देता है। मैं एक अलग आदमी बन जाता हूँ: असुरक्षित, संदिग्ध, भयभीत। मैं सबसे अजीब चीजों की कल्पना करने लगता हूँ, और इससे मेरा रक्तचाप बढ़ जाता है।

गर्मी और पीली मिठास ने मुझे घेर लिया। उस जुलाई की सुबह मैं जोर से बोला
डर को दूर भगाया और अपनी मंजड़ियों को एक बार फिर से समेटा। मुझे एक काम मिल गया।

फिर भी, रबर के पेड़ों की कतारों के नीचे, छाया में डर छिपा हुआ था। छाल में कट से, डर छोटे काले प्यालों में बहता था। और अनजाने में, मैं डर को अपने साथ अपने घर में ले आया।

तो, क्या मुझे डर की मौजूदगी का एहसास था जब मैं रेलवे पुल से नीचे उतरा और तुम दोनों को कार से गुजरते देखा? शशि गाड़ी चला रहा था, और मुझे आश्चर्य हुआ कि वह तुम दोनों के बारे में क्या सोचता होगा जो पीछे यात्री सीट पर बैठे थे। क्या तुम्हारे शरीर की रेखाएँ उसके शरीर से मिलती थीं? क्या तुम्हारे हाथ चुपके से छूते थे? क्या उसने अपनी बाँह पीछे की सीट पर रखी थी और क्या वह तुम्हारी गर्दन के पिछले हिस्से से खेल रही थी? क्या तुम उसके सहारे झुकी हुई थीं?

क्या शशि ने यह सब देखा और आश्चर्य किया? क्या वह अपने आप से पूछ रहा था, क्या सर को पता है? क्या शशि को मेरे साथ जो कुछ हो रहा है, उसके लिए मुझ पर दया आ रही है?

मुझे डर का अहसास तब हुआ जब मैं रिसॉर्ट में गया और वहां मौजूद हर एक व्यक्ति ने मुझे डराया।

Machine Translated by Google

कर्मचारियों ने बहुत मेहनत की, ताकि वे अपनी नाराजगी जाहिर न करें, जब उन्होंने मुझे बताया कि जब मैं गया था, तो आप रिसॉर्ट में थे। वास्तव में ऐसा कहे बिना, उन्होंने मुझे बताया कि आप यहाँ थे। साहिव के साथ भोजन कर रहे थे। बातें कर रहे थे। हँस रहे थे।

ऐसे उछल-कूद कर रहे थे मानो आपको इसकी परवाह ही न हो कि कौन देखेगा, वे क्या सोचेंगे। मैं टूटते दिल से सुन रहा था।

यह डर मुझे तब भी सताता रहा जब मैं अपने कमरे में घुसा और देखा कि सब कुछ वैसा ही था जैसा था, तुम्हारे बेडसाइड टेबल पर। धूल की एक पतली परत तुम्हारी अनुपस्थिति की बात कर रही थी।
जब मैं गया था, तब तुम घर पर मुश्किल से ही आए थे। मैंने मेज़ के ऊपरी हिस्से और तुम्हारी अलग-अलग चीज़ों की धूल साफ़ की। तुम्हारा इंतज़ार करते हुए मुझे एक काम मिल गया।

बारिश जल्दी शुरू हो गई थी। मैं बरामदे में खड़ा होकर तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था। तुम अंदर आए, तुम्हारे बालों और नाक के किनारे से बारिश की बूंदें टपक रही थीं। 'तुम छाता क्यों नहीं लाए?' मैंने पूछा।

'ओह, थोड़ी सी बारिश से मुझे कोई नुकसान नहीं होने वाला,' तुमने कहा। 'तुम कब आए?' 'थोड़ी देर पहले,' मैंने कहा। मैंने तय किया कि मैं तुमसे नहीं पूछूंगा कि तुम कहाँ थे।
खैर, मुझे पता था कि तुम्हारा जवाब क्या होगा: अंकल के यहाँ। और कहाँ?

मैंने तुम्हें अपने गीले बालों को तौलिए से पोंछते और सुखाते हुए देखा। गर्म हवा गुनगुना रही थी और तुमने जो परफ्यूम लगाया था, वह जीवंत हो उठा था। मैंने तुम्हें बेडरूम और बाथरूम के बीच चलते हुए देखा, अपने कपड़े उतारते हुए। तुम पहले कभी अपने शरीर को लेकर इतने आश्वस्त नहीं थी। मैं वहीं खड़ा था जब तुमने अपने शरीर पर तौलिया लपेटा। मैंने तुम्हारे नंगे और आकर्षक कंधे देखे।

मैंने तुमसे कहा, 'बैठ जाओ।'
तुमने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मैं पागल हो गया हूँ। 'क्या मैं कुछ कपड़े पहन सकता हूँ?' 'नहीं,' मैंने कहा। यह धमकाने वाला स्वर कहाँ से आया? मेरा ऐसा मतलब नहीं था, तुम
पता है. 'बैठ जाओ. यह इंतज़ार नहीं कर सकता.'

तुम पीले पड़ गए। तुमने अपना निचला होंठ काटा। मैंने तुम्हारी आँखों में डर देखा। 'श्याम...' तुमने काँपती हुई आवाज़ में कहा।

तुम बैठ गए। मैं तुम्हारे पास बैठ गया। मैंने अपना बैग निकाला और कहा, 'मैं यह तुम्हारे लिए लाया हूँ...' एक पल के लिए, सिर्फ़ एक पल के लिए, मैंने सोचा कि मैं

तुम्हारे बालों और चेहरे पर गिरती हुई मंजड़ियों को रख दूँ। उन्हें तुम्हारे शरीर पर और तुम्हारे तौलिये की तहों में गिरते हुए देखूँ। लेकिन ऐसे दिखावटी हाव-भाव करना मेरे बस की बात नहीं है।

'ओह, यह क्या है?' तुमने पूछा और प्लास्टिक की थैली को ऊपर उठाया। मंजड़ी सरसराहट और खिलखिलाहट कर रही थीं और उसके भीतर, पन्ना की बालियाँ लाल मखमली डिब्बे में बंद थीं।

'मंजादियाँ? क्या यही है जिसका इंतज़ार नहीं किया जा सकता?' 'अंदर देखो,' मैंने कहा।
तुमने अपना हाथ अंदर डाला। हो सकता है कि यह मेंढक के अंडे वाला सीवेज का गड्ढा रहा हो

Machine Translated by Google

शीर्ष पर, आपने बहुत अनिच्छा दिखाई। आपकी उंगलियाँ मखमली डिब्बे पर टिक गईं। आपने उसे बाहर निकाला और मैंने आपकी आँखें देखीं।

वे सपाट और उदासीन थे। 'कितने सुंदर,' तुमने कहा और उन्हें मेज पर छोड़ दिया। मैंने तुम्हारे उन्हें पहनने का इंतज़ार किया। लेकिन तुम जाने के लिए उठ खड़ी हुई। मुझे फिर से डर लगा।
मैं और क्या कर सकता था?

सारी शाम मैं तुम्हारे कानों पर उन्हें चमकते हुए देखने का इंतज़ार करता रहा। फिर मैंने तुमसे पूछा, 'क्या तुम्हें वे पसंद नहीं हैं?' 'क्या?' 'क्या तुम्हें झुमके पसंद नहीं हैं?' 'मुझे पसंद
हैं।' 'तुम उन्हें

क्यों नहीं पहनती? वे बहुत कीमती हैं और तुम उन्हें
इधर-उधर

पड़े रहने देती हो...' तुमने भौंहें सिकोड़ीं। तुम्हारा मुँह कस गया। मुझे पता था कि मैंने फिर से गलत बात कह दी है।

और आपने कहा, 'अगर वे इतने कीमती हैं, तो आप उन्हें क्यों नहीं रख देते? ऐसा नहीं है कि मैंने उन्हें मांगा था।' 'मेरा ऐसा मतलब नहीं था,' मैंने समझाने की कोशिश की।

'और क्या मतलब था तुम्हारा? तुम अभी घर वापस आए ही हो और तुमने मेरे साथ एक बदमिजाज़, मनमौजी बच्चे जैसा व्यवहार करना शुरू कर दिया है। मुझे डैडी की ज़रूरत नहीं है। मेरे पास एक डैडी था।'

मैं यहाँ अपनी कुर्सी पर बैठा हूँ और तुम्हें देख रहा हूँ। बार-बार। सिर्फ़ तुमने ही कवियों को नहीं पढ़ा है। मैं भी कुछ कविताएँ जानता हूँ। क्या मैं पोर्फिरिया के प्रेमी की तरह तुम्हारी चोटी लेकर तुम्हारी गर्दन में तीन बार लपेट दूँ, गोल-गोल? मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाना चाहता। तुम्हें कोई दर्द नहीं होगा।

मैं तुम्हें मारना चाहता हूँ। तुम मेरे साथ जो कर रहे हो, उसके लिए मैं तुमसे नफरत करता हूँ। लेकिन मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? तुम्हें मारना तुम्हें खोने के बराबर होगा। यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं उसे तुम्हें ले जाने नहीं दे सकता। मैं तुम्हें जाने नहीं दे सकता। न ही मैं तुम्हें मेरे साथ ऐसा करने दे सकता हूँ... यह सब मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।

मैं दूसरी राधा के बारे में सोचता हूँ। चरवाहा पति अपनी गायें चराता था जबकि राधा कृष्ण के साथ अपने प्रेम-प्रसंगों के लिए चुपके से चली जाती थी। उसने संगीत और आकर्षण से उसे बहकाया। लेकिन क्या आप जानते हैं कि क्या हुआ? कृष्ण चले गए। उनके पास करने के लिए बहुत कुछ था, बहुत सी चीजें पूरी करनी थीं, बहुत से राक्षसों को हराना था और सोलह हज़ार से ज़्यादा पत्नियाँ संभालनी थीं; समय ने उन पर अपना कब्ज़ा कर लिया था। लेकिन पति वहीं रहा। चरवाहा पति अपनी गायें चराता रहा और राधा के होश में आने और उसके पास वापस जाने का इंतज़ार करता रहा।

क्या मैं वह पति बनूँगा? अपनी आँखें बंद करने को तैयार, माफ़ करने और भूलने को तैयार?

Machine Translated by Google

मेरे अंदर डर समा गया है। अब मुझे क्या करना चाहिए?

मैं यहाँ बैठा हूँ, राधा, तुम्हें देख रहा हूँ। बार-बार। और इस तरह हम साथ-साथ बैठते हैं, डर और मैं। और पूरी रात हमने कोई हलचल नहीं की।

Machine Translated by Google

राधा

मैं चौंक कर जाग जाता हूँ। मुझे नहीं पता कि मुझे किसने जगाया। एक जलती हुई बत्ती। हवा का एक झोंका। एक अनुपस्थिति... उठकर बैठ जाना।

कमरे में रोशनी है। श्याम के बेडसाइड लैंप। बिस्तर के उस तरफ़।

वह सोया नहीं है। मैं अपना सिर घुमाता हूँ। वह कहाँ है?

फिर मैं उसे एक कुर्सी पर बैठे देखता हूँ। वह मेरी तरफ मुंह करके बैठा है। वह क्या कर रहा है?

क्या तुम मुझे सोते हुए देख रहे हो?

मैं चाहता हूँ कि वह लाइट बंद करके वापस बिस्तर पर चला जाए। 'श्याम', मैं उसे पुकारना शुरू करता हूँ। फिर मैं रुक जाता हूँ। उसमें कुछ ऐसा है जो मुझे डराता है। यह वह श्याम नहीं है जिसे मैं जानता हूँ। वह श्याम जो अपने कंधों को चौड़ा करता है, पेट को अंदर की ओर खींचता है, सिर को सीधा रखता है, और कभी भी इस तरह नहीं पकड़ा जाएगा।

कुर्सी पर बैठा आदमी अपने पैरों को फैलाकर और पेट को ढीला करके पीठ के बल लेटा हुआ है। उसके हाथ उसकी गोद में मुड़े हुए हैं और उसका सिर एक तरफ झुका हुआ है। उसकी टी-शर्ट पर गीला धब्बा है। उसके मुंह से लार टपक रही थी।

वह ऐसे आदमी की तरह दिखता है जिसकी साँसें निकल गई हों।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कोई मेरे दिल को थाम रहा है। क्या वह ठीक है?

फिर मैं उसकी छाती को ऊपर-नीचे होते देखता हूँ; उसके मुँह से हल्की खर्राटे की आवाज़ निकलती है। और मुझे लगता है

फिर वही चिरपरिचित गुस्सा उभर आया। अब क्या?

वह कुर्सी पर करवट बदलता है। मैं उसके ढीले हुए अकवार में लाल मखमली डिब्बा देखती हूँ। मैं काँप उठती हूँ। वो भयानक झुमके। उनकी कीमत बहुत ज़्यादा रही होगी। काश कि वह मेरे लिए आभूषण न खरीदता। उसका स्वाद अलंकृत और फूलदार होता है।

रानी ओप्पोल को वे बहुत पसंद आती थीं। 'इन्हें देखो,' वह उन्हें रोशनी में दिखाते हुए कहती थीं। 'कितने शानदार झुमके हैं। तुम बहुत भाग्यशाली हो कि तुम्हें श्याम जैसा पति मिला है, जो हर समय तुम्हारे बारे में सोचता रहता है। वास्तव में, अगर तुम मुझसे पूछो, तो वह तुम्हें लाड़-प्यार करता है।

मुझे लगता है कि मेरा बेटा मुझे तभी याद करेगा जब उसका खाना मेज़ पर न आए।

मैं वही हूँ, उसकी रसोइया और धोबिन।'

अगर मैं उन्हें उसे दे दूँ तो श्याम नाराज़ हो जाएगा। या फिर वह? आख़िरकार वह उसकी बहन है।

मैं अपने कानों की लोबियों को छूती हूँ। मेरी मोती की बालियाँ वहाँ छिपी हुई हैं, लगभग अदृश्य। मुझे लगता है कि श्याम मुझे जाने से पहले रात को पीटने के लिए प्रायश्चित करने की कोशिश कर रहा है। लेकिन यह सिर्फ़ इतना ही नहीं है। कुछ और भी है। पूरी शाम उसने मुझे देखा है। उसकी आँखें मेरे हर इशारे का अनुसरण करती हैं, उसके कान मेरे हर शब्द को तौलते हैं।

तब मुझे पता चला। यह बात मेरे पेट में गड़गड़ाहट पैदा करती है। अंकल ने मुझे चेतावनी देकर सही किया था। किसी ने श्याम से कुछ कहा है। उसने क्रिस और

Machine Translated by Google

मुझे घबराहट की लहर ने घेर लिया है। मैं क्या करूँ?

चाचा और माया बाहर गए हुए हैं। वे अकेले ही एक छोटी सी सैर पर गए हैं।
चाचा ने मुझे नहीं बताया कि कहाँ। मैं उनसे माया के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन उनकी आँखों ने मुझे चेतावनी दे दी: बाद में, बाद में।

जिस रात वे चले गए, क्रिस आया। 'क्या उसे बुरा लगेगा?' क्रिस ने पूछा। उसके चेहरे पर आशंका थी।

'वह जानता है, क्रिस। वह हमारे बारे में जानता है,' मैंने धीरे से कहा। 'चाचा कभी किसी का न्याय नहीं करते। वह ऐसा कभी नहीं करते।' 'ऐसा इसलिए है क्योंकि वह डरता है कि अगर वह दूसरों पर

निर्णय सुनाएगा तो उसकी ज़िंदगी जांच के दायरे में आ जाएगी,' क्रिस ने घर के अंदरूनी हिस्सों की जांच करते हुए कहा।

मैंने आश्चर्य से ऊपर देखा। 'क्यों, ऐसा लग रहा है कि तुम उसे बहुत पसंद नहीं करते।' 'नहीं, मैंने ऐसा नहीं कहा,' क्रिस ने कहा। 'मैं उसे कैसे नापसंद कर सकता हूँ?' उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव था।

मैंने जांच नहीं की। मैंने नई चादरें बिछाकर बिस्तर बनाना शुरू कर दिया। 'वह उसका प्रेमी है,' क्रिस ने कहा।

'क्या तुम्हें ऐसा लगता है?' मैंने रुककर तकिया उसके कवर में ठूंसते हुए कहा।
'तुम देख सकते हो। उनके बीच एक ऐसा परिचय है जो केवल प्रेमियों के बीच होता है।' 'क्या हमारे बीच भी ऐसा है, क्रिस?' मैंने पूछा।
'तुम्हें अपने चाचा से पूछना चाहिए,' उसने कहा। मैंने अपना जवाब निगल लिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसे क्या हो गया है।

मैं बिस्तर पर बैठ गया। वह मेरे बगल में लेट गया। एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। हम पति-पत्नी थे और बिस्तर पर जा रहे थे। इससे मुझे संतुष्टि मिलनी चाहिए थी।
इसके बजाय, मुझे सिर्फ़ असहजता महसूस हुई। क्या हमारा जुनून, हमारा सर्वव्यापी जुनून, इस हद तक सिमट गया था? शायद क्रिस ने भी यही सोचा होगा।

वह बिस्तर से उछल पड़ा। 'चलो बरामदे में बैठते हैं,' उसने कहा। 'सोने के लिए बहुत जल्दी है।' हम हाथ पकड़े बैठे रहे। उसने मुझे अपनी कुछ यात्राओं के बारे में

बताया। मैंने सुना। मैंने उसे पारिवारिक कहानियाँ सुनाईं। उसने सुना। रात हमारे चारों ओर छाई हुई थी, प्यारी और अंधेरी, सबको बाहर निकाल रही थी और हमें एक साथ ला रही थी, करीब...

मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं तुमसे प्यार करने लगा हूं।'
वह मुस्कुराया। 'तुम्हारा क्या ख्याल है?'

मैंने उसके जवाब का इंतज़ार किया। मुझे बताने के लिए कि वह मेरे बारे में क्या सोचता है। उसने जवाब नहीं दिया। मुझे तब बेचैनी का आभास हुआ। लेकिन मैंने अपने डर को दबा लिया। मैंने खुद से कहा, उसे जल्दी मत करो। वह इतने लंबे समय से सिंगल है। उसे कमिटमेंट से डर लगता है। उसे भी वैसा ही लगता है जैसा तुम्हें लगता है। वह बस यह नहीं कहेगा। उसे समय दो।

Machine Translated by Google

'आओ,' उसने कहा, और मुझे बारिश में ले गया। हम सीढ़ियों के किनारे तक चले गए। बूंदाबांदी हल्की लेकिन लगातार थी। वह पानी में चला गया और मैं उसके पीछे चला गया।

हम दुनिया में सिर्फ़ दो लोग थे। सिर्फ़ बारिश और नदी ही हमें देख रही थी जब हम प्यार कर रहे थे और एक दूसरे के प्रति अपनी आस्था व्यक्त कर रहे थे।

बाद में, उसने मुझे तौलिए से पोंछा और मैंने उसे। जब हम सोने गए, तो हम एक दूसरे की बाहों में लेटे रहे। प्रेमी, या पति-पत्नी। इससे क्या फर्क पड़ता है? हम एक या दूसरे हो सकते हैं।

सुबह जब मैं उठा तो पाया कि वह चला गया है। वहाँ एक नोट था: मैं सुबह होते ही उठा और वापस कॉटेज में जाने का फैसला किया। मैं नहीं चाहता था कि किसी को कुछ शक हो। xxx क्रिस।

उसने हस्ताक्षर करने के लिए प्यार शब्द भी नहीं लिखा। मैंने नोट को सावधानी से मोड़ा
और उसे मेरे पर्स में डाल दिया। यह पहला पत्र था जो उसने मुझे लिखा था।

मैंने अपनी बाहें अपनी टांगों के इर्द-गिर्द लपेट लीं और बिस्तर पर सिमट गई। क्या हम प्रेमी-प्रेमिका ही रहेंगे और कुछ नहीं?

शाम को, मैंने अपनी किसी भी असुरक्षा को प्रकट नहीं होने दिया। मैं क्रिस को जानने लगी थी। मुझे चिंता थी कि उसे मेरे अंदर के डर के बारे में बताना उस पर दबाव डालना होगा।

इसके बजाय, हम नदी की सीढ़ियों पर बैठ गए। मैंने उसे बताया कि मैंने शाम के लिए क्या योजना बनाई है। मैं उसके लिए रात का खाना बनाने जा रही थी। मैं उसके साथ घर खेलने के विचार से रोमांचित थी।

मैंने कहा, 'चाचा और माया कल वापस आएँगे।' आइए हम हर पल का आनंद लें।
मेरा मतलब था, इस अनमोल समय का।

क्रिस ने हमारे समय को आनंद से भरने की पूरी कोशिश की। और प्यार, भले ही वह
शब्द नहीं बोलेंगे.

जब आधी रात के कुछ समय बाद फोन बजा तो मुझे पता चल गया कि यह श्याम ही होगा।
ऐसा ही था। क्रिस के साथ लेटे हुए, उससे बात करते हुए मुझे असहजता और अपराधबोध महसूस हुआ।

जब मैंने फ़ोन रख दिया, तो क्रिस बोला। 'क्या वह था?' 'हाँ,' मैंने कहा। कुछ समय से क्रिस ने श्याम का
नाम लेना बंद कर दिया था। मैंने उसकी ओर देखा। अंधेरे में उसकी आँखें चमक रही थीं।

'यह ठीक नहीं लग रहा, मिन-मिन।' 'क्या?' मैंने पूछा। मैं
जानबूझ कर मूर्ख बन रहा था।
'यह...' मैंने

उसकी बात को गलत तरीके से समझना चुना। 'इन परिस्थितियों में, यही एकमात्र तरीका है। मुझे पता है कि चाचा का घर काफी पुराना है, लेकिन मैं आपकी झोपड़ी में रात नहीं बिता सकता और मैं यही चाहता था। आपकी बाहों में सोना, आपके साथ जागना। दो रातें। अभी हमारे पास बस यही है।'

Machine Translated by Google

'मुझे पता है, मिन-मिन,' उसने आह भरते हुए कहा।

मैं उसके पास जाकर चिपक गया।

क्रिस ने फिर कहा, 'मुझे नहीं पता कि इसे कैसे कहना है, लेकिन यह सही नहीं लगता।' मैंने कहा, 'मुझे पता है।' 'मेरा मतलब है, मैं

किसी तरह से उसका ऋणी हूँ। उसने मुझे यह कॉटेज लगभग मुफ्त में दे दिया है। अब मैं यह समझ रहा हूँ। काश मैंने उसका प्रस्ताव कभी स्वीकार नहीं किया होता। काश मैंने रहने के लिए कोई और जगह ढूँढ़ ली होती। मुझे किसी के अधीन रहना पसंद नहीं है और इसके अलावा, ऐसा लगता है कि मैंने तुम्हारी शादी को बर्बाद कर दिया है। मुझे लगता है कि मैंने तुम्हें इस स्थिति में डाला है। इस भयानक गड़बड़ स्थिति में।' 'इसका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है। मेरी शादी तुमसे मिलने से पहले ही टूट चुकी थी,' मैंने उसे समझाने की कोशिश की,

ताकि उसकी बेचैनी दूर हो जाए।

'तुम कैसे कह सकते हो कि इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है? इसका मेरे यहाँ होने से सब कुछ लेना-देना है... भगवान, मैंने क्या किया है?' 'कृपया, कृपया,' मैंने विनती की।

'हमें इस रात को खराब नहीं करना चाहिए। हमारे पास बस इतना ही है।' 'कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या

तुम सच में जानते हो कि हमने क्या किया है।' उसकी आवाज़ नीरस थी। वह मेरी ओर मुड़ा और उसका चेहरा गंभीर था। 'क्या यह कोई खेल है, शायद?
अपनी बात साबित करने के लिए तुम्हें कुछ करना होगा? खुद को। अपने पति को।'

मुझे लगा कि उसके शरीर के पास ही पीड़ा भी है। वह ऐसा सोच भी कैसे सकता था?

'क्रिस, प्लीज।' मुझे लगा कि मेरी आँखों में आँसू आ गए हैं। 'तुम मुझसे नाराज़ क्यों हो? मैंने क्या किया?' 'तुम्हें क्या लगता है कि जब मैं तुम्हारे बगल

में लेटा हूँ और तुम अपने पति से बात करती हो तो मुझे कैसा लगता है? मैं इस धोखे में शामिल नहीं होना चाहता। इससे मुझे घिनौना और ज़िम्मेदार महसूस होता है।'

'मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हें पता था कि मैं शादीशुदा हूँ। मैंने अचानक तुम्हें यह नहीं बताया। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे झूठ बोलना पसंद है, या मुझे यह धोखा पसंद है? इससे मुझे भी बुरा लगता है। श्याम के साथ जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ, उसके लिए यह अपराधबोध मुझे मार डालता है। उसकी आत्म-सम्मान की भावना बहुत कमज़ोर है और अगर किसी को हमारे बारे में पता चल गया, तो वह इसे संभाल नहीं पाएगा। लेकिन...' 'क्या खूनी गड़बड़ है!' मैंने महसूस किया कि मेरा शरीर उसे दूर कर रहा है; अब तक जो कुछ भी मेरे लिए प्रिय था, उसने मुझे भयभीत कर दिया। मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे पकड़ेगा और मुझे

आश्वस्त करेगा कि हालाँकि हम जो कर

रहे थे वह गलत था, लेकिन यह हमारे लिए सही था। मैं चाहता था कि वह कहे कि सब कुछ होने के बावजूद, यह उसके लिए दुनिया का मतलब था।

मुझे लगा कि मैं एक गेंद की तरह सिकुड़ गया हूँ। मुझे एहसास हुआ कि वह मुझसे चुनने के लिए कह रहा था। लेकिन यह मेरी इच्छा का चुनाव होना चाहिए, क्योंकि वह मुझे चुनाव करने में मदद करने के लिए कुछ भी नहीं देगा।

इतने लंबे समय से मेरे दिन एक जैसे ही रहे हैं। वे बेजान हो गए हैं

Machine Translated by Google

और नीरस, पूर्वानुमानित और एकरस। मैंने सोचा कि कुछ भी कभी नहीं बदलेगा।

एक शाम, कॉलेज में मेरी जान-पहचान वाली एक लड़की, जो अब कोयंबटूर में रहती है, अपने पति के साथ बिना बताए मिलने आई। उसने कहा कि वे वायनाड जा रहे थे। उसने कहा कि यह एक तरह का दूसरा हनीमून था। अचानक, उन्होंने मुझे फोन करके यह देखने का फैसला किया कि मैं कैसी हूँ। 'तुम वैसी ही दिखती हो,' उसने कहा। 'तुम्हारा पति कहाँ है?' श्याम बाहर गया हुआ था। मैंने कहा कि उसे किसी भी समय वापस आ जाना चाहिए, और मैंने प्रार्थना की कि वह वापस आ जाए।

जब तक वे चले नहीं जाते, वह वापस नहीं आता। मुझे चिंता थी कि वे उसका क्या करेंगे।

मैंने उसके और उसके पति के बीच की सहजता देखी। शादी की सहज अंतरंगता। बात करते समय उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसने सहजता से उसके गाल को छुआ... मैंने नज़रें फेर लीं। उन्हें जाते देखकर मुझे खुशी हुई।

मेरे अतीत की कोई भी याद मुझे यह एहसास कराती थी कि मेरा जीवन कितना नीरस और बंजर था।

फिर क्रिस आया। उसने मेरे दिन ले लिए और उन्हें किसी और चीज़ में बदल दिया।
उन्होंने मुझे एक प्रिज्म उपहार में दिया जो प्रकाश को पकड़ता था और रंगों का एक स्पेक्ट्रम फेंकता था। मैंने देखा कि ग्रे रंग भी अपवर्तित हो सकता है। बैंगनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल - क्रिस ने मुझे प्रिज्म के गलियारों से होकर ले जाया। मैं अनिश्चित लेकिन खुश होकर उसके पीछे चला गया। अब मेरे जीवन के बारे में कुछ भी पूर्वानुमानित नहीं था। मेरी नसें गाती थीं और एक इंद्रधनुषी चमक मुझे भर देती थी। इसके बाद मैं अपनी ग्रे दुनिया में कैसे वापस जा सकता था?

और फिर भी, जब मैं यहाँ बैठकर सोच रहा हूँ कि क्या मैं श्याम को जगा पाऊँगा, क्या मैं उसकी आँखों में दिखने वाले आरोप को झेलने के लिए खुद को कठोर बना पाऊँगा, अपने अपराध और उसके गुस्से को दूर कर पाऊँगा, मुझे अचानक उस समय की लालसा महसूस होती है जब मुझे किसी चीज़ और किसी से डर नहीं लगता था। मेरी धूसर दुनिया एक ऐसा कफ़न थी जो डर को दूर रखती थी। अब मेरे पास रंग और रोशनी है, लेकिन एक कीमत पर।

बस एक ही काम करना है: बेशर्मी से पेश आना। अगर मैं श्याम को मना सकूँ कि
कुछ भी नहीं बदला है, मैं समय खरीद सकता हूं।

मुझे समय चाहिए। मुझे अब किसी भी चीज़ से ज़्यादा इसकी ज़रूरत है। मुझे क्रिस को यह समझाने के लिए समय चाहिए कि मैं उसके लिए कितना मायने रखती हूँ। मुझे श्याम को यह बताने के लिए समय चाहिए कि मैं अब उसके साथ नहीं रह सकती। क्रिस के आने से मेरा जाना तय हो गया है; मैं वैसे भी चली जाती। जब मैं इस छोटी सी दुनिया को तहस-नहस कर दूँगी जिसमें श्याम और मैं रहते हैं, तो मुझे मलबे को साफ करने के लिए समय चाहिए होगा।

मुझे समय चाहिए। और मुझे डर है कि मेरे पास पर्याप्त समय नहीं होगा। कोई और होगा
चोट लगना। श्याम या क्रिस। मैं कैसे चुनूँ? मैं क्या करने जा रहा हूँ?

मैं चुपके से बाथरूम में जाती हूँ। मैं अपना चेहरा धोती हूँ और अपने दाँत साफ करती हूँ। मैं अपनी चोटी खोलती हूँ
मैंने अपने बाल बनाए और पन्ना की बालियाँ पहन लीं। डर मेरे कानों के चारों ओर लिपट गया।

डर आपको ऐसे काम करने पर मजबूर करता है जो आप अन्यथा कभी नहीं करते। डर आपको समझौता करने देता है। डर आपको अपने पति को बहकाने भी देता है ताकि उसे लगे कि उसने आपके अपराधों, आपके विश्वासघात की कल्पना की है, और आप अभी भी उसकी हैं।

Machine Translated by Google

मैं श्याम के पास जाती हूँ जहाँ वह बैठा है। मैं अपनी उंगलियाँ उसके बालों में घुमाती हूँ और फुसफुसाती हूँ, 'श्याम, श्याम...'

Machine Translated by Google

चाचा

कार में मैं माया का हाथ अपने हाथ में लेता हूँ। 'तो, क्या तुमने अच्छा समय बिताया?' मैं उसका हाथ अपने हाथों के बीच में रगड़ता हूँ।

वह मुस्कुराती है। 'सबसे बढ़िया!' मैं

सोचता हूँ कि अगर राधा को पता होता कि हम कहाँ थे तो वह क्या कहती। 'लेकिन अंकल, गुरुवायुर! तुम मंदिर में क्या कर रहे थे? मुझे नहीं लगता कि तुम दोनों में से कोई भी धार्मिक होगा। तुम बूढ़े हो रहे होगे।' मैं हँसता हूँ।

'इसमें इतना मज़ा क्या है?' माया अपनी भौहें उठाती है।

'मैं राधा की प्रतिक्रिया के बारे में सोच रहा था जब मैं उसे बताऊंगा कि हम कहाँ गए थे। वह मानती है कि तुम और मैं एक भावुक पुनर्मिलन के लिए किसी रोमांटिक जगह पर चले गए।' 'हमें कहीं और जाने की क्या ज़रूरत है? तुम्हारा घर सबसे ज़्यादा है

माया ने कार की खिड़की नीचे करते हुए कहा, 'यह अब तक का सबसे रोमांटिक स्थान है जो मैंने देखा है।'

'तुम्हारे लिए; उसके लिए नहीं। उसने अपनी पूरी ज़िंदगी यही सब देखा है। लेकिन मुझे बताओ, क्या तुम ऐसा कर सकते थे?
क्या आप कहीं और जाना पसंद करेंगे?

'बिलकुल नहीं।' माया अपना सिर हिलाती है। फिर वह शर्म से मेरी ओर देखकर मुस्कुराती है। 'अगर हम
अगर ऐसा होता, तो क्या अब हम पति-पत्नी होते?'

मैंने अचानक ही तय कर लिया था कि हम गुरुवायुर जाएंगे। एक मित्र ने मुझे भगवान कृष्ण के जीवन से संबंधित स्वयंवर दृश्य देखने के लिए आमंत्रित किया। 'मेरा भाई इस बात से चिंतित है कि उसकी बेटी के लिए कोई उपयुक्त रिश्ता नहीं आया है और किसी ने उसे बताया कि गुरुवायुर में स्वयंवर दृश्य का प्रदर्शन आयोजित करने से मदद मिल सकती है। मुझे नहीं पता कि इससे मदद मिलेगी या नहीं, लेकिन उसके पास खर्च करने के लिए पैसे हैं और इसे देखना दिलचस्प होगा। अगर आज रात आप फ्री हैं तो क्यों नहीं आतीं?' 'क्या आप जाना चाहेंगी?' मैंने माया से पूछा।

'क्या यह अच्छा होगा?'

'कृष्णट्टम को कथकली की माँ माना जाता है। यह दिलचस्प होगा...' माया को नृत्य पसंद है। वह कभी भी किसी प्रदर्शन की बारीकियों

पर चर्चा नहीं कर पाएगी। इसके लिए कई वर्षों के प्रशिक्षण की आवश्यकता है, लेकिन वह एक सच्ची रसिका है, एक योग्य दर्शक जो किसी भी कलाकार को अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए प्रेरित कर सकता है। वह दिलचस्पी रखती है, वह इसमें शामिल है, और वह इसका इतना सम्मान करती है कि अपना मोबाइल बंद कर देती है, जैसा कि मैं जानता हूँ कि कई अन्य लोग नहीं करते। जब मैं उसके बगल में बैठा, तो मैंने उसके चेहरे पर खुशी देखी। और मुझे खुशी हुई कि हमने आने का फैसला किया।

Machine Translated by Google

जब हम अपने होटल वापस लौटे, तो माया खुशी से झूम उठी। वह प्रदर्शन के बारे में बात करना बंद नहीं कर सकी। 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह इतना विस्मयकारी होगा,' उसने कहा, जब हम सोने के लिए तैयार हो रहे थे।

मैं बिस्तर पर लेटा था, दोनों हाथ सिर के नीचे रखे हुए। माया बात करते हुए अपने बालों में कंघी कर रही थी।

'भक्तों का मानना है कि कृष्णट्टम का एक दृश्य देखने से आपको आशीर्वाद मिलता है। यह प्रार्थना का एक कार्य है,' मैंने कहा, उसे अपने बालों में कंघी करते हुए, अपनी त्वचा पर क्रीम लगाते हुए देखकर आनंद आ रहा था।

माया रुकी। उसके गालों पर क्रीम के बिंदु उभर आए। वह मुस्कुराई और बोली, 'इन
इस मामले में, मैं सचमुच धन्य हूं। यह देखने के लिए, और आपके साथ मेरे साथ होने के लिए।'

मुझे लगा जैसे मेरे अंदर कुछ बदल रहा है। उसकी मुस्कान में बहुत मिठास थी।

'अगर आप भोर में पूजा देखना चाहते हैं तो हमें जल्दी उठना होगा। मैं दिन में बाद में जाने के बजाय उसी समय जाना पसंद करता हूँ। भीड़ इतनी ज़्यादा नहीं होती और माहौल शांत होता है।
मैंने कहा, 'इससे मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे मैं सचमुच भगवान के घर में हूं, न कि किसी व्यावसायिक परिसर में जहां भगवान बेचे जाते हैं।'

'क्या तुम्हारे पास हर दिन अपनी जीभ तेज़ करने के लिए कोई पत्थर है?' माया ने अपना सिर हिलाया।

मंदिर के गलियारे अँधेरे में थे। भीड़ छाया में विलीन हो गई और मुझे फिर से शांति का अहसास हुआ, जैसे मैं अकेला था। वहाँ सिर्फ़ कृष्ण और मैं था। तभी मुझे लगा कि माया ने मेरी कोहनी को छुआ है। मुझे लगा कि वह यहाँ थी। वह भी यहाँ की ही थी।

हम नारायण, नारायण के जयकारे सुन सकते थे, जैसे ही गर्भगृह के द्वार खुले और पुजारियों ने दीप जलाया, भक्तों का उत्साह बढ़ता गया। मूर्ति के चेहरे की एक झलक और नारायण, नारायण, भगवान का नाम हमारे कानों में गूंज उठा...

ऐसी भक्ति के बीच, मैं नम्र महसूस करता था। ऐसा क्यों था कि मैं कभी भी अपनी परेशानियों को भगवान के दरवाज़े पर नहीं रख सकता था? तब मुझे लगा कि अहंकार भी डर का ही एक रूप है। भगवान से हस्तक्षेप करने के लिए कहना यह स्वीकार करना था कि मैं अपने जीवन को हल करने में असमर्थ था ... यह स्वीकार करना कि मैं कमज़ोर था। क्या मैं कभी विनम्रता सीख पाऊँगा? मुझे नहीं पता था।

मैंने माया की ओर देखा। उसके हाथ बंधे हुए थे और आँखें बंद थीं।
वह किसके लिये प्रार्थना कर रही थी?

बाद में, जब हमने पूजा-अर्चना और नाश्ता कर लिया और हमारे पास समय था, भरपूर और आरामदेह, हम वापस मंदिर की ओर चल पड़े। 'क्या आप कुछ छोटी-मोटी चीजें खरीदना चाहती हैं?' मैंने उससे पूछा। 'आप गुरुवायुर पापड़म, तांबे और कांसे की बनी किट्स, विभिन्न देवताओं की तस्वीरें, भक्ति संगीत, केले के चिप्स, बस कुछ भी जो आपको पसंद हो खरीद सकती हैं... गुरुवायुरप्पन के आशीर्वाद के अलावा।'

Machine Translated by Google

माया खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'तुम सचमुच दुष्ट हो।' 'नहीं, यह सच
है,' मैंने मंदिर के किनारे कुत्ते के फर पर कांटों की तरह चिपकी दुकानों की ओर इशारा करते हुए कहा।

'ये क्या हैं?' माया ने लंबे गलियारे में बने चबूतरों की ओर इशारा करते हुए पूछा।

'शादी के पंडाल। अगर हम यहीं रुकें तो कुछ शादियाँ देखने को मिल सकती हैं।
क्या आप चाहेंगे?'

इसलिए हमने बैठने के लिए जगह ढूंढी और इंतजार करने लगे। लोगों का एक जुलूस आया, फिर एक और, फिर एक और। जोड़े मालाओं का आदान-प्रदान करने के लिए मंच पर चढ़ गए।
ढोल और नादस्वरम का संगीत लोगों के बीच की छोटी सी जगह में समा गया।

'क्या भीड़ है,' माया ने आश्चर्य से कहा। 'उन्हें कैसे पता कि कौन किससे शादी कर रहा है?'

मैंने कहा, 'मैंने ऐसे उदाहरण सुने हैं जहां दुल्हन ने गलत दूल्हे को माला पहना दी।'

'और?' माया को विश्वास नहीं हुआ। 'फिर वे क्या करते हैं?' 'कुछ नहीं। इसे ईश्वरीय
आदेश के रूप में स्वीकार किया जाता है। कृष्ण ने निर्णय लिया है, और कौन
क्या हम केवल मनुष्य हैं जो उसके निर्णय पर सवाल उठाएं, इत्यादि।' 'दिलचस्प!' मैंने तब
उसके चेहरे की ओर
देखा। वहाँ इतनी संतुष्टि थी कि मैं चाहता था कि
इसे पकड़ो और अपना बना लो। 'माया, क्या तुम शादी करना चाहती हो?' मैंने पूछा।

मैंने उसका सिर घूमते हुए देखा। धीरे-धीरे घूमता हुआ, मानो उसे यकीन ही न हो रहा हो
'कोमन, तुमने क्या कहा?'

मैंने अपनी नाक सिकोड़ ली ताकि कोई भावना न दिखे। 'मैंने पूछा कि क्या तुम शादी करना चाहती हो।' वह हंसने लगी। 'मैं दो विवाह करूंगी। याद रखो, मैं
एक हूँ।
पहले से ही शादीशुदा हूँ। इसलिए, माफ़ करें, नहीं। मैं आपसे शादी नहीं कर सकता। पूछने के लिए शुक्रिया।'

'यह कोई मज़ाक नहीं है। मैं गंभीर हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी? कौन जाने कि तुम पहले ही शादी कर चुकी हो?'

जितना मैंने इसके बारे में सोचा, मुझे यह विचार उतना ही अच्छा लगा। मालाओं का आदान-प्रदान और शादी। कोई धूमधाम नहीं, कोई समारोह नहीं, बस हम दोनों और हमारी शादी का गवाह बनने वाला एक भगवान।

'क्या तुम गंभीर हो?' 'हां, मैं
गंभीर हूं। मैं सचमुच गंभीर
हूं।' 'लेकिन क्यों, कोमन? अभी क्यों? हमें शादी करने की क्या जरूरत है?' माया ने अपना हाथ मेरी कोहनी पर रखा।

'मुझे नहीं पता। शायद मुझे अपनी उम्र का अहसास हो रहा है। मैं किसी का होना चाहता हूँ।

Machine Translated by Google

मैं जानना चाहता हूँ कि मेरे जीवन और खुशहाली में किसी और की भी हिस्सेदारी है।' पहली बार, मुझे अकेलापन महसूस होने लगा था। मैंने सोचा कि कैसे मेरी सारी ऊर्जा अब राधा पर केंद्रित हो गई है। ऐसा लग रहा था कि मेरे जीवन में यही भूमिका है। अंकल।

मैं उससे बहुत प्यार करता था, लेकिन उससे भी ज्यादा चाहता था।

'ओह, कोमन।' माया की आवाज़ सहानुभूति से नरम थी। वह रुकी और बोली,
'क्या आपको लगता है कि इससे कोई कानूनी समस्या पैदा होगी?'

मैंने अपना सिर हिलाया। मुझे यकीन नहीं था, लेकिन जब तक हमने शादी को पंजीकृत नहीं कराया, तब तक इसका कानूनी महत्व क्या था? मैंने प्रार्थना की कि हम किसी मलयालम दैनिक के घुमंतू रिपोर्टर से न मिलें, जो कॉलम स्पेस भरने के लिए छोटी-छोटी बातें इकट्ठा कर रहा हो। मुझे कुछ साल पहले की एक खबर याद आ गई, जब एक सनकी व्यक्ति ने पेंसिल से तुलाभरम किया था। वह लोहे के बड़े तराजू के एक तरफ बैठा था और दूसरी तरफ पेंसिलों के डिब्बे इतने ढेर थे कि दोनों पलड़े एक ही ऊंचाई पर लटक रहे थे। आजकल कोई भी चीज खबर बन जाती है। तो फिर एक बुजुर्ग जोड़े की शादी क्यों नहीं?

मैं कोई सेलिब्रिटी नहीं था, लेकिन एक रिपोर्टर मुझे पहचान सकता था। पिछले साल मुझे एक और राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। मेरे लिए इसका कोई मतलब नहीं था। वह समय जब मुझे पुरस्कार और मान्यता की ज़रूरत थी, बहुत पहले बीत चुका था, लेकिन अख़बारों ने इस अवसर का भरपूर फ़ायदा उठाया था। कुछ समय के लिए आप अख़बार या पत्रिका खोले बिना मेरे चेहरे को नहीं देख सकते थे, या नाश्ते में मैं क्या पसंद करता हूँ, या मेरी उपलब्धियों की सूची, जैसा कि वे इसे कहते हैं, नहीं पढ़ सकते थे।

तो माया और मैंने शादी कर ली। भीड़ घूर रही थी। एक बुजुर्ग जोड़ा शादी कर रहा था।
विवाहित होना एक विसंगति थी।

'वे प्रेमी जोड़े होंगे जिन्हें युवावस्था में विवाह करने की अनुमति नहीं थी,' मैंने एक आवाज सुनी।

'बेचारी, कम से कम अब तो वे शादी कर पाए हैं।' 'शायद वह विधवा है।' 'शायद उनके बच्चों
को यह विचार पसंद न आए।' मैंने
सोचा कि हमारी शादी से अनगिनत कहानियाँ बनेंगी। दो बुज़ुर्ग लोग एक
दूसरे को माला क्यों पहना रहे हैं, इस बारे में अनगिनत व्याख्याएँ। केवल सच्चाई का ज़िक्र नहीं होगा। कि माया पहले से ही शादीशुदा थी।

उन्होंने देखा कि एक महिला क्रीम और सुनहरे रंग की साड़ी पहने हुए थी और एक पुरुष पतली जरी की किनारी वाली मुंडू और एक अन्य मुंडू को शॉल की तरह लपेटे हुए था।
उन्होंने हमारी त्वचा की ढीली होती त्वचा और हमारे बालों में सफ़ेदी देखी। उन्होंने उतार-चढ़ाव और भावनाओं के उतार-चढ़ाव को सहज होते देखा।

हम भगवान और कुछ अजनबियों की नज़र में पति-पत्नी बन गए।
तुम खुश हो?' मैंने उससे पूछा.

'मैं हूँ, पति। और आप क्या कहते हैं?'उसने जवाब दिया।

Machine Translated by Google

हम एक दूसरे को देखकर मुस्कुराये। एक षड्यंत्रकारी मुस्कान। दस साल पहले शुरू की गई हमारी गुप्त जिंदगी में एक और रहस्य जुड़ गया।

मालिनी ने हमें कर्कश चीखों के साथ अभिवादन किया। वह माया को घूरती है और उछलकर हमारी ओर चली जाती है। माया हंसती है, 'कोई भी सोचेगा कि मैं मालकिन हूं और वह पत्नी।'

'उसे मुझे साझा करने से नफरत है।' मैं उसका सिर खुजलाता हूँ। 'तुम्हारा क्या?' मैं अपनी आवाज़ धीमी कर देता हूँ।

वह कहती है, 'तुम मेरे हो।' 'मालिनी, वह मेरा है। क्या तुम सुन रही हो?' हम फिर एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते हैं।

'क्या तुम्हें पता है कि वे यहाँ आए हैं?' माया पूछती है। मैं सिर हिलाता हूँ। मैंने जैसे ही देखा राधा जो जोखिम उठा रही है उसके प्रति इतनी बेपरवाह कैसे हो सकती है?

माया ने हमारा बैग खोलते हुए कहा, 'मुझे ऐसा लग रहा है कि वह खुद को एक कोने में धकेलने की कोशिश कर रही है, ताकि उसे कोई फैसला लेने के लिए मजबूर होना पड़े।' मैं सहमत हूँ, लेकिन कुछ नहीं कहता।

तभी क्रिस अंदर आता है। वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुक जाता है और जम्हाई लेता है। 'मुझे यकीन नहीं था कि तुम वापस आ जाओगे। मैंने सोचा कि मैं एक मौका ले लूँ।' 'क्या तुम्हें पता है कि राधा आ रही है?' वह पूछता है।

मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या तुम लोग कुछ देर पहले साथ नहीं थे? इसके बजाय मैं कहता हूँ, 'तो तुम कैसे हो? व्यस्त थे?' मैं पंखा चालू करने के लिए हाथ बढ़ाता हूँ, लेकिन बिजली नहीं है।

'बहुत बुरा नहीं है। थोड़ा ऊब गया हूँ। मैं सोचता रहता हूँ कि मुझे बाहर जाकर और ज़्यादा पर्यटन वाली चीज़ें करनी चाहिए।' 'शायद तुम्हें ऐसा करना चाहिए,' मैं कहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह चला जाए। मैं माया के साथ अकेले रहना चाहता हूँ।

'मैं अपना मेल चेक करने शोरानूर गया था। इंटरनेट कनेक्शन बहुत धीमा है। मुझे आश्चर्य है कि क्या उन्होंने ब्रॉडबैंड के बारे में सुना भी है। और फिर टैक्सी ड्राइवर ने मुझे यहाँ वापस छोड़ने के लिए सौ डॉलर मांगे। मैं पैदल ही जाता, लेकिन यहाँ बहुत गर्मी है।' क्रिस फिर से जम्हाई लेता है। पंखा घूमना शुरू करता है। 'क्या यहाँ बिजली की स्थिति हमेशा इतनी खराब रहती है?' वह पूछता है। 'यह बार-बार चली जाती है। मैं कुछ लिख भी नहीं सकता। अगर कुछ भी काम नहीं करता है तो वे कैसे सोच सकते हैं कि वे इसे असली पर्यटन स्थल में बदल सकते हैं?'

मैंने पूछा, 'क्या आप शतरंज खेलना चाहेंगे?'

'क्या तुम खेलते हो?' उसकी आँखें उत्सुकता से भरी हैं।

'हाँ,' मैंने कहा। 'इसके अलावा, इससे तुम्हें कुछ करने को मिलेगा।' 'मैं कल सुबह खेलने आऊँगा,' वह कहता है। 'क्या तुम्हें लगता है कि राधा तब यहाँ कौन होगा?'

मुझे उसके लिए दुख हो रहा है। मुझे लगता है कि वह अकेला है।

मैं कहता हूं, 'मैं फोन करके उसे बुला लूंगा।' मैं उसकी बांह थपथपाता हूं।

Machine Translated by Google

उनकी मुस्कुराहट में राहत और आभार दोनों झलक रहे हैं।
मैं फिर से सोचने लगा कि राधा क्या सोच रही है। उसने लड़के को उलझनों में उलझा रखा है।

माया कहती हैं, 'क्रिस के चले जाने के बाद, वह अपने भारतीय अनुभव से असंतुष्ट होने लगे हैं।'

'मैंने भी ऐसा ही सोचा था,' मैंने कहा। 'खैर, कम से कम अब तक तो उसके कारण सच्चे लगते हैं, लेकिन मैंने ऐसा बार-बार होते देखा है। मेरे बहुत से छात्र यहाँ बहुत बड़ी उम्मीदों के साथ आते हैं। वे इसे एक उष्णकटिबंधीय स्वर्ग मानते हैं जहाँ उन्हें अपना जीवन बदलने वाला अनुभव मिलने वाला है। फिर परिचितता आ जाती है और जो विदेशी था वह भयावह हो जाता है; जो पुराना था उसे अक्षम मान लिया जाता है; और जो आध्यात्मिक है उसे खूनी आलस्य कहा जाता है। मैंने यह भी देखा है कि जब वे अपने घरों और जीवन के आराम में वापस जाते हैं, तो ये नकारात्मक छवियाँ अपनी धार खो देती हैं और जल्द ही वे भारत में अपने प्रवास के बारे में इतने उत्साह से बात कर सकते हैं कि वे यहाँ जीवन का अर्थ तलाशने के लिए नए लोगों को प्रेरित करते हैं।' 'यह बहुत कड़वा है।' मेरी उग्रता पर माया का आश्चर्य मुझे रोक देता है। 'आप इतने लोगों को जानते हैं, विदेशी, कि जानते हैं कि यह सच नहीं है। और आप सामान्यीकरण कर रहे हैं। फिलिप के बारे में क्या? अन्ना के बारे में क्या? सुसान के बारे में क्या? आप यह नहीं कह सकते कि वे ऐसे हैं।' 'मैं जानता हूँ, माया। मैं जानता हूँ कि सामान्यीकरण करना अन्याय है। मैं जानता हूँ कि फिलिप, अन्ना और सुज़ैन जैसे लोग हैं, लेकिन कुछ और लोग भी हैं, जो ठीक वैसा ही करते हैं जैसा मैं अभी कर रहा हूँ - सामान्यीकरण। वे हमारे और हमारे देश के बारे में व्यापक राय बनाते हैं और जो

कुछ भी उनके विचारों के विपरीत होता है, वह उन्हें स्वीकार्य नहीं होता। दूसरे देशों से पर्यटक यहाँ आते हैं, चारों ओर देखते हैं, सुविधाओं की कमी देखते हैं और प्रसन्न होते हैं। यही वह भारत है जिसकी उन्हें उम्मीद थी। वे मुझे बताते हैं कि कोचीन बहुत ज़्यादा व्यावसायिक है। वे मुझसे पूछते हैं कि मद्रास और बैंगलोर के लोग पश्चिम की इतनी नकल क्यों करते हैं। वे हमसे क्या करवाना चाहेंगे? चरखे पर धागा कातना, लालटेन की रोशनी में पढ़ना और कोक की जगह छाछ पीना? हम सिर्फ़

इसलिए अंधकार युग में नहीं रह सकते क्योंकि इससे माहौल में इज़ाफ़ा होता है।

'मेरा एक छात्र था जो ऐसे गिगाव लेकर आया था जैसे हम अभी भी वास्को दा गामा के समय में अटके हुए हों। किसी ने उसे बताया होगा कि अगर आप मूल निवासियों को कुछ गहने देते हैं, तो वे जीवन भर आपके गुलाम रहेंगे। वह शायद एक हज़ार रबड़ और बॉलपॉइंट पेन लेकर आया होगा, और उसने हर किसी को दो-दो दिए जो उसे मिला। बात यह थी कि उसे लगा कि ऐसा करके वह एहसान खरीद रहा है। मुझे आखिरकार उसे ऐसा करने से मना करना पड़ा; वह खुद को शर्मिंदा कर रहा था। दूसरे छात्र और स्थानीय लोग उसे रबर साहिब कहते थे।'

Machine Translated by Google

माया चुप है.

'मुझे यह पसंद नहीं है जब तुम इस तरह की बातें करते हो, कोमन। यह तुम्हें शोभा नहीं देता। तुम रूखे हो, तुम अहंकारी हो, तुम मूर्खता बर्दाश्त नहीं करते। मैं तुम्हारे बारे में यह सब जानता हूँ, और मैंने हमेशा सोचा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम सामान्यता बर्दाश्त नहीं कर सकते। लेकिन तुम कभी कड़वे नहीं रहे...कड़वाहट असंतोष की बू आती है। क्या तुम जीवन से असंतुष्ट हो, कोमन?'

मैं उसकी बातें सुनता हूँ। मुझे पता है कि मेरी यह आलोचना राधा-क्रिस की स्थिति से चिढ़कर पैदा हुई है। और इस बात की लाचारी कि हमारा साथ-साथ बिताया गया समय खत्म होने वाला है। मैं उस किस्मत पर चिल्लाना और गुस्सा करना चाहता हूँ जो मेरी पत्नी को मुझसे दूर ले जा रही है।

मुझे उसकी आवाज़ का स्वामित्वपूर्ण लहजा पसंद है: मुझे यह पसंद नहीं है जब आप इस तरह से बात करते हैं, कोमन।

'हमारी शादी को अभी एक दिन ही हुआ है और तुम अभी से मुझमें कमियाँ निकालने लगे हो।' मैं हँसती हूँ।

माया खिलखिलाकर हंसती है। 'मैं हूँ, है न?' रात को मैं
माया के बगल में लेटकर उसे सोते हुए देखता हूँ। कल वह सो जाएगी।
और मैं अपनी पुरानी जिंदगी में लौट जाऊंगा।

मुझे तब डर लगता है। यह एक ऐसा डर है जिसे मैंने पहले कभी नहीं जाना। ऐसा नहीं है कि मैं डर से परिचित नहीं हूँ। मैं डर से घिरा हुआ हूँ, अलग-अलग तरह के डर से। किसी से जुड़े न होने का डर। वह डर जो किसी निर्णय के साथ आता है: क्या मैं सही कर रहा हूँ? वह डर जो हर कलाकार महसूस करता है- क्या मैं अपनी कला की अपेक्षाओं को पूरा कर पाऊँगा? क्या मैं इसे बार-बार कर पाऊँगा?

लेकिन अकेले होने का डर कभी नहीं रहा। मैंने पहले कभी अकेलापन महसूस नहीं किया। मैं हमेशा अकेले रहने में संतुष्ट था। मुझे कभी किसी की या किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ी। मेरी कला ही काफ़ी थी।

अब, चूंकि मेरी कला मुझसे कम मांग करती है, इसलिए मुझे अकेले रहने में डर लगता है।

मैं राधा के बारे में सोचता हूँ। श्याम वापस आ गया है। वह कैसे सामना कर रही है? मुझे चिंता है कि क्रिस का मोहभंग जल्द ही उनके रिश्ते में भी आ जाएगा। फिर क्या? वह चला जाएगा, धूल का एक निशान भी नहीं छोड़ेगा, और वह ही पीड़ित होगी। मुझे उसका ध्यान आकर्षित करना होगा। मुझे उसके मूल प्रश्न का उत्तर देना शुरू करना होगा। कलाकार और आदमी। क्या मैं एक या दो व्यक्ति हूँ?

कुछ साल पहले, एक कथकली नर्तकी के बारे में एक फिल्म बनाई गई थी। इसमें अंतर्राष्ट्रीय क्रू और स्टार कास्ट थी। लेकिन यह बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई। मैंने सुना है कि मनोरंजन की उम्मीद में सिनेमाघर जाने वाले लोगों के लिए यह बहुत गंभीर फिल्म थी।

एक दिन जब मैं संस्थान गया था, तो मेरी मुलाक़ात एक पत्रकार से हुई जो अक्सर नृत्य और नर्तकियों पर लिखते थे। कलाधरन को कथकली का पर्याप्त ज्ञान था।

Machine Translated by Google

वह मुझसे विभिन्न प्रदर्शनों के गुण-दोषों के बारे में चर्चा करने के लिए पर्याप्त थे।

'क्या तुमने फिल्म देखी?' उसने मुझसे पूछा।

'नहीं,' मैंने कहा। 'क्या तुमने ऐसा किया? मुझे एक अजीब सी अनिच्छा महसूस हो रही है। मैंने सुना है कि यह बहुत ज़्यादा है
जनता के लिए गंभीर। मुझे लगता है इसका मतलब है कि फिल्म में कुछ गहराई है?'

उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। उसके होंठ मुस्कुराहट में मुड़ गए। 'इसमें बिलकुल भी गहराई नहीं है। यह केवल गहराई का एक अभिनय है, अगर आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है।' मैं

मुस्कुराया। मैं पूरी तरह से समझ गया। मैंने इसे पहले भी होते देखा था। कला के काम को गूढ़ और विशिष्ट बनाने के लिए जटिलताएँ पेश की जाती हैं। और फिर भी, जैसा कि हम कला के अभ्यासी जानते हैं, ऐसे प्रयास केवल सतह को छूते हैं और इससे भी बदतर, दिखावटी होते हैं ... और एक कलाकार चाहे जितना भी प्रयास कर ले, उस कला के काम की क्षमता कभी भी सामान्य की परिधि से ऊपर नहीं उठ पाती।

यही बात मुझे परेशान करती है। क्रिस मेरे जीवन को असाधारण मानता है। उसने मेरे बारे में एक नर्तक के रूप में बहुत कुछ सुना है, और वह सोचता है कि केवल एक असाधारण शुरुआत और अस्तित्व से ही ऐसी कलात्मकता उभर सकती है। शायद यही कारण है कि मैंने अपने जीवन की शुरुआत को इतना गीतमय और जोश से भरा बनाया। कहानी के लिए मेरा पुरप्पाद, मेरे जीवन की कहानी की शुरुआत, इसे अनुशंसित करने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन अब समय आ गया है कि मैं उसे एक वेशकारन के रूप में अपने जीवन के बारे में बताऊँ और मुझे डर है कि इस वेशकारन का जीवन उसके द्वारा निभाए गए चरित्रों से तुलना नहीं करेगा। मैं देवताओं और राक्षसों के साथ कैसे प्रतिस्पर्धा कर सकता हूँ? या यहाँ तक कि वीर नश्वर लोगों के साथ भी? मेरा जीवन ऐसी ऊँची ऊँचाइयों या नारकीय गहराईयों से विलक्षण रूप से रहित है।

मैं माया की ओर मुड़ता हूँ। मैं उसकी बांह पकड़ता हूँ और उसे अपने चारों ओर लपेटता हूँ। आज रात, मेरे पास यह है। उसकी बाहों की गर्माहट में, मुझे लगता है कि मैं अपने डर को भी व्यक्त कर सकता हूँ।

मेरे साथ रहो और मेरी बात सुनो, मैं क्रिस को बताऊँगा। मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ जो अपनी कला के कारण असाधारण बना हूँ। मेरे जीवन की इस कहानी में, शायद आप जान पाएँगे, जैसा कि मैं बताऊँगा, कि कैसे मेरी कला ने मेरे विचारों और जीवन पर राज किया, कैसे इसने मुझे मेरे गुप्त भय की सीमाओं से बाहर निकलने में मदद की। अंत में, यही मायने रखता है। कला किसी के अस्तित्व को अर्थ प्रदान करती है।

तो फिर, यह कैसे शुरू हुआ।

Machine Translated by Google

1952–1960 आगे बढ़ना

नदी का एक नाम था। मेरा भी एक नाम था।

हाई स्कूल में रमन मेनन ने अपने चश्मे के ऊपर से देखा और कहा, 'कोमन।
अगर मैं इस मुहावरे का इस्तेमाल करूँ तो यह एक पालतू नाम है। क्या उसका कोई उचित नाम नहीं है?
और उसका सरनेम क्या है?' मेरे पिता ने अपनी आँखें

सिकोड़ लीं। पिछले कुछ दिनों से मैं उनके साथ था, इसलिए मुझे उनकी इस नज़र का मतलब पता था।

'उसका नाम कोमन है, जिसमें कोई पूंछ, टैग या प्रत्यय नहीं है।' मेरे पिता ने धीरे से कहा।

हेडमास्टर, जो शोरनुर की गर्मी में भी काम करने के लिए गहरे रंग का सूट पहनते थे, का चेहरा पीला पड़ गया। मुझे लगा कि मेरी पीठ में ठंडक फैल गई है। वह हेडमास्टर थे, लेकिन मेरे पिता ने उन्हें एक मूर्ख लड़के की तरह पेश किया।

'कोमन,' उसने रजिस्टर में लिखा। 'उम्र?' तो मैं वहाँ था। बिना किसी

टैग, पूंछ या प्रत्यय के कोमन, बारह साल की उम्र, एक स्कूल में दाखिला और एक नया जीवन। एक तैयार परिवार के साथ: पिता, माँ, दो छोटे भाई। और एक नदी जिसने मुझे गोद में उठा रखा था।

मुझे खुश होना चाहिए था। लेकिन मुझे इस 'मैं' से लड़ना था। जब मैंने खुद को कोमन कहा था, तो मुझे पता था कि कोमन कौन है। मैंने कोमन से कोई सवाल नहीं पूछा। मैंने स्वीकार किया कि कोमन एक लड़का था जिसकी माँ मर चुकी थी और जिसका पिता कहीं और रहता था क्योंकि उसे कमाने के लिए कुछ था। मैंने खाया, पिया और सोया, शौच और पेशाब किया, दौड़ा और तैरा, सपने देखे और प्रार्थना की। मैं कोमन लड़का था, दुनिया के लाखों लड़कों में से एक।

अब अचन ने निर्णय कर लिया था कि कोमन को 'मैं' बनना ही होगा।

और इस 'मैं' को मुझे जानना था। इसलिए मैंने खुद के कुछ हिस्से इकट्ठे किए। छिटपुट टिप्पणियों और बातचीत से, मेरी सौतेली माँ से जिन्हें मैं अम्मा कहती थी, उनकी नज़रों से जब उन्हें लगता था कि मैं नहीं देख रही हूँ और मेरे भाइयों के जिज्ञासु सवालों से मैंने 'मैं' को आकार दिया।

जब अचन और मैं कैकुरुस्सी गए, जहाँ मेरी माँ और भाई थे, तो मेरे पिता ने मुझे कार में इंतज़ार करने के लिए कहा। वह घर की सीढ़ियों से ऊपर गए, जहाँ एक मोटी औरत खड़ी थी, जिसका चेहरा मीठा था। उसकी नाक की नथनी में एक लाल पत्थर था। खून की एक बूँद की तरह, वह फीका लाल रत्न उसके पीले चेहरे पर रंग का एकमात्र धब्बा था। 'वह कहाँ है?' उसने महिला से पूछा।

वह मुस्कुराई। 'आराम कर रही हूँ। मैं उसे बता दूँगी कि तुम यहाँ हो।' एक और महिला दरवाज़े से

बाहर निकली। वह मोटी थी, और जब उसने अचन को देखा तो उसके मुँह पर मुस्कान आ गई। उसने भी झिझकते हुए मुस्कुराहट लौटाई। 'मैं

Machine Translated by Google

मुझे आपसे कुछ कहना है,’ उन्होंने कहा।

तब मुझे पता चला कि मेरे पिता ने कभी भी मेरे अस्तित्व का जिक्र नहीं किया था।

मेरी सौतेली माँ एक अच्छी महिला थी। या शायद वह जानती थी कि विरोध करना व्यर्थ है और इसलिए उसने बिना किसी आरोप-प्रत्यारोप के मेरी मौजूदगी को स्वीकार कर लिया। एक दिन मैं लगभग अनाथ हो गया था। अगले दिन मैं एक परिवार वाला लड़का था।

बाद में मैंने उसे घर की महिला पारू कुट्टी से कहते सुना, जिसका चेहरा उसकी नाक की नथनी से गुलाबी रंग में रंगा हुआ था, 'वह शादीशुदा हुआ करता था। वह मर गई। मुझे पता होना चाहिए था कि उसके जैसे आदमी का अतीत होगा।' 'वर्तमान में रखैल से बेहतर है कि भूतपूर्व पत्नी हो।' महिला

की आवाज़ में ऐसा लग रहा था कि वह एक स्त्री है।
मानो उसने कच्चे करेले का टुकड़ा चबा लिया हो।

मुझे तब कुछ राहत मिली। मेरी माँ एक पत्नी थी। मैं कमीना नहीं था।

मेरे छोटे भाई सात और पाँच साल के थे। जब मेरे पिता ने उन्हें मुझसे मिलने के लिए बुलाया तो वे मुझे घूरने लगे। पहले तो वे कुछ नहीं बोले। फिर बड़े भाई ने पूछा, 'क्या तुम कंचे खेलना जानते हो?'

मैंने सिर हिलाया। मुझे फिर से राहत मिली। मैंने कंचे खेले। मैं पेड़ से आम को छीन सकता था। मैं पेड़ों पर चढ़ सकता था। मैं तैर सकता था और पानी के नीचे अपनी सांस रोककर 69 तक गिन सकता था। मैं भाई बन सकता था।

बड़े बेटे मणि ने कहा, ‘ये देखो।’ उसने लकड़ी के मोज़ों की एक जोड़ी की ओर इशारा किया।

'वेल्लियाम्मा,' उसने कहा। 'चलो उनके साथ खेलते हैं। वह वास्तव में हमारी माँ की बड़ी बहन नहीं है - वह एक चचेरी बहन है - लेकिन हम उसे इसी नाम से पुकारते हैं।'

'ये किसके हैं?' मैंने पूछा, और फर्श पर रखे चप्पलों में पैर रखते हुए, जिन्हें मैं पहन सकती थी।

'उसके पति का,' छोटे बाबू ने कहा।

'वह कहाँ है?' मैंने चलने की कोशिश करते हुए पूछा।

दोनों लड़कों ने एक दूसरे की तरफ देखा। 'उसकी नई पत्नी है। वे दोनों वहीं रहते हैं,' मणि ने सड़क के उस पार इशारा करते हुए फुसफुसाया।

मैं रुक गया। लकड़ी के मोज़े भारी थे, लेकिन मुझे हल्कापन पता था। तो यह कुछ ऐसा था जो पुरुष करते थे। अतीत को त्यागें और एक नए भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ - भले ही अतीत में पत्नियाँ और बच्चे हों। मोज़ों के मालिक ने ऐसा किया था, और मेरे पिता ने भी। इसका मेरी माँ से कोई लेना-देना नहीं था। यह वही था जो पुरुष करते थे।

मैंने अपने भाइयों की तरफ देखा। मणि का चेहरा पक्षियों के झुंड जैसा था। वह कभी शांत नहीं होता था, एक भाव से दूसरे भाव में बदलता रहता था। उसकी आँखें बड़ी और सिकुड़ी हुई थीं, उसके नथुने फूले हुए थे, उसकी नाक पर झुर्रियाँ थीं, उसका मुँह हँसी की आवाज़ में खुल जाता था या फिर एक अनोखी मिठास भरी मुस्कान में चौड़ा हो जाता था। उसके दाँत चमक रहे थे; उसके माथे पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं, जिसे उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से पोंछा। वह अपनी उम्र के हिसाब से लंबा था और उसके बीच में थोड़ा सा पेट निकला हुआ था। मैं बहुत भूखा हूँ, वह पूरे दिन यही कहता रहा, और बाद में जब वह बड़ा हुआ, तब भी वह यही सोचता रहा

Machine Translated by Google

जीवन का आह्वान। एक भूख जो कभी तृप्त नहीं हुई। एक लालच जो और अधिक की मांग करता था
अधिक।

इसके विपरीत, बाबू छोटा और दुबला-पतला था, उसका नुकीला चेहरा एक भाव में स्थिर रहता था, और उसकी आँखें इधर-उधर भटकती रहती थीं। जब आप बाबू के चेहरे को देखते थे, तो आपको डर का एहसास होता था। ऐसा लगता था जैसे आप जहाँ भी जाते थे, एक आँख आपके साथ चलती थी, लगातार देखती रहती थी, कुछ भी छूटने नहीं देती थी, जबकि दूसरी सीधी और स्थिर दृष्टि से देखती रहती थी, लगातार आकलन करती रहती थी। वह अपना खाना उठाता था और आसानी से रोता था। अगर उसकी मर्जी नहीं चलती, अगर उसे खतरा महसूस होता, अगर वह कोई खेल हार जाता, तो वह अपनी छोटी, पतली टाँगों पर दौड़ता था, उसके गालों पर आँसू बहते रहते थे और उसे कोई कहानी सुनानी होती थी। उसकी कहानियाँ लगभग हमेशा मणि को मार खाने के लिए मजबूर कर देती थीं। कभी-कभी मणि को यह भी नहीं पता होता था कि उसे किस बात की सज़ा दी जा रही है। लेकिन वह बिना किसी शिकायत के इसे सह लेता था, उसे यकीन था कि वह पिटाई का हकदार था, अगर इस काल्पनिक अपराध के लिए नहीं, तो कुछ दिनों पहले किए गए एक वास्तविक अपराध के लिए, जिसके लिए उसे सज़ा नहीं मिली थी। वे मेरे भाई थे और जब वे मुझे एटा कहते थे, तो मुझे गर्व और जिम्मेदारी का एहसास होता था। मेरे भाई, मेरे छोटे भाई, मैं सोचता था। लेकिन मुझे पहले से ही पता था कि मेरा पसंदीदा कौन होगा।

हम शोरनुर में अपने पिता के घर वापस चले गए। यह छुट्टियों का समय था और हम पूरे दिन खेलते रहे। कभी-कभी मैं अपने पिता की नज़र मुझ पर पड़ती और मुझे शर्मिंदगी महसूस होती। मुझे आश्चर्य होता कि उन्होंने क्या देखा। शाम को, ट्यूटर मुझे मलयालम और बाकी सब कुछ सिखाने के लिए आता था जिससे मुझे रमन मेनन के स्कूल में फिट होने में आसानी हो।

एक दिन, जब मैं और मेरे लड़के नहा रहे थे, मैंने महसूस किया कि वे मेरे जननांगों को घूर रहे हैं।
मैंने पूछा, 'क्या यह गलत है?' 'यह आपके मामले से कुछ अलग नहीं है!'

मेरे भाई एक दूसरे की तरफ़ देखते थे। वे ऐसा अक्सर करते थे, शब्दों को निगलते हुए और
षड्यंत्रकारी नज़रों से विचारों का आदान-प्रदान।

‘क्या यह सब वहाँ है?’ बाबू ने पूछा। उसने मणि की तुलना में अधिक आसानी से अपनी बात कह दी।

'क्या मतलब है तुम्हारा?' मैंने अपना लिंग ऊपर उठाते हुए पूछा।

वे दोनों मेरे लिंग की जांच करने के लिए आगे झुके। 'वह सही कह रहा है,' मणि ने बाबू से कहा। 'यह सब वहाँ है। तो अम्मा का क्या मतलब था जब उन्होंने हमसे पूछा कि पता लगाओ कि टिप गायब है या नहीं?' मैंने मुँह फेर लिया। मुझ पर एक बड़ा भारीपन छा गया। मैं कौन था? किस तरह का

क्या मैं ऐसा प्राणी हूँ कि मेरे लिंग का सिरा गायब हो गया?

फिर मणि ने मुझे गुदगुदी करना और खिलखिलाना शुरू कर दिया, मैं लिंग के लापता सिरे के बारे में सब भूल गया।

स्कूल शुरू हुआ। मैं दूसरे दर्जे में था जब मुझे पता चला कि मैं कभी भी प्रतिभाशाली नहीं हो सकता, लेकिन मैं औसत से बेहतर था। अचन ने मेरी पीठ थपथपाई।

Machine Translated by Google

सिर हिलाया और कहा, 'बहुत बढ़िया। लेकिन अंकगणित का क्या?' मैं मुस्कुराया। 'यह

काफी सरल है,' मैंने कहा, इस आदमी को खुश करने में सक्षम होने के लिए खुश था, जिसके बारे में मेरे भाइयों का दावा था कि वह शायद ही कभी खुश होता है।

उन्होंने फिर से मेरे सिर पर थपथपाया। 'अच्छा। व्यवसाय चलाने के लिए, आपको यह करना होगा कि

संख्याओं पर विजय प्राप्त करें।'

नवंबर में मेरी उम्र तेरह साल हो गई। एक बड़ा लंच था जिसमें सभी को आमंत्रित किया गया था। मैंने सुना कि अचन ने अम्मा से कहा, 'यह पहली बार है जब मैंने उसका जन्मदिन मनाया है।' 'मैं तेरह साल पीछे हूँ, इसलिए हमें कोशिश करनी चाहिए कि जो साल छूट गए हैं, उनकी भरपाई हो जाए। मैं उसकी माँ और उसके प्रति बहुत आभारी हूँ।' मेरे पिता ने एक जौहरी से मेरे लिए सोने की चेन बनवाई और दर्जी ने मेरे लिए नए कपड़े लाकर दिए। मेरी जीभ

दावत के कई स्वादों से भर गई और मेरा दिल खुशी से झूम उठा। मेरे पिता मुझसे प्यार करते थे। मेरे पिता अपनी पत्नी, मेरी माँ से प्यार करते थे।

अगले दिन, मेरे जीवन के इस शांत तालाब में एक पत्थर गिरा। हसन मेरी बगल वाली बेंच पर बैठ गया। उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'कल मेरे भाई का सुन्नत कल्याणम है।'

कल्याणम शब्द सुनते ही मेरे कान खड़े हो गए। मैंने मुस्कुराते हुए पूछा, 'क्या वह शादी के लिए बहुत छोटा नहीं है?'

'ओह, यह शादी नहीं है। यह निकाह है! यह उसका खतना है। इस्लाम के सच्चे अनुयायियों की चमड़ी चीर दी जाती है। यह बहुत दर्दनाक होता है, इसलिए वे उसके मुंह में पोरी भर देते हैं ताकि वह फूले हुए चावल के बीच से चिल्ला न सके, और फिर यह हो जाता है।

बहुत दर्द हो रहा है, लेकिन उसके बाद बिरयानी लंच भी होगा। अगर तुम्हारे पिता तुम्हें आने देंगे तो तुम्हें आना ही होगा,' हसन ने कहा।

मैंने कुछ नहीं कहा। मुझे लगा कि मणि और बाबू मेरे लिंग को देख रहे हैं। मुझे लगा कि अम्मा उन्हें लिंग की जांच करने के लिए कह रही हैं। मुझे लगा कि नौकरानी कह रही है, 'यह आश्चर्य की बात है कि उसने हमारी प्रार्थना इतनी आसानी से समझ ली।' मैंने सोचा था कि उसका मतलब मेरे स्वर से था।

मैंने अपने अस्तित्व को आकार देने के लिए जो कुछ भी उपयोग किया था, उसमें अचानक कोई सच्चाई या वैधता नहीं रही।

उस रात हम एक मंदिर में गए। मैं पहले कभी किसी मंदिर में नहीं गया था। मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक साइनबोर्ड लगा था जिस पर लिखा था: गैर-हिंदुओं का प्रवेश वर्जित है।

मैंने अपने पैर पर एक दबाव जैसी पकड़ महसूस की। मैंने देखा कि अम्मा ने उसे देख लिया था।

मुझे संकोच हो रहा था। मैंने महसूस किया कि अचन का हाथ मेरी पीठ के निचले हिस्से पर है, जो मुझे आगे की ओर धकेल रहा है।

मुझे अचानक याद आया कि मैरी पैटी ने एक बार क्या कहा था। उन्होंने कहा, मेरे पिता बाइबल को जितना जानते थे, उतना कोई और नहीं जानता था। मैंने मान लिया था कि मेरे पिता भी नाज़रेथ के बाकी सभी लोगों की तरह ईसाई थे। फिर मुझे पता चला कि वे ईसाई नहीं थे।

Machine Translated by Google

मेरी माँ के बारे में कभी किसी ने बात नहीं की। ऐसा लगता था कि कोई भी बात करना नहीं चाहता था। मैरी पैटी, डॉक्टर और अब अचन। जब मैंने पूछा, तो उन्होंने कहा, 'क्या कहना है?' 'वह एक छोटी लड़की थी जो दुर्घटना में मर गई थी।' अब मुझे पता चला कि वे इतने संक्षिप्त क्यों थे। उन्हें नहीं पता था कि और क्या कहना है।

कि मेरी माँ मुसलमान थी। कि मेरा कोई धर्म नहीं था जिसे मैं अपना कह सकूँ। कि मैं वह 'मैं' नहीं था जिसे मैं जानता था।

यही कारण था कि मुझे बिना किसी टैग, पूंछ या प्रत्यय के कोमन बनना पड़ा।
मेरा दिल मंदिर परिसर में गूंज रहे ढोल की थाप से भी तेज धड़क रहा था।

मैंने अपने पिता को बुदबुदाते हुए सुना, 'तुम उसे क्या बता रहे थे?' मैंने देखा कि वह अम्मा को घूर रहे थे।
उनके चेहरे पर एक दुखी भाव था। 'कुछ नहीं। मत करो।
मुझे दोष दो! मैंने कुछ नहीं कहा.'
अचन की आँखें सिकुड़ गईं। 'चुप!' उसकी फुफकार हवा में गूंज उठी।
'जब से वह आया है, तुम अलग हो गई हो। क्या बात है? क्या तुम चाहती हो कि वह यहाँ होती? मेरी तरफ देखो। मैं देवयानी हूँ। सादिया नहीं, या जो भी उसका नाम था। मैं वह नहीं हूँ। मैं उसकी तरह नहीं हो सकती।'

मैं आगे बढ़ गया। मैं उनके झगड़े में नहीं पड़ना चाहता था।
मणि और बाबू दौड़कर आए। उन्होंने आग्रह किया, 'चलो।' 'प्रदर्शन कभी भी शुरू हो जाएगा।' बीच में एक ऊंचे मंच पर एक बड़ा सा दीया रखा था। बत्तियाँ जल रही थीं।

दो आदमी एक बहुरंगी रेशमी कपड़ा पकड़े हुए थे। ढोल की थाप ने सारा शोर दबा दिया। मेरी छाती में धड़कनें तेज़ हो गईं।

गाना शुरू हुआ। यह एक मंत्र था। इसका क्या मतलब था?
'यह क्या है?' मैंने मणि से पूछा।
'मुझे नहीं मालूम।' मणि ने कंधे उचका दिए।
मैंने गायन को अपने ऊपर हावी होने दिया। इससे क्या फर्क पड़ता था कि मैं समझ पाया या नहीं?

रात का अँधेरा, दीये की टिमटिमाती बत्तियाँ, परछाइयाँ, इंतज़ार। मुझे यकीन नहीं था कि यह सब क्यों हुआ, लेकिन इसने मुझे जकड़ लिया, कुछ होने की अनुभूति।

मैंने घंटियों की झनकार सुनी। मैंने सोचा कि नर्तक कैसे दिखेंगे। अचानक मुझे एक झलक मिली। पर्दे के पीछे दो राजसी प्राणी थे, उनके मुकुट विस्तृत थे और उनकी पोशाकें बहुत बड़ी थीं। जैसे ही ढोल बजना शुरू हुआ, उन्होंने पर्दा पकड़ लिया और उस पर नज़र डाली। उनके हाथ लयबद्ध गति से कपड़े को इधर-उधर हिला रहे थे।

मुझे फिर से उत्सुकता का एहसास हुआ।
जब अंततः पर्दा हटा दिया गया, मैंने उन्हें देखा, उन शानदार लोगों को

Machine Translated by Google

वे अपनी वेशभूषा में थे। गर्व से सजे मुकुटों के नीचे, उनके चेहरे हरे रंग से रंगे हुए थे। उनकी लाल रंग की आँखों में मोटी, काली रेखाएँ थीं और उनके मुँह लाल रंग के थे। जबड़े के साथ एक कान से दूसरे कान तक एक सफ़ेद फ्रेम था। उनके अस्तित्व का हर इंच एक छिपी हुई शक्ति से गूंज रहा था। वे दुनिया को जीतने, दुश्मनों को हराने और आशीर्वाद देने के लिए तैयार दिख रहे थे। मेरा दिल अपनी धुरी पर घूम गया। वे कौन थे? मनुष्य या देवता?

उन्होंने अपने आस-पास की हर चीज़ को बौना बना दिया: उन्हें देखने के लिए इंतज़ार कर रहे लोग
प्रदर्शन, गायन, और यहां तक कि मंदिर के भीतर देवता की भी पूजा की जाती है।
'एटा, तुम मुझे चोट पहुँचा रही हो,' मैंने बाबू को गिड़गिड़ाते हुए सुना।
अपनी उत्तेजना में मैं यह भूल गई थी कि उसका हाथ मेरे हाथ में था और मैं उसे दबा रही थी।

फिर मणि ने फुसफुसाते हुए कहा, 'एटा, अचन ने कहा है कि हमें जाना चाहिए।' मैं उस ओर मुड़ी,
जहाँ मेरे पिता खड़े थे। 'कृपया, कुछ मिनट और,' मैंने अपनी आँखों से विनती की।

उस रात मेरा मन एक पल से दूसरे पल में भटकता रहा। दिन में कई चीज़ें घटित हुई थीं: हसन। मेरी माँ। अम्मा का गुस्सा। मंदिर। ढोल बजाना। आखिरकार मैं नर्तकियों के पास पहुँचा, और वहीं सब कुछ शांत हो गया।

वे महान पुरुष जिन्होंने अपनी उपस्थिति की भव्यता से मेरी हर अनिश्चितता को दूर कर दिया था। क्या मैं भी उनमें से एक होता तो इतना ही महान होता?

अगला दिन शनिवार था और स्कूल की छुट्टी थी। मैंने मणि और बाबू से कहा, 'चलो कुछ करके देखते हैं।'

मैंने रसोई से हल्दी की जड़ और कोयला इकट्ठा किया। बाथरूम के पास दीवार के एक कोने से, जहाँ साबुन और कपड़े धोने की दूसरी चीज़ें रखी जाती थीं, मैंने कपड़ों को सफ़ेद करने के लिए इस्तेमाल होने वाला नील और पूजा के कमरे से थोड़ा सिंदूर लिया। मैंने मणि से कहा, 'मेरे लिए एक टोकरी, एक पुराना सफ़ेद कपड़ा और बाहर लटका हुआ वह लाल तौलिया लाओ,' जिस पर सबसे जटिल कामों के लिए भरोसा किया जा सकता था। जहाँ तक बाबू का सवाल है, मैंने उसे कार्डबोर्ड का एक टुकड़ा खोजने के लिए भेजा।

मेरे पिता का घर नया था। उसकी अटारी में अतीत का कोई अवशेष नहीं था। वह खाली और शांत था, जिसमें सूरज की किरणें और धूल फंसी हुई थी। और यहीं पर मैंने अपनी किस्मत गढ़ी।

मैंने हल्दी और नील का पेस्ट बनाया और एक अच्छा हरा रंग बनाया। अपने मन में चेहरों को फिर से बनाने की कोशिश करते हुए, मैंने इसे अपने चेहरे पर लगाया। मैंने अपनी आँखों के चारों ओर चारकोल खींचा और अपने मुँह के चारों ओर रंग बनाने के लिए सिंदूर को पानी में मिलाया। मैंने फ्लैट टोकरी के तल में एक छेद काटा और इसे अपनी कमर के चारों ओर लपेटा। मैंने अपने चारों ओर एक कपड़ा लपेटा और अपनी गर्दन के चारों ओर लाल दुपट्टा लटकाया। मैंने कपड़े को काटा

Machine Translated by Google

नर्तकियों ने अपने जबड़े के चारों ओर जो फ्रेम पहना था, उसके आकार का कार्डबोर्ड। मैंने पंखे के आकार के टुकड़े के दोनों छोर पर दो छेद किए, उनमें से धागे के दो टुकड़े निकाले और उन्हें अपने कानों के चारों ओर लपेट लिया। फिर मैंने अपने पास मौजूद शीशे के टुकड़े में खुद को देखा। मैं वह मनुष्य-देवता नहीं था जिसे मैंने कल देखा था। लेकिन मैं वह 'मैं' नहीं था जिसे मैं जानता था।

मैं कोई भी हो सकता हूँ। मैं भगवान या दानव हो सकता हूँ। मैं, कोमन, उम्र तेरह, बिना किसी
टैग, पूंछ या प्रत्यय, एक चेहरा था जिसे मैं पहचान सकता था।

'यहाँ क्या हो रहा है?' अचन ने अटारी में जाते हुए कहा।

उसने मेरी तरफ देखा। 'तुम क्या कर रहे हो?' उसने पूछा। उसकी आवाज़ धीमी और खोखली निकली, मानो चढ़ाई ने उसकी सारी हवा छीन ली हो।

'मैं...' मैंने कहा। 'मैं' शब्द मेरी जुबान से आसानी से निकल गया। 'मैं देख रहा था कि क्या मैं एक हो सकता हूँ
कथकली नर्तक।' 'और?' अचन

ने मेरी तरफ

देखा। मैंने उसे पहले कभी इतना उदास नहीं देखा था जितना अभी-अभी था।
'आप जानने के लिए बहुत छोटे हैं।' मैंने कोई जवाब

नहीं दिया।

'जब तुम बड़ी हो जाओगी तो शायद तुम अपना मन बदल लोगी,' उसने अटारी में अपने संदेह की सीमा को भरते हुए कहा।

'मैं नहीं जाऊँगा,' मैंने कहा। मैंने उसकी कोहनी को छुआ और बुदबुदाया, 'जब मैं
'वेशकरण, मैं जान जाऊंगा कि मैं कौन हूं।'

'इसमें जानने की क्या बात है? मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि तुम कौन हो।' आचन की आवाज़ ऊँची हो गई।

'ऐसा नहीं है।' मैंने कुछ देर रुककर कहा। वह जानता था कि मेरा क्या मतलब है, लेकिन विरोध करना उसका काम था।

दो वर्षों तक मैं अपने सपने से चिपका रहा और आकान को अपनी इच्छा थोपने का अधिकार नहीं दिया।

अक्सर बहस होती रहती थी। एक शाम, मैंने पास के एक मंदिर में हो रहे प्रदर्शन के बारे में सुना। जब सब सो रहे थे, तो मैं चुपके से वहाँ से निकल गया और पूरी रात वहीं रहा जब तक भोर नहीं हुई और प्रदर्शन समाप्त नहीं हो गया।

मेरे पिता क्रोधित हो गए। 'मैं यह बर्दाश्त नहीं करूंगा। मैं तुम्हें आवारा नहीं बनने दूंगा।' 'लेकिन, अचन,' मैंने विरोध किया, 'मैं कुछ भी गलत नहीं कर रहा था। मैं

तो बस नाटक देखना चाहता था।' 'तुम्हें मेरी अनुमति लेने की ज़रूरत नहीं पड़ी?' 'मुझे नहीं लगा कि तुम मुझे जाने दोगे,' मैंने कहा।

'जब तुम्हें पता था कि मैं इसे स्वीकार नहीं करूंगा, तो तुमने ऐसा क्यों किया?'
उंगलियाँ मेरे कंधे पर दबायीं।

'मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता,' मैंने कहा। 'जब मैं ढोल की आवाज़ सुनता हूँ, तो मुझे बस इतना पता होता है कि मैं बनना चाहता हूँ

Machine Translated by Google

'एक और

बार, उसने मुझे आईने में चेहरे के भाव बनाने का अभ्यास करते हुए पाया। 'तुम चेहरे क्यों बना रहे हो?' उसने पूछा।

'मैं चेहरे नहीं बना रहा हूँ,' मैंने कहा। 'मैं भावों का अभ्यास करने की कोशिश कर रहा हूँ।' 'भावों का अभ्यास करने की क्या

ज़रूरत है? क्या तुम जोकर बनने जा रहे हो?' 'नहीं।' मैंने अपना सिर हिलाया। 'मैं वेशकारण बनूँगा।' मेरे पिता ने अपनी हथेली को अपने माथे पर मारा। 'मैं

इस लड़के के साथ क्या करूँ? वह क्यों समझ नहीं पाएगा?' उन्होंने मुझे कंधों से पकड़ा

और मुझे आईने से दूर धकेल दिया। 'जाओ, अपने कमरे में जाओ और अपने बीजगणित पर काम करो। जीवन में अच्छा करने के लिए तुम्हें यही चाहिए। चेहरे बनाने की यह सुविधा नहीं। अपने दिमाग से यह विचार निकाल

दो। क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो?'

रमन मेनन ने मेरे पिता को बुलाया। 'अगर वह हमारी मदद नहीं करेंगे तो मैं उनकी मदद नहीं कर सकता। वह होशियार हैं और उनका दिमाग भी तेज है, लेकिन उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं है। क्या गड़बड़ है? मैंने उनसे पूछा है, जैसा कि उनके सभी शिक्षकों ने पूछा है, लेकिन वह बस इतना ही कहते हैं कि "मेरे पिता जानते हैं!"

'ऐसा क्या है जो वह हमें नहीं बताएगा? अगर हमें पता होता तो हम उसकी मदद के लिए कुछ कर सकते थे। आप कहावत जानते हैं: आप घोड़े को पानी तक ले जा सकते हैं, लेकिन बीस आदमी मिलकर भी उसे पानी नहीं पिला सकते। कोमन घोड़ा है।'

अचन ने मेरे चेहरे की ओर देखा। उसने आह भरते हुए कहा, 'वह कथकली सीखना चाहता है।' रमन मेनन ने अपने चेहरे को विकृत होने से बचाने की कोशिश की।

वह मेरी ओर मुड़ा। 'बहुत अच्छा। पहले मैट्रिकुलेशन कर लो।' 'बहुत देर हो जाएगी। मुझे कम से कम

दस साल तक पढ़ाई करनी होगी, तभी मैं मैट्रिकुलेशन कर पाऊंगा।'

मैंने कहा, 'मैं तो प्रदर्शन करने के बारे में भी नहीं सोच सकता।'

जब स्कूल का साल खत्म हुआ, तो अचन मुझे नदी के उस पार ले गया और इस तरह शुरू हुआ
वेश धारण करने वाले के रूप में मेरा संरक्षण।

मेरे दिन एक पैटर्न पर चलते थे। एक व्यवस्थित कार्यक्रम जिसमें मेरे शरीर की हर नस और मांसपेशी और विचार की हर नस का एक ही उद्देश्य था: मुझे खुद को बदलने में सक्षम बनाना।

'तुम्हें अपने आप में सिमट जाना चाहिए। अपने मन से सवाल पूछना बंद कर दो और यह मत पूछो कि ऐसा क्यों है। बाद में इन सबके लिए समय होगा। लेकिन अभी के लिए, तुम्हें अपने मन में संदेह को हावी नहीं होने देना चाहिए। जैसा मैं कहूँ वैसा करो और सिर्फ़ वैसा ही करो जैसा मैं कहूँ,' आशान ने वहाँ मेरी पहली सुबह को कहा।

आशान। उसका चेहरा पूरी तरह से समतल और छायादार था, उसका चौड़ा माथा, ऊँची गाल की हड्डियाँ और सख्त जबड़ा। आशान का चेहरा ऐसा था कि ऐसा लग रहा था कि वह कभी नहीं होगा

Machine Translated by Google

किसी भी तरह की अवज्ञा को बर्दाश्त नहीं कर सकता। फिर भी, उसकी आँखें उसे पहचान नहीं पाती थीं। वे सबसे कोमल आँखें थीं जो मैंने कभी देखी थीं। चमकीली, लेकिन कोमल। ज़्यादातर, वह हमारी हरकतों पर नाराज़गी में उन्हें सिकोड़ लेता था, और फिर वे हमारे शरीर पर रेंगती हुई काली चींटियों की तरह दिखती थीं, जो हमारी कमियाँ ढूँढ़ने पर आमादा थीं। आशान, हमारा शिक्षक, जिसकी आवाज़ उसकी हथेलियों की ताकत और उसकी छाती के विस्तार को झुठलाती थी।

आशान, जो छह फीट लंबा था और जिसे हर कोई एक ऐसे वेशकारण के रूप में जानता था, जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था, लेकिन...

'लेकिन किस लिए?' मैंने द्वितीय वर्ष के छात्र गोपालन से पूछा।

उन्होंने रहस्यमय लहजे में कहा, 'किसी न किसी दिन तुम्हें इसका पता चल ही जाएगा।'

उसका क्या मतलब था? मुझे पता था कि आशान का गुस्सैल स्वभाव किसी को भी परेशान कर सकता है।
उग्र हाथी एक उछलते हुए मेमने की तरह लग रहा था। क्या यह सच था?

एक सुबह, प्रारंभिक अभ्यास के दौरान, मेरी नज़र कलारी के बाहर एक पेड़ पर पड़ी। कक्षा तीन तरफ से खुली थी और उसके चारों ओर बड़े-बड़े पुराने पेड़ थे। पेड़ जो कई पक्षियों और गिलहरियों का घर थे। मुझे लगा कि मैंने नीले रंग की एक लकीर देखी है। क्या यह किंगफिशर था? मुझे एहसास ही नहीं हुआ कि मेरी लय लड़खड़ा गई थी।

मुझे तब पता चला जब मुझे लगा कि मेरी पिंडलियों पर कुछ चोट लगी है। दर्द बहुत भयानक था और मैं चिल्ला पड़ा। यह आशान की छड़ी थी, जिससे वह लकड़ी के ब्लॉक पर ताल बजाता था। मैं रुक गया। बाकी क्लास भी रुक गई।

आशान ज़मीन पर बैठे हुए एक छोटी सी छलांग के साथ उठ खड़ा हुआ। वह गुस्से से लाल-पीला और गुर्राता हुआ मेरी तरफ़ आया। 'तुम्हारा दिमाग कहाँ भटक रहा था, बेवकूफ़? अगर तुम अपनी बुनियादी तालम भी ठीक से नहीं गा सकते, तो तुम किस तरह के डांसर हो? लय। इसे कभी मत भूलना। तुम एक कदम चूक गए और तुमने सब कुछ बर्बाद कर दिया। क्या तुम समझ रहे हो?'

आशान मानो अपना गुस्सा रोक नहीं सका और उसने आगे बढ़कर मुझे थप्पड़ मार दिया।
'मैं तुम्हें देख रहा हूँ। क्या तुम्हें लगता है कि मैं नहीं जानता कि तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है? तुम्हें लगता है कि तुम्हें कथकली पसंद है और यही काफी है। नहीं, ऐसा नहीं है। तुम्हें इसके लिए कड़ी मेहनत करनी होगी, या फिर तुम सिर्फ़ एक शौकिया कलाकार हो जो कलाकार होने का नाटक कर रहा हो। एक सच्चा कलाकार वह होता है जो जानता है कि हर कदम में कला और शिल्प छिपा होता है। इसी तरह तुम अपनी शैली हासिल करते हो। अगर तुम मेरी उम्मीद के मुताबिक काम नहीं कर सकते, तो मैं तुम्हें यहाँ नहीं चाहता। क्या तुम समझ रहे हो?' मुझे लगा कि मेरी आँखें भर आई हैं। मैं पंद्रह साल का था और किसी ने कभी मुझे इतना अपमानित नहीं किया था। आशान ने एक पल के लिए मेरी तरफ़ देखा और फिर उसका ध्यान मेरे पीछे लाइन में खड़े एक लड़के पर चला गया।

'आह, तुम वहाँ हो। सुंदरन। सुंदर व्यक्ति, जो सोचता है कि एक सुंदर चेहरा एक सुंदर नर्तक बनने के लिए पर्याप्त है। मुझे लगता है कि आप वास्तव में सोचते हैं कि यह सच है और इसलिए आपको अभ्यास के नियमों का पालन करने की आवश्यकता नहीं है,' उन्होंने कहा, आगे बढ़ते हुए

Machine Translated by Google

सुंदरन की ओर। 'मैंने आज सुबह कन्नुसाधकम में तुम्हें मूर्ख बनते देखा। आँखों का अभ्यास सत्र तुम्हारी आँखों की मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए है। अगर तुम सोलह साल की लड़की की तरह पलकें झपकाना पसंद करती हो, तो तुम नाटक मंडली में शामिल हो सकती हो। या किसी महिला के नृत्य का अध्ययन कर सकती हो। यह कथकली है। कथकली पुरुषों के लिए है। इसके लिए पुरुषों की ताकत और दृढ़ विश्वास की जरूरत होती है। जब तुम शर्मीली ललिता या कोमल दमयंती का अभिनय करती हो, तब भी तुम्हारी आँखों को उन सभी कठोरताओं को याद रखना होगा जो तुमने उन्हें दी हैं और उस प्रशिक्षण से एक महिला की आँखें बनना सीखोगी। लेकिन पहले, तुम्हारी आँखों को तुम्हारे मन की इच्छा के अनुसार काम करने के लिए प्रशिक्षित होना होगा। एक चौड़ी आँख अभिनय है। तुम एक भावना का चित्रण कर रहे हो। एक चौड़ी आँख केवल एक स्थिर अभिव्यक्ति है। कथकली में स्थिर अभिव्यक्तियों के लिए कोई जगह नहीं है।' मैंने फिर कभी एक कदम नहीं चूका। और उस दिन के अपमान के बावजूद, मैंने आशान के प्रति कोई द्वेष नहीं रखा या उससे नफरत नहीं की। मैं ऐसा कैसे कर सकता था? वह एक ऐसा वेशकारण था जिसने प्रत्येक चरित्र की अपनी व्याख्या

को एक ऐसा आयाम दिया जो कोई और नहीं दे सकता था। और फिर भी...जब वह प्रदर्शन करता था तो अनकहे शब्द उभर कर सामने आते थे। आशान जब प्रदर्शन करता था तो लगभग हमेशा नशे में रहता था।

वह कभी भी एक भी कदम चूकता नहीं था। उसकी मुद्राएँ बहुत ही शानदार थीं। उसकी व्याख्याएँ सबसे अधिक पांडित्यपूर्ण थीं। उसका जोश ज़बरदस्त था। लेकिन वह नियंत्रण की कसौटी पर खरा उतरता था। एक और छलांग और वह लड़खड़ा जाता, और हर बार जब वह प्रदर्शन करता, तो उसकी प्रतिष्ठा दांव पर लग जाती। 'जब वह जानता है कि वह सब कुछ बर्बाद कर सकता है, तो वह ऐसा क्यों करता है?' मैंने गोपालन से पूछा।

सुंदरन और मैं उसे देख रहे थे जब वह संस्थान में एक प्रदर्शन से पहले अपने चेहरे पर मेकअप लगा रहा था। आशान बाहर बैठा बीड़ी पी रहा था।
वह पूरी दोपहर शराब पीता रहा।

गोपालन ने कंधे उचका दिए। वह बात करने के लिए अनिच्छुक था। 'उसे बेहतर पता होना चाहिए। मैं बस इतना ही कह सकता हूँ।' आशान

मंच की पवित्रता के बारे में किसी और से बेहतर जानता था। इसलिए मुझे यह बात हैरान कर गई कि वह हर चीज को जोखिम में डालने की प्रवृत्ति रखता था।

दो दिन बाद, क्लास में आशान ने नाटक किया कि हममें से किसी ने उसे प्रदर्शन के बाद ग्रीन रूम में नशे में धुत्त नहीं देखा। वह हमारी आँखों में देखता और कहता, 'स्टेज पर, तुम वह नहीं हो जो तुम हो। यह तुम्हारी लय और अभिव्यक्ति में स्पष्ट होना चाहिए। प्रदर्शन करते समय मत सोचो, नहीं तो तुम्हारा प्रदर्शन सिर्फ़ दिमागी गतिविधि होगी। अपने शरीर को बोलने दो कि तुम कौन हो। अब तुम ब्राह्मण कुचेलन हो। मंच पर आने से पहले तुम्हें अपनी सोच और कल्पना से मुक्त हो जाना चाहिए।

'अभी मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि कुचेलन कैसे बना जाए। कल्पना करो कि तुम एक कंगाल हो। तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है, किसी चीज या किसी से कोई उम्मीद नहीं है। तुम्हारी एकमात्र उम्मीद

Machine Translated by Google

यह कि कृष्णा को याद होगा कि तुम स्कूल में दोस्त थे। और यह वह कमजोर कड़ी है जिससे तुम अपील करना चाहते हो। यह सब सोचकर तुम कृष्णा के पास जाते हो। तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें कहा है कि तुम उससे मदद मांगो। वह तुम्हें कुछ दे दे ताकि तुम अपने भूखे बच्चों को खिला सको। इसलिए तुम उसके पास जाते हो, लेकिन जब तुम उसे देखते हो, तो तुम्हें एहसास होता है कि तुम उससे कुछ नहीं मांग सकते। तुम्हारी सारी उम्मीदें तुम्हारे दिमाग में, तुम्हारी आँखों में हैं, लेकिन तुम उन्हें बोलने की हिम्मत नहीं करते। अब अपने जीवन में ऐसे ही किसी अनुभव के बारे में सोचो।' मैंने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। मुझे वह पहली बार याद आया जब मैं शोरनुर स्टेशन पर रेलवे पुल पर खड़ा था। एक कमजोर कड़ी को पकड़कर और फिर कुछ नहीं...

धीरे-धीरे, अगले आठ सालों में, मैंने वेश धारण करने के अलग-अलग पहलुओं को जाना। हाव-भाव और अभिव्यक्ति का मेल, जटिल फुटवर्क करना, फुर्तीला और जोशीला दोनों होना, बिना शब्दों के भावनाओं को व्यक्त करना, एक ही वाक्य में व्याख्या की परतें जोड़ना, खुद को एक कलाकार से एक किरदार में बदलना।

मैं अस्तित्व के नौ पहलुओं में बंधा हुआ था। प्रेम, घृणा, दुःख, क्रोध,
साहस, भय, घृणा, आश्चर्य, शांति।

शरीर और मन, धड़कन और शब्द के उस मिलन में, मैंने खुद को जाना। यादों और संभावनाओं को लुभाते हुए, सपनों और कल्पित घटनाओं का सहारा लेते हुए, मैंने उस किरदार को जीना सीखा जो मुझे बनना था। मैंने सीखा कि उस छद्म आवरण के नीचे, मैं ही किरदार था। मेरे लिए यही एकमात्र तरीका था।

घर से दूर रहने के वर्षों में बहुत कुछ बदल गया था। मणि और बाबू लगभग पुरुष थे। मणि एक लंबा, तगड़ा अठारह वर्षीय युवक था जिसकी गहरी, कर्कश आवाज उसके बैरल के आकार के सीने से निकलती थी और उसकी मूंछें घनी थीं। उसने मूंछों में सुगंधित तेल लगाया और उन्हें इस तरह कंघी किया कि वे उसके मुंह पर सज जाएं, काली, कंटीली और चमकदार, जिसके सिरे दोनों तरफ ऊपर की ओर मुड़े हुए थे। मणि को लगा कि ऐसी मूंछ रखने के कारण वह दो बार पुरुष हो गया है।

जहाँ तक बाबू का सवाल है, वह कभी भी मणि की शारीरिक सुंदरता की बराबरी नहीं कर सकेगा।
वह वही बच्चा बना रहा जो वह था। एक दुबला-पतला सोलह वर्षीय लड़का, जिसकी छाती धँसी हुई थी और जिसकी आवाज़ समझ नहीं पाती थी कि वह फुसफुसा रहा है या चिल्ला रहा है।
उसकी आँखें अभी भी भटकती रहती थीं, बावजूद इसके कि उसे सुधार के लिए चश्मा दिया गया था - जिसे उसने कभी नहीं पहना। वह अब हमारे माता-पिता के पास छिपकर नहीं जाता था। इसके बजाय, उसने अपनी जीभ का इस्तेमाल करके सबसे अटूट आत्मसम्मान को भी तार-तार कर दिया।

अम्मा अब भी वही मुस्कान मुस्कुराती थीं जो उनके चेहरे पर थी, लेकिन अब वह अचन को अपने ऊपर हावी नहीं होने देती थीं। जब उसकी राय उन्हें नापसंद होती थी, तो वह ऐसा कहती थीं, और उन्होंने उसे घूरना सीख लिया था। अचन पहले जैसा ही दिखता था, सिवाय इसके कि उसके बाल

Machine Translated by Google

उसके बाल सफ़ेद हो गए थे और जब वह कुछ दूर चला जाता था, तो वह सांस लेने के लिए रुक जाता था। वह अपने पैरों में दर्द की शिकायत करता था और लंबे समय तक चुप रहता था, जैसे कि वह ऐसी दुनिया में भटक रहा हो जहाँ हममें से किसी के लिए कोई जगह नहीं है। धीरे-धीरे, उसकी बातचीत में 'जब मैं तुम्हारी उम्र का था...' की चर्चा होने लगी। मैं साल में तीन बार छुट्टी के लिए संस्थान बंद होने पर घर चला जाता था। ओणम और क्रिसमस के दौरान दो छोटे ब्रेक और

गर्मियों के दौरान एक लंबा ब्रेक।

लेकिन मैंने खुद को पहले से कहीं ज़्यादा बाहरी महसूस किया। ऐसा नहीं था कि वे मेरी मौजूदगी का स्वागत नहीं करते थे, या मुझे अपने जीवन के तंत्र में शामिल नहीं करते थे। यह मैं ही था। मैंने पाया कि वे और उनकी रुचियाँ सीमित थीं।

वे इस तरह जीने में कैसे संतुष्ट हो सकते हैं? मैंने एक सिहरन दबा ली। उनके विचार शायद ही कभी सांसारिकता से ऊपर उठते थे: पिता का व्यवसाय और वे तीन बार खाना खाते थे, गपशप की छोटी-छोटी बातें और शहर में होने वाली घटनाएँ।

अम्मा ऐसी ही थीं, मैं समझ सकता था। आखिरकार, वह एक महिला थीं और महिलाओं के जीवन में रसोई और सुंदर गहनों से आगे जाने की जरूरत नहीं थी। मेरे भाइयों और पिताओं ने मुझे निराश किया। बाजार में एक नई पोमेड की उपस्थिति ने बाबू को खुशी से झूमने पर मजबूर कर दिया। खाने की मेज पर झींगा या टॉकीज में नई फिल्म के प्रदर्शन के अधिकार मिलने से मणि उत्साहित हो जाती थी। अचन के लिए, उसने अपनी कार में एक खरोंच के बारे में बताया जैसे कि वह नल हो जो दमयंती को लुभाने के बारे में सोच रहा हो, लगातार खुद से पूछ रहा हो, 'मैं क्या करने जा रहा हूँ?' कैसे वे तुच्छ और निरर्थक बातों पर भावनाओं को बर्बाद कर देते थे।

मैंने आशान को घर पर अपनी परेशानी के बारे में बताने की कोशिश की। आशान ने मुझे बहुत देर तक देखा और फिर आह भरी। 'तुम अपने लिए मुश्किलें खड़ी करने पर आमादा हो, मैं समझ गया। अभी के लिए, जैसा मैं कहूँ वैसा करो। हर सुबह, जब तुम दाढ़ी बनाओ, शीशे में देखो और कहो- मैं घमंडी नहीं बनूँगा। कथकली मेरी ज़िंदगी है, लेकिन दूसरों को भी अपनी ज़िंदगी जीने का हक है, जैसा वे ठीक समझें।

'यदि झींगा आपके भाई को ऐसा व्यवहार करने पर मजबूर कर दे जैसे कि वह नरकासुर हो और अपनी पत्नी को मोर के नृत्य के बारे में बता रहा हो, तो ऐसा ही हो।

'आप साधारण भावनाओं से अछूते नहीं रह सकते। जब तक आप यह नहीं जान लेते कि इंसान होना क्या होता है, आप नश्वर की भूमिका नहीं निभा सकते। क्या आप मेरी बात सुन रहे हैं? कोमन, कथकली से परे भी जीवन है। जितनी जल्दी आप इसे स्वीकार करेंगे, आपके लिए उतना ही बेहतर होगा।'

आशान ने जो कहना था, वह कह दिया, लेकिन वह भी मेरी तरह जानता था कि कथकली से परे हमारे लिए कोई जीवन नहीं है। यह हमारे लिए आशीर्वाद और अभिशाप दोनों था। जबकि हम महाकाव्य नायक थे, हम एक भव्यता, आत्मा की ऊंचाई, उस दुनिया से परे एक छलांग जानते थे जिसमें हम रहते थे; मनुष्य के रूप में, हम कुछ भी नहीं थे। इसलिए हमने उन साधारण मनुष्यों से दूर रहना चुना, जिनका हर दिन झींगा, फिल्म और मोटरकारों में डेंट से भरा हुआ था।

फिर भी, मैं अपने परिवार से प्यार करता था, और वे मुझसे। जबकि मेरे भाइयों और मेरे पास कुछ भी नहीं था

Machine Translated by Google

हम दोनों में एक जैसी समानता थी - शायद उन्हें मेरी दुनिया उतनी ही सीमित लगती थी जितनी मुझे उनकी - हम एक दूसरे से स्नेह से बंधे थे। और इस ज्ञान में कि चूँकि हमारे जीवन इतने अलग-अलग थे, इसलिए हमें कभी प्रतिद्वंद्वी या दुश्मन नहीं होना चाहिए। यही हमारे बंधन की ताकत थी।

वे, अचन, अम्मा, मणि और बाबू, मुझे प्रदर्शन करते देखने के लिए वेलिनेझी के पास एक छोटे से शिव मंदिर में गए। मुझे किरमिरा वधम के दूसरे भाग में धर्मपुत्रन बनना था। यह वह भूमिका नहीं थी जिसे मैं अपने पदार्पण के लिए चुनता, लेकिन यह पहला निमंत्रण था जिसे मुझे संस्थान की मंडली के सदस्य के बजाय एक व्यक्ति के रूप में प्राप्त हुआ था। यह एक तरह की मान्यता थी, मैंने खुद से कहा। मैं किरमिरा बनना चाहता था। एक ऐसा चरित्र जो आंशिक रूप से बुरा और आंशिक रूप से अच्छा हो। लेकिन आशान, जिन्होंने मंदिर बोर्ड को मेरा नाम सुझाया था, ने कहा, 'कट्ठी वेशम खेलने के लिए, आपको और अधिक भरने की जरूरत है। ठाढ़ी वेशम खेलते समय भी यही होता है। मुझे पता है कि वास्तविक जीवन में खलनायकों के पास पहचान के निशान नहीं होते हैं जो हमें उन्हें खलनायक के रूप में पहचानने में मदद करें। उनकी दुष्टता ही पर्याप्त बिल्ला है। लेकिन कथकली में, खलनायक प्रकृति को स्पष्ट करना पड़ता है तुम्हारा समय आएगा.'

मैंने सिर हिलाया। ओकू-जोश। नोकू-एक तीखी नज़र। अलार्चा-दहाड़। और पगारचा-एक प्रभावशाली कद। सबसे ज़्यादा, मैं तीखी नज़र को संभाल सकता था। बाकी के लिए, मैंने आशान पर भरोसा किया जब उसने कहा कि समय और अनुभव प्रदान करेगा।

'तुम सब आओगे न?' मैंने पूछा। मैं उन्हें खबर बताने के लिए घर गया था। जब मैं अंदर आया तो दोपहर का भोजन हो रहा था और मैं उनके साथ खाने की मेज पर बैठ गया।

'यह मेरा पहला असली वेशम है।' 'तुम
किसका किरदार निभाओगे?' अम्मा ने पूछा।

मैं झेंप गया। सवाल यह होना चाहिए था कि आप कौन होंगे? कथकली नाटक नहीं है; यह खेलने के बारे में नहीं है। कथकली होने के बारे में है। लेकिन अम्मा को यह अंतर समझ में नहीं आया।

मैंने कहा, 'धर्मपुत्रन।' 'वह कौन है?' बाबू
ने अपनी प्लेट में चावल भरते हुए पूछा।
आकार में, बाबू ने हम सभी के खाने से भी अधिक खाया।

'देखिए, यह महाभारत की कहानी है। पांडव पासे के खेल में अपना राज्य हार गए थे और वनवास पर थे। कहानी की शुरुआत पांडवों में सबसे बड़े धर्मपुत्र से होती है, जो अपनी पत्नी पांचाली को देखकर उसके लिए तरस खाता है और उसे गरीबी में धकेलने के लिए दोषी महसूस करता है।'

'ओह, अभी शुरू मत करो। हम यहीं सो जाएंगे,' बाबू ने बीच में टोकते हुए तली हुई सार्डिन को एक साइड प्लेट पर रख दिया। मैं तली हुई मछली की तेज़ी से खाली होती प्लेट को देखता रहा और

Machine Translated by Google

कुछ नहीं बोला। इतने समय बाद भी मुझे बाबू के अचानक बोलने के अंदाज की आदत नहीं थी।

मणि ने उसकी अशिष्टता पर हंस दिया, लेकिन मुझे उसके पास जाकर उसे देखने की तीव्र इच्छा हुई।
बाबू के चेहरे पर तमाचा मारा.

'एटा, कोई बात नहीं बाबू...हमें कहानी सुनाओ,' मणि ने कहा।

मैंने कहा, 'बाद में।' मैं पहले से ही सोच रहा था कि क्या मैंने उन्हें अपने धर्मपुत्रन से मिलने के लिए आमंत्रित करके कोई गलती की है।

'तो आपकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है?' अचन ने पूछा।

मैं सोच रहा था कि क्या मुझे उन्हें सच बताना चाहिए। फिर मैंने तय किया कि उन्हें तैयार करना बुद्धिमानी होगी। 'खैर, धर्मपुत्रन की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण और इतनी मेहनत वाली है कि आमतौर पर दो नर्तकियों की ज़रूरत होती है। आशान शुरू करेगी और मैं खत्म करूँगा।' 'तो क्या आपको राक्षस को मारना है?' मणि ने पूछा।

'नहीं, असुर राजा भीम द्वारा मारा जाता है।' 'फिर धर्मपुत्रन क्या करता

है?' 'चूंकि जब मैंने तुम्हें कहानी सुनाना शुरू किया था, तब तुम

कहानी जानना नहीं चाहते थे, इसलिए मेरा सुझाव है कि तुम प्रदर्शन देखने आओ और पता करो,' मैंने कहा। मैंने सोचा कि बाबू को अपनी दवा का स्वाद चखने से फायदा हो सकता है।

मणि हँसा। पिता मुस्कुराए। अम्मा ने प्लेटें साफ कीं और बाबू ने चुपके से मुझे गंदी नज़र से देखा। फिर अचन ने कहा, 'अच्छा, कम से कम तुम औरत का किरदार तो नहीं निभा रही हो...मुझे यह बर्दाश्त नहीं होगा। मेरा बेटा औरत की तरह कपड़े पहनता है और पूरी दुनिया के सामने औरत की तरह सजता है।'

बाद में मणि मेरे कमरे में आया। 'एटा,' उसने कहा, 'क्या तुम्हें कुछ चाहिए?' 'क्या चाहिए?' 'ताड़ी की तरह। इससे शायद तुम्हारा
मूड ठीक हो जाए।'

'ओह नहीं,' मैंने हँसते हुए विरोध किया। 'आशान को रखने में मुझे बहुत परेशानी होगी।

'मैं खुद को प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त रूप से शांत होने की चिंता किए बिना शांत हूं।'

मणि ने अपनी जेब से कंघी निकाली और अपने बालों को एक बार फिर से झटक दिया। फिर वह अपनी मूंछों को संवारने लगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसने कभी अपनी मूंछों को आराम दिया होगा।

'तो क्या तुम चाहोगी कि मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँ?' उसने आईने में मेरी आँखों से

देखा। उसका मतलब था, पार्थीपुरा कल्याणी की ओर।

मुझे लगा कि मेरा चेहरा लाल हो गया है। पिछली बार जब मैं घर आई थी, तो मणि ने फैसला किया था कि मैंने अपने कौमार्य का बोझ काफी समय तक झेल लिया है।

उन्होंने कहा, 'अगर आप यह नहीं जानते कि रोमांस क्या होता है तो आप रोमांटिक हीरो कैसे हो सकते हैं?'

'लेकिन यह प्यार नहीं है,' मैंने कमज़ोर स्वर में कहा था।

'यह प्यार का एक हिस्सा है। वासना इसका भाई है। मैं आपको एक बात बता दूं: जब वासना आपको भर देती है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कौन है। आपके सामने जो महिला है, वह आपके लिए सबसे अच्छी है।

Machine Translated by Google

तुम प्यार करते
हो।' 'लेकिन एक वेश्या?'

'और कौन है?' मणि ने कहा। 'इसके अलावा, आपको उसके गर्भवती होने की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। यह पुराना समय नहीं है जब आप नौकर के साथ सो सकते हैं और इससे बच सकते हैं। याद रखें कि आपके आशान ने भावनाओं को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए अनुभव का उपयोग करने के बारे में क्या कहा था? जब आपने कभी चुदाई नहीं की है तो आप कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि आप ऐसा दिखेंगे जैसे आपने चुदाई की है?'

मैं मुस्कुराया। जब मणि ने गंदी भाषा का इस्तेमाल किया, तो वह एक छोटे लड़के की तरह लग रहा था, जो शब्दों की गंदी बातों का आनंद केवल इसलिए ले रहा था क्योंकि इससे वह बड़ा लग रहा था। मैंने खुद को राजी होने दिया। पर्थिपुरा कल्याणी की तहों और दरारों में, मैंने वासना को देखा और मणि के अवलोकन की सच्चाई को जाना। और मुझे एहसास हुआ कि मणि कई मायनों में मुझसे ज़्यादा बड़ा था। क्योंकि वासना मन को ढक लेती है और जब वासना में होती है, तो पर्थिपुरा कल्याणी जैसी बूढ़ी वेश्या भी दयालु दमयंती बन जाती है।

भोली और अछूती, और सभी महिलाओं में सबसे उत्तम।
लेकिन मुझे पता था कि यह पल वासना या प्यार के लिए नहीं था। अगर कुछ था तो, मुझे निराश महसूस करने की ज़रूरत थी।

मैंने कहा, 'नहीं, अभी नहीं।'
'ऐसी स्थिति में, मैं तुम्हें आराम करने दूँगा... जब मैं वापस आऊँगा तो क्या तुम यहाँ रहोगे?'
मणि ने पूछा, उसकी आवाज़ पहले से ही जाने के लिए अधीर थी।
'मैं लगभग छह बजे संस्थान जाऊँगा,' मैंने कहा, यह जानते हुए कि मणि बहुत जल्दी लौट आएगा।
बाद में। 'मैं कल दर्शकों में आपकी तलाश करूंगा,' मैंने कहा।
मुझे पता था कि वह बोर हो जाएगा। फिर भी, मुझे यह विचार अच्छा लगा कि वे सभी वहाँ होंगे।

अगली सुबह, आशान और मैं मंदिर बोर्ड के अध्यक्ष के साथ उनकी कार में वेलिनेझी गए। आशान को विलासिता की चीजें मांगने का हुनर था। उसने यह इतनी कुशलता से किया कि यह एक उचित मांग के रूप में सामने आया।

'क्या मंदिर बस स्टैंड के पास है?' मैंने आशान को मंदिर बोर्ड के अध्यक्ष से पूछते हुए सुना जब वह व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने आए थे।

'मुझे ऐसा लगता है,' आदमी ने कहा। 'यह सिर्फ़ दो फ़र्लांग या उससे ज़्यादा है।' जब आशान ने
देखा कि उसने मछली को हुक में नहीं फँसाया है, तो उसने आह भरी। यह एक ऐसी आह थी जिसे उसने बखूबी सीखा था। आशान को जो भूमिका निभानी थी, उससे एक आह। एक ऐसी आह जो थकावट और निराश इच्छाओं की बात करती थी। मैंने अपनी मुस्कान छिपा ली।

फिर आशान ने कहा, 'मैं बस जानना चाहता था। मैं बस से यात्रा नहीं करता। वैसे, क्या आप टैक्सी ड्राइवर को सोने के लिए कमरा दे सकते हैं? यह पूरी रात चलने वाला कार्यक्रम है और उसे आराम करने के लिए जगह की आवश्यकता होगी।'

चेयरमैन ने आशान की उम्मीद के मुताबिक ही बात मान ली। 'अरे नहीं, क्या हुआ?

Machine Translated by Google

टैक्सी किराए पर लेने की बात? मैं अपनी कार भेज दूँगा।' 'नहीं, नहीं,'
आशान ने विरोध किया। 'यह आपसे बहुत ज़्यादा माँगना है।' 'आह!' वह आदमी अपनी बात
मनवाने के दृढ़ निश्चय के साथ खड़ा हो गया। 'यह कुछ भी नहीं है।
बिल्कुल भी परेशानी नहीं हुई। वास्तव में, मेरी कार से आपका सफ़र करना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। और शायद, अगर मैं आपसे बहुत ज़्यादा उम्मीद न करूँ, तो क्या आप मेरे घर पर दोपहर का खाना खाएँगे?' आशान ने हाथ हिलाया। यह एक ऐसा इशारा था जिसका हमारे द्वारा इस्तेमाल किए गए

पाँच सौ से ज़्यादा हाथ के इशारों की शब्दावली में कोई स्थान नहीं था। लेकिन इसने इतना ही कहा: अगर आप ज़ोर देते हैं; बेशक; मैं ऐसा शायद ही कभी करता हूँ, लेकिन चूँकि आप इतने ख़ास व्यक्ति हैं, इसलिए मैं तैयार हूँ।

इसलिए हम शिव मंदिर की ओर चल पड़े। आमतौर पर मंदिर समिति दखायगाम को चुनती थी, जहां शिव मुख्य पात्र होते थे। हालांकि, अध्यक्ष, जो कथकली के प्रशंसक थे, ने जोर देकर कहा कि समिति कुछ और चुने।

'क्या आप घबरा रहे हैं?' आशान ने कार में पूछा।
'नहीं,' मैंने झूठ बोला। मैं अंदर से कांप उठी, लेकिन मैंने उसे यह नहीं बताया। आशान के पास कोई विकल्प नहीं था।
नौसिखियों या न्यूरोसिस के लिए धैर्य।
'अच्छा,' उन्होंने कहा और चुप हो गए।
आशान धीरे-धीरे अपने में सिमटने लगा। शाम को जल्दी-जल्दी उसे बेचैनी के लक्षण दिखने लगे। फिर वह किसी से उसे नजदीकी ताड़ी की दुकान पर ले जाने को कहता।

मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि वह एक बोतल से ही रुक जाए। यही मेरी गुरु-दक्षिणा होगी। संयम और शायद कृपालु निंदा का मिश्रण धन्यवाद।

पेटीकारन इंतज़ार कर रहा था। वह ग्रीन रूम असिस्टेंट और मेकअप मैन से कहीं ज़्यादा था। गोपी संस्थान का हिस्सा था। वह अकेला हमें सिर्फ़ इंसान के तौर पर जानता था और फिर हम जो बन गए, उसे इंसान के तौर पर जानता था। गोपी उस बदलाव का हिस्सा था।
अब गोपी एक दीया लेकर आया। उसने उसे फर्श पर रखा, बत्तियों को घुमाया और उन्हें जलाया। वह सीधा हुआ और मेरी ओर मुड़ा। 'मुझे लगता है कि शुरू करने का समय आ गया है।'
मैंने सिर हिलाया।

बाहर, शाम का अंधेरा छाया हुआ था। स्कूल मंदिर के मैदान से सटा हुआ था। एक कक्षा को हमारा अनियारा, ग्रीन रूम बनना था जहाँ सभी कलाकार अपने चेहरे और दिमाग को तैयार करते, अपनी वेशभूषा और चरित्र धारण करते।

तभी चेयरमैन आ गए। उनके चेहरे पर ऐसा भाव था जिसे मैं नहीं समझ सका।
'इसमें से किसी की भी जरूरत नहीं है,' उसने ठंडे स्वर में कहा।
मैंने उसकी ओर देखा और कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा।'

Machine Translated by Google

'मेरी एक प्रतिष्ठा है, समाज में मेरी एक प्रतिष्ठा है। मैं आज रात का कार्यक्रम रद्द कर दूंगा और स्कूली बच्चों के एक समूह से बचकाना लोक नृत्य करवाऊंगा, बजाय इसके कि एक शराबी पूरे गांव और आस-पास के लोगों के सामने खुद को मूर्ख बनाए और मेरा मजाक बनाए। यह एक दिव्य कला है। क्या उसे इसका एहसास भी है? मैंने हमेशा की तरह होने वाले दक्षयागम के बजाय किरमिरा वधम का प्रदर्शन करवाकर एक जोखिम उठाया। मैंने आपके आशान को मुख्य कलाकार के रूप में आमंत्रित करके एक जोखिम उठाया। और वह आदमी क्या करता है? वह एक दुकान के बाहर लेटा हुआ है, इतना नशे में है कि उसे अपनी कोहनी और हाथों का पता नहीं है। मैंने अपना फैसला कर लिया है। मेरा सुझाव है कि आप अपना सामान बांधकर चले जाएं। मैं अपनी कार से आपको चौराहे पर छोड़ दूंगा,' उसने झल्लाकर कहा।

मुझे लगा कि डर ने मुझे अपने पंजे से जकड़ लिया है। मैंने आशान के बारे में नहीं सोचा था, और न ही उसके लिए इस अपमान के बारे में। मैंने अपने बारे में सोचा। मैंने अपने माता-पिता और भाई के बारे में सोचा, जो यह जानने के लिए पहुंचे कि प्रदर्शन रद्द कर दिया गया है। मैंने उन कुछ दोस्तों के बारे में सोचा जिन्हें मैंने अपना प्रदर्शन देखने के लिए आमंत्रित किया था। मैंने उन कहानियों के बारे में सोचा जो संस्थान तक पहुँचेंगी। मैं शुरू होने से पहले ही असफल हो गया था।

मुझे लगा कि मेरी आँखों में आँसू आ गए हैं। और मैंने वो किया जो आज भी मुझे परेशान करता है।
मैंने उनके चरणों में सिर झुकाया और कहा, 'कृपया ऐसा मत करो। कृपया। तुम मेरा करियर और मेरी प्रतिष्ठा बर्बाद कर दोगे।'

उसने मेरी ओर देखा और कहा, 'मैं अपना विचार नहीं बदल सकता।'
'कृपया मुझ पर दया करें। यह मेरा पहला डांसर है। एक डांसर के रूप में मेरा जीवन हमेशा खुशियों से भरा रहेगा। अगर किसी को इस बारे में पता चले तो...कृपया, कृपया...' मैं रो पड़ी।
मैंने क्यों भीख माँगी और विनती की? मैं क्यों नहीं जा सकता था? पीछे मुड़कर देखें तो, इससे मेरे करियर पर कोई असर नहीं पड़ता। लेकिन मैं युवा और कमज़ोर था। मैं खुद के बारे में भी अनिश्चित था। उस पल, मेरी सारी असुरक्षाएँ मुझे परेशान करने लगीं और यह मेरी अपनी नज़रों में असफल होने का डर था जिसने मुझे अपना सारा अभिमान निगलने और उसके पैर पकड़ने पर मजबूर कर दिया।

'आशान परफॉर्म कर पाएगा। वह शराब पीता है। यह बात सभी जानते हैं। शायद उसने आज शाम को कुछ ज़्यादा ही पी ली है, लेकिन मैं वादा करता हूँ कि मैं उसे होश में लाकर तैयार कर दूँगा। कृपया परफ़ॉर्मेंस रद्द न करें। कृपया उसके बारे में न सही, तो मेरे बारे में ज़रूर सोचें,' मैंने उस आदमी से बात करने की उम्मीद में विनती की।

उसने अपना चेहरा पोंछा और दूसरी ओर देखने लगा। 'मुझे नहीं पता कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ, लेकिन मैं तुम्हें आगे बढ़ने दूँगा। लेकिन अगर मैंने एक बार भी उस नशे में लड़खड़ाते हुए देखा, तो मैं तुरंत प्रदर्शन रोकने के बारे में कुछ नहीं सोचूँगा। क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो?'
मैंने सिर हिलाया। जब वह चला गया, तो मैं अपना सिर पकड़े बैठा रहा। मुझे लगा कि मेरे ऊपर अपमान की लहरें उठ रही हैं। मुझे शर्म आ रही थी। मैं कलंकित महसूस कर रहा था। जो मेरे लिए इतना कीमती था, वह अभिशाप बन गया था। क्या हमेशा ऐसा ही रहेगा? क्या मेरी कला हमेशा बोझ बनी रहेगी, जो मुझे सिर्फ़ इसलिए विनम्र बनाएगी ताकि मैं इसे जीवित रख सकूँ?

Machine Translated by Google

गोपी ने अपना गला साफ किया। 'आशान कहाँ है?' मैंने बेचैनी से इधर-

उधर देखा। मैं पूरी शाम उसके पास ही रहा था।

जब मैं नहाने के लिए गया तो उसे पता चला कि मैं उसे अकेला छोड़ आया हूँ। वह तब सो रहा था।

'मैं यहाँ हूँ।' छाया से एक आवाज़ उभरी।

मैं जल्दी से उसके पास गया। उसके मुंह से ताड़ी की बदबू आ रही थी। 'तुमने कितनी शराब पी रखी है? क्या तुम्हें पता है कि चेयरमैन यहाँ आए हुए थे और वे कार्यक्रम रद्द करना चाहते थे?' 'चिंता मत करो,' उसने कहा। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसके शब्द लड़खड़ा रहे थे।

'कितना?' मैंने पूछा। मुझे लगा कि मेरे मुँह में गुस्सा उमड़ रहा है। यह मेरी पहली फिल्म थी।

वह इसे इस तरह कैसे बर्बाद कर सकता था? उसका नशा बाकी सब चीजों पर हावी हो जाएगा।

उन्होंने कहा, 'मैं ठीक हो जाऊंगा। मैं हमेशा ठीक रहता हूं।'

क्रोध की जगह अचानक एक विचार ने ले ली: अगर वह प्रदर्शन करने के लिए बहुत नशे में था, तो मुझे भी उसके जैसा बनना होगा। मेरा मुँह पित्त से भर गया। मुझे उस दुष्ट विचार पर शर्म आ रही थी।

'आशान, क्या मैं किसी को बुलाकर तुम्हारे लिए ब्लैक कॉफ़ी लाऊँ? इससे तुम्हारा सिर साफ हो जाएगा,' मैंने कहा।

उन्होंने एक पल के लिए मेरी ओर देखा। फिर उन्होंने कहा, 'यहाँ आओ।' मैं उनके पास गया। उन्होंने अपना

हाथ मेरे सिर पर दबाया। मुझे हाथ की ताकत आशीर्वाद की तरह महसूस हुई। 'तुम अच्छा करोगे। लेकिन चाहे तुम कितने भी सफल हो जाओ, तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम पहले एक कलाकार हो और उसके बाद ही एक कलाकार।' मैंने उनकी आँखों में देखा। ऐसा अक्सर नहीं होता था कि मुझमें हिम्मत होती, लेकिन तब थी। 'क्या कोई अंतर है?' उन्होंने अपनी हथेली मेरे सिर पर रखी। 'एक कलाकार अपनी कला का गुलाम होता है। यह उस पर शासन करती

है। यह उसके जीवन का निर्धारण करती है। यह उसे समझौता नहीं करने देती। यह उसे सामान्यता स्वीकार नहीं करने देती। यह उसका विवेक है। एक कलाकार? बहुत

सारे कलाकार हैं। जो लोग कला को समझने के लिए केवल क्रियाकलाप करते हैं। वे कलाकार नहीं हैं। जब तुम बड़े हो जाओगे, तो तुम खुद ही यह समझ जाओगे।

'अब जाओ। धर्मपुत्र बनो। कोमन नहीं जो धर्मपुत्र का किरदार निभा रहा है।' उसने अपना हाथ हटा लिया। उसकी

हथेली की छाप मुकुट से ज़्यादा भारी लग रही थी।

मैं इसे अपनी पोशाक के एक भाग के रूप में पहनूंगा।

'एक और बात...' उन्होंने कहा.

मेरा पलटना हुआ।

'मुझे पता है कि तुम तीसरे दृश्य के दौरान आने की उम्मीद कर रहे हो। मैं चाहता हूँ कि तुम दूसरे दृश्य के बीच में ही आ जाओ। तुम उग्र धर्मपुत्र की भूमिका निभाओगे। तुम श्री कृष्ण से भिड़ोगे।'

मैंने निगल लिया। तीसरा भाग शांत था। इसमें बहुत कम शामिल था

Machine Translated by Google

कुछ भी। मैंने अपनी पूरी क्षमता से तैयारी की थी। मैं निर्वासन में एक विनम्र राजा होता, ऋषि दुर्वासा का अभिवादन करता, आतिथ्य करता और प्रार्थना करता।

लेकिन इस दृश्य के लिए इससे कहीं ज़्यादा की ज़रूरत थी। मंच पर एक मिनट के लिए सौ घंटे अभ्यास की ज़रूरत थी। क्या मैं सामना कर पाऊँगा? क्या मैं युधिष्ठिर बन पाऊँगा, जो ठगा हुआ महसूस करने वाला राजा है? क्या मैं डरना सीख पाऊँगा, अपने क्रोध से दैवीय शक्तियों को बुलाकर?

मैं दीपक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। हे सभी देवताओं, चाहे आप कोई भी हों, जो मेरे भाग्य का फैसला करते हैं, कृपया मुझे अपनी पूरी क्षमता से धर्मपुत्र बनने दें।

मैं लैंप के सामने बैठ गया। गोपी ने डिब्बा खोल रखा था। मैंने गहरी साँस ली। कक्षा में तरह-तरह की गंध फैल रही थी- पसीने की बासी गंध, यूनिफॉर्म में स्टार्च, सस्ते साबुन और नारियल का तेल, ऊब और थकान; अनगिनत स्कूली बच्चों की गंध मेरे नथुनों में भर गई। मैंने गोपी को आशान को धर्मपुत्रन में बदलते देखा। जल्द ही मेरी बारी आने वाली थी।

मैंने अपने चेहरे के लिए निशान बनाने का काम पूरा कर लिया। फिर मैं गोपी के पैरों के पास लेट गया, जबकि वह मेरे चेहरे पर काम कर रहा था। मैंने शाम के बारे में सोचा। मेरा परिवार वहाँ होगा। क्या वे तब तक रहेंगे जब तक मैं मंच पर नहीं आ जाती? मुझे संदेह था। न तो मणि और न ही बाबू में धैर्य था और न ही इच्छा।

अम्मा जल्दी थक जाती थीं और अचन उनके साथ चला जाता था। यह संभव था कि वे मेरे धर्मपुत्रन को कभी न देख पाते।

क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है? क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है? मैंने आशान के बारे में सोचा। मैं एक कलाकार था, कोई कलाकार नहीं कलाकार। केवल कलाकार ही स्वीकृति के बारे में चिंतित हैं। और फिर भी ...

मुझे लगा कि गोपी चुटी के लिए फिट है। सफ़ेदी किरदार के चेहरे को फ्रेम करेगी मैं बन जाऊंगा.

रंगों का इंतज़ार था। नारियल तेल और जिंक व्हाइट के साथ पीसा हुआ पीला मन्नोला। जब इसमें नील मिलाया जाता, तो यह हरा हो जाता और यह मेरे चेहरे का रंग बन जाता। मैंने रंग भरे और गोपी ने मेरी पोशाक बनाने में मेरी मदद की।

जब मैंने काम पूरा कर लिया, तो मुझे उन चौसठ गांठों का अहसास हुआ, जो मेरी पोशाक को मुझसे बांध रही थीं।

मेलाप्पादम की आवाज़ बहुत पहले ही बंद हो चुकी थी। शाम का पहला भाग शुरू हो चुका था।

मैंने चंदापू के बीजों का डिब्बा निकाला। मैंने खुद ही बैंगनी फूल तोड़े थे। संस्थान का मैदान पौधों से ढका हुआ था। पुंकेसर में छोटे-छोटे काले बीज थे। मैंने कई बीजों को अपनी हथेली में तब तक रगड़ा जब तक कि वे काले नहीं हो गए, और उन्हें धूप में सुखा दिया। मैंने उन्हें घी के एक छोटे कंटेनर में संग्रहीत किया था। अब मैंने बीज आशान को दिए। उसकी आँखें पहले से ही लाल थीं, लेकिन उसने दो बीज ले लिए। यह एक ऐसा अनुष्ठान था जिसे हममें से कोई भी करने की हिम्मत नहीं करता था

Machine Translated by Google

मैं उसे छोड़कर कमरे के एक शांत कोने में चला गया। कोने में एक मकड़ी का जाला था। उसके नीचे एक स्टूल था। मैं उस पर बैठ गया और मकड़ी को देखता रहा।

मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं अपने रोजमर्रा के कामों से दूर जा रहा हूँ, और अपनी त्वचा से दूर जा रहा हूँ।

फिर मैंने एक बीज लिया और उसे अपनी निचली पलक के नीचे डाला।

वहाँ वह लेटा था, एक बेचैन बच्चा लाल चीखें मार रहा था, अपना गुस्सा दिखा रहा था जो मेरी आँख की सफेदी को उग्र लाल रंग में बदल देगा। आँख की पुतली के लिए अपनी शक्ति दिखाने के लिए यह सब बेहतर था। आदमी के लिए चरित्र में बदल जाना बेहतर था।

यह डंक मारता था। हमेशा डंक मारता था। लेकिन यह मेरी आँखों में नहीं तैरता था जैसा कि पहले तैरता था। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपनी आँखों की पुतलियों को घुमाया। जब मैंने उन्हें खोला, तो रंग दिखाई देने लगा था।

अब समय आ गया है कि मैं अपना मुकुट पहन लूं। जब मैं ऐसा करूंगा, तो मैं कोमन नहीं रहूंगा। मैं धर्मपुत्रन बन जाऊंगा। वह राजा जिसने अपना राज्य जुए में खो दिया और अपने भाइयों और उनकी प्यारी पत्नी को निर्वासित कर दिया। वह पति जिसने अपनी बहुत प्यारी पत्नी पांचाली को गर्मी की हवाओं और तेज धूप में घसीट कर ले गया, जिससे उसकी जवानी, आराम और खुशी छिन गई। वह आदमी जिसकी किस्मत में बार-बार पश्चाताप सहना था।

मैं उस पहले पदम का गायन सुन सकता था: बाले, केल ने ... युवती, सुनो
मुझे।

आशान धर्मपुतन था जो अपना दुख और पश्चाताप दिखा रहा था; अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहा था
भावनाओं का परस्पर विरोधी मिश्रण.

जब मैं धर्मपुत्र बनूंगी तो कृष्ण का क्रोध मैं ही जगाऊंगी, लेकिन जब कृष्ण मेरे शत्रुओं का नाश करने का निर्णय लेंगे तो मुझे पश्चाताप होगा।

मेरे दुश्मन उसके नहीं थे। मेरी नियति उसकी नहीं थी। तो मैं ऐसा कैसे होने दे सकता था?

मैंने मुकुट अपने सिर पर रखा। मुझे लगा कि यह मुझ पर धर्मपुत्र की आत्मा के भार का बोझ डाल रहा है। कर्तव्य के पुत्र के रूप में, मैं बुराई को हावी नहीं होने दे सकता था, भले ही वह मेरे अपने कल्याण के लिए ही क्यों न हो। मैंने अपने बाएं हाथ की उंगलियों पर चांदी के पंजे पहने। स्टील के छल्ले प्रत्येक उंगली के पहले पोर को जकड़े हुए थे। मेरे द्वारा किए गए हर इशारे पर जोर दिया जाएगा ...

जल्द ही मेरे लिए आगे बढ़ने का समय आ गया।

Machine Translated by Google

पुस्तक 3

नीथन्ने वेणं थव गुणगतेन

बाकी के लिए, आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हैं

—नालचरितम् [तीसरा दिन]
उन्नायी वारियर

Machine Translated by Google

बीभलसम

इस शब्द से ही आपके चेहरे पर घृणा की झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। बीभलसम: वह भाव जो आपके चेहरे पर तब आता है जब आप किसी विचित्र वस्तु को देखते हैं। आपको बस इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना है। अपनी आँखें सिकोड़ें, अपने नथुने फैलाएँ, अपने चेहरे की मांसपेशियों को सिकोड़ें। लेकिन याद रखें कि यह वह भाव है जो मूलाधार से साँस खींचने की आपकी क्षमता पर निर्भर करता है। रीढ़ के आधार से साँस को ऊपर आने दें और फिर उसे नाक के छिद्रों से जोर से बाहर निकाल दें। आप साँस छोड़ते हैं जैसे कि आप अपनी साँस के उस छोटे से कण से भी अपने अंदर को दूषित नहीं करना चाहते जो विचित्र वस्तु की बदबू को समेटे हुए है। आप साँस छोड़ते हैं जैसे कि आप घृणा महसूस कर रहे हों।

बीभलसम घृणा है। लेकिन घृणा क्या है?

क्या यह वह हल्की नापसंदगी है जो आपको तब महसूस होती है जब लगातार बारिश के कारण आपके घर के कमरों और अलमारियों में दुर्गंध आने लगती है?

क्या यह वही घृणा है, वह विरक्तिपूर्ण घृणा जो आपको तब महसूस होती है जब आप एक थोटी काझुकन को देखते हैं, उसका गंजा गुंबद जैसा सिर और पपड़ीदार चेहरा, झुर्रीदार गर्दन और निकला हुआ पेट? आप में से कौन है जिसे गिद्ध को देखकर घृणा का वह भाव महसूस नहीं होता?

या क्या यह घृणा है, वह सर्वव्यापी घृणा है जो आपको तब घेर लेती है जब हवा आपके नथुने में एक मरे हुए और सड़ते हुए चूहे की बदबू ले जाती है? आप बदबू की तलाश में भटकते हैं। आप तब तक सांस छोड़ते हैं जब तक आपके सिस्टम की सारी हवा बाहर नहीं निकल जाती, फिर आप अपनी सांस रोक लेते हैं, लेकिन बदबू अभी भी इतनी शक्तिशाली होती है कि आप जानते हैं कि इससे छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका स्रोत की तलाश करना और इसे नष्ट करना है। आप अपने बगीचे के वनों वाले हिस्से से आगे बढ़ते हैं और वहां आपको पौधा दिखाई देता है। पहले तो आपको लगता है कि यह सामान्य रतालू है, फिर आप तने और फूल पर सफेद निशान देखते हैं, और आपको एहसास होता है कि आपने लगभग उल्टी क्यों कर ⋯ दी थी। जब हाथी रतालू खिलता है, तो इसमें मौत की गंध आती है। इसे अपने रसोईघर में दिखने वाले रतालू से भ्रमित न करें

एक बार जब फूल परागित हो जाता है, तो दुर्गंध खत्म हो जाती है, लेकिन इतनी देर तक कौन इंतजार कर सकता है?

घृणा के लिए कोई कारण नहीं है और इसलिए आप अपनी कमर से दरांती पकड़ते हैं और उसे काटकर दूर कोने में फेंक देते हैं ताकि बदबू पौधे के साथ ही खत्म हो जाए। लेकिन रुकिए। घृणा में और भी बहुत कुछ है। बीभलसम सिर्फ़ घृणा के बारे में नहीं है

Machine Translated by Google

जिसे आप बाहरी दुनिया के कारण अनुभव करते हैं। बीबलसम केवल विचित्रता का सामना करने के बारे में नहीं है।

पौधे के नीचे कंद होता है। हाथी रतालू, जो घर में खाए जाने वाले छेना से छोटा होता है। आप जो रतालू पकाते हैं वह बड़ा होता है, लेकिन कभी-कभी एक दुष्ट हाथी रतालू भी होता है जो बड़ा हो जाता है। यदि आप एक शौकिया माली हैं जो बेहतर नहीं जानते हैं, तो आप सोचेंगे कि यह खाने योग्य है। इसलिए आप इसे घर ले जाते हैं और पकाते हैं। पहले निवाले के बाद, आपको सबसे भयानक पीड़ा का अनुभव होगा। सैकड़ों छोटी सुइयां आपके मुंह, जीभ और गले में चुभने लगेंगी...यही वह है जो हाथी रतालू आपके साथ कर सकता है।

यह घृणा का दूसरा आयाम है। एक घृणा जो आप अपने लिए महसूस करते हैं
और तुम्हारी एक हरकत के लिए घृणा और पीड़ा।

राधा

मैंने उसकी बांह को छुआ। उसने ऊपर देखा। मैं मुस्कुराई। मैंने कहा, 'चाचा ने अभी फोन किया था।'

मैं उसकी आँखों में जानी-पहचानी बाड़ें खड़ी होते देखता हूँ। मैं उसके बगल में बैठता हूँ और अपनी उँगली उसकी बाँह पर फेरता हूँ। 'वह चाहता है कि हम वहाँ जाएँ,' मैं कहता हूँ, और अपनी एक उँगली से सहलाना जारी रखता हूँ।

'आप या हम?' वह पूछता है।

मैं थोड़ा सा चेहरा बनाती हूँ और खुद पर आश्चर्य करती हूँ। ये छोटी-छोटी हरकतें और प्यार भरी हरकतें कितनी आसानी से मेरे पास आ जाती हैं। मैं एक मालकिन की भूमिका कितनी अच्छी तरह से निभाती हूँ!

मैंने रानी ओपोल को जितना सोचा था, उससे कहीं ज़्यादा बार देखा होगा। मुझे एहसास हुआ कि मैं उनकी नकल कर रही हूँ। छोटी लड़की की आवाज़, साँस फूलना, आँखें चौड़ी होना, होठों का फूलना, बात करते समय छूना और सहलाना। मैं रानी ओपोल की तरह ही सबसे ज़्यादा चुलबुली बन रही हूँ। अभिनय को पूरा करने के लिए मुझे बस इतना करना है कि जब मैं कॉकरोच देखूँ तो चीखूँ और पीला पड़ जाऊँ। श्याम को यह पसंद आएगा। उसे अच्छा लगेगा कि मैं असहाय चीखती हुई महिला बनूँ जबकि वह कॉकरोच को अपनी चप्पल के नीचे कुचल दे।

मैं टार्ज़न, तुम जेन, आदि। इसके बजाय, मुझे बिच्छुओं और साँपों को बेरहमी से पीटना और अपने नंगे हाथों में मेंढकों को उठाना पसंद है।

मैं अपनी उंगली को रोक लेता हूँ। यह चोट पहुँचाने का संकेत है। 'बेशक, हम। आप देखिए, जब से अंकल ने अपने बारे में बात करना शुरू किया है - अपने माता-पिता की कहानी नहीं, बल्कि अपने जीवन की - ऐसा लगता है कि वे इसे खत्म करने की जल्दी में हैं।' उनकी मुस्कान टेढ़ी है। 'मैं इस बात से सहमत हूँ,' वे कहते हैं। 'काश अंकल

अपने जीवन को कुछ वाक्यों में समेट कर खत्म कर देते। आखिर कहने को क्या है? वे एक नर्तक हैं, राजनयिक नहीं, भगवान के लिए। और वे नहीं हैं

Machine Translated by Google

यहाँ तक कि कलामंडलम गोपी या कृष्णन नायर जैसी लीग में भी। वे लोग आइकॉन हैं। लेकिन अंकल! कितने लोग अंकल को जानते हैं या उन्हें सफल मानते हैं? पंडित सुंदर वर्मा को ही देख लीजिए। क्या वे समकालीन नहीं थे? वह आदमी दुनिया भर में मशहूर है, जबकि अंकल, वह तो बस एक और नर्तक हैं। अपनी पूरी ज़िंदगी नाचने में बिताने के बाद उनके पास दिखाने के लिए क्या है? मेरा मतलब है, अगर आपके दादा ने उनके लिए वह घर नहीं खरीदा होता, तो उनके पास अपना खुद का घर भी नहीं होता। कभी-कभी मुझे लगता है कि कलात्मक सफलता को व्यक्तिगत मील का पत्थर मानने की ये सारी बातें असली मुद्दे से बचने का उनका तरीका है, यानी उनकी सफलता की कमी!' एक पल के लिए मैं उनके पास पहुँचकर उनके चेहरे पर तमाचा मारना चाहता हूँ। वे इतने लापरवाह कैसे हो सकते हैं? वे हर चीज़ को इस हद तक कैसे कम कर सकते हैं कि उससे कितना पैसा मिल सकता है?

क्या उसे यह एहसास नहीं है कि चाचा ने अपना जीवन इस तरह जीने का चुनाव किया है?

मुझे फिर से बेचैनी का एहसास हो रहा है। मुझे हमेशा से संदेह था कि श्याम मेरे जीवन में अंकल की जगह को लेकर नाराज़ है। मैं जानता हूँ कि वह सोचता है कि अंकल मूर्ख हैं क्योंकि उन्होंने खुद को बेहतर नहीं बनाया। पहली बार, मुझे लगा कि शायद श्याम हमेशा से दिखावा कर रहा है। अंकल के लिए जो वह महसूस करता है वह स्नेह नहीं, बल्कि तिरस्कार है। मैं इसे उसकी आँखों में और उसके मुँह में सिकुड़ी हुई खीझ में देख सकता हूँ।

लेकिन मैं कुछ नहीं कहती। इसके बजाय, मैं अपनी उंगलियाँ उसके बीच में फिराती हूँ। वह देखता है
वह हमारे हाथों से गिर जाता है और उसका चेहरा नरम पड़ जाता है।

'तुम जाओ,' उसने मेरी उंगलियाँ अपनी हथेली में फँसाते हुए कहा। 'मेरे पास कुछ काम हैं
मैं बाद में आऊँगा, दोपहर के खाने के समय। हम साथ-साथ लौट सकते हैं।'

श्याम अपनी कुर्सी पर पीछे झुक जाता है और अपना अख़बार उठा लेता है। मैं वहीं बैठा दबी हुई आवाज़ में गुनगुनाता हूँ, सप्लीमेंट पढ़ने का नाटक करता हूँ। जल्दी मत करो।
जल्दी से कपड़े पहनने की कोशिश मत करो। ऐसा मत सोचो कि यह एक खुशी की बजाय एक काम है, मैं खुद को सावधान करता हूँ।

मैं जम्हाई लेता हूँ। मैं आहें भरता हूँ। फिर मैं अतिशय अनिच्छा के साथ उठता हूँ। मैं कहता हूँ, 'मुझे चलना चाहिए।'

अख़बार के पीछे से मुझे जवाब के लिए आवाज़ आती है। लेकिन मैं बेवकूफ़ नहीं बनता।
मैं जानता हूं कि वह मेरी हर हरकत पर नजर रख रहा है।

मैं सुस्ती से अपने कमरे की ओर चलता हूँ। मुझे लगता है कि मैं अब भागने में कामयाब हो गया हूँ।

मैं जल्दी से कपड़े पहनती हूँ। जब मैं ड्रेसिंग टेबल पर लिप-ग्लॉस लगाने के लिए रुकती हूँ, तो पाती हूँ कि मैं अपनी आँखों से आँखें नहीं मिला पा रही हूँ।

मैं जो कर रहा हूँ, उससे मुझे घृणा हो रही है। क्या कोई चीज़ इतनी घृणा के लायक हो सकती है?
मैं कब तक ऐसा कर सकता हूँ? ये धोखा, झूठ और दिखावा?

'तुम कहाँ थे?' वह मेरे कान में गुर्राता है।

'मैं...मैं...' मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ। श्याम के संदेह को दूर करने के लिए मैं क्या करने की कोशिश कर रहा हूँ, यह मैं उसे कितना बता सकता हूँ?

Machine Translated by Google

लेकिन वह मुझे अपनी बात पूरी नहीं करने देता। 'मुझे तुम्हें देखे हुए लगभग दो दिन हो गए हैं। अगर
अगर तुम आज सुबह नहीं आते तो मैं तुम्हारे घर आ जाता।'

वह मेरे अंदर कदम रखने का भी इंतज़ार नहीं करता। वह मुझे अंदर खींचता है और दरवाज़ा बंद करके मुझे धक्का देता है। मैंने उसे इस तरह कभी नहीं देखा। यह एक नया और कुशल क्रिस है। मुझे नहीं पता कि मुझे यह कितना पसंद आया। वह एक ही समय में बात कर रहा है और मुझे सहला रहा है। मुझे लगता है कि उसके शब्दों से मेरा दिल रुक गया है। 'नहीं, नहीं, तुम्हें ऐसा कभी नहीं करना चाहिए। वह...श्याम पहले से ही संदिग्ध है।' क्रिस अपना सिर उठाता है। 'क्या इसका मतलब है कि तुम मुझे कभी अपने घर नहीं बुलाओगे?'

मैं अपना सिर हिलाता हूँ। 'नहीं, मैंने ऐसा नहीं कहा। मैं इन दिनों में से किसी एक दिन तुम्हारे पास आऊँगा। मैं चाहता हूँ कि तुम देखो कि मैं कहाँ पला-बढ़ा हूँ, या कम से कम अपने बचपन का कुछ हिस्सा कहाँ बिताया है।
लेकिन तुम्हें अच्छा व्यवहार करने का वादा करना होगा।'

उसकी आँखें चमक उठीं। 'जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तो मैं अच्छा व्यवहार नहीं करना चाहता।' 'हमें
जाना होगा,' मैंने फुसफुसाया। 'उन्नी मेरा समय लेगी।' 'उस स्थिति में...' मैंने उसकी
हँसी को अपनी त्वचा पर फूटते हुए सुना।

पंद्रह मिनट बाद, हम अंकल के घर की ओर चल पड़े। मैंने देखा कि उन्नी हमें रिसेप्शन एरिया से गुज़रते हुए देख रहा था। उसने क्या देखा? दो लोग, जो सामान्य परिचित थे, चलते-चलते बातें कर रहे थे। हम कम से कम तीन फ़ीट की दूरी पर थे और मेरे चेहरे पर एक बेरुखी का भाव था।

मैं कपड़ों को जल्दी-जल्दी उलट-पुलट करने, आलिंगन करने, कांपने, दीवार से बेपरवाह तरीके से सटने के बारे में सोचती हूं, क्योंकि बिस्तर पर जाने का मतलब होता अपने कुछ कीमती मिनटों को लूटना।

झोपड़ी के बाहर मैं झाड़ू की सरसराहट सुन सकता था, जब महिलाएँ रास्ते से पत्ते झाड़ रही थीं। मैं झाड़ी की छंटाई करने वाले कैंची की कट-कट की आवाज़ सुन सकता था। मैं कौवे की काँव-काँव और तोते की आवाज़ सुन सकता था। और बगीचे की लाइट चेक करते हुए इलेक्ट्रीशियन के कदमों की आवाज़ भी सुन सकता था।

जब मुझे लगा कि ज्वार की लहरें उसे और मुझे रसातल में खींच ले जा रही हैं और मेरे मुंह से कराह निकली, तो यह वह था जिसने उसे अपने मुंह में समेट कर बंद कर दिया।

यह कैसा जुनून है जो सारी मर्यादा की भावना को खत्म कर देता है?

मैं उसकी ओर देखता हूँ। उसकी पुतलियाँ फैली हुई लगती हैं। क्या सेक्स ऐसा कर सकता है? फिर मेरे बारे में क्या? क्या मैं भी एक नासमझ पल, व्यभिचारी इच्छाओं का ब्रांडिंग दिखाता हूँ जिसने मेरे बारे में सब कुछ सभ्य और नैतिक रूप से मिटा दिया है? क्या उन्नी देखेगा और जानेगा? और क्या वह सोचेगा: उसे देखो, एक कुतिया की तरह जो गर्मी में है, इस बात की परवाह किए बिना कि कौन आसपास है या वे क्या देख सकते हैं।

मैं क्रिस की बात नहीं सुन रहा हूँ। मैं सिर्फ़ अपने दिल की धड़कन सुन सकता हूँ और

Machine Translated by Google

एक आंतरिक आवाज़ जो मुझे डांटती है। आप वासना को अपने ऊपर हावी कैसे होने दे सकते हैं? लापरवाह वासना से ज़्यादा बेवकूफ़ी और कुछ नहीं है। अपनी बेतहाशा इच्छाओं को नियंत्रित न कर पाने से ज़्यादा घिनौना कुछ नहीं है। क्या आप वह सब खत्म करना चाहते हैं जो आप बनाने की कोशिश कर रहे हैं? क्रिस शायद आपको इस तरह से चाहता हो, त्याग और सेक्स की गंध से भरा हुआ, लेकिन उसके दिल में शायद वह आपको एक फूहड़ समझता हो! घिनौना, घिनौना, घिनौना, यह हंसी उड़ाता है।

मैं खुद को निराशा से बाहर निकालने की कोशिश करता हूँ। मैं क्रिस की बातों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करता हूँ। वह पूछता है, 'क्या तुम सद्दाम के मुकदमे को देख रहे हो?'

'कुछ तो है,' मैंने कहा। 'मैं उस तस्वीर के बारे में सोचता रहता हूँ जो उन्होंने उसे तब दिखाई थी जब उसे पकड़ा गया था, और कोर्ट रूम में उसकी फुटेज। वह पूरी तरह से नियंत्रण में था, तस्वीर में दिख रहे बूढ़े, हतप्रभ आदमी की तरह नहीं। उन्होंने अख़बारों में मुकदमे की प्रतिलिपि चलाई। क्या आपने इसे देखा? वह लगातार जोर दे रहा था, "मैं सद्दाम हुसैन हूँ, इराक गणराज्य का राष्ट्रपति"। मुझे कबूल करना चाहिए कि वहाँ बैठे हुए उसे बहुत गरिमा मिली हुई थी।' 'गरिमा! वह दुष्ट है। उस नरसंहार के बारे में सोचो जिसके लिए वह ज़िम्मेदार था। अगर उसे रोका नहीं गया होता, तो वह ऐसा करना जारी रखता,' क्रिस ने नाक भौं सिकोड़ी।

मैं रुक गया। क्रिस मेरे पास आकर रुका। मैंने कहा, 'उसने कहा कि इराकी लोगों के हितों की रक्षा के लिए उसने जो किया, उसके लिए उसे दंडित नहीं किया जाना चाहिए।'

'आपका मतलब उनके हितों से है?' 'तो फिर

बुश के बारे में क्या?' मैंने जवाब दिया।

'मुझे नहीं लगता कि तुम यह कह रहे हो।' 'क्यों नहीं? हर

कोई जानता है कि यह सब तेल के बारे में है। सामूहिक विनाश के हथियारों का कोई जत्था नहीं था। बुश और उनके साथियों के समूह द्वारा इराक पर हमला करने के लिए कोई औचित्य नहीं था। क्रिस, मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम बुश के समर्थक हो।'

'मैं बुश का समर्थक नहीं हूँ, क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो? लेकिन क्या तुम समझ रहे हो कि तुम क्या कह रहे हो? तेल या सामूहिक विनाश के हथियारों के बारे में तो भूल ही जाओ, सद्दाम इस क्षेत्र में शांति के लिए खतरा था।' उसके नथुने फड़कने लगे।

मुझे तब यह बात समझ में आई कि हमने पहले कभी बहस नहीं की। मांस के रंग और कोमल स्पर्श की हमारी एकांत दुनिया में, हम दोनों में से किसी ने भी कभी एक दूसरे से कठोर शब्द नहीं बोले। हमने कभी भी अपने विश्वासों या आदर्शों, अपनी राजनीति या सिद्धांतों पर एक दूसरे से बात नहीं की। पहली बार, मैंने देखा कि उसे अपनी राय पर सवाल उठाना पसंद नहीं है।

यहाँ अपने पहले हफ़्ते में ही क्रिस ने बुश, ब्लेयर और दूसरे बॉय स्काउट्स की निंदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी, जैसा कि उन्होंने उन्हें कहा था। उन्होंने मज़ाक में कहा था, 'तैयार रहो, उन्होंने समर्थन जुटाने के लिए फुसफुसाहट की होगी।'

और श्याम ने कहा था, 'मैं एक स्काउट था। तैयार रहने में कोई बुराई नहीं है।
मेरा मतलब है, मुझे नहीं पता होता कि चार अलग-अलग गांठें कैसे बनाई जाती हैं या आग कैसे जलाई जाती है

Machine Translated by Google

अगर मैं ऐसा नहीं होता.'

तभी क्रिस मेरी ओर मुड़ा और मेरा समर्थन करने लगा। 'तुम समझ रहे हो कि मेरा क्या मतलब है,
आप? वह आत्मसंतुष्ट, आनंदमय, परोपकारी रवैया, 'उन्होंने कहा था।

अब कुछ बात मुझे अपनी बात पर जोर देने के लिए मजबूर कर रही है। 'मैं समझता हूं कि वह एक
खतरा। लेकिन इस बारे में निर्णय लेना और कुछ करना संयुक्त राष्ट्र का काम है। बुश का नहीं।'

'देखिए, सद्दाम के खिलाफ युद्ध के औचित्य के बारे में कोई भी तटस्थ नहीं रह सकता।
और यही आप कर रहे हैं। आप कह रहे हैं कि आप जानते हैं कि वह बुरा है, लेकिन इसमें हस्तक्षेप करना हमारा काम नहीं है। और अगर मुझे सही याद है तो आपके देश का भी यही रुख था। आप बुराई को कैसे जारी रहने दे सकते हैं? यह भी लगभग उतनी ही बुराई है।
सहिष्णुता आलस्य का ही दूसरा नाम है। किसी राय को रखना और उस पर कायम रहना प्रयास की मांग करता है, और आप वह प्रयास नहीं करना चाहते।' 'इसे भूल जाओ, क्रिस,' मैंने कहा। 'तुम कभी नहीं समझ पाओगे कि सहिष्णुता क्या होती है।

यह आप पश्चिमी लोगों की समझ से परे है।' 'हे

भगवान, अगर मैंने कभी कोई नस्लीय टिप्पणी सुनी है तो वह यही है।' 'आप मुझसे

क्या कहलवाना चाहते हैं? कि बुश और ब्लेयर और गठबंधन सही हैं और हम गलत हैं? कृपया समझिए। मैं सद्दाम द्वारा किए गए कृत्य को उचित नहीं ठहरा रहा हूँ। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि एक देश को दूसरे देश की संप्रभुता छीनने का अधिकार नहीं है। बस इतना ही।'

क्रिस की आँखें भेद रही थीं। 'हम किस बारे में बात कर रहे हैं? मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि आप सद्दाम और खाड़ी से हटकर किसी और निजी मामले पर आ गए हैं? क्या यह हमारे बारे में है?'

हाँ, मैं उसे बताना चाहता हूँ। हमारी राय, भले ही वे ऐसी दुनिया के बारे में हों जिसका हमारे जीवन पर कोई सीधा असर न हो, हम ही हैं। और हाँ, मुझे लगता है कि आपने मेरा कुछ छीन लिया है। आपने मेरे दिमाग, मेरे शरीर पर आक्रमण किया, और जबकि मुझे अपनी इच्छाओं और सपनों को दबाना पड़ा और यहाँ तक कि अपनी मर्जी से जीने की अपनी आज़ादी भी खोनी पड़ी, पिछली सरकार के तहत, कम से कम उस अस्तित्व का एक पैटर्न, एक तरीका था। अब मेरे पास क्या है? मैं आपके समर्थन के बिना कैसे काम कर सकता हूँ? मैं एक ऐसा देश हूँ जिसे खुद को शून्य से फिर से बनाना है। मैं एक ऐसा देश हूँ जिसे दोषारोपण और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और मुझे नहीं पता कि कहाँ से शुरुआत करनी है।

सबसे बुरी बात यह है कि मुझे यह भी नहीं पता कि पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में तुम मेरा हाथ थामने के लिए वहाँ रहोगे या नहीं। तो क्या मुझे अकेला छोड़ देना बेहतर नहीं होता?

हम चाचा के घर के बाहर हैं और चाचा भौंहें सिकोड़ रहे हैं। 'क्या हुआ?
तुम दोनों झगड़ रहे थे?'

क्रिस अपने बालों में हाथ फेरता है। 'हम राजनीति और युद्ध के बारे में बहस कर रहे थे, लेकिन लगता है कि राधा एक ऐसी दिशा में चली गई है जिसका मैं अनुसरण नहीं कर सकता...' उसकी भौंहें ऊपर उठ जाती हैं।

मैं मुस्कुराता हूँ। मैं अपने चेहरे से आक्रामकता और इस विचार को मिटाने की कोशिश करता हूँ कि हमारा

Machine Translated by Google

दुनिया कभी भी एक जैसी नहीं हो सकती.

'माया कैसी है?' क्रिस ने पूछा।

मैं उसकी नज़र पकड़ने की कोशिश करता हूँ। वह दूसरी तरफ़ देखता है। मैं देख सकता हूँ कि वह अभी भी गुस्से में है।

'वह ठीक है,' अंकल कहते हैं। 'हमने कल शाम बात की थी और उसने कहा था कि वह चाहती है कि
वह तुरंत यहां वापस आ सकती है।' 'तो उसे क्या रोक रहा है?' क्रिस
पूछता है।

'खैर, एक तो उसका पति है,' चाचा कहते हैं और मालिनी के पिंजरे की ओर मुड़ते हैं।
तोता कटहल का एक टुकड़ा चबा रहा है। जब वह फिर से हमारी ओर देखता है, तो मैं देखता हूँ कि वह अपनी आँखों में दुख को मिटाने की कोशिश कर रहा है। मैं सोच रहा हूँ कि माया के साथ उसका रिश्ता कैसा है।

'क्या तुम कटहल खाओगे?' चाचा ने पूछा। 'इस साल कटहल काफी देर से आया है, और मैंने अब तक जो खाया है, उसमें से कुछ बारिश के कारण पानी जैसा स्वाद आ रहा है, लेकिन आज सुबह मेरे एक पुराने छात्र ने मेरे लिए कटहल लाया है। यह बहुत स्वादिष्ट है।

उन्होंने अपनी पत्नी से इन्हें तैयार करवाया, इसलिए मुझे अपने हाथ गंदे करने की भी जरूरत नहीं पड़ी।'

क्रिस पूछते हैं, 'फल कितना गन्दा हो सकता है?'

मैं और अंकल एक दूसरे को देखकर हंसते हैं। 'तुम्हें एक को काटकर देखना चाहिए।
और फली को बाहर निकालना, 'चाचा कहते हैं।

मैं हंसते हुए कहती हूं, 'यह ऐसा है जैसे आप बहुत ज्यादा चबाए गए च्युइंग गम के एक बड़े टुकड़े में अपना हाथ डाल रहे हों।'

क्रिस मुंह बनाता है.

'यह बहुत घिनौना है और प्रक्रिया बहुत थकाऊ है, लेकिन फल...' मैं कहता हूं।

क्रिस मेरे चेहरे पर खुशी देखकर कहता है, 'क्या तुम्हें लगता है कि मैं एक बार कोशिश कर सकता हूँ? एक खाने से मेरा मतलब है...' वह जल्दी से कहता है।

चाचा कटहल की एक प्लेट लाते हैं। कटहल को तोड़कर साफ किया गया है, फलियाँ एक तरफ़ से मुड़ी हुई हैं, मोटी और आकर्षक। मिठास जो चमकती है।

क्रिस प्लेट को देखता है, लेकिन तय नहीं कर पाता। वह सावधानी से एक प्लेट उठाता है। 'इसकी गंध बहुत अच्छी है
वह उसे संदेह भरी नजरों से देखते हुए कहता है, 'यह ड्यूरियन की तरह काफी मजबूत है।'

चाचा आग्रह करते हैं, 'गंध की परवाह मत करो, इसे चबाओ।' 'और ध्यान रखो, इसके अंदर एक बड़ा बीज है। तुम इसे मत खाओ। कम से कम कच्चा तो नहीं। एक दिन राधा तुम्हें इसकी सब्जी बनाकर खिलाएगी।' हम उनके चेहरे को देखते हैं जब वे एक सुनहरी पीली फली को चबाते हैं।

'यह अमृत है...यह मीठा, चिकना, थोड़ा चबाने वाला है। यह आपके गले से नीचे सरकता है।' वह बीज को अपने हाथ में थूकता है और जब वह ऊपर देखता है, तो वह खुशी से झूम उठता है। 'यह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा मैंने पहले कभी खाया है; यह अविश्वसनीय है।' मैं खुश हूँ। मुझे यह जानकर खुशी होती है कि उसे मेरे देश का फल कटहल बहुत स्वादिष्ट लगता है। फिर भी, मैं यह कहने के प्रलोभन से खुद को नहीं रोक
पाता, 'भगवान का शुक्र है, इस देश में कुछ ऐसा है जो आपको पसंद है।'

Machine Translated by Google

क्रिस ने आँखें सिकोड़कर सोचा, 'ओह, मुझे आपके देश की हर चीज़ पसंद है, यहाँ तक कि...' वह अचानक रुक गया।

'आखिर क्या?' मैंने पूछा।

'मैं तुम्हें बताऊंगा अगर तुम वादा करो कि तुम क्रोधित नहीं होगे।' 'मैं वादा
करता हूं।' "यहां
तक कि इसकी ज़िद भी," वह कटहल की फली आगे बढ़ाते हुए कहता है।
मैं अपनी चुप्पी को एक रियायत और मीठी बातों के साथ खरीदते हुए, व्यंग्यात्मक ढंग से सोचता हूँ।
चाचा एक फली को लंबे-लंबे टुकड़ों में फाड़कर चबाते हैं। 'तुम्हारा झगड़ा क्या था?
'उसकी आँखें अटकलें लगा रही हैं।
हम बोलते नहीं.
'अच्छा, अब कोई बात नहीं, अब लगता है कि तुमने इसे हल कर लिया है,' वह कहता है और पत्रों के ढेर से एक लिफाफा निकालता है। 'यहाँ, मैं तुम्हें यह दिखाना चाहता था।' वह लिफाफे से महत्वपूर्ण दिखने वाली स्टेशनरी का एक पन्ना निकालता है।
'इस पत्र में कहा गया है कि मुझे सरकार द्वारा एक और पुरस्कार दिया गया है, इस बार राज्य सरकार द्वारा।'

'बधाई हो। लेकिन आप बिल्कुल भी खुश नहीं लग रहे हैं।' क्रिस और मैं एक साथ बोलते हैं।

'खैर, अगर मुझे यह पुरस्कार बीस या तीस साल पहले मिल जाता तो मुझे खुशी होती, लेकिन अब...' वह मुंह बनाता है।

यह एक विचित्र चेहरा है। जिसे मैं नवरसों से पहचानता हूँ। बीभलासम।
घृणा. तिरस्कार. घृणा.
'मुझे यह बिलकुल व्यर्थ लगता है। एक समय था जब कोई पुरस्कार या सम्मान भी मेरे आत्मसम्मान को बढ़ाने में मदद कर सकता था। उन दिनों मैं अपनी कला पर अथक परिश्रम कर रहा था, अपना सब कुछ दे रहा था। रात के समय, जब मैं मंच पर होता था, तो मैं आत्म-संदेह से दूर रहता था। लेकिन हर कथकली कलाकार को दिन में जीवन का सामना करना पड़ता है, जब उसके पास खुद को डुबोने के लिए कोई किरदार नहीं होता, और तब उसके दिमाग में एक सवाल आता है: मैं यह क्यों कर रहा हूँ? उन समयों में, मैं जो कर रहा था, उसके लिए प्रशंसा, मेरी कला के लिए जो श्रद्धांजलि थी, वह मुझे उस गहन उदासी के दौर से बाहर निकाल देती, जिसमें मैं फंस गया था। अब, जब मैं शायद ही कभी प्रदर्शन करता हूँ, जब उम्र और समय ने मुझे एक कलाकार के रूप में अधिक सुरक्षित बना दिया है, तो मुझे सार्वजनिक मान्यता या प्रशंसा के इन मूर्खतापूर्ण भावों की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, मैं इसे अपने ऊपर बंद हो रहे ताबूत की तरह देखता हूँ। राज्य विधानसभा के गलियारों में, या जहाँ भी वे इन पुरस्कारों का फैसला करते हैं, वे शायद कह रहे हैं: ओह, चलो उस बूढ़े आदमी को एक पुरस्कार देते हैं। क्या होगा अगर वह इन दिनों में से किसी एक दिन मर गया? पूरी दुनिया इस बारे में बात करना शुरू कर देगी कि वह कितना अद्भुत था। हम उन गंवारों की तरह दिखेंगे जिन्होंने उसकी कीमत को तब तक नहीं पहचाना जब तक वह अभी भी जीवित था।'

'ऐसा मत कहो।' मैं उसका हाथ अपने हाथ में लेता हूँ। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि वह क्या कह रहा है।

Machine Translated by Google

उसकी आँखों में एक भाव था, लेकिन मुझे यह बात परेशान कर रही थी। 'चाचा, अभी पुरस्कार की बात नहीं है।
यह आपको उस कलाकार के रूप में सम्मानित करने के लिए है जो आप थे और हैं, तथा आपकी प्रतिभा के प्रति श्रद्धांजलि है।' मैं उन शब्दों का प्रयोग करता हूं जिनसे मुझे आशा है कि वह प्रसन्न होंगे।

वह अपना सिर हिलाता है। 'बहुत बड़े, खोखले शब्द। राधा, तुम मुझसे ऐसे शब्दों में बात करने की हिम्मत मत करना। तुम उन पत्रकारों में से एक लगती हो जो पुरस्कार की घोषणा होने पर मुझे परेशान करना सुनिश्चित करते हैं। 'सर, आपको पहली बार कब पता चला कि आप एक डांसर बनना चाहते हैं? सर, आपकी प्रेरणा क्या थी? सर, क्या आपको लगता है कि कला समाज को बदल सकती है?' वह तीखी आवाज़ में बोलता है।

'नहीं, आशान,' क्रिस ने भी यही कहा। 'वह सही कह रही है।' मैंने उसकी

तरफ देखा। क्रिस ने 'आशान' शब्द का उच्चारण लगभग पूरी तरह से सीख लिया है। मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा कि यह शब्द उसके मुंह से कितनी आसानी से निकल जाता है।

'यह पुरस्कार बहुत से अन्य लोगों को प्रेरित करेगा। इसे इस बात की मान्यता के रूप में सोचें कि कौन
तुम हो। नर्तक और पुरुष दोनों।' वह हमारे हाथों को अपने हाथों में लपेटता है।

चाचा मुस्कुराते हैं। यह एक पानी जैसी मुस्कान है।

क्रिस और मैं एक दूसरे को देखते हैं। मैं उसकी आँखों में राहत देखता हूँ और वह मेरी आँखों में। फिलहाल, हमारे पास उद्देश्य की समानता है।

और इसलिए हम वहीं रुक गए, हमारे हाथ एक मंदिर की मीनार में बंधे हुए थे, जो एक दूसरे से जुड़ी हुई उम्मीद की पुष्टि कर रहा था। मैंने अपनी आँखें उठाईं और श्याम को गेट पर खड़ा देखा। मैं उस तस्वीर के बारे में सोचता हूँ जो हमें बनानी चाहिए। मैं उसके चेहरे पर बीभलसम का एक और रूप देखता हूँ। नफ़रत। शुद्ध नफ़रत।

फिर वह मुझे देखता है और नज़र गायब हो जाती है। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मैंने यह कल्पना की थी। मैं सुनता हूँ
उससे कहा, 'नमस्ते, यहाँ क्या हो रहा है? निष्ठा की शपथ...'

Machine Translated by Google

श्याम

वे टूटकर बिखर जाते हैं। एक पुआल का घर जो बड़े, बुरे भेड़िये की छाया पड़ने पर काँप उठता है। मुझे उनके हाथों के टॉवर को उड़ाने के लिए बहुत ज़्यादा ज़ोर नहीं लगाना पड़ा। बस मुझे देखना ही काफी था।

मैं अपनी आँखों से पीड़ा पोंछता हूँ और अपनी पूरी हार्दिक आवाज़ में कहता हूँ, 'नमस्ते,
यहाँ क्या हो रहा है? निष्ठा की शपथ...'

अंकल सबसे पहले बोलते हैं। 'वे मुझे सांत्वना देने की कोशिश कर रहे हैं।' क्रिस ऊपर देखता है और कहता

है, 'हैलो, शम। तुम कैसे हो?' शम नहीं, कमीने। क्या तुम सही से समझ नहीं पा रहे हो? यह श्याम है।

जब भी मैं उसके बारे में सोचता हूँ, तो मेरे दिमाग में एक छवि बार-बार उभरती है: क्रिस एक कोने में दुबका हुआ है और मैं उसे बूट पहने पैरों से लात मार रहा हूँ। मैं अपने मन की आँखों में बूट देख सकता हूँ, चमड़ा चमक रहा है और तलवों में खतरनाक स्पाइक्स जड़े हुए हैं। मैं उसे बार-बार लात मारता हूँ जब तक कि उसके शरीर पर रिबन और उसकी पीड़ा की प्रतिध्वनि के अलावा कुछ नहीं रह जाता।

राधा मेरी कोहनी छूती है। 'श्याम, सुन रहे हो? मैंने पूछा, कैसे?
इतनी जल्दी यहाँ आ गए?'

मैंने कंधे उचकाए। 'मैंने काम जल्दी खत्म कर लिया।' बेशक, मैंने जल्दी पहुंचने की योजना बनाई थी, यह देखने के लिए कि क्या वह अंकल के साथ है या वे दोनों किसी आरामदायक जगह पर बैठे हैं।
कोना।

वह खुश नहीं है कि मैं यहाँ हूँ, मुझे पता है। लेकिन मैं दिखावा करता हूँ कि मैं खुश नहीं हूँ। मैं इसमें माहिर होता जा रहा हूँ: यह दिखावा करना कि मुझे नहीं पता कि क्या हो रहा है, यह दिखावा करना कि मुझे पिछले कुछ दिनों से राधा की देखभाल करने वाली पत्नी की भूमिका समझ में नहीं आ रही है, यह दिखावा करना कि मुझे नहीं पता कि अंकल उनके सहयोगी हैं, जो उनकी अंतरंगता में सहायता और बढ़ावा दे रहे हैं।

इस दौरान मैं यही सोचता रहा कि अंकल को मुझसे कुछ हद तक प्यार है।
सम्मान भी। अब मैं देख रहा हूँ कि कुछ भी नहीं है। उसे इस बात की परवाह नहीं है कि यह सब मेरे साथ क्या करेगा, जब तक कि यह उसकी प्यारी राधा को खुश करता है। मुझे लगता है कि मैं भी उसे लात मारना चाहूँगा, उसके घमंडी चेहरे से खून निकालना चाहूँगा। मुझे लगता है कि उन सभी को लगता है कि वे मुझे पूरी तरह से बेवकूफ बनाने में कामयाब हो गए हैं। शायद वे इस पर एक साथ हँसते भी हैं।

मैं अपने विचारों पर पर्दा डाल कर मुस्कुराता हूँ। मैं नहीं चाहता कि उनमें से किसी को भी एहसास हो
कि मुझे पता है कि क्या हो रहा है।

मैंने इस बारे में बहुत सोचा है कि मैं इस स्थिति को हल करने के लिए क्या कर सकता हूँ। सबसे आसान काम क्रिस से छुटकारा पाना होगा। तब स्थिति एक स्थिति नहीं रह जाएगी। मेरे पास ऐसे संपर्क हैं जो ज़रूरी काम करेंगे। एक सुबह नदी में एक फूली हुई लाश होगी और उसके बाद कोई उपद्रव नहीं होगा। लेकिन अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं

Machine Translated by Google

राधा को हमेशा के लिए खो दोगे। वह उनकी वासना को अपने अंदर समाहित कर लेगी और इसे मंदिर में बदल देगी। वह खुद को इसकी महायाजक नियुक्त कर लेगी, अपना सिर मुंडवा लेगी, सफेद कपड़े पहन लेगी और इससे हमारे और मेरे जीवन के संबंध तोड़ देगी।

मैंने आधे मन से सोचा कि उसकी झोपड़ी में कुछ ड्रग्स छिपा दूं। बाकी काम मेरा दोस्त एसपी कर देगा। क्रिस को कोई नुकसान नहीं होगा, लेकिन उसे जाना होगा। सिवाय इसके कि मुझे डर है कि राधा को मुझ पर शक हो जाएगा कि मैंने उसे फंसाया है और वह मुझे कभी माफ नहीं करेगी। यह भी चिंता है कि रिसॉर्ट का नाम बदनाम हो जाएगा। मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।

राधा मेरी है और मैं क्रिस को उसे छीनने नहीं दूंगी। मुझे सोचना होगा
कुछ और। इस बीच, मैं नाटक करना जारी रखूंगा और अपना बदला लेने की योजना बनाऊंगा।

राधा कहती हैं, 'श्याम अंकल को राज्य पुरस्कार मिला है और वे इसे बोझ की तरह ले रहे हैं।'

मैं अपना हाथ अंकल की ओर बढ़ाता हूँ। 'बधाई हो! लेकिन तुम्हें यह पसंद क्यों नहीं आया?' 'ये बातें कोई
मायने नहीं रखतीं,' बूढ़ा आदमी कहता है।

मुझे लगता है कि इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आपने मंच पर इतने साल बिताए हैं, लेकिन आपके पास दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है। अच्छा होना ही काफी नहीं है, आपको वह चाहिए जो मेरी माँ एक आवश्यक गुण मानती थी: सामर्थ्यम। विचारों की कुशलता।
अवसर को पहचानने और उसका लाभ उठाने में कुशलता। अपने मामलों का प्रबंधन करने में निपुणता।

मैं अपनी सबसे बड़ी मुस्कान बिखेरता हूँ और कहता हूँ, 'लेकिन यह बहुत अच्छी खबर है। मैं बहुत खुश हूँ। क्या मैं पत्र देख सकता हूँ?' अंकल मुझे पत्र देते हैं। मैं उनके

चेहरे से देख सकता हूँ कि वे तय नहीं कर पा रहे हैं कि उन्हें मेरी प्रतिक्रिया से खुश होना चाहिए या नाराज़। 'यह शानदार है,' मैं पत्र को आगे बढ़ाते हुए कहता हूँ। 'राधा, क्या तुमने इसे पढ़ा? यह बहुत रोमांचक है। मैं तुमसे कहता हूँ, प्रेस को इसके बारे में पता चलते ही यहाँ डेरा डाल देंगे।'

बूढ़ा आदमी कहता है, 'यही तो वह बात है जिससे मैं डरता हूं।'

'हमें जश्न मनाना चाहिए; पुरस्कार के बारे में गाना-बजाना चाहिए। मुझे लगता है कि हमें रिसॉर्ट में एक रिसेप्शन आयोजित करना चाहिए,' मैंने पत्र को मोड़ते हुए कहा। फिर मैंने इसे देखा और कहा, 'क्या मैं इसकी फोटोकॉपी करके आपको वापस दे सकता हूँ? मैं प्रेस विज्ञप्ति के लिए इसमें से कुछ ले सकता हूँ।' 'श्याम, श्याम।' अंकल ने अपना हाथ ऊपर उठाया। 'मैं कोई उपद्रव नहीं चाहता।' 'यह एक उत्सव है।

उपद्रव नहीं।' 'धन्यवाद। मैं वास्तव में यह सब करने की आपकी इच्छा से प्रभावित हूँ, लेकिन नहीं। क्या
आप ऐसा कर सकते हैं?

क्या तुमने मुझे सुना? नहीं.'

मैं उसे पत्र वापस देता हूँ। मैं दिखावा करता हूँ कि मुझे कोई अनिच्छा नहीं है। मैं दुखी होने का दिखावा करता हूँ। लेकिन अंदर ही अंदर मैं हँसता हूँ। सुनो, तुम बूढ़े आदमी, तुम्हें नहीं लगता कि मैं ऐसा कह रहा हूँ, है न? मेरा अपना समय या पैसा बर्बाद करने का बिल्कुल भी इरादा नहीं है

Machine Translated by Google

ऐसा कुछ जिससे मुझे कोई लाभ नहीं होगा। खास तौर पर आपके लिए नहीं, जो इस अपराध में भागीदार रहे हैं जो उन दोनों, आपकी भतीजी और उसके प्रेमी ने मेरे खिलाफ किया है।

'राधा, उसे बताओ,' मैं आग्रह करता हूं।

राधा आह भरती है। 'अगर वह तैयार नहीं है, तो हम उसे कैसे मजबूर कर सकते हैं?' मैं अपनी

बेबसी का प्रदर्शन करते हुए अपने हाथ ऊपर उठाता हूँ। फिर मैं देखता हूँ
उसके कंधे पर जो दाग है। यह एक प्रेम दंश है, जो मेरे मुंह से नहीं हुआ।

मैं आगे बढ़कर उस स्थान को छूता हूं और पूछता हूं, 'यह क्या है?'

वह चौंक जाती है। उसका चेहरा पीला पड़ जाता है। वह उसे छूती है। अनजाने में, उसकी नज़र क्रिस पर जाती है। फिर वह चोट को छिपाने के लिए अपनी शर्ट का कॉलर खींचती है और स्पष्टीकरण के लिए टटोलती है। 'मुझे लगता है कि मैंने दरवाज़े के चौखट को मारा होगा। डाइनिंग रूम में जो बाहर निकला हुआ है। आप जानते हैं कि मैं कितनी अनाड़ी हूँ।' वह क्रिस की आँखों में देखती है कि क्या स्पष्टीकरण संतोषजनक है, लेकिन वह, जो कि एक अभ्यासी प्रलोभक

है, कहीं और देखता है। मुझे तब पता चलता है कि उन्होंने आज सुबह चुदाई की थी।

मैं फिर से महसूस करता हूँ, मेरे अंगों के छोर से, मेरे पेट के गड्ढे से, मेरी रीढ़ की हड्डी के आधार से, मेरी नसों और तंत्रिकाओं के माध्यम से घृणा का वह जमावड़ा। मुझे पता है कि अगर मैं इसे अपने भीतर रोक लूँगा, तो मैं फट जाऊँगा, या उन दोनों का गला घोंट दूँगा। मैं अपनी घृणा बाहर निकालता हूँ।

मैं अंकल की तरफ देखता हूं। वह शर्मिंदा दिखते हैं।

वह अपनी कुर्सी पर करवट बदलता है और पक्षी के पिंजरे पर थपथपाता है। प्रकाश की एक किरण उस पर पड़ती है। उसके बटन का सोना पकड़ लेता है। मुझे आश्चर्य है कि क्या यह असली सोना है?

चाचा ब्लाउज जैसी शर्ट पहनते हैं। यह ऐसी शर्ट है जिसे आप अपने सिर के ऊपर से खींच सकते हैं, इसके कॉलर रहित सिरों को सोने की स्टड से जोड़ा जाता है। अब शायद ही कोई ऐसे पुराने जमाने के कपड़े पहनता हो। यहाँ तक कि बूढ़े लोग भी बुश शर्ट पहनने लगे हैं। लेकिन चाचा, बेशक अलग हैं। इसलिए खास सूती कपड़ा खरीदना पड़ता है और दर्जी को उसके बताए पैटर्न के अनुसार उसे सिलना पड़ता है।

राधा यह सब अपनी मर्जी से करती है। लेकिन जब मैं उससे शर्ट चुनने के लिए मेरे साथ चलने को कहता हूँ, तो उसकी आवाज़ में थकान का भाव आ जाता है: 'क्या तुम सच में चाहती हो कि मैं ऐसा करूँ? मैं शर्ट चुनने में अच्छी नहीं हूँ। तुम्हें खुद ही यह काम करना चाहिए। तुम ही इसे पहन रही हो।
इससे क्या फर्क पड़ता है कि मुझे यह पसंद है या नहीं? अगर आपको पसंद है तो यह काफी है।'

मुझे आश्चर्य है कि क्या वे बूढ़े आदमी के बिस्तर पर ही संभोग करते हैं। क्या वह बाहर, यहाँ बरामदे में खड़ा होकर, उन्हें चेतावनी देने के लिए तैयार रहता है, जबकि वे अंदर चीखते-चिल्लाते और गुर्राते रहते हैं?

मैं अपना चेहरा पोंछता हूँ। मुझे पसीना आ रहा है और मैं ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं देखा जाना चाहता जिसने नियंत्रण खो दिया है। मेरे तरीके और साधन सूक्ष्म हैं।

फिलहाल मैं सोचता हूं कि मैं बदला लेने के एक छोटे से कार्य से ही संतुष्ट हो जाऊंगा।

Machine Translated by Google

'चाचा,' मैं कहता हूँ। 'मैं आपसे एक एहसान माँगना चाहता था।' मैं चारों ओर देखता हूँ, और सभी को चर्चा में शामिल करता हूँ। बूढ़ा आदमी पान का पत्ता मोड़ते हुए रुक जाता है। 'यह क्या है?' वह पूछता है।

'जब मैं कोच्चि में था, तो एक टूर ऑपरेटर मुझे कुछ रिसॉर्ट्स में ले गया। आप जानते हैं कि उनके विपरीत, हमारे पास परिदृश्य के रूप में बहुत कम है - नदी के अलावा, वह भी। हमारे यहाँ जो है वह है कथकली। उनमें से कुछ रिसॉर्ट्स में, वे पर्यटकों को प्रदर्शन के लिए ले जाते हैं और वे मुझे बताते हैं कि पर्यटकों को यह बहुत पसंद आता है।

मैं सोच रहा था, क्यों न हम भी ऐसा ही करें? सिवाय इसके कि हम सीज़न के दौरान रिसॉर्ट में प्रदर्शन आयोजित करें।'

'श्याम!' मैंने राधा की आवाज़ में भय सुना।

मैं उसे चुप कराने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाता हूँ। 'कृपया, मुझे खत्म करने दो। पूरा प्रदर्शन नहीं, ध्यान रहे। मेरे मेहमान सो जाएँगे। पश्चिमी दर्शकों की दिलचस्पी बढ़ाने के लिए बस इतना ही। हम दुर्योधन वध या प्रहलादचरितम या युद्ध के दृश्यों में से कुछ चुन सकते हैं। कुछ जोरदार और रंगीन ... और खूनी।' 'श्याम,' राधा उस आवाज़ में कहती है जो वह तब अपनाती है जब वह मुझे अपना मन बदलने के लिए मनाने की कोशिश कर रही होती है। यह एक ऐसी आवाज़ है जो यह सुझाव देती है कि 'मुझे पता है कि तुम मूर्ख हो, लेकिन मैं फिर भी कोशिश करूँगी और तुम्हें कुछ समझाऊँगी'।

'यह रिसॉर्ट में हाथी को पेड़ से बांधने जैसा नहीं है।' 'बिल्कुल,' मैंने कहा। 'पद्मनाभन एक बहुत सफल व्यक्ति

हैं। मेरे मेहमान उन्हें बहुत पसंद करते हैं। सभी लोग महावत को टिप देते हैं और पद्मनाभन केले खरीदने के लिए उसे पचास रुपये का अतिरिक्त नोट देते हैं। मैं आपको बताता हूँ, कथकली बहुत बढ़िया होगी!'

'सिर्फ इसलिए कि कथकली रंगीन और ...और ...ऊर्जावान है, आप इसे अपने मेहमानों के मनोरंजन के लिए रात के खाने से पहले की प्रस्तुति में नहीं बदल सकते।' राधा अब अपनी नाराज़गी छिपाने की भी ज़हमत नहीं उठाती।

'लेकिन शम, यह तो बेतुकी बात है,' क्रिस ने कहा। 'निश्चित रूप से आप अंकल से ऐसा नहीं पूछ सकते...' 'क्या मैंने अंकल का नाम लिया?' मैंने उन दोनों से

पूछा। 'आपने यह निष्कर्ष निकाल लिया। मैंने नहीं लिया। अंकल बहुत बूढ़े हैं। मुझे यकीन है कि उनके पास ऐसे ऊर्जावान दृश्य करने की ताकत नहीं है। इसके अलावा, कोई भी बुजुर्ग कृष्ण या भीम को नहीं देखना चाहता।'

मैं देखता हूँ कि अंकल सिहर उठते हैं। मेरे भीतर कहीं न कहीं, उन्होंने मुझे जो चोट पहुँचाई है, उसका दर्द कम होने लगता है।

'श्याम, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?' राधा क्रोधित हो गई, जैसा कि मैं जानता था कि वह होगी।

'क्यों? मैंने क्या किया है? मैं सिर्फ़ अंकल से पूछ रहा था कि क्या उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति पता है जो हफ़्ते में एक बार यहाँ आ सके। एक या दो डांसर...युवा कलाकार। हमें उन्हें ज़्यादा पैसे नहीं देने पड़ेंगे।' मेरी आवाज़ शिकायती है, जो धीरे-धीरे आगे की ओर मुड़ रही है।

Machine Translated by Google

मैं जो असुविधा पैदा कर रहा हूँ, उसका आनंद लेने लगा हूँ।

'मुझे लगता है कि यह हास्यास्पद है। दूसरे रिसॉर्ट्स ऐसा कर सकते हैं, लेकिन आप एक कला को सर्कस के करतब में नहीं बदल सकते।' क्रिस भी राधा की तरह ही गुस्से में है।

चाचा खड़े हो जाते हैं। 'क्या मैं बीच में बोल सकता हूँ?' वहाँ
सन्नाटा छा जाता है।

वे कहते हैं, 'आपको एक या दो से अधिक वेषकरणों की आवश्यकता होगी।'

मैंने सिर हिलाया. 'हां, बिल्कुल.' 'आपको

दो गायकों की जरूरत होगी. आपको तालवादक की जरूरत होगी- चेंडा,
मद्धलम और इदेक्का।'

'क्या हम रिकॉर्डिंग का इस्तेमाल नहीं कर सकते?'

'यह वैसा नहीं होगा। लाइव संगीत माहौल को और भी बेहतर बनाता है।' मैं सहमत हूँ, लेकिन कुछ नहीं

कहता। अंकल मेरे बोलने का इंतज़ार करते हैं। जब मैं नहीं बोलता, तो वे आगे कहते हैं, 'आपको पेटीकारन की ज़रूरत होगी और आपको या तो पोशाक और मुकुट किराए पर लेना होगा या सेट में निवेश करना होगा। लंबे समय में, निवेश करना सस्ता हो सकता है। साथ ही, हो सकता है कि जब आपको मुकुट की ज़रूरत हो, तो आप उसे किराए पर न ले पाएँ।

कथकली भले ही व्यावसायिक व्यवसाय में बदल गई हो, लेकिन मुकुट को अभी भी पवित्र माना जाता है। इसलिए पहली प्राथमिकता किसी रिसॉर्ट में प्रदर्शन करने के बजाय मंदिर में प्रदर्शन करना होगी।' 'यह कितना महंगा होगा?' मैंने पूछा।

चाचा भौंचक्के रह गए. 'मुझे पक्का नहीं मालूम. करीब सोलह हज़ार रुपए.'
शायद, सिर्फ़ ताज के लिए। मुझे एक या दो दिन का समय दीजिए और मैं आपको बता दूँगा।'

'चाचा।' राधा के चेहरे पर घृणा के भाव उभर आए। 'तुम इस बात से सहमत नहीं होगे, है न? श्याम को यह भी समझ में नहीं आ रहा कि वह तुम्हारे लिए पवित्र चीज़ों का अपमान कर रहा है।' 'यह अपवित्रता है। तुम इस पर विचार भी कैसे कर सकते हो?' क्रिस ने पूछा।

बूढ़ा आदमी उनकी ओर देखता है। वह अपना सिर हिलाता है। उसका स्वर नरम है, लेकिन उसकी आँखों में क्रोध है। 'मेरा एक छात्र है जो एक फिल्म स्टूडियो में पूर्णकालिक कर्मचारी है। आठ साल के गहन प्रशिक्षण के बाद, क्या आप जानते हैं कि वह क्या करने के लिए मजबूर है? हर सुबह वह मुकुट सहित पूरी पोशाक पहनता है और इंतजार करता है। वह इस उम्मीद में इंतजार करता है कि फिल्म सिटी के किसी सेट पर उसकी उपस्थिति की आवश्यकता होगी। किसी अच्छे दिन उसे कुछ मुद्राएँ दिखाने के लिए कहा जाएगा, शायद कलशम भी करने के लिए। कुछ दिन वह केवल एक सहारा होता है। कुछ दिन वह बस इंतजार करता है। यह अपवित्रता है। मैं अपने छात्र को दोष नहीं दे रहा हूँ। मेरा दिल उसके लिए दुखी है। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि उसे क्या सहना पड़ता होगा, वह शायद खुद के लिए कितनी घृणा महसूस करता होगा। लेकिन उसे खाना है, उसे जीना है, और कथकली उसे प्रदर्शन के अलावा कुछ भी करने के लिए सक्षम बनाती है। मैं उस समाज को दोषी ठहराता हूँ जो इस कला का मज़ाक उड़ाता है। क्या आपने लिक्विड ब्लू का वह विज्ञापन नहीं देखा है जिसमें पूरी पोशाक में कथकली नर्तक का उपयोग किया गया है?

Machine Translated by Google

वेशकारण का कपड़ों को सफ़ेद करने से क्या लेना-देना है? क्या आपने फ़िल्मों के ऐसे दृश्य नहीं देखे हैं जहाँ नायक और नायिका कथकली नर्तकियों की एक पंक्ति के साथ हाथ मिलाते हैं और वे सभी ब्रॉडवे शो में कोरस गर्ल्स की तरह ऊँची किक करते हैं? यह अपवित्रता है। मैं नर्तकियों को कभी दोष नहीं दूँगा। ऐसा दृश्य वेशकारण के घर में एक हफ़्ते तक रसोई की आग जलाए रखेगा और जब आप भूखे हों, तो आप अपने सिद्धांतों से चिपके नहीं रह सकते। हम आज की दुनिया में एक कालभ्रमित व्यक्ति हैं। हमारी कला हमसे और दर्शकों से प्रयास की माँग करती है। लेकिन इन सबके लिए किसके पास समय है? एक कथकली नर्तक के लिए आधुनिक दुनिया में कोई जगह नहीं है। वह एक लुप्तप्राय प्रजाति है।

'तो यहाँ श्याम और उनके विदेशी मेहमान हैं, जो केरल की कला की एक झलक पाने के लिए उत्सुक हैं। कम से कम हफ़्ते में एक बार, एक वेशकारन एक ऐसा किरदार हो सकता है जिसके लिए उसने प्रशिक्षण लिया है। तो क्या हुआ अगर इसे संक्षिप्त कर दिया जाए, तो क्या हुआ अगर उसे केवल शानदार दृश्य निभाने के लिए कहा जाए, तो क्या हुआ अगर उसकी व्याख्या करने की गुंजाइश सीमित हो? अपनी आत्मा को बेचने के लिए उसे जो कुछ भी करना पड़ता है, उसके बीच उसे राहत मिलती है। उसे उसकी गरिमा वापस मिल जाती है।

'क्यों, श्याम एक संरक्षक हैं। अपने तरीके से, वे कथकली को जीवित रख रहे हैं। आप
हमें इसकी सराहना करनी चाहिए, न कि उसकी और उसके प्रस्ताव की निंदा करनी चाहिए।'

मैं शरमा जाता हूँ। मैं दूसरी तरफ देखता हूँ। बदला लेने के मामले में, मुझे लगता है, बर्बर होना सबसे अच्छा है।
सूक्ष्म के बजाय.

फिर से नफ़रत उभरी। इस बार, हालांकि, यह मेरे लिए है। उस दुर्भावना के लिए जो मैंने सोची थी। बूढ़े आदमी को चोट पहुँचाने की चाहत के लिए। मुझे एहसास हुआ कि चाहे कुछ भी हो, मैं उससे वास्तव में नफ़रत नहीं कर सकता। ठीक वैसे ही जैसे मैं राधा से नफ़रत नहीं कर सकता।

Machine Translated by Google

चाचा

राधा क्रोधित हो जाती है। उसकी आँखें चमक उठती हैं। वह मेरी ओर मुड़ती है। 'चाचा, मैं आपकी बात बिल्कुल नहीं समझती। एक तरफ तो आप इस पुरस्कार को महत्वहीन मानते हैं और दूसरी तरफ आप सोचते हैं कि श्याम जो प्रस्ताव दे रहा है वह लगभग प्रशंसनीय है।'

पहली बार मुझे समझ में आ रहा है कि श्याम को अपनी शादी में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। शायद वह जो बहादुरी दिखाता है, जो वह मिस्टर फिक्स-इट का उत्साह दिखाता है, जो वह सब कुछ जानता है, वह सिर्फ़ इस आत्मसम्मान को लगातार कम होते जाने से बचाने के लिए है। और फिर भी, मैं राधा की चिंता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

पिछले कुछ समय से उसने खुद को मेरा रक्षक बना लिया है और एक माँ मुर्गी की तरह वह खतरे की जरा सी आहट पर मेरी रक्षा के लिए दौड़ पड़ती है। कई मायनों में हमारी भूमिकाएँ उलट गई हैं। वह मेरी देखभाल वैसे ही करती है जैसे मैं उसका करता था। मैं उसके सिर पर तसल्ली से थपथपाता हूँ।

'आपको यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि श्याम के विचार में बहुत सारी खूबियाँ हैं। मुझे इसमें कला के लिए आशा की किरण नज़र आती है। अब, यह पुरस्कार व्यक्तिगत है। मुझे अपनी कला की क्षमता बताने के लिए किसी पुरस्कार की ज़रूरत नहीं है। वास्तव में, मेरे लिए एकमात्र पुरस्कार यही है,' मैंने अपने बटन को छूते हुए कहा।

'सोने का बटन?' मैंने क्रिस के स्वर में आश्चर्य सुना।

राधा कहती हैं, 'मैंने हमेशा सोचा था कि सोने का बटन कोई स्मृति चिन्ह होगा। मुझे नहीं पता था कि आपको यह पुरस्कार के तौर पर मिला है।'

और श्याम—केवल श्याम ही पूछता, 'यह 18 कैरेट सोना है या 22 कैरेट?' मैं सोने का बटन छूता हूँ। 'क्या इससे
कोई फ़र्क पड़ता है? यह मेरे जीवन में अब तक मिली सबसे कीमती चीज़ है।'

मैंने सोचा था कि छोटे से शिव मंदिर में मेरा प्रदर्शन दुनिया से कुछ टिप्पणी प्राप्त करेगा। जैसे-जैसे समय बीतता गया, मुझे लगा कि मेरे धर्मपुत्र पर किसी का ध्यान नहीं गया। हर दिन मेरा गुस्सा बढ़ता गया। मुझे लगा कि मुझे आशान को इसके लिए राजी नहीं करना चाहिए था। मुझे किसी अधिक प्रतिष्ठित अवसर, अधिक महत्वपूर्ण स्थल का इंतजार करना चाहिए था। इस शिव मंदिर के बारे में किसने सुना था? अगर मैं खुद वहां नहीं गया होता, तो मुझे पता ही नहीं चलता कि यह मौजूद है।

मेरे अंदर जो आक्रोश था, वह संदेह की भावना के रूप में शुरू हुआ। क्या मैंने धर्मपुत्रन का छोटा संस्करण बनने का निमंत्रण स्वीकार करके कोई गलती की थी?
उस समय, यह काफी था कि मुझसे पूछा गया था। संदेह नाराजगी में बदल गया और जब यह कड़वाहट में बदल गया, तो मुझे लगा जैसे मेरा पूरा अस्तित्व ही खत्म हो गया था

Machine Translated by Google

बदल गया। मैं आशान की आँखों में आँखें नहीं मिला पा रहा था। मुझे लगा कि मेरे हाव-भाव अनाड़ी हो गए हैं और मेरी अभिव्यक्ति लकड़ी में सख्त हो गई है। जब उसने मुझसे खलनायक बनने के लिए कहा, तभी मेरी भावनाएँ सामने आईं।

और ऐसा हुआ कि एक सुबह, जब आशान मुझे देख रहा था, उसने कहा,
'अच्छा! मुझे लगता है कि अब आपकी नाराजगी का फायदा उठाया जा सकता है।'

मैं रुक गया। किसी के लिए कक्षा के बीच में रुकना असामान्य था
जब तक कि आशान ने उनसे ऐसा करने के लिए नहीं कहा। लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था।

आशान ने अपना चेलापेटी पास खींच लिया। उसने हाथ हिलाकर क्लास खत्म करने का इशारा किया। फिर उसने चेलापेटी खोली और उसमें से दो पान के पत्ते निकाले। धीरे-धीरे उसने उन्हें तैयार किया। मुझे लगा कि मेरे अंदर गुस्सा उमड़ रहा है। मुझे पता था कि वह जानबूझकर ऐसा कर रहा है। एक बार जब पान उसके मुंह में चला जाता, तो पूरे पांच मिनट के बाद वह उसका रस थूकता, मुंह धोता, पानी पीता और बात करने के लिए तैयार हो जाता।

'आशां', मैंने अपनी अधीरता को छिपाने की जहमत नहीं उठाते हुए कहा।

उसने अपनी भौहें उठाईं: रुको।

मैंने अपने नाखूनों को घूरा। मैंने निगल लिया। शब्द। गुस्सा। पित्त। मैंने तय किया कि इस खेल में दो लोग खेल सकते हैं।

फिर आशान ने अपना गला साफ़ किया। 'यहाँ, अपने आप को देखो।' मैंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं। आशान

के हाथ में एक छोटा सा आईना था। 'अपने चेहरे को देखो। क्या तुम धर्मी क्रोध देख रहे हो? यह वही बलभद्रन है जिसे मैं देखना चाहता हूँ।' मैं उस बूढ़े आदमी की ओर मुड़ा। मुझे लगा कि मेरा दिल कलशम कर रहा है।

ताई णता. ती. णता. ती. ती. ताई. मेरी अनियंत्रित भावनाओं की लय से मेल खाने के लिए चंपा ताल की दस ताल में चरणों की एक श्रृंखला। क्या वह मुझसे नाराज़ है या उसका मतलब कुछ और है?

'तुम्हारा क्या मतलब है?' ये शब्द मेरे विचारों की गति के साथ विलीन हो गए।

आशान ने मेरी ओर देखा। उसकी आँखों में भोग-विलास था और दुख की झलक भी। 'शिव मंदिर में तुम्हारे धर्मपुत्र के बाद, मुझे तुम्हारी ओर से कई निमंत्रण मिले। उन्होंने तुम्हें लिखने के बजाय मुझे लिखना पसंद किया, शायद इसलिए क्योंकि मैं और...' वह रुका, 'तुम्हारा गुरु हूँ। उन्होंने तुम्हें यह और वह बनने के लिए कहा। सब दोयम दर्जे के चरित्र। मैंने तुम्हें बताना भी बंद कर दिया, क्योंकि मैं ऐसी ही किसी चीज़ का इंतज़ार कर रहा था।'

'किस बात का इंतज़ार कर रहे हो, आशान?' तब मुझे खुशी का एहसास हुआ। मेरे धर्मपुत्र ने प्रभाव डाला था। मैं एक कलाकार था, एक बेहतरीन कलाकार। अपनी खुशी को छिपा नहीं सका और मैं उसके करीब आ गया। 'वे मुझे क्या बनाना चाहते हैं?'

'धैर्य, धैर्य।' आशान एक कदम पीछे हट गया। फिर उसने कहा,
'सुभद्राहरणम् में बलभद्रं।'

Machine Translated by Google

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। बलभद्रन। बलराम। अधिक प्रसिद्ध कृष्ण के भाई। नायक। पझुप्पु चरित्र के सरसों के पीले रंग के साथ कुलीन प्राणी।

'क्या अब तुम्हें एहसास हुआ कि मुझे तुम्हें क्यों परेशान करना पड़ा? धर्मपुत्रन पहली बार में ही तैयार हो गया था। लेकिन प्रभाव छोड़ने के लिए, अपनी कला को पहचान दिलाने के लिए, तुम्हें ऊर्जा से भरपूर वेशम की जरूरत होती है। जहां तुम्हारे अभिनय और नाट्य कौशल पर बराबर ध्यान दिया जाता है। चरित्र की तुम्हारी व्याख्या और तुम्हारे हाथों और पैरों की निपुणता को प्रदर्शित करने की जरूरत होती है। और बलभद्रन वह मंच है।' मुझे लगा कि मेरे ऊपर शर्म हावी हो रही है। मैंने सोचा था कि आशान की चुप्पी असुरक्षा की भावना से प्रेरित थी। मैंने खुद से कहा था कि मेरे वेशम ने आशान को अपर्याप्त महसूस कराया है और इसलिए वह मुझे नीचा दिखाने की कोशिश कर रहा है।

'आशां', मैंने पूछना शुरू किया, और सोच रहा था कि माफी कैसे मांगूं।

उसने शब्दों को रोकने के लिए अपना हाथ उठाया। 'मुझे पता है कि तुम प्रशंसा चाहते थे। मुझे पता है कि तुम प्रशंसा के शब्दों के लिए तरस रहे थे। मुझे पता है कि तुम चाहते थे कि मैं कहूँ कि मैं तुम्हारे धर्मपुत्र से खुश हूँ।

'मैं खुश था। मैं खुश था कि वह लड़का जो आठ साल पहले मेरे सामने खड़ा था और कह रहा था, मैं जानता हूँ कि जब मैं वेशकारण बनूँगा, तो मुझे पता चलेगा कि मैं कौन हूँ, उसने अपने शब्दों के वादे को पूरा किया।

'यह लो, मैं तुम्हें यही सब दे सकता हूँ।' आशान ने अपनी शर्ट का

सुनहरा बटन खोला। फिर उसने मेरी हथेली खोली और उसे उसमें दबा दिया। मैंने बटन का दबाव महसूस किया। पहचान की एक अमिट छाप।

'कोमन, तुम्हें यह समझना चाहिए। मुझे पता था कि अगर मैं तुम्हें बताऊँ कि मैं तुम्हारे वेशम के बारे में क्या सोचता हूँ, तो तुम सोचोगे कि इसमें सुधार की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम, अपनी उम्र के दूसरे लोगों की तरह, घमंडी हो। उस घमंड को मैं काबू में करना चाहता था। फिर प्रस्ताव आने लगे और मुझे लगा कि तुम, प्रदर्शन करने की अपनी उत्सुकता में, उन्हें स्वीकार कर लोगे। और वे भूमिकाएँ, कोमन, तुम्हें बर्बाद कर देतीं।

जब मैंने सुना कि वे आपको बलभद्रन के लिए चाहते हैं, तो मैं खुश हो गया। मेरा कोमान बलभद्रन होगा।

'लेकिन पहले तुम्हें तैयार होना था। इसलिए मैंने कुछ और समय चुप रहने का फैसला किया। मैं तुमसे उस रात तुम्हारे वेशम के बारे में बात करना चाहता था। कि कैसे तुम मेरे घर में घुसे और किसी और की तरह धर्मपुत्र बन गए, शायद।'

मैं शरमा गया। मेरी हथेली सोने के बटन के चारों ओर कस गई।

'लेकिन जब तक आप इस तरह के क्रोध को नहीं जानते, तब तक आप बलभद्र कैसे हो सकते हैं? क्या आपने कभी धार्मिक क्रोध को जाना है? यह बलभद्र की प्रमुख भावना है।

Machine Translated by Google

'कल्पना कीजिए: आपने अपनी बहन सुभद्रा के लिए एक वर चुना है। वह कोई और नहीं बल्कि आपका प्रिय छात्र दुर्योधन है। वह एक घटिया इंसान है, इस बात को आप अनदेखा करना चाहते हैं। आप उसे सिर्फ़ एक आदर्श छात्र और उसके साथ अपने व्यवहार में एक अच्छे इंसान के रूप में जानते हैं। फिर आपके भाई कृष्ण एक तपस्वी को महल में आमंत्रित करते हैं। वह आग्रह करता है कि आपकी बहन उसकी दासी बने। तपस्वी भेष में अर्जुन है। सुंदर, वीर अर्जुन। आपकी बहन और वह प्यार में पड़ जाते हैं और जब आप दूर होते हैं, तो वे कृष्ण के आशीर्वाद से भाग जाते हैं।

'तुम घर लौटते समय भाग जाने की बात सुनते हो। तुम इसे गपशप के रूप में सुनते हो। और तुम्हें एहसास होता है कि तुम्हारे भाई और अर्जुन ने तुम्हें धोखा दिया है। और यह सिर्फ़ गुस्सा नहीं है जो तुम महसूस करते हो, यह सच्चा गुस्सा है।

'जब पदम कुत्रवदा कुत्रवदा, वृथारिपुत्रणे ... से शुरू होता है, तो आपको क्रोध से लगभग कांपना चाहिए। क्योंकि आप पूछ रहे हैं: वह कहाँ है, वह कहाँ है, वह इंद्र का पुत्र अर्जुन और मेरा शत्रु, जिसे मैं उसी क्षण नष्ट कर दूँगा जब मैं

देखना ...

'कोमन, तुम ऐसे धर्मी क्रोध के बारे में क्या जानते हो?

'मनम-अंगहुम मिझियि-इंगहुम,' आशान ने नलचरितम से पदम गुनगुनाया।

मैं अपने पैरों की ओर देखता रहा। मैं समझ गया कि वह क्या कहना चाह रहा था। पदम के शब्दों ने साफ-साफ कह दिया था: अगर तुम्हारी आंखें यहां हैं और तुम्हारा मन कहीं और है तो इसका क्या फायदा? आशान सही कह रहा था। मैं धर्मी क्रोध के बारे में क्या जानता था?

आशान ने गहरी साँस ली। 'मुझे पता था कि हर दिन जब मैं चुप रहूँगा, तुम्हारा गुस्सा बढ़ता जाएगा। मैंने नाराजगी देखी। मैंने आक्रोश देखा। मैंने संदेह देखा। मैंने नफ़रत देखी। मैंने तुम्हारे अंदर एक-एक करके ये सब बढ़ते देखा: वो तत्व जो एक आदमी को धोखा दिए जाने का एहसास कराते हैं। जब तुम्हारे अंदर विश्वासघात की भावना पूरी हो जाएगी, तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम बलभद्रन अवतार होगे।'

कलारी चुप थी। मेरी आँखों में आँसू थे। मैं आशान की ओर बढ़ा और
उनके पैर छुए. 'समस्त पापं पोरुक्कणं; मेरे अपराध क्षमा करो।'

आशान ने कहा, 'आपको क्षमा जैसे शब्दों का प्रयोग करने की कोई आवश्यकता नहीं है।'
फिर, मानो वह खुद को रोक नहीं पाया, उसने कहा, 'आठ साल पहले, मुझे लगा था कि तुम जो कह रहे हो, उसका मतलब समझने के लिए तुम बहुत छोटे हो। एक बच्चा इतने दृढ़ विश्वास के साथ कैसे बोल सकता है?

'मैंने सोचा, क्या वह जानता है कि वह क्या कह रहा है? क्या वह जानता है कि कला की मालकिन होना क्या होता है? हम लोग, कोमन, तुम और मैं, रखे हुए आदमी हैं। हम अपनी कला की सनक और इच्छाओं के द्वारा शासित और संचालित होते हैं और बदले में केवल कथकली ही हमें ऐसा महसूस कराती है मानो हम श्रेष्ठ प्राणी हैं।

'लेकिन एक सच्चा कलाकार वह भी होता है जो अपनी कला में अपना विश्वास बनाए रखने में सक्षम होता है, और जानता है कि दुनिया उसकी कला के बारे में क्या सोचती है, यह अप्रासंगिक है।

Machine Translated by Google

क्या प्रशंसा के शब्द या उनकी कमी आपके लिए इतना अंतर पैदा करती है? क्या आप खुद नहीं जानते? क्या आप वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकते और यह नहीं जान सकते कि आपने कब अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और कब आप केवल औसत दर्जे के थे? क्या यह आपके लिए पर्याप्त नहीं था?'

मैंने आशान को जाते हुए देखा। मैं कलारी की सीढ़ियों पर बैठा, अपनी हथेली में सोने के बटन को देखता रहा। क्या यह जानना मेरे लिए काफी था, मैंने सोचा। क्या मैं जानने के लिए पर्याप्त उम्र का भी था? शायद कुछ सालों बाद, मैं अपनी कला के अपने वस्तुनिष्ठ विश्लेषण से संतुष्ट हो जाऊँगा। मुझे उपलब्धि का अहसास होगा।

लेकिन अभी के लिए, मुझे सोने के बटन और प्रशंसा के शब्द चाहिए थे। मुझे प्रशंसा और तालियाँ चाहिए थीं। मैं चाहता था कि दुनिया मेरे कदमों में रुक जाए।

'आपको संतुष्ट होना चाहिए कि आपका सपना सच हुआ; आपकी प्रतिभा को पहचाना गया और अभी भी उसका जश्न मनाया जा रहा है...' यह श्याम ही है जो मेरी यादों के बाद छाई खामोशी को तोड़ता है।

मालिनी खिलखिलाकर हंसती है। मैं मुस्कुराता हूँ। जब मैं अपनी बात कहने में हिचकिचाता हूँ, तो पक्षी में सही भावना व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता होती है।

'क्या मैं संतुष्ट हूँ, श्याम? मुझे नहीं पता। तुम देखो, एक समय था जब मेरे अंदर की हर चीज़ पहचान के लिए तड़प रही थी। शायद पहचान गलत शब्द है।
सच तो यह है कि मैं सिर्फ़ अपनी प्रतिभा का सही मूल्यांकन चाहता था, सिवाय इसके कि मुझे तब अंतर का पता नहीं था। क्या आप जानते हैं कि कलाकार होने के इस पूरे व्यवसाय में एक खेल खेला जाता है? संपर्क बनाने होते हैं, लोगों की चापलूसी करनी होती है, सही लोगों के बीच दिखने की ज़रूरत होती है, खुद को एक गुट से जोड़ना होता है, अपनी ईमानदारी का दिखावा करना होता है, ये सभी एक कलाकार के करियर ग्राफ़ को ऊपर उठाने के लिए ज़रूरी शर्तें हैं।' 'तो, क्या आपने खेल खेला?' क्रिस पूछता है।

'नहीं, मैंने नहीं किया। शायद इसलिए क्योंकि मुझे नहीं पता था कि कोई खेल खेला जा रहा है। मुझे इस बात का डर है कि अगर मुझे पता होता कि खेल कैसे खेला जाता है तो मैं खेल सकता था।' 'चाचा, आप खुद पर बहुत सख्त हैं।' यह राधा ही है जो फिर से नरम पड़ने की कोशिश करती है

मेरी यादों के किनारे.

'नहीं, मेरे प्यारे. मैं हमेशा अपनी कलाकारी के बारे में इतना आश्वस्त नहीं था. एक समय था जब मैं किसी और की राय से प्रभावित होने लगा था. कुछ समय के लिए, इसने मुझे अपनी कला से नफ़रत करवा दी. यह एक सच्ची या बनाई हुई राय भी नहीं थी. कुछ भद्दे शब्द, और मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार था. इसका मतलब था कि मेरा सारा प्रशिक्षण, मेरा समर्पण, मेरी कलात्मक आत्मा जैसा कि मैं तब कहता था, एक सतही अभिनय था. मैं एक ऐसा कलाकार नहीं था जो अपने सर्वश्रेष्ठ होने पर ब्रह्मांड के साथ एकता जानता हो. मैं इसे कैसे वर्णित करूँ? जिस दिन मैं भूमिका का सार समझ लेता हूँ, मैं एक शांति, पूर्णता की भावना महसूस करता हूँ जो किसी और की तरह नहीं है. हालाँकि, उन दिनों, मैं तालियों का भूखा कलाकार था.

Machine Translated by Google

'मुझे पता होना चाहिए था, है न, कि मैं अपनी योग्यताओं के प्रति ईमानदार था या नहीं?
शायद इसीलिए आशान ने मुझे यह सोने का बटन दिया। मुझे याद दिलाने के लिए कि मैं क्या करने में सक्षम हूँ। लेकिन मैंने खुद को विचलित होने दिया और कुछ और करने के लिए चिल्लाया। इतने सालों बाद भी, जब मैं उस घटना के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि मेरे अंदर आत्म-घृणा की भावना भर जाती है।' मैंने उन्हें इसके बारे में बताने का फैसला किया। 'क्या आपके पास टेप रिकॉर्डर
है?' मैंने पूछा।

Machine Translated by Google

1961–1970 होमबलि की वेदी

ऐसा लगता था कि उन शुरुआती कुछ सालों में उसे अपने साथियों से ज़्यादा लंबे समय तक छाया में रहना था। छोटे मंदिरों और प्रतिष्ठित सभाओं से निमंत्रण आते थे। हर कोई उसे चाहता था। कोमन बलभद्रन था। कोमन भीम था।

कोमन धर्मपुत्र थे। कोमन कृष्ण थे। कोमन कई बार नायक थे। कोमन एक ऐसे वेषकारण थे जैसा कोई और नहीं था।

रात में, जब कोमन के पास खुद को दिखाने के लिए कोई मंच नहीं होता था, या दर्शकों को आकर्षित करने के लिए कोई नहीं होता था, तो वह बिस्तर पर लेटे-लेटे एक विचार को गले लगाता था: मैंने यह कर दिखाया। मैंने यह कर दिखाया। मैं अपना नाम बना रहा हूँ।

कुछ दिनों में उसे यह अहसास होने लगा कि तमाम प्रस्तावों के बावजूद उसे अपनी कला के लिए सार्वजनिक स्वीकृति नहीं मिल पाई है। 'आशान, मैं चाहता हूं कि कोई आलोचक मेरे किसी प्रदर्शन को देखे।' वे उसके कमरे में बैठे थे। आशान ने अपने लिए और अधिक ताड़ी डाली। कोमन को अब शराब की बदबू की आदत हो गई थी और जब तक आशान प्रदर्शन नहीं कर

रहा था, तब तक वह शायद ही कभी आपत्ति करता था।

आशान ने अपना गिलास नीचे रख दिया। 'मुझे उम्मीद है कि तुम्हारा यह मतलब नहीं होगा,' उसने धीरे से कहा।

कोमन की आँखें चौड़ी हो गईं। 'हाँ, मैं खुद का मूल्यांकन करना चाहता हूँ।' आशान ने सिर हिलाया, हैरान। 'क्या तुम नहीं जानते

कि तुम कितने अच्छे हो?' कोमन ने अपनी उंगलियाँ बाँधी और अपने जुड़े हुए हाथों की ओर देखा। मैं जानता हूँ कि तुम सोचते हो कि

मुझे ऐसा करना चाहिए। लेकिन तुम यह नहीं समझते कि मैं तुम नहीं हूँ। मुझे जानना चाहिए।

लेकिन कोमन ने अपने विचार व्यक्त नहीं किए। इसके बजाय उन्होंने कहा, 'एक आलोचक अच्छे और बुरे की ओर इशारा करता है...' 'क्या मैं ऐसा नहीं करता? या अब आपको मेरे निर्णय

पर भरोसा नहीं है?' आशान की

आवाज़ धीमी थी लेकिन तेज़ाब से टपक रही थी।

उसने माफ़ी मांगते हुए समझाना शुरू किया. 'नहीं, नहीं, मेरा ऐसा मतलब नहीं था.' 'एक दिन तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी और

तुम शायद इतने दुखी न हो सकोगे.'

प्रसन्न। मैं हमेशा सोचता हूँ कि तुम्हें सावधान रहना चाहिए कि तुम क्या चाहते हो।' पेड़ काँप उठे।

एक महीने बाद कोमन को कीचक वधम में कीचकन की भूमिका निभाने का निमंत्रण मिला। उन्होंने पत्र को कई बार पढ़ा। आयोजक त्रिशूर में ललित कला क्लब थे। वे प्रदर्शन और शर्तों पर चर्चा करने के लिए जल्द ही उनसे मिलने आने वाले थे।

कोमन अपने कमरे में चला गया। उसके हाथ उत्साह से काँप रहे थे।

घबराहट.

Machine Translated by Google

पहली बार वह कत्थी वेशम खेलेगा। वह एक घमंडी और दुष्ट व्यक्ति होगा, जिसे केवल उसकी नसों में मौजूद कुलीन रक्त से ही मुक्ति मिलेगी। उसके चेहरे पर लाल और सफेद निशानों के साथ, वह उन सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करेगा जो परिष्कार और वीरता का तिरस्कार करते हैं। वह बुराई के प्रतीक के रूप में दो सफेद बल्ब धारण करेगा, एक उसकी नाक पर और दूसरा उसके माथे पर। कोमन ने उसकी नाक की नोक को छुआ। अचानक उसे यकीन नहीं हुआ। उसने खुद को आईने में देखा। वह कीचकन कैसे हो सकता है?

कीचकन अहंकारी था। कीचकन वासना से जल रहा था। कीचकन एक विवाहित स्त्री से संभोग करना चाहता था। कीचकन सोचता था कि ऐसा करना उसका अधिकार है।

कीचकन बहुत ही नीच और नीच था। जब उसकी मर्जी नहीं चलती थी, तो वह धमकी देता था और हिंसक हो जाता था। कीचकन कोमन के सभी नायकों से अलग था। फिर वह एक विश्वसनीय कीचकन कैसे हो सकता था?

आईने में एक चेहरा उसे घूर रहा था। चौड़ी भौंहों वाला, भूरी आँखों वाला चेहरा, ऊँचे गालों वाली हड्डियाँ, झबरा भौंहें और एक सीधी नाक जो थोड़ी सी झुकी हुई थी, उसके अरब वंश की गवाही दे रही थी। मानो उसके चेहरे के ऊपरी आधे हिस्से की क्रूर ताकत को संतुलित करने के लिए उसके होंठ थे, मांसल और गुलाबी, बारीक परिभाषित, वक्र गहरा और आकर्षक। उसका मुँह कोमलता का संकेत देता था। यह ऐसा मुँह था जो केवल चूमना और शायद काटना जानता था। ठोड़ी पर एक डिंपल था। मैं दोनों में से कोई भी हो सकता हूँ, चेहरे ने सुझाव दिया। क्या तुम्हें यह नहीं दिख रहा?

वीर पच्चा, या क्रूर कत्थी।

उसका शरीर एक दर्पण था। वह एक प्रतिबिंब था, कोई छाप नहीं, कोमन ने सुना आशान की आवाज़ उसके कान में फुसफुसाई।

कोमन ने अपने चेहरे पर उंगली फिराई। मैं पच्चा और कट्ठी दोनों हूँ। आदमी और जानवर। फिर मैं खुद पर शक क्यों करता हूँ? मैं जो चाहूँ, बन सकता हूँ।

प्रदर्शन स्थल पर, पेटीकारन उत्साह के साथ उसके पास आया। 'आप विश्वास नहीं करेंगे कि मैंने दर्शकों में किसे देखा।' कोमन पूरी पोशाक में एक स्टूल पर बैठा था, उसकी आँखों की पुतलियों पर लाल

रंग की परत चढ़ रही थी। हर बीतते पल के साथ, कोमन कीचकन में बदल रहा था - नीच, अभिमानी, कामुक। जब उसके सिर पर मुकुट रखा जाता, तो कायापलट पूरा हो जाता।

पेटीकारन उसके कान में कुछ फुसफुसा रहा था, लेकिन आवाज मानो बहुत दूर से आ रही थी।

उसे लगा कि उसके बदलाव की प्रक्रिया में एक दरार पड़ गई है। वह अधीरता से मुड़ा।

'यह क्या है?' यह कीचकन था जिसने झपट्टा मारा - या यह कोमन था?

पेटीकारन की आँखें चमक उठीं। उसने कोमन की बदतमीजी को पहचाना ही नहीं

Machine Translated by Google

उसकी उत्तेजना में.

'वह यहाँ है। कला समीक्षक नानू मेनन यहाँ हैं। आप धन्य हैं, सचमुच धन्य हैं। अब हर कोई इस प्रदर्शन के बारे में पढ़ेगा। आपका कीचकन विश्व प्रसिद्ध होगा।'

कोमन को लगा कि हवा उसके पैरों की उंगलियों से छाती तक जा रही है। उसे अपनी सांसों का एहसास था जो उसके दिल को उसके सिर से जोड़ती है। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। उस पल का आश्चर्य।
अब कोमन बोल रहा था। 'कहाँ? कौन है वह?' 'तुम उसे अनदेखा नहीं कर सकते। वह एक दुबला-पतला

आदमी है, जिसकी नाक तोते की तरह चोंचदार है, गाल धँसे हुए हैं और सिर के बाल पीछे की ओर झुके हुए हैं। वह तीसरी पंक्ति में, बीच में बैठा है।' कोमन को अजीब सी घबराहट महसूस हुई। यह उसकी पसंदीदा जगह भी थी। मंच के बहुत करीब होने से नर्तक छोटे हो जाते थे और उनकी कल्पना को

जगाने की क्षमता खत्म हो जाती थी। मंच से बहुत दूर होने से भव्यता दूर हो जाती थी। नानू मेनन का उस खास जगह को चुनना एक शगुन था, उसने सोचा। एक अच्छा शगुन।

नानू मेनन। उन्होंने कहा कि उनकी प्रशंसा का एक शब्द किसी वेशकारण की किस्मत बदल सकता है। वह शायद ही कभी युवा नर्तकियों का प्रदर्शन देखने जाते थे। आज रात वह यहाँ थे।

उसकी कनपटियों में धड़कन शुरू हो गई। वह कुश्ती के दृश्य की लय सुन सकता था: मल्लन वल्लन के खिलाफ़ अपनी ताकत का मुकाबला कर रहा था। यह एक बहुत ही शानदार दृश्य था। पहली बार, कोमन ने सोचा कि क्या उसे वल्लन बनने की मांग करनी चाहिए थी। क्योंकि वल्लन, आखिरकार, कहानी के नायक भीम का पर्याय था। कुश्ती के दृश्य में, वह उस क्रम में नृत्य करके अपनी लय की समझ प्रदर्शित कर सकता था, जिसमें उसे एक कदम चूके बिना एक ताल से दूसरे ताल पर सहजता से आगे बढ़ना था। बाद में शाम को, भीम के रूप में, वह रौद्रभीमन के रूप में उभरता, क्रोध का प्रतीक।

नहीं, नहीं, उसने अपने विचार को दूर करने के लिए अपना सिर हिलाया। 'एक वेशकारण को कभी भी अपने मन में संदेह को हावी नहीं होने देना चाहिए। कोई नायक या खलनायक नहीं होता, केवल पात्र होते हैं। यह मायने नहीं रखता कि आप कौन हैं, बल्कि आप कैसे हैं, इससे वेशकारण बनता है,' कोमन को लगा कि उसने आशान को यह कहते हुए सुना है।

'तुम कीचकन हो। तुम्हें कीचकन जैसा बनना है। तुम्हें वल्लन को भूलना होगा, या यह कि नानू मेनन यहाँ है,' आशान की आवाज़ लगातार बड़बड़ाती रही। 'तुम्हें सिर्फ़ कीचकन के बारे में सोचना है और यह कि तुम्हें कीचकन जैसा कैसे बनना है।'

कोमन को लगा कि उसकी बेचैनी शांत हो गई है। उसने अपनी नाक की नोक और माथे के बीच में सफ़ेद गेंदों को छुआ। उनकी मौजूदगी से उसे पता चल गया कि वह कीचकन है।

Machine Translated by Google

यह कीचकन ही था जिसने पेटीकारन को देखा और कहा, 'मेरा मुकुट लाओ।' कीचकन। वह महान प्राणी जो तिरशिला के बीच में खड़ा था जिसने उसे दुनिया से

अलग कर दिया था। उसके ऊपर, केवल उसका चेहरा उभरा। यह कीचकन है, उसने कहा। चाकू का निशान धारण किए हुए। चाकू अपने आप में बुरा नहीं है।

लेकिन एक ब्लेड के रूप में, यह खून बहाता है, दर्द का कारण बनता है और आतंक को भड़काता है। यही विडंबना है कि कीचकन को शाप दिया गया है।

कीचकन मंच के बीच में रखे स्टूल पर जाकर बैठ गया।

दीपक ने उसके चेहरे को रोशन कर दिया। उसके चेहरे पर बने निशानों ने कहा, सावधान। यह कोई साधारण प्राणी नहीं है जिसके साथ खिलवाड़ किया जा सके।

पर्दा थामे हुए दो आदमी दूर चले गए और इस तरह कीचकन दुनिया के सामने आ गया। वह अपनी गर्दन के चारों ओर लटकी दो लाल पट्टियों के सिरे को पकड़े बैठा था, उसका चेहरा गंभीर था। जैसे ही लय बदली, उसकी नज़र अचानक मालिनी पर पड़ी। उसकी नज़र उस पर टिकी हुई थी; उसकी भौंहें ऊपर उठ गईं। उसने गर्दन हिलाते हुए कहा, सुंदर। उसकी आँखें दिलचस्पी से चौड़ी हो गईं। यह महिला कौन थी? यह सुंदर महिला?

एक पल के लिए कीचकन की आँखें चमक उठीं। यह कोमन था जो दर्शकों की तीसरी पंक्ति में उसके सामने बैठा था। क्या तुम वहाँ हो, नानू मेनन? क्या मैं तुम्हें देख रहा हूँ जो वहाँ गर्दन उठाए बैठा है? क्या तुम मेरी तरफ़ देख रहे हो? क्या तुम देख रहे हो कि मैं कीचकन की भूमिका कितनी अच्छी तरह से निभा सकता हूँ?

फिर कीचकन ने कोमन को एक ओर धकेल दिया और कब्जा कर लिया।

तो तुम कौन हो, सुंदर स्त्री, मालिनी? तुम कहाँ से हो? मुझे नहीं पता कि यह कैसे हुआ, लेकिन तुम्हें देखते ही मेरा मन तुम्हें छूने, दुलारने, तुम्हारी वक्रताओं की घाटियों और छायाओं में घूमने का करता है। क्या तुम लक्ष्मी हो जिसे विष्णु अपने सीने से लगाते हैं? या तुम पार्वती हो जिसे शिव अपनी गोद में बिठाते हैं? या शायद तुम सरस्वती हो जिसे ब्रह्मा ने अपने चार मुखों और चार होठों से बार-बार चूमा? तुम कौन हो, सुंदर स्त्री? सांसारिक प्राणी, या स्वर्गीय अप्सरा? तुम मेरे खून को गर्म करती हो, तुम मेरी इंद्रियों को भर देती हो, तुम, तुम, तुम...

एक मर्द होने का क्या फायदा, और मेरे जैसे वीर मर्द होने का क्या फायदा, अगर मैं तुम्हारे शरीर को अपने शरीर से महसूस करने की अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकता? तुमसे प्यार करने का। तुम्हें पाकर मुझे खुशी मिले। अगर मैं तुम्हें नहीं पा सकता, तो मैं मर ही जाऊँगा।

मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैंने तुम्हें पहले भी देखा है?

हाँ, बिलकुल। अब मुझे पता चल गया। यह महिला सैरंधरी है, मेरी बहन रानी
सुदेशना की दासी।

मेरी प्यारी, मैं तुम्हें मालिनी कहूंगा।

Machine Translated by Google

मालिनी, तुम जो सुंदरता से धन्य लगती हो, मेरी बात सुनो। तुम कभी नहीं जान पाओगी कि फिर से चाहना क्या होता है, तुम कोई दुःख नहीं जान पाओगी। तुम्हारे बाल, जो गरजते बादलों की तरह काले और घने हैं, ने मुझे एक व्याकुल मूर्ख बना दिया है। वासना मुझे काँपने पर मजबूर कर देती है। तुम्हारी घुमावदार भौंहों को देखना, काम की चमेली के धनुष की तरह, मुझे इच्छा से कमज़ोर कर देता है।

तुम्हें मुझे तुमसे प्यार करने देना होगा.

मालिनी-रुचिरा-गुणशालिनी। कीचकन ने अपनी पहली कामुक चाल शुरू की।
रात गहराती गई। कहानी शुरू हुई।

जब पांडवों को दूसरी बार वनवास दिया गया, तो कौरवों द्वारा रखी गई शर्तों में से एक यह थी कि उन्हें तेरहवां और अंतिम वर्ष अज्ञातवास में बिताना होगा। यदि वर्ष समाप्त होने से पहले उन्हें पता चल गया, तो उन्हें फिर से वनवास दिया जाएगा।

अपने वनवास के तेरहवें वर्ष में पांडवों ने वेश बदलकर विराट के राजा की सेवा में प्रवेश किया। युधिष्ठिर ब्राह्मण बनकर दरबार में जुआरी बन गए; भीम रसोइया बन गए; अर्जुन नपुंसक बनकर गायन और नृत्य सिखाते थे; नकुल एक घोड़ा प्रशिक्षक बन गए; और सहदेव एक चरवाहा बन गए।

द्रौपदी ने यह दिखावा किया कि वह पाँच नए नौकरों से किसी भी तरह से संबंधित नहीं है, वह रानी सुदेष्णा की सेवा में एक परिचारिका और सुई-बुनाई करने वाली बन गई। उसने सैरंधरी का नाम लिया और रानी से कहा, 'क्या मैंने तुम्हें अपने पतियों के बारे में कभी बताया? वे गंधर्व हैं और, भले ही मैं यहाँ तुम्हारी सुरक्षा में रहती हूँ, वे हर समय मेरी रक्षा करते हैं। वे इतने अधिकारपूर्ण हैं कि वे किसी भी ऐसे पुरुष से ईर्ष्या करते हैं जो मेरी ओर एक बार भी देखने की हिम्मत करता है।'

रानी मुस्कुराई, अपनी इस नई दासी से संतुष्ट। कुछ समय तक द्रौपदी और पांडवों ने अपनी नई भूमिकाओं में डूबे हुए एक शांत जीवन व्यतीत किया। फिर रानी सुदेष्णा के भाई कीचकन, एक दुष्ट और शक्तिशाली व्यक्ति जो सेना का मुख्य सेनापति था, ने द्रौपदी को देखा और उसकी सुंदरता पर मोहित हो गया। वह हर अवसर पर उसे रोकने और अनुचित व्यवहार करने लगा।

द्रौपदी ने रानी से शिकायत की, लेकिन रानी ने उसकी बात अनसुनी कर दी। इसलिए द्रौपदी ने युधिष्ठिर से अपील की। उसे आश्वस्त करने के बजाय, युधिष्ठिर ने उसे एक बच्चे की तरह व्यवहार करने के लिए डांटा। 'तुम्हें इतनी आसानी से बुरा नहीं मानना चाहिए। इसके अलावा, तुम हर बार हमारे पास नहीं भाग सकती जब वह तुम्हारा मजाक उड़ाए या अपमान करे। क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि अगर हम हस्तक्षेप करेंगे, तो हमारी असली पहचान सामने आ जाएगी?'

द्रौपदी चुपचाप चली गई, लेकिन उसने भीम से अपील करने का फैसला किया, जो जानता था कि उसकी मांग सुनेगा और उसे पूरा भी करेगा। इसलिए उस रात बाद में, वह शाही रसोई में गई जहाँ भीम रहता था। भीम ने उसके आंसू से सने चेहरे को देखा और पूछा, 'क्या बात है, द्रौपदी? तुम क्यों रो रही हो,

Machine Translated by Google

प्रिय?' द्रौपदी

ने अपना चेहरा पोंछा और कहा, 'यह रानी का भाई कीचकन है।' उसने भीम को बताया कि कीचकन कितना उपद्रवी था।

भीम गुस्से से भड़क उठे। 'उसकी हिम्मत कैसे हुई? तुम चिंता मत करो। मैं उससे छुटकारा पा लूँगा।' द्रौपदी मुस्कुराई, राहत महसूस की। लेकिन उसे

युधिष्ठिर के चेतावनी भरे शब्द याद आ गए और उसने कहा, 'तुम्हें सावधान रहना होगा। हम नहीं चाहते कि कोई यह पता लगाए कि हम असल में कौन हैं।'

भीम ने सिर हिलाया। उसने ठोड़ी खुजलाते हुए कहा, 'यह काम गुप्त रूप से करना होगा। कल तुम्हें कीचकन के साथ किसी शांत जगह पर बैठक तय करनी होगी।'

उससे कहो कि आधी रात के बाद नृत्यशाला में आ जाए और मैं इसे वहीं से ले जाऊँगी।' अगले दिन, सैरंधरी के रूप में द्रौपदी ने कीचकन को देखा

तो वह वहाँ से नहीं हटी। इसके बजाय, वह शर्मीली मुस्कान के साथ फुसफुसाई, 'आधी रात के बाद नृत्यशाला में आना। मैं वहाँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूँ। अकेले आना नहीं तो मेरे गंधर्व पतियों को पता चल जाएगा।' कीचकन उस पर इतना मोहित हो गया था कि उसे कुछ भी संदेह नहीं हुआ। उस रात, वह नृत्यशाला में गया। उसने देखा कि कमरे के दूर छोर पर एक घूँघट वाली महिला बैठी है और उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। 'मेरी प्यारी महिला, तुम मुझसे क्यों छिप रही

हो?' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'यहाँ आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि मैं तुम्हारे बारे में कैसा महसूस करता हूँ।'

औरत ने कोई हरकत नहीं की, तो कीचकन ने दरवाज़ा बंद किया और उसकी तरफ़ बढ़ा।
क्या यह कोई चाल हो सकती है? लेकिन नहीं, मालिनी उसे धोखा नहीं देगी। मैं उसके पास लेट जाऊंगा और फिर मुझे पता चलेगा कि वास्तव में जीवित रहने का क्या मतलब है, उसने सोचा।

जब अंतिम दृश्य शुरू हुआ तो दो व्यक्तियों ने फिर से पर्दा उठा दिया।

उन्होंने इसे बहुत ही हल्के से हिलाया, जिससे कीचकन की केवल एक झलक ही देखने को मिली, जो अचानक लकवाग्रस्त होकर लेटा हुआ था, उसकी इच्छा की वस्तु उसके बगल में थी। उसे बस इतना करना था कि वह मुड़े और उसे अपनी बाहों में ले ले।

लेकिन यह क्या था? एक ताकतवर हाथ ने उसे पकड़ लिया था।
एक दबाव-सी पकड़ ने उसके अंदर से दर्द की चीख को बाहर खींच लिया।

पर्दा हटा दिया गया था। वल्लन, अब
लगभग राक्षस रौद्रभीमन ने कीचक को जमीन पर गिरा दिया था।

कीचकन ने क्रोधित भीम को झकझोरने की कोशिश की। उसके साथ ऐसा नहीं हो सकता था। मालिनी ने उसे कैसे धोखा दिया होगा?

लेकिन हर वार हथौड़े की तरह होता था। कीचकन का चेहरा उसके शरीर में समा गया। उसकी आवाज़, उसकी साँसें, जीवन खोने लगीं, उसकी आँखें फट गईं क्योंकि वार के वजन ने उसके शरीर को कुचल दिया और क्षत-विक्षत कर दिया, फिर भी उसकी आँखें ऊपर एक बिंदु पर टिकी थीं, यहाँ तक कि वह साँस के लिए हाँफ रहा था। वह मर नहीं सकता था।

वह मालिनी को खोज रहा था, वह जो अभी भी उसके जीवन को उसके शरीर पर नियंत्रित करती थी, मालिनी, उसकी

Machine Translated by Google

प्यारी मालिनी। एक आखिरी सांस और कीचकन पड़ा था, एक क्षत-विक्षत मांस की गेंद, जिसे पहचानना नामुमकिन था।

कोमन को यह समझने में कुछ समय लगा कि प्रदर्शन समाप्त हो चुका है। संगीत बंद हो चुका था। तिरशीला ने एक बार फिर उसे दर्शकों से बचा लिया।

दीपक की लौ टिमटिमा रही थी। सब कुछ शांत था, सिवाय उसके दिल की धड़कन के।

वह उठकर मंच के पीछे चला गया। मानो वह अचंभित हो गया हो, वह पेटीकारन के पास गया। उसने मुकुट उतार दिया और अकेले बैठ गया। मुझे मैं ही बनना है। मुझे कोमान आदमी बनना है, उसने खुद से दोहराया। मैं कीचकन था। अब मैं मैं हूँ।

फिर वे आने लगे। श्रोतागण और समिति के सदस्य, हर कोई थाली में परोसे गए प्रशंसा के उपहार लेकर आ रहा था। कोमन ने उनके चेहरे देखे। क्या नानू मेनन आएंगे?

जब वे चले गए, तो उसने चुपचाप अपना मेकअप पोंछ लिया। परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं थी। नानू मेनन भले ही मंच के पीछे न आए हों, लेकिन वह उन्हें प्रिंट में अनदेखा नहीं कर सकता था। कोमन को यह पता था। उसके कीचकन ने इसकी गारंटी दी थी।

अगले रविवार को कोमन ने उत्सुकता से अख़बार पलटा। क्या उसमें उसके और उसके वेशम के बारे में कुछ लिखा होगा? कोमन ने अख़बार को घूरकर देखा।
शब्द उसकी आँखों के सामने तैर गए। ऐसा नहीं हो सकता...यही विचार उसके दिमाग में बार-बार घूम रहा था। एक छिपता हुआ चूहा सीवर पाइप से बचकर निकलने की कोशिश कर रहा था जिसमें उसे धकेल दिया गया था। आँखें मूँदकर, मूँछें हिलाते हुए, वह भागा। ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा नहीं हो सकता।

'कल्पित': यह शब्द उस पर थूका गया। अक्षर धुंधले हो गए। ' ...पूर्वानुमानित
प्रदर्शन। नाटकीयता की ओर बढ़ती तकनीक में डूबा हुआ ...'
कोमन को लगा कि उसकी श्वासनली में से हवा तेज़ी से निकल रही है। एक मुक्का उसके गले पर लगा।
वह हांफने लगा। सांस लेने की कोशिश करते हुए, राहत पाने के लिए, उसकी आँखों ने प्रिंट को स्कैन किया। 'फिर भी हम कीचकन को देखते हैं कि वह पहले अपनी मालिनी को लुभाता है और फिर गाली देता है... फिर भी, यह भी इस वेषकरण की त्रासदी नहीं है। यह उसकी इच्छा है कि वह कीचकन के पौराणिक चरित्र से कहीं अधिक हो। व्याख्या कथकली के लिए मौलिक है, लेकिन एक ऐसी व्याख्या जिसे गुरुओं ने वर्षों से परिपूर्ण किया है। यह वेषकरण यह कल्पना करता है कि कवि के चरित्र चित्रण से परे एक कीचकन भी है। ऐसा करके वह अपनी स्पष्ट प्रतिभा के साथ अन्याय करता है। कीचकन की मृत्यु के उस अंतिम क्षण के लिए, वह क्या था, कथकली या नाटक?'

कोमन कुर्सी पर सिमटकर बैठ गया। उसे लगा कि उसका शरीर कांप रहा है, अचानक ठंड लग रही है। उसने अपनी बाहें अपने पैरों के चारों ओर लपेट लीं और अपना चेहरा घुटनों के बीच दबा लिया। नानू की घृणा को दूर करने के लिए उसे अपने भीतर जगह तलाशनी होगी

Machine Translated by Google

मेनन के शब्दों को सुनकर हिम्मत जुटाई। क्या बुरा था? पूरी तरह से विनाश, या प्रशंसा के विनाशकारी शब्द? किस बात ने ज़्यादा दुख पहुँचाया?

जब दिन निकल गया, तो कोमन बाहर चला गया। सड़क के कोनों में छायाएँ लटकी हुई थीं और सन्नाटा घंटे भर छाया रहा। कोमन ने अपने पैरों के नीचे बजरी की चरमराहट सुनी और अपने दुख के बोझ से अपने कदमों को धीमा न करने की कोशिश की। वह न तो देखा जाना चाहता था और न ही सुना जाना चाहता था। वह किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहता था। वह अकेला रहना चाहता था, अपने घावों को चाटना चाहता था और आत्म-सम्मान के कुछ निशान वापस लाना चाहता था। समीक्षा पढ़ने वाले सभी लोगों की नज़रों से मिलने के लिए पर्याप्त था, बेपरवाही के साथ या व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ। लेकिन सबसे बढ़कर, उसे भूलने की ज़रूरत थी।

आदमी ने बोतल को अखबारी कागज़ के एक पन्ने में लपेटा। कोमन ने पन्ने को खंगाला, यह देखने के लिए कि क्या किसी अजीब और भयावह संयोग से यह वही है जिस पर उसकी समीक्षा थी। किसी ने उसे ताड़ी की दुकान पर जाते नहीं देखा था। उसने उस आदमी के चेहरे को देखा। क्या उसने नानू मेनन द्वारा उसके बारे में लिखी गई बातें पढ़ी थीं? उसने इस विचार को खारिज कर दिया। उस आदमी की कथकली में कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन क्या उसने उसकी आँखों में दया देखी?

आदमी ने खुले पैसे गिने। 'क्या यह काफी होगा?' उसने आधी हंसी के साथ पूछा।

कोमन को लगा कि उसके होठों पर मुस्कान आ गई है। उस आदमी को लगा कि वह खरीद रहा है
आशान के लिए ताड़ी। एक पल के लिए उसने सोचा कि कह दे, नहीं, नहीं, यह मेरे लिए है।

फिर उसने सब कुछ छोड़ दिया। आशान को इस बात की परवाह नहीं थी कि दुनिया उसे शराबी समझती है।

अपने कमरे में कोमन ने मुंडू में रखी बोतल को बाहर निकाला। फिर उसने एक गिलास लिया और उसमें ताड़ी की एक मात्रा डाली। उसने उसे गटक लिया। खट्टा, बासी और घिनौना, इसकी किण्वन की बदबू उसके नथुनों में घुस गई। उसका पेट उबकाई लेने लगा। लेकिन उस दिन पहली बार कोमन को लगा कि उसकी नसों के सिरे शांत हो गए हैं। दूसरे पेय ने उसे रूई की एक परत में लपेट लिया। तीसरे ने उसके दिमाग से कष्टप्रद मच्छर जैसे डर को दूर कर दिया। अब केवल एक ही विचार था: अगला पेय। अगला पेय। अगला पेय...

जब उल्टी उसके गले तक आ गई, तो कोमन ने आगे झुककर उसे उगल दिया। उसे ऐसा लगा जैसे उसके अंदर का हर बुरा विचार बाहर आने का रास्ता खोज रहा था।
जब उल्टी करने के लिए कुछ नहीं बचा, तो उसने उबकाई ली। बहुत तेज़ आवाज़ें जो उसकी आत्मा की गहराई से निकल रही थीं। उसका गला दुख रहा था। उसकी जीभ लकड़ी की तरह लग रही थी। उसके मुँह से शब्द निकल रहे थे: कथकली पदम की एक पंक्ति।

यद्यपि वह अचेत अवस्था में पहुंच गया था, फिर भी उसे पता था कि यह शारीरिक अपमान, उस अपमान की तुलना में कुछ भी नहीं था जो उसने महसूस किया था।

सुबह-सुबह, प्रकाश उसके मस्तिष्क में ब्लेड की धार से घुस गया। वह उठकर बैठ गया, अपने अंगों और इंद्रियों को ज़मीन से घसीटते हुए। उसके चारों ओर उसके अपव्यय के अवशेष थे। एक बोतल अपनी तरफ़ रखी हुई थी। गिलास उसके सिर पर खड़ा था।

Machine Translated by Google

फर्श पर सूखी उल्टी फैली हुई थी। उसके कपड़े फर्श पर बिखरे हुए थे और उल्टी की बदबू और दर्द से भरी हवा हवा में फैली हुई थी।

उसने अपना सिर थाम लिया। उसे लगा कि वह उस मुकुट से ज़्यादा भारी है जिसे वह पहनने का आदी था। और उतना ही नीचे दबा हुआ भी।

उसके मुँह का स्वाद खराब था। सुबह की रोशनी को ध्यान से देखने पर उसकी आँखों के पिछले हिस्से में भी दर्द हो रहा था। कोमन लेटकर मर जाना चाहता था। किसी ऐसी जगह चले जाना चाहता था जहाँ से उसे कभी वापस न लौटना पड़े।

लेकिन आशान आज सुबह वापस आ जाएगा और उसे इस तरह से देखने देना उचित नहीं होगा।

वे सभी आये, उनमें से प्रत्येक अपने साथ सांत्वना लेकर आये क्योंकि वे जानते थे कि इसे कैसे आकार दिया जाये।

मणि ने दरवाजा जोर से खटखटाया, उसका क्रोध उसके हर शब्द और हाव-भाव को नियंत्रित कर रहा था। 'दरवाजा खोलो, एटा,' वह गरजा। 'मुझे पता है तुम अंदर हो।' कोमन सिहर उठा। आवाज से उसका सिर दुखने लगा। उसने अपने चारों

ओर देखा। कमरा काफी साफ था। उसने अपने गालों को छुआ। वे चिकने थे। उसने सावधानी से अपनी दाढ़ी के बाल काट लिए थे। किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि कल रात मैं एक जानवर था, अपने ही दर्द और उल्टी में लोट रहा था। किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि मैं पूरे दिन रोता रहा। किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि मैं कितना दुखी था, उसने खुद से सख्ती से कहा था। इसलिए उसने ज़बरदस्ती मुस्कुराया और दरवाजा खोल दिया। 'क्या बात है?' मणि ने उसे घूर कर देखा। उसने अपने गर्म माथे से बालों का एक ताला हटाया। 'तुम मुझसे पूछ रहे हो

वह बुरा सा आदमी। मैं तुम्हें बताता हूँ। जब बाबू आज शाम को वापस आएगा, तो वह और मैं कुछ दोस्तों को इकट्ठा करेंगे और उससे मिलने जाएँगे। मैं खुद उसके दाहिने हाथ की हर हड्डी तोड़ दूँगा।'

'शशशश...' कोमन ने मणि के मुंह पर हाथ रखा। 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।' 'तुम्हारा क्या मतलब है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता?

आज सुबह, जब जिमनेज़ियम में एक आदमी ने मुझे इस बारे में बताया, तो मैंने उसकी नाक से खून निकाल दिया। तुम्हें पता है मुझे क्या परेशान करता है? जब कोई तुम्हारे बारे में अच्छी बातें लिखता है, तो कोई भी कमीना एक शब्द भी नहीं बोलता।

लेकिन सिर्फ़ एक ख़राब नोटिस और उन्हें इसे इंगित करने में मज़ा आता है। क्या आप जानते हैं कि उस कमीने ने क्या कहा? "मुझे लगा कि तुमने कहा था कि तुम्हारा भाई एक बेहतरीन कलाकार है। क्या तुमने यह देखा?" मैंने उसका कॉलर पकड़ा, उसे हिलाया और फिर अपनी मुट्ठी उसकी नाक पर दबा दी और सीधे यहाँ आ गया।'

कोमन ने अपने भाई को देखा। उसे अपने इस बदसूरत, बदतमीज़ भाई के लिए प्यार का एक बड़ा बादल महसूस हुआ। 'ऐसी बातें होती रहती हैं,' उसने कहा। उसने अपने चेहरे पर संदेह को ज़ाहिर न होने देने की कोशिश की।

'सब ठीक है। लेकिन नानू मेनन को सबक सिखाना ज़रूरी है...' 'रहने दो, मणि,' कोमन ने कहा। 'अब घर जाओ। मैं बाद में

आऊँगा। हम

Machine Translated by Google

फिर बात करो। अभी मेरी क्लास है।' 'क्या तुम्हें यकीन

है?' मणि ने अपनी मुट्ठियाँ जेबों में डालते हुए पूछा। 'क्या तुम्हें कुछ चाहिए? एक बोतल?' कोमन काँप उठा। 'घर जाओ, मणि,' उसने उसे स्नेहपूर्वक धक्का देते हुए कहा।

कोमन बिस्तर पर बैठ गया। उसके पैरों में उसे थामने की ताकत नहीं थी। उसके भीतर फिर से कांपने लगा। उसे संस्थान जाना था। कल उसे एक दिन की राहत मिली थी, लेकिन आज कोई रास्ता नहीं था। उसकी क्लास थी और उसे अपने छात्रों और सहकर्मियों से मिलना था। उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी?

उसकी ओर से गुस्सा। आक्रोश भी। या फिर यह मुस्कुराहट और मज़ाक होगा?
या शायद यह शर्मिंदगी होगी? उसने निगल लिया।

दरवाजे पर हल्की दस्तक हुई। कोमन ने उसे घूर कर देखा। कौन हो सकता है?
मणि कुछ समय पहले ही चला गया था। बाबू बाहर गया हुआ था। आशान को अपनी यात्रा से दोपहर तक ही वापस लौटना था। उसका कोई दोस्त नहीं था। वर्षों से आशान के साथ उसके संबंधों ने उसे उसके साथियों से अलग कर दिया था। अनिवार्य रूप से, इसने उसकी सभी मित्रताएँ तोड़ दी थीं। उसे किसी की ज़रूरत नहीं थी। उसकी कला, उसका गुरु और उसका परिवार ही काफी था।

वह दरवाजे के पास गया और लकड़ी की दरार से झाँका। यह उसके पिता थे।

कोमन जब भी घर से बाहर रहता था, उसके पिता एक बार भी उससे मिलने नहीं आते थे। जब वह संस्थान में छात्र था और बाद में जब उसने लॉज में यह कमरा लिया, तो उसके पिता खुद को उसके जीवन से अलग करना चाहते थे।

फिर भी, वह यहाँ था.

'अचन,' उसकी आवाज़ तेज़ हो गई, वह अपना आश्चर्य छिपा नहीं सका। उसने दरवाज़ा खोला।

सेतु ने कहा, 'मणि के कहने पर मैं तुरंत आ गया।' उसने अपने सामने खड़े युवक को घूरकर देखा। उसका पहला बेटा सुंदर था, लेकिन अब उसके नथुने सिकुड़े हुए थे और उसकी आँखों में काली परछाइयाँ थीं। उसके आस-पास शिकार किए गए जानवर की गंध आ रही थी।

'अंदर आइए,' कोमन ने अपनी आवाज में कंपन को रोकने की कोशिश करते हुए कहा।

सेतु झिझका, फिर आगे बढ़ा। उसने चारों ओर देखा, एक ही नज़र में अपने बेटे के जीवन का अंदाजा लगाने की कोशिश की।

'बैठ जाओ,' कोमन ने बिस्तर से कुछ किताबें हटाते हुए कहा। वह चाहता था कि वह
वह अपने पिता की गोद में अपना चेहरा छिपाकर रो सकता था।

सेतु बिस्तर पर बैठ गया। उसने अपनी बात छिपाने की कोशिश करते हुए कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ?'
उसकी अजीबता.

कोमन ने कुछ नहीं कहा.

Machine Translated by Google

'सुनो,' सेतु ने अचानक कहा, 'मेरे कुछ दोस्त हैं जो एक प्रतिद्वंद्वी अखबार के संपादक को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। वे उससे तुम्हारे बारे में एक फीचर आयोजित करने के लिए कह सकते हैं।
क्या इससे नुकसान की भरपाई नहीं हो जाएगी? कम से कम कुछ हद तक तो हो
ही जाएगी?' कोमन मुस्कुराया। उसे लगा कि उसके अंदर एक अतुलनीय खुशी समा गई है। मेरे पास यह है।
चाहे कुछ भी हो जाए, कोई भी इसे मुझसे नहीं छीन सकता। मेरे परिवार का मुझ पर अटूट विश्वास, उनका मेरे प्रति पूर्ण प्रेम।

'यह सब ठीक है,' उन्होंने कहा। 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हमेशा ऐसे लोग रहेंगे जो
मुझे अपने वेशम से नफरत है। मैं इसे खुद पर असर नहीं होने दे सकता। इसलिए इसे खुद को परेशान मत करने दो।'

सेतु उठ खड़ा हुआ। उसे अपने बेटे के साथ इस कमरे में असहज महसूस हो रहा था, जो बदनाम था।
या तो वह पूरी तरह से अपरिवर्तनीय थे या वह एक शानदार अभिनेता थे।

मेरे घर में मैं उसे पकड़ सकता हूँ, उसे दिलासा दे सकता हूँ, लेकिन यहाँ मैं उस तक पहुँच भी नहीं सकता। वह मेरा बेटा नहीं है। वह कोमन है, वह वेशकारन है।

सेतु ने कहा, 'अगर तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मुझे बताओ। या फिर अगर तुम अख़बार में छपे फ़ीचर के बारे में अपना विचार बदलो तो मुझे बताओ।' उसने अपने बेटे के कंधे पर हाथ रखा।
कोमन ने उसे अपने गाल से चूमा। सेतु की आँखें भर आईं। उसके बेटे ने कभी उसके सामने अपनी रक्षा नहीं छोड़ी थी।
उसे बहुत दुख हुआ होगा।

सेतु के जाते ही कोमन ने कहा, 'मैं आऊंगा।'

जब वह फिर से अकेला था, तो कोमन को घबराहट महसूस हुई। मणि और उसके पिता के सामने वीर नायक की भूमिका निभाना आसान था। उसे बस एक वेशम का आह्वान करना था। लेकिन अकेले, उसके पास छिपने के लिए कोई भेस नहीं था। वह खुद को वंचित महसूस कर रहा था।

अगर उनके परिवार के लोग, जो कथकली के बारे में कुछ नहीं जानते थे और वे वेशम की उपयुक्तता के बारे में कुछ नहीं समझते थे, नानू मेनन के शब्दों से नाराज होते, तो वे संस्थान में क्या कहते? वह उनका सामना कैसे कर सकते थे?

वह बिस्तर पर लेट गया और छत को घूरने लगा। प्लास्टर पर एक धब्बा नानू मेनन की प्रोफ़ाइल जैसा था। जब उसने उसे देखा, तो उसे लगा कि प्रोफ़ाइल ने अपना पूरा चेहरा घुमाकर उसे नीचे देखा है। आलोचना की भयावह नज़र।

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं. मैं क्या करूँ?

वह चुपचाप कलारी में घुस गया। छात्र-छात्राएँ बातें करते हुए कक्षा में दाखिल हुए। जब उन्होंने उसे वहाँ देखा तो अचानक सन्नाटा छा गया। उस घने सन्नाटे में एक आवाज़ गूंजी। यह एक छात्र था जो उसे देख पाने में विफल रहा था।

'क्या तुमने कोमन आशान पर वह लेख देखा?' कोमन ने झिझकते
हुए कहा, लेकिन आवाज ने जो सोचा था वह उसे कभी पता नहीं चलेगा। उसका मालिक
उसे देख लिया और कोमन के क्रोध के डर से पीछे की पंक्ति में छिप गया।

कोमन ने ऐसा दिखावा किया कि कुछ भी मामला नहीं है। सुबह के बाकी समय में, उसने ऐसी शांति का दिखावा किया जो उसे महसूस नहीं हुई। उसने लड़कों को एक दृश्य दिखाया

Machine Translated by Google

लवणासुर वधम्। लड़कों ने संकेत पाकर अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रतिक्रिया दी।
जब क्लास खत्म हो जाती तो वह आशान के कमरे में चला जाता। वहाँ उसे राहत मिलती।

आशान इंतज़ार कर रहा था। पान बनाते हुए उसके माथे पर शिकन थी। कोमन भारी होकर कुर्सी पर बैठ गया।

'तुम्हारी क्लास कैसी रही?' आशान ने पूछा।
कोमन ने कंधे उचका दिए। 'मैं क्या करूँगा?' आशान ने पत्तों को त्रिकोण
आकार में मोड़ा और मुँह में डाल लिया।
'तुम क्या करोगे,' आशान ने पान खाते हुए कहा, '
जो कुछ भी आप पढ़ते हैं उसे अनदेखा करें और ऐसे आगे बढ़ें जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं।'
कोमन ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। मैं कैसे मान सकता हूँ कि कुछ हुआ ही नहीं?
एक वेषकारण के रूप में मेरे कैरियर का उतना ही महत्व है जितना कि लाल रंग से रंगी धरती का।
'मैं कैसे कर सकता हूँ?' उसने झल्लाकर कहा। वह मणि या अपने पिता के प्रति अपनी अधीरता पर काबू पा सकता था। लेकिन आशान?
आशान को ऐसी बकवास करने से बचना चाहिए।

'मैं यह कैसे मान सकता हूं कि नानू मेनन की आलोचना का कोई मतलब नहीं है? हर कोई
जिसका कथकली से कुछ भी लेना-देना है, उसने इसे देखा होगा।' आशान आगे झुकी और कोमन की बाईं
आंख के नीचे की त्वचा को छुआ।
'यह क्या है?' उसने सूजी हुई त्वचा को महसूस किया। 'क्या यह तुम्हारा शर्मिंदगी भरा चेहरा है? क्या तुम कल रात सोए नहीं? तुम्हारी आँखें लाल क्यों हैं?'
कोमन दूर चला गया। आशान नानू की बातों के प्रति इतनी उदासीन कैसे हो सकती है?
मेनन ने क्या लिखा था?
आशान ने उसकी ओर देखा और मुस्कुराया, 'जिसके पास कुछ भी सार्थक हो, वह
'कथकली से जुड़े लोग नानू मेनन की आलोचना का सही मूल्य जानते हैं।'
कोमन सीधा बैठ गया। 'तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? पेटीकारन भी, मुझे लगता है उसका नाम शंकरन था, उससे बहुत प्रभावित था।' 'यही मेरी बात है। शंकरन भले ही ग्रीन रूम का स्वामी हो, लेकिन वह कोई वेशकारन या संगीतकार नहीं
है। और वह बहुत कुशल पेटीकारन भी नहीं है।

शंकरन नानू मेनन से प्रभावित हैं। हो सकता है कि वे उन्हें गंभीरता से लें। लेकिन हमारे गोपी से बात करें। वह आपको बताएगा कि वह नानू के बारे में क्या जानता है। क्या आप जानते हैं कि नानू कभी एक वेशकारन थे? उन्होंने कहा कि वे महान चीजों के लिए किस्मत में थे, लेकिन मुझे लगा कि वे एक औसत दर्जे के कलाकार थे। वास्तव में, आज तक उनकी सबसे विश्वसनीय भूमिका एक महान कलाकार की रही है, जिसे बीमारी के कारण सब कुछ छोड़ना पड़ा। मुझे यकीन है कि उनकी बीमारी एक मिथक है। उन्हें शायद एहसास हुआ कि एक दिन उन्हें पता चल जाएगा कि वे क्या हैं। एक दिखावा करने वाला। अब वे प्रदर्शन कलाओं के स्वयंभू संरक्षक हैं।

'आप मुझे इतना अच्छी तरह जानते हैं कि आप जानते होंगे कि मैं गपशप नहीं करता या गलत बातें नहीं फैलाता।

Machine Translated by Google

अन्य कलाकारों या आलोचकों के बारे में कहानियाँ। लेकिन नानू...

'क्या आप जानते हैं कि कथकली के लोग उन्हें क्या कहते हैं? नीरकोली। ऐसा सिर्फ़ इसलिए नहीं है कि वे पानी के साँप जैसे दिखते हैं, हालाँकि वे पतले और चिपचिपे जीव हैं, अपने नुकीले चेहरे के साथ, जहाँ भी जाते हैं, दोष ढूँढ़ते हैं। बात यह है कि उनके शब्दों में ज़हर नहीं है। वे एक असफल वेशकारन हैं, अब एक असफल आलोचक। अपनी पृष्ठभूमि के साथ, उन्हें साहित्यिक दृष्टिकोण के बजाय प्रदर्शन के दृष्टिकोण से कथकली की समीक्षा करने में सक्षम होना चाहिए। फिर भी, अट्टकथा, रचना से किसी भी तरह का विचलन, उनके द्वारा अपवित्रता के रूप में देखा जाता है। आपसे कीचकन होने की उम्मीद की जाती है क्योंकि वे इसे समझते हैं, है न? वे ऐसी व्याख्या को बर्दाश्त नहीं करेंगे जो उनकी समझ से परे हो - जो कि एक सच्चा कथकली आलोचक आदर्श रूप से चाहता है।

'इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर तुमने उसके सामने सिर झुकाया होता और उसके अहंकार को भड़काया होता, तो वह तुम्हें कथकली के भविष्य के चेहरे के रूप में लिखता। तुमने उसकी अनदेखी की। यही तुम्हारा अपराध था, मेरे बेटे। इसका तुम्हारे कीचकन होने से कोई लेना-देना नहीं था।

'आम आदमी उसे पढ़ता है। लेकिन शाम तक वह जो पढ़ा था उसे भूल चुका होता है। उसे इससे क्या फर्क पड़ता है कि आपने किसका किरदार निभाया- कीचकन का या भीम का?
और कथकली के पारखी किसी और को अपने लिए निर्णय लेने नहीं देते। न ही स्वाभिमानी वेशकारण ऐसा करते हैं। समझे?' आशान अचानक रुक गया। खाँसी के झटके ने उसके चेहरे को विकृत कर दिया।

कोमन ने अपनी पीठ थपथपाई। 'क्या तुम ठीक हो?' आशान ने पानी की चुस्की
ली। 'यह बीत जाएगा, लेकिन मुझे तुम्हारी चिंता है।' कोमन फर्श पर घूरता रहा। 'नानू मेनन भले ही एक नीरकोली हो, एक हानिरहित
साँप जिसमें ज़हर नहीं होता। लेकिन नीरकोली के काटने से भी दर्द होता है। मुझे लगता है कि मैं फिर कभी मंच पर नहीं आना चाहता। मुझे पता है कि मुझे तुम्हारी बात सुननी चाहिए, लेकिन मुझे लगता है कि मैंने अपना साहस खो दिया है। मुझे फिर से अपना साहस खोजना होगा।'
दोपहर की गर्मी उनके बीच और चारों ओर थी, जिसने कोमन की कायरता की स्वीकारोक्ति को छोड़कर सभी विचारों को दबा दिया।

आशान ने आह भरी। 'तुम्हें पता चल जाएगा कि तुम फिर से कथकली के रंग पहनने के लिए कब तैयार हो। यह तुम ही तय कर सकते हो।'
शाम के अंधेरे में, उसकी सारी अनिश्चितताएँ वापस आ गईं। अपने रंग और
मुकुट के बिना वह क्या था? वह कौन था? कोमन को लगा कि वह छोटा हो गया है, उसका अपना आत्म और मूल्य उससे छीन लिया गया है। फिर से आँसू बहने लगे। वह किस प्रकृति का था? एक बड़ा आदमी कैसे रो सकता है? लेकिन उसे नहीं पता था कि और क्या करना है। फिर एक छोटी सी आवाज़ उसके कान में फुसफुसाई: तुम सब कुछ खत्म कर सकते हो।

कोमन अपने बिस्तर पर दुबका हुआ था। उसने नायक और खलनायक की भूमिका निभाई थी। उसने प्यार किया था और हत्या की थी। उसने पराजित किया था और पराजित हुआ था। वह इसे देगा

Machine Translated by Google

सब कुछ खत्म कर दो। वह इस दुनिया से मुंह मोड़ लेगा जो उसकी कला के प्रति समर्पण या उसके मूल्य को पहचानने में असमर्थ है।

और इस तरह कोमन ने एक वेशकारण के रंग को मिटा दिया और उस भूमिका में आ गया जिसकी उम्मीद उसके पिता ने उसे दी थी। कर्तव्यनिष्ठ पुत्र। उद्दंड युवक। बिना किसी कलात्मक दिखावे के एक साधारण व्यक्ति।

वह थक चुका था और उसकी सारी भावनाएं खत्म हो चुकी थीं। पहली बार उसे ऐसे लोगों के साथ रहने का महत्व समझ में आया, जिनका दिमाग रोजमर्रा की व्यावहारिक जरूरतों पर केंद्रित था। उसने इसे अपने लिए आराम माना।

कोमन ने वह सब किया जो उसके पिता चाहते थे। वह उनके साथ चावल मिल और लकड़ी के यार्ड में गया। वह मणि के साथ टॉकीज देखने गया। वह बाबू के साथ रबर एस्टेट गया। 'मुझे बताओ कि इनमें से कौन सा तुम्हें सबसे अच्छा लगेगा और मैं तुम्हारा खुद का व्यवसाय शुरू करने में तुम्हारी मदद करूँगा,' सेतु ने कहा। अपने बेटे को कला के दलदल से बाहर निकालने पर उसकी खुशी स्पष्ट थी।

कोमन ने विनती की, 'मुझे समय दो।' उसने मंच से मुंह मोड़ लिया था, लेकिन वह उस चीज को नहीं छोड़ सकता था जिसने उसके आधे से ज्यादा जीवन को लील लिया था।

'कोई जल्दी नहीं है। अपना समय लो,' सेतु ने कहा, उसे डर था कि किसी भी दबाव के कारण उसका पहला बच्चा फिर से भाग जाएगा।

इसलिए कोमन ने समय लिया। चुराया हुआ समय जिससे उसे असफलता की यादों को दबाने का मौका मिला जो उसे घूर रही थी और धीमी आवाज़ में उसके बारे में फुसफुसा रही थी।

चुराया हुआ समय जो उसने अपने भाइयों के साथ साझा किया, जो कि राहत की तलाश में था
लेकिन जो कुछ उसके खून में समा गया था, उससे बचना संभव नहीं था।

जब वह उनके साथ शिकार के लिए गया, तो मणि ने फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम्हें बहुत धीरे चलना होगा।' यह पदिंगिया पदम के पदचिह्नों जैसा था: शांत, कोमल कदम जो गीत
की लय की धीमी गति को दर्शाते थे।

उसने देखा कि बाबू ने अपनी ठोड़ी से मणि को इशारा किया। उसने देखा कि मणि ने बंदूक उठाई।
गोली हवा में गूंज उठी। उन्होंने ज़मीन पर खुरों की आवाज़ सुनी। मणि ने घृणा से बंदूक नीचे फेंक दी। 'मैंने सूअर को नहीं मारा। अब आगे क्या होगा?'

बाबू स्काउट था। वह जंगल को मणि से बेहतर जानता था। 'हमें सुबह होने तक इंतजार करना होगा। नदी के किनारे एक घास का मैदान है। अगर हम अभी चलना शुरू करें, तो एक घंटे में वहाँ पहुँच जाएँगे। हर दिन भोर में हिरणों का झुंड वहाँ चरता है।'

जब वे चलते हुए अपने चेहरे पर लटकी हुई लताओं और अपनी खाल को चीरती झाड़ियों को काटते हुए आगे बढ़े, तो कोमन को फिर से अपनेपन का एहसास हुआ। मैं कल्याणसौगंधिकम में भीमा हूँ, घने जंगल में रास्ता काट रहा हूँ।

वह अचानक रुक गया। मैं उस दुनिया के बारे में क्यों सोच रहा हूँ जिसे मैं पीछे छोड़ आया हूँ?

मणि को अपना हिरण मिल गया। जब वे जाने के लिए मुड़े, तो कोमन ने अपने भाई को रोक दिया। 'क्या मैं निशाना लगाने की कोशिश कर सकता हूँ?'

Machine Translated by Google

दोनों भाई एक दूसरे को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। मणि ने कहा, 'यह कथकली नहीं है।'
मुस्कुराया. 'तुम गोली चलाने का नाटक नहीं कर सकते. तुम्हें वास्तव में ट्रिगर खींचना होगा.'

कोमन मुस्कुराया। 'मेरा विश्वास करो, मैं चाहता हूँ।' कोमन

के शॉट से उन्हें कोई गेम नहीं मिला। लेकिन इसने उसे शक्ति का एहसास कराया। सबसे पहले, बैरल का वजन उसके कंधे पर दबा हुआ था, थूथन का इशारा, सेफ्टी कैच को कॉक करना, ट्रिगर खींचना, शॉट की वापसी ... भोर का विस्फोट। उसके बाद की खामोशी में, जो केवल पक्षियों के फड़फड़ाते पंखों से बिखरी हुई थी, कोमन को लगा कि उसके अंदर सूजन आ गई है। मैं सिर्फ एक वेशकारन नहीं हूँ। मेरे अंदर अपंग करने, मारने और नष्ट करने की शक्ति है। यह मैं हूँ।

मणि मुस्कुराया। 'अचन को खुशी होगी कि तुम वास्तव में एक पकड़ करना चाहते थे
बंदूक। मुझे लगता है कि वह डर गया है कि इस सारे नाच-गाने ने तुम्हें औरत में बदल दिया है।'

बाबू ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि अगर तुम किसी औरत को गर्भवती कर दोगे तो वह और भी खुश हो जाएगा। जब तुम आस-पास नहीं होते तो वह सिर्फ़ यही रोना रोता है कि कथकली ने तुम्हारी मर्दानगी चुरा ली है।'

कोमन ने अपनी हथेली को राइफल के किनारे से घुमाया। उसने ऊपर देखा और कहा, 'मैं किसी महिला को गर्भवती करने के बारे में नहीं जानता, लेकिन मैं पूरी रात एक महिला को चोदना चाहता हूँ।' भाइयों ने घूर कर देखा। फिर मणि ने ठहाका लगाया। 'काश

अचन तुम्हें सुन पाता।' बाबू एक पेड़ के तने पर बैठ गया और अपनी ठुड्डी खुजाने लगा। 'मैं तुम्हें बताता हूँ। चलो

बागान में चलते हैं। मैं कुछ ताड़ी लाता हूँ और हिरन का मांस पकाता हूँ। मणि, तुम लड़कियों को ले आओ, और हम खाएँगे, पिएँगे और चुदाई करेंगे। तुम क्या कहते हो?'

उस रात उसके भाइयों ने उसे एक उपहार दिया। एक कुंवारी लड़की। उसने कहा था कि उसे एक थकी हुई बूढ़ी वेश्या नहीं चाहिए। जब उसने उसे देखा, तो उसे एक सुंदर जवान लड़की के रूप में परेड करती एक राक्षसी की याद आ गई। कथकली में ऐसी बहुत सी लड़कियाँ थीं। लेकिन यह लड़की वाकई बहुत सुंदर और कुंवारी थी।

'सुनो, मुझे ठीक से पता नहीं है। मेरे पापों के बोझ में इसे क्यों जोड़ रहे हो?' कोमन ने पूछा।

'अगर तुम नहीं करोगी तो कोई और करेगा,' बाबू ने कहा। 'कम से कम तुम्हारे साथ तो वह करेगी
'दया जानो।'

'मैं दया दिखाने के मूड में नहीं हूँ। मैंने तुमसे कहा था कि मैं चुदाई करना चाहता हूँ। मैं शायद उसे खुश करने के लिए छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाऊँगा।' 'एटा, तुम जो चाहो कर

सकती हो। लड़की शिकायत नहीं करेगी। उसे चोदो या कहानियाँ सुनाओ। वैसे, वह असली मायने में कुंवारी नहीं है। मुझे लगता है कि उसका कोई प्रेमी था। जिस परिवार के लिए वह काम करती थी, उसका बेटा। जब उन्हें पता चला तो उन्होंने उसे भगा दिया।' कोमन ने पलकें झपकाईं। 'तो वह आखिरकार कुंवारी नहीं है।' 'आह।' मणि ने अपने पैर फैलाए। 'वह एक कुंवारी वेश्या

है।'

Machine Translated by Google

बाबू जोर से हंस पड़ा। 'मुझे यह मुहावरा पसंद है। आगे क्या? शादीशुदा वेश्या, दादी वेश्या।' मणि मुस्कुराया, उसके छोटे से मजाक पर प्रसन्न हुआ। 'ठीक है, तुम उन्हें भी पा

सकते हो, लेकिन हमारी कुंवारी वेश्या खास है। उसका आनंद लो, एटा, तुम्हें उसके जैसा कोई और कभी नहीं मिलेगा!'

वह एक कमरे में उसका इंतज़ार कर रही थी, उसके बाल फूलों से सजे हुए थे और उसकी आँखों में काजल लगा हुआ था। उसने अपनी आँखें उठाईं और उसकी नज़रों से मिली।

कोमन को समझ में नहीं आया कि क्या कहे। वह मुस्कुराई और बोली, 'मैंने तुम्हें एक बार परफॉर्म करते देखा था। तुम धर्मपुत्रन के रूप में बहुत ही सौम्य थे। जब उस आदमी ने कहा कि तुम यहाँ हो, तो मैंने तुमसे मिलने के लिए कहा।' कोमन ने घूरकर देखा। लड़की ने क्या सोचा था कि वह यहाँ क्यों आई है?

'क्या तुम्हें पता है कि तुम यहाँ क्यों हो?' उसने अचानक पूछा।

उसने अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया। फिर उसने कहा, 'मैं करती हूँ।' उसने फिर

से उसकी नज़रों से नज़रें मिलाईं। उसकी आँखें बड़ी और निडर थीं।

उसने उसे अपनी ओर खींचा और उसके स्तनों को सहलाने लगा।

नाम क्या है?' उसने पूछा।

उसकी उँगलियाँ उसके शरीर पर चुभ गईं। 'नहीं, मुझे मत बताओ। मैं तुम्हें ललिता कहूँगा।

तुम मेरे लिए वही हो। ललिता।'

उसने ललिता के निचले होंठ को काटा। 'ललिता, जब मैं तुम्हें बुलाऊँगा, तो क्या तुम ज़रूर आओगी? मुझे बताओ,' उसने अपना ध्यान उसकी कमर की वक्रता पर स्थानांतरित करते हुए कहा।

वह हांफने लगी।

एक बार फिर वह भीम बन गया, उसकी नसों के सिरे पर वार करते हुए, होठों और अंगों को खोलकर। कोमन ने ललिता के शरीर को तब तक कुचला जब तक वह सोचने के लिए बहुत थक नहीं गया।

जब वह उठी और उसने उसकी पायल की झंकार सुनी, तो उसे एक पीड़ा महसूस हुई। यह एक पीड़ा थी।

वह ध्वनि जो उसके हर कदम पर गूंज रही थी।

उन्होंने कहा, 'अगली बार पायल मत पहनना।'

'क्या अगली बार भी ऐसा होगा?' उसने पूछा।

उसने उसे अपने बाल समेटते हुए देखा। 'तुम कहाँ जा रही हो?' उसने उसकी कलाई पकड़ते हुए पूछा।

गरज के साथ बिजली चमकी। आसमान में बिजली चमकी। वह हांफने लगी। उसे यह अच्छा लगा। उसे उसकी सांसों की आवाज़ सुनना अच्छा लगा। वह यह सब आसानी से और स्वाभाविक रूप से करती थी। जब उसका मुंह उसके स्तनों को चूसता, जब उसके पैर की उंगलियां उसके घुटनों के पीछे सहलाती, जब वह उसके बालों को पकड़कर उसे अपनी ओर खींचता, जब वह जोर से उसके अंदर प्रवेश करता, तो वह ऐसे हांफती जैसे उसने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा हो। उसे यह अच्छा लगा। ललिता, मेरी ललिता, उसने सोचा।

Machine Translated by Google

कोमन को यह पता चल गया कि अतीत कभी पीछे नहीं छूटता। एक रात जब उसने माचिस जलाई तो उसके नथुनों में गंधक की गंध आई। एक पल के लिए, मैनोला की जानी-पहचानी बदबू, जो उसने पहनी थी, उसके होश उड़ा दिए।

एक अन्य अवसर पर, मोर पंख ने उन्हें कृष्ण के रूप में पहने गए मुकुट की याद दिला दी।

उसने खुद से पूछा, क्या बचने का कोई रास्ता नहीं है?

एक दिन उसे पता चल गया।

बारह साल तक उनका जीवन संस्थान द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार ही बीता था। अब न तो अति की गुंजाइश थी और न ही आलस्य के लिए समय था। अब उनके चलने-फिरने या उनके दिन को तय करने वाली कोई घड़ी नहीं थी।

वह जब चाहे खाता, सोता, पीता और संभोग करता। उसकी आँतों ने विद्रोह कर दिया। उसे लगा कि उसका मल सख्त हो गया है और उसके गुदा मार्ग में सिकुड़ गया है। वह शौचालय पर घंटों बैठा रहा, चाहता था कि मल बाहर निकल आए और उसका दुख कम हो जाए। उसने अपना जबड़ा कस लिया और सांस रोककर धक्का दिया। जैसे ही मल बाहर निकला, उसे शर्म का एहसास हुआ।

वह जीवन शक्ति जिसने कभी नवरसों को अर्थ दिया था, वह सांस जिसने उसे अस्तित्व के नौ पहलुओं को बुलाने में मदद की थी, क्या उसने उसे इतना कम कर दिया था? आठ साल की ट्रेनिंग, चार साल का अध्ययन और प्रदर्शन, सिर्फ़ इसलिए कि वह अपनी आंतों को हिला सके। उसने सोचा कि बारह साल की मेहनत सिर्फ़ इसलिए कि वह मल त्याग सके।

अगली सुबह कोमन वापस चला गया।

आशान अपने कमरे में था। 'क्या तुम मिलने आए हो या वापस आ गए हो?' कोमन ने गहरी साँस ली। 'मैं वापस आ गया हूँ,' उसने कहा।

'ऐसी स्थिति में मैं चाहूंगा कि आप मद्रास चले जाएं। वहां एक नृत्य विद्यालय है।
आशान ने कहा, "मैंने सीनियर आशान से संपर्क किया है। इससे आपको फायदा होगा।"

कोमन ने घूरकर देखा। 'लेकिन शायद उनका मतलब तुम ही थे।' 'हां, लेकिन मैं खुद को उखाड़ने के लिए बहुत बूढ़ा हो गया हूं। वे तुम्हारे साथ खुश रहेंगे।
और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप उनके साथ हैं।'

कोमन ने खुद को फिर से सांस लेने दिया। मद्रास में उसे अपनी हिम्मत मिल गई। उसे फिर से मंच पर आने में थोड़ा समय लगा, लेकिन एक दिन वह ऐसा कर ही गया।

'एक और बात है,' आशान ने कहा। 'पिछले बारह सालों से तुम एकांतप्रिय जीवन जी रहे हो। तुम्हारी दुनिया सिर्फ़ यह संस्थान है और कुछ नहीं। मैं चाहता हूँ कि तुम पढ़ना शुरू करो। सिर्फ़ कथकली की किताबें ही नहीं, बल्कि जो भी तुम्हारे हाथ में आए, उसे पढ़ो; पढ़ने से तुम्हारा क्षितिज विस्तृत होगा। अवलोकन करो, क्योंकि वह भी महत्वपूर्ण है। अपने आस-पास की हर चीज़ को देखो, सुनो, चखो, महसूस करो और आत्मसात करो। कला नहीं कर सकती

Machine Translated by Google

यह खुद को ही पोषित करता है। इसे जीवित रहने के लिए जीवन की आवश्यकता होती है। इसलिए जाओ और जीवन जियो।'

सेतु उसके चले जाने से दुखी था। मणि और बाबू भी दुखी थे। लेकिन कोमन ने इसे अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया।

जहाँ तक ललिता का प्रश्न है, वह उसकी ओर पीठ करके खड़ी थी, उसके ब्लाउज के बटन खुले हुए थे, वह दुःख से सन्न थी।

उसने उसके कंधों के बीच चूमा, और हर बटन दबाने पर एक चुम्बन दिया। 'मैं हमेशा के लिए दूर नहीं जा रहा हूँ। मैं कभी-कभी वापस आऊँगा,' उसने कहा, उसने वही दोहराया जो उसने अपने परिवार को बताया था।

छह साल बाद, कोमन ने दरवाजा खोला और घर की ओर चल पड़ा।
वह अपने पिता के घर खरीदने के फैसले से परेशान था। उनके बीच पत्र-व्यवहार का सिलसिला चलता रहा। मैं जड़ें नहीं जमाना चाहता। एक पेड़ कैसे उड़ सकता है, कोमन ने लिखा था।

मैं अब जवान नहीं रहा। मुझे सही समय पर काम करना पड़ता है। तुम मेरे बेटे हो। तुम्हें मेरी दौलत का कुछ हिस्सा तो मिलना ही चाहिए। इसके अलावा, तुम्हें नदी किनारे बना यह छोटा सा घर भी बहुत पसंद आएगा, सेतु ने लिखा था।

घर नीला नदी के किनारे पर था। अनगिनत बाढ़ों ने इसके आस-पास की ज़मीन को निगल लिया था, इसलिए यह नदी में फैली धरती की जीभ पर चावल के दाने की तरह खड़ा था। एक तरफ़ सीढ़ियाँ थीं जो नदी में उतरती थीं और यहाँ पत्थरों ने कटाव को रोक दिया था। दूसरी तरफ़, ढलान अचानक और अचानक थी। मुझे इस तरफ़ किनारे लगाना होगा, कोमन ने सोचा। एक दीवार बनाओ ताकि नदी आगे अतिक्रमण न करे और जो मेरा है उसे न ले जाए। इस आखिरी विचार ने उसे चौंका दिया: उसके पास अपना खुद का घर था।

कोमन घर के चारों ओर घूमे। यह बहुत बड़ा नहीं था और आस-पास की ज़मीन पुराने पेड़ों और घनी झाड़ियों से भरी हुई थी। यह कभी महल प्रशासक की झोपड़ी थी। स्थानीय राजा ने नदी के किनारे एक ग्रीष्मकालीन महल बनवाया था। महल इमारत के लिए बहुत भव्य शब्द था, लेकिन आसपास के लोग इसे कोट्टारम कहते थे। बगल में प्रशासक की झोपड़ी थी।

कोमन बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ गया। कमर तक ऊँची दीवार पर लकड़ी का एक तख्ता लगा हुआ था। वह उस पर बैठ गया और लकड़ी की रेलिंग से टिक गया।

सेतु ने लिखा था, "हम क्या करें? मणि सिर्फ़ सत्ताईस साल का है, लेकिन मुझे जल्दी में यह शादी तय करनी पड़ी है। हालात यही चाहते हैं। लेकिन यह अनुचित है कि वह तुम्हारे अविवाहित रहते हुए शादी के बारे में सोचे। अब समय आ गया है कि तुम परिवार के बारे में सोचो। क्या मैं दुल्हन की तलाश शुरू कर दूँ?"

कोमन ने मुस्कुराते हुए पत्र पढ़ा था। मणि ने एक लड़की को गर्भवती कर दिया था

Machine Translated by Google

कोमन का डांस स्कूल में कार्यकाल खत्म होने वाला था। वह घर लौटने के लिए तैयार था, लेकिन शादी करने के लिए तैयार नहीं था।

शादी उसके लिए नहीं थी। वास्तव में, वह अक्सर सोचता था कि क्या शादी किसी के लिए भी होती है। जब अम्मा ने उससे पूछा था कि क्या वह मीनाक्षी के लिए किसी उपयुक्त व्यक्ति को जानता है, जो उसके परिवार की एक लड़की है, तो उसने बालन को उनसे मिलवाया था। बालन उसका बैच-मेट और एक कुशल नर्तक था। कुंडली मिल गई और परिवारों को एक-दूसरे से प्यार हो गया। लेकिन बालन के वेशकारण ने पति बालन को अभिभूत कर दिया था। अम्मा ने उससे कहा था कि मीनाक्षी एक परित्यक्त पत्नी और एक बच्चे की माँ है। 'वह उसे बच्चे के लिए पैसे भी नहीं भेजता। वह किस तरह का आदमी है?' कोमन ने अम्मा की शिकायत सुनी। उसे दोषी महसूस हुआ और उसने बालन को पत्र लिखा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

कोमन ने जवाब में लिखा, मैं शादी के लिए तैयार नहीं हूँ। लेकिन शायद आप मुझे संस्थान के पास किराए पर एक छोटा सा घर ढूँढने में मदद कर सकते हैं। मैं चाहूँगा कि यह नदी के किनारे हो। मुझे जल्द ही वापस लौटना होगा और आशान ने अगले शैक्षणिक वर्ष से मुझे पढ़ाना शुरू करने के लिए पहले ही तय कर दिया है। इसके अलावा, अब जब मणि की शादी होने वाली है, तो मेरे लिए बाहर चले जाना सबसे अच्छा होगा।

सेतु ने पत्र को निराशा की बढ़ती भावना के साथ पढ़ा था। उसे हमेशा से उम्मीद थी कि एक दिन कोमन अपने घर वापस आ जाएगा। कि उसके पास खुश होने का कारण होगा। इन दिनों, उसे अतीत की यादों का एहसास होता जा रहा था। मानो उसके मन को सांत्वना पाने के लिए याद करने की ज़रूरत थी।

काफी समय बीत चुका था, लेकिन उसकी याददाश्त ने बाइबल से एक पंक्ति को याद किया। 'क्योंकि मेरा यह बेटा मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है।' यह पंक्ति कहाँ से थी? हाँ, लूका 15:11-32 से।

लेकिन ऐसा नहीं होना था। सेतु ने खुद को देखा। मेरा समय जल्द ही आएगा, उसने कहा।
खुद से कहा। और फिर भी मैंने अपने पहले बच्चे के साथ सही नहीं किया।
एक दिन उसके दिमाग में यह विचार आया कि अपने बेटे को अपने पास रखने का कोई रास्ता है।
वह उसके लिए एक घर खरीदेगा। नदी के किनारे एक घर। जब उसके पास घर होगा, तो उसे एक साथी चाहिए होगा। और वे घर को अपनी उम्मीदों और बच्चों से भर देंगे, उसने खुद से कहा। सेतु को एक सपना आया: एक छोटा सा घर जिसमें बच्चे आते-जाते थे। क्यों, उसने सोचा, यह जैकब की सीढ़ी हो सकती है, और वह फिर से मुस्कुराया। काश अच्छे डॉक्टर को पता होता कि अच्छी किताब मुझ पर कैसे शासन करती है।

कोमन घर के किनारे चला गया। नदी लगभग सूख चुकी थी; सीढ़ियाँ एक गहरे, शांत तालाब में समाप्त हो गईं। पानी ठंडा था। हवा का झोंका उसके चेहरे पर आया। वह घर जाने के बजाय स्टेशन से अपने घर तक पैदल चला था। उसके लिए बाद में समय होगा। पहले, वह यहाँ बैठकर उस चीज़ को देखेगा जिससे वह भागा था।

वह इतना कायर कैसे हो सकता है? पीछे मुड़कर देखने पर, सब कुछ ऐसा ही लगता है

Machine Translated by Google

इतना सरल। उस समय, उसने सोचा था कि यह अंत था।

कल उसे संस्थान जाना होगा और अपना जीवन फिर से शुरू करना होगा। लेकिन आज के लिए वह अपने पिता का बेटा और अपने भाइयों का भाई होगा। वह खाएगा, पिएगा, चुटकुले सुनाएगा, कहानियाँ सुनाएगा और जब रात होगी, तो वह ललिता को बुलाएगा। एक बार फिर वह उस पर चढ़ जाएगा जैसे कि वह एक मंच हो और उसके शरीर पर प्रदर्शन करेगा। धीमा और कोमल, उग्र और जोरदार, कामुक और विचित्र ... वह फिर से खुद बन जाएगा।

कोमन ने गेट से अंदर जाते हुए सोचा कि संस्थान वैसा ही है। कुछ भी नहीं बदला है। उसने घबराहट के साथ सोचा कि कभी कुछ नहीं बदलेगा।
यह सच नहीं हो सकता। हर जगह हर चीज़ - लोग, मौसम, पौधे, जानवर, फैशन - बदलती रहती है। बीमारी और निराशा है, आशा और खुशी है, यही जीवन की प्रकृति है; यह मांग करता है कि कुछ भी स्थिर न रहे।

लेकिन यहाँ समय लय की धड़कन में कैद था, चेहरों पर रंगे रंगों में ठहरा हुआ था। परिवर्तन उन पात्रों की आत्माओं द्वारा निष्प्रभावी था, जिनमें वे खुद को लपेटे हुए थे। वह जीवन में आगे कैसे बढ़ सकता था, अगर उसने जो जीवन चुना था, वह समय बीतने को नहीं पहचानता था?

कोमन को एक आवाज़ सुनाई दी जो उसे पुकार रही थी। यह सुंदरन था, बैचमेट, कभी दोस्त और
अब संस्थान में प्रशिक्षक हैं।

'तुम खड़े होकर क्या देख रहे हो?' सुंदरन ने पूछा। 'शायद तुम्हें लगता हो कि तुम जहां थे, उसके बाद यह जमीन में एक गड्ढा है। तुम वापस क्यों आए? मैं यह नहीं समझ सकता। मैं वापस नहीं आता।'

कोमन को लगा कि उसने सुंदरन की आवाज़ में ईर्ष्या की झलक सुनी है। कोई उससे ईर्ष्या क्यों करेगा? उसने कंधे उचका दिए। 'यह मेरा घर है,' उसने कहा। उसने सुंदरन की आँखों में अविश्वास देखा और उसे समझाने के लिए मजबूर होना पड़ा, 'देखिए, मद्रास में, वे भरतनाट्यम पर ध्यान केंद्रित करते थे। कथकली कुछ मायनों में एक विचित्रता थी। मैं ऐसी जगह कैसे रह सकता हूँ जहाँ कथकली सर्वोच्च नहीं है? यहाँ ऐसा कोई भ्रम नहीं है।' सुंदरन की मुस्कान एक मुस्कराहट में बदल गई। 'अभी भी वही है, है न? ईमानदार।

अर्नेस्ट कोमन। क्या तुमने आशान को अभी तक देखा है?' कोमन ने आश्चर्य से

सुंदरन को देखा। क्यों, वह मुझे पसंद नहीं करता, उसने सोचा।
फिर उस विचार पर काबू पाते हुए उसने कहा, 'नहीं, मैं अभी-अभी अंदर आया हूं। क्या वह पहले से ही यहां है?'
क्या यह उसके लिए बहुत जल्दी नहीं है?

'वह यहाँ है। वह सारा दिन यहाँ रहता है, शराब पीता है। वह शायद ही कभी घर जाता है। अगर आप एक मील दूर खड़े हों, तो आपको ताड़ी की बदबू आ सकती है। यह उसकी साँसों में है, उसके पसीने में है, क्यों, मुझे लगता है कि वह शराब पीता है। अगर आप मुझसे पूछें तो वह आदमी शर्मिंदगी और परेशानी का सबब है। छात्र उन सभी जगहों की कहानियाँ लेकर आते हैं जहाँ उन्होंने उसे नशे में धुत पाया है। सड़क के किनारे। रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर।

Machine Translated by Google

एक दुकान के बाहर। दूसरे दिन वह एक खेत में गिर गया और उसे छह इंच गहरे पानी में डूबने से पहले बाहर निकालना पड़ा। मुझे नहीं पता कि वे उसे अपने आस-पास क्यों रखते हैं। और वह शायद ही कोई प्रदर्शन करता है। ऐसा लगता है कि कोई भी उसे रखने का जोखिम नहीं उठाना चाहता।

'लेकिन मैं तुम्हें यह क्यों बता रहा हूँ?' सुंदरन ने जाने के लिए मुड़ते हुए कहा। 'शायद तुम्हें पहले से ही पता हो। तुम ऐसे ही थे, है न?' उसने अपने हाथों से साथी, गुरु या सगे-संबंधी का चित्रण करते हुए कहा।

कोमन कुछ देर वहीं खड़ा रहा। आशान के साथ उसके रिश्ते को बयां करने के लिए उसके पास कोई शब्द नहीं था। सुंदरन भी यह देख सकता था। और फिर भी, उसे नहीं पता था। आशान ऐसा क्यों कर रहा था?

आशान अपने कमरे में बैठा पढ़ रहा था। कोमन ने शीर्षक पर नज़र डाली। भागवतम्।
कोमन को तब बेचैनी महसूस हुई। आशान भगवद गीता क्यों पढ़ रहा था?

आशान ने पृष्ठ से अपनी आँखें उठाईं और अभिवादन करते हुए कहा, 'यह सुनो।'
'ऐसा कोई काम नहीं जो मुझे प्रभावित करे, न ही मैं कर्म के फल की आकांक्षा करता हूँ। जो मेरे बारे में इस सत्य को समझ लेता है, वह कर्म के फल में नहीं उलझता।' कोमन ने अपने होंठ चबाए। 'आशान,' उसने कहा, 'तुम कैसे हो?' आशान बूढ़ा हो गया है, उसने सोचा। जब मैंने उसे नौ महीने पहले देखा था, तो

वह एक बुजुर्ग लेकिन स्वस्थ शरीर वाला व्यक्ति था। अब वह जीर्ण और बूढ़ा दिखता है। उसने हार मान ली है।

लेकिन क्यों?

'आशान, तुम कैसे हो?' कोमन ने जोर देकर कहा। फिर वह इसे और सहन नहीं कर सका और पूछा, 'क्या गड़बड़ है?' आशान ने अपना चश्मा उतार दिया और किताब नीचे रख दी। 'क्या गड़बड़ हो सकती है? क्या तुम नहीं देखते

कि मैं भागवतम पढ़ रहा हूँ? इससे बेहतर क्या हो सकता है?' कोमन आशान की ओर चला गया। बहुत समय पहले आशान ने कहा था, जब मैं मरने के लिए तैयार हो जाऊंगा तो मैं भागवतम पढ़ूंगा। यह जीवन में आखिरी काम है जो मैं करूंगा। इससे पहले नहीं। अगर मेरे अंदर के राक्षस अभी भी हैं, तो मैं मर ही जाऊँगा। जब

तक मेरे अंदर राक्षस नहीं होंगे, मैं वेषकारण कैसे हो सकता हूँ?

कोमन ने कहा, 'तुम बहुत अच्छे नहीं लग रहे हो।' बिना किसी लाग-लपेट के उसने कहा, 'मैंने सुना है कि तुम अब सारा दिन शराब पीते रहते हो।' 'क्या मैं नशे में दिखता हूँ या नशे में धुत

रहता हूँ?' आशान की आवाज़ में चिड़चिड़ापन था, जिससे कोमन को लगा कि वह अपना सिर अपनी बाहों में लेकर रोना चाहता है। तुम अपने साथ क्या कर रहे हो, वह चिल्लाना चाहता था।

आशान ने पूछा, 'तुम्हें मेरे बारे में कहानियाँ कौन सुना रहा है?'
कोमन ने किताबें मेज पर रखनी शुरू कर दीं। 'क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है?

Machine Translated by Google

भयानक। तुम क्या दिखते हो - एक बूढ़े शराबी, 'उन्होंने कहा, उम्मीद है कि उनके शब्दों की क्रूरता आशान के गौरव को चोट पहुंचाएगी, उसे कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करेगी।

'यह काम नहीं करेगा।' आशान की आवाज़ धीमी लेकिन पक्की थी। 'मैं एक पुराना शराबी हूँ, मुझे यह पता है। अगर आपको लगता है कि आप मुझे यह बताकर गुस्सा दिला सकते हैं, तो आप गलत हैं। मुझे वास्तव में परवाह नहीं है। भागवतम में एक पंक्ति है जो कहती है, "विनम्र ऋषि एक विद्वान और विनम्र ब्राह्मण, एक गाय, एक हाथी, एक कुत्ते और एक कुत्ते को खाने वाले को समान दृष्टि से देखता है।" मैं उससे शक्ति प्राप्त करता हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं कौन हूँ और क्या हूँ। मैं यह भार आप पर डालता हूँ कि आप मुझे किस तरह देखना चाहते हैं।

मुझे इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम मुझे किस रूप में देखते हो: गाय या कुत्ते के रूप में, नर्तकी या शराबी के रूप में। उस यूनानी का नाम क्या है? एपिकुरस। क्या तुम जानते हो उसने क्या कहा था? बुद्धिमान व्यक्ति छिपकर रहता है और सिर्फ़ अपने जैसे लोगों से ही पेश आता है। बाकी सभी सिर्फ़ परिचित हैं। तो तुम देखो, जो कोई भी मुझे जानता है, वास्तव में मुझे समझता है, उसे इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा कि मैं सड़क के किनारे नशे में पड़ा हुआ पाया गया। जहाँ तक बाकी लोगों की बात है, वे सिर्फ़ परिचित हैं। इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि वे क्या कहते या सोचते हैं?'

आशान ने अपनी ठोड़ी पर उगी हुई दाढ़ी को रगड़ा और बुदबुदाया, 'अगर आप वाकई मेरी मदद करना चाहते हैं, तो आप मेरी दाढ़ी बना सकते हैं। मेरा हाथ काँपता है और मैं खुद को कई जगहों पर काट लेता हूँ।' कोमन ने अपने शिक्षक को बहुत देर तक देखा। भगवद गीता का अस्तित्व एक

ऐसे व्यक्ति के कारण है जिसने युद्ध के मैदान के बीच में अपने हथियार नीचे रख दिए और कहा: अब मैं अपना सारा संयम खो चुका हूँ और उलझन में हूँ। मैं आगे कैसे बढ़ूँ? वास्तव में, मैं आगे बढ़ना ही नहीं चाहता। क्या मतलब है?

क्या आशान को भी ऐसा ही महसूस हुआ था? क्या इसीलिए उसने शराब और भागवतम की शरण ली थी?

कोमन ने धीरे-धीरे अपनी साँस छोड़ी। वह आशान के पास छात्र के रूप में अपनी देखरेख फिर से शुरू करने की उम्मीद में आया था। लेकिन आशान उससे और अधिक चाहता था। या यह कम था?

'आशां,' कोमन ने कहा। 'मैं लड़कों के छात्रावास से थोड़ा गर्म पानी ले आता हूँ।'
क्या तुम चाहोगे कि मैं तुम्हारे लिए एक कप चाय लाऊँ?' आशान ने पलकें

झपकाईं। 'चाय?' उसने एक पल के लिए सोचा। 'चाय अच्छी रहेगी।' कोमन ने रेज़र को कान से ठोड़ी तक सरकाया। धीरे-धीरे, हर स्ट्रोक

जानबूझकर और सावधानी से, उसने साबुन, ठोड़ी और जो उसने सोचा कि आशान का जीवन के प्रति तिरस्कार था, उसे हटा दिया। उसने रेज़र को ठंडे पानी के मग में डुबोया और नीचे रख दिया।

'आशां,' उसने अचानक पूछा। 'क्यों?' बूढ़े ने शेविंग आईने में झाँका।

उसने अपने गाल फुलाए। उसकी ठुड्डी के नीचे झाग लगा हुआ था। उसके जबड़े का मोड़ उसके चेहरे को परिभाषित करने वाली एक साफ भूरी रेखा थी। एक पल के लिए, झाग ने कोमन को चुट्टी और उसके सफ़ेद रंग के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया

Machine Translated by Google

एक वेषकर्ण के चित्रित चेहरे को परिभाषित करने वाला वक्र।

'लगता है कि मैंने यहाँ-वहाँ बाल छोड़ दिए हैं। पहली बार ठीक से काम न करने के लिए मुझे माफ़ करना चाहिए,' कोमन ने शेविंग साबुन पर ब्रश लगाते हुए कहा, झाग बनाने की कोशिश करते हुए। उसने आशान के गालों पर फिर से साबुन लगाया। 'क्या यह वेशम है? क्या तुम किसी से खेल रहे हो?' आशान ने कोमन के लिए अपना बायाँ गाल फुलाया।

कोमन ने फिर से रेज़र उठाया। आशान ऐसा दिखावा कर रहा था जैसे उसने उसकी आवाज़ नहीं सुनी।
लेकिन वह तब तक अड़ा रहा जब तक कि आशान ने उसे उसके भटकने का कारण नहीं बता दिया।

अचानक दरवाज़ा खुला और सुंदरन दरवाज़े के पास खड़ा था। उस्तरा फिसला और आशान के गाल पर झाग के बीच से लाल रंग की एक बूँद निकल आई।
कोमन का चेहरा लाल हो गया। आशान ने फुसफुसाया। सुंदरन ठहाका मारकर हंस पड़ा। 'यह क्या है?
आप नाई हैं या नर्तक? मुझे लगा कि आप मद्रास में कथकली सिखा रहे हैं, नाई के प्रशिक्षु के रूप में प्रशिक्षण नहीं ले रहे हैं।'

आशान ने भौंहें सिकोड़ीं और गुर्राते हुए कहा, 'क्या तुम कमरे में घुसने से पहले दरवाज़ा नहीं खटखटाते?' 'मैं तुम्हें यह बताने आई थी कि ग्यारह बजे मीटिंग है। प्रिंसिपल मुझे

बुलाना चाहते थे।
'मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ,' सुन्दरन ने आशान की इस घुसपैठ पर नाराजगी को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

'क्या यह चपरासी का काम नहीं है?' कोमन ने शुष्क स्वर में पूछा।

सुंदरन ने कंधे उचका दिए। 'मैंने उसे सूचित करने की पेशकश की।' वह कमरे में

चला गया और शेविंग मिरर उठाया। उसने उसमें देखा और एक भटके हुए कर्ल को जगह पर खींच लिया, उंगली की नोक चाटी और उसे अपनी भौं पर फिराया।

कोमन के चेहरे पर एक अजीब सी बेचैनी सी छा गई। कैसा मोर जैसा आदमी है। फिर भी उसने कुछ नहीं कहा। आशान हमेशा अपने छात्रों से दूरी बनाए रखता था। उसके दूर रहने के दौरान क्या बदल गया था? सुंदरन ने एक ऐसा परिचय दिखाया जिसकी कल्पना कोमन भी नहीं कर सकता था। उसने आशान के चेहरे पर एक नज़र डाली।

'क्या तुम्हारा काम हो गया?' बूढ़े आदमी की आवाज़ गुस्से से कठोर हो गई थी।

सुंदरन ने आईने से नज़रें ऊपर उठाईं। 'ओह, क्या?' उसने आईने का मुंह नीचे कर दिया।

'परेशान मत हो। मैं जा रहा हूँ। अब जब तुम्हारा लड़का यहाँ आ गया है, तो मुझे लगता है कि तुम्हें अब हम में से किसी की ज़रूरत नहीं है। लेकिन कौन कह सकता है कि वह अगली बार कब नाराज़ होकर चला जाएगा? वह एक बार पहले भी ऐसा कर चुका है।' वह कोमन की ओर मुड़ा। 'तुम्हारे भी आने की उम्मीद है।' 'वह वहाँ होगा,' आशान ने कहा। 'अब कृपया चले जाओ। मेरे चेहरे पर साबुन सूख रहा है।' जब

सुंदरन दबी हुई आवाज़ में सीटी बजाते हुए चला गया, तो कोमन भड़क उठा, 'तुम क्यों नाराज़ हो?

तुमने उसे ऐसा...ऐसा... होने दिया' वह एक शब्द के लिए टटोल रहा था।

'परिचित?' बूढ़े आदमी ने पूछा।

Machine Translated by Google

'हाँ, बहुत जाना-पहचाना है। वह अनादर करने की हद तक जाना-पहचाना है।' 'मैं जानता हूँ,' आशान ने कहा। 'उसने हमेशा मेरे
प्यार पर अपना हक जताने की कोशिश की है। वह तुमसे नाराज़ है। यह शायद तुम जानती हो। तुम दोनों मेरे सबसे अच्छे छात्र हो। लेकिन वह जानता है कि मैंने हमेशा तुम्हें उससे ज़्यादा तरजीह दी है। मैं तुम्हारी कला के प्रति समर्पण का सम्मान करता हूँ, और इस तथ्य का भी कि तुम अपनी प्रतिभा के बारे में पूरी तरह से अनजान हो। यह सब उसकी समझ से परे है। उसे हमेशा नंबर वन रहना पड़ता है, चाहे मंच पर हो या मेरे प्यार में, और इसलिए वह तुमसे प्रतिद्वंद्विता करता है।

'पिछले साल उसने मुझे उल्टी के एक तालाब में मुंह के बल पड़ा हुआ पाया था। उसे लगता है कि उसने मेरी जान बचाई है। और इससे उसे मुझ पर हक जताने का मौका मिल जाता है। हम दोनों ही शराबी हैं, कोमन, वह और मैं। मैं ताड़ी के नशे में हूँ और वह मेरे लिए अपने महत्व के विचार से। मैं उसे बस वह सहनशीलता दिखाता हूँ जो एक शराबी दिखाता है। उसे नहीं पता कि वह क्या कर रहा है।'

कोमन ने अपनी नाक रगड़ी। यहाँ चीजें निश्चित रूप से बदल गई थीं।

कोमन ने आशान की शेविंग पूरी कर ली। शेविंग का सामान रखते हुए वह अचानक मुड़ा और बोला, 'आशान, मैं तुमसे यह फिर कभी नहीं पूछूंगा, लेकिन मुझे जानना है। तुम अपने साथ ऐसा क्यों कर रहे हो? तुम हमेशा बहुत ज्यादा शराब पीते थे, लेकिन अब तुम बस यही करते हो।' वह आदमी जो एक नई शर्ट के बटन लगा रहा था, वह आशान था जिसे वह जानता था, हालाँकि वह थोड़ा घिसा हुआ

था। नशे में धुत्त उसकी आँखों में चमक और चमक की जगह उसकी ठुड्डी पर एक घमंडी झुकाव और सर्वव्यापी नज़र ने ले ली थी।

'कुछ महीनों में मैं रिटायर हो जाऊंगा। उसके बाद मैं क्या करूंगा? मेरे पास आने वाली भूमिकाएँ कम होती जा रही हैं। मैं शराबी हूँ। वे कहते हैं कि मैं अविश्वसनीय हूँ। मैं उन्हें दोष नहीं दे सकता। लेकिन मैं चाहता हूँ कि वे समझें कि मैं अपने अंदर के राक्षसों को जगाने के लिए शराब पीता था। जब वे जीवित हो गए, तभी मेरा वेशम जीवित हुआ।

'मेरे शैतान अब मर चुके हैं। अब वे शराब पीने पर भी प्रतिक्रिया नहीं करते।
और जब मैं इस संस्थान को छोड़ दूंगा, तो मेरा जीवन समाप्त हो जाएगा। मैं ऐसे समय की कल्पना नहीं कर सकता जब मेरी त्वचा को मैनोला की खुशबू का एहसास न हो। हाँ, अब जब मुझे पता है कि मैं मैनोला कभी नहीं पहन सकता, तो इसकी बदबू भी खुशबू बन गई है। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि मेरे सिर पर कभी ताज नहीं होगा। अब बस इतना ही बचा है कि मैं जीवन की प्रक्रिया को समाप्त करूँ।' कोमन ने अधीरता से अपना सिर हिलाया। 'बहुत सारे नर्तक सत्तर की उम्र तक भी नृत्य जारी रखते हैं, और तुम अभी

भी इतने युवा हो। क्या तुम नहीं देखते, सेवानिवृत्ति मृत्यु नहीं है। स्थिति को सुधारने के बजाय, तुम इसे और भी बर्बाद कर रहे हो।'

'मैं एक अभिनेता हूं, एक वैश्याकरण हूं। आशान ने कहा, ''मैं वेशकर मरूंगा।'' 'और
हमें अब जाना होगा.

सूरज की रोशनी में आशान की आँखें सिकुड़ गईं। वह एक पल के लिए रुक गया,

Machine Translated by Google

कोमन के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'मुझे जीवन में बहुत से पछतावे हैं। लेकिन एक चीज है जिसका मुझे कभी पछतावा नहीं होगा। कथकली। यह मेरा जीवन है। यह मेरी मुक्ति है। यह वह सब है जो मैंने हमेशा चाहा है। यह प्रसिद्धि या पैसा या किसी पारखी की प्रशंसा नहीं है, बल्कि सृजन का एकनिष्ठ आनंद है, एक चरित्र और एक कहानी में जीवन डालना, इस तुच्छ, नश्वर अस्तित्व की अपेक्षाओं से परे जाना। अपने चारों ओर देखो, कोमन। क्या तुम्हें अपनी नसों में गायन महसूस नहीं होता?

तुम इससे कैसे बच सकते हो? तुम इसे कैसे त्याग सकते हो?'

कोमन ने इसे सुना। एक श्रृंगारपदम की शांति के साथ, धड़कन शुरू हुई, एक प्रेम गीत की लय। गति बदलने लगी...तेज...तेज, एक युद्ध पदम की शक्ति के साथ, युद्ध गीत जिसने उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। अब पीछे मुड़कर देखने का कोई मतलब नहीं था।

Machine Translated by Google

अद्भुतम्

श्रृंगारम. हास्याम. करुणाम. रौद्रम. वीरम. भयानकम्।
बीभलसम। आपने प्रत्येक भावना को जन्म देने वाले विचार को पहचानना और उसके अनुसार अपने चेहरे को ढालना सीख लिया है। आपने देखा है कि कैसे पहले विचार, फिर आपकी सांस, फिर आपका चेहरा जानने से लेकर अनुभव करने और फिर व्यक्त करने की प्रक्रिया को हल करता है। ऐसा कहा जा सकता है कि इसमें एक निर्माण होता है। अदभुतम के साथ ऐसा नहीं है। क्योंकि अकेले यह भावना आपको एक समय सीमा प्रदान नहीं करती है जिसके भीतर आप भावना पर काम कर सकें।

क्योंकि अद्भुत का अर्थ है आश्चर्य। और आश्चर्य तत्काल होता है। इसे पहले से सोचा या गणना करके नहीं किया जा सकता। अगर आप ऐसा करते हैं, तो यह आश्चर्य नहीं है। यह किसी के द्वारा आश्चर्यचकित होने का दिखावा करना है और आपको यह समझना चाहिए कि जब हम काल्पनिक दुनिया में रहते हैं, तो हम भावनाओं का दिखावा नहीं करते। अपनी आँखें चौड़ी करें।

उन्हें बिना किसी रोष या वीरता के चौड़ा करें। आपकी भौहें आश्चर्य पर जोर देती हैं और आपके चेहरे की मांसपेशियां भी। आपके नथुने ऐसे फैलते हैं मानो आप उस सार को खींच रहे हों जो आपको आश्चर्य से भर देता है और आपका मुंह अनजाने में आधी मुस्कान में चौड़ा हो जाता है।

मैं इसे आपके लिए समझना आसान बना दूँ। उन सभी चीज़ों के बारे में सोचिए जो हमारी आत्मा को विस्मय में डाल सकती हैं। इंद्रधनुष तो है, लेकिन हमारे पास इंद्रधनुष को देखकर आश्चर्यचकित होने के लिए बच्चों जैसी मासूमियत नहीं है। हमारा मन इसे प्रकृति की एक घटना के रूप में जानता है। दिसंबर की ठंडी रात और सितारों के निकलने, साफ़ और चमकदार होने के बारे में सोचें। मालाबार के हमारे हिस्से में, हम इन साफ़ ठंडे महीनों में आकाशगंगा देखते हैं। अपनी आँखों को प्रशिक्षित करें और आप एक तारे को बाकी सभी की तुलना में ज़्यादा चमकते हुए देखेंगे। वह है सिरियस, डॉग स्टार। अपनी आँखें चौड़ी करके इसे देखें और आप आश्चर्यचकित हो जाएँगे। यह क्या है? एक तारा या एक स्वर्गीय रथ? क्या कोई चीज़ इतनी चमकदार हो सकती है?

अब कटहल को ही लीजिए। कटहल के पेड़ के तने से चिपके हुए गांठदार, हरे, बड़े-बड़े कांटेदार फल जैसे मां के गले से लटके हुए बच्चे हों। एक को अलग करें और दोनों हिस्से अलग-अलग हो जाएंगे और अंदर से सुनहरे पीले रंग की फलियाँ चमक उठेंगी।
मैं आपकी आँखों में आश्चर्य देख रहा हूँ। लेकिन आप सोच रहे होंगे कि हम सब कटहल को जानते हैं।
इसमें इतना अद्भुत क्या है? यह सच है। लेकिन जब आप फली को काटते हैं और अमृत आपके मुंह में भर जाता है, तो क्या आपको नहीं लगता: मैंने पहले कभी इतना अद्भुत कुछ नहीं खाया है? मैंने कभी ऐसी मिठास, ऐसा सुनहरापन, ऐसा स्वाद नहीं जाना है

Machine Translated by Google

परिपक्वता.

यहां तक कि परिचित चीजें भी आश्चर्य का कारण बन सकती हैं। यही बात मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं।

लेकिन, अक्सर जो चीज हमें हैरान करती है, वह हमें कम ही दिखती है। सितंबर से मई के बीच हमारे बगीचों में एक मेहमान आता है। करीब एक फुट लंबा, काले रंग की शिखा और चेहरा और सफेद शरीर जिस पर साटन के रिबन जैसे दो पंख फड़फड़ाते हैं। यह नकुमोहन है। कुछ लोग इसे रॉकेट बर्ड कहते हैं और कुछ रिबन बर्ड, लेकिन इसका असली नाम पैराडाइज फ्लाईकैचर है। जब आप इसे देखते हैं, तो आपको एहसास होता है कि इससे बेहतर नाम और क्या हो सकता था। यह एक ऐसा पक्षी है जिसका असली बसेरा स्वर्ग के रत्न जड़ित वृक्ष ही हो सकते हैं। ऐसी है इसकी सुंदरता, इसकी शान और इसकी अनोखी शक्ल। और आप खुद से पूछते हैं: यह कौन सा पक्षी है जो इतना सुंदर है? यह कहां रहता है? यह क्या खाता है? इसे देखते ही आपके मन में लाखों सवाल दौड़ पड़ते हैं। आश्चर्य की यही पहचान है। जानने की जिज्ञासा, पाने की लालसा। और जब आप ऐसा करते हैं, तो आश्चर्य खत्म हो जाता है। यही अद्भुत का स्वभाव है।

क्षणभंगुर होना। क्योंकि आप इसे फिर कभी ठीक उसी हद तक नहीं जान पाएँगे।

राधा

मैं अपने नाखूनों को घूरती हूँ। फिर से उन्हें फाइल करना शुरू करती हूँ।

मैंने अपनी आँखें उठाईं और श्याम की नज़र मुझ पर टिकी हुई देखी। उसने कहा, 'तुम्हें शाम के समय अपने नाखून नहीं काटने चाहिए।'

मैं हैरान होकर उसे देखता रहा। 'क्यों नहीं?' 'मुझे नहीं

पता। मेरी दादी हमेशा यही कहती थीं। शायद इसका कोई मतलब है।

बहुत ही ठोस और वैज्ञानिक कारण है।' उसकी नज़रें फिर से टीवी पर चली जाती हैं।

श्याम अंधविश्वास और तर्कपूर्ण सोच का एक अजीब मिश्रण है। एक तरफ तो वह इन मूर्खतापूर्ण अंधविश्वासों में से अधिकांश पर विश्वास करता है और दूसरी तरफ वह तकनीक को अपनाने और उसका उपयोग करने वाला पहला व्यक्ति है, चाहे वह गैजेट हो या अभ्यास। उसे जीवन भर और आठ सालों से करीब से जानने के बावजूद, मैं यह समझने में असमर्थ हूँ कि उसका दिमाग कैसे काम करता है।

उदाहरण के लिए , बेवाच है ।

मुझे आश्चर्य है कि उनके जैसा बुद्धिमान व्यक्ति ऐसी बेतुकी चीजें कैसे देख सकता है। लेकिन वह मुस्कुराते हुए कहते हैं, 'इसके लिए किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं है। मैं बस यहाँ बैठकर देखता हूँ। आपको इसे कभी न कभी आज़माना चाहिए। आपको अपनी हर चीज़ को बौद्धिक अभ्यास में बदलने की ज़रूरत नहीं है, आप जानते हैं।'

मुझे वहां एक कटाक्ष का आभास होता है। ये छिपे हुए कटाक्ष मेरी ओर आ रहे हैं

Machine Translated by Google

पिछले कुछ दिनों में यह बहुत ज़्यादा बार हुआ है। मुझे एहसास है कि उसका उद्देश्य मुझे चोट पहुँचाना नहीं है, लेकिन उसे इस बात की परवाह नहीं है कि मैं चोट पहुँचा रहा हूँ। मुझे डर का एहसास है। यह एक श्याम है जिसे मैं पहचान नहीं पाया।

वह एक चैनल से दूसरे चैनल पर चला जाता है। चुनने के लिए छह मलयालम चैनल हैं। वह लड़ाई के दृश्य को गाने के लिए बदल देता है, विज्ञापन के विज्ञापन को संवाद के एक अंश के लिए बदल देता है। पूरी शाम यह चलता रहता है, और मैं उसे पकड़ने की कोशिश में सिर घुमाता रहता हूँ।

मैं पूछती हूँ, 'तुम ऐसा क्यों करते हो?' 'तुम एक बार में एक ही चैनल क्यों नहीं देखते?' वह कुछ नहीं कहता। मैं फिर से अपने नाखून काटने लगती हूँ।

मुझे आश्चर्य है कि क्या वह जानता है। मुझे लगता है कि इसका क्या मतलब है। वे सभी अब मर चुके हैं। मेरी माँ और दो भाई, जिनमें से एक मेरे पिता थे और दूसरे चाचा। एकमात्र बात यह है कि मुझे यकीन नहीं है कि कौन कौन है। अगर वे जीवित भी होते, तो क्या इससे कोई फर्क पड़ता?

'श्याम,' मैं कहता हूं.

'हम्म...' उसकी नज़रें टीवी स्क्रीन पर टिकी रहती हैं।

'श्याम,' मैं फिर उसका नाम कहता हूं।

वह आवाज़ कम कर देता है और मेरी ओर देखता है।

'क्या तुमने कभी मेरे माता-पिता की शादी के बारे में कुछ अजीब सुना है? तुम्हें ज़रूर पता होगा
तब तुम लगभग सात साल के रहे होगे, है न?'

मैं उसके चेहरे पर भाव बदलते देखता हूँ। जब श्याम किसी फिल्म में डूबा होता है, तो उसके चेहरे पर भाव देखकर यह अंदाजा लगाना आसान होता है कि वह क्या देख रहा है। वह नायक के साथ मुस्कुराएगा और उसके साथ दुख भी सहेगा। नवरस और उपरसों का एक पूरा समूह आता-जाता रहता है। लेकिन जब वह अब मेरी तरफ देखता है, तो उसके चेहरे पर सारे भाव मिट जाते हैं। श्याम जब मेरे साथ होता है, तो वह और भी अधिक निष्क्रियता का मुखौटा पहनता है। एक कर्तव्यनिष्ठ, लेकिन भावशून्य और उदासीन चेहरा।

मुझे यह लकड़ी का श्याम पसंद नहीं है। वह मुझे परेशान करता है।

'तुमने क्या सुना, श्याम?' मैं अपनी फाइल मेज पर गिराते हुए पूछता हूं।

श्याम ने आह भरी। 'मैं तब सात साल और चार महीने का था,' वह कहता है और वह अखबार उठाने के लिए उठता है जिसे मैंने कील की धूल को सोखने के लिए अपनी गोद में फैला रखा था। वह फाइल को उसके केस में रख देता है।

'तुम्हारी माँ, मेरी मौसी, तुम्हारे बड़े भाई, तुम्हारे चाचा मणि से शादी करने वाली थी, लेकिन वह शादी से तीन रात पहले गायब हो गया। इसलिए तुम्हारे पिता ने उससे शादी कर ली। क्या तुम्हें नहीं पता था?' 'नहीं,' मैंने सिर हिलाते हुए कहा। बस इतना ही?

'खैर, यह तो आम बात थी। मुझे लगा कि तुम्हें पता होगा,' वह फिर से आवाज़ बढ़ाते हुए कहता है।

Machine Translated by Google

मैं वहीं बैठा हूँ, टीवी से आ रही आवाज़ों से बेखबर। मैं सुनता हूँ: 'वह मेरी है, है न? मुझे बताओ...मैं देख सकता हूँ...वह तुम्हारे या मेरे उस छोटे भाई जैसी बिल्कुल नहीं दिखती।'

मैं कमरे से बाहर निकलता हूँ। मैं ऊपर अपने माता-पिता के बेडरूम में जाता हूँ। मैंने इसे अछूता छोड़ दिया है। यहाँ कोई नहीं सोता। लेकिन बिस्तर बिछा हुआ है और चंदन की लकड़ी की पुड़िया अलमारी को सुगंधित कर रही है। मुझे लगता है कि इस घर में बहुत सारे कमरे हैं।

और बहुत सारे रहस्य.

मेरे दादाजी ने अपने अतीत को इसकी दीवारों में दफना दिया था और मेरे माता-पिता ने भी अपने अतीत को यहीं दफना दिया था। यह घर रहस्यों का स्वागत करता है और उन्हें प्रोत्साहित करता है।

मैं नीचे जाती हूँ और अपना मैनीक्योर केस साथ ले जाती हूँ। बाथरूम के दरवाज़े पर टॉयलेटरीज़ का एक बैग टंगा हुआ है। मुझे लगता है कि श्याम ने उसे वहीं छोड़ दिया होगा।

शायद वह इसे बाद में रख देना चाहता है। मैंने उसे सरप्राइज देने का फैसला किया। तभी मेरी नज़र सैनिटरी नैपकिन के पैकेट पर पड़ी। मुझे गुस्सा आ गया। उसे मेरे लिए सैनिटरी नैपकिन भी क्यों खरीदना पड़ता है? वह मुझे सांस लेने और खुद से खून बहने क्यों नहीं देता?

मैं अचानक रुक जाता हूँ। मैं बाथरूम की कैबिनेट में पिछले महीने का पैकेट देख सकता हूँ, जो बिना छुए पड़ा है। मुझे एक हल्का झटका महसूस होता है। मैं बेडरूम में भागता हूँ। वहाँ मेरे पास एक छोटा सा कैलेंडर है। मैं पन्नों को पलटता हूँ। मैं तारीखों को देखता हूँ, गिनता हूँ और हिसाब लगाता हूँ। मैं दस दिन देरी से हूँ।

मैं बैठ जाती हूँ। मेरे पैर काँप रहे हैं। मुझे लगता है कि मैं गर्भवती हो सकती हूँ। मैं अपने पेट को छूती हूँ। क्या यह संभव है? इतने समय के बाद, और जब मैं कम से कम ज़िम्मेदारी चाहती हूँ?

अब मुझे क्या करना चाहिए? यह उस रात हुआ होगा जब श्याम ने मेरा बलात्कार किया था। अगर श्याम को पता चल जाए कि मैं उसके बच्चे को जन्म देने वाली हूँ तो वह मुझे कभी नहीं जाने देगा। अगर क्रिस को पता चल जाए तो वह क्या कहेगा? हम एक साथ जीवन के बारे में कैसे सोच सकते हैं जब मैं किसी और आदमी के बच्चे को जन्म देने वाली हूँ? क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि यह श्याम का है, एक आवाज़ मुझसे पूछती है। यह मत भूलो कि बलात्कार के दो रात बाद तुमने फिर से प्यार किया था। यह तुम्हारे सुरक्षित पीरियड का आखिरी दिन था। दुर्घटनाएँ होना तो जाना ही है।

मैं खुद से कहता हूं, घबराओ मत। मैं एक और सप्ताह इंतजार करूंगा और उसके बाद ही इस बारे में सोचूंगा।

'क्या तुम बाहर जा रहे हो?' मैंने श्याम से पूछा।

'हो सकता है। क्यों?' वह भौंहें सिकोड़ता है। उसे परेशान होना पसंद नहीं है, खास तौर पर फिल्म के आखिरी कुछ दृश्यों में। नायक, एक हट्टा-कट्टा आदमी, छह फीट लंबा, गालियाँ दे रहा है जो उसकी मुट्ठियों जितनी ही जोरदार हैं। उसकी आवाज़ में गड़गड़ाहट के साथ खलनायक अपनी चप्पलों में काँपते हुए खड़े हैं।

'क्या आप मुझे अंकल के घर छोड़ सकते हैं? मुझे उनसे बात करनी है,' मैंने कहा। 'यह ज़रूरी है।'

Machine Translated by Google

‘तुम उसे फोन क्यों नहीं करते?’ ‘उसका फोन

काम नहीं कर रहा है,’ मैं झूठ बोलता हूं।

वह कहते हैं, 'क्या यह कल तक इंतजार नहीं किया जा सकता?'

'नहीं, यह नहीं हो सकता,' मैं झल्लाया। 'यह हास्यास्पद है कि तुम मुझे गाड़ी चलाने नहीं दे रहे हो। जब मैं खुद आसानी से गाड़ी चलाकर वहाँ जा सकता हूँ, तो मुझे क्यों भीख माँगनी और विनती करनी पड़ती है?' 'बस। मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। तुम गाड़ी नहीं चला

सकते। मैंने तुम्हें गाड़ी चलाते देखा है। तुम्हें यातायात की कोई समझ नहीं है और तुम हमेशा गलत गियर का इस्तेमाल करते हो।' मैंने उसे घूर कर देखा। जब मैं वहाँ रहता था, तो मैंने पूरे बैंगलोर में गाड़ी चलाई, फिर भी वह ऐसे बात करता है जैसे मुझे

अपने क्लच और ब्रेक का पता ही नहीं है। मुझे फिर से गाड़ी चलानी होगी।

मैं अपने आप से कहता हूं कि इससे उसे पता चल जाएगा कि मुझे किसी के दबाव में नहीं आना है।

‘तैयार हो जाओ,’ वह कहता है। ‘यह कुछ ही मिनटों में खत्म हो जाएगा।’ ‘किसलिए? मैं सिर्फ़ अंकल के

पास जा रहा हूँ। मैंने जो पहना है, वही काफी है।’ ‘क्या तुम क्रिस से नहीं मिलोगे?’ वह रेशमी आवाज़ में पूछता है।

'मुझे लगता है कि क्रिस कहीं बाहर गया है,' मैं झूठ बोलता हूँ। मुझे लगता है कि मैं अभी क्रिस को नहीं देख सकता। जब तक मुझे पक्का पता न चल जाए, मैं उसे नहीं देख सकता।

अचानक मुझे उसे फिर से देखने की इच्छा होने लगी। यह एक असहनीय इच्छा है। बस उसकी बाहों को अपने चारों ओर महसूस करना और खुद को यह बताना कि कुछ भी नहीं बदला है।

रात का आसमान बादलों से घिरा हुआ है। गरज के साथ बिजली चमक रही है। श्याम मेरे साथ अंकल के घर की ओर चल रहा है। वह मेरी कोहनी पकड़ता है और हम जमीन के एक अंधेरे हिस्से से होकर चलते हैं। मैं उसे झटक देना चाहता हूँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं करता। मैं इस नए श्याम को नाराज़ करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

वह अंकल से कहता है, 'आपका फोन काम नहीं कर रहा है।'

चाचा भौंहें सिकोड़ते हैं। 'नहीं, यह तो...' 'जब मैंने कुछ

देर पहले कोशिश की थी, तो ऐसा नहीं था,' मैं जल्दी से कहता हूँ।

चाचा रिसीवर उठाकर कान से लगाते हैं। ‘हाँ, मुझे कुछ दिनों से यह समस्या हो रही है। कोई नहीं जानता कि यह कब काम करता है और कब नहीं।’ मुझे आश्चर्य होता है कि क्या श्याम को पता है कि चाचा मेरी मदद कर रहे हैं।

श्याम कुछ नहीं बोलता। वह अंकल की मेज़ पर रखी किताबों की तरफ़ देखता है। मैं समझ सकता हूँ कि वह सफ़ाई करना चाहता है। वह कहता है, 'क्या तुम्हें बोरियत नहीं होती?

तुम यहाँ अकेले क्या करते हो?

चाचा मुस्कुराते हैं। ‘मैं पढ़ता हूँ, लिखता हूँ, सोता हूँ, और फिर मालिनी है। यह बहुत ही भरपूर जीवन है।’ जब श्याम चला जाता है, चाचा मुझे बहुत देर तक

देखते रहते हैं। ‘क्या है, राधा? क्या तुम्हारे दिमाग में कुछ चल रहा है? क्या क्रिस है?’ ‘मुझे लगता है कि मैं गर्भवती हो सकती हूँ,’ मैं चाचा से कहती हूँ।

मैंने उसकी आँखों में आश्चर्य देखा, 'क्या तुम्हें यकीन है?'

Machine Translated by Google

मैंने कहा, 'मुझे पूरा यकीन है, लेकिन मैं एक सप्ताह और इंतजार करूंगा और फिर डॉक्टर को दिखाऊंगा।'

मैं उसकी आँखों में प्रश्न देखता हूँ।

'मुझे नहीं पता,' मैं कहता हूँ, यह सोचते हुए कि अभी तो मैं इसकी अनिश्चितता को ही तरजीह देता हूँ।
पितृत्व के बारे में सोचना बेहतर था, बजाय इसके कि यह बच्चा मुझे श्याम के साथ जीवन भर के लिए बांध देगा।

वह कुछ देर तक कुछ नहीं बोलता। क्या वह भी वही सोच रहा है जो मैं सोच रहा हूँ? कि इतिहास खुद को दोहरा रहा है? जैसी माँ वैसी बेटी। क्या मधुमेह और मल्टीपल स्क्लेरोसिस जैसी उच्छृंखलता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाती है?

वह पूछता है, 'तुम क्या करोगे?'

'मुझे नहीं पता,' मैं कहता हूँ। मैं अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लेता हूँ। 'शायद यह सिर्फ़ एक बात है।
गलती हो गई। शायद मैं गर्भवती ही नहीं हूँ,' मैं अपनी उँगलियों से कहती हूँ।

मैं उससे पूछता हूँ, 'मेरे पिता कौन थे? दो भाइयों में से कौन?' मैं यह जानने की कोशिश नहीं करता।
और निहितार्थों को व्यक्त करता हूँ। मैं इसे बेहतर ढंग से कहने की कोशिश भी नहीं करता।

चाचा अपना चश्मा उतारते हैं। उनकी आंखें थक गई हैं। क्या वे मुझे सच बताएंगे, मैं
आश्चर्य। चाचा अपनी नाक रगड़ते हैं। 'तुम्हें पता है तुम्हारे पिता कौन हैं।'

'नहीं, मुझे याद नहीं। क्या तुम्हें वह समय याद है जब अंकल मनी आए थे? मैंने उन्हें मेरी माँ से झगड़ते सुना था। वे मुझे अपनी बेटी बता रहे थे।'

'और तुम्हारी माँ ने क्या कहा?' 'उसने कुछ नहीं कहा।

लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए। तुम्हें सच पता है,' मैंने उससे कहा।

चाचा के चेहरे पर दूर की भावना है। मैं उन्हें बीच में रोकना या जल्दी नहीं करना चाहता। मैं देख सकता हूँ कि वे अपनी यादें चुन रहे हैं।

'मणि। मेरा भाई मणि। वह भाई जिसने, जब मैं अनिश्चित और अनिश्चित स्थिति में था, हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया, मेरा हाथ थाम लिया और मुझे परिवार में खींच लिया। मैं उससे किसी और से ज़्यादा प्यार करता था।

'हमेशा भूखा। हमेशा मांगता... वह जीवन को ऐसे मानता था जैसे कि वह मुर्गे की टांग हो जिसे तब तक कुतरना हो जब तक कि मांस का आखिरी टुकड़ा उसके मुंह में न आ जाए और फिर वह हड्डियों को जोर से कुतरता और मज्जा को अपनी जीभ पर जमा देता।

'मणि ने कभी इस बारे में सोचने में समय बर्बाद नहीं किया कि दुनिया उसे किस तरह देखती है। यह एक तरह का कच्चा साहस था। जब वह तीसरी कक्षा में था, जिसे आप कक्षा आठ कहेंगे, तो उसने स्कूल उत्सव में ऑलराउंडर का पुरस्कार जीतने का मन बना लिया। उसके अंक अच्छे थे और उसके पास खेल ट्रॉफियों की एक लंबी कतार थी, लेकिन उसे एक सांस्कृतिक गतिविधि में पुरस्कार जीतने की ज़रूरत थी। उसने देखा कि अधिकांश आयोजनों में प्रतियोगियों की एक लंबी सूची थी, शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता को छोड़कर जिसमें केवल तीन थे। मणि ने चौथे प्रतियोगी के रूप में नामांकन करने का फैसला किया। मणि, जिसने कभी एक भी गायन सबक नहीं लिया था, क्या आप कल्पना कर सकते हैं? वह केवल एक वर्णम जानता था जो रेडियो पर गायन पाठ कार्यक्रम का हिस्सा था। उसने उसे गाया और तीसरा पुरस्कार जीता। लेकिन इसे पूरा करने के लिए साहस की आवश्यकता थी, एक मूर्खतापूर्ण लापरवाह साहस की।

Machine Translated by Google

मणि ऐसे ही व्यक्ति थे।' चाचा मुस्कुराते हैं।

'जब हम लड़के थे, तो तुम्हारी दादी अक्सर घर के चारों ओर चूहे के जाल बिछा देती थीं।
एक कमरा था जिसमें धान रखा जाता था।' वह अचानक मेरी ओर मुड़ा। 'आजकल आप उसमें क्या-क्या रखते हैं?' 'यह खाली है,' मैंने कहा।
'उस विशाल घर के अधिकांश हिस्से की तरह।' उसने
सिर हिलाया।

'धान चूहों के लिए खुला निमंत्रण था कि वे आकर घर बसा लें। मेरी माँ उनसे तंग आ चुकी थी। वे न केवल धान चुराते थे, बल्कि सूखने के लिए रखे कपड़ों में छेद कर देते थे, सब्ज़ियों के बड़े-बड़े टुकड़े कुतर देते थे, मल-मूत्र छोड़ देते थे और बहुत उपद्रव मचाते थे। इसलिए चूहे के जाल बाहर लाए गए। लेकिन एक बार चूहे फंस जाने के बाद उन्हें मारने में वह बहुत ही संकोची थी। और मेरे पिता ऐसी छोटी-छोटी बातों से परेशान नहीं हो सकते थे, उसने सोचा। मैं तब तक घर छोड़ चुका था।

'मणि आधिकारिक चूहे मारने वाला था। वह उन्हें झाड़ू से पीट-पीटकर नहीं मारता था, जैसा कि कोई और करता। वह चूहे के जाल को एक बोरी में खोलता और फिर बोरी का मुंह बांधकर उसे कपड़े धोने के पत्थर पर ले जाता।

'जब उसे यकीन हो जाता कि उसके पास कोई दर्शक है - नौकर-चाकर, हमारी माँ और शायद पड़ोस के कुछ बच्चे भी - तो वह कहता, "इस बोरी को देखो। इस पर इतनी धूल कैसे जम गई? मुझे लगता है मुझे इसे भी साफ करना होगा..." और वह बोरी को पत्थर पर तब तक मारता जब तक कि चूहा चूर-चूर न हो जाए, जबकि बाकी सभी लोग हंसते रहते। मणि जानता था कि मौत को भी कैसे हास्यास्पद बनाया जा सकता है।

'उनके लिए हर चीज़ हंसी या खुशी प्रदान करने की क्षमता के संदर्भ में परखी जाती थी। उन्हें जीवन से बहुत प्यार था। यही बात मुझे उनमें सबसे ज़्यादा पसंद थी। उनकी खुश रहने की क्षमता।

मुझे लगता है कि मेरे पिता में खुश रहने की बिल्कुल भी क्षमता नहीं थी। सब कुछ सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान के इर्द-गिर्द ही बना था। अगर कोई चीज समाज को स्वीकार्य होती, तो वे उसे पसंद करते। अगर उसमें अवैधता का थोड़ा भी दाग होता, तो वे उससे कोई लेना-देना नहीं रखते। क्या वे हमेशा से ऐसे ही थे? या फिर वे अपने परिवार के बारे में किसी भी तरह की गपशप या अटकलों से बचने के लिए इतने सख्त हो गए थे? मैं सिर्फ़ अनुमान लगा सकता हूँ...

'जब हम जवान थे,' अंकल फिर से शुरू करते हैं, 'मणि भी ऐसा ही था। चूहों को कुचलने के बजाय, वह महिलाओं को बहकाने लगा। उसके लिए यह सब बस एक खेल था। एक अपरंपरागत खेल, लेकिन उससे ज़्यादा कुछ नहीं। वह सुंदर था और आकर्षण बिखेरता था। महिलाएँ उससे प्यार करती थीं। वह प्रेम नजीर, जेमिनी गणेशन, शम्मी कपूर और ग्रेगरी पेक एक साथ थे। क्या आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है?

महिलाओं से बात करते समय उनकी एक विशेष मुद्रा थी।

Machine Translated by Google

अपनी बाहों को इस तरह से मोड़ता कि वे उसके कंधों को सीधा कर दें, और आगे की ओर झुक जाता। वह लंबा था, इसलिए वह महिलाओं के ऊपर मंडराता था, और वह एक ऐसा रूप दिखाता था जिसमें कामुकता की हल्की झलक के साथ तीव्रता भी समाहित होती थी। यह हर बार काम करता था।

बाबू आश्चर्य से सिर हिलाते और कहते, "देखो, इसकी तरफ़।"
"वह यह सब कैसे करता है? क्या इन महिलाओं को इससे बेहतर कुछ नहीं पता? उसे एक अभिनेता होना चाहिए था। वह महिला शायद सोचती है कि वह उसके प्रति अटूट भक्ति की कसम खा रहा है...क्या खूनी कलाकार है!"

'मणि अपने रोमांटिक कारनामों से बच निकला। लेकिन गौरी के साथ उसने गलती की। वह कोई गरीब चचेरी बहन या नौकरानी नहीं थी जिसकी चुप्पी खरीदी जा सके। वह एक सम्मानित परिवार से थी और इससे पहले कि पूरा शहर यह जान पाता कि क्या हुआ था, उनकी शादी तय हो गई। गौरी गर्भवती थी और इसमें देरी नहीं की जा सकती थी।' 'मैं,' मैं चिल्लाया।

'नहीं, तुम नहीं। गौरी का विवाह के कुछ सप्ताह बाद ही गर्भपात हो गया। मुझे आश्चर्य नहीं है कि ऐसा हुआ। कल्पना कीजिए: जिस आदमी से उसे विवाह करना चाहिए था, वह विवाह से तीन रात पहले गायब हो गया और वह उसके भाई से विवाह करने के अलावा और क्या कर सकती थी? परिवार की प्रतिष्ठा और उसका भविष्य दांव पर था। गर्भावस्था गुप्त थी, लेकिन यदि विवाह टूट गया, तो उसका जीवन बर्बाद हो जाएगा।

'मणि उस रात मुझसे मिलने आया। "मैं क्या कर रहा हूँ, एटा?" उसने मुझसे बार-बार पूछा। उसे एहसास होने लगा था कि यह कोई शरारत नहीं थी जिसे वह भूल सकता था।

'मैंने इसे घबराहट समझकर टाल दिया। "चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा," मैंने उसे आश्वस्त किया। "अब समय आ गया है कि तुम घर बसा लो और अपना परिवार बना लो।" मैं अपने पिता के शब्दों को खुद से दोहरा रहा था।

"मुझे नहीं पता। मुझे सचमुच नहीं पता।" उस रात वह अजीब मूड में था
और हम वहाँ साथ बैठे, देर रात तक बातें करते रहे।
'उसने अपनी यादें ताज़ा कीं, उन घटनाओं की, जिनमें वह बच निकलने में कामयाब रहा था और बच निकला था, उन महिलाओं की, जिनके साथ वह सोया था। शिकार की घटनाओं की, शराब की पार्टियों और मौज-मस्ती की। उसे खुद को यह भरोसा दिलाने की ज़रूरत थी कि वह फंसा हुआ नहीं है और अभी भी एक आज़ाद प्राणी है।

'"लेकिन मैं वास्तव में दुनिया देखना चाहता हूँ। मैं अपनी पत्नी और एक दोस्त के साथ कैसे ऐसा कर सकता हूँ?
"क्या तुम बच्चे हो? मैं जीवन भर इस जगह से बंधा रहूंगा," उन्होंने कहा।
'"अब तुम अतिशयोक्ति कर रहे हो," मैंने कहा। "तुम शादीशुदा हो तो तुम यात्रा क्यों नहीं कर सकते? मैंने ऐसी बकवास कभी नहीं सुनी। बच्चा बड़ा हो जाएगा और तुम उसे हमेशा अपने माता-पिता के पास छोड़ सकते हो," मैंने कहा।

'"लेकिन यह वैसा नहीं होगा।"
वह रात में चला गया और मैंने उसकी मोटरसाइकिल स्टार्ट होने की आवाज़ सुनी। किसी ने उसे नहीं देखा

Machine Translated by Google

उसके बाद वह सात साल बाद वापस लौटा।

वह कलकत्ता चले गए, जहाँ उनके किसी परिचित ने उन्हें जहाज़ पर नौकरी दिलवाई। उन्होंने अपने और मेरे पिता की अपेक्षाओं के बीच जितना संभव हो सके उतनी दूरी बनाए रखने का निश्चय किया।

'वहां अफरा-तफरी मच गई। हममें से किसी एक को आगे आना था। लेकिन मैं नहीं कर सका, राधा। मैं नहीं कर सका। मैं शादी के लिए तैयार नहीं था। और मेरे अंदर कुछ ऐसा था जो मणि की होने वाली महिला से शादी करने के विचार से ही डर रहा था। मुझे लगा कि यह बहुत ज़्यादा अनाचार जैसा है। इसलिए तुम्हारे पिता ने सम्मानजनक और निःस्वार्थ काम किया। उन्होंने गौरी से शादी करने का प्रस्ताव रखा।

'बाबू को कोई बहुत पसंद नहीं करता था। वह तीखा और कर्कश था। और उसकी भटकती निगाहें ज़्यादातर लोगों को परेशान कर देती थीं। जब मणि आसपास होता था, तो कोई भी उसके अलावा किसी और पर नज़र नहीं रखता था। मणि चमकता था। उसकी बुद्धि, उसका आकर्षण, उसकी मौजूदगी ने बाबू को उसकी सारी प्रतिष्ठा से वंचित कर दिया। क्या बाबू उससे नाराज़ था? मुझे पक्का नहीं पता।
मणि ने अपने चेहरे पर अपनी भावनाएं जाहिर कीं, लेकिन बाबू ने ऐसा नहीं किया। वह अपने चेहरे के पीछे छिप गया।
आप कभी नहीं जान सकते कि वह क्या सोच रहा था। लेकिन उस रात मैंने उसका सम्मान करना शुरू कर दिया। ऐसा लग रहा था कि वह मणि की कमी को पूरा कर रहा था और अपने आस-पास की हर चीज़ पर खुद को थोप रहा था।
वह स्थिति को संभालने के लिए खुद को देने को तैयार था। उसके मन में क्या चल रहा होगा?

'उस दिन जब बाबू ने शर्त रखी, तो हममें से किसी ने भी उसके खिलाफ कुछ कहने की हिम्मत नहीं की। उन्होंने कहा कि हमें उस घर में कभी भी मणि का जिक्र नहीं करना है। "मैं नहीं चाहता कि बच्चे को पता चले कि मैं उसका पिता नहीं हूँ," उन्होंने कहा। "मैं नहीं चाहता कि गौरी कभी सोचे कि अगर मैंने उससे शादी कर ली होती तो क्या होता।"

'रातों-रात मणि का अस्तित्व समाप्त हो गया। एक महीने बाद गौरी का गर्भपात हो गया। मणि
तब वह सचमुच हमारे जीवन से निष्कासित हो चुका था।

'छह महीने बाद, गौरी फिर से गर्भवती हुई। तुम। वह बच्चा तुम ही थे। और तुम्हारे पिता तुमसे कितना प्यार करते थे! तुम्हारे जन्म से पहले ही, वे तुम्हारे भविष्य के बारे में चिंतित थे।' चाचा मुस्कुराते हैं।

वह पूछता है, 'क्या मैंने आपके प्रश्न का उत्तर दे दिया है?'

'मुझे कैसे पता कि तुम सच कह रहे हो?' मैंने दृढ़ता से पूछा।

'तुम्हें जो मानना है, तुम्हें वही मानना है। क्या तुम चाहोगे कि मणि तुम्हारे पिता होते? क्या यह तुम्हारी कल्पना के अनुकूल होता? एक साहसी, रोमांटिक नायक का पिता होना? मत भूलो, वह स्वार्थी और अविश्वसनीय भी था। वह आदमी जिसने शादी से तीन रात पहले एक गर्भवती लड़की को छोड़ दिया। तुम्हारे पिता एक साधारण आदमी थे, नीरस और सम्मान की कमी से भरे हुए, लेकिन वे एक इज्जतदार आदमी थे। गरिमा से भरे एक आदमी। कभी भी दिखावटीपन के पक्ष में गरिमा को खारिज करने की गलती मत करो।'

मुझे लगता है कि दुख ने मुझे घेर लिया है। काश मैंने अपने आप को समझने की कोशिश की होती

Machine Translated by Google

पिता को बेहतर समझें। और उन्हें उस चीज़ के लिए प्यार करें जो वह थे, बजाय इसके कि उन्हें उस चीज़ के लिए कमतर समझें जो वह नहीं थे।

मैंने उनसे कहा, 'इससे मेरी मां दोषमुक्त नहीं हो जातीं।'

'अपनी माँ के बारे में मत सोचो, राधा। उसने अपना जीवन वैसे ही जिया जैसा उसने सोचा था
सबसे अच्छा। क्या तुम्हें उसे चुनाव की आज़ादी नहीं देनी चाहिए?' वह धीरे से कहता है।

मैं अपने माता-पिता के बारे में सोचता हूँ। मुझे उनकी शादी की तस्वीर याद है। मेरे माता-पिता भी कभी युवा और उतावले थे, जिनके सपने बेपरवाह थे। वयस्कता और जिम्मेदारी को समझने की कोशिश कर रहे थे। और मुझे एहसास हुआ कि बच्चों का स्वभाव ही ऐसा होता है कि वे कभी भी माता-पिता को अपनी युवावस्था, अपनी गलतियों या अपने डर का एहसास नहीं होने देते। अंत में, बच्चों द्वारा अपने माता-पिता पर किया जाने वाला यह अघोषित अत्याचार उतना ही दमनकारी है जितना कि माता-पिता बच्चों के लिए बनाए गए नियम।

जब मेरा बच्चा इतना बड़ा हो जाएगा कि उसे सही-गलत का पता चल जाएगा, तो वह मेरे बारे में क्या सोचेगा? क्या वह मेरे बारे में वैसा ही फैसला करेगा जैसा मैं अपने माता-पिता के बारे में करता हूँ?
क्या मेरा बच्चा मुझे मेरी गलतियों और निर्णयों में त्रुटियों की अनुमति देगा? क्या मेरा बच्चा हर चीज के बावजूद मुझसे प्यार करेगा?

मुझे लगता है कि कोई ठंडा हाथ मेरे कंधे को पकड़ रहा है। मुझे लगता है कि मैं बस क्रिस के साथ रहना चाहती हूँ। उसे देखना चाहती हूँ। उसे गले लगाना चाहती हूँ। खुद को यह भरोसा दिलाना चाहती हूँ कि हमारे बीच कुछ नहीं बदला है और कुछ नहीं बदलेगा।

क्रिस अपनी झोपड़ी में है। मुझे पता है कि वह वहीं है। मैं उसे खिड़की से देखता हूँ।

'क्रिस,' मैं फुसफुसाया।

वह ऊपर देखता है। वह मुझे घूरता है, लेकिन मैं जानता हूँ कि वह मुझे नहीं देख सकता। मैं अंदर हूँ।
वह खिड़की के पास आता है।

वह कहते हैं, 'मुझे पता है कि तुम वहां हो।'

मैं प्रकाश में उभरता हूं।
'कैसे?' मैं उत्सुक हूं।

'मैं तुम्हारी खुशबू पहचानता हूँ।' मुझे लगता

है कि मेरे अंदर फूल खिल रहे हैं। क्या यह हो सकता है कि वह बच्चा उसका है? मैं इस विचार को अपने अंदर समेट लेता हूँ। और अगर ऐसा नहीं भी है, तो क्या वह मुझसे इस बात को लेकर नाराज़ होगा? क्या वह मुझसे उससे छुटकारा पाने के लिए कहेगा? मुझे लगता है कि मेरे अंदर का फूल मुरझा रहा है।

क्रिस मुझे अपनी बाहों में ले लेता है। 'मुझे तुम्हारी याद आती थी।' 'मुझे भी

तुम्हारी याद आती थी,' मैं बुदबुदाती हूँ। 'मैं नहीं रुक सकती। श्याम अब कभी भी यहाँ आ जाएगा।' 'यहाँ?' 'नहीं, मेरा मतलब है, जैसे ही उसे पता चलेगा कि

मैं अंकल के

घर से निकल गई हूँ, वह गेट पर होगा।' 'तो फिर समय काफी है,' वह कहता है।

Machine Translated by Google

मैं वहाँ लेटी हूँ, इच्छुक और आज्ञाकारी। उसके शरीर की छाया में, मुझे लगता है कि मेरा डर कम हो गया है। मुझे लगता है कि वह मुझे कभी नहीं छोड़ेगा। इतिहास खुद को नहीं दोहराएगा। मैं किसी पुरुष से सिर्फ़ इसलिए नहीं बंधूँगी क्योंकि जिस पुरुष से मैं प्यार करती हूँ उसने मुझे छोड़ दिया है। क्रिस मेरे चाचा मणि की तरह नहीं है। क्रिस कोई बच्चा नहीं है जो पुरुष बनने का नाटक कर रहा हो।

'धीरे-धीरे,' मैं कहता हूं।

'धीरे-धीरे क्यों?' वह मेरे मुंह के पास बुदबुदाता है। मैं जवाब में अपनी गर्दन ऊपर उठाती हूं।

फ़ोन बजता है। बजता रहता है। फिर मुझे एहसास होता है कि आवाज़ मेरे बैग से आ रही है। मैं फ़ोन पकड़ लेता हूँ। श्याम पूछता है, 'तुम कहाँ हो?'

मैं अपनी आवाज में घबराहट नहीं लाते हुए कहता हूं, 'मैं आ रहा हूं।'

मैं क्रिस को दूर धकेलती हूँ। 'मुझे जाना होगा; वह यहाँ है।' मैं अपने गालों पर पानी
छिड़कती हूँ और अपने बालों को कानों के पीछे धकेलती हूँ। 'मुझे माफ़ कर दो,' मैं कहती हूँ।

वह पूछता है, 'क्या तुम्हें एहसास है कि अब हमारे पास एक साथ बिताने के लिए बिल्कुल भी समय नहीं है?'

उसकी आवाज़ सुनकर मेरे अंदर कुछ विद्रोह सा हो गया। मैंने पूछा, 'मैं क्या कर सकता हूँ?'

वह अपने बालों में उंगलियाँ फेरते हुए कहता है, 'यह बहुत निराशाजनक है।' उसके चेहरे पर उदासी छा जाती है।

'क्या हमारा रिश्ता सिर्फ़ इसी बारे में है, क्रिस?' मैं पूछती हूँ। 'सेक्स?' हम अब कभी बात नहीं करते, मैं
मन ही मन कहती हूँ। हम बस एक-दूसरे पर झपटते रहते हैं।

'ओह, चलो,' वह कहते हैं।

'मुझे अब जाना होगा,' मैं कहता हूँ और दरवाज़े से भागता हूँ। मुझे लगता है कि उसकी नज़रें मेरी पीठ पर हैं। वह गुस्से में है। मैं भी। वह क्यों नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ? मैं पेड़ों के बीच से भागता हूँ, खुद को संभालने की कोशिश करता हूँ।

श्याम कार में है। 'मुझे लगा कि आपने कहा था कि साहिव चला गया है,' वह कहता है।

'वह आज शाम को वापस आ गए। चाचा चाहते थे कि मैं कुछ कागज़ात छोड़ जाऊँ।
कुछ ऐसा जो कल हुआ, जिसके बारे में वह जानता था कि क्रिस उसका इंतजार कर रहा था।' मुझे पता है कि मैं बहुत ज्यादा और बहुत तेजी से बोल रहा हूं।

वह कुछ नहीं कहता। मैं दरवाजे के पास सिमट जाती हूँ। मुझे शर्मिंदगी का अहसास होता है। मेरे अंदर कुछ हिलता है। क्या यह मेरी अंतरात्मा है? या यह बच्चा है, जो एक युग्मनज से ज़्यादा कुछ नहीं है, जो मुझसे माँग रहा है - क्या तुम जानते हो कि तुम मेरे पिता के साथ क्या कर रहे हो?

क्या मेरी माँ को भी ऐसा ही महसूस हुआ होगा? दो पुरुषों के बीच फंसी हुई, चाहे वह किसी एक पुरुष के साथ हो या दूसरे के साथ, वह खुद को एक वेश्या की तरह महसूस करती थी?

इस प्रेम का आश्चर्य अब अपनी घिनौनी, गंदी तह को दिखाने लगा है
मुझे।

जब मैंने श्याम को देखा तो पाया कि उसके चेहरे पर कुछ भी नहीं दिख रहा था, न गुस्सा, न ही गुस्सा

Machine Translated by Google

दर्द या संदेह की एक झलक भी, मैं अपने प्यार को घिनौना और आश्चर्य से रहित मानता हूँ। मैं इसे वासना की आग में घी डालने के अलावा और कुछ नहीं, बल्कि ऊब को दूर भगाने के रूप में देखता हूँ।

Machine Translated by Google

श्याम

मैं अपनी कार में इंतज़ार कर रहा हूँ, तभी बारिश शुरू हो जाती है। मैं डैशबोर्ड पर लगी घड़ी देखता हूँ। मैं पिछले दस मिनट से यहाँ बैठा हूँ। वह कहाँ है?

चाचा बरामदे में मेरा इंतजार कर रहे थे। 'रास्ते में राधा नहीं दिखी क्या?
यहाँ? आप उससे कुछ मिनटों से चूक गए होंगे।'

वह बेचैन और घबराया हुआ था। उसके दिमाग में कुछ चल रहा था। मैं उसे देख सकता था, लेकिन मैंने उससे नहीं पूछा। 'राधा तुमसे किस बारे में मिलना चाहती थी? उसने कहा कि वह कल तक इंतजार नहीं कर सकती,' मैंने कहा। 'क्या वह अपने माता-पिता के बारे में थी?' उसने आह भरी। 'अपने माता-पिता के बारे में। हाँ, हाँ, वह मुझसे अपने माता-पिता के बारे में पूछना

चाहती थी।' 'मैंने भी यही सोचा था! आज शाम को वह उनके बारे में, उनकी शादी की परिस्थितियों के बारे में जानना चाहती थी। लेकिन

वह तुमसे कल पूछने के लिए इंतजार क्यों नहीं कर सकती थी?' मैंने पूछा। मैं जानता था कि वह मुझे पूरी सच्चाई नहीं बता रहा था। शायद उसे यहाँ आने के लिए बस एक बहाने की ज़रूरत थी।

'तुम्हें पता है कि वह कितनी आवेगशील है!' उसने कहा।

मैंने सिर हिलाया। मुझे यह बात अच्छी तरह पता थी। फिर मैंने उससे इस बारे में पूछने का फैसला किया
कुछ ऐसा जो मुझे चिंतित कर रहा था।

'जब आप इस घर को खरीदने के बारे में बात कर रहे थे, तो आपने कहा था कि आपके पिता ने इसे आपके भाई मणि की शादी के समय खरीदा था। मुझे लगता है कि आपका मतलब उस शादी से था जिससे वह भाग गए थे। या फिर उन्होंने उसके बाद शादी की थी?'

राधा अपने दादा की संपत्ति की एकमात्र लाभार्थी है। वह अपने पिता की इकलौती संतान थी और चाचा का कोई वारिस नहीं है। मुझे चिंता थी कि भविष्य में विरासत में हिस्सेदारी के लिए नए दावेदार सामने आएंगे।

बूढ़े आदमी ने कहा, 'मणि मर गया। उसकी न तो कोई पत्नी थी, न बच्चे, न जायज, न नाजायज।'

मैंने पूछा, 'उनकी मृत्यु संदिग्ध परिस्थितियों में हुई थी, है न?'

उन्होंने कहा, 'उनकी मौत एक दुर्घटना में हुई। यह एक मूर्खतापूर्ण दुर्घटना थी, लेकिन इसमें कुछ भी संदिग्ध नहीं था।'

'वह जिस कार को चला रहा था वह एक खड़े पेट्रोल टैंकर से टकरा गई और उसमें विस्फोट हो गया।
मैंने सुना है कि पुलिस पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थी कि यह एक दुर्घटना थी।' मैंने उसके चेहरे पर तनाव देखा।

'मैंने अपने मित्र एसपी से रिकॉर्ड निकलवाए। मुझे लगा कि उसके बारे में सब कुछ पता लगाना समझदारी होगी। अगर कभी कोई उसका वंशज होने का दावा करता है तो हमें तैयार रहना चाहिए। तभी मैंने सुना कि उन्हें लगता है कि किसी ने पूरी बात तय कर ली होगी,' मैंने समझाया।

Machine Translated by Google

‘लेकिन कौन चाहेगा कि वह मर जाए?’ ‘राधा के पिता तो मर

ही जाएंगे,’ मैंने बुदबुदाया।

चाचा ने कहा, 'वह एक इज्जतदार आदमी था। वह ऐसा कुछ कभी नहीं करेगा।' लेकिन मैंने देखा कि वह बैठ गया, अपने पैरों पर भरोसा नहीं कर पा रहा था।

'इसके बारे में सोचो,' मैंने कहा। 'जिस भाई को निकाल दिया गया था, वह अपना हक मांगता हुआ वापस आ गया। संपत्ति एक बात है, लेकिन अगर वह महिला और बच्चे को अपना बता दे तो क्या होगा? यह अपने सम्मान की रक्षा के लिए ही है कि तुम ऐसा कुछ करो,' मैंने कहा।

चाचा कुछ नहीं बोले। एक पल बाद उन्होंने मेरी तरफ देखा। 'तुम्हें जाना ही होगा।'
उन्होंने कहा, 'केवल मृतक ही जीवित है।'

मैं कार में बैठकर विंडशील्ड वाइपर को देखता हूँ। मुझे समझ में आने लगा है कि राधा के पिता को कैसा महसूस हुआ होगा जब उनका भाई अचानक उनके जीवन में वापस आ गया। मुझे हर जगह खतरे दिखाई देते हैं। मैं उन ताकतों को सक्रिय होते हुए देखता हूँ जो मेरे हक की हर चीज़ को हड़प लेंगी।

वह कहाँ है?

मैं हैरान हूँ कि वह क्या कर रही है। मैं उसका नंबर डायल करता हूँ। फ़ोन बजता है। फ़ोन उठाने से पहले कम से कम आठ बार बजता है। मुझे लगता है कि मेरा धैर्य जवाब दे गया है। 'तुम कहाँ हो?' मैंने उसकी आवाज़ सुनी। यह अस्वाभाविक रूप से शांत है। 'मैं अपने रास्ते पर हूँ,' वह कहती है।

तब मुझे एहसास हुआ कि मैंने उन्हें बाधित किया है।

मेरे मुँह से आक्रोश की चीख फूटती है। रात मेरी पीड़ा को निगल जाती है।

मैं अपना सिर स्टीयरिंग व्हील पर टिका देता हूँ। व्यभिचारिणी के पति को क्या करने की अनुमति है? क्या मुझे विश्वासघात पर अपना गुस्सा निकालने की अनुमति है? क्या मैं अपने सम्मान की रक्षा कर पाऊँगा? क्या कोई भी कानूनी अदालत, चाहे वह मानवीय हो या दैवीय, मेरे खिलाफ़ कोई कार्रवाई करेगी?

जब मैं अभी बच्चा ही था, मैंने एक पड़ोसी के बारे में कहानी सुनी थी जिसने अपनी पत्नी का सिर काट दिया था। उसे पता चला था कि उसका एक प्रेमी है। वह एक हाथ में कुल्हाड़ी और दूसरे हाथ में महिला का सिर उसके बालों से लटकाए हुए पुलिस स्टेशन गया। कहा जाता है कि पुलिसवालों ने उसे कुर्सी दी। यहाँ तक कि वे, वर्दीधारी लोग भी समझते थे कि व्यभिचारिणी महिलाओं को मार दिया जाना चाहिए। यह सम्मान की बात थी।

लेकिन ये राधा है। मेरी राधा। मैं क्या करूँ?

फिर मैं उसे देखता हूँ। वह हेडलैम्प की रोशनी में उभरती है। वह बारिश से खुद को बचाने के लिए अपने सिर पर हाथ रखती है। केवल राधा ही सोच सकती है कि उसका छोटा हाथ तेज़ बारिश से सुरक्षा दे सकता है। ठीक वैसे ही जैसे वह सोचती है कि मुझे उसके अफेयर के बारे में पता नहीं चलेगा।

बारिश की बूँदें उसके चेहरे पर छा रही हैं। बारिश की बूँदें उससे चिपकी हुई हैं।

Machine Translated by Google

वह कार का दरवाज़ा खोलती है और अन्दर बैठ जाती है। मुझे उसमें उसकी खुशबू आती है।

मैं उसके बालों को अपनी मुट्ठी में लपेटकर उसे नीचे दबाना चाहता हूँ। मैं उसकी गर्दन को अपनी उँगलियों के बीच फँसाना चाहता हूँ और उसके विश्वासघाती शरीर से हवा निचोड़ना चाहता हूँ। मैं उसे अपनी बाँहें फड़फड़ाते और साँस के लिए संघर्ष करते देखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह देखे कि उसने मुझे कितनी गहरी चोट पहुँचाई है और मैं चाहता हूँ कि वह मेरी पीड़ा के लिए पीड़ा सहे।

इसके बजाय मैं अपने गुस्से और अपनी आवाज़ पर नियंत्रण रखता हूँ। 'मुझे लगा कि तुमने कहा था कि साहिव दूर है।' वह एक स्पष्टीकरण देती है। उसके

शब्द बहते हैं और लुढ़कते हैं, लुढ़कते हैं और कलाबाजियाँ करते हैं। सर्कस में अंतराल भरने वाले जोकर। उसे रहस्यों और अपराधबोध की गंध आती है।

मैं कुछ नहीं कहता। मुझे बोलने से डर लगता है। अगर मैं बोलूंगा तो यह आरोप होगा।
ज़हर और नफ़रत। फिर सब कुछ खो जाएगा।

वह जल्दी सो जाती है। मैं लिविंग रूम में बैठा रहता हूँ। मुझे नींद नहीं आती।

जब मैं अपने कमरे में जाता हूँ तो आधी रात हो चुकी होती है। वह सो रही होती है। उसके कपड़े कुर्सी पर बिखरे पड़े होते हैं। मैं उन्हें टांग देता हूँ और उसकी अंडरवियर को बाथरूम में टोकरी में डाल देता हूँ। दीवार पर लगी कैबिनेट ठीक से बंद नहीं होती। मैं उसे खोलता हूँ और टॉयलेटरीज़ को व्यवस्थित करना शुरू करता हूँ। सैनिटरी नैपकिन के दो पैकेट हैं। वह उन्हें क्यों जमा कर रही है? वे बहुत जगह लेते हैं। फिर अचानक मुझे पता चलता है कि क्या गड़बड़ है, मैं क्या भूल गया हूँ।

राधा को अभी तक पीरियड नहीं आया है। मैं मन ही मन हिसाब लगाती हूँ। दस दिन पहले पीरियड आना था।
एक पल के लिए मेरे दिमाग में एक अजीब सी धुन गूंजने लगी। क्या ऐसा हो सकता है? क्या ऐसा हो सकता है कि वह गर्भवती हो? क्या मैं आखिरकार एक बच्चे का पिता बन गया हूँ?

फिर मैं रुक जाता हूं.

मैं क्या सोच रहा हूँ? मुझे पता है कि मैं बच्चे का पिता नहीं बन सकता। मेरे अंदर क्या बढ़ रहा है?
वह मेरी नहीं है। यह पाप का ढेर है। उसके विश्वासघात का जीता जागता सबूत।

एक तेज़ दर्द मुझे चीरता हुआ अंदर तक ले जाता है। मैं अपनी पीड़ा की आवाज़ को दबाने के लिए अपने हाथ को काटता हूँ।

जो कुछ मेरा है वो जल्द ही मुझे छोड़ देगा। मेरा प्यार। मेरी ज़िंदगी। मेरे सपने, मेरी
सम्मान। मेरे पास बस अपमान ही बचेगा। मैं आगे कैसे बढ़ूँ?

कुछ गीला-गीला सा मेरे गालों पर बह रहा है। मुझे एहसास हुआ कि मैं रो रही हूँ।

मैं रोता हूं क्योंकि मेरे पास केवल दुख ही है जिससे मैं लिपटा रह सकता हूं।

Machine Translated by Google

चाचा

मैंने हमेशा उन यादों को चुना है जिन पर मैं ध्यान देना चाहता हूँ। जब वे यादें सामने आती हैं जिनके बारे में मैं सोचना नहीं चाहता, तो मैं उन्हें दूर कर देता हूँ। लेकिन आज रात मुझे उन्हें याद करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यह उनकी गलती है। राधा और श्याम की। मेरा मानना है कि वे मृतकों को जीवित कर रहे हैं।

मैं उस समय के बारे में सोचता हूँ जब मणि वापस आया था। वह भाई जिसका अब हमारे जीवन में कोई स्थान नहीं था, वह एक ऐसी उपस्थिति थी जिसे कोई भी हटा नहीं सकता था। मैंने उसे अपने साथ रहने के लिए मनाने की कोशिश की। मणि ने पूछा, 'मेरे आने से उन्हें असहज क्यों होना चाहिए?'

'तुम्हें पता है कि तुम्हारी मौजूदगी बाबू को परेशान करती है। तो फिर तुम ऐसा क्यों करते हो?' मैंने पूछा।

उसने कंधे उचका दिए। 'बाबू को कोई आपत्ति नहीं है। वह सब अतीत की बात है। इसके अलावा, वहाँ भी है
छोटी सी लड़की। क्या वह प्यारी नहीं है? और सोचिए कि वह मेरी भी हो सकती थी।' 'वह तुम्हारी नहीं है,' मैंने धीरे से कहा।

'झूठ मत बोलो, एटा,' उसने कहा। 'मैं देख सकता हूँ कि वह मेरी है। वह उससे बिल्कुल भी मिलती-जुलती नहीं है।'

मणि ने उसकी बात नहीं सुनी। उसने बाबू को हड़पने वाला समझा। उसने देखा कि अब परिवार में उसका कोई स्थान नहीं है और उसे यह पसंद नहीं आया। मणि ने कोई वास्तविक नुकसान नहीं पहुँचाया होगा। वह कोई बुरा आदमी नहीं था। वह तो बस एक आदमी के शरीर में एक बच्चा था।
सब कुछ एक खेल था। अगर गौरी उसके साथ जाने को तैयार हो जाती तो मणि फिर भाग जाता। लेकिन बाबू कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।

तस्वीरें मेरे दिमाग से हटने का नाम नहीं ले रही थीं। कार में मणि।
मणि अंदर फँस गया। मणि की त्वचा उसके शरीर से उतर रही थी, उसका मांस पिघल रहा था। मणि चीख रहा था और चीख रहा था, और भागने की कोशिश कर रहा था। मणि फट रहा था। एक सेकंड का एक अंश - बस इतना ही उसे पता चल पाया कि अब भागने का कोई रास्ता नहीं है। हमें बताया गया कि यह लगभग तुरंत ही हुआ, जब वे उसके अवशेष घर ले आए। उसके शरीर से केवल हड्डियों और दाँतों के कुछ टुकड़े ही बचे थे। गायब होने के खेल में माहिर मणि।

मेरे पिता की मृत्यु के साथ ही मणि का अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त हो गया। अब उनकी याद को जीवित रखने वाला कोई नहीं था।

फिर भी, आज रात मैंने उसे अपने भीतर के दरवाजे पर दस्तक देते सुना। अपनी यादों की तिजोरी खोलो, एटा, और मुझे बाहर आने दो। मेरे पास जो कुछ बचा है, वह तुम्हारी यादें हैं। तुम्हें कम से कम मुझे उनके ज़रिए जीने देना चाहिए।

मैंने दरवाज़े खुलने की आवाज़ सुनी। बारिश हो रही है। इस समय कौन हो सकता है? फिर मैंने देखा कि यह क्रिस है।

Machine Translated by Google

वह कहते हैं, 'मुझे इस तरह से अंदर आने का दुख है। लेकिन मैं वहां और नहीं बैठ सकता था।
और भी। मुझे लगा कि मैं घर में कैद हो गया हूँ। जब सारा दिन बारिश होती है तो आप क्या करते हैं?'

'मानसून का यही असर होता है,' मैंने कहा। 'इस साल मानसून अपेक्षा से ज़्यादा लंबा खिंच गया है। कुछ महीने पहले हम सभी वर्षा जल संचयन के बारे में बात कर रहे थे। अब हर कोई मिट्टी के कटाव और बारिश से होने वाली तबाही के बारे में बात कर रहा है। आपकी यात्रा भयानक रही होगी। क्या आप वह सब देख और कर पाए जो आप देखना चाहते थे?' 'नहीं, वास्तव में नहीं।' वह अपनी उँगलियों को अपने बालों में घुमाता है और अपनी कुर्सी पर आगे की ओर झुक जाता है। उसकी उँगलियों के सिरे एक मीनार की तरह मिलते हैं जिस पर वह अपनी ठुड्डी टिकाता है। मैं उस भाव को पहचानता हूँ, मुझे एहसास है।

मैंने पूछा, 'लेखन कैसा चल रहा है?'

'मैंने यहां आने के बाद से एक शब्द भी नहीं लिखा है। मुझे लगा था कि मैं यहां रहते हुए बहुत सारा काम कर लूंगा, लेकिन लगता है कि मैं सिर्फ़ टालमटोल करता रहा।' उसके चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक भाव है।

'तुम जब तैयार होगे तब लिखोगे,' मैंने कहा। अचानक मैंने पूछा, 'वापस जाकर क्या करोगे?' 'मुझे यह किताब लिखनी है। और कुछ पत्रकारिता का काम भी करना है, जिसका मतलब है थोड़ी

यात्रा करना। मैं अफ्रीका जा सकता हूँ।' उसके चेहरे पर चिंतन की भावना थी। 'मुझे उन्नी से कहना है कि वह ट्रैवल एजेंट से बात करे और मेरी फ्लाइट का शेड्यूल बदल दे। मुझे अपनी योजना से पहले ही वापस जाना पड़ सकता है।' मैं पूछना चाहता हूँ कि राधा के बारे में क्या? क्या आपकी किसी योजना में वह शामिल है?

जब तुम चले जाओगे तो वह क्या करेगी?

'क्या राधा...' मैं पूछना शुरू करता हूँ।

वह जम्हाई लेता है और खड़ा हो जाता है। रोशनी उसके पीछे है। मैं उसे छाया में देखता हूँ और
मैं आश्चर्य की भावना जानता हूं।

नौ भावों में से केवल अद्भुत या विस्मय ही अचानक होता है। बाकी सभी भावों में एक प्रक्रिया होती है, एक निश्चित समय होता है जो अनुभव से प्रतिक्रिया तक फैला होता है। प्यार या गुस्सा, डर या घृणा... हम अनुभव करते हैं, हम महसूस करते हैं, और फिर हम उस अवस्था में चले जाते हैं। लेकिन आश्चर्य को केवल अनुभव किया जा सकता है।

अद्भुतम आपके दिल में एक सवाल उठाता है, साथ ही यह आपको भर भी देता है: 'क्या यह संभव हो सकता है?' मैं सोचता हूँ कि मैंने इसे क्यों नहीं देखा। मैं उसे

जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि वह कौन है। मैं अपने दिल में महसूस करता हूँ
तेज़ धड़कन। लेकिन मैं उससे कैसे पूछ सकता हूँ? मैं कौन से शब्द इस्तेमाल करूँ?

मैं थका हुआ महसूस करता हूँ। 'क्रिस, अब तुम्हें जाना चाहिए,' मैं कहता हूँ। 'मैं थक गया हूँ। मुझे आराम करने की ज़रूरत है।'

उसकी आँखें अटकलबाज़ी में सिकुड़ जाती हैं। 'कुछ और भी है। मैं तुमसे पूछना चाहता था
'कुछ दिन पहले। क्या आप हेलेन पुलमैन नामक एक अंग्रेज महिला को जानते हैं?'

मुझे लगता है कि मेरी आँखें चौड़ी हो गई हैं। फिर से अद्भुत। 'हेलेन पुलमैन? वह एक चित्रकार है,

Machine Translated by Google

है न?' 'वह मेरी

गॉडमदर है,' वह कहता है। 'मेरी माँ का नाम एंजेला है,' वह कहता है,
मेरा चेहरा खोज रहा है.

अब आश्चर्य निश्चय में बदल गया। मैंने उससे पूछा, 'तुमने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बताई?'

'मुझे लगा कि तुम अपने बारे में बात करने में हिचकिचाओगे।' 'तुमने ऐसा क्यों सोचा?' मैंने पूछा।

वह मेरे बारे में क्या जानता है? 'क्या एंजेला ने कुछ कहा?' वह फिर से मेरे चेहरे को देखता है। 'तुम दोनों दोस्त बनकर अलग नहीं हुए थे, है न? मैंने अपनी माँ से

तुम्हारे बारे में पूछने की कोशिश की, लेकिन वह टालमटोल करती रही। उसने अपनी कहानी में बहुत सारे खालीपन छोड़ दिए।'

मैं अपनी नाक के पुल को रगड़ता हूँ। मुझे फिर से अपने सिर में तेज़ धड़कन महसूस होती है। 'वापस आओ
कल। तब हम बात करेंगे,' मैंने कहा। 'मुझे अब सचमुच आराम करना चाहिए।'

बारिश तेज़ हो रही है। इसकी आवाज़ मेरे घर और सिर में गूंज रही है। तब मुझे एहसास हुआ कि वह मेरे बारे में लिखने से कहीं ज़्यादा कुछ करने के लिए यहाँ आया है। असल में, मुझे आश्चर्य है कि क्या किताब मौजूद है या यह सिर्फ़ एक बहाना है। वह यहाँ गुम हुई कड़ियों को ढूँढ़ने आया है। एंजेला ने उसे क्या बताया है? या उसने उसे क्या नहीं बताया है?

मैं जल्दी से हिसाब लगाता हूँ। अचानक सब कुछ ठीक हो जाता है। उसे लगता है कि मैं उसका पिता हूँ। एक पल के लिए, मुझे बहुत पछतावा हुआ। मैं क्रिस जैसा बेटा चाहता था। लेकिन क्रिस मेरा बेटा नहीं है। मैं उसके पिता को नहीं जानता। हालाँकि, मैं जानता हूँ कि उसमें मेरा कुछ भी नहीं है।

अगर मैं इनकार करूँगी तो वह मुझ पर यकीन नहीं करेगा। इसलिए मैंने तय किया कि मैं उसे उसकी माँ के बारे में सब कुछ बताऊँगी। और इस बार मैं अपनी यादों को नहीं चुनूँगी। मैं उसे बताऊँगी कि जो हुआ वह किस तरह हुआ।

Machine Translated by Google

1970–1971 द क्रूसिबल

Machine Translated by Google

कोमान

मद्रास से लौटने के कुछ दिनों के भीतर ही मेरी ज़िंदगी में एक ढर्रा बन गया। तीन महीने बाद, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कभी दूर ही नहीं गया था। नव-विवाहित जोड़ा मेरे माता-पिता के साथ रहता था। मैं नदी के किनारे अपने छोटे से घर में रहता था। कभी-कभी दूर देश से कोई हवाई डाक आती थी, जो मणि की भलाई की गवाही देती थी, उस समय मैं अपने परिवार से मिलने घर चला जाता था। मैं अपने पिता को एक तरफ़ बुलाकर पत्र देता था। वे इसे चुपचाप पढ़ते, चुपचाप रोते, और परिवार के बाकी सदस्यों से मिलने से पहले अपनी आँखें पोंछते। मैं थोड़ी देर बाद चला जाता। मैं उस घर में रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता था जहाँ मणि का कभी ज़िक्र नहीं होता था।

आशान शराब कम पी रहा था। हमारे बीच का रिश्ता पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत लग रहा था।
फिर एक दिन आशान ने एक पत्र पढ़ते हुए ऊपर देखा और कहा, 'वह वापस आ रही है।' मैंने अपनी किताब से ऊपर देखा और उसके हाथ में एयरमेल फॉर्म देखा।

'कौन वापस आ रहा है?' मैंने पूछा।

'एंजेला। वह दो साल तक मेरी छात्रा थी।' आशान की आँखें विचारमग्न थीं।

'आपका छात्र?' मेरी आँखें चौड़ी हो गईं। 'संस्थान ने कब से अनुमति देना शुरू किया?
क्या महिलाएं कथकली का अध्ययन करती हैं?

'वह पहली है। मुझे लगता है कि अगर महिला विदेशी है तो उन्हें कोई नुकसान नहीं है। साथ ही, उसे एक अल्पकालिक छात्र के रूप में भर्ती किया गया है, न कि पूरे कोर्स के लिए। मुझे यह सब समझ में नहीं आता, लेकिन वह अपने शोध प्रबंध के हिस्से के रूप में कुछ शोध कर रही है। वह पहले भी दो बार यहाँ आ चुकी है।' 'वह कैसी है?' मैं उत्सुक था। एक मदामा ने कथकली के बारे में क्या सोचा होगा?

'बिलकुल भी बुरा नहीं है।' आशान मुस्कुराई। 'उसकी लय की समझ बहुत बढ़िया है। वह बहुत मेहनत करती है और उसकी मलयालम भी ठीक है। लेकिन वह अपने सवालों से मुझे थका देती है। वह बहुत मेहनती है।' मैं मुस्कुराई। आशान के स्वर में मनोरंजन की भावना थी।

बूढ़े आदमी ने पत्र को सावधानी से मोड़ा। 'जब उसे पता चलेगा कि मैं रिटायर होने वाला हूँ तो वह निराश हो जाएगी।' 'फिर वह क्या करेगी?' मैं खड़ा हो गया। थोड़ी देर में दोपहर की कक्षाएँ शुरू होने वाली थीं।

'मैं सुझाव दूंगा कि आप उसे सिखाएं। वह तीसरे साल की कक्षा के लिए तैयार है।' 'मैं!' मैं भयभीत था। 'मैं एक महिला को कथकली नहीं सिखा सकता।'

Machine Translated by Google

आशान ने भौंहें सिकोड़ लीं। 'ऐसा मत कहो! वह अच्छी है, और बहुत समर्पित है। आपको बस यही सोचना है। इसके अलावा, आप थोड़ी-बहुत अंग्रेजी बोल लेते हैं, है न? इसलिए वह अपने सवालों से आपको थका सकती है।' 'सुंदरन भी ऐसा ही करती है,' मैंने कहा।

'आह, सुंदरन।' आशान की मुस्कान में व्यंग्य की झलक थी। 'सुंदरन। हमारे मिस्टर हैंडसम। उसे उसके पास भेजना भेड़ को वध के लिए ले जाने जैसा होगा।

वह उसे एक छात्रा के रूप में नहीं बल्कि एक अवसर के रूप में देखेंगे। मैं इसकी अनुमति नहीं दे सकता।'

मैंने नज़रें फेर लीं। मद्रास में मेरे दो विदेशी छात्र थे। उन्हें पढ़ाना दिलचस्प था। यह महिला भी वैसी ही होगी। मुझे बस उसे लिंगविहीन प्राणी के रूप में देखना याद रखना था।

वह उस दिन आई जिस दिन बारिश हुई थी। एक दिन पहले, सुबह-सुबह कोयल का गाना हवा में गूंज रहा था, जो शांति को चीर रहा था। पसीने की धारें मेरे शरीर से बह रही थीं और मुझे लगा कि अगर मौसम नहीं बदला, तो मैं शांति से दम तोड़ दूँगा। घर के पास का गहरा तालाब भी हरे कांच की चादर जैसा था। मैंने पानी पिया और पंखा झला। मैंने अनगिनत बार स्नान किया और रात को मैं अपनी छाती पर गीला तौलिया लपेटकर सो गया। गर्मी लगातार बनी हुई थी और दिन और रात दोनों ही सुस्ती से पीड़ित थे।

प्रिय दिवंगत पवन, कृपया घर आ जाओ, सब कुछ माफ़ है, मैंने फुसफुसाते हुए नदी के किनारे खड़े होकर कहा। कृपया वापस आ जाओ और मैं कभी भी इस बारे में शिकायत नहीं करूँगा कि तुम छत पर लगी टाइलों को कैसे हिलाते हो या नारियल के पेड़ों को उन्मत्त नृत्य में कैसे तड़पते हो। मुझे विचारों और अंगों की इस कठोर मृत्यु से मुक्त करो। मैं सोच नहीं सकता। मैं साँस नहीं ले सकता। अगर मेरा मन मेरी हरकतों में शामिल नहीं हो सकता तो मैं वेश धारण करने वाले के रूप में किस काम का?

फिर यह शुरू हुआ.

उदासीन हवा चल पड़ी। बादल उमड़ पड़े और तट की ओर बढ़ गए। आशा नदी के तल से बाहर निकल आई। पत्तियाँ सरसराने लगीं और आसमान में अंधेरा छा गया। बिजली चमकने लगी और गरजने लगी। गर्मी की पट्टियाँ ढीली पड़ गईं और अपनी पहली बूंदों के साथ बारिश ने निष्क्रिय महीने को तोड़ दिया।

धरती बारिश से ऐसे तृप्त हुई जैसे कोई लालची बच्चा प्रजनन क्षमता का कोलोस्ट्रम खा रहा हो। धरती को और भी ज़्यादा, और भी ज़्यादा, पतली, पानी वाली बारिश की तलब लगी। फिर, कुछ पल के लिए तृप्त होकर, उसने डकार ली। एक गहरी, भीगी हुई खुशबू। नम धरती धूप में तपते दिनों और उखड़ती हुई सतहों की यादों से लदी हुई। बारिश की नमी। मुक्ति की नमी।

मेरी त्वचा पर ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी देवता ने हज़ारों बाण छोड़े हों। एक झुनझुनी, बजने वाली, गाने वाली आवाज़ जिसने मेरे रोम-छिद्रों को छेद दिया और मेरी इंद्रियों को झनझना दिया। या शायद यह बारिश नहीं थी। यह उसकी पहली झलक थी।

वो मेरे लिए सावन की शुरुआत थी, उसकी खुशबू थी

Machine Translated by Google

अंधेरी, गीली धरती की खुशबू।

'क्या तुमने उसे देखा है?' सुंदरन ने पूछा।

'कौन?' मैंने ऐसा नाटक किया जैसे मुझे समझ में नहीं आया।

एक छात्र उसके पैरों के पास बैठा था। एक मेंढक। मैं भी कभी ऐसा ही था, मैंने सोचा। मानसून और कर्किटकम के महीने के आगमन के साथ, आधिकारिक मालिश सत्र, उझिचिल, शुरू हो गया था। नृत्य की कठोरता के लिए शरीर को तैयार करने के लिए नब्बे दिनों की मालिश।

मुझे याद आया कि कैसे पैरों ने मेरी सांसों को कुचला और मेरे शरीर को चोट पहुंचाई थी, जबकि उस पर तेल की परत जमी हुई थी। आशान के साथ ही मुझे पता चला कि दबाव हमेशा क्रूर नहीं होना चाहिए।

'कौन?' सुंदरन ने मज़ाक में कहा। 'मदामा। आशान की नई छात्रा। क्या तुमने उसे देखा है?' मैंने अपना पैर छात्रा की पीठ पर फिराया। ऊपर-नीचे, फिर पीठ के निचले हिस्से पर। 'अगर

तुम्हारा मतलब देखना है, तो मैंने उसे देखा था। वह ऑफ़िस रूम के बाहर आशान का इंतज़ार कर रही थी। अगर तुम्हारा मतलब मिलना है, तो नहीं, मैंने नहीं देखा। मैं वैसे भी क्यों देखूँगा?' मैंने लड़के की पीठ से नज़रें हटाए बिना कहा। 'मैं आशान के सभी छात्रों को नहीं जानता।' सुंदरन ने नाक सिकोड़ी। वह मेरी बात पर यकीन करने को तैयार नहीं था। वह जानता था कि एक दिन आशान को हम दोनों में से किसी एक से उसे लेने के लिए कहना ही पड़ेगा। उसने मेरी तरफ़ एक ज़हरीली नज़र डाली। मैंने देखा कि उसकी कनपटी पर एक नस फड़क रही थी। मैंने देखा कि वह अपने

पैर के पास लेटी छात्रा को देख रहा था।

लड़का पीठ के बल लेट गया। सुंदरन ने उसके पैरों को बेरहमी से अलग किया। उसने अपना पैर लड़के की जांघ पर दबाया। लड़का दर्द से चिल्ला उठा।

मैंने ऊपर देखा। 'सावधान,' मैंने बड़बड़ाया। 'तुम उसे अपंग कर दोगे।' सुंदरन ने फिर से नाक भौं

सिकोड़ी। 'तुम्हें और मुझे इससे भी बुरा सहना पड़ा है और हम दोनों में से कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझे परेशान करे।
अपंग। वैसे भी, वह मेरा छात्र है और मैं उसे अपनी इच्छानुसार मालिश दूँगा।'

मानो लड़के और उसकी मांसपेशियों पर अपना आधिपत्य जताने के लिए सुंदरन के पैरों ने उसे बुरी तरह रौंद दिया। मैंने अपनी आँखें फेर लीं। बीच में हस्तक्षेप करने से बच्चे को और भी अधिक पीड़ा होगी।

बाद में मैं संस्थान के बाहर चाय की दुकान पर गया। मैंने वहाँ सुंदरन को देखा। मैं उसके पास जाकर बैठ गया। 'क्या बात है?' मैंने पूछा। 'तुम नाराज़ क्यों हो?
क्या तुमने देखा कि लड़का लंगड़ा रहा है?' 'शायद आज सुबह मैं बहुत कठोर

हो गया था। लेकिन मुझे अपना गुस्सा निकालना था। मैं इसे अपने अंदर दबाकर नहीं रख सकता था। मेरे पास घर से पैसे की मांग करने वाला एक पत्र था। चाहे मैं कितना भी भेजूं, यह कभी भी पर्याप्त नहीं होता। और जब तक मैं यहाँ फंसा हुआ हूँ, कुछ भी नहीं बदलेगा। काश मैं बाहर निकलने का कोई रास्ता खोज पाता!' सुंदरन ने कहा।

Machine Translated by Google

बोलते हुए उसने एक कागज़ का टुकड़ा उठाया। अचानक उसने अपनी आँखें उठाईं और कहा, 'हम सभी को आपके जैसे अमीर पिता या आशान जैसा गॉडफ़ादर पाने का सौभाग्य नहीं मिलता। लेकिन चलो इस बारे में बात नहीं करते। मैं नलचरितम के पहले दिन, दो हफ़्ते बाद दमयंती बनूँगा।' उसने वेषम के बारे में बात करना शुरू किया।

मैंने बातचीत को आगे नहीं बढ़ाया; मैं देख सकता था कि सुंदरन अपनी कड़वाहट को छिपाने की कोशिश कर रहा था। मैंने सिर हिलाया और सुनने लगा। मैं आशान से सुंदरन के बारे में बात करूँगा। शायद यह सबसे अच्छा होगा कि मैडम सुंदरन के साथ पढ़ाई करें। और फिर भी, मैंने फिर से चुभती हुई बारिश, गीली मिट्टी की खुशबू, ठंडी हवा को महसूस किया, और आशान की योजनाओं को विफल करने के लिए एक अजीब अनिच्छा महसूस की।

उसी शाम निमंत्रण आया। आयोजकों ने कहा, 'हम पिछले कुछ दिनों से आपसे संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं। क्या मैं नाला बजाऊंगा?'

मैं सहमत हो गया। सुंदरन और मैं एक दूसरे के लिए बहुत अच्छे थे। सुंदरन के सुंदर चेहरे और बड़ी आँखों ने उसे महिला भूमिकाओं की ओर आकर्षित किया था और हमारे छात्र जीवन में हमें हमेशा प्रेमी के रूप में ही लिया जाता था। हमारे बीच एक ऐसी केमिस्ट्री थी जिसने कहानी को और बेहतर बनाया। इसके अलावा, यह सुंदरन को खुश भी करता था।
नाटक का पहला दिन दमयंती और नल के बीच अच्छा संतुलन वाला रहा।

नल। निषाद के राजा, जो राजकुमारी दमयंती की सुंदरता के बारे में सुनकर उससे प्रेम करने लगे थे। अपने राज्य में, दमयंती भी नल के लिए तरसती थी; दोनों ने एक दूसरे को देखा तक नहीं था, लेकिन उनकी आत्माएं पहले ही एक दूसरे से मिल चुकी थीं। तब नल ने दमयंती के पास एक दूत भेजा - एक सुंदर सुनहरा हंस। उसने हंस से विनती की कि वह पता लगाए कि क्या मैं उम्मीद कर सकता हूँ। हंस दमयंती के पास प्रेम और तड़प का संदेश लेकर आया।

वह शरमा गई और अपनी भावनाओं को स्वीकार किया। मैं और क्या कह सकती हूँ? एक सभ्य महिला को अपनी भावनाओं का दिखावा करना शोभा नहीं देता, उसने कहा। और फिर भी, मेरे प्यारे भाई हंस, मैं बिना किसी शर्म या डर के नल के प्रति अपने प्यार का इज़हार करती हूँ।

उसने हंस से नल का चित्र बनवाया और उसे अपने पास दबा लिया।

उसने अपना चेहरा अपनी छाती से लगा लिया और हमेशा के लिए अपने दिल पर अपना चेहरा अंकित कर लिया।

तब दमयंती के पिता ने उसके स्वयंवर की घोषणा की। देवताओं इंद्र, अग्नि, यम और वरुण ने भी अन्य शाही आमंत्रितों के साथ भाग लेने का फैसला किया।
राजा, सम्राट, राजकुमार: दमयंती अपने पति को उन्हीं में से चुनेगी। नल भी दमयंती के प्रेम के प्रति आश्वस्त होकर चल पड़ा।

रास्ते में नल चारों देवताओं से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और उनकी कृपादृष्टि के प्रतीक स्वरूप उन्होंने चारों देवताओं को अपने पास बुला लिया।

उन्होंने उन्हें प्रणाम किया और कहा, 'आपकी इच्छा ही मेरी आज्ञा है।'

देवताओं ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराकर कहा, 'ऐसी स्थिति में, हम चाहेंगे कि आप दमयंती के पास जाएं और उससे कहें कि वह हममें से किसी एक को चुन ले।'

Machine Translated by Google

नल ने वचन दे दिया था कि अब उसके पास इस स्थिति से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।
उसने विनती की, 'मैं उसे कैसे देख सकता हूँ? वह अपने कक्ष में होगी।'

देवता मुस्कुराए। 'कोई बात नहीं। हम तुम्हें अदृश्य होना सिखाएँगे और फिर तुम उसके कक्ष में प्रवेश कर सकते हो और उसे हमारी दिल की इच्छा बता सकते हो। लेकिन याद रखना, मंत्र सिर्फ़ एक बार ही काम करेगा।'

नल ने वैसा ही किया जैसा उनसे कहा गया था। हालाँकि, दमयंती, जो नहीं जानती थी कि नल ही देवताओं के दूत के रूप में आया था, ने उसे यह कहकर वापस भेज दिया कि उसका मन बना हुआ है। इसलिए वह वापस आया और कहा कि वह किसी और से प्यार करती है। 'शायद आपको किसी दूसरे दूत को भेजना चाहिए जिसकी अनुनय-विनय की कला बेहतर हो,' उसने सलाह दी।

देवताओं ने मुस्कुराकर अपनी दिव्य शक्तियों से समझ लिया था कि दमयन्ती नल से प्रेम करती है। 'क्या ऐसा है?'
उन्होंने पूछा।
नाला ने सिर हिलाया.

उन्होंने कहा, 'हम कोई रास्ता निकाल लेंगे।' फिर उन्होंने कहा, 'कल हम बड़े हॉल में जाएंगे और हम में से हर एक बिल्कुल तुम्हारे जैसा दिखेगा। लेकिन तुम्हें उसे शब्दों या हाव-भाव से यह नहीं बताना है कि हममें से कौन वास्तव में तुम हो।'

इसलिए चारों देवता और नल उस विशाल हॉल में पहुंचे जहां स्वयंवर हो रहा था और उन्हें निषाद का राजा नल घोषित किया गया। जब उन्होंने पांच पुरुषों को देखा, जो एक दूसरे के हूबहू प्रतिरूप थे, तो सभी लोग आश्चर्य से देखने लगे।

दमयंती की आँखें भी बड़ी हो गईं। वह बिना कुछ कहे मुस्कुरा दी।

कुछ ही देर में दमयंती माला लेकर हॉल में चली गई। वह सभी राजाओं को पीछे छोड़कर सीधे पाँचों नलों की ओर चली गई। सभी ने अपनी साँस रोक ली। असली नल कौन था? और क्या दमयंती उसे पहचान पाएगी?

दमयंती ने बिना किसी हिचकिचाहट के पांचों पुरुषों की ओर देखा और असली नल को वरमाला पहना दी। देवताओं ने अपने असली रूप धारण कर लिए और यम ने पूछा, 'आपने असली नल को कैसे पहचाना?'

दमयंती ने मुस्कुराते हुए कहा, 'नल के प्रति मेरा प्रेम दृढ़ और सच्चा है और अगर कमरे में सौ हमशक्ल भी हों तो भी मैं उसे पहचान लूंगी। इसके अलावा, नल एक मनुष्य है और मैं जानती थी कि बाकी चार देवता हैं। मैंने देखा कि नल के पैर ज़मीन को छू रहे थे और उसके शरीर पर छाया पड़ रही थी और उसकी आँखें झपक रही थीं।

और मुझे पूरा यकीन था कि मेरा दिल मुझे मेरे सपनों के आदमी तक ले गया है।'

चारों देवताओं ने मुस्कुराकर दंपत्ति को आशीर्वाद दिया और चले गए। और इस प्रकार नल और
दमयंती एक हो गए।

यह नलचरितम् का प्रथम दिन है और यही वह नल है जो मुझे बनना था।

यह सोचकर मैं फिर मुस्कुराया।

बाद में आशान ने कहा कि वह वहां आएगा और एंजेला को भी अपने साथ ले जाएगा।
'उसे आप और सुंदरन दोनों का प्रदर्शन देखने दीजिए और वह चुन सकती है कि वह किसे चुनना चाहती है।

Machine Translated by Google

मैं उसके साथ पढ़ना चाहता

हूँ।' मुझे लगा कि मेरा मुँह सूख गया है। वह मुझे रोमांटिक नाला के रूप में एक वेशम में देखती थी।
नाला की तरह, जो सम्मान की खातिर चुप रहने को बाध्य था, भले ही उसका प्यार दांव पर लगा हो। नाला की तरह,
जिसे सब कुछ किस्मत पर छोड़ना पड़ा। वह मेरे बारे में क्या सोचेगी? 'क्या वह कहानी जानती है?' मैंने पूछा।

आशान मुस्कुराई, 'वह यह बात बहुत अच्छी तरह जानती है!'

Machine Translated by Google

एंजेला

'यह एंजेला है।' आशान मुस्कुराया.

मैंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और कहा, 'अंग-गा-ला। मेरे पिता मुझे इसी नाम से पुकारते हैं। वह जर्मन हैं।' मैंने कोमन की आँखों में भावनाओं का मिश्रण देखा।

आश्चर्य, जिज्ञासा, उत्साह।

हमारी आँखें मिलीं।

एंजेला, उसने जर्मन अंदाज़ में दोहराया। यह ऐसा नाम लग रहा था जिसे वह जानता तो था पर जानता नहीं था।

'क्या आप जर्मन हैं?' उसने पूछा और मैंने देखा कि उसने लगभग अपनी जीभ काट ली थी।
बस इतना कहा कि मेरे पिता जर्मन थे।

मैं मुस्कुराया। मैं उसे किसी भी तरह की शर्मिंदगी नहीं देना चाहता था। जब मैं उसके सामने था, तो मुझे पहले से ही कुछ विस्मय जैसा महसूस हो रहा था। 'मेरे पिता थे। लेकिन मेरी माँ स्पेनिश थी। और मैं इंग्लैंड में पला-बढ़ा हूँ। तो आप मुझे क्या समझते हैं?'

वह शरमा गया।

मुझे पश्चाताप हुआ। मैंने अपनी गलती सुधारने के लिए कहा, 'उसने मुझसे तुम्हारे बारे में बात की है। क्या तुम्हें पता है कि आशान को तुम पर कितना गर्व है?' फिर से मुझे लगा कि मेरी आवाज़ में कुछ

और ही गूंज रहा है। मैंने सोचा कि यह अजीब सी गूंज मुझे बाद में पता चलेगी। अभी के लिए मैं फिर से मुस्कुराया।

'और मुझे खुशी है कि तुम मेरी आशा बनोगी,' मैंने कहा।

उसने बूढ़े आदमी की ओर सवालिया निगाहों से देखा। आशान ने सिर हिलाया। 'मेरा समय पूरा हो गया है; मैं दो सप्ताह में रिटायर हो जाऊंगा। तुम इतने हैरान क्यों दिख रहे हो? मैंने तुमसे कहा था, है न?' 'लेकिन सुंदरन,' कोमन ने कहा।

'उसने आपसे शिक्षा लेना चुना,' आशान ने कहा। 'उसे अच्छे से पढ़ाओ। वह अच्छी है।' हमारी आँखें मिलीं। मेरी आँखें नीली और उसकी आँखें हल्के

भूरे रंग की थीं। समुद्र और रेत। हमारे बीच उत्साह की एक लहर बह रही थी।

कोमन ने नज़र हटाई।

Machine Translated by Google

कोमान

बारिश हुई। बारिश की चादरें हमें बाकी दुनिया से अलग कर रही थीं। पानी की धुंध ने लोगों और आवाज़ को तितर-बितर कर दिया, रंग और रोशनी को अपने में कैद कर लिया और वर्जित इच्छाओं को दूर कर दिया।

जब बारिश रुकी और चारों ओर शांति छा गई, केवल छज्जों पर पानी की बूंदे और पत्तों से टपकती हुई बूंदें ही छलक रही थीं, तो मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैंने फिर से पाप किया है। अलग-अलग होने के बावजूद, एक निश्चित स्थान पर, मैं शिक्षक और वह शिष्य, दूरी कम हो गई थी और हम एक-दूसरे से जुड़ गए थे, अंग और आत्माएं क्षण भर के लिए छू रही थीं और फिर भी दो खगोलीय पिंडों के टकराने का प्रभाव महसूस हो रहा था। एक शिक्षक और छात्र के बीच सामंजस्य। हालाँकि, मैं जानता था कि इसमें सामंजस्य से कहीं अधिक कुछ था। मुझे डर था कि वह भी इसे जानती होगी। मैं उसके पसीने में इसकी गंध महसूस कर सकता था। क्या वह मेरे पसीने में महसूस करती होगी? हमारे शरीर दूरी को लांघने के लिए तरस रहे थे। यह वासना है, मैंने अपनी आवारा इंद्रियों को चेताया। एक आशान अपने छात्र के लिए वासना नहीं कर सकता। एक आशान को ऐसा नहीं करना चाहिए।

दोपहर में एंजेला थ्योरी क्लास के लिए वापस आई। उसकी आँखें नीली थीं और उसके बाल गहरे भूरे रंग के थे। उसके होंठ के ऊपर, उसके बाएं गाल पर एक तिल था। ताज़ा नहाए हुए, उसके गीले बाल कमर तक गिरे हुए, वह मेरे सामने क्रॉस-लेग करके बैठी थी। उसकी स्कर्ट कमल की पंखुड़ियों की तरह उसके चारों ओर घूम रही थी। मुझे लगा कि वह जानी-पहचानी अजनबी है।

सुंदरन ने टिप्पणी की, 'मदामा एक मलयाली लड़की बनती जा रही है।'

मैंने उसे सुंदरन की नज़र से देखा। वह सही था। एंजेला अपनी नई दुनिया की पोशाक और तौर-तरीके अपना रही थी। उसने मलयाली महिलाओं की तरह बाल रखे थे, कानों के पीछे से दो लटें खींची हुई थीं और एक पतली चोटी में बंधी हुई थीं। इससे बाल उसके चेहरे से दूर रहते थे, उसके कानों की वक्रता और गले की रेखा उजागर होती थी। उसकी भौंहों के बीच एक छोटा सा लाल बिंदु था। उसकी आँखों में काजल लगा हुआ था और पैरों में पायल थी। जब वह कलारी की ओर चली, तो उसके लंबे पैरों की चाल अचानक भारतीय महिला के फुर्तीले कदमों में बदल गई। जब वह लड़कों के साथ बैठी, तो उसे अपनी आँखें नीची रखना याद रहा। मैं मंत्रमुग्ध हूँ, मैंने सोचा। जब मैं उसे देखता हूँ तो मेरा दिल इतना नरम हो जाता है, यह क्या है?

मैंने खुद को ऐसा करने से रोकने की कोशिश की, लेकिन मेरी नज़रें उस पर टिकी रहीं, जब वह पुरुषों वाला डांस कर रही थी। मैंने देखा कि कैसे इससे उसके स्तनों का झुकाव और उसके नितंबों का झुकाव बढ़ गया। फिर से, अंदर से नरमी। यह कैसे हो सकता है?

अब मैंने उसे नवरस का प्रदर्शन करते देखा, यह सिद्धांत सत्र की प्रारंभिक दिनचर्या का हिस्सा है। वह मेरी छात्रा है और मुझे यह याद रखना चाहिए, लेकिन कैसे

Machine Translated by Google

मैं उसकी ऊर्जा का आनंद नहीं ले सकता? वह जो कर रही है, उससे प्यार करती है। मैं उस प्यार से प्यार कैसे न करूं?

'कोमन आशान,' एंजेला की आवाज़ ने मेरे पागल विचारों को तोड़ दिया। 'मुझे पता है कि यह मूर्खतापूर्ण लगेगा, लेकिन मैंने आशान से पूछने की हिम्मत नहीं की।' उसने अंग्रेजी में बात की।

बाकी लड़के, जो अभी उसके बैच के साथी थे, चुप हो गए। उनके चेहरों पर उनकी उलझन साफ झलक रही थी। उन्हें सिर्फ़ एक शब्द समझ आया था। आशान। उन्हें भी एहसास हो गया कि वह जिस आशान की बात कर रही थी, वह मैं नहीं था। "आ" का लंबा स्वर श्रद्धा का विस्मय दर्शाता था।

मैं मुस्कुराया। मैंने मलयालम में पूछा, 'एन्था?' क्या?
उनमें से एक लड़का अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं सका। 'आशान, मैडम क्या पूछ रही हैं?' उसने मलयालम में पूछा।

'अपना काम करो,' मैंने झल्लाकर कहा।
'यह मैडम के सवालों में से एक और सवाल है। क्या तुम्हें याद नहीं कि वह कैसे
पिछले साल आशान को क्या थका दिया था?' सन्नाटे में फुसफुसाहट और तेज हो गई।
मैं कराह उठा। क्या लड़के को नहीं पता था कि वह मलयालम समझती है? एंजेला ने अपनी मुस्कान छिपा ली। उसने अपने होंठ अंदर खींच लिए। मुझे लगा कि मेरे होंठों पर मुस्कान की शुरुआत हो गई है। हमारी आँखें मिलीं और हम जोर से हँस पड़े।

लड़के घूरकर देखने लगे। उन्होंने मुझे पहले कभी हँसते नहीं देखा था।
'क्या बात है?' मैंने अपने चेहरे से हंसी पोंछते हुए पूछा। मैंने खुद को कड़ी फटकार लगाई कि ऐसा नहीं हो सकता।

एंजेला ने अपनी हथेलियाँ बगल में ज़मीन पर रख दीं।
पैरों का इस्तेमाल? इस तरह? पैरों के सपाट हिस्से के बजाय?'
'वह क्या जानना चाहती है...' मैंने उसके सवाल का मलयालम में अनुवाद किया, जिससे उसका सवाल एक सबक बन गया।
'कोई?' लड़कों ने मेरे कान के पीछे एक बिंदु पर घूर कर देखा। मैंने
आह भरी। क्या वाकई मेरे समय से मानक इतने गिर गए हैं? या फिर लड़कों की दिलचस्पी उतनी नहीं थी?

'अगर हम अपने पैरों को ज़मीन पर सपाट रखें, जैसे कि भरतनाट्यम में, तो इसका प्रभाव बहुत भयानक होगा।' मैं खड़ी हुई और एक स्टेप किया। फिर मैंने अपने पैरों को बगल की तरफ मोड़ लिया। 'कथकली के स्टेप बहुत जोरदार होते हैं। यह एक मर्दाना नृत्य है।
यहां तक कि सबसे धीमी गति से चलने वाली रचना में भी एक अंतर्निहित शक्ति होती है। सोचिए कि इससे आंखों और रीढ़ की हड्डी जैसे महत्वपूर्ण अंगों को कितना नुकसान होगा। जब आप अपने पैरों को बगल की ओर रखते हैं, तो प्रभाव हल्का होता है और यह कदमों को हल्कापन देता है।'
एंजेला ने सिर हिलाया और अपनी किताब की ओर मुड़ी।
बारिश हुई। सवाल बंद नहीं हुए। वह मेरी तरह ही थी। एक गिद्ध, मैं
कथकली की हड्डियों के बीच से कुछ सोचते हुए। कैसे? क्यों? कब?
'कभी-कभी आपको सभी प्रश्नों को भूल जाना चाहिए और अपने मन को भटकने देना चाहिए।

Machine Translated by Google

अपने संदेहों को नज़रअंदाज़ करो और किरदार बन जाओ। अगर तुम अपने मन को हावी होने दोगे, तो तुम एंजेला बन जाओगे जो किरदार नहीं बल्कि किरदार निभा रही है,' मैंने कहा। मैं उन शब्दों को दोहरा रहा था जिनसे आशान ने एक बार मुझे डांटा था। मैंने उसके झुके हुए सिर को देखा। मैं भी कभी उसके जैसा था। क्या यही बात मुझे उसकी ओर खींचती है? जब मैंने उसे देखा, तो मैंने खुद का प्रतिबिंब देखा। क्या यह प्यार था? किसी में अपनी उम्मीदों और सपनों, अपनी आत्मा का प्रतिबिम्ब तलाशना?

मेरा सिर दर्द कर रहा था। मुझे पता था कि मैं दुखी हूँ, लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि मैं कितनी हताशा महसूस कर रहा हूँ।

बारिश हुई, जिससे शाम ढलने लगी। एंजेला उठी और उसने लाइट जलाई। नंगा बल्ब चमक उठा। उसने उसके सोने के स्टड की चमक को पकड़ लिया। मुझे लगा कि मेरी साँस रुक गई है। उसने मेरी दुनिया को रोशन कर दिया है, मैंने सोचा।

कर्किटकम गुजर गया। कन्नी भी गुजर गई। एंजेला को जानने के दो महीने हो गए, और फिर भी मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता, मैंने सोचा। वह एक मुकुट है जिसे मैं वेशम के हिस्से के रूप में पहनता हूँ, कीमती और पवित्र, अपरिवर्तनीय और, अपनी सुंदरता के बावजूद, एक बोझ। इस मुकुट का वजन मेरी गर्दन तोड़ देगा। हमारे रिश्ते की पवित्रता की मांग है कि मैं उसे दूर रखूँ, लेकिन मैं खुद को और कितना रोक सकता हूँ?

आशान ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया, मैं हर बार खुद से पूछती थी। और अगर
वह जानता था कि वह क्रोधित हो जाएगा। मैंने आह भरी।

फिर मैं चौंककर उठ बैठी। आशान कहाँ था? लगभग दो महीने हो गए थे उसे देखे हुए। मैं हर बार खुद से कहती कि मुझे उसके घर जाकर मिलना चाहिए। लेकिन मेरी दिनचर्या की गति के कारण मेरे पास समय ही नहीं बचता था।

इस सप्ताहांत मैं उसके घर जाऊँगा। वह शायद अकेला था...और
नशे में। मुझे लगा कि अपराध बोध मेरी जीभ पर हावी हो गया है। कड़वा, तीखा अपराध बोध।

पहली बार मुझे आशान की पीड़ा समझ में आई। वेषम के बिना कथकली नर्तकी का कोई स्थान नहीं था।

बाद में, और जब तक मैं जीवित रही, मैं उसे छोड़ने के लिए खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगी। 'यह तुम्हारी गलती नहीं है,' उसने मुझसे बार-बार कहा। 'यह उपेक्षा की वजह से नहीं हुआ।
वह जानता था। क्या तुम नहीं देखते? वह जानता था कि वह फिर कभी नहीं नाचेगा।'

'लेकिन अगर मैं वहां होता, तो मैं उससे बात करके उसे इससे बाहर निकाल सकता था,' मैंने कहा।

'क्या तुम उससे कोई परफॉरमेंस करवा सकते थे? अगर कोई तुम्हारी बात सुनने को तैयार भी होता और उसे वेशम बजाने का जोखिम भी उठाता, तो क्या तुम्हें लगता है कि उसका स्वाभिमान ऐसा करने की इजाजत देता? ऐसा मत करो, कोमन। खुद को दोष मत दो। उसे जाने दो। यह दुखद है, लेकिन तुम्हें उसके फैसले का सम्मान करना चाहिए।' एंजेला ने अपना हाथ मेरी बांह पर रखा।

मुझे एहसास हुआ कि पहली बार उसने मुझे नाम से बुलाया था, आशान से नहीं।

Machine Translated by Google

मैंने उसका हाथ अपने हाथ से ढक लिया। मुझे किसी से लिपटने की ज़रूरत महसूस हुई। मैं अपना गाल उसके सीने से लगाकर रोना चाहता था। हर बार जब मैं अपनी आँखें बंद करता, तो उस अँधेरे पर्दे पर वह छवि उभर आती- आशान एक बीम से लटकी हुई।

मैं क्लास के बीच में था जब पेटीकारन गोपी मुझे ढूंढते हुए आई।
गोपी ने बताया, "आशान के गांव का एक आदमी यहां रहता है। आज सुबह उसकी मौत हो गई।"

उसकी आँखें भर आईं। पेटीकारन और आशान एक दूसरे को बहुत समय से जानते थे। गोपी ने आशान को कई किरदारों में बदल दिया था। शायद वह आशान के चेहरे पर मौजूद हर मस्से और झुर्री को पहचानता था।

मुझे लगा कि मेरे माथे पर सीसे जैसा भार पड़ गया है। 'क्या हुआ?' लड़के और एंजेला कलशम के बीच में
ही रुक गए। मैंने उन पर गुस्से से हमला किया। 'तुम्हें रुकने के लिए किसने कहा? आगे बढ़ो, सीक्वेंस खत्म करो और फिर उत्तरस्वयंवरम् का तीसरा दृश्य- गौरी, गौरी...

मुझे अब जाना है। मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम
ऐसे ही चलते रहो जैसे मैं यहाँ हूँ। क्या तुम समझ रहे हो?' गोपी और मैं ऑफिस रूम की ओर चल
दिए। 'मैं उससे मिलने जा रहा हूँ,' मैंने कहा।
'क्या कोई और आएगा?'
गोपी ने सिर हिलाया। 'प्रधानाचार्य ने टैक्सी बुलाई है। कुछ और लोग भी आ रहे हैं। उस आदमी ने कहा कि पंचायत अध्यक्ष पूरी बात को दबाने की कोशिश कर रहा है। वह शराबी था, लेकिन हर कोई उसका सम्मान करता था। जब वह नशे में था, तो उसके जैसा कोई नहीं था और कभी नहीं होगा...'

मैं बीच में ही रुक गया। 'क्या मतलब है, चुप हो जाओ?' गोपी ने दूसरी तरफ देखा। 'उन्होंने
उसे अपने घर में एक बीम से लटका हुआ पाया।
नौकरानी ने उसे आज सुबह ही पाया था।' 'लेकिन कैसे? क्या उसके
परिवार में कोई और नहीं था?' 'कौन सा परिवार? उसकी पत्नी कुछ साल पहले मर गई थी
और उनके कोई बच्चे नहीं थे,' गोपी
कहा. 'क्या तुम्हें पता नहीं था?'
मुझे लगा कि अपराधबोध मुझ पर मुट्ठियाँ चला रहा है। मैंने आशान पर अपनी चिंताओं का बोझ डाल दिया था, वास्तविक और काल्पनिक। अपने परिवार के साथ अपने रिश्ते, अपने सपने, चरित्रों और व्याख्याओं के बारे में अपनी अटकलें, लेकिन मैंने आशान से कभी नहीं पूछा कि क्या उसके पास भी कोई राक्षस है, जिसे मैं कम करने में मदद कर सकती थी। मैं खुद में इतनी उलझी हुई थी। अगर मुझे पता होता, तो मैं उसे अपने घर ले आती और उसकी देखभाल करती। लेकिन आशान को दान नहीं चाहिए था। वह अपनी गरिमा नहीं खोना चाहता था। वह बार-बार यही कहता था कि बिना वेशम के वेशकारण से मर जाना बेहतर है। और आशान के पास वेशम नहीं बचा था। मंच पर या जीवन में।

मैंने दूर के भतीजे को चिता में आग लगाते देखा। लपटें उछलीं और जल उठीं।

Machine Translated by Google

मैंने पूछा, आशान, अब तुम्हें शांति मिल रही है?

लपटें जवाब में चिल्लाने लगीं, फुफकारने लगीं और थूकने लगीं। हो सकता है कि आशान मुझे जवाब दे रही हो।

नदी के किनारे अपने घर में, मैं एक पश्चाताप महसूस कर रहा था जिसने मेरी आत्मा को चीर दिया। चाहे मैंने आशान की मौत को कितना भी तर्कसंगत बनाने की कोशिश की, लेकिन शोक न करना मुश्किल था। मैं नदी की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर बैठ गया और रोया।

Machine Translated by Google

एंजेला

मैंने उसे वहाँ पाया। मैंने उसकी ओर देखा। उसे मेरी उपस्थिति का अहसास भी नहीं था, उसका अकेलापन इतना पूर्ण था। मैं उसे अपनी बाहों में लेना चाहती थी, उसे दिलासा देना चाहती थी, उसे अपने सीने से लगाना चाहती थी और उसके माथे को सहलाना चाहती थी। मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा।

मेरे स्पर्श से वह अचानक मुड़ा। उसकी आँखें मेरी तलाश में थीं, मुझसे विनती कर रही थीं कि मैं
'अगर मुझे पता होता...' उसने अपनी पीड़ा को समझाने की कोशिश करते हुए कहा।

मैंने कहा, 'अपने आप को दोष मत दो।'

मैं सीढ़ी पर उसके पास बैठ गया।

'रिल्के नामक कवि की एक कविता है जिसका नाम है "फाइनल एक्ट"। अपरिचित भाषा में लिखे गए ये शब्द उसे
शांति प्रदान करते प्रतीत हुए।
वह मेरी ओर झुका और पूछा, 'इसका क्या मतलब है?' 'मृत्यु बड़ी है।

हम हँसते हुए मुँह वाले प्राणी हैं।

जब हम सोचते हैं कि हम जीवन के मध्य में हैं, तो मृत्यु हमारे मध्य में चिल्लाने
का साहस करती है।' वह अंधेरे में
मुस्कुराया।

उसने मेरे चेहरे की तरफ देखा। 'तुम्हें कैसे पता चला कि मैं कहाँ रहता हूँ?' 'मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ
जानता हूँ,' मैंने कहा। मैं उसे कैसे बता सकता था कि मैं उसके बारे में जानकारी इकट्ठा कर रहा था? 'आशान ने मुझे बताया।' 'वह इसकी योजना बना रहा था। उसने तुम्हें मुझे दिया।' 'कोई भी मुझे तुम्हें नहीं दे सकता। मैं कोई पार्सल नहीं हूँ। मैंने तुम्हें चुना है,
याद है?' 'मुझे पता है। लेकिन वह जानता था कि जब वह चला जाएगा, तो मुझे
एक डायवर्सन की आवश्यकता होगी।' 'मुझे यह सोचना पसंद नहीं है कि मैं केवल एक डायवर्सन हूँ। लेकिन यह सच है। आशान एक था

बुद्धिमान आदमी।' मैंने अलविदा की अंतिम भावना को व्यक्त करने के लिए अपनी आवाज़ को मजबूत किया। 'था,' मैंने कहा।

उसकी आँखों में आँसू आ गए। 'काश मैं अपने आप में इतना उलझा होता,' उसने कहा।

मैंने उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए। 'तुम किसी दूसरे आदमी की ज़िंदगी नहीं जी सकते। यह उसकी ज़िंदगी थी।
मरने का फैसला। आपको इसका सम्मान करना चाहिए।'

Machine Translated by Google

कोमान

कुछ सप्ताह बाद एक और निमंत्रण आया। नलचरितम् का दूसरा दिन।
क्या मैं नाला का किरदार निभाऊंगी? मैंने सहमति जताई। मैंने खुद से कहा कि इससे मेरा ध्यान आशान और एंजेला से हट जाएगा।

प्रदर्शन से दो दिन पहले, एंजेला ने कहा कि वह मुझे नाला का किरदार निभाते हुए देखने आएगी। 'यह देखना दिलचस्प होगा कि आप वीर और रोमांटिक नाला से एक अप्रभावी और पागल आदमी में कैसे बदल जाते हैं।'

मैं शरमा गया। मुझे आत्मग्लानि महसूस हुई। क्यों नहीं यह एक ऐसा वेशम हो सकता है जहाँ मैं एक सच्चा वीर प्राणी बनूँ, न कि यह नश्वर प्राणी जो नियति के कर्मों से खींचा और मरोड़ा जाता है, मैंने खुद से व्यंग्यात्मक ढंग से पूछा। मैं नल बनूँगा जो अपनी इंद्रियों का गुलाम है, उनकी आज्ञा का पालन करता है, सभी अच्छी समझ को दूर रखता है।

पहले ही सीन में मुझे नाला बनने की अनुमति दी गई, एक नेक और संवेदनशील व्यक्ति। अचानक मुझे एहसास हुआ। उस एक सीन में, मैं उसे बता सकता था कि मैं क्या महसूस कर रहा हूँ।

जब नल अपनी दुल्हन के साथ अपने राज्य वापस गया तो उसे अपनी खुशी में एक और बाधा का पता चला: दमयंती की शर्म।

'कुवलयविलोचने बाले, भैमी ... मेरी कमल-नयन सुन्दरी, मेरी प्यारी लड़की, मेरी पत्नी, यहाँ तक पहुँचकर, क्या तुम्हें नहीं लगता कि हम अपनी जवानी और समय बरबाद कर रहे हैं? सोचो हमें किन-किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। सोचो कि हमारे रास्ते में कौन-कौन सी बाधाएँ आईं। अब तुम्हारा शर्मीलापन ही हमारे बीच खड़ा है; तुम्हारा संकोच ही मेरा सबसे बड़ा दुश्मन है। क्या तुम्हें नहीं लगता कि अब समय आ गया है कि तुम उसे दूर कर दो और मुझे अपनी इच्छाएँ पूरी करने दो? बाले' मैंने पीठ के बल लेटते हुए उस दृश्य के बारे में सोचा। गोपी मेरे चेहरे पर काम कर रहा था। वह जानता था कि मेरे विचारों में दखल नहीं देना चाहिए। फिर भी, जब वह चावल के पेस्ट का पैटर्न बना रहा था, तो वह धीमी आवाज़ में बुदबुदाया, 'मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि यहाँ तुम लेटी हो और नल नहीं? क्या गड़बड़ है?' मुझे

बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। मैं क्या सोच रहा था? यहाँ मेरा कोई स्थान नहीं था। मेरे सपने और इच्छाएँ यहाँ नहीं थीं; मेरा तो बस नल के लिए एक शरीर था। मैं नल था और मेरा प्यार दमयंती था, नीली आंखों वाली मदामा नहीं।

और फिर भी, जब संगीत शुरू हुआ और गायकों ने नल के हृदय की लालसा को व्यक्त किया, कुवलयविलोचने बाले, भैमी, तो मुझे पता था कि मैं पीछे हटने में असमर्थ हूँ। कि यह मैं ही हूँ, नल नहीं, जो वहाँ खड़ा होकर उसे लुभाने वाला हूँ।

Machine Translated by Google

सभी कथकली पदमों में से सबसे धीमे श्रृंगार पदम में, मैं अपने इरादे स्पष्ट कर दूंगा। एक बार, मैं दर्शकों को यह सोचने के लिए बहकाने के लिए वेषकरण की शक्ति का उपयोग करूंगा कि मैं नल हूं। केवल वही बेहतर जानती होगी।

Machine Translated by Google

एंजेला

मैं शर्मीला या संकोची नहीं था। न ही मैं सुंदर शब्दों या सुंदर चेहरे से आसानी से अभिभूत हो जाता था। अन्यथा, मैं सुंदरन को अपनी इच्छा का विषय चुनता।

मुझे चिंता थी कि मैं एक क्लिच बनकर रह जाऊँगी। ऐसा पहले भी हो चुका था। एक नीली आँखों वाली विदेशी लड़की एक काली आँखों वाली भारतीय लड़की के प्यार में पड़ गई। मुझे भारत से प्यार था, लेकिन मैं यहाँ खुद को खोजने या अपनी बेचैन आत्मा को रोकने के लिए नहीं आई थी। मैं यहाँ शोध करने और अपना शोध प्रबंध पूरा करने आई थी। मैं किसी भी तरह का रिश्ता नहीं चाहती थी। फिर भी, कोमन के साथ, मुझे लगा कि आकर्षण की धार और भी तेज होती जा रही है।

मैं देख सकता था कि उसे भी मेरे प्रति आकर्षण महसूस हुआ, लेकिन उसने इसका विरोध करने के लिए कड़ी मेहनत की। मैं देख सकता था कि उसे मेरे प्रति अपने आकर्षण को स्वीकार करना गलत लगा। मैं उसका छात्र था।

मुझे नहीं मालूम कि कब मैंने उसे अपना स्वामी मानना बंद कर दिया और उसमें पुरुषत्व देखने लगा।

शायद यह एक बार संस्थान में आयोजित कुचेलावृत्तम की प्रदर्शनी में हुआ था। मैंने प्रदर्शन के हर चरण को रिकॉर्ड करने का फैसला किया था। इसलिए, जब उसका चेहरा बनाया जा रहा था, मैं उसके बगल में बैठा उसे बदलते हुए देख रहा था। बाद में मैं दर्शकों की अगली पंक्ति में बैठा, प्रदर्शन शुरू होने का इंतज़ार कर रहा था और अचानक, वह वहाँ था। कृष्ण।

उसमें मैंने अपनी चाहत को आकार लेते देखा। एक ऐसा आदमी जो चंचल और शरारती था, स्नेही और चिढ़ाने वाला, उदार और रोमांटिक।

मेरा दिल शांत हो गया। उसकी आँखों की लाली ने मेरी नज़र खींची। अचानक उसकी आँखें मेरी आँखों से मिलीं। मैंने उसे अपनी आँखों में चाहत दिखाई।

जब कृष्ण ने गरीब ब्राह्मण का स्वागत करने और उसे सम्मान देने के लिए कुचेलन के चरणों में मुट्ठी भर ठेची के फूल फेंके, तो एक फूल मेरी गोद में गिर गया।

मुझे लगा कि वह ऐसा करना चाहता था। मुझे लगा कि मेरे होंठों पर एक गुप्त मुस्कान आ गई है। मैंने उस सुंदर फूल को अपनी उंगलियों के बीच पकड़ा और उसे किताब के पन्नों के बीच रख दिया। मैंने सोचा कि यह उसकी इच्छा की छाप है।

अगले दिन कक्षा में मैंने कहा, 'मैं आपके सभी प्रदर्शन देखने जा रहा हूँ।
जब तक मैं यहाँ हूँ।' उसने

आश्चर्य से ऊपर देखा।

मैंने कहा, 'इससे मुझे अपने शोध में मदद मिलती है कि मैं जितना संभव हो उतने वेशम देखूं।' 'मुझे पता है कि कथकली के बारे में मेरी समझ नगण्य है, लेकिन जब मैं वेशम देखता हूं, तो मैं इसे समझने के थोड़ा करीब पहुंच जाता हूं।'

Machine Translated by Google

कोमन मुस्कुराया। एक पल के लिए, उसने मेरी आँखों को देखा। मुझे पता था कि वह पूछ रहा था: क्या तुम सिर्फ़ इतना ही करने आए हो?

मैं देख सकता था कि उसकी कोई अंतरात्मा उसे बता रही थी कि इसमें और भी कुछ है।

एक क्षण के लिए मैंने उसकी नजरों से नजरें मिलाईं और भ्रम की लहर में मेरी आंखें झुक गईं।

मैं आगे की पंक्ति में बैठा। बाकी लोगों ने मेरे लिए जगह बनाई। मेरी स्पष्ट विदेशी पहचान ने टिप्पणी को आमंत्रित किया। हर जगह मैंने सुना, 'मदामा कोमन आशान की छात्रा हैं।'

और मैं मन ही मन मुस्कुराता। मैं सिर्फ़ उनका छात्र नहीं हूँ, मैं उससे कहीं ज़्यादा हूँ। वह चाहते हैं कि यह उससे कहीं ज़्यादा हो। तब मुझे एक तरह की शक्ति का एहसास हुआ। यह शानदार व्यक्ति मेरा था। वह चाहते हैं कि ऐसा ही हो।

क्या इसे जुनून कहा जा सकता है? मुझे नहीं पता था। लेकिन हर भूमिका में, जो उसने निभाई, मैंने खुद को उस महिला के रूप में देखा जो उसके साथ खड़ी थी। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कौन थी, मैं वही थी। इसलिए मैं उर्वशी थी, स्वर्ग की अप्सरा, कामुक वेश्या, अर्जुन से विनती कर रही थी कि वह उसे उसके निचले होंठ में मौजूद अमृत का स्वाद चखने दे। जब वह रोती थी, तो तुम्हारे माथे का झुकाव मुझे एक ऐसी इच्छा से भर देता था जो एक चाबुक की तरह दर्दनाक होती थी, मैं चाहती थी कि वह लिब्रेटो की मांगों को दूर करे और मुझे खुश करे।

जब वह अर्जुन था और तपस्वी का वेश धारण किए हुए था, तब मैं सुभद्रा थी, राजकुमारी, अब उसकी दासी। मैं अपने भाई की इच्छाओं के प्रति अपनी वफ़ादारी भूलने, अपनी विनम्रता को दरकिनार करने और उसके साथ भागने के लिए तैयार थी।

यह व्यर्थ और ख़तरनाक था, फिर भी मैं खुद को रोक नहीं सका।

नलचरितम् के दूसरे दिन मैंने उसे ध्यान से देखा। क्या यह नल था?
या कोमान, मैंने सोचा। इससे क्या फ़र्क पड़ता है? वे एक ही थे।

मैंने उसके चेहरे को देखा, नर्तकी के चेहरे को। ऐसा लग रहा था कि वह दमयंती से नहीं, बल्कि मुझसे बात कर रहा है। फिर उसने मुड़कर अपनी आँखों के कोने से मेरी ओर देखा। मैंने नज़रों का एक संग्रह देखा। वासना। शर्म। दुख। स्नेह। वीरता। सम्मान।

संदेह। इनमें से प्रत्येक के साथ उन्होंने मुझसे कहा: यह तुम्हारी झिझक, तुम्हारी शर्म ही है जो अब मेरी दुश्मन है। कलयाल्लो वेरुथे कालम नी। क्या तुम समय बर्बाद नहीं कर रहे हो, मेरे प्यारे?

मैंने उसकी आँखों से आँखें मिलाईं। उसकी निगाहों में जो इच्छा थी, उसने मेरे अंदर एक निश्चितता जगा दी। मैंने सोचा, वह एक ऐसा आदमी है जो प्यार करना जानता है। एक ऐसा आदमी जो प्यार करने की कोई नश्वर सीमा नहीं जानता।

बाद में हम इस बात पर भी झगड़ने लगे, एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे, एक दूसरे को दोषी ठहराने लगे: तुमने मुझे बहकाया।

लेकिन जब हम एक दूसरे के लिए पहली जंगली तड़प से जुड़े, तो कौन बता सकता था कि पहला कदम किसने उठाया? क्या यह उसने उठाया या मैंने?

Machine Translated by Google

आँखें चौड़ी करना। एक स्पर्श। एक आलिंगन। इन सब और उससे भी बढ़कर एक प्रेम संबंध की शुरुआत होती है। कौन बता सकता था कि कौन किस पर झुक गया? जब हमने आखिरकार एक-दूसरे को खोजा, तो यह दबी हुई इच्छाओं को शांत करने की उन्माद में था। वासना और चाहत का एक अष्टकलश। सभी नृत्यों का नृत्य। चरणों का एक जटिल क्रम जो उन सभी महीनों की स्वाभाविक परिणति थी जब हमने एक-दूसरे को देखने के अलावा कुछ नहीं किया था।

हमारे दिन और रात एक हो गए। अंगों, विचारों और विषमताओं का विवाह। मेरे सूटकेस को अटारी में उसके साथ जगह मिल गई और मेरे शीशे के काम के कुशन उसके फर्श पर गद्दे पर बिखरे पड़े थे। मेरा बॉडी लोशन उसके हेयर ऑयल के पास रखा था और उसकी कंघी मेरे हेयर ब्रश के बालों के बीच में रखी हुई थी।

हम साथ में कविता पढ़ते हैं। मैंने नेरुदा को ज़ोर से पढ़ा और उन्होंने मेरी कविता को आकार दिया।
शब्दों को मुद्राओं में बदलना, प्रत्येक भाव स्पंदित और जीवंत होना।
मैंने अगरबत्ती जलाई और धुएँ की कुंडली से हम दोनों एक दूसरे से बंध गए। शादी की अंगूठी
धुएँ और सुगंध का।
उसने मेरे बालों की लटें बनाईं और उन्हें फूलों से सजाया। हर मोड़ में एक चमेली का सितारा। उसने मेरे बालों को निहारने के लिए एक आईना पकड़ाया। 'क्या तुम यह देख रही हो?' उसने पूछा।

'हाँ, हाँ, हाँ,' मैंने आश्चर्य से कहा कि वह, ईश्वरीय प्राणी, मेरे लिए यह कर रहा था।
वह पास के एक घर से मैलांजी के पौधे की पत्तियाँ लाया और उन्हें पीसकर बारीक पेस्ट बना लिया। फिर उसने मेरी उँगलियों पर लेप लगाया और अगले एक घंटे तक मुझे हिलने-डुलने या हाथ इस्तेमाल करने से मना किया। उसने मेरी पलकें दबाईं और फिर मेरी उँगलियों से सूखे पेस्ट को झाड़कर मुझे सूर्यास्त के रंग दिखाए जो उन्हें रंग रहे थे। 'क्या तुम यह देख रहे हो?' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

'हां, हां,' मैंने आश्चर्य से बुदबुदाया।
उसने मुझे बिस्तर पर लिटा दिया और मेरे कपड़े उतार दिए। उसने मेरी नाभि के कुएं में तेल टपकाया और अपनी उंगलियों से तेल को मेरी त्वचा में खींचकर मुझे अपनी औरत बना लिया। मैं अपनी पीठ के बल लेट गई, उसकी सेवाओं के लिए एक इच्छुक याचक।

मैं रोया, मैं रोया। इससे ज़्यादा परफेक्ट क्या हो सकता है? तुम और मैं, और हमारी ज़िंदगी।

Machine Translated by Google

कोमान

नदी के किनारे बने छोटे से घर में हमें अपने जुनून के लिए घर मिल गया।

कुछ दिनों बाद मेरे पिता मुझे बुलाने आए। एक नज़र में ही उन्होंने मेरे घर और मुझ पर पड़ने वाले बदलावों को समझ लिया। उनकी आँखों ने सब कुछ कह दिया। उन्होंने अपने बेटे और मदामा के बारे में अफ़वाहें सुनी थीं।

'तुम इतने बड़े हो कि तुम जानते हो कि तुम क्या कर रहे हो,' उसने कहा। 'तुम उससे शादी क्यों नहीं कर लेते? तुम्हारा सारा जीवन कथकली में बर्बाद हो गया है। क्या तुम्हारी कला तुम्हें प्यास लगने पर एक गिलास पानी लाकर देगी? क्या यह तुम्हारे माथे पर गीला कपड़ा रखेगी जब तुम बुखार से तप रहे हो? क्या यह तुम्हें तब सहारा देगी जब तुम्हारे पैर कांप रहे हों, या जब तुम अकेले हो तो तुम्हारा हाथ थामे रहेगी? इसीलिए तुम्हें एक परिवार और एक घर की जरूरत है।' 'मेरे पास एक घर और एक परिवार है,' मैंने कहा। 'मुझे नहीं लगता कि एंजेला अब शादी करना चाहती है।'

'तो फिर कब?' 'शायद

बाद में। शायद कभी नहीं। एंजेला मेरी पत्नी है। कभी-कभी रिश्तों को पवित्र बनाने के लिए रस्मों की ज़रूरत नहीं होती।' क्या आप अपने और सादिया के बारे में भूल गए हैं?
मैं बिना कुछ कहे ही बोल गई कि आप रीति-रिवाजों के बारे में कैसे बात कर सकते हैं। लेकिन वह समझ गया और उसने और कुछ कहने की हिम्मत नहीं की।

जब मेरे पिता चले गए, तो मैं नदी के किनारे सीढ़ियों पर बैठ गया। एंजेला और मैं सिर्फ़ तीन महीने साथ रह रहे थे, लेकिन पहले से ही सब कुछ पहले जैसा नहीं था। मैं खुद से बार-बार पूछता था कि क्या गलत हो सकता है। जो मेरे जीवन का सबसे बेहतरीन समय था, वह धीरे-धीरे एक ऐसे धुंधलेपन में बदल गया जिसे मैं समझ भी नहीं पाया।

मुझे आश्चर्य हुआ कि जब मैं उसे अपने पिता के आगमन के बारे में बताऊंगा तो वह क्या कहेगी।

हमने कभी शादी के बारे में बात नहीं की, एंजेला और मैंने। क्या वह शादी करना चाहेगी? जब तक हम शादी नहीं कर लेते, यहाँ रहना बहुत मुश्किल होगा। मैं तब तक उसे घर भी नहीं ले जा सकता था। मुझे पता था कि उसे दुख होगा कि, हालाँकि हम मेरे परिवार के इतने करीब रहते थे, फिर भी मैंने उसे उनसे मिलवाया तक नहीं। लेकिन मैं क्या कह सकता था? 'अचन, बाबू, एंजेला से मिलो, मेरी प्रेमिका!' मुझे उसकी चिंता थी। और मुझे चिंता थी कि वह मेरी वजह से ऐसी है।

जब वह और मैं साथ रहने लगे, तो मुझे हमारे निजी और पेशेवर जीवन के बीच बहुत स्पष्ट रेखाएँ खींचनी पड़ीं। 'मैं दिन में तुम्हारा शिक्षक और प्रेमी नहीं हो सकता

Machine Translated by Google

रात तक,' मैंने कहा था। 'मेरा सुझाव है कि हम सुंदरन या किसी अन्य से कहें कि वे आपको अपनी कक्षा में ले जाएं।'

लेकिन उसने मना कर दिया। 'यह पहले जैसा नहीं रहेगा।' उसने
मेरे लिए कथकली छोड़ दी थी। मैं उससे और क्या माँग सकता था?

Machine Translated by Google

एंजेला

मैं खुश नहीं था। मैं इसे समझ नहीं पा रहा था। मुझे कभी सिर में दर्द होता था तो कभी गर्दन में, कभी पीठ में। या फिर पाचन तंत्र में। अब तक मुझे एक दिन भी बीमारी नहीं हुई थी। लेकिन अब मुझे पूरे दिन बीमार महसूस होता था।

मैंने शिकायत की, 'मैं बहुत थका हुआ महसूस कर रहा हूं।'

'क्या तुम डॉक्टर के पास जाना चाहते हो?' उसने धीरे से पूछा। उसकी आवाज़ में चिंता झलक रही थी।
मुझे गुस्सा आता था। मुझे बीमार या सुस्त महसूस करना पसंद नहीं था।

मैंने कहा, 'मुझे बहुत पेट भरा हुआ और सूजन महसूस हो रही है।'

'ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम सारा दिन बेकार रहते हो,' उन्होंने कहा और मेरे लिए अदरक का एक टुकड़ा लाने के लिए रसोई में चले गए और उसे नमक के साथ पीस दिया।

'लो, इसे खाओ, तुम्हें अच्छा लगेगा।' मैंने उसे थोड़ा सा चबाया और

उसने मुझसे फिर पूछा, 'तुम घर पर अभ्यास क्यों नहीं करते?' 'मैं बिना किसी संगत के अभ्यास कैसे कर सकता हूँ?' 'मैं तुम्हें एक रिकॉर्डिंग दिलवा सकता हूँ। या हम क्लास के दौरान भी एक रिकॉर्डिंग बना सकते हैं,' कोमन ने पेशकश की।

'अरे नहीं, यह वैसा नहीं है,' मैंने मुंह फेरते हुए कहा।

'काश हम कहीं और चले जाते,' मैंने कहा। 'मुझे यहाँ घुटन महसूस हो रही है। मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ, कोमन?' मैंने अचानक पूछा। 'मैं अपनी ज़िंदगी को ऐसे बरबाद नहीं कर सकता जैसा कि मैं अभी कर रहा हूँ।' 'लेकिन मैं कहीं और क्या करूँगा?' उसने पूछा। 'नहीं, तुम्हें यह सोचना छोड़ देना होगा। मैं

यह जगह नहीं छोड़ सकता। अगर तुम्हें यहाँ रहना इतना मुश्किल लगता है, तो तुम्हें वापस लौट जाना चाहिए,' उसने कहा।

क्या यह अंतिम चेतावनी थी?

मैं रो पड़ी। 'लेकिन मैं नहीं कर सकती। तुम यह सुझाव कैसे दे सकते हो?' 'तो फिर कोशिश करो और मुझे

बेहतर ढंग से समझो,' उसने कहा।

कुछ दिनों तक मैंने प्रयास किया और फिर मुझे लगा कि वह परिचित हताशा मुझ पर पुनः हावी हो गई है।

Machine Translated by Google

कोमान

मुझे लगा कि अब उसे कथकली से कोई मतलब नहीं रह गया है। वह अब मुझे परफॉर्म करते देखने भी नहीं आती। जब मैंने उससे पूछा तो उसने कहा कि उसे यह अच्छा नहीं लगता। मैंने खुद से कहा कि यह ईर्ष्या नहीं है। यह उदासी है। इसलिए मैंने इसे रहने दिया।

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं उसकी आत्मा को अपंग बना रहा हूँ, उसकी सारी खुशियाँ छीन रहा हूँ।

हताश होकर मैं उसे डॉक्टर के पास ले गया। डॉक्टर ने कहा, 'यह पर्यावरण में बदलाव की वजह से है।' 'अन्यथा, वह बिल्कुल ठीक है। मैं उसे कुछ हल्के एंटी-एंग्जायटी उपचार देना शुरू करने जा रहा हूँ और उसे जल्द ही इसका असर दिखना चाहिए।' मैंने दवा खरीदी और कहा कि यह उसके खराब पाचन के लिए है।

पुरानी एंजेला इसके बारे में सब कुछ जानना चाहती थी, जिसमें इसकी औषधीय संरचना भी शामिल थी। यह एंजेला, ढीले जबड़े और सुस्त आँखों के साथ, बिना किसी सवाल के कर्तव्यनिष्ठा से अपनी गोलियाँ निगल गई।

रात को हम एक दूसरे के बगल में लेटे थे। वह गहरी नींद में सो गई, आराम देने वाली गोली की बाहों में दबी हुई। उसका अकेलापन मुझे खाए जा रहा था। फिर अपराध बोध भी था। अगर मेरी कला उसे इतना दुखी करती तो उसका क्या फायदा? क्या मैं राक्षस था जो उसे इतनी पीड़ा दे रहा था? ऐसा कैसे हो सकता है कि जिस चीज ने हमें एक साथ लाया था, वही हमें दूर भी कर सकती है?

एक सुबह मैं चौंककर उठा। मैंने एक अजीब सपना देखा था। मेरी खूबसूरत एंजेला एक अस्पताल के सफ़ेद एंटीसेप्टिक वार्ड में थी। उसके चेहरे पर ज्ञान के सारे निशान मिट चुके थे। उसके बाल उसके सिर के ऊपर एक गाँठ में बंधे हुए थे। उसकी मुस्कान खाली थी। उसकी उदासी उसे वहाँ ले गई थी जहाँ मैं और कथकली अब मौजूद नहीं थे।

तस्वीर ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया। मेरे दिल में भारीपन महसूस हुआ। मैं सोचने लगा कि अब आगे क्या होगा।

क्या मुझे उसे जाने देना चाहिए? या मुझे उसके साथ जाना चाहिए? मैंने देखा कि उसका प्यार, अनजाने में ईर्ष्या से रंगा हुआ था, और अपने जीवन में कुछ न कर पाने की उसकी असमर्थता से दुखी था। ऐसा प्यार कैसे पनप सकता है?

फिर बाबू मुझसे मिलने आया। 'यह एक छोटा शहर है, एटा,' उसने कहा। 'लोग बातें करते हैं। तुम्हें पता है कि अचन और मैं तुम्हारा साथ देंगे। तुम उससे शादी क्यों नहीं कर लेते?
फिर गपशप की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। तुम दोनों के बारे में बाजार में क्या कहा जाता है, यह तुम्हें सुनना चाहिए।' 'क्या यह बात तुम्हें इतनी परेशान करती है, बाबू?' मैंने धीरे से पूछा।

'हाँ, ऐसा ही है। मैं अपने परिवार के नाम को बदनाम नहीं होने दे सकता। आप जानते हैं। आप जानते हैं कि मैं अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए कितनी दूर तक गया हूँ। अब मुझे अपने बच्चे के बारे में भी सोचना है। यह एक छोटा शहर है, जैसा कि मैंने कहा। मैं किसी भी तरह की बदनामी नहीं चाहता।

Machine Translated by Google

मेरे बच्चे की संभावनाओं को खराब कर रहा है।'

मैंने कहा, 'बच्चा तो अभी पैदा भी नहीं हुआ है।'

'तो क्या हुआ? ये चीजें तुम्हें परेशान करने के लिए वापस आती हैं। क्या तुम जानते हो कि मेरी ज़िंदगी कैसी है? हर दिन मुझे डर लगता है कि वह वापस आएगा और दावा करेगा। मैंने जो कुछ भी इकट्ठा करने के लिए मेहनत की है वह बिखर जाएगा। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। मैं इसे संभाल नहीं सकता।' मैंने सिर हिलाया। 'मैं इसे सुलझा लूंगा,' मैंने वादा किया। 'लेकिन मैं

उसे नहीं छोड़ूंगा।' 'तुम्हें किसने कहा? उससे शादी करो। उसे अपनी पत्नी बनाओ। हम तुमसे बस यही माँगते

हैं।'

Machine Translated by Google

एंजेला

मैंने कोमन को छोटे शहरों और उससे भी छोटी सोच वाले लोगों पर अपना गुस्सा निकालते हुए सुना।

'चलो चले जाते हैं,' मैंने कहा। 'तुम उन्हें यह तय करने नहीं दे सकते कि तुम्हें कैसे जीना चाहिए। तुम एक कलाकार हो, बैंक क्लर्क नहीं। कलाकारों को अकेला छोड़ देना चाहिए। लेकिन छोटे शहरों में रहने वाले लोग यह नहीं समझते। वे बहुत कठोर जीवन जीते हैं और इस बात से बहुत चिंतित रहते हैं कि उनके पड़ोसी क्या सोचेंगे। अगर तुम यहाँ रहोगे, तो तुम्हारी कला मर जाएगी, मैं तुम्हें यह बता सकता हूँ। वे तुम्हें एक सम्मानित व्यक्ति और एक उबाऊ कलाकार में बदल देंगे।' मुझे लगा कि मैं अपराधबोध से ग्रसित हूँ। मुझे पता था कि मैं यह सिर्फ़ इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं दुखी हूँ

शहर और यहाँ के मेरे जीवन के साथ। काश मैं कोमन को यहाँ से जाने के लिए राजी कर पाता।

'लेकिन कहाँ? हम कहाँ जा सकते हैं?' उसने पूछा।

मैंने कहा, 'हम पहले लंदन जाएंगे और फिर यूरोप के बाकी हिस्सों में जाएंगे। हम वहां अपना जीवन बनाएंगे।' इस दुनिया से भागने और उसे अपनी दुनिया से मिलवाने की संभावना से मेरा चेहरा चमक उठा।

'मैं वहाँ क्या करूँगा? मैं एक कथकली नर्तक हूँ और मुझे इसके अलावा कुछ नहीं आता।' 'तुम नृत्य करोगे,

कोमन। और क्या? तुम एक नर्तक हो और मैं तुम्हारे लिए कुछ और करना अपवित्र मानूँगा। तुम्हारा सम्मान किया जाएगा और तुम्हारी सराहना की जाएगी।
वहां हर कोई तुम्हें पसंद करेगा। सितार वादक रविशंकर को देखो।'

कोमन ने सिर हिलाया। 'वह संगीतकार है। और संगीत सांस्कृतिक सीमाओं से बंधा नहीं होता। कथकली ऐसी नहीं है। यहाँ के लोग भी इसे समझ नहीं पाते। वहाँ कोई इसे कैसे समझेगा? यह काम नहीं करेगा।'

'नहीं, मेरी बात सुनो। क्या तुमने राम गोपाल के बारे में नहीं सुना? वह एक कथकली नर्तक है जिसने यहाँ कुंजू कुरुप से प्रशिक्षण लिया है। उसकी बहुत प्रशंसा की जाती है और उसका बहुत सम्मान किया जाता है। यहाँ तक कि नजिंस्की भी उसका नृत्य देखने गया था।'

कोमन ने भौंहें सिकोड़ीं. 'लेकिन वह अब कथकली नहीं करता. क्या तुम मुझसे कथकली छोड़ने के लिए कह रही हो? मैं ऐसा नहीं कर सकता, एंजेला!' मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया. 'कोमन, मैं

तुमसे कथकली छोड़ने के लिए कैसे कह सकता हूँ? मैं नहीं कह रहा. मैं बस इतना कह रहा हूँ कि तुम्हें वहाँ अपनी जगह मिल जाएगी. कुछ साल पहले राम गोपाल और एलिसिया मार्कोवा, प्राइमा बैलेरीना ने लंदन के प्रिंस थिएटर में राधा कृष्ण युगल नृत्य किया था. उन्होंने युगल नृत्य की कोरियोग्राफी की और उसे स्टेप्स सिखाए और उन्हें साथ में देखकर आपको लगेगा कि वे जीवन भर साथ में नृत्य करते रहे हैं. यही वह समय था जब मुझे भारतीय नृत्य और, खास तौर पर, कथकली से प्यार हो गया. मैं तब सिर्फ़ एक किशोर था, लेकिन मैं जानता था. जैसे मैं

Machine Translated by Google

जानते हैं कि आप बहुत कुछ कर सकते हैं। इसके बारे में सोचें। सबसे पहले, हमें राम गोपाल से मिलने की कोशिश करनी चाहिए। वह लंदन में रहते हैं। जब उन्हें पता चलेगा कि आप यहाँ से हैं, और आपको प्रदर्शन करते देखेंगे, तो वह चाहेंगे कि आप उनकी कंपनी का हिस्सा बनें। वह प्रतिभा को पहचान सकते हैं, और उसे निखार सकते हैं।

'सोचो, कोमन। तुम पूरी दुनिया में मशहूर हो जाओगे। तुम्हारी प्रतिभा को दुनिया भर में दर्शक मिल सकते हैं। तुम्हें एहसास है, है न, कि तुम यहाँ बर्बाद हो रहे हो।'

Machine Translated by Google

कोमान

उसकी आवाज़ में जो उत्साह था, उसने मुझे उत्साहित कर दिया। उसकी आँखें चमक रही थीं और उसकी हरकतों में एक हल्कापन था जो मैंने बहुत दिनों से नहीं देखा था।

मैंने उस डर के बारे में सोचा जो पिछले कुछ समय से मुझे परेशान कर रहा था। मैंने उसे अपने खोल में सिमटते देखा। मैंने उसकी नाजुकता देखी। मैंने उन राक्षसों को देखा जो उसके विचारों को इधर-उधर खींच रहे थे और मुझे चिंता थी कि वह कुछ बड़ा कदम उठा लेगी।

मुझे पता था कि मैं बेवकूफी कर रहा था, लेकिन जब मैं संस्थान गया, तो मेरे गले में डर समा गया। मैं ब्रेक के दौरान घर भागता और उसे देखता। क्या वह ठीक थी? जब मैं किसी प्रदर्शन के लिए जाता, तो मैं उसके खत्म होते ही वापस आ जाता। शाम को कोई देर तक रुकना, चर्चा करना या उसका विश्लेषण करना नहीं होता। सच तो यह था कि मैं उसे अकेला छोड़ने से डरता था। मुझे नहीं लगता था कि वह आत्महत्या कर सकती है, लेकिन मुझे उसके दिमाग की नाजुकता से डर लगता था। मैं अपनी माँ के बारे में सोचता और सोचता कि उसने क्या किया है।

तब मुझे इससे भी बड़ा भय मालूम हुआ।

जैसे-जैसे वह हमारे आगे के जीवन की योजना बना रही थी, एंजेला लगभग अपनी पुरानी अवस्था में आ गई थी। वह महिला जिससे मैं प्यार करने लगा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने मन के उलझे हुए धागों को समेट रही थी और उन्हें फिर से एक साथ जोड़ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह खुद पर नियंत्रण पा रही थी। क्या हमारा दूर जाना वाकई उसे खुश कर पाएगा?

और फिर भी, मैं ऐसा जोखिम कैसे उठा सकता था?

Machine Translated by Google

एंजेला

मैंने देखा कि वह अभी भी अनिश्चित था, इसलिए मैंने धीरे से कहा, 'मुझे पता है कि आशान हमेशा कहता था कि आपको केवल अपने स्वयं के मानकों को पूरा करने की आवश्यकता है और बाकी सब कुछ बाहरी है। मुझे हमेशा लगता था कि यह इनकार का एक रूप था। खुद को बेहतर महसूस कराने के लिए वास्तविकता को नकारना। लेकिन निश्चित रूप से आप इनकार में नहीं हैं, कोमन?'

Machine Translated by Google

कोमान

मैंने सुना। मैं समझ सकता था कि वह क्या कह रही थी। मैंने कभी इसका सपना देखा था। फिर मैंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को दबाना सीख लिया और आशान की इस उक्ति में सांत्वना ढूँढ़ी कि यह जानना ही काफी है कि मैं अपनी कला के प्रति सच्चा हूँ और अपने खुद के सख्त मानकों को पूरा कर सकता हूँ। एंजेला सही थी। मैं अपना सिर रेत में दबा रहा था और दिखावा कर रहा था कि सफलता के किसी भी आकर्षण-प्रसिद्धि, पैसा, स्वीकृति, मान्यता- का कोई महत्व नहीं है। वे मायने रखते थे। इतना कि इसके बारे में सोचना मुझे पीड़ा देता था। मैं एक शुतुरमुर्ग था जो कायरता को साहस कहता था।

मुझे महत्वाकांक्षा की हलचल महसूस हुई। मुझे जीतने के लिए नई दुनियाएँ मिलेंगी। खुद को स्थापित करने और अपनी कलात्मकता प्रदर्शित करने के लिए नए मंच मिलेंगे। वह सब कुछ जिसकी मैंने कभी उम्मीद की थी वह मेरा होगा।

मैं दुनिया से दोबारा पूछने का साहस करूंगा कि वह मेरी कला के बारे में क्या सोचती है।

और इस तरह मैं बहुकन बन गया। एक बदसूरत बौना आदमी, बेढंगा और गंवार, हज़ारों अनिश्चितताओं से भरा हुआ।

मैं, बहुकन, काला नाला, जो कुछ मैं था और जो कुछ मेरे पास था, उससे वंचित होकर, नीचे झुका हुआ
कम्बलों का ढेर.

मैं फर्श को देखता रहा, उस पर लाल और पीले रंग की त्रिकोण और वर्गाकार रेखाएँ थीं।
जब मैं ज्यामितीय पैटर्न को देखते-देखते थक गया, तो मैंने बिजली की आग को घूर कर देखा। यह भी मेरी तरह एंजेला का इंतज़ार कर रही थी।

बिजली की आग एक भूखी देवता थी, सात भाषाओं की अग्नि, जो हमें गर्मी देने के लिए नीचे आने से पहले श्रद्धा के रूप में शिलिंग मांगती और खाती थी। एंजेला उच्च पुजारिन थी, एकमात्र ऐसी जो उसकी भूख मिटा सकती थी। इसलिए मैंने इंतजार किया। मैंने घड़ी देखी। एंजेला के लौटने में अभी आधा घंटा और बाकी था।

पच्चीस मिनट में, मैं बिजली की आग जला देता। मैं रसोई में जाता और केतली में पानी भरता और टोस्ट के लिए ब्रेड काटता। मैं बिस्तर बनाता और कुशन को एंजेला की पसंद के अनुसार रखता। मैं रिकॉर्ड का ढेर लगाता और रेडियो चालू करता। जब सब कुछ साफ-सुथरा हो जाता और मेरी एकाकी और ठंडी निगरानी के कोई निशान नहीं दिखते, तो मैं केतली और टोस्ट चालू कर देता। जब एंजेला वापस आती, तो टोस्ट और चाय तैयार होकर कमरे में इंतज़ार कर रहे होते और आखिरकार वह कमरा गर्म हो जाता और रेडियो की आवाज़ से चटकने लगता।

लेकिन मुझे अभी भी पच्चीस मिनट और चलना था। मैंने खुद से पूछा, मैं कहाँ हूँ?

Machine Translated by Google

दोबारा।

मैंने खुद से कहा, मैं लंदन में हूँ। मैं एक ऐसी गली में रहता हूँ जिसका नाम भी मुझे याद नहीं है। मुझे बस इतना पता है कि अर्ल्स कोर्ट ट्यूब स्टेशन कोने पर है। बेड-सिट के एक तरफ सड़क है और दाईं ओर दीवार है।

वहाँ एक खिड़की थी जिसे मैं हल्के मौसम में भी नहीं खोलता था। यह एक ईंट की दीवार की तरफ़ देखती थी। किसी भी चीज़ से ज़्यादा, मैं हरियाली की एक झलक पाने के लिए तरसता था।

मैंने कंबल को अपने चारों ओर खींचा और आरामकुर्सी में दुबक गया। घर पर, मैं रसोई में जाता, मुट्ठी भर सूखे नारियल के पत्ते इकट्ठा करता, आग जलाता और पानी का एक बड़ा बर्तन गर्म करता। जब पानी गर्म हो रहा होता, तो मैं अपनी त्वचा पर तेल लगाता और फिर धुएँ और लकड़ी की आग की खुशबू वाले उस पानी में नहाता। उसके बाद, मैं खुद को चावल की एक प्लेट परोसता। ये सफ़ेद दाने नहीं, बल्कि लाल-भूरे चावल जो अभी भी धरती और धूप की खुशबू दे रहे थे। छाछ में पका हुआ हरा पपीता की करी और तली हुई मछली का एक टुकड़ा होता। सूखा सोल, या सूखे शार्क के टुकड़े। बगल में पापड़ और आम का अचार। मेरे मुँह में पानी आ गया। इस शहर में मुझे वो कहाँ मिल सकता था जिसकी मुझे भूख थी?

बारिश शुरू हो गई। मैंने देखा कि पानी की बूंदें खिड़की से टकरा रही थीं। मेरे घर में बारिश की आवाज़ भी अलग थी। यहाँ, बारिश कमज़ोर थी और उसकी गंध गंदे शरीर और सीमित गर्मी की बासी, सीलन भरी गंध थी।

धूसर आसमान, नमी की बासी, खट्टी गंध और लगातार भूख। मैंने खुद को किसमें निर्वासित कर लिया था?

उन्नीस मिनट बाकी थे। बाहुकन को हर समय इंतजार करना पड़ा, हर समय पूछते हुए, क्यों?

एंजेला मेरे जाने से कुछ हफ़्ते पहले ही चली गई थी। 'मुझे बहुत अच्छा लगेगा कि हम साथ में यात्रा करें, लेकिन अगर मैं पहले चली जाऊँ तो मैं चीज़ों को बेहतर तरीके से व्यवस्थित कर पाऊँगी।' तब मुझे इस कदम के निहितार्थ

समझ में आए। रहने के लिए घर। नौकरी ढूँढ़नी थी। हम कैसे काम चलाएँगे? हमें पैसे कहाँ से मिलेंगे?

'क्या तुम सच में ऐसा कह रही हो, एंजेला?' मैंने फिर पूछा। 'हम शायद मद्रास या नई दिल्ली जा सकते हैं। वहाँ डांस स्कूल हैं। मेरे पास ज़्यादा पैसे नहीं हैं; क्या लंदन महंगा नहीं होगा?' 'तुम फिर से वही कर रही हो, जीवन से दूर भाग रही हो। तुम्हें वहाँ होना चाहिए जहाँ दुनिया तुम्हें देखे, न कि किसी छोटे से डांस स्कूल में बंद रहना

चाहिए। चिंता मत करो, हम सब कुछ संभाल लेंगे। जब तक तुम वहाँ पहुँचोगी, मैं सब कुछ तैयार कर लूँगी,' उसने कहा। मैंने उसकी आँखों में संकल्प देखा और मुझे कम परेशानी महसूस हुई।

अच्छन और बाबू मेरे चले जाने के विचार से खुश नहीं थे।
बाबू ने पूछा, 'क्या यह बहुत कठोर कदम है?'

Machine Translated by Google

'क्या तुम्हें यकीन है?' मेरे पिता ने पूछा.

'अब समय आ गया है कि मैं अपने करियर के बारे में सोचूं। एंजेला कहती है कि मैं यहां बर्बाद हो गया हूं।' 'लेकिन क्या तुम्हें इतनी दूर तक जाना है?' मेरे पिता ने पूछा।

'एंजेला कहती हैं कि एक बार मुझे लंदन में स्वीकार कर लिया गया तो पूरी दुनिया चाहेगी मुझे नाचते देखने के लिए.'

अचन ने भौंहें सिकोड़ीं। बाबू ने मुस्कराहट के साथ कहा, 'तुम्हारा एंजेला को यह, एंजेला को वह कहते हुए सुनना अजीब है। मुझे आश्चर्य है कि उसने तुम्हें कौन-सी जादुई औषधि खिला दी है, जिससे तुम इतने मोहित हो गए हो।' मैंने उसे घूरकर देखा। बाबू ने दूसरी ओर देखा और अपने हाथों को झटकते हुए कहा,

'ठीक है, अगर यह काम नहीं करता है, तो तुम कभी भी वापस आ सकते हो। तुम्हारे पास यहाँ एक घर है।' 'वास्तव में, एंजेला कह रही थी कि हमें शायद घर बेच देना चाहिए।

पैसा काम आएगा। लंदन महंगा है।'

मेरे पिता का चेहरा गंभीर हो गया। 'मुझे परवाह नहीं कि तुम्हारी एंजेला क्या कहती है, लेकिन मैं तुम्हें घर बेचने नहीं दूँगा। अगर एक साल में तुम्हें पता चले कि वहाँ सब ठीक है, तो तुम इसे किराए पर दे सकते हो। लेकिन जब तक मैं मर नहीं जाता, इसे बेचने की कोई बात नहीं होगी। तुम अपनी एंजेला से यह बात कह सकते हो।'

बाबू ने कहा, 'अचन सही कह रहे हैं। रियल एस्टेट की कीमतें बहुत कम हैं और यह बेचने का सही समय नहीं है।'

मैंने उसे जाने दिया। अंदर ही अंदर, मैं भी घर से अलग नहीं होना चाहता था। लेकिन एंजेला ने मुझे बहुत समझाया था। यह अच्छा था कि मुझसे निर्णय लेने का अधिकार छीन लिया गया।

दरवाज़ा बंद करते ही मुझे लगा कि मेरे अंदर कुछ झनझना रहा है। मैं नदी पर आखिरी नज़र डालने गया। मानसून के दौरान, यह एक उग्र जानवर में बदल गई थी, जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को बहा ले जाती थी, किनारों पर पानी भर देती थी और पेड़ों और घरों को गिरा देती थी। लेकिन अब नीला एक डरपोक नदी थी जो चुपचाप बह रही थी। ड्रैगनफ़्लाई का एक बादल बह रहा था। हवा में फूलों की खुशबू थी। एक पल के लिए, मुझे पीड़ा का एहसास हुआ। जिस नई ज़मीन को मैंने रहने के लिए चुना था, वहाँ फूल कैसे होंगे? क्या तारे वैसे ही दिखेंगे? क्या मेरे पैरों के नीचे की धरती मुझे वैसे ही थामे रहेगी जैसे अभी है?

मैंने कार का हॉर्न सुना और समझ गया कि अब निकलने का समय हो गया है। मैंने घर को बंद कर दिया और चाबी बाबू के पास छोड़ दी। 'मैं इसे नियमित रूप से साफ करवाता रहूंगा,' उसने कहा। और फिर, 'तुम्हारा घर हमेशा यहीं रहेगा।'

विमान में मुझे गलियारे वाली सीट मिली थी। एंजेला ने कहा था- गलियारे वाली सीट मांगो। जब तुम्हें बाथरूम जाना होगा तो तुम्हें लोगों के घुटनों पर से कूदना नहीं पड़ेगा। यह एक लंबी उड़ान है।

Machine Translated by Google

मैं अपनी सीट पर बैठा था, उत्तेजना और चिंता से सुन्न। मेरी बाईं ओर एक जोड़ा बैठा था।
विदेशी। उन्होंने हाथ पकड़ रखे थे। मैं चाहता था कि एंजेला मेरे साथ होती।

विमान बादलों के महासागर को चीरता हुआ आसमान में उड़ गया।
मैं सोच रहा था कि कोई भटकता हुआ देवता मेरी राह से गुजरेगा।

कई घंटे बीत गए। मैं हीथ्रो पहुँच गया। एंजेला कहाँ थी?

एक घंटा बीत गया। मैंने पेजिंग सिस्टम पर अपनी उपस्थिति की घोषणा की।
अब मैं डर गया था। मैंने अपने पिता की आवाज़ सुनी: 'क्या तुम्हें यकीन है?' फिर मैंने एक
जाना-पहचाना चेहरा देखा। 'एंजेला।'

Machine Translated by Google

एंजेला

'यह ज्यादा तो नहीं है, लेकिन इतना ही मुझे मिल सका,' मैंने बेड-सिट का दरवाजा खोलते हुए कहा।

मैंने कोमन का चेहरा पीला देखा। वह खुश नहीं दिख रहा था और हालाँकि मेरा ऐसा मतलब नहीं था
तो मैंने अपने आप से कहा, 'और यह वह सब है जो हम वहन कर सकते हैं।'

मैंने देखा कि कोमन अपने चारों ओर देख रहा था। मुझे उम्मीद थी कि जानी-पहचानी चीजें उसे घर जैसा महसूस कराएंगी। मेरे शीशे के काम वाले कुशन और भारत में खरीदा हुआ एक सूती गलीचा फर्श पर फेंका हुआ था। वहाँ उसकी छोटी सी कांस्य नटराज मूर्ति और मेंढक के आकार का मेरा अगरबत्ती होल्डर था। खिड़की के किनारे पर मकड़ी के पौधे थे और एक पीतल की थाली थी जो मैं उसके घर से लाया था। इसमें वे कंकड़ रखे थे जो हमने नदी के किनारे से चुने थे। दो कुर्सियों के पीछे शॉल लपेटे हुए थे।

उन्होंने कहा, 'यहां ये चीजें देखना अजीब है।'

मैंने नटराज को छुआ। शिव ब्रह्मांडीय नृत्य में जमे हुए थे। सभी नर्तकियों ने उनकी पूजा की। जब मैं वहाँ था, तब भगवान अपने घर में एक चबूतरे पर रहते थे और अचानक, मुझे अनिश्चितता की पीड़ा महसूस हुई। मैंने क्या किया था?

'अजीब अच्छा या अजीब बुरा?' मैंने पूछा। मेरा मुंह खुला रह गया।

'बहुत अजीब है। मुझे लगातार खुद को याद दिलाना पड़ता है कि मैं लंदन में हूं और फिर, जब मैं कुछ दिन पहले अपने घर में रखी इन चीजों को देखता हूं, तो मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मैंने कभी यात्रा की है। मुझे समय दीजिए। मैं इसकी आदत डाल लूंगा,' उन्होंने धीरे से कहा।

मैंने देखा कि वह एल.पी. के ढेर को देख रहा था। उसने उन्हें पलटा और एक को ऊपर उठाया।
रविशंकर ने कहा, "मुझे लगता है कि आपका पसंदीदा रिकॉर्ड यहीं है।"

'मुझे नहीं पता कि तुम उसे क्यों नापसंद करते हो। वह बहुत अच्छा है। मैं उसे लगभग हर दिन सुनता हूँ,' मैंने कहा।

मैंने देखा कि वह अपना मुंह छुपाने की कोशिश कर रहा था। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन यह मुझे परेशान कर रहा था। वह
मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरी प्राथमिकताएँ संदिग्ध थीं।

तभी उसकी नज़र टीवी पर पड़ी और उसने पूछा, 'यह कैसे काम करता है?'

मुझे नहीं पता था कि उसने पहले कभी ऐसा नहीं देखा था। बहुत कुछ ऐसा था जो मैंने नहीं देखा था
उसके बारे में जानो.

मैंने उसका चेहरा साफ देखा जब मैं उसे चालू करने के लिए आगे झुका और उसे दिखाया कि कैसे
यह काम करो।

उन पहले कुछ दिनों में, सब कुछ नयेपन के आश्चर्य से भरा हुआ था।
श्वेत-श्याम टीवी और चमकदार लिनोलियम; बेबी बेलिंग इलेक्ट्रिक ओवन और दो-बार इलेक्ट्रिक फायर; ब्री-नायलॉन शीट और सैश विंडो;

Machine Translated by Google

ट्यूब स्टेशन और एस्केलेटर। सूरज चमक रहा था, पत्ते सरसरा रहे थे और हवा इतनी ठंडी थी कि कोमन को लगा कि वह किसी दूर देश में है। वहाँ इतनी ठंड या नमी नहीं थी कि वह सूरज की रोशनी को मिस कर सके। उन पहले कुछ दिनों में, वह और मैं खूब चले और मैंने लंदन को उसकी आँखों से देखा।

सेंट जेम्स पार्क और वेस्टमिंस्टर एब्बे। हैम्पस्टेड हीथ और कैमडेन टाउन।
सड़कें और जगहें। रोशनी और आवाज़ें। ऐसे लोग थे जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। घुंघराले बालों और कमर पर झूलते लंबे काले पुरुष और महिलाएँ; पतली आँखों और गहरे काले बालों वाले सुंदर पीले रंग के पुरुष और महिलाएँ; सफ़ेद बालों और आँखों वाले पुरुष और महिलाएँ। बालों के रंग जो उसने पहले कभी नहीं देखे थे: लाल और सुनहरे, भूरे और पीले, लाल और चांदी जैसे सफ़ेद; आँखें जो हरी और भूरी, भूरी और काली, नीले रंग की थीं।

इस नए जीवन, इस नई दुनिया के स्वाद ने उसकी इंद्रियों को भर दिया। मैं उसे अपने दोस्तों से मिलवाने ले गया। मैं उसे अपने पसंदीदा रेस्तराँ में ले गया। हमने लाल कागज़ की लालटेन से लटके एक छोटे से रेस्तराँ में चीनी खाना खाया, और अख़बार में लिपटी मछली और चिप्स खाई। हम पब गए जहाँ झाग का एक सिरा एम्बर रंग के तरल पदार्थ में बदल गया।
बिटर, लेगर, एले, स्टाउट, ये शब्द उसकी जुबान से नल से बहते बियर की सहजता के साथ निकल रहे थे। बार-बार, मैं फुसफुसाता: घूरना मत। लेकिन वह कैसे नहीं देख सकता था? उसने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था। पब में आप बैठकर शराब पीते थे, पुरुष और महिलाएँ एक साथ ...

यहां तक कि उतार-चढ़ाव भी अच्छे थे। हमने नहाने का समय तय किया ताकि हम गर्म पानी का इस्तेमाल कर सकें। हमने एक लॉग रखा ताकि हमें पता रहे कि दो अन्य बेड-सिट के रहने वाले लोग कब बाथरूम का इस्तेमाल करते हैं और हम उनके आने से पहले ही भाग सकते हैं। हम बारी-बारी से बिजली के झटके खाते रहे, यह उस पल के लिए हमारा शब्द था जब हम बिस्तर पर फिसले और चादरें स्थिर हो गईं और हमारी त्वचा को हल्की फुफकार के साथ छू गईं। टोस्ट एक तरफ जल गया। सैश विंडो जाम हो गई। लेकिन हमने इस सब को हंसी में उड़ा दिया और बार-बार एक-दूसरे की तलाश की।

हम अभी भी दमयंती और नल थे, एक नया जीवन बनाने की कोशिश कर रहे थे। हमारा भविष्य अनिश्चित था लेकिन हमारा प्यार अतृप्त था। हमारा जीवन दूसरे दिन के नाटक का पहला दृश्य था।

फिर मैं काम पर चला गया और साँप ने अपने फन उसमें गड़ा दिये।

Machine Translated by Google

कोमान

बारह साल तक नल और दमयंती पूर्ण सुख से रहे। उनके प्रेम में कोई बाधा नहीं आई। इस बीच, बारह साल तक काली की आत्मा, जो दुष्ट है, नल के जीवन में तबाही मचाने का मौका तलाशती हुई एक पेड़ पर बैठी रही।

आखिरकार काली को अपना मौका मिल ही गया। उसने नल के भाई को नल को पासे के खेल में आमंत्रित करने के लिए उकसाया। शर्त थी राज्य की।

उस दिन नल शाम को स्नान करते समय अपने पैरों की एड़ियाँ धोना भूल गए और काली को नल के शरीर में प्रवेश मिल गया। वहाँ काली झुककर प्रतीक्षा करने लगी।

नल ने जुआ खेला और अपना राज्य खो दिया। पासों के गिरने को नियंत्रित करने वाला कलि था। इसलिए नल को निर्वासित कर दिया गया और राज्य के लोगों को उसकी मदद करने से मना कर दिया गया। नल ने दमयंती से विनती की, 'अपने माता-पिता के पास घर जाओ।'

उसने मना कर दिया। 'मेरा घर तुम्हारे पास है। तुम जहां जाओगी, मैं वहीं जाऊंगी।' इसलिए नल और

दमयंती जंगल चले गए। उनके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं थी। जंगल में जब भूख ने उन्हें परेशान किया, तो नल ने अपने कपड़ों को जाल की तरह इस्तेमाल करके कुछ पक्षियों को फंसाने की कोशिश की। लेकिन पक्षी उसके कपड़े लेकर उड़ गए।

दमयंती को अपना नग्नपन छिपाने के लिए अपनी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़ना पड़ा।
नल ने फिर से जोर देकर कहा कि दमयंती अपने पिता के राज्य में वापस चली जाए। लेकिन उसने मना कर दिया। इसलिए, आधी रात को नल चुपके से भाग गया। उसे उम्मीद थी कि दमयंती के पास अपने पिता के राज्य में जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। नल ने भटकने का जीवन अपना लिया।

एक दिन उसने जंगल में लगी आग को पेड़ों के बीच से गुजरते देखा। उसने काले धुएं के बादल और आग में जले हुए पक्षियों और जानवरों की लाशें देखीं। उसने पेड़ों को झुलसते और राख को हवा में उड़ते देखा। उसने देखा कि आग के घेरे में फंसा एक सांप इंसानी आवाज में मदद के लिए चिल्ला रहा है।

नल सर्प को बचाने के लिए दौड़ा और सर्प ने अपने विषदंत उसकी एड़ी में गड़ा दिए।
'तुमने अपने स्वभाव के अनुसार ही व्यवहार किया है, है न?' नल चिल्लाया। 'क्या तुम मुझे बचाने का यही बदला चुका रहे हो? मुझे डसकर?' साँप ने कहा, 'मैंने तुम्हारा उपकार किया। शायद अब तुम ऐसा न सोचो, लेकिन

भरोसा रखो।
मुझे बताओ, तुम जल्द ही खुद देख लोगे।'

और नल ने देखा कि साँप के जहर से मरने के बजाय, वह एक बदसूरत बौने में बदल गया था, जिसका रंग मैला और लंगड़ा था। 'मेरी तरफ देखो। क्या तुम इसे एहसान कहते हो?' साँप ने जवाब दिया, 'सबसे पहले, तुम्हारे भीतर रहने वाली दुष्ट काली है।

Machine Translated by Google

ज़हर से तड़पते और मरते हुए। वह अब तुम्हारे दिमाग को और नहीं हिला पाएगा। तुम जैसे हो, कोई तुम्हें पहचान नहीं पाएगा। जो कुछ तुमने खोया है, उसे वापस पाओ।
सब कुछ फिर से शुरू करो। अब से, तुम अपने भाग्य के निर्माता खुद होगे।'

नदी के किनारे अपने छोटे से घर में मैं संतुष्ट था। मुझे जीवन या कला से कुछ भी नहीं चाहिए था। तो किसने मेरे मन में यह विचार डाला कि मैं और अधिक चाहता हूँ? काली कब मेरे अंदर घुस आई?

यह काली ही होनी चाहिए, वरना मैं भी वैसा ही जुआ खेलता जैसा मैंने खेला? मुझे उम्मीद थी कि मैं इस मुसीबत से बाहर निकल जाऊंगा। देवता मेरी मदद करेंगे। मेरी किस्मत मुझे धोखा नहीं देगी। नल और दमयंती की तरह हमारा प्यार भी हमें सहारा देगा।

लेकिन मैं भूल गया कि नल को बाहुकन में बदल दिया गया था। उसे अपना सब कुछ खोना पड़ा और उसका अस्तित्व कम हो गया। बाहुकन के रूप में नल को कभी रात भर नींद नहीं आएगी।
उसे अपमान और दिल टूटना, अनगिनत आरोप-प्रत्यारोप और आत्म-सम्मान का पूरी तरह क्षरण ही पता होगा। हर समय, हवा में सांप का सवार मंडराता रहता था: तुम अपने भाग्य के निर्माता खुद हो।

मैंने घड़ी की तरफ देखा। दस मिनट बाकी थे। बाहर रोशनी लगभग फीकी पड़ चुकी थी।
शाम हो चुकी थी और मुझे एंजेला के लौटने से पहले साफ-सफाई करनी थी। मैंने अपनी शर्ट उतारी और रसोई के सिंक पर चला गया। मैंने अपने चेहरे और अंडरआर्म्स पर पानी छिड़का। मैं काउंटर पर बैठ गया और रसोई के सिंक पर अपने पैर धोए। पहली बार जब एंजेला ने मुझे ऐसा करते देखा, तो वह डर गई। 'तुम क्या कर रहे हो?' उसने पूछा।

'यह मेरा शाम का वज़ू है,' मैंने अपने पैर की एड़ी को सावधानी से धोते हुए कहा।

'आप रसोई के सिंक में ऐसा नहीं कर सकते। यह स्वास्थ्यकर नहीं है...यह शोरानूर, कोमन नहीं है। यह लंदन है। आप यहाँ ऐसी चीजें नहीं कर सकते।' मैंने उसे घूर कर देखा। मैंने सोचा कि उसकी हिम्मत

कैसे हुई कि वह इस तरह की आवाज़ में बात करे। 'मैं वज़ू किए बिना नहीं रह सकता,' मैंने कहा।

'फिर बाथरूम में जाओ।' वह भी मेरी तरह

जानती थी कि जब मैं चाहूँगी तो बाथरूम खाली होगा या नहीं, इसका कोई पता नहीं है। लेकिन मैं कोई और बहस शुरू नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने बस वही किया जो मुझे करना था, उसके घर पहुँचने से पहले।

मैंने अपने आप से कहा कि जो बात वह नहीं जानती, उससे उसे कोई परेशानी नहीं होगी।

मैंने सीढ़ियों पर एंजेला के कदमों की आवाज़ सुनी। मैंने मुस्कुराते हुए स्विच ऑन किया और चाबी घुमाने का इंतज़ार करने लगा। वह अंदर आई और अंदर कदम रखते ही उसने अपने बाहरी कपड़े उतार दिए।
'नमस्ते, डार्लिंग,' उसने कहा। 'बाहर बहुत बदबू है। यहाँ बहुत आरामदायक और गर्म है।
मम्म, मुझे टोस्ट की गंध आ रही

है।' मैंने उसके मुंह से ये शब्द कहे। मैंने उन्हें कई बार दोहराया हुआ सुना था। मैंने उसे चूमा जैसा उसने मुझे सिखाया था। फिर मैंने दिनचर्या की परिचितता को आगे बढ़ाया।

Machine Translated by Google

'क्या तुम बाहर गए थे?' उसने थोड़ी देर बाद मुझसे पूछा।

मैंने सिर हिलाया।

'यह हाँ है या नहीं?' उसने भौंहें सिकोड़ीं।

मैंने उसकी तरफ देखा। एक समय था जब वह मेरे शरीर की हर हरकत को समझ लेती थी। अब वह मेरे हिलने की आवाज़ को भी नहीं समझ पाती थी। मैं उसे कैसे दोष दे सकता था? मैं भी उसकी कही हुई हर बात को नहीं समझ पाता था। शब्द अलग-अलग लग रहे थे, हर समय फुफकारने वाली आवाज़ें लग रही थीं। मैंने अपने उन छात्रों के बारे में सोचा जो उसकी भाषा की नकल करने की कोशिश करते थे, अस्पष्ट आवाज़ें निकालते थे; कभी-कभी इन दिनों मुझे भी ऐसा ही लगता था। मैंने जो भी सुना वह अस्पष्ट आवाज़ें थीं।

'कोमन, तुम बहक रही हो। मैंने पूछा, तुम कहाँ गई थी?' 'मैं कुछ रोटी और दूध लाने बाहर गई थी,' मैंने कहा। मुझे पता था कि वह परेशान होगी।

'बस! तुम सिर्फ़ ट्यूब स्टेशन के पास पटेल की दुकान तक गए थे?
क्या हुआ, कोमन? तुम क्यों नहीं घूमते, आस-पड़ोस का पता लगाते? तुम्हारे पास सब कुछ है और मैंने तुम्हें दिखाया है कि इसका इस्तेमाल कैसे करना है। तुम सारा दिन यहाँ नहीं रह सकते। तुम सारा दिन क्या करते हो?' एंजेला की आवाज़ झल्लाहट से भरी हुई थी।

मैंने कुछ नहीं कहा। मैं उसे क्या बता सकता था? कि मैं पटेल की दुकान पर रसोई से कभी-कभार आने वाली जानी-पहचानी खुशबू के लिए गया था? क्योंकि उनके चेहरे उन चेहरों जैसे थे जिन्हें मैं जानता था? कि मैं समझ गया कि उन्होंने क्या कहा और जब मैंने बात की तो उन्होंने भी समझ लिया? जब मैं वहाँ मंडरा रहा था, श्री पटेल को अपनी उंगलियों पर गिनती करते हुए और उनकी पत्नी को साड़ी पहने हुए, उसके ऊपर कार्डिगन पहने हुए, अपने पति से कुछ कहते हुए देख रहा था, तो मुझे कहीं और की तुलना में वास्तविकता के साथ अधिक जुड़ाव महसूस हुआ।

मैंने पूछा, 'क्या आप राम गोपाल से बात करने में सफल रहे?'

'मैंने आंसरिंग मशीन पर एक संदेश छोड़ा है। वह देश से बाहर है और जल्द ही वापस आ जाएगा,' उसने कहा। उसकी आँखें मेरी आँखों से नहीं मिलीं। पिछले पाँच हफ़्तों से, एंजेला ने मुझे अलग-अलग रूपों में एक ही झूठ पेश किया था। मैं उसे इतना अच्छी तरह जानता था कि मैं समझ गया था कि वह झूठ बोल रही है।

'हम कब तक ऐसे ही चल सकते हैं?' मैंने उससे पूछा। 'मैं खुद को बहुत बेकार महसूस कर रहा हूँ।
यह ठीक नहीं है कि आप काम करें और मैं घर पर बैठकर कुछ न करूं।'

'यह ज़्यादा समय के लिए नहीं है। वह किसी दिन वापस आ जाएगा। क्या तुम्हें कुछ चाहिए?
'पैसे?' उसने पूछा.

मैंने सिर हिलाया। फिर, इस डर से कि वह इसे हाँ समझ लेगी, मैंने कहा, 'नहीं।' 'क्या टीवी पर कुछ अच्छा आता है?' उसने पूछा।

मैंने कहा, 'मुझे नहीं मालूम।'

'क्या तुम मेरे जाने के बाद टीवी भी नहीं देखते?' मैं चुप था। उन पहले कुछ दिनों में, मैंने पूरे दिन टीवी देखा। मुझे यह समझने की ज़रूरत नहीं थी कि मैं क्या देख रहा हूँ; मेरे सामने जीवन को खुलते हुए देखना ही काफी था।

Machine Translated by Google

एक शाम, वह परेशान होकर वापस आई। मुझे नहीं पता था कि इसका कारण क्या था: ट्यूब में भीड़, जूते की एड़ी टूट जाना, या शायद काम पर एक निराशाजनक दिन। उसने कहा, 'क्या तुम भाग्यशाली नहीं हो कि घर पर रहकर सारा दिन टीवी देखते हो जबकि मैं...?' और फिर, उसने जो कहा था उसके महत्व को समझते हुए, उसने हँसते हुए इसे टालने की कोशिश की। 'क्या तुम उस चीज़ को देखने से थकते नहीं हो?' मैंने एंजेला को उसके महसूस करने या उसने जो कहा उसके लिए दोषी नहीं ठहराया। मैं देख सकता था कि वह चीजों

को ठीक करने के लिए बहुत मेहनत कर रही थी। उसे थोपा हुआ महसूस करने का पूरा अधिकार था। मुझे पहले से कहीं ज़्यादा परजीवी जैसा महसूस हुआ। मैंने टीवी देखना बंद कर दिया।

घर आने से लेकर सोने के समय तक एक लंबी खामोशी छाई रही। उसने अपनी अगरबत्ती जलाई और रविशंकर का अपना एल.पी. लगा लिया। अब तक मैं रिकॉर्ड पर हर खरोंच और फुफकार को पहचान चुका था। यादों के किसी कोने से मैंने आशान को यह कहते हुए सुना: 'हर सुबह, आईने में देखो और कहो- मैं घमंडी नहीं बनूँगा। कथकली मेरा जीवन है, लेकिन दूसरों को भी अपने हिसाब से जीने का अधिकार है। आप सामान्य भावनाओं से अछूते नहीं रह सकते। क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो?

कोमन, कथकली से परे भी जीवन है। जितनी जल्दी तुम इसे स्वीकार करोगे, तुम्हारे लिए उतना ही बेहतर होगा।' मैं चाहता था कि हम बात

करें। वह मुझे अपने दिन के बारे में बताए। लेकिन वह बस अपनी आँखें बंद करके संगीत पर झूमना चाहती थी। मुझे लगा कि हम अब शायद ही कभी बात करते हैं। हमारे पास एक-दूसरे से कहने के लिए कुछ बचा था।

मैं उससे पिछले हफ़्ते क्वीन एलिजाबेथ हॉल में उसके दोस्तों के एक समूह के साथ हुए नृत्य प्रदर्शन के बारे में बात करना चाहता था। मैंने इस विशेष भारतीय नर्तकी का प्रदर्शन पहले कभी नहीं देखा था, और मैं उत्सुक था। शायद प्रदर्शन के बाद, मैं मंच के पीछे जाकर उससे बात कर सकूँ, मैंने सोचा। यहाँ नृत्य जगत में संपर्क बनाना अच्छा रहेगा।

मैं वहाँ स्तब्ध होकर बैठ गया। मैंने इससे बुरा कुछ कभी नहीं देखा था। मेरे प्रथम वर्ष के छात्रों में लय की बेहतर समझ थी और अपनी मुद्राएँ बनाने में अधिक निपुणता थी। मैंने उसे नाट्य शास्त्र के सभी नियमों को गड़बड़ करते देखा। और मुझे आश्चर्य हुआ कि इस औसत दर्जे के कलाकार में ऐसा क्या था जिसने उसे इतना आगे बढ़ने में सक्षम बनाया, जबकि मैं अभी भी फिर से नृत्य शुरू करने का कोई तरीका नहीं खोज पाया था।

कई सालों में पहली बार मुझे खुद पर संदेह हुआ। क्या ऐसा इसलिए था कि मुझमें कोई प्रतिभा नहीं थी? क्या ऐसा इसलिए था कि मेरी कलात्मकता सामान्य से ऊपर नहीं थी? या, क्या ऐसा कुछ था जिसकी मुझमें कमी थी? इस बड़े शहर में, क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो मेरे काम को समझ सके और उसमें अपना विश्वास रख सके?

मैं एंजेला को यह सब बताना चाहता हूं।

हम बिस्तर पर चले गए। वह थकी हुई थी और जल्दी ही सो गई। मैंने उसका इंतज़ार किया

Machine Translated by Google

सांस लेने में कुछ समय लगा। फिर मैं उठा और आरामकुर्सी पर जाकर बैठ गया। कमरा गर्म था, लेकिन मैं सो नहीं पा रहा था। मैं क्या कर रहा हूँ, मैंने खुद से बार-बार पूछा। एक समय था जब मैं जानता था कि मैं कौन हूँ। कथकली की दुनिया में हर कोई मुझे और मेरी कला को जानता था। और अब मेरे पास क्या था? इस जगह पर जहाँ मैं किसी को नहीं जानता था और मेरे पास करने के लिए कुछ भी नहीं था, मैं पूरे दिन और रात किसी चीज़ के होने का इंतज़ार करता रहा। अध्ययन और अभ्यास के वे सभी वर्ष, अपनी कला को निखारने के वे सभी वर्ष, अब उनमें से किसी का भी कोई मतलब नहीं था। एक आवेग से प्रेरित, लालच से प्रेरित होकर, मैंने एक छाया का पीछा करने के लिए अपना सब कुछ त्यागने का फैसला किया था। मैंने क्या किया था?

एंजेला सो रही थी। मैंने उसकी तरफ देखा। उसके लिए मेरे मन में जो प्यार था, उसमें आक्रोश और कुछ और भी था। वह मुझे इस स्थिति में ले आई थी; उसने मुझे उन सभी चीज़ों से अलग कर दिया था जिनसे मैं परिचित था। मेरा परिवार, मेरा घर, मेरी कला। मुझे लगा कि शायद नदी के किनारे मेरे छोटे से घर में उसे भी ऐसा ही महसूस हुआ होगा। लेकिन इसमें और भी कुछ था। मैं उसके प्रति कृतज्ञ महसूस करता था। मैं हर चीज़ के लिए उस पर निर्भर था और मैं कृतज्ञ महसूस करना पसंद नहीं करता था। मैं एक रखा हुआ आदमी था जिससे मेरी गरिमा सहित सब कुछ छीन लिया गया था।

मैं चाहता था कि वह नाराज़ हो जाए। मैं चाहता था कि वह कुछ कहे। इसके बजाय, उसने दयालु होना चुना। उसने बिना मेरी एक भी नज़र पड़े सारे बिल चुका दिए। उसने पैसे मेरे पास छोड़ दिए ताकि मैं बिना कुछ मांगे सिगरेट खरीद सकूँ।

वह एयरमेल फॉर्म लेकर आई और उन्हें टेबल पर रख दिया ताकि मैं अपने परिवार को घर पर लिख सकूँ। उसने बोल्ट्स करी पेस्ट और मसाले खरीदे ताकि मैं अपने स्वाद के हिसाब से खाना बना सकूँ। उसने किताबें और पत्रिकाएँ खरीदीं ताकि मेरे पास पढ़ने के लिए कुछ हो। वह हमारे कपड़ों को लॉन्ड्रोमेट में ले गई और उन्हें साफ-सुथरे ढेर में मोड़ दिया। उसने मेरी अच्छी तरह से देखभाल की, मानो मैं कोई अपंग व्यक्ति हूँ। मानो मैं कोई बूढ़ा और अक्षम व्यक्ति हूँ। मुझे लगा कि मेरा सबकुछ छीन लिया गया है, मेरा गौरव, मेरा पुरुषत्व और पौरुष। मैं अब बहुकन था। सिकुड़ा हुआ, बेकार और नपुंसक।

मैं वापस बिस्तर पर चला गया। वह मेरे साथ लिपट गई। वह प्यार करना चाहती थी। मुझे लगा कि मैं ऐसी सभी भावनाओं से दूर हो गया हूँ। प्यार। वासना। जुनून। मैं सिर्फ़ खोने का एहसास महसूस कर सकता था। लेकिन मुझे उसे बिस्तर पर पति के रूप में रखना था, अगर जीवन में नहीं तो। कम से कम मैं उसके लिए यही तो कर सकता था।

मुझे याद आया कि कैसे एक बार नदी किनारे छोटे से घर में उसने मुझसे कहा था, 'कोमन, इतनी जल्दी क्या है? क्या तुमने फोरप्ले के बारे में नहीं सुना है?'

'फोरप्ले?' मैंने तब उसे चिढ़ाते हुए कहा था। 'हम इसे उस समय के लिए बचाकर रखेंगे जब मैं इसे खड़ा नहीं कर पाऊँगा।' एक पल के लिए, मुझे

आश्चर्य हुआ कि क्या मेरा लिंग फिर कभी खड़ा हो पाएगा। मैंने उसे वैसे ही आनंद दिया जैसे शायद कोई हिजड़ा करता है - उंगलियों और जीभ से। बाद में, जब वह अपनी तरफ मुड़ी हुई लेटी थी और मुझे पहले से कहीं ज़्यादा अप्रभावी महसूस हुआ, तो मैंने पूछा

Machine Translated by Google

रात: यह कब तक चल सकता है?

सुबह एंजेला ने कहा, 'डार्लिंग, तुम्हें बाहर निकलना ही होगा। तुम सारा दिन यहाँ बंद नहीं रह सकते। तुम लीसेस्टर स्क्वायर क्यों नहीं जाते? या नेशनल गैलरी? यह मुफ़्त है।'

मैंने कुछ नहीं कहा। उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा। 'क्या तुम अभी भी जेम्स के घर पर जो हुआ उससे दुखी नहीं हो? वह भयानक और पूरी तरह से असामान्य था। ऐसी चीजें यहाँ नहीं होती हैं। यह अमेरिका का दक्षिण नहीं है।' मैंने मुस्कुराने और उसे आश्वस्त करने की कोशिश की कि मैंने यह बात अपने दिमाग से निकाल दी है, लेकिन मेरे होंठ

मैं सिर्फ़ एक मुस्कान की गंभीर नकल ही बना सका।

मेरे आने के दस दिन बाद, एंजेला काम पर वापस चली गई। मैं दिन में बाहर जाता था; मैं सड़कों पर घूमता था, जब मेरे पैर दर्द करते थे तो बेंच पर बैठ जाता था, इमारतों को देखने के लिए रुक जाता था। जब बारिश होती थी, अगर कोई डिपार्टमेंटल स्टोर पास में होता था, तो मैं अनगिनत गलियारों से गुजरता था, सामान को देखकर अचंभित होता था। मुझे कुछ भी खरीदने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई। बस देखने से ही मेरा पेट भर जाता था। और मेरे दिन को विराम देने वाला वह कॉल था जो मैंने राम गोपाल को किया था। मैंने अभी भी उम्मीद नहीं छोड़ी थी।

हर दिन मुझे एक महिला की आवाज़ सुनाई देती थी, 'वह उपलब्ध नहीं है। क्या मैं कोई संदेश ले सकती हूँ?' पहले कुछ दिनों में मैंने संदेश छोड़ा। 'क्या आप

उसे बताएँगे कि कोमन ने फ़ोन किया है? मैं शोरनुर की एक कथकली नर्तकी हूँ। मैं उससे मिलना चाहती हूँ। मुझसे ... पर संपर्क किया जा सकता है।' और मैं एंजेला का फ़ोन नंबर और उसका नाम बताती थी।

एक बार उसने कहा, 'कृपया रुकें, मुझे लगता है कि वह यहाँ है।' कुछ मिनट बाद, वह लाइन पर वापस आई और कहा, 'वह अभ्यास सत्र में है और उसे परेशान नहीं किया जा सकता। क्या आप कृपया बाद में कॉल करेंगे?' जब मैंने फिर से कोशिश की, तो मुझे सामान्य उत्तर मिला। 'वह उपलब्ध नहीं है।' मैं अविचलित था। वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति था और उसका

व्यस्त होना स्वाभाविक था। मैं इन दिनों में से किसी एक दिन उससे मिलने जाऊँगा। उस सप्ताहांत, हम देश में जेम्स
के घर जा रहे थे। जेम्स एंजेला का गॉडफादर था। वह एक स्टॉकब्रोकर था जो देश में सेवानिवृत्त हो गया था।

एंजेला ने खुशी से कहा, 'तुम्हें असली अंग्रेजी देहात देखने को मिलेगा।' 'तुम्हें यह बहुत पसंद आएगा, कोमन।' ट्रेन में, मैंने परिदृश्य को बदलते देखा और खुशी की

लहर महसूस की। मेरी आत्मा पर छाई उदासी दूर होती दिखी।

जेम्स और उनकी पत्नी ऐनी बहुत दयालु थे। उन्होंने मुझसे अनगिनत सवाल पूछे।
वे दोनों भारत गए थे। लेकिन कभी दक्षिण नहीं गए, उन्होंने कहा। 'हम राजस्थान और दिल्ली गए। फिर हम ताजमहल देखने के लिए आगरा गए और हम चले गए।

Machine Translated by Google

कश्मीर तक भी। यह बहुत खूबसूरत था; भारत की हमारी बहुत प्यारी यादें हैं।' उस शाम बाद में, एंजेला और मैं उनके बहुत बड़े बगीचे में टहल रहे थे। दूर से मुझे

एक आवाज़ सुनाई दे रही थी। एक खोखली, कप जैसी आवाज़। 'यह क्या है?' मैंने एंजेला से पूछा।

'कोई टेनिस खेल रहा है,' उसने कहा।

वह वापस अंदर चली गई और मैं पेड़ों को देखते हुए इधर-उधर घूमने लगा। ठंड बढ़ रही थी लेकिन मैं वापस अंदर जाने के लिए अनिच्छुक था। मुझे लगा जैसे मैं एक ऐसी दुनिया में वापस आ गया हूँ जिसे मैं समझ सकता हूँ। मैंने पेड़ों और पौधों की जांच की; अपनी उंगलियों के बीच पत्तियों को महसूस किया और अपनी उंगलियों को मिट्टी में दबाया। आखिरकार ठंडी रात ने मुझे अंदर जाने के लिए मजबूर कर दिया और मैं जेम्स को फोन पर सुनने के लिए अंदर गया। 'ओह नहीं, वह एक दोस्त है। मेरी धर्म-पुत्री का दोस्त। वे मिलने आए हैं। वे सप्ताहांत के लिए यहाँ हैं। फोन करने के लिए धन्यवाद। वास्तव में बहुत-बहुत धन्यवाद। बेशक, मैं समझता हूँ। किसी को अपने पड़ोसियों का ख्याल रखना चाहिए। नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। धन्यवाद। शुभ रात्रि।'

मैंने पूछा, 'क्या गड़बड़ है?'

'कुछ भी नहीं।' जेम्स ने मेरी नज़रों से नज़रें नहीं मिलाईं। वह शर्मिंदा था। 'एक पड़ोसी ने फ़ोन किया था। वे थोड़े चिंतित थे। उन्होंने कहा कि बगीचे में कोई अजनबी है। बस इतना ही।'

उस रात मैंने एंजेला से पूछा, 'क्या यहाँ के पड़ोसी हमेशा ऐसा करते हैं?' वह शरमा गई। 'खैर, यह लंदन नहीं है और वे भारतीयों के आदी नहीं हैं, इसलिए

वे संदिग्ध होते हैं।' 'तो ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं गोरा नहीं हूँ...' शायद तभी मुझे लगा कि बहुकन के रंग मुझ पर जम गए हैं। मैंने उसका हाथ अपने हाथ के साथ रखा। उसका हाथ

क्रीमी था। इसके विपरीत, मेरा मैला था। दूध के बादल के साथ कॉफी। 'एंजेला, मुझे बताओ, क्या इससे तुम्हें कोई फर्क पड़ता है? मेरा रंग?'

ठंड बढ़ती जा रही थी और मुझे बाहर निकलने में हिचकिचाहट महसूस हो रही थी। मैं बाहर जाने के बजाय घर के अंदर ही कंबल ओढ़कर चाय और टोस्ट पीकर रहना पसंद करता। मैंने सोचा कि आखिर देखने या करने के लिए क्या बचा है। एक बार फिर मेरे मन में एक आवाज़ आई: तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

एंजेला के बिना मैं नंगा और असुरक्षित महसूस करता था। मैं वह सब करने के लिए तैयार था जो वह चाहती थी, बशर्ते वह मेरे साथ जाए। इससे वह क्रोधित हो जाती थी। 'मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ, कोमन,' उसने कहा। 'तुम मुझसे चिपक नहीं सकते। तुम कभी ऐसे नहीं थे। मुझे लगता था कि तुम सबसे आत्मनिर्भर व्यक्ति हो जिसे मैं जानता हूँ। तुम्हें क्या हो गया है?' मैं उसकी ओर देखता और कहता, 'मुझे यहाँ से नफरत है। मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? मैं बस तुम्हारे सहारे जी रहा हूँ।'

Machine Translated by Google

'ओह, ऐसा मत कहो। जल्दी ही कुछ न कुछ हो जाएगा, तुम देखोगे। मैं एक एजेंट के साथ अपॉइंटमेंट लेने की कोशिश कर रहा हूँ। हालाँकि, कथकली के साथ, मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ कि मुझे ऐसे एजेंट से बात करनी चाहिए जो नर्तकियों या अभिनेताओं के साथ काम करता है। अगर कोई एजेंट आपको काम पर रखता है, तो कम से कम आप दरवाज़े पर पैर तो रख पाएँगे। आप कुछ हफ़्तों में हार नहीं मान सकते,' एंजेला कहती और उस शाम हम साथ में बाहर निकलते 'तुम्हें इस निराशा से बाहर निकालने के लिए जिसमें तुम डूबे हुए हो', जैसा कि उसने कहा।

अब मैंने एंजेला की ओर देखा और उसकी आँखों में चिंता देखी। 'मैं थोड़ी देर में निकल जाऊँगा,' मैंने उससे कहा। 'मैं बाहर जाऊँगा। मैं वादा करता हूँ।'

मैं ट्राफलगर स्क्वायर गया। कबूतर नीचे उतरे। मैंने उनकी लाल आंखों को देखा और उनके झपट्टा मारने, उड़ने और अपनी मर्जी से कुछ भी करने की क्षमता पर क्रोधित हुआ। मैंने चारों ओर देखा। जिस तरफ मैं था, वहां कोई नहीं था। मैंने अपना पैर उठाया और कबूतर पर लात मारी। मेरा जूता क्षणिक रूप से टकराया लेकिन यह काफी था। मैं जीवित महसूस कर रहा था। मेरे चारों ओर कबूतर उड़ गए, अपने पंख फड़फड़ाने लगे।

मुझे लगा कि मेरी हताशा कम हो गई है। धीरे-धीरे मुझे लगा कि मेरे अंदर एक नया उद्देश्य उभर रहा है।
मुझे।

मैं वापस बेड-सिट पर गया और अपने पिता द्वारा दिए गए पते को खोजने लगा। 'वह कोई डांसर नहीं है या कला से दूर-दूर तक जुड़ा हुआ नहीं है। लेकिन उसके पिता ने मुझे बताया कि उसकी वहाँ अच्छी नौकरी है। वह एक होटल में काम करता है और अगर तुम्हें कभी किसी चीज़ की ज़रूरत होगी, तो वह मदद करेगा। उसके पिता ने तुम्हारे बारे में उसे पहले ही लिख दिया है।'

मैंने नंबर पर कॉल किया। 'दामू, यह कोमन है,' मैंने शुरू किया। अगले दिन मैं उससे मिलने गया। दामू लंदन के सबसे मशहूर भारतीय रेस्तरां कंदस्वामी में काम करता था। 'मैं तुम्हारे लिए रसोई में नौकरी ढूँढ सकता हूँ। यह अस्थायी होगा, लेकिन शायद बाद में हम देख सकें कि क्या किया जा सकता है। क्या तुम ऐसा कुछ करना चाहोगे? यह एक तुच्छ काम है...तुम्हारी आदत नहीं है...' मैंने मुस्कुराया। कितना उचित लगा, मैंने सोचा। बहुकन, जंगल छोड़ने के बाद, राजा ऋतुपर्ण की सेवा में एक दास बन गया। वह उनका रसोइया और सारथी था।

यह उचित ही था कि मैं नौकर बन जाऊं।

'अभी तो मैं कुछ भी ले लूँगा। बस इतना ही कहूँगा कि तुम अपने पिता को मत बताना। मेरे पिता का दिल टूट जाएगा जब उन्हें पता चलेगा कि मैं एक रेस्टोरेंट में कुली का काम कर रहा हूँ,' मैंने धीरे से कहा।

दामू ने आह भरी। 'तुम्हें मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है। मैं समझता हूँ। यह वह षड्यंत्र है जिसे हमें जीवित रखना है ताकि भारत में हमारे घरों में लोग यह न रोएँ कि हम क्या करने को मजबूर हो गए हैं। तुम्हें गंदे बर्तन धोने और फर्श साफ करने का काम नहीं करना है, मेरे और तुम्हारे पिता कहते थे। घर वापस आओ और मैं सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हारा पेट दिन में तीन बार भरा रहे।

Machine Translated by Google

"हमारे परिवार को यह समझाना कठिन है। वहां श्रम की कोई गरिमा नहीं है, यह सच है।"

मुझे चिंता थी कि एंजेला क्या कहेगी। लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ा। 'वैसे भी यह ज़्यादा दिन तक नहीं चलेगा,' उसने कमर हिलाते हुए अलमारी का दरवाज़ा बंद करते हुए कहा।
यह लंबे समय तक नहीं रहेगा, यह एक मिथक था जिसे एंजेला कायम रखना पसंद करती थी।

हमारी ज़िंदगी उलझने लगी। मेरे काम के घंटे उसके काम के घंटों से अलग थे और हम शायद ही कभी एक-दूसरे से मिलते थे। मैंने टेबल पर पैसे रखे थे, अब मेरे पास कुछ पैसे थे, ताकि वह कुछ बिल चुका सके और उसने मुझे नोट लिखकर दिए थे। हम सिर्फ़ एक ही बिस्तर पर रहने वाले रूममेट थे। अजीब बात यह है कि मुझे कंडास्वामी के यहाँ संतुष्टि मिली। मैं पूरे दिन व्यस्त रहता था और मेरे पास बहुत कम समय बचता था, लेकिन मैं गंभीरता से व्यस्त होने की संतुष्टि जानता था।

एक शाम, शेफ़ मेरे साथ पिछवाड़े में सिगरेट पीने के लिए आया। हमने तमिलनाडु के खाने और व्यंजनों के बारे में बात की। वह मदुरै से था। मैंने उसे नाज़रेथ में पले-बढ़े होने के बारे में बताया। उसकी आँखें पुरानी यादों से भर गईं। 'मुझे एक सहायक की ज़रूरत है। क्या तुम मेरे लिए काम करना चाहते हो?' उसने पूछा।

'क्यों?' मैंने पूछा। 'तुम मेरे बारे में कुछ नहीं जानते। भले ही मैं खाना बना सकती हूँ या नहीं।' 'मेरे लिए यह जानना ही
काफी है कि एक आदमी खाने को किस नज़र से देखता है। तुम भी उसे वैसे ही देखते हो जैसे मैं देखता हूँ।
बाकी आप आगे बढ़ते हुए सीख जाएंगे।'

बहुकन ने रसोई में चमत्कार किया। उनकी पाक कला की बराबरी करने वाला कोई नहीं था। मैंने खाना बनाना सीखा और समय के साथ मैं कंडास्वामी मेनू में तीन नए व्यंजन भी शामिल करने में सक्षम हो गया। उन्हें के'स एन्ना कथ्रिकाई, के'स उल्ली थीयाल और के'स फिश इन बटरमिल्क स्टू कहा जाता था। के का मतलब कोमन था लेकिन आमतौर पर इसका मतलब कंडास्वामी ही होता था। मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। मैं कुछ करने में खुश था, भले ही वह कथकली न हो।

लंदन आए मुझे लगभग तीन महीने हो चुके थे। मैं अभी तक नृत्य या प्रदर्शन कला की दुनिया से कोई संपर्क नहीं बना पाया था। एंजेला अभी भी इस उम्मीद से चिपकी हुई थी कि मैं किसी दिन नृत्य फिर से शुरू कर दूँगा। मैंने ऐसा नहीं किया। मैंने इसके बारे में सोचना बंद कर दिया था। मैंने वापस जाने के बारे में सोचा, लेकिन यह स्वीकार करने का अपमान कि मैं वह हासिल नहीं कर पाया जो मैंने करने का लक्ष्य रखा था, ने मुझे रोक दिया। पहले से कहीं ज़्यादा मुझे संस्थान में मेरा मज़ाक उड़ाने का डर था।

दिसंबर का पहला हफ्ता था और मेरी छुट्टी थी। एंजेला जल्दी आ गई और बोली, 'आज रात हम एक पार्टी में जा रहे हैं। हेलेन शहर में वापस आ गई है और उसके और मेरे किसी जानने वाले ने उसके लिए एक छोटी सी पार्टी रखी है। और सोचिए, हेलेन किसी ऐसे व्यक्ति को जानती है जो राम गोपाल को जानता है। तो शायद अब तुम आखिरकार उससे मिल पाओगी।' मैंने कुछ नहीं कहा। मुझे अब ज़्यादा उम्मीद नहीं बची थी। लेकिन जाना अच्छा रहेगा

Machine Translated by Google

एंजेला के साथ बाहर.

यह लंदन में मेरा पहला घर था। एक पुराना लाल ईंटों वाला घर जिसमें एक छोटा सा दीवार से घिरा बगीचा था। एंजेला के दोस्त, जो एक लेखक हैं, ने हमें अपनी कार में बिठाया।
एंजेला आगे की यात्री सीट पर बैठी और उससे बात की। मैं पीछे बैठा, यह जानने की कोशिश कर रहा था कि हम कहाँ जा रहे हैं। उसकी आवाज़ वैसी ही थी जैसी वह अपने जैसे लोगों से बात करते समय इस्तेमाल करती थी। मैंने सोचा कि यह गड़बड़ आवाज़ों का शासन है।

'वह एक नर्तक है,' उसने सभी को बताया।

मैंने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'मैंने पिछले तीन महीनों से नृत्य नहीं किया है।' 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,' वह झल्लाकर बोली।

'तुम मुझे क्यों नहीं बताते कि मैं एक रेस्टोरेंट में काम करता हूँ? क्या तुम्हें मेरे काम पर शर्म आती है?' उसने मेरी तरफ़ घूर कर देखा और किसी ऐसे व्यक्ति की ओर देखकर मुस्कुराई जिसे वह पहचानती थी।

मैं सिर दर्द की शुरुआत के साथ ही मुड़ा। कमरा गर्म था और बहुत सारे लोगों और सुगंधों से भरा हुआ था। धूपबत्ती जल रही थी और पृष्ठभूमि में रविशंकर का सितार बज रहा था।

मैं चला गया और एक गिलास पानी के लिए रसोई में चला गया।
एक महिला मेज पर बैठी थी। 'हैलो,' उसने धीरे से कहा।

मैंने अपने लिए एक गिलास पानी डाला और पूछा, 'क्या तुम पार्टी में शामिल नहीं होना चाहते?'
फिर मुझे एहसास हुआ कि वह मेज़बान थी। 'तुम्हारा घर बहुत बढ़िया है,' मैंने कहा, असहजता दूर करने की कोशिश करते हुए। 'पार्टी भी बढ़िया रही।' वह मुस्कुराई। 'तुम्हें विनम्र होने की ज़रूरत नहीं है। मेरे पति कलाकार हैं। वे सभी उसके दोस्त हैं। मैं वास्तव में उनमें से किसी को नहीं जानती। मैं एक नर्स हूँ, आप देखिए। और मेरे पैर मुझे मार रहे हैं; मैं काम पर पूरे दिन खड़ी रहती हूँ और मैं पूरी शाम फिर से खड़ी नहीं होना चाहती। मैं अपने पैरों को थोड़ा आराम दे रही हूँ। पार्टी मेरे बिना भी चलेगी।'

मैंने पानी का एक घूंट लिया और उसके सामने बैठ गया। 'मैं एक रेस्तरां में काम करता हूं और मैं भी पूरे दिन खड़ा रहता हूँ। मुझे लगता है कि मैं अपने पैरों को भी कुछ आराम दूँगा।'

'मैंने किसी को कहते सुना कि तुम एक डांसर हो। क्या तुम्हारे अंदर बैले डांस है? देश?'उसने कहा.

मैंने अपने बालों में उंगलियाँ फिराईं। वे रूखे और सूखे लग रहे थे। मेरे आने के कुछ दिनों बाद, एंजेला ने मुझसे कहा कि मैं बालों में तेल लगाना बंद कर दूँ। उसने कहा था, 'इसकी गंध बहुत तेज़ है और आप जानते ही हैं कि इससे लोग दूर हो जाते हैं।'

'लेकिन तुम्हें वहाँ कोई आपत्ति नहीं थी?' मैंने कहा। उसे मुझमें और क्या पसंद नहीं था, मैंने पूछा।
मैंने सोचा और अपना हेयर ऑयल फेंक दिया। मैं बस उसे खुश करना चाहता था।

'नहीं, मैं बैले नृत्य नहीं करता,' मैंने कहा। 'यह कुछ और है। इसे कथकली कहते हैं।' मैंने नज़रें फेर लीं और कहा, 'मैं एक नर्तकी हुआ करती थी। मैंने तीन महीनों से नृत्य नहीं किया है।' उसकी आँखों में सहानुभूति थी और मैंने पाया कि मैं उसे सब कुछ बता रही हूँ।

'यह दुख की बात है कि आप अपनी प्रतिभा बर्बाद कर रहे हैं,' उसने कहा। 'यह काफी दुखद भी है।

Machine Translated by Google

तुम्हें वापस जाना चाहिए। लोग गलतियाँ करते हैं। यह स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं है कि तुमने गलती की है। लेकिन जब तुम्हें पता हो कि गलती हुई है, तब भी गलती करते रहना गलत है।'

मैंने एंजेला को दरवाजे से देखा। वह अपना सिर पीछे झुकाकर हंस रही थी। मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने उसे आखिरी बार कब हंसते हुए देखा था। और मुझे एहसास हुआ कि एक जोड़े के रूप में हमारे जीवन ने वह सब कुछ नष्ट कर दिया है जो कभी हमें एक साथ लाता था।

वह उस आदमी की आँखों में देख रही थी। यह लेखक ही था जो हमें यहाँ लाया था। उसका चेहरा गुलाबी और लाल था। उसने अपनी उँगली की नोक से उसके गाल को छुआ। उसकी आँखों ने उसकी निगाहों को पकड़ लिया। मैंने सोचा, अगर वे अभी तक प्रेमी नहीं हैं, तो वे जल्द ही प्रेमी बन जाएँगे। मैं कमरे में वापस गया और एंजेला की ओर चला गया। हेलेन ने मुझे रोका और मेरे हाथ में एक गिलास थमा दिया। 'रुको, सब ठीक हो जाएगा,' उसने कहा। वह पहले से ही नशे में थी। 'क्या एंजेला ने तुम्हें नहीं बताया? मेरा दोस्त राम गोपाल से बात करने जा रहा है।' मैंने उसे घूर कर देखा। मुझे एहसास हुआ कि मैं सारे दिखावे से थक गया हूँ। एंजेला दिखावा कर रही थी कि मैं नाचूँगा। मैं दिखावा कर रहा था कि हमारे बीच सब ठीक है।

'हेलेन, परेशान मत हो,' मैंने कहा। 'मुझे नहीं लगता कि मैं कभी लंदन में नाच पाऊँगा।

हम बस नाटक कर रहे हैं कि कुछ भी गलत नहीं है। एंजेला यह जानती है और मैं भी। क्या आप जानते हैं कि मैं इन दिनों एक रेस्तरां में काम करता हूँ? मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं इसका आनंद भी लेता हूँ। लेकिन मैं एक नर्तक हूँ और इस जीवन में नृत्य के लिए कोई जगह नहीं है। मेरी तरह का नृत्य, 'मैंने गुर्राते हुए कहा। 'चाहे एंजेला और मैं एक-दूसरे के सामने कितना भी दिखावा क्यों न करें, मैंने यहाँ आकर गलती की है और मैं बस यही चाहता हूँ कि वह इसे स्वीकार करे।' मैंने कमरे में सन्नाटा सुना। हेलेन ने इसे हंसी और सामान्य बातों से भरने की कोशिश की। 'क्या हम सभी गलतियाँ नहीं करते? जीवन एक गलती है।' मैंने घृणा से अपना गिलास नीचे रखा और एंजेला की कोहनी को छुआ। 'मैं जा रहा हूँ।

क्या आप मेरे साथ चलना चाहेंगे?'

Machine Translated by Google

एंजेला

हमने ट्यूब में बात नहीं की। जब हम बेड-सिट पर पहुँचे, तो मैंने दरवाज़ा खोला और उस पर भड़कते हुए कहा, 'तुमने मेरे दोस्तों के सामने मेरा अपमान किया।'

'दोस्तों! तुम उन दिखावटी लोगों को अपना दोस्त कहते हो? वे घिनौने हैं। मैं उनके जैसे लोगों से तंग आ चुका हूँ। छद्म कलाकार और कुछ नहीं। तुम उनके साथ रहना कैसे बर्दाश्त कर सकते हो?' उसने कहा।

'तुम्हें लगता है कि तुम बहुत बढ़िया कलाकार हो, है न? तुम जो हो, वह एक बहुत बड़ी गलती और शर्मिंदगी है,' मैंने कहा। मैं अचानक रुक गया, अपना मुंह ढक लिया।
मैने क्या किया था?

Machine Translated by Google

कोमान

मैंने अपने चेहरे पर कोई भावना नहीं दिखाई। मेरे लिए दूर जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। मेरे पास पीछे हटने के लिए कोई जगह नहीं थी। मेरे पास छिपाने के लिए सिर्फ़ मेरा चेहरा था।

उस रात मुझे नींद नहीं आई. मैं जंगल में नाला के बारे में सोचता रहा.

नल जो दमयंती के सोते समय जागता रहता है। नल जो दमयंती का सिर अपने पैरों से उतारता है और रात में खिसक जाता है। वह अपने आप से कहता है कि वह मेरे पापों के लिए पीड़ित होने के लायक नहीं है। अपने पिता के राज्य में, उसे फिर से प्यार किया जाएगा। उसके पास खाने के लिए भोजन और पहनने के लिए कपड़े होंगे, टहलने के लिए बगीचे होंगे और सोने के लिए सबसे नरम बिस्तर होंगे। वह फिर से खुशी महसूस करेगी।

नल की सोच ठीक से नहीं चल रही थी। वह दुख और अपराध बोध से पागल हो गया था। वह बस इतना चाहता था कि उसे अकेला छोड़ दिया जाए। यहां तक कि दमयंती, जो उसके जीवन का प्यार थी, भी उसके लिए बोझ बन गई थी, जो उसकी बेकारी की याद दिलाती थी। इसलिए नल जंगल में भटकता रहा, देवताओं के खिलाफ़ शिकायत करता रहा, 'अगर तुम मेरे जैसे लोगों के साथ ऐसा करोगे, जिन्होंने तुम्हारा नाम पूरी लगन से लिया है, व्रत और तपस्या की है, भेंट चढ़ाई है और बलिदान किए हैं, तो फिर कौन तुम्हारी पूजा करेगा?' जैसे-जैसे समय बीतता गया, नल को लगा कि शायद देवता भी नियति के षड्यंत्रों से परे नहीं हैं। और उसने महसूस किया कि उसके ऊपर एक शांति छा गई है। उसके लिए बस इतना ही करना बाकी था कि वह फिर से उनकी मदद मांगे: कृपया मेरी पत्नी को घर का रास्ता

खोजने में मदद करें। कृपया मुझे दुःख से पागल न होने दें। कृपया किसी को भी मेरी कायरता के बारे में न बताएं। कृपया, हे देवताओं, कृपया।

मैंने सोचा, उस तंग कमरे में, मैं कभी भी उन भूमिकाओं से नहीं बच पाऊँगा जिन्हें निभाने के लिए मैं अभिशप्त हूँ। मैं निष्प्रभावी नल और विकृत बहुकन दोनों बन जाऊँगा।

मैं एक बोझ और शर्मिंदगी हूँ। अगर मैं नदी के किनारे अपने छोटे से घर में वापस चला जाऊँ, तो मैं इस अभिशाप से मुक्त हो जाऊँगा। मैं एक बार फिर वही बन जाऊँगा जो मैं था।

Machine Translated by Google

शांतम

तो हम नवरस में परम अभिव्यक्ति तक पहुँचते हैं। शांतम। हम शांति को कैसे चित्रित करते हैं? हम अपनी विशेषताओं को किस तरह से पेश करते हैं? शांतम अभिव्यक्ति से रहित चेहरा नहीं है। शांतम मांसपेशियों की गति का अभाव नहीं है।

शान्तम का अर्थ अपने आप को एक अचेतन प्राणी में परिवर्तित करना नहीं है।

यह समझने के लिए कि हमें क्या करना है, हमें पहले यह समझना होगा कि शान्तम क्या है।

क्या यह गर्मी के महीने में भोर से पहले का वह समय है, जब क्षितिज पर प्रकाश की एक पतली रेखा दिखाई देती है? आकाश में कोई हलचल नहीं होती और धरती भी। पक्षी अभी भी सो रहे हैं और हवा भी गर्मी की वजह से रुकी हुई है। उस समय एक शांति होती है जिससे आप सीख सकते हैं। सभी विचारों पर लगाम लगाएँ। अपने मन को शांत करें। अपने भीतर की शांति को महसूस करें।

यह नींद की शांति नहीं है। इसलिए मैं आपको सुझाव देता हूँ कि आप चरमुंडी को देखें। क्या आप इसे जानते हैं? नदी के किनारे रहने वाला ग्रे बगुला, अपनी पतली, दुबली टांगों, ग्रे पीठ, पतली साँप जैसी गर्दन और खंजर जैसी नुकीली, सीधी चोंच के साथ। यह जल पक्षियों का राजा है क्योंकि, अन्य जल पक्षियों के विपरीत, यह अपने शिकार का पीछा नहीं करता। इसके बजाय, यह बिना किसी हरकत या भावना के पानी में घुटनों तक डूबकर इंतजार करता है। ग्रे बगुला प्रतीक्षा करते समय शांति का प्रतीक है।

तो आप देखिए, ऐसी शांति हो सकती है जो जीवंत हो। मन काम करता है लेकिन
विचार ताड़ के फल की तरह होने चाहिए।

आप पूछते हैं, ताड़ का फल क्यों?

शांतम एक अनुशासन है। ताड़ के पेड़ के बैंगनी काले तोप के गोले जैसे खोल के बारे में सोचिए। यह किसी भी चीज को अपने अंदर प्रवेश नहीं करने देता। और अगर कोई चीज प्रवेश भी कर जाती है, तो उसे तंतुओं से होकर गुजरना पड़ता है। आपका मन भी ऐसा ही होना चाहिए। जहाँ तक आपके विचारों की बात है, तो तंतुओं में छिपी उन छोटी-छोटी थैलियों को देखें।
आप उन्हें अपने नाखूनों से छीलते हैं और फिर आप देखते हैं: नरम और कोमल, फल चमकता है, लगभग किसी भी गंध या स्वाद से रहित। बर्फ की तरह पारदर्शी, फल शांतम का प्रतीक है। जीवित, वहाँ और फिर भी वहाँ नहीं।

यही शांतम् है। वैराग्य। स्वतंत्रता। इच्छा का अभाव।
जीवन के साथ समझौता करना। जब सब कुछ हो जाता है, तो हम सभी यही चाहते हैं। शांतम।

राधा

Machine Translated by Google

मुझे लगता है कि मेरे अंदर शांति का एक केंद्र बसा हुआ है। मेरे अंदर जो जुनून था, जो घृणा मैं अपने जीवन के लिए महसूस करता था, जो दुख मैं जानता था कि मैंने जो मौके गंवाए हैं, वह गुस्सा मैं इस दमघोंटू अस्तित्व में फंसने पर महसूस करता था, आगे क्या होने वाला है इसका डर, खुद के लिए जो घृणा मैं महसूस करता था, तड़प, धोखा, चिंता, दर्द...भरी, टेढ़ी-मेढ़ी अराजकता इस शांति में बस गई है जो मुझे भर देती है।

मैं श्याम के बारे में सोचती हूँ। मैं उसे टॉयलेट सीट पर बैठा देखती हूँ, उसका सिर उसकी बाहों में है और उसकी आँखों में आँसू हैं। मुझे तब पता चला कि उसे क्रिस और मेरे बारे में पता था। जब भी मैंने झूठ बोला और धोखा दिया और क्रिस की बाहों में लेटी और वह मेरी बाहों में, मुझे कभी नहीं लगा कि मैं कोई अपराध कर रही हूँ। जब हमने प्यार किया, बेवजह त्याग दिया, तो विश्वासघात की कोई छाया नहीं थी। लेकिन मैं अपने दिमाग से श्याम की उस रात की तस्वीर नहीं मिटा सकती, जो मैंने उसे उस रात देखी थी। मुझे लगता है कि उसने मुझे जो कुछ भी सहना पड़ा है, वह उससे कहीं ज़्यादा है जो मैंने उसे बना दिया है। एक टूटा हुआ आदमी, चोटिल और अपमानित, और मुझे पता है कि यह मैं ही हूँ जिसने उसे इतना दुख पहुँचाया है। मेरी बेरुखी की हद मुझे डराती है।

श्याम के लिए मेरे पास कोई प्यार नहीं बचा है। मैं उससे प्यार नहीं कर सकती, मैं उसके साथ रह सकती हूँ। लेकिन मैंने उसका स्वाभिमान छीन लिया है। मैं उसके साथ ऐसा कैसे कर सकती थी? यह क्रूर था।
इससे भी बदतर बात यह है कि मैंने उससे कभी प्यार नहीं किया था।

मुझे लगता है कि मुझे उसे उसके गौरव से बचाना होगा। मुझे कम से कम उसकी गरिमा तो बचानी ही होगी।

मैं अपराध बोध से ग्रस्त हूं, लेकिन मैं इस विचार से भी ग्रस्त हूं कि मेरा यह प्रेम संबंध एक विद्रोह से अधिक कुछ नहीं है।

क्या मैं वाकई सोचती हूँ कि मैं क्रिस के साथ जीवन जी सकती हूँ? मैं उसके बारे में क्या जानती हूँ सिवाय इसके कि हमारे शरीर एक दूसरे के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं और जब हम साथ थे, तो बाकी दुनिया का अस्तित्व समाप्त हो गया था? एक बार यह काफी था। अब और नहीं।

अब जब मैं क्रिस के साथ होती हूं, तो उसे देखती हूं और सोचती हूं कि क्या मैं उसे जानती भी हूं।
और मैं खुद से पूछता हूँ, मैं उसके साथ यहाँ क्या कर रहा हूँ? जुनून खत्म हो गया है और कुछ और नहीं है।

मैंने मान लिया कि व्यभिचार खुद को अंधेरे स्थानों में खींच लाया है। होटल के कमरे और बॉक्स बेड, टपकते नलों वाले बाथरूम और बिस्तर की चादरें जो पिछले संबंधों के कारण फीकी पड़ गई थीं। चुराए गए चुंबन और गुप्त संभोग। रंगीन, मुड़ी हुई खिड़कियों वाली कारें और गंदे सिनेमाघर।

मेरे दिमाग में व्यभिचार का जानवर वासना थी। एक ऐसा प्राणी जो अपने पंजे फैलाता है, अपनी नुकीली गुलाबी जीभ को अपने होठों पर फिराता है और खुद को एक सुविधाजनक स्थान पर लपेट लेता है। जब वासना आप पर झपटती है, तो वह हर अवरोध, संयम के हर बंधन को तोड़ देती है। यह चुदाई लंड और चूत के अपवित्र सी से भरी हुई थी; अवज्ञाकारी, साहसी, वह सब कुछ जो सभ्य और प्रबुद्ध, अनुमत और बेदाग था, उसे खत्म कर देता है।

यह सब छल-कपट और निषिद्धता की बू आ रही थी। यह सब धड़कते दिल और झूठ बोलने वाली जीभ की अनगिनत हरकतों के साथ था।

Machine Translated by Google

मेरा प्यार इनमें से कुछ भी नहीं था, मैंने सोचा था। मेरा प्यार न तो धुंधला था और न ही घटिया। मेरा प्यार पारंपरिक व्यभिचार की गंदगी से ऊपर था। मेरा प्यार एक सुगंधित बगीचे में पैदा हुआ था जहाँ जुगनू और सितारे पहरा दे रहे थे। मेरा प्यार एक कमरे में रहता था जहाँ पर्दे फड़फड़ाते थे और हवा चलती थी। मेरा प्यार संगीत और शब्दों और हज़ारों कलियों के बीच बड़ा हुआ। मैंने खुद से कहा कि ऐसे प्यार को कैसे गंदा या नीच कहा जा सकता है।

फिर भी, जब मैं क्रिस के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे श्याम की परछाई दिखाई देती है। और जब मैं
श्याम के बारे में सोचो, मुझे क्रिस के साथ भागने की संभावना दिख रही है।
मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि मैं इनमें से किसी एक के साथ नहीं रह सकता।

मैं क्रिस से आखिरी बार मिलने जाता हूँ, ताकि खुद को आश्वस्त कर सकूँ कि मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ। क्या यह संभव है कि जिसने मुझे ऐसे जोखिम उठाने और अपने डर और संकोच को दूर करने के लिए प्रेरित किया, वह अब मुझे ठंडा छोड़ सकता है? ऐसा कैसे हो सकता है कि सारे जुनून, सारे सपने अचानक बेकार हो जाएँ?

वह बात कर रहा है, लेकिन मैं उसकी कही हुई कोई बात नहीं सुन पा रहा हूँ। मैं उसके होठों को हिलते हुए और उसकी आँखों में भाव बदलते हुए देखता हूँ। मैं उस मुस्कान को देखता हूँ जो कभी मेरे गले तक आ गई थी।
जब मैं उसकी ओर देखता हूँ तो मेरा दिल अपनी जगह पर ही रहता है। कोई जवाब देने वाला तार नहीं है।
अंधेरे में कोई छलांग नहीं, कोई चमक नहीं।

वह मुझे वही बताने की कोशिश कर रहा है जो मैं पहले से ही जानता हूँ। 'मुझे पता है। अंकल ने मुझे बताया था,' मैंने उससे कहा। 'तुम मेरे साथ ईमानदार क्यों नहीं थे?' मैंने पूछा।

वह शरमा गया। 'मैं उससे कैसे पूछ सकता था कि क्या वह मेरा पिता था?' 'क्या वह है?' 'मुझे अभी
तक नहीं

पता। मेरी माँ और वह प्रेमी थे। इतना तो मैं जानता हूँ।' मैं जाने के लिए उठता हूँ। मुझे एहसास होता है कि कहने के लिए कुछ भी
नहीं बचा है।

वह पूछता है, 'इससे हमारे रिश्ते पर क्या फर्क पड़ता है?' मुझे लगता है कि उसे यह सोचने देना बेहतर होगा कि उसके खुलासे से हमारे बीच चीज़ें बदल गई हैं।
हम।

'हाँ,' मैंने कहा। 'तुमने मुझे धोखा दिया। मुझे लगा कि हमारे बीच कोई रहस्य नहीं है। मुझे लगा कि मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ। तुमने मुझसे और क्या छिपाया है? क्या कोई पत्नी है, शायद? कोई बच्चा?' मैं घिसी-पिटी बातें कहता हूँ। यह सबसे बड़ी निंदा है।

वह हैरान है। वह कहता है, 'आप गंभीर नहीं हो सकते।'

'मेरा विश्वास करो, मैं हूँ,' मैं कहता हूँ। 'मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देखना चाहता।' एक और रूढ़िबद्ध वाक्य।

यह कारगर है। मुझे याद आता है कि श्याम ने एक बार मुझसे क्या कहा था: क्लिच क्लिच ही होते हैं क्योंकि वे सच होते हैं। वे काम करने की गारंटी देते हैं, चाहे उन्हें पहले कितनी भी बार इस्तेमाल किया गया हो।

उन्होंने कहा, 'यह हास्यास्पद है।'

मैं कमरे से बाहर निकल जाता हूँ। मैं पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाता।

Machine Translated by Google

एक बार जब हम साथ थे, क्रिस ने एक मेट्रोनोम निकाला। 'यह पुराना है। मुझे इसे घड़ी की तरह घुमाना है,' उसने कहा और मुझे दिखाया कि यह कैसे काम करता है।

इसके बाद उन्होंने इसे पुनः सेट किया और कहा, 'यह मेट्रोनोम की सबसे धीमी गति है।
एक मिनट में चालीस दोलन। हमारे पास लगभग आठ मिनट हैं, इससे पहले कि यह खुद को बंद कर ले और इसलिए हमारे पास केवल तीन सौ बीस दोलन हैं।
तैयार हो?' उसकी आँखें चमक उठीं और मुँह खुला रह गया।

जब मेट्रोनोम बंद हो गया, तो हमारी लय भी बंद हो गई, और एक अजीब सी खामोशी छा गई। सारी हरकतें और समय गायब हो गए। सब कुछ रुक गया- उबकाई और हांफना, कराहना और उसके और मेरे गले से निकलने वाली आवाजें, पसीने की बूंदें, शारीरिक तरल पदार्थ, त्वचा से त्वचा का टकराना। यह वही खामोशी है जो मेरे सिर में गूंजती है। एक-दूसरे के लिए हमारी ज़रूरत खत्म हो गई थी।

मेरे लिए यह एक विद्रोह का कार्य था; उसके लिए एक दिलचस्प मुठभेड़। अकेलापन और एक ज़रूरत जो बेलगाम जुनून में बदल गई थी। बस यही था।
और जैसा कि ऐसी चीजों का स्वभाव होता है, वह जैसे पैदा हुई थी वैसे ही मर भी गई। अचानक।
मैं रिसेप्शन एरिया में चली गई। श्याम ऑफिस में था। हम दोनों साथ-साथ घर से निकले।
जब मैंने कहा कि मैं उसके साथ जा रहा हूँ, तो उसने कोई टिप्पणी नहीं की। मैं उसके गुस्से के लिए तैयार था। उसकी चुप्पी मुझे डराती है।

मैं उसके दफ़्तर में जाता हूँ। वह अपनी फाइलों से नज़रें ऊपर उठाता है। 'तुम क्रिस के साथ थे,' वह कहता है।
यह एक कथन है, कोई प्रश्न नहीं।

'हाँ,' मैं कहता हूँ.

वह लगातार मेरी तरफ़ देखता रहता है। उसके चेहरे से यह पता नहीं चलता कि वह क्या सोच रहा है।

मैं कहता हूं, 'श्याम।' 'मैं जा रहा हूं।' 'शशि

बाहर है। उसे वापस भेज दो,' वह अपनी फाइलों की ओर मुड़ते हुए कहता है।

'श्याम, तुम समझ नहीं रहे हो।' मैंने अपना सिर हिलाया। 'मैं तुम्हें छोड़ रही हूँ, श्याम।' उसके हाथ में कलम एक नरम आवाज़ के साथ पन्ने

पर गिरती है। 'मुझे लगता है कि मुझे शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि तुमने क्रिस के साथ भागने के बजाय मुझे बताने की शालीनता दिखाई।' 'नहीं,' मैंने कहा। 'मैं क्रिस के साथ नहीं जा रही हूँ।' वह पेपरवेट से खेलता है। 'लेकिन तुम गर्भवती हो।' मैं उसे घूरती हूँ। उसे कैसे पता? मुझे लगता है मुझे आश्चर्य नहीं

होना चाहिए।

श्याम को मेरे मासिक धर्म सहित मेरे पूरे जीवन पर नज़र रखने की ज़रूरत महसूस होती है।

'हाँ,' मैं कहता हूँ। 'लेकिन इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।' 'एक बच्चे

को अपने पिता और माँ दोनों की ज़रूरत होती है।' उसकी आवाज़ शांत है।

'मैं तुम्हें तुम्हारे माता-पिता होने के अधिकार से कभी वंचित नहीं करूंगा। तुम बच्चे को देख सकती हो, जितना चाहो उतना समय बिता सकती हो, लेकिन मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, यहाँ तक कि एक साल के लिए भी नहीं।

Machine Translated by Google

बच्चे की खातिर.’

‘बच्चा मेरा नहीं है,’ वह कहता है. ‘मैं बच्चे का पिता नहीं बन सकता. जब तक कि वह मेरा न हो
मैं आपके बच्चे का पिता नहीं हूं।' उसके शब्द मेरे दिमाग में
गूंजने लगे।

मैं कुर्सी पर बैठ जाता हूँ। मेरे अंदर एक उथल-पुथल सी मच जाती है। मैं सोचता हूँ कि मैंने क्या किया है?
मुझे कभी यह क्यों नहीं लगा कि श्याम बांझ हो सकता है?

'मैं क्या कह सकता हूँ?' मैंने खुद को उससे कहते हुए सुना। 'मुझे खेद है। मेरा इरादा दुख पहुँचाने का नहीं था।
मैं तुम्हें यह सब सहने के लिए मजबूर नहीं करना चाहता था।'

'सुनो,' मैंने कहा, 'मुझे कुछ नहीं चाहिए। घर, व्यापार, मेरी संपत्ति, तुम यह सब रख सकती हो।' उसका चेहरा गंभीर है। 'मेरा अपमान मत करो, राधा।' 'श्याम,'
मैंने कहा। मैं उसके हाथ को छूने के लिए आगे बढ़ी।

वह मुझे झटक देता है। 'मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। मुझे खरीदा नहीं जा सकता। तुम्हारे पिता भी ऐसे ही थे। उन्हें लगता था कि वे मुझे खरीद सकते हैं और अब तुम भी वही कर रहे हो। मुझे खरीदा नहीं जा सकता। क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो? मैं हमेशा यही चाहता था कि तुम मुझसे प्यार करो।'

'लेकिन घर,' मैं फिर से कोशिश करती हूँ। मैं जानती हूँ कि वह घर से कितना प्यार करता है। मैं सोचती हूँ कि उसे अपनी बाँझपन की बात कबूल करने में कितनी कीमत चुकानी पड़ी होगी। मैं सोचती हूँ कि मैंने उसे कितना दुख पहुँचाया है। मैं सोचती हूँ कि वह मेरा इंतज़ार कर रहा है कि मैं उससे प्यार करने लगूँ। मैं खुद को उस अपराधबोध से मुक्त करना चाहती हूँ जो मैं महसूस करती हूँ।

'हाँ, घर,' वह बीच में ही बोल पड़ता है। 'मैं अपना सामान लाने के लिए किसी को तुम्हारे घर भेज दूँगा।' वह मेरी तरफ देखता है। उसकी
आँखों में दुख है। 'क्या इससे तुम खुश हो जाओगी? मेरे चंगुल से मुक्त हो जाओगी? मुझे एक असभ्य, अत्याचारी पति के रूप में सोचना तुम्हारे लिए ठीक है। शायद तब हमारा अलग हो जाना ही बेहतर होगा। मुझे बस एक मौका चाहिए था। मैं तुमसे प्यार करता था। मैं तुम्हें इस दुनिया की किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करता था। यही सब मैं तुमसे उम्मीद करता था। तुम्हारा प्यार। अगर मैंने तुम्हें दिखाया कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ, तो मुझे लगा कि तुम...इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता,' वह बीच में ही रुककर कहता है।

मुझे उस तरह प्यार करो जैसे मुझे प्यार की ज़रूरत है। वह ऐसा नहीं कहता। लेकिन मैं उसकी आवाज़ में यह बात पढ़ लेता हूँ।
उसकी आँखों में जो त्याग उभरने लगा है।

मैंने कहा, 'मैंने श्याम को छोड़ दिया है।'

चाचा के चेहरे पर भाव समझ पाना मुश्किल है। वे कहते हैं, 'तो तुमने क्रिस के साथ जाने का फैसला कर लिया है।'

मैं अपना सिर हिलाता हूँ। 'नहीं, क्रिस और मैं...' मैं शब्द बोलने में असमर्थ हूँ। क्या हमारे बीच कुछ भी समान नहीं है? क्या हम अलग हो गए हैं? क्या हमारे बीच संबंध टूट गए हैं?

मैंने कहा, 'यह ख़त्म हो गया है।'

चाचा ने सिर हिलाया, 'क्या किया राधा? क्या किया तुमने?'

Machine Translated by Google

मैं कुछ नहीं कहता.

‘क्या तुमने क्रिस को बच्चे के बारे में बताया है?’ वह अचानक पूछता है। ‘तुम्हें बताना ही होगा।’ ‘नहीं,’ मैं कहती हूँ।

‘मैं नहीं चाहती कि उसे पता चले।’ ‘क्यों नहीं? अगर बच्चा उसका

है तो शायद वह उसकी जिम्मेदारी लेना चाहेगा।

चाचा बुदबुदाते हुए कहते हैं, 'मैंने कहीं पढ़ा था कि पितृत्व साबित करने के लिए परीक्षण होते हैं।'

'नहीं।' मैंने सिर हिलाया। 'मुझे पता है कि बच्चे का पिता कौन है। क्रिस। श्याम

'उसने मुझे सिर्फ इतना बताया कि वह बांझ है।'

'तुम गैरजिम्मेदार हो रही हो। तुमने अपने पति को छोड़ दिया है। तुम क्रिस को नहीं चाहती। तुम क्या चाहती हो?' अंकल गुस्से में हैं। मैंने उन्हें पहले कभी गुस्से में नहीं देखा।

'मुझे नहीं पता। मुझे वाकई नहीं पता। अपनी पूरी ज़िंदगी मैं एक चीज़ से दूसरी चीज़ पर ठोकर खाता रहा हूँ, खुद को समझाता रहा हूँ कि ऐसा ही होना चाहिए। मैंने कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया जैसे कि मेरा अपना दिमाग है। मैंने कभी कोई निर्णय नहीं लिया। मैंने खुद को बह जाने दिया। क्या अब समय नहीं आ गया है कि मैं अपने जीवन की कुछ ज़िम्मेदारी उठाऊँ?' 'तुम क्या करोगे?' 'मुझे नहीं पता। लेकिन मैं ज़रूर करूँगा, एक दिन।'

Machine Translated by Google

श्याम

मैंने उसे जाने दिया क्योंकि वह यही चाहती थी।

मैंने उसे जाने दिया, यह जानते हुए कि अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो वह मुझे वैसे भी छोड़ देगी।

मैंने उसे जाने दिया क्योंकि उस पल मैं उससे इतनी नफरत करने लगा था कि मैं डर गया था
मुझे।

चाचा मेरी ओर देखते हैं। मुझे एहसास हुआ कि वह उनसे मिलने गई है। वे मेरा अभिवादन ऐसे करते हैं जैसे कोई शोक संतप्त व्यक्ति करता है। उनकी चुप्पी में दया का भाव है।

मैंने उससे पूछा, 'अब मैं क्या करूं?'

उन्होंने कहा, 'उसे समय दीजिए।'

मैं उसकी ओर देखता हूं। क्या यही सबसे अच्छा है जो वह सोच सकता है?

'नहीं, श्याम,' वे कहते हैं। 'मैं तुम्हें कोई सामान्य बात नहीं बता रहा हूँ क्योंकि मुझे नहीं पता कि और क्या कहूँ। उसे खुद को सुलझाना है। वह खुद ही करेगी। मेरा विश्वास करो। वह एक बुद्धिमान और संवेदनशील महिला है। जब वह खुद को सुलझा लेगी, तो वह तुम्हारी बात सुनेगी।' 'मुझे लगा कि वह उसके साथ जाएगी,' मैं कहता हूँ। 'यह उसका बच्चा है।' चाचा अपने हाथों की ओर देखते हैं। 'उसने उसे नहीं बताया है,' वे कहते हैं। 'वह बताना नहीं चाहती।' 'मैं उससे प्यार करता

था। मैं उससे किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति से ज़्यादा प्यार करता था,' मैं उनसे कहता हूँ।

'मुझे पता है,' वह कहता है। 'और अब?' 'मुझे नहीं

पता।' अब मुझे नहीं पता कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ। मैं सिर्फ़ उस दर्द के बारे में सोच सकता हूँ जो मेरे अंदर तक पहुँच गया है। और गुस्सा। अपमान, विश्वासघात, निराशा।

उन्नी ने मुझसे कहा, 'साहिब कल रवाना होंगे।' 'उनके टिकट कन्फर्म हो गए हैं।' मैंने सिर हिलाया।

रात का आसमान साफ़ है। तारे नीचे लटके हुए और चमक रहे हैं।

मैं सोचता हूँ कि रानी ओपोल क्या कहतीं: 'तुमने उससे छुटकारा पा लिया है। कम से कम अब तुम एक ऐसी लड़की ढूँढ़ सकते हो जो तुम्हारे लिए, हमारे लिए ज़्यादा उपयुक्त हो... कोई ऐसी जो एक अच्छी पत्नी बने और तुम्हारे बच्चे पैदा करे।'

मैं सोचता हूँ कि मेरे कर्मचारी आपस में क्या कहेंगे। "वह अच्छी तरह से छुटकारा पा चुका है
उसने कभी भी उसका पर्याप्त मूल्य नहीं समझा।' और मुझे लगता

है कि मैं जानता हूँ कि यह सच है, लेकिन मैं राधा से अलग होना बर्दाश्त नहीं कर सकता।

मैं राधा को उतना समय दूँगा जितना वह चाहती है। मैं उस पर दबाव नहीं डालूँगा या उससे ज़्यादा नहीं माँगूँगा

Machine Translated by Google

जितना वह देने को तैयार है, उससे अधिक नहीं।

मैं नदी के किनारे की दीवार की ओर चलता हूँ। हवा पत्तों के बीच से सरसराहट करती हुई गुज़रती है। रात एक नीले धुएँ में नहा जाती है। मैं चारों ओर देखता हूँ और फिर से गर्व की लहर महसूस करता हूँ। यह सब मेरा है, मैं सोचता हूँ।

मुझ पर शांति छा गई है। जो कुछ खोया है, उसे मैं वापस पा लूंगा।

मैं अपने फोन पर एक नंबर डायल करता हूं। पद्मनाभन के मालिक का फोन आता है।
आप पद्मनाभन को मुझे बेचेंगे?' मैंने पूछा।

मैंने सुना कि वह अपनी सांस रोक रहा है। वह कुछ नहीं बोलता। फिर वह कहता है, 'मेरे पास एक छोटा हाथी है। वासुदेवन। वह भी उतना ही सुंदर है।' 'नहीं, मुझे पद्मनाभन चाहिए,' मैंने कहा।

'वह महंगा है।' 'इससे कोई फर्क
नहीं पड़ता। मुझे वह चाहिए।' हम बिक्री पर चर्चा करने

के लिए अगले सप्ताह मिलने पर सहमत हुए। यह एक शगुन है, मैंने खुद से कहा।
जब पद्मनाभन मेरे पास होगा तो मेरा जीवन पुनः मेरा हो जायेगा।

Machine Translated by Google

चाचा

नंबर डायल करते समय मेरी उंगलियाँ काँपने लगती हैं। मुझे व्यस्त सिग्नल मिलता है। मैं फिर कोशिश करता हूँ। माया, तुम किससे बात कर रही हो?

मुझे उससे बात करने की तीव्र इच्छा हो रही है। मैं चाहता हूँ कि वह मेरे पास रहे। मैं चाहता हूँ कि वह अपनी बाँहों में मुझे लपेटे और मेरे विचारों को शांत करे।

मैं कहूँगी, 'राधा और श्याम। और क्रिस।' केवल माया ही समझ सकती है कि मैं कैसा महसूस कर रही हूँ।

लेकिन मुझे फिर से व्यस्त सिग्नल मिलता है।

मैं मणि की मृत्यु के बाद के दिनों में अपने पिता के बारे में सोचता हूँ। मैंने उन्हें कभी इतना व्याकुल नहीं देखा था। मुझे ऐसा लगा कि मेरे पिता की जीने की इच्छा खत्म हो गई है। वे मेरे घर में ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताने लगे। मेरे संस्थान चले जाने के बाद वे आते और पूरा दिन वहीं रहते। कुछ दिन बाबू उन्हें ढूँढ़ते हुए आते। 'तुम हमें क्यों नहीं बताते कि तुम कहाँ जा रहे हो, अचन?' वे गुस्से से कहते। 'हमें तुम्हारी चिंता थी।'

मेरे पिता एक भटके हुए बच्चे की तरह अपना सिर झुका लेते, दोषी और पश्चातापी।
वह कहते थे, 'मेरा इरादा तो यही था, लेकिन मैं भूल गया।'

हमने उसमें बदलाव देखा। उसे याद नहीं था कि उसने आखिरी बार क्या खाया था, लेकिन उसने बाइबल के पूरे-पूरे अंश हमें सुनाकर समझाया कि उसने क्या किया था या उसे कैसा महसूस हुआ था।

'मेरा क्या अपराध है? मेरा क्या पाप है, कि तुम मेरे पीछे इतने पड़े हो?' उसने बाबू से पूछा, और क्षण भर के लिए वह अपने पुराने गरजते हुए वयोवृद्ध पितामह की तरह हो गया, जो वह हमेशा से रहा था।

बाबू ने निराशा में सिर हिलाया और पूछा, 'अचन को क्या हो गया है?'

कुछ दिनों बाद वह फिर मेरे दरवाजे पर आ जाता। नदी किनारे बना छोटा सा घर उसे एक अजीब सा आकर्षण देता। वह कहता, 'यहाँ बहुत शांति है।'

मैं सहमत होता, 'हां, ऐसा ही है।' नीला नदी पूरे उफान पर थी और हर जगह हरियाली और सुकून था।

'तुम समझ नहीं रहे हो,' उसने कहा। 'इस घर से मेरी कोई यादें जुड़ी नहीं हैं।

'"जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है; और जब उसे विश्राम नहीं मिलता, तो कहती है, मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी। और जब आती है, तो उसे झाड़ा-बुहारा और सजा-संवारा हुआ पाती है।

तब वह जाकर अपने से भी अधिक बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आता है;

Machine Translated by Google

और वे भीतर घुसकर वहाँ रहते हैं और उस आदमी की पिछली हालत पहले से भी बदतर हो जाती है।" यह लूका के अनुसार सुसमाचार से है। मैं उस घर में ऐसा ही महसूस करता हूँ। सात बुरी आत्माओं द्वारा सताया हुआ।' 'मैंने क्या किया है, कोमन?' वह मेरी ओर मुड़ा। 'मैंने अपने बेटे को मरते हुए देखने के लिए क्या गलत किया? यह

जानने से बुरा क्या हो सकता है कि मेरे एक बेटे ने दूसरे को मार डाला? मैं किसके लिए शोक करूँ? मरे हुए बेटे के लिए, या जीवित व्यक्ति के लिए जिसे अपराध बोध से ग्रस्त होना चाहिए? मेरे लिए जीने से मरना बेहतर है।' 'आप निश्चित रूप से इस पर विश्वास नहीं करते हैं,' मैंने कहा। 'बाबू शायद मणि से नफरत करने लगे थे,

लेकिन वह उसे मारना नहीं चाहता था।'

'मुझे नहीं पता कि अब मुझे किस बात पर यकीन करना चाहिए, कोमन। मुझे बस इतना पता है कि मेरे पाप मेरे बच्चों को भुगतने पड़ रहे हैं। अपनी तरफ देखो, बाबू की तरफ देखो। तुममें से कोई भी जीवन के कामों को ठीक से नहीं कर पाया। मैंने तुम्हें वो सब दिया जो तुम चाहते थे। मैंने तुम्हारे हर काम का साथ दिया और तुम्हें अपने रास्ते पर चलने दिया। और फिर भी, तुममें से कोई भी नहीं जानता कि खुश रहना क्या होता है।' 'तुम ऐसा क्यों कहते हो, अचन?' मैंने पूछा। मैं उसके शब्दों पर गुस्सा नहीं था, लेकिन मैं यह जानकर परेशान था कि वह इतना असफल महसूस कर रहा था। 'हम अपने

जीवन में जो करते हैं, उसका तुम पर कोई असर नहीं होता। तुम हमारे ज़रिए नहीं जी सकते। मैं मणि या बाबू के बारे में नहीं जानता, लेकिन मैं खुश हूँ, अचन। मैं सच में खुश हूँ। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मैंने निराशा या पीड़ा नहीं देखी। लेकिन मैं वहीं हूँ जहाँ मैं होना चाहता हूँ। मेरी कला मुझे खुश रखती है।'

'उस घर में अँधेरा है। बहुत सारे रहस्य हैं। मुझे खुशी है कि उन्होंने राधा को बोर्डिंग स्कूल भेज दिया। अगर वह यहाँ रहती, तो वह भी इससे कलंकित हो जाती। मुझे अपनी देवयानी की अब पहले से कहीं ज़्यादा याद आती है। वह ही जानती थी कि मेरे अंदर की बेचैनी को कैसे शांत किया जाए। अगर मैं छोटी होती, तो मैं कहीं दूर चली जाती। लेकिन मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूँ कि अकेले कुछ नहीं कर सकती।' 'तुम कहाँ जाना चाहते हो?' मैंने उससे पूछा।

उन्होंने कहा, 'मैं दोबारा मन्नापद जाना चाहूंगा।'

इसलिए हम नाज़रेथ चले गए। मुझे नहीं पता था कि मेरे पिता वहाँ क्या चाहते थे, लेकिन हमने एक टैक्सी किराए पर ली और हमने वहाँ उनके जीवन का पता लगाया। नए अधीक्षक ने मेरे पिता के बारे में सुना था, लेकिन उनके नाम से जुड़े किसी भी घोटाले के बारे में नहीं जानते थे।

मुझे अपने पिता के प्रति फिर से सम्मान का भाव महसूस होने लगा। जहाँ उन्होंने सुख और दुःख दोनों को जाना था, वहाँ वापस जाना बहुत साहस की बात है।

अपने अतीत का सामना करने का साहस हमें कहां से मिला?

मेरे पिता परिचित चीजें, उस जीवन के निशान खोज रहे थे जो उन्होंने कभी यहां जिया था। उन्होंने कॉर्क के पेड़ को देखा और कहा, 'यह अभी भी यहां है। इसे देखो, यह एक विदेशी है जैसा मैं पहली बार यहां आया था।'

जेम्स राज की मृत्यु हो चुकी थी, लेकिन उनके परिवार के पास मन्नापद में समुद्र के किनारे घर अभी भी था। एक बेटा हमारे साथ घर पर आया। 'हम यहाँ बहुत खुश थे

Machine Translated by Google

पहले तो सादिया और मैं। बेशक, यह मेरी गलती थी। वह बहुत छोटी थी और मैंने उसे बहुत लंबे समय तक अकेला छोड़ दिया। वह अकेली थी। "वह खाली, खाली और उजाड़ है: और दिल पिघल जाता है, और घुटने आपस में टकराते हैं, और सभी कमर में बहुत दर्द होता है, और उन सभी के चेहरे काले पड़ जाते हैं। नहूम 2.10."' मुझे नहीं पता था कि क्या कहना है। मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या कह रहा था। बाद में उस रात उसने मुझे मेरी माँ के बारे में बताया। अगले दिन

हम अरबिपटनम से गुज़रे।

'वहाँ तुम्हारी माँ का परिवार रहता है,' उसने कहा। मैंने दिलचस्पी से दरवाज़े की ओर देखा, लेकिन मुझे जिज्ञासा से ज़्यादा कुछ नहीं महसूस हुआ। मेरी माँ देवयानी थी। मुझे किसी प्रेत माँ की तलाश में जाने की कोई इच्छा नहीं थी।

घर लौटने के कुछ दिनों बाद ही मेरे पिता की मृत्यु हो गई। वे हमें अलविदा कह चुके थे।

मुझे मालिनी की चीख सुनाई दी, फिर एक धीमी आवाज।

मैं बाहर निकलता हूँ। यह क्रिस है। उसका चेहरा उदास है और उसकी आँखें बेजान हैं। 'मेरे टिकट

उन्होंने कहा, 'इसकी पुष्टि हो चुकी है।'

'तुम कब जाओगे?' मैंने पूछा।

'कल।' मैं इंतज़ार

करता हूँ कि वह मुझसे वह सवाल पूछे जो मैं जानता हूँ कि वह पूछना चाहता है। लेकिन वह नहीं पूछता।

मैं आह भरता हूं। 'क्या तुम्हें अब भी लगता है कि मैं तुम्हारा पिता हो सकता हूं?' मैं उससे पूछता हूं।

'मुझे नहीं पता,' वह कहता है। वह मेरी ओर देखता है और पूछता है, 'क्या तुम हो?' 'नहीं,' मैं उससे कहता हूँ। 'क्या तुम्हें यह अच्छा लगता? कि मैं तुम्हारा पिता बनूँ?' वह मुस्कुराता है। यह एक व्यंग्यात्मक मुस्कान है।

मैं आगे बढ़कर उसका हाथ अपने हाथ में लेता हूँ। 'मैं कभी तुम्हारी माँ से प्यार करता था। मैं एंजेला से वैसे ही प्यार करता था जैसे एक युवा पुरुष किसी महिला से करता है। जोश के साथ। इतनी तीव्रता के साथ कि मैं फिर कभी उसकी बराबरी नहीं कर पाया। मेरा मानना है कि उसके लिए भी यही था। लेकिन वह प्यार खत्म हो गया। उसके साथ बिताए उन आखिरी कुछ हफ़्तों में, हमने मुश्किल से एक-दूसरे को छुआ तक नहीं।'

मैं उसकी आँखों में संदेह देखता हूँ। मुझे याद आता है कि मैंने राधा से पहले क्या कहा था। 'अगर तुम अभी भी

यदि आपको मुझ पर विश्वास न हो, तो मैं पितृत्व स्थापित करने के लिए किए जाने वाले परीक्षणों में से एक परीक्षण कर सकता हूं।'

वह कुछ नहीं कहता.

वह खड़ा हो जाता है और कहता है, 'तो फिर अलविदा।'

'हाँ,' मैं कहता हूँ। मुझे कुछ खोने का एहसास होता है। मैं सोचता हूँ कि क्या मुझे उससे उस किताब के बारे में पूछना चाहिए जो वह लिखने वाला है। 'मुझे बताओ,' मैं पूछता हूँ, 'क्या वाकई ऐसी कोई किताब है या यह मुझे बात करने के लिए मजबूर करने का एक बहाना था?' मैं ऐसा नहीं करने का फैसला करता हूँ। मैं उसे शर्मिंदा नहीं करना चाहता। इन कुछ हफ़्तों में मुझे

उसके लिए बहुत स्नेह महसूस होने लगा है।

'जब यह पुस्तक प्रकाशित हो जाए तो आपको इसकी एक प्रति मुझे अवश्य भेजनी चाहिए। मैं चाहूंगा कि आप मुझे यह पुस्तक भेजें।

मुझे पता है तुमने मुझे किस तरह चित्रित किया है।'

Machine Translated by Google

वह मुस्कुराता है। यह उसकी मीठी टेढ़ी मुस्कान है।

और मुझे लगता है कि मैं उसे इसी तरह याद करना चाहूँगा। समुद्र पार से आया क्रिस। सेलो के साथ क्रिस। मेरी आत्मा को छूने वाली मुस्कान वाला क्रिस। क्रिस जो शायद मेरा बेटा होता।

मैंने पूछा, 'क्या आपके पास टेप रिकॉर्डर है?'

वह उसे बाहर खींचता है.

'इसे यहीं छोड़ो। कहने को बहुत कम बचा है, लेकिन मुझे कहानियाँ छोड़ना पसंद नहीं है।
अधूरा है। मैं इसे भेज दूँगा।'

मुझे एहसास हुआ कि मैं उसे जाते हुए देखकर राहत महसूस करूंगा। जितनी जल्दी वह चला जाएगा, उतनी ही जल्दी हमारी सारी ज़िंदगी ठीक हो जाएगी।

Machine Translated by Google

1971 से अब तक पुनरुत्थान का तरीका

कल्याणसौगंधिकम नाटक में, जब भीम को पता चलता है कि उसके रास्ते में पड़ा बूढ़ा बंदर कोई और नहीं बल्कि उसका भाई हनुमान है, तो वह हनुमान से विनती करता है कि वह उसे वह रूप दिखाए जो उसने तब धारण किया था जब वह अपनी हथेली पर एक पहाड़ को उठाए हुए समुद्र पार कर रहा था। हनुमान उससे कहते हैं, 'मुझे यकीन नहीं है कि मुझे ऐसा करना चाहिए। यह ऐसा रूप नहीं है जो आंखों को भाता हो या मन को स्वीकार्य हो। यह वैसा नहीं होगा जैसा तुम सोच रहे हो। तुम भयभीत भी हो सकते हो!' क्रिस, ऐसा ही मुझे लगा जब मैंने तुम्हें अपना अतीत बताया। क्या तुम्हें यही उम्मीद थी? क्या तुम यही सुनना चाहते थे? मैं तुम्हें झूठ नहीं बता सकता और अपने जीवन को आधे झूठ और छायाओं से ढककर तुम्हें अधिक सहज नहीं बना सकता। हनुमान की तरह, मैं यह बताने के लिए बाध्य हूं कि मैं कौन था और मैं कौन

हूं, इसलिए सुनो:

मैंने दामू से पैसे उधार लिए हैं। मैं उसके पिता को पैसे लौटाने का प्रबंध करूंगा, मैंने कहा। मैंने एंजेला के लिए एक नोट छोड़ा। मुझे नहीं पता था कि और क्या करना है। कहने के लिए कुछ नहीं बचा था।
हमने गलती की थी और मैं वही कर रहा था जो मुझे लगा कि एकमात्र सभ्य काम है: संबंध तोड़ना ताकि वह अपनी ज़िंदगी जी सके। उसे मेरी तरफ़ हथकड़ी लगाई गई थी क्योंकि उसे लगा कि मेरे साथ रहना उसका नैतिक दायित्व है।

जब तक मैं यहाँ थी, मैं बहुकन ही रहूँगी। कभी उसकी बराबरी नहीं कर पाऊँगी, और कटुता से सुलगती रहूँगी। बहुकन से अलग, मेरे पास कोई जादुई कपड़ा नहीं था जो मुझे मेरा पुराना रूप दे सके और मेरा गौरव वापस दिला सके।

हवाई अड्डे पर, अचानक मैंने एक बार फिर राम गोपाल का नंबर ट्राई किया। आखिरकार वह महान व्यक्ति फोन पर आया। जब मैंने कहा कि मैं घर जा रहा हूँ, तो उसने कहा, 'तुमने पहले फोन क्यों नहीं किया?' 'मैं हमेशा अपनी कंपनी के लिए नई प्रतिभाओं की तलाश में रहता हूँ।' मैंने सोचा कि क्या मुझे उसे अपने सभी असफल प्रयासों के बारे में बताना चाहिए। मैंने सोचा कि क्या मुझे उसे बताना चाहिए कि कैसे मैंने एक छोटे से मौके पर अपना सब कुछ

दांव पर लगा दिया था।

मैंने अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए अपनी आत्मा कैसे बेच दी थी। लेकिन अब इनमें से कोई भी बात मायने नहीं रखती थी। पहली बार, मुझे पता चला कि यह परीक्षा समाप्त हो गई है। मैं फिर कभी यह उम्मीद नहीं करूँगा कि मेरी कला मेरे अहंकार को संतुष्ट करेगी। यह पर्याप्त था कि मुझे वेशम के बारे में जो कुछ भी समझ में आया, उसे अभिव्यक्त करने की अनुमति दी गई। बाकी सब कुछ महत्वहीन था।

जब मैं छात्र था, तब एक कथकली नर्तकी के बारे में एक कहानी प्रचलित थी। एक प्रसिद्ध वेषकारन जो पागल हो गया। उसके रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने बताया कि पागलपन उसके परिवार में था और उसकी बीमारी ही उसकी नियति थी।

वह इतना हिंसक था कि उसे पूरे दिन जंजीरों में बांधकर रखना पड़ता था।

Machine Translated by Google

वे उसे ठंडक पहुंचाने और उसकी पागलपन की तीव्रता को कम करने के लिए उसके सिर पर एक हजार घड़े पानी डालते हैं।

एक शाम, पास के एक मंदिर में एक प्रदर्शन हो रहा था। शाम भर उस आदमी ने मंदिर में प्रदर्शन की घोषणा करने वाले ढोल की आवाज़ सुनी। उसने अपनी ज़ंजीरें तोड़ीं और मंदिर की ओर भागा। मंदिर के पीछे, एक छोटे से अस्थायी शेड में, नर्तकियाँ तैयार हो रही थीं। जब वह दिखाई दिया, तो उन्हें समझ नहीं आया कि क्या करें या क्या कहें।

'कथा क्या है?' उन्होंने पूछा।

'दुर्योधन वधम्,' किसी ने कहा।

उन्होंने कहा, 'मैं दुर्योधन बनूंगा।'

वे लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। अब उन्हें क्या करना था?

दुर्योधन ने बड़बड़ाते हुए कहा, 'इसका मनोरंजन करो और इसे अच्छे कपड़े पहनाओ।' पेटीकारन ने कहा, 'इसके परिवार

को बुलाओ और इसे घर ले जाओ।' जब समय आया, तो पागल वेषकारन ने अपने हाथों को अलग कर लिया,

जो उसे पीछे खींच रहे थे, मंच पर गया और दुर्योधन बन गया। कोई नहीं जानता था कि यह एक पागल नाच रहा था। कोई नहीं जानता था कि यह एक ऐसा आदमी था जो पूरे दिन जंजीरों में बंधा रहता था और जब उसका पागलपन अपने चरम पर होता था, तो वह बड़बड़ाता और गुर्राता था और अपनी ही गंदगी में लोटता था। जब प्रदर्शन खत्म हो गया, तो वह एक कोने में जाकर बैठ गया। किसी ने उसके कपड़े उतारने में मदद की। कोई और उसे घर ले गया। लेकिन उस रात उसे देखने वाले लोग उसके दुर्योधन को कभी नहीं भूल पाएंगे। यह पूरी तरह से नियंत्रण में रहने वाले एक आदमी का प्रदर्शन था।

मेरे लिए वापस अपनी पुरानी पहचान बनाना आसान नहीं था। मेरे दिमाग में अभी भी बहुकन होने की यादें ताज़ा थीं।

संस्थान में छात्रों ने मुझे वापस स्वीकार कर लिया। वे मेरे इंग्लैंड में जीवन के बारे में अधिक उत्सुक थे, न कि यह जानने के लिए कि मैं वापस क्यों आया हूँ। सुंदरन सहित अन्य प्रशिक्षकों और मेरे परिवार ने यह दिखावा किया कि मैं छुट्टी मनाने कहीं चला गया हूँ।

मैं अपने दिमाग में एक जगह पर जाकर छिप गया। मैं बस नाचना चाहता था। यह काफी था। मुझे वास्तविकता में भाग लेने की कोई इच्छा नहीं थी। मैं पागल की कहानी के बारे में सोचता। अगर पागलपन के भीतर, कला ही उसकी मानसिक स्थिति को ठीक करने का एकमात्र साधन हो सकता है, तो यह मेरे लिए भी होगा। अब से, मेरा जीवन मेरी कला के माध्यम से ही चलेगा। यह एकमात्र तरीका था जिससे मैं अपने आत्म-सम्मान को पुनः प्राप्त कर पाऊंगा।

शाम के समय मैं अक्सर बरामदे की सबसे ऊपरी सीढ़ी पर बैठा रहता था। कुत्ता ज़मीन पर लेटा रहता था, उसकी आँखें मेरे चेहरे पर टिकी रहती थीं ताकि वह मेरी भावनाओं की झलक भी पकड़ सके, उसकी थूथन मेरे पैर के किनारे लगी रहती थी, वह बस मेरे साथ रहने और मेरे थूथन को सूंघने में ही संतुष्ट रहता था।

एक शाम सूखी नदी की तलहटी से हवा चली, रेत पलटी, धूल उड़ी

Machine Translated by Google

और उसके रास्ते में पत्ते गिर रहे थे। गहरे तालाब के ऊपर हवा में नमी की एक किरण थी, जिससे जब वह मेरे चेहरे पर आई, तो मुझे एक सुखद ठंडक महसूस हुई। इसने मेरे विचारों की सघनता को मिटा दिया और मुझे हिलने के लिए प्रेरित किया। मैं सीधा बैठ गया और जम्हाई ली, मेरा शरीर खिंच रहा था और मुड़ रहा था, जम्हाई मेरे पेट के अवतल से निकल रही थी और विस्तारित होकर कई अक्षरों का निर्माण कर रही थी: आ-ऊ-ऊ। कुत्ते ने अपना सिर उठाया और ध्यान से इस गति, जीवन के प्रकट होने को देखा। वह खड़ा हो गया, उसकी दुम अभिवादन और खुशी में हिल रही थी।

मैंने कुत्ते की दुम हिलती देखी। मैंने उसके सिर पर थपथपाया। 'लेट जाओ,' मैंने कहा। 'मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ।' कुत्ते ने अपना सिर अपने अगले

पंजों पर रख लिया। दुर्लभ दुलार से हिम्मत जुटाते हुए, वह उठा और एक बार फिर ज़मीन पर बैठ गया, लेकिन अब उसका थूथन मेरे पैर पर टिका हुआ था। मैंने कुत्ते की तरफ़ देखा। मेरी नज़रें उसकी विनती भरी नज़रों से मिलीं। उसने विनती की, मुझे दूर मत धकेलो।

इतने दिनों से मैं अपनी सारी भावनाओं से ऊब चुका था। मेरे पैर पर कुत्ते की थूथन का वजन, उसकी आँखें, मेरे अंदर एक छोटी सी हलचल पैदा कर रही थीं...यह क्या हो सकता है? मैं खुद से पूछने की हिम्मत नहीं कर पाया।

मैंने झुककर कुत्ते के सिर को सहलाया। उसके फर की कोमलता और मेरी उंगलियों की धीमी यांत्रिक हरकत ने मेरे दिमाग में छवियों की एक धारा को घुमा दिया। समय को कई छोटे-छोटे शब्दों में लिखा गया। हथेली में कैद जीवन। संभावनाएँ जो मेरी उंगलियों के बीच से बह रही थीं क्योंकि मैंने ऐसा चाहा था। यादें और अब जीवन के अनुभव। कुत्ते ने खुशी में अपनी आँखें बंद कर लीं।

मुझे महसूस हुआ कि मेरे अंदर का भार बढ़ रहा है और धीरे-धीरे खत्म हो रहा है।

कुत्ते ने अपना सिर उठाया, कान खड़े किए, आँखें खोज रही थीं। कोई गली से ऊपर आ रहा था। मैं सीधा हो गया। कौन हो सकता है? मैं बातचीत करने के लिए इच्छुक नहीं था। मैं अपने विचारों के साथ अकेले रहना चाहता था।

कुत्ता, मानो मेरी सोच का अनुसरण कर रहा हो, उठकर गेट की ओर दौड़ा। वह वहीं खड़ा था, उसके पैर मजबूती से जमे हुए थे, उसके बाल उठे हुए थे, भौंक रहा था। शक्तिशाली भौंकने की एक श्रृंखला जो गड़गड़ाहट और हवा को धमकी से भर रही थी: चले जाओ, हम तुम्हें नहीं चाहते, चले जाओ, हमें अकेला छोड़ दो।

मैं खड़ा हो गया। मैं घर के अंदर चला गया और वहीं इंतज़ार करने लगा। जो भी था
थोड़ी देर बाद चले जाओ। फिर मैंने उसे देखा। ललिता। वह क्या चाहती थी?

वह गेट के दूसरी ओर खड़ी थी, उसके दोनों हाथ कुंडी पकड़े हुए थे।

'कुत्ते को दूर भगाओ,' उसने कहा.

मैंने सीटी बजाई और धीरे से कहा, 'यहाँ आओ, सब ठीक है।'

कुत्ते की भौंहें तन गईं, उसकी दुम हिलने लगी। उसने उसे आश्चर्य से देखा।
मुस्कुराया. 'आपने उसे अच्छी तरह प्रशिक्षित किया है.'

मैं बरामदे में एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया। वह नीचे की सीढ़ी पर खड़ी होकर मेरा इंतज़ार कर रही थी।

Machine Translated by Google

मुझे उसे अंदर बुलाने के लिए कहा। जब मैंने नहीं बुलाया, तो उसने कहा, 'मैंने सुना कि तुम वापस आ गए हो। मैंने सोचा कि मैं खुद देख लूं।' मैंने अपनी चेलापेटी को पास खींचा। वह तीन सीढ़ियाँ चढ़ी और

मेरे पास छोटी दीवार पर बैठ गई। 'तुम कैसी हो? तुम कब वापस आई?' 'कुछ महीने पहले,' मैंने कहा। 'क्या तुम्हें यह चाहिए?' मैंने सुपारी का डिब्बा उसकी ओर बढ़ाया। उसने एक पल के लिए उसे देखा। 'यह एक नई आदत है। तुमने कब शुरू किया?' उसने

पूछा।

मैंने कंधा उचका दिया।

उसने चेल्लापेटी खोली और उसमें से कुछ पान के पत्ते निकाले।

कुछ देर तक हम दोनों वहीं बैठे रहे, हमारे मुंह में बहुत कुछ भरा हुआ था, हमारे मन इधर-उधर भटक रहे थे, हम पान और सुपारी के पत्ते चबा रहे थे, और साझा यादें हमारे गले से नीचे उतर रही थीं।

फिर उसने अपना गला साफ किया और खड़ी हो गयी।

'क्या आप जा रहे हैं?' मैंने अचानक अकेले रह जाने के विचार से त्रस्त होकर पूछा।

'क्या तुम चाहती हो कि मैं रुकूं?' मैंने उसकी

तरफ ऐसे देखा जैसे मैं उसे पहली बार देख रहा हूँ। ललिता। यही मेरा नाम था उसके लिए। मैं भूल गया था कि उसका असली नाम क्या था।

ललिता, जो वास्तव में नक्रथुंडी हो सकती है, वह राक्षसी जो वासना से तृप्त रहती थी।
नहीं, यह मेरे लिए अनुचित था। मैं जयंतन नहीं था, वह भोला-भाला युवक जिसे उसने धोखा दिया था। मैं हमेशा से जानता था कि वह कौन थी। इसीलिए मैंने उसे ललिता कहना चुना था।

'क्या तुम करोगी?' मैंने उससे आँखें मिलाते हुए पूछा।

उसने अपना हाथ मेरी बांह पर रख दिया। मेरे सामने विरोधाभासी छवियाँ उभर आईं। मैंने कोशिश की
नक्रथुंडी या ललिता: वह कौन थी?

और फिर मैंने सोचा, क्या इससे कोई फ़र्क पड़ता है? वह एक बार मेरे लिए वहाँ थी। क्या यह काफ़ी नहीं है?

'मैं यहाँ हूँ। आपको बस इतना ही कहना है। आपको मुझसे रुकने के लिए कहना है,' उसने कहा। मैं उसकी आवाज़ में ताकत की झलक देख सकता था।

मैंने उसे चोट पहुंचाई थी और वह बदला ले रही थी। क्या यही जीना है?
एक दूसरे से हमेशा की यह लड़ाई; प्रतिशोध की यह चाह। मैंने आह भरी। मैं बिस्तर पर लेटना चाहता था और उसकी ठंडी, निपुण उंगलियों को अपनी त्वचा पर फिसलते हुए महसूस करना चाहता था, उसका शरीर मेरे शरीर से दबा हुआ था। कोई ऐसा व्यक्ति जो मेरे साथ धीरे-धीरे और अभ्यास से प्यार करे, इसलिए मुझे बस खुद को समर्पित करना था।

वह ऐसा करती थी। वह मुझे अपने से चिपका लेती थी और मुझे अपने शरीर से दूध पीने देती थी।
वह यह सब और उससे भी ज़्यादा करती थी क्योंकि यही उसका पेशा था। अधर्म की ज़रूरतों को पूरा करना। लेकिन उसने मुझे भी अपने अस्तित्व में जगह दी थी, उस पहली मुलाकात से ही

Machine Translated by Google

समय। यही मेरी शक्ति का मापदंड था। चाहे मैंने उसके साथ कैसा भी व्यवहार किया हो, उसने हमेशा मुझे माफ़ कर दिया।

जब मैंने उसे त्याग दिया था और कहा था कि वह कभी भी मेरे घर नहीं आएगी, क्योंकि एंजेला को अगर यह पता चल जाएगा तो वह बुरी तरह डर जाएगी, मैंने उसे दुख पहुंचाया था और अब वह चाहती थी कि मैं जानूं कि उसके अंदर मेरा बसेरा कितना खतरनाक था।

मैं उसे ऐसा करने दूँगा। मैं हर चीज़ से थक चुका था। मैं बस इतना चाहता था कि कोई मुझे थामे और मुझे ठीक करे। 'रुको, कृपया रुको,' मैंने कहा।

मैं पेट के बल लेटा था, मेरा सिर मेरी बाहों में था। वह मेरे बगल में बैठी थी, मेरी रीढ़ की हड्डी पर अपनी उंगली फिरा रही थी। ऊपर और नीचे। ऊपर और नीचे। बार-बार।

'ऐसा होता है,' उसने धीरे से कहा।

बाहर मुझे कुत्ते की सूँघने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैंने उसे दरवाज़े के आस-पास सूँघते हुए सुना,
फिर उसके शरीर की हल्की सी थपथपाहट सुनाई दी, जब वह नारियल की जटा से बनी चटाई पर ढेर हो गया।

मुझे लगा कि मेरा शरीर डूब रहा है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। कई बार ऐसा हुआ था जब मेरा लिंग खड़ा नहीं हो पाता था, लेकिन एक बार खड़ा होने के बाद, मैं हमेशा स्खलित हो जाता था। हालाँकि, आज शाम, मैं उबकाई ले रहा था और हाँफ रहा था और मुक्ति पाने की अपनी ज़रूरत पर ज़ोर दे रहा था। ऐसा लगा जैसे मैं एक सड़क पर दौड़ रहा हूँ, एक लंबी, अंतहीन सड़क, जिसके अंत तक पहुँचने की कोई उम्मीद नहीं है। घृणा में, मैंने खुद को बाहर निकाला और अपनी तरफ़ करवट बदली।

मैंने सुना कि वह अपने अंगों को फिर से व्यवस्थित कर रही है। बिस्तर चरमरा रहा था। मैं पलट गया और पेट के बल लेट गया। दुख। पेट में ऐंठन। मांसपेशी में खिंचाव। उस धन्य मुक्ति को महसूस करना चाहता था और कर नहीं पा रहा था। दुख ने मुझे अपनी बाहों में भर लिया।

मैंने महसूस किया कि उसने अपनी उँगलियों को मेरे नितंबों के ऊपर की ओर दबाया। 'मुझे यह वक्र बहुत पसंद है। केवल कथकली नर्तकियों के पास ही यह होता है... मुझे यह पसंद है कि नितंब कैसे ऊपर उठते हैं और तना हुआ होता है। शायद यह सब आप लोगों द्वारा की जाने वाली कसरत का नतीजा है।' उसकी उँगलियाँ वक्र पर फिसलती हुई बाएं नितंब के गाल पर पहुँच गईं।

मुझे एक सिहरन सी महसूस हुई। एंजेला ने भी यही बात कही थी। मैंने कोने से बात की।
मेरे मुँह से निकला, 'इतने सालों में, तुमने कभी ऐसा नहीं कहा।' उसकी उंगलियाँ
रुक गईं। 'मैंने ज़्यादा कुछ नहीं कहा, है न? जैसे कि...' 'क्या?' मैं उत्सुक था और मैंने अपना सिर ऊपर उठाया।

'जैसे कि आप अपने दिमाग से खिलवाड़ नहीं कर सकते। यह शरीर का काम है और आपको अपने शरीर को खिलवाड़ करने देना चाहिए। मुझे नहीं पता कि आपके दिमाग में क्या चल रहा है, लेकिन आपको उसे छोड़ देना चाहिए।' मैंने कराहते हुए कहा। मैं वासना की गतिशीलता पर व्याख्यान नहीं सुनना चाहता

था।

'आप मेरी बात से सहमत नहीं हैं?' 'कोई बात नहीं। बोलो,' मैंने कहा।

वह झुकी और मेरी गर्दन के पिछले हिस्से को चूमा। मुझे फिर से इच्छा की शुरुआत महसूस हुई।
मैं धीरे से पलटा और पीठ के बल लेट गया। उसकी आँखें मेरी आँखों से मिलीं। वह जानती थी कि मैं क्या कर रहा हूँ।

Machine Translated by Google

उससे जो अपेक्षा की गई थी, वह पूरी हो गई। हमारे शरीर एक दूसरे को बहुत समय से जानते थे।

उसने मेरी निगाहें थाम लीं और खुद को मुस्कुराने दिया। मैंने उसके होठों की कोमल लम्बाई में विजय देखी। मैं मक्खी था, वह छिपकली। यह विचार मेरे दिमाग से निकल गया। मैंने उसे देखा, उत्सुक, पहले तो अलग-थलग, जब उसकी जीभ उछली और चटकी, फिसली और उछली, कप में लिपटी और सहलाई। फिर मैंने महसूस किया कि उसका मुंह मुझे अपने अंदर समेट रहा है, मेरे पीछे छिपे निशानों को खींच रहा है, जिससे मेरा प्रतिरोध टूट रहा है। जब हम जानते हैं कि हम एक-दूसरे से क्या चाहते हैं, तो यह कितना सरल है, मैंने सोचा जब उसने खुशी के पहले निशान छोड़े।

ललिता जाने के लिए उठी। भोर आसमान में छा गई। उसने दरवाज़ा खोला। कुत्ता बाहर खड़ा था, अपनी दुम हिला रहा था। उसने उसके सिर पर थपथपाया।

उसने मेरी तरफ देखा। मैं करवट लेकर लेटा हुआ था, सोने का नाटक कर रहा था। मुझे लगा कि मैं सो रहा हूँ।
मैं अपने दिखावे में शांत और निश्चिंत हूँ।

'वह अकेला है,' उसने कुत्ते से कहा। 'उसके पास तुम्हारे और मेरे अलावा कोई नहीं है। हमें चाहिए
उसकी देखभाल करो, उसे फिर से स्वस्थ बनाओ, तुम और मैं। क्या तुम करोगे, कुत्ते?'

कुत्ते ने अपनी दुम हिलाई और उसके करीब आ गया। वह नीचे झुकी और उसकी गर्दन को खुजलाने लगी। 'क्या तुम्हारा कोई नाम है? या वह तुम्हें इसी नाम से पुकारता है?
कुत्ता? जैसे मैं ललिता हूँ। मुझे लगता है कि वेश्याओं और कुत्तों को नामों की ज़रूरत नहीं होती। हमारे नाम मायने नहीं रखते। लेकिन हम मायने रखते हैं। कुत्ते, क्या तुम यह देख रहे हो?' 'ललिता,' मैंने पुकारा। 'तुम किससे बात कर रहे हो?'

'कुत्ते से। क्या तुम्हारे पास उसका कोई नाम नहीं है?' वह मुस्कुराई।

'कुत्ता। इतना काफी है। कुत्तों को नाम की जरूरत नहीं होती। वे खुद ही नाम रख लेते हैं।
आप उन्हें जो भी कहें, वे उसका जवाब देते हैं।'

'लेकिन मैं उसे कुत्ता नहीं कह सकता। मेरे मोहल्ले में कैसर और जिम्मी, ब्रूनो और कुछ पांडन भी हैं। मुझे कैसर पसंद है। तुम उसे ऐसा क्यों नहीं कहते?' 'मेरे छात्र उसे एकलव्य कहते हैं। अगर तुम नाम पर जोर दो तो तुम उसे ऐसा कह सकते हो।' मैंने जम्हाई ली।

'क्या आपके जीवन में कथकली के अलावा भी कुछ है?' ललिता हँसी।

'नहीं,' मैंने अचानक कहा। 'एक बार मुझे लगा था कि ऐसा है। कथकली के बिना मैं कुछ भी नहीं हूं।' 'मेरे बारे में क्या?' उसकी आंखें गंभीर थीं।

'आप और कुत्ता ही दो जीवित प्राणी हैं जिनके साथ मैं खुद को जोड़ पाता हूं।
दिन, 'मैंने कहा। 'तुम्हें इससे संतुष्ट होना पड़ेगा।' वह मुस्कुराई। 'मैं संतुष्ट हूँ।' ऐसा कुछ भी नहीं
है जिसे समय ठीक न कर सके।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए मैंने यह सीखा। मैंने नदी के किनारे अपने घर से यह सीखा। और एकलव्यन और ललिता से। एक कुत्ता और एक वेश्या। साथ मिलकर उन्होंने उन दीवारों को तोड़ दिया जो मैंने खुद को घेर रखी थीं

Machine Translated by Google

साथ में। मैंने एक ऐसा निष्क्रिय प्राणी होना बंद कर दिया जो सिर्फ़ तभी ज़िंदा होता था जब मैं अपने रंग पहनता था। मैंने हँसना और सहना सीखा; मैंने खुश होना और शिकायत करना सीखा। जब मुझे प्यार मिला तो मैंने उसे स्वीकार करना सीखा। मैंने फिर से इंसान बनना सीखा।

दो साल बाद, संस्थान की मंडली को यूरोप आमंत्रित किया गया और हम देश-देश में घूमे, देवताओं और राक्षसों की अपनी कहानियों पर नृत्य किया। यह विडंबना थी कि जो कुछ मैंने कभी खोजा था, वह अब मेरे पास आ गया है क्योंकि मैंने उसे खोजना बंद कर दिया था।

मुझे जर्मनी के एक विश्वविद्यालय से शिक्षण फेलोशिप की पेशकश की गई थी। मैंने मना कर दिया।

'आप इसे क्यों नहीं चाहते?' सुंदरन ने पूछा।

मैंने ईमानदारी से कहा, 'यह काम नहीं करेगा।'

'आप मौकों को कैसे गंवा सकते हैं? आप इतने तिरस्कारपूर्ण कैसे हो सकते हैं?

'आपको कौन-सा अवसर दिया गया है?' उसने पूछा। 'अगर मैं होता...'

'सुंदरन, तीन महीने तक मैं वहाँ कुछ नहीं करूँगा। क्या तुम इसे एक बढ़िया अवसर कहोगे?' 'लेकिन उसके बाद के बारे में सोचो। तुम

सर्किट का हिस्सा बन जाओगे।' मैंने एक पल के लिए 'उसके बाद' के बारे में सोचा और काँप उठा।

'सुंदरन,' मैंने समझाने की कोशिश की। 'लंदन कुछ भी नहीं था। यह बेकार हो गया। मैंने अपना जीवन यहीं बर्बाद कर दिया, यह सोचकर कि मुझे वहाँ जगह मिल जाएगी, और इससे कुछ नहीं हुआ। कथकली का वहाँ कोई स्थान नहीं है। क्या आप जानते हैं कि मुझे अपने नुकसान की भरपाई करने में कितना समय लगा? क्या आप जानते हैं कि जब मैं वापस लौटा तो मैं कितना हारा हुआ था? आशान सही था। हमें यहाँ सही महसूस करने की ज़रूरत है,' मैंने अपनी छाती को छूते हुए कहा। 'तभी हम जान पाएँगे कि पूर्ण होना क्या होता है। बाकी सब तो बस एक भ्रम है।'

सुंदरन ने कहा, 'आप ऐसी बकवास इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आपको सब कुछ पहले से ही परोस दिया गया है। इसीलिए आपमें इसकी इतनी अवहेलना है।'

'मुझे अपना भाग्य खुद बनाना है, और जब मैं इस जीवन में फंस गया हूँ तो मैं क्या कर सकता हूँ या क्या बन सकता हूँ? मेरे बचने का रास्ता कहाँ है? आप ही बताइए। अब, अगर मैं लंदन जाने वाला होता, तो मैं अपना रास्ता बना लेता।' सुंदरन की कड़वाहट ने मुझे चौंका दिया और दुखी कर दिया।

वह अंदर से पूरी तरह उलझा हुआ था। मैंने अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया। मुझे लगा जैसे मैंने उसके एक बहुत ही निजी और अंतरंग पल में दखल दिया हो। इससे मैं शर्मिंदा और भ्रमित हो गई।

कुछ मिनट बाद मुझे पश्चाताप हुआ। सुंदरन कभी मेरा मित्र था।

'क्या तुम्हें खुशी नहीं है कि तुम इतना अच्छा नृत्य कर रहे हो?'

'क्या मतलब है?' सुंदरन ने झपट्टा मारा। उसने अपने सामने रखी खाने की प्लेट को घूरा। 'मैं इससे तंग आ चुका हूँ। मुझे और चाहिए। मुझे बढ़िया खाना और कपड़े चाहिए, मेरे पर्स में पैसे चाहिए और लोग मुझे सड़कों पर पहचानें। मुझे यह सब और भी बहुत कुछ चाहिए।'

Machine Translated by Google

'लेकिन कथकली?' 'ओह,

इतना भोला मत बनो। कथकली एक साधन है। तुम नहीं समझे, है न? आशान भी ऐसा ही था। इसलिए उससे बात करने का कोई फायदा नहीं था। काश मैं यहाँ यूरोप में कुछ समय बिता पाता।' वह अचानक रुक गया।

मैंने देखा कि वह इसके लिए कितना तरस रहा था और मैंने सिफारिश की कि वे इसे पेश करें
उन्होंने सुंदरन को छात्रवृत्ति देने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने ऐसा किया और सुंदरन को आखिरकार मौका मिल ही गया।
वह कभी वापस नहीं आया.

मैं खुश था। मैं नाच रहा था। और मैं पहले से कहीं बेहतर नाच रहा था।
बाकी के लिए, मेरे पास नदी के किनारे मेरा छोटा सा घर था। मेरे पास ललिता थी और मेरा कुत्ता था।
मेरी छोटी सी दुनिया पूरी हो गयी थी।

मैंने ललिता के सामने शादी का प्रस्ताव रखा। 'क्यों?' उसने पूछा।

मैंने कहा, 'मैंने सोचा कि शायद आप ऐसा चाहेंगी।'

'क्या तुम्हें लगता है कि मैं दूसरे मर्दों के साथ सोती हूँ?' उसने पूछा।

मैने कुछ नहीं कहा.

'नहीं। मैंने बहुत दिनों से ऐसा नहीं किया है। मैं एक दर्जी की दुकान में काम करती हूँ। मैं अपना पेट पालने के लिए पर्याप्त कमा लेती हूँ। बेहतर है कि हम ऐसे ही रहें,' उसने कहा। 'तुम अपने घर में और मैं अपने घर में। इसके अलावा, इस तरह गपशप के लिए कोई जगह नहीं है। क्या तुम सोच सकते हो कि अगर तुमने मुझसे शादी कर ली तो क्या होगा? कांड! तुम्हारा परिवार तुमसे सारे रिश्ते तोड़ देगा।'

मैंने सिर हिलाया। बाबू कभी ललिता को स्वीकार नहीं करेंगे। 'इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता,' मैंने कहा।

'नहीं, कोमन। मुझे यह तरीका पसंद है। मैं यह भी जानता हूँ कि इस तरीके से तुम कभी नहीं
मुझसे थक जाओ, 'उसने कहा.

मैं मुस्कराया।

पिछले कुछ सालों में मैं संस्थान की मंडली के साथ कई यात्राओं पर गया। हमने एक तरह से अनुयायी भी बना लिए थे।

कुछ साल पहले मैं पेरिस में था और अचानक मैंने मेट्रो पकड़ ली। जब मैं स्टेशन की सीढ़ियों से नीचे उतरा तो मैंने दीवार पर पोस्टर देखे। मैं रुका और चेहरे को देखा। यह सुंदरन था। वह उस सप्ताह पेरिस में प्रदर्शन कर रहा था। मैंने पेरिस में अपने मेज़बान से प्रदर्शन के लिए मेरे साथ चलने को कहा। मैंने स्टीफन से कहा, 'हम छात्र के रूप में साथ थे और उन्होंने कई सालों तक संस्थान में पढ़ाया।'

मैंने सुंदरन को फिर से नाचते देखा। वह अब भी सुंदर था, अब भी वही सुंदर नर्तक था।
उनके हाव-भाव सुंदर थे, उनकी उपस्थिति पूरी थी। लेकिन यह कथकली नहीं थी। यह बिल्कुल भी नृत्य नहीं था। मैंने कार्यक्रम देखा। यह फ्रेंच में था। स्टीफन ने मेरे लिए इसका अनुवाद किया। 'असाधारण नर्तक। पंडित सुंदर वर्मा। केरल के एक शाही परिवार से आने वाले सुंदर अपने कुलीन वंश और महल से भाग गए थे।

Machine Translated by Google

'जब वह बारह वर्ष के थे, तब उन्होंने अपने जीवन में खुद को हाव-भाव और अभिव्यक्ति की भाषा में व्यक्त करने का प्रयास किया।'

मैं मुस्कुराया। सुंदरन ने खुद को फिर से आविष्कृत किया था। मैं जिस सुंदरन को जानता था, वह एक गरीब वारियर परिवार से था, जो सोचता था कि उसे संस्थान में दाखिला दिलाने से उन्हें दिन में तीन बार भोजन खिलाने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। संस्थान ने वह सब संभाल लिया। मुझे लगा कि जब वह खुद को एक नया इतिहास दे रहा था, तो उसने सोचा होगा कि शाही वंश उसकी प्रतिष्ठा को और अधिक करिश्मा देगा। इसे पूरा करने के लिए कुछ कौशल की आवश्यकता थी। मैं देख सकता था कि सुंदरन में यह कौशल था।

वह एक असाधारण कलाकार थे।

स्टीफन ने पढ़ा: भय की आत्मा - मनुष्य में जो कुछ भी अंधकारमय, विकृत, संकीर्ण और असंगत है, उसकी खोज... पारंपरिक कथकली तकनीकों का उपयोग करते हुए... मैंने सुनना बंद कर दिया।

मैं इस प्रदर्शन को समझ नहीं पाया। यह दिखावा और झूठ था। इसने उस चीज़ का मज़ाक उड़ाया जिसे हमने अपना अधिकांश जीवन दिया है। इसने इसे महत्वहीन बना दिया और मुझे शर्म और गुस्सा महसूस हुआ, फिर राहत मिली। अगर मैं लंदन में रहता, तो क्या मेरे साथ भी ऐसा होता? क्या मैं जीवित रहने के लिए समझौता करता?

क्या मैं उन सभी चीजों का स्वर बदल देता जिनका मैं सम्मान करता था और प्यार करता था, ताकि उन्हें सुलभ और लोकप्रिय बनाया जा सके?

जब प्रदर्शन समाप्त हो गया तो स्टीफन चाहते थे कि हम मंच के पीछे जाकर सुंदरन से मिलें।

मैंने कहा, 'मुझे उससे कुछ नहीं कहना है।'

स्टीफन ने कहा, 'आप उसे स्वीकार नहीं करते।'

'नहीं, मुझे नहीं मालूम,' मैंने स्वीकार किया।

बाद में, स्टीफन और मैं एक कैफ़े में गए। जब हम ड्रिंक्स आने का इंतज़ार कर रहे थे, स्टीफन ने पूछा, 'क्यों? तुम्हें वह पसंद नहीं है जो वह कर रहा है?' मैंने गहरी साँस ली। शायद स्टीफन को लगा कि मैं सुंदरन की हरकतों से ईर्ष्या कर रहा हूँ।

शायद यही नाराज़गी थी जिसकी वजह से मैं उससे मिलने से कतरा रहा था। 'मुझे वह पसंद नहीं है जो सुंदरन ने कथकली को बना दिया है,' मैंने कहा।

'लेकिन अब यह आसान हो गया है। आपको लगता है कि यह गलत है?' 'मैं आपको एक

बात बताऊँ। भारत में, इन दिनों नृत्य का सबसे लोकप्रिय रूप सिनेमाई नृत्य कहलाता है। यह लोक और शास्त्रीय, साल्सा और ट्विस्ट, एरोबिक्स और जिव ... शायद हर कल्पनीय नृत्य रूप का एक संयोजन है, लेकिन इसे नृत्य करने वाले लड़के और लड़कियाँ इसे सिनेमाई नृत्य के अलावा कुछ नहीं मानते। यह अपने तरीके से अद्भुत है, लेकिन सबसे अच्छी बात यह है कि यह मनोरंजन के एक हल्के रूप के अलावा कुछ भी होने का दिखावा नहीं करता है।' मैंने स्टीफन के चेहरे पर अविश्वास देखा। मैं मुस्कुराया। 'मुझे पता है कि आप हैरान हैं। मुझे नहीं लगता कि लोकप्रिय कला में कुछ भी गलत है। यह बहुत कम मांग करता है

Machine Translated by Google

कोई भी इसका आनंद ले सकता है।

'शास्त्रीय कला के लिए दर्शकों से प्रयास की आवश्यकता होती है। आप रातों-रात पारखी नहीं बन जाते। आपको इसे आत्मसात करने की आवश्यकता है। आपको खुद को शिक्षित करने की आवश्यकता है, और उस स्तर तक पहुंचने में समय लगता है जहां आप कलाकार की व्याख्या को समझ सकें। स्वाभाविक रूप से, इसका मतलब है कि दर्शक सीमित हैं और पुरस्कार और भी सीमित हैं। इसलिए, जब मैं सुंदरन जैसे किसी व्यक्ति को अधिक लोकप्रियता सुनिश्चित करने के लिए कथकली को इस हद तक नष्ट करते हुए देखता हूं कि इसमें मौजूद सभी महान, शानदार और जटिल चीजें खत्म हो जाती हैं, तो मुझे यह घृणित लगता है। वह दर्शकों के लिए खेल रहा है, शास्त्रीय कला के रूप में हल्का मनोरंजन प्रदान कर रहा है। कम से कम यह तो धूर्ततापूर्ण और धोखेबाज़ी है।'

स्टीफन ने धीरे-धीरे अपना ड्रिंक पीया। 'तुम्हें खुश करना बहुत मुश्किल है,' उसने कहा। 'आखिरकार यह सिर्फ़ कला है। जीवन और मृत्यु का मामला नहीं। इसमें कोई नैतिकता शामिल नहीं है। यह क्लोनिंग या रासायनिक हथियारों के निर्माण या विविसेक्शन जैसा नहीं है।' मैं मुस्कुराया। 'तुम सही हो,' मैंने कहा। 'मुझे उस पर इतना कठोर नहीं होना चाहिए। यह आखिरकार कला है, जैसा कि तुम कहते हो।' उसने मुझे ध्यान से देखा कि कहीं मैं व्यंग्य तो नहीं कर

रहा हूँ।

'नहीं,' मैंने कहा। 'मैं आपका मज़ाक नहीं उड़ा रहा था। मैं सहमत हूँ। अगर वह खुद के साथ रह सकता है, तो कौन
क्या मैं उसकी निंदा करूँ?'

कलात्मक सफलता एक अजीब चीज है। आखिर में, जज कौन है? मुट्ठी भर आलोचक? नानू मेनन के साथ हुए प्रकरण के बाद से, मैं आगे बढ़ चुका हूँ और अभियोग, सटीक या अन्यथा, शायद ही कभी मुझे प्रभावित करते हैं। मैं आलोचकों को भ्रमित प्राणियों के एक समूह के रूप में देखता हूँ जो एक छोटी आकाशगंगा में रहते हैं; जो कुछ भी इसकी सीमाओं और उनके ज्ञान की सीमाओं के भीतर फिट नहीं होता है, वे उसे उलझन में डाल देते हैं। जो वे नहीं समझते हैं, वे उसे या तो बौद्धिक रूप से प्रस्तुत करते हैं या खारिज कर देते हैं। क्या वे वे लोग हैं जिनके साथ मुझे अपनी कलात्मक नियति को जोड़ना चाहिए?

फिर कला प्रेमी हैं, मनमौजी लोग जो समीक्षा होने पर आपके साथ हो लेंगे, और अगर समीक्षक आपको अस्वीकार कर दे तो आपको किनारे कर देंगे। प्रेमी जो हमेशा आपसे प्यार या सम्मान करने का कोई वादा नहीं करते। यह एक ऐसी दुनिया है जो सफलता के जाल-प्रसिद्धि, पैसा, पुरस्कार के ज़रिए आपकी प्रतिभा को पहचानना चुनती है।

अंत में, कलाकार है, जिसे अपने खुद के मानकों से बार-बार जूझना पड़ता है, भले ही आलोचक या दुनिया उसे कुछ भी क्यों न बताए। क्या मैं अब तक जो कुछ भी कर पाया हूँ, उससे ऊपर उठ पाया हूँ या मैं सिर्फ़ औसत दर्जे का रहा हूँ?

इसके बाद के वर्षों में मुझे यह प्रश्न बार-बार अपने आप से पूछना पड़ा।
एक वेषकारण के रूप में मैं कितना सफल रहा?

Machine Translated by Google

कला कलाकार के अलावा किसी और चीज को नहीं बनाती। वास्तव में, कला बेकार है। इसका वास्तविक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है। मैं यह बात अन्य सभी कलाकारों की तरह ही जानता हूँ। कला अधिकांश लोगों के जीवन में समय का एक छोटा सा हिस्सा लेती है। यह संगीत का एक टुकड़ा है जिसे आप गाड़ी चलाते समय सुनते हैं या हवाई अड्डे पर पढ़ी गई कोई किताब, होटल की लॉबी में दीवार पर लगी पेंटिंग या दंत चिकित्सक के क्लिनिक में फूलों की सजावट। समय और स्थान का एक भराव, एक मन बहलाव का बिंदु और इससे अधिक कुछ नहीं। अगर यह इस मामूली जरूरत को पूरा करने के लिए है कि हम गुलामी करें और खुद में उतरें, तो कभी भी पूर्णता को जानने की क्या संभावना है? हम अजीबोगरीब सुख और विध्वंसक तरीके खोजते हैं, हम जो हमारे सामने है उसे दूर कर देते हैं और उससे परे देखते हैं और यह नहीं जानते कि यह खोज हमारे अलावा किसी और के लिए कुछ मायने रखेगी या नहीं। इसलिए, जब कभी-कभी, हर कलाकार के कंधे पर सवार भूत मेरे कंधे पर आकर बैठ जाता है और मेरे कान में फुसफुसाता है, 'लेकिन कोई नहीं समझता कि तुम क्या कर रहे हो', तो मैं उसके सिर पर थपथपाता हूँ और उससे कहता हूँ, 'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? मैं करता हूं।'

कई सालों तक नज़रअंदाज़ किए जाने के बाद, मुझे मेरा पहला राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया। सालों तक, मुझे कमतर, लेकिन निश्चित रूप से ज़्यादा दिखने वाले और शानदार कलाकारों के पक्ष में नज़रअंदाज़ किया गया। इससे मुझे दुख हुआ। अन्यथा मैं इंसान नहीं होता। मैं तब भी एक युवा था। मेरे जीवन के उस मोड़ पर एक पुरस्कार का मतलब होता कि मैंने जो करने का फ़ैसला किया था, उसे मान्यता मिल गई। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

अपने पचासवें वर्ष में, जब मुझे पहचान के इन चिह्नों की तलाश नहीं थी या मैं उन्हें चाहता भी नहीं था, किसी ने तय किया कि मुझे पद्मश्री दिया जाना चाहिए। अचानक मेरी कला, नहीं, मुझे खुद को सही करना चाहिए, एक कलाकार के रूप में, मेरे पास दर्शक थे। एक उत्सुक और मांग करने वाला दर्शक। दुनिया को लगा कि वे मेरे मालिक हैं। इसके बाद और पुरस्कार मिले। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि अंतरराष्ट्रीय नृत्य समारोहों के निमंत्रण की तरह ही पुरस्कारों का भी एक स्नोबॉल प्रभाव होता है। आपको बस एक की जरूरत है ताकि गेंद लुढ़क सके। मैंने सुंदरन के बारे में सोचा। आखिरकार, वह सही थे। यह सब एक सर्किट का हिस्सा होने के बारे में था।

मेरा पूरा जीवन जांच के दायरे में रहा। मेरे छात्र जीवन, मेरे रिश्ते, यहां तक कि मेरे कुत्ते और बाद में मालिनी की यादों पर भी विचार किया गया। शुक्र है कि तब तक ललिता मर चुकी थी। अन्यथा वह वेश्या की तरह स्तंभ में जगह बना लेती। उसके बारे में जो कुछ भी अच्छा और दयालु था, उसकी सारी कुलीनता और समझदारी को नजरअंदाज कर दिया जाता और इसके बजाय, उसे मेरे जीवन के कमरों में एक कपटी जगह दी जाती। हालाँकि, वह कैंसर से मर गई थी, और वे केवल इतना ही लिख पाए: 'उसका लंबे समय का साथी कैंसर से मर गया, जबकि उसका सितारा चढ़ रहा था।' मुझे एकाकी और असाधारण व्यक्ति के रूप में कास्ट किया गया, जिसकी प्रेमिका, पत्नी और मालकिन नृत्य थी।

मैंने अपने रहस्य को अपने गले लगा लिया। क्योंकि मेरे पास माया थी। बारह साल पहले मैं यहीं रुका था

Machine Translated by Google

यूरोप से वापस आते समय मैं दिल्ली गया था। मुझे व्याख्यान-नृत्य दौरे के लिए फ्रांस आमंत्रित किया गया था। तीन सप्ताह बहुत व्यस्त रहे और घर लौटते समय मैंने सांस लेने के लिए रुका। मुझे कुछ काम निपटाने थे, कुछ दोस्तों से मिलना था। एक आर्ट शो के उद्घाटन में मुझे ले जाया गया, जहाँ मेरा परिचय माया से हुआ।

मैं हाथ में गिलास थामे खड़ा था और देख रहा था। मैं सोच रहा था कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ। मेरे दोस्त ने मुझे कई लोगों से मिलवाया, लेकिन मैं मुश्किल से ही उनके नाम या चेहरे पहचान पाया। मैंने शराब को अपने अंदर एक ऐसे धुंधलेपन में समा जाने दिया, जिसने उस दुनिया को काट दिया, जिससे मेरा कोई लेना-देना नहीं था।

मैंने खुद से पूछा, ये लोग कौन हैं?

वहाँ मौजूद हर व्यक्ति का कलात्मक दुनिया से कुछ न कुछ लेना-देना था। वे चारों ओर देखते हुए उत्सुकता से देख रहे थे कि कौन सा व्यक्ति कला के योग्य है।

मुस्कान ऐसे आई जैसे कोई स्विच दबा दिया गया हो, और वह आंख तक भी नहीं पहुंची।

ऐसा लग रहा था कि सभी एक-दूसरे को जानते हैं और वे सभी या तो कोई पुस्तक लिख रहे हैं, या शांति या आतंकवाद पर कोई लघु फिल्म बना रहे हैं, कोई एकल प्रदर्शन कर रहे हैं या गुफा चित्रों पर शोध कर रहे हैं, या किसी मुद्दे का समर्थन कर रहे हैं, या किसी सांस्कृतिक दल के हिस्से के रूप में किसी विदेशी गंतव्य के लिए रवाना होने वाले हैं।

मुझे घबराहट की लहर महसूस हुई। क्या मैं उनमें से एक बन गया था? क्या मैं उनमें से एक बन गया था?

क्या मैं एक कलाकार की तुलना में अधिक जानवरों का प्रदर्शन कर रहा हूँ, और मेरी कला को एक सर्कस में बदल दिया है?

मुझे घृणा और घृणा महसूस हुई। मैं बस नदी के किनारे अपने छोटे से घर में भाग जाना चाहता था। इसलिए, माया से मिलने के पहले कुछ मिनटों में, मैंने उसे प्रदर्शन करने वाली सीलों में से एक के रूप में खारिज कर दिया और उसके साथ अभद्र व्यवहार किया। 'तो तुम क्या करती हो?

लिखना? पेंटिंग करना? नृत्य करना? गाना? फ़िल्म बनाना? व्हेल को बचाना?' वह मुस्कुराई। 'काश मैंने इनमें से

एक या सभी काम किए होते। मुझे लगता है कि मैं यहाँ झूठे बहाने से आई हूँ। नंदिनी,' उसने एक महिला की ओर इशारा करते हुए कहा, जो केवल एक नर्तकी हो सकती थी, उसके आभूषण और आँखों के मेकअप के साथ, 'उसने जोर दिया कि मैं उसके साथ आऊँ। मैं दिल्ली में नहीं रहती। मैं बस घूमने आई हूँ। मैं एक अकाउंटेंट हूँ।' उसने पहले कभी किसी पुरुष नर्तक को नहीं देखा था। वह जानना चाहती थी कि यह कैसा था।

'मैंने पहले कभी किसी महिला अकाउंटेंट को नहीं देखा,' मैंने जवाब दिया। 'कैसी है वह?' हम हँसे। उसकी हँसी ने मुझे फिर से उसकी ओर देखने पर

मजबूर कर दिया। यह एक धीमी, गले से निकली हुई हँसी थी, जो बादलों से घिरे आसमान और गीली धरती का संकेत दे रही थी। मैंने उसे ध्यान से देखा।

माया उस समय एक कामुक महिला थी। मैंने पाया कि उसका मन भी उसके शरीर की तरह ही उर्वर था। वह अकेली भी थी। उसका पति और उसका परिवार उसे व्यस्त रखते थे, लेकिन उनके बावजूद वह किसी साथी के लिए तरसती रहती थी।

दिल्ली से रवाना होने से पहले हम एक बार फिर मिले और देर रात तक बातें कीं।

रात को. 'क्या मैं तुम्हें फिर से देखूंगा?' मैंने पूछा.

Machine Translated by Google

'मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसा करोगे। मुझे नहीं पता कि आखिरी बार मुझे कब किसी दूसरे व्यक्ति के साथ इतना सहज महसूस हुआ था।' मैंने भौंहें सिकोड़ीं।

मुझे आराम का इशारा पसंद नहीं आया। क्या मैं एक पुराना, जाना-पहचाना तकिया था?

'आरामदायक?' 'वैसे, यह

तारीफ है। इसका मतलब है कि मैं आपको बता सकता हूँ कि मैं क्या सोच रहा हूँ।
उन्होंने कहा, 'मुझे सतर्क रहने की जरूरत नहीं है।'

मैंने मजाक में कहा, 'मैं तो यही सोचता था कि तारीफें सुंदर, आकर्षक आदि के आधार पर होती हैं।'

'बहुत सी औरतें तुमसे यही कहती रही हैं। मैं अलग होना चाहती थी।' 'तुम अलग हो,' मैंने कहा और उसका हाथ अपने हाथ में ले

लिया। उसने उसे वहीं रहने दिया।
और मैं मंत्रमुग्ध हो गया।

एक महीने बाद मैं मद्रास गया, जहाँ वह रहती थी। मैंने उसे फ़ोन किया; हम मिले।
अनिवार्य रूप से, हम प्रेमी बन गए। एक निश्चित जटिलता थी जो हमें एक दूसरे के करीब खींचती थी। उसके शरीर के वक्रों में, उसके मन की तरंगों में, मैं एक ऐसे साथी की तलाश करता था जो मेरे बराबर हो और वह प्रेम संबंध में आनंदित हो। वह इसे बस इतना ही होने देती थी। दिल और शरीर का संबंध और इससे अधिक कुछ नहीं।

अब जब मैं उसके साथ होता हूँ, तो मैं समझता हूँ कि इतने सालों पहले उसका क्या मतलब था। मैं माया के साथ सहज हूँ और वह मेरे साथ। जब मैं माया के साथ होता हूँ, तो मैं शांतम को जानता हूँ।

पिछले कुछ सालों में, जब भी मैंने परफॉर्म किया है, ऑडिटोरियम खचाखच भरा हुआ है। और मैंने खुद से पूछा है: क्या वे यहाँ मेरा वेशम देखने आए हैं? या वे राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता कोमन का परफॉर्म देखने आए हैं? क्या वे कलाकार या सेलिब्रिटी को देखना चाहते हैं?

इससे भी बुरी बात यह है कि कुछ लोग चाहते हैं कि मैं खुद को दोहराऊं। हमेशा कोई न कोई ऐसा होता है जो कहता है, 'कोमन आशान, मैं 1995 में त्रिपुनिथारा में आपके द्वारा खेला गया वेशम नहीं भूल सकता। किरमिरा वधम में धर्मपुत्रन। मुझे उम्मीद है कि हम आज रात भी आपको ऐसा ही करते देखेंगे।'

मैं मुस्कुराता हूँ और कुछ नहीं कहता। इससे क्या फ़र्क पड़ता है, मैं खुद से कहता हूँ। मैं वही किरदार निभाऊँगा जो मैं बनना चाहता हूँ। मैं किसी भी तरह के दबाव के आगे नहीं झुकने वाला, चाहे वह कितना भी चापलूसी वाला क्यों न हो। कुछ भी इसे नहीं बदल सकता।

एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता ने मेरे बारे में एक लघु फिल्म बनाई है। एक पत्रकार ने एक फ्लाई-ऑन-द-वॉल जीवनी लिखने का प्रयास किया। मुझे हर प्रतिष्ठित स्थान पर प्रदर्शन करने और कार्यशालाओं और सेमिनारों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। मेरी राय मांगी जाती है और मेरी उपस्थिति आवश्यक होती है। मेरी तकनीक और शैली की कई व्याख्याएँ की गई हैं।

मैं इन सबसे दूर महसूस करता हूँ। मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं है कि लोग मुझे किस नज़र से देखते हैं

Machine Translated by Google

या दुनिया मेरे बारे में क्या सोचती है, एक पुरुष या एक नर्तक के रूप में।

मैं इससे ज़्यादा क्या कहूँ, सिवाय इसके कि इतना ही काफी है कि मैं अपने रंग पहन लूँ। इतना ही काफी है कि मुझे किसी किरदार की खाल में ढलने की इजाज़त मिल जाए।

जब मैं नृत्य करता हूं तो मुझे पता चलता है कि मैं कौन हूं।

Machine Translated by Google

उपसंहार

यह नियर-द-नीला में उसकी आखिरी शाम है। क्रिस अपने आस-पास देखता है कि कहीं वह कुछ भूल तो नहीं गया है। उसके बैग पैक हो चुके हैं। वह अपने दरवाजे पर दस्तक सुनता है। एक पल के लिए उसे लगता है कि यह राधा है। उसका मिन-मिन उसे अलविदा कहने आया है। उसका मिन-मिन यहाँ है, उसका दिल उछल पड़ता है।

उसने सुबह ही उसे फ़ोन किया था। राधा फ़ोन पर आई। राधा को वह पहचान नहीं पाया। उसकी आवाज़ नपी-तुली थी, उसके शब्द सावधान थे। फ़ोन रखते ही उसने खुद से पूछा कि क्या ग़लत हुआ।

फिर वह अंकल से मिलने गया। वे एक रात पहले ही विदा ले चुके थे, लेकिन क्रिस ने सोचा कि उसे बूढ़े आदमी से फिर मिलना चाहिए।

'मुझे आपसे मिलने की उम्मीद नहीं थी,' चाचा ने कहा।

क्रिस ने कहा, 'मेरे पास कुछ समय था।' फिर और दिखावा करने में असमर्थ होकर वह रो पड़ा, 'राधा। तुम राधा और मेरे बारे में जानती हो, है न? मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या गलत हुआ। मुझे वाकई समझ नहीं आ रहा। मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि वह मुझे छोड़कर चली गई क्योंकि मैंने उसे नहीं बताया कि मेरी माँ और तुम...' क्रिस ने महसूस किया कि उसका चेहरा मुरझा गया है। उसने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया।

उसने महसूस किया कि बूढ़े आदमी की हथेली उसके बालों को सहला रही है। 'तुम्हें लगता होगा कि तुम्हारा परिवार और मेरा परिवार पिछले जन्म में दुश्मन थे। पहले मैंने तुम्हारी माँ को चोट पहुँचाई। अब मेरी भतीजी तुम्हारा दिल तोड़ रही है। मैं क्या कह सकता हूँ, क्रिस? मैं तुम्हें बेहतर महसूस करवाने के लिए क्या कह सकता हूँ? शायद यह सबसे अच्छा है कि मैं तुम्हें बेहतर महसूस न करवाऊँ। अगर तुम नाराज़ होगे, तो तुम्हें कम चोट लगेगी।' क्रिस ने आश्चर्य से देखा।

चाचा उठकर मालिनी के पिंजरे के पास जाकर खड़े हो गए। 'दार्शनिक कहते हैं कि प्यार का मालिकाना हक नहीं होता, आप उस पर अधिकार नहीं कर सकते, जैसे ही आप ऐसा करने की कोशिश करेंगे, प्यार आपको छोड़ देगा। लंबे समय तक मैं इस बात पर यकीन करता रहा। फिर मेरी मुलाकात माया से हुई।

मेरे एक हिस्से ने कहा कि जो हमारे पास है, वह पर्याप्त है। मेरे दूसरे हिस्से ने स्थिति से असंतुष्ट महसूस करना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, मेरा यही हिस्सा हावी होने लगा। मैं चाहता था कि माया अपनी शादी तोड़ दे और मेरे साथ अपना जीवन व्यतीत करे। लेकिन मेरा वह मूर्ख हिस्सा जो मानता है कि प्यार पर स्वामित्व नहीं हो सकता, मेरी जुबान बंद कर देता था। मैंने उससे कभी ऐसा करने के लिए नहीं कहा। मुझे उम्मीद थी कि वह खुद ही यह सब करेगी। मैं चाहता था कि वह मेरे बिना बताए यह फैसला ले। जब उसने ऐसा नहीं किया, तो मुझे दुख हुआ और मैं उससे नाराज़ भी हुआ। अब जाकर मुझे एहसास हुआ कि मैं कितना मूर्ख था। कितना घमंडी और कायर। मैं सभी आरोपों से मुक्त होना चाहता था

Machine Translated by Google

दोष देना।

'जब माया यहाँ थी, तो किसी समय उसने मेरे साथ जीवन के बारे में बात की। मैंने उससे कहा कि वह मेरे साथ रह सकती है। उसका हमेशा स्वागत है। लेकिन मैंने उसे कभी नहीं बताया कि मुझे उसकी कितनी ज़रूरत है। ऐसा लगा कि मैं अपनी कमज़ोरी स्वीकार कर रहा हूँ कि मुझे अपने जीवन को पूरा करने के लिए किसी और व्यक्ति की ज़रूरत हो सकती है। इसलिए मैंने अपने चेहरे के पीछे छिपकर सोचा।

यह चेहरा एक जरूरतमंद आदमी के अलावा बहुत सारी भावनाओं को समेटे हुए है।

'क्या तुम्हें पता है कि मैंने कल रात क्या किया? मैंने माया को फ़ोन किया और उसे मेरे पास आने के लिए कहा। मैंने कहा- मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। मैं तुम्हें यहाँ अपने साथ चाहता हूँ। मैंने माया को बताया कि मुझे उसकी कितनी ज़रूरत है।

'मुझे नहीं मालूम राधा तुमसे क्या चाहती थी। क्या तुमने उससे कभी पूछा?

'क्या आपको पता था कि आप रिश्ते से क्या चाहते थे?'

शायद यह सबसे अच्छा था, क्रिस ने सोचा जब वह अपनी झोपड़ी में वापस आया।

शुरू में, उसका इरादा इतना शामिल होने का नहीं था। लेकिन उनका रिश्ता इतनी तेज़ी से आगे बढ़ा कि उसका कोई नियंत्रण नहीं रहा। शुरू में उसकी तीव्रता चापलूसी करने वाली थी, लेकिन लगातार उससे मेल खाना थका देने वाला था। उनका रिश्ता वैसे भी नहीं चल पाता।

क्या तुम सच में ऐसा मानते हो, क्रिस, उसके दिमाग में एक आवाज़ ने पूछा। एक आवाज़ जिसमें अंकल की आवाज़ की लय थी। क्या तुम इसलिए नहीं भाग रहे हो क्योंकि वह तुमसे उससे ज़्यादा की उम्मीद कर रही थी जो तुम देने के लिए तैयार थे?

दरवाजे पर फिर से धीमी दस्तक हुई। यह श्याम है।

क्रिस दरवाज़ा खोलता है.

श्याम ने कहा, 'कोई टैक्सी उपलब्ध नहीं है। मैं तुम्हें रेलवे स्टेशन पर छोड़ दूंगा।'

क्रिस श्याम की आँखों में आँखें नहीं मिला पा रहा है। मैंने तुम्हारे साथ अच्छा नहीं किया, वह श्याम से कहना चाहता है। मैंने राधा को बहकाया नहीं। मेरा ऐसा कुछ भी करने का इरादा नहीं था। मैं यहाँ सिर्फ़ सच जानने आया था, यह जानने आया था कि क्या कोमन आशान मेरे पिता हैं। मैं तुम्हारी शादी नहीं तोड़ना चाहता था या तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था। अगर मैं कहूँ कि मैं उसके प्रति आकर्षित नहीं था तो मैं झूठ बोलूँगा। मैं था। लेकिन वह मुझे दूर धकेल सकती थी।

इसके बजाय, उसने कहा कि तुम्हारी शादी खत्म हो गई है। और कभी-कभी जब कोई महिला आपको दिखाती है कि वह तैयार है, तो खुद को रोकने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता। राधा अकेली थी। कोई भी यह देख सकता था। और राधा तैयार थी। मैं सिर्फ इंसान हूँ, श्याम।

वह अपने पापों को स्वीकार करने और मुक्ति पाने की इच्छा को दबाता है। श्याम

शायद उसे कुछ भी संदेह न हो। अन्यथा क्या वह यहाँ होता?

'बस इतना ही,' वह कहता है, अपना सेलो केस अपनी पीठ पर लटकाता है और अपना बैग उठाता है।

Machine Translated by Google

श्याम देखता है और कहता है, 'मैंने तुम्हें इसे बजाते हुए कभी नहीं सुना।'

क्रिस ने व्यंग्य की आशंका में ऊपर देखा। लेकिन श्याम का चेहरा उदास था।

श्याम ट्रेन के आने का इंतज़ार करता है। जब ट्रेन आती है, तो वह क्रिस के आने तक इंतज़ार करता है।
उसने अपना बैग और उपकरण निचली बर्थ पर व्यवस्थित कर दिया।

क्रिस दरवाज़े की तरफ़ जाता है। उसे समझ नहीं आता कि उसे माफ़ी मांगनी चाहिए या श्याम का शुक्रिया अदा करना चाहिए। अंत में, वह दोनों में से कुछ भी नहीं करता।

श्याम कहता है, 'अलविदा।'

'अलविदा,' क्रिस जवाब देता है।

जैसे-जैसे ट्रेन चलती है, उसकी आँखें भीड़ को खोजती हैं। इस तरह चले जाना उसे गलत लगता है। वह अपने आने के बारे में सोचता है। उस पल की नज़ाकत। उसे एक झटका सा लगता है।
राधा। अगर वह कर सकता, तो वह इसे अलग तरीके से करता। सब कुछ फिर से शुरू करता ताकि उनके पास अपने प्यार को जीवित रखने का बेहतर मौका हो।

लेकिन क्या वह वाकई ऐसा मौका चाहता है? सच तो यह है कि उसे नहीं पता कि वह क्या चाहता है।

क्रिस कुछ देर तक परिदृश्य को देखता है। रंगीन शीशे के माध्यम से, सब कुछ मैला भूरा दिखाई देता है। वह जो किताब पढ़ रहा है, उस पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता। अंत में वह टेप निकालता है और अपने इयरफ़ोन लगाता है।

फिलहाल, आगे देखने के लिए यही है। कोमान बनने की कहानी।

श्याम सीढ़ियाँ चढ़ता है और रेलवे पुल पर रुक जाता है। वह वहीं खड़ा होकर नदी को देखता है।

एक विचार मन में आता है। श्याम को लगता है कि उसके पैरों में पंख लग गए हैं, जैसे वह नदी के किनारे दौड़ रहा हो।
सीढ़ियाँ। राधा, मैं उससे कहूँगा, वह सोचता है, यह बच्चा, तुम्हारा बच्चा, मेरा होगा।

शायद तब वह उससे प्यार करना सीख जायेगी।

राधा अपनी रॉकिंग चेयर पर बैठी है और एंथुरियम की कतार को घूर रही है। मैंने उसे दूर भेज दिया, वह खुद से बार-बार कहती है। मैंने उसे दूर भेज दिया। मैंने उसे दूर भेज दिया। मैं और क्या कर सकती थी?

वह भूख की एक बड़ी पीड़ा को जानती है। वह क्रिस की अनछुई ठोड़ी के बारे में सोचती है जो उसके गले की रेखा को सहला रही थी। वह उसकी मुस्कान के बारे में सोचती है। उसके होठों की वक्रता उसे कैसे खींचती थी। वह उसकी धीमी, सुस्त आवाज़ और उस उच्चारण के बारे में सोचती है जिसे उसने उसके नाम के साथ विरासत में चुना था। और वह सोचती है कि कैसे उसने उसे पहले ही एक याद के रूप में छोड़ दिया है। कुछ ऐसा जिसे खो जाने की एक उत्सुक कड़वी-मीठी भावना के साथ पीछे मुड़कर देखा जा सकता है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ, एक बार...

सूरज की रोशनी की एक किरण उसकी गोद में गिरती है। जुलाई की दोपहर में, बारिश रुक जाती है और सूरज सारी उमस को सोख लेता है। शांति उसके चारों ओर छा जाती है।

वह किसी के कंधे पर टिककर कुछ महसूस करने की तीव्र इच्छा महसूस करती है

Machine Translated by Google

वह अब श्याम के बारे में सोचती है। वह अपनी आँखें बंद करती है और श्याम से निकलने वाली ताज़ी नहायी हुई, साफ-सुथरी नाशपाती की खुशबू को सूँघती है।

यह डर है जो मुझे उसकी तलाश करने पर मजबूर करता है, उसके प्रति सम्मान नहीं। मैं क्या करने जा रहा हूँ?
मैं भूल गया हूँ कि दुनिया से लड़ना क्या होता है। मैं जीवित रहने के लिए ज़रूरी सभी कौशल भूल गया हूँ। मैं इससे कैसे निपटूँ?

मैं सिर्फ़ इसलिए पत्नी का किरदार नहीं निभा सकती क्योंकि इससे मुझे चिंताओं से मुक्ति मिलती है। मैंने श्याम के साथ सही नहीं किया। मैंने अब तक पत्नी का किरदार निभाया है और उससे घृणा करती रही हूँ। इसके लिए मुझे पश्चाताप है। मैं टूटी हुई अवस्था में उसके पास गई और उम्मीद की कि वह मुझे ठीक कर देगा। जब वह ऐसा नहीं कर सका, तो मैं उससे घृणा करने लगी और मुझे दुख हुआ।

उसने जो दुख उसे पहुँचाया है, वह उसे अंदर तक खा जाता है। और वह सोचती है, क्या भगवान
क्या वह हमें हमारे पापों के लिए दण्ड देगा या वह हमें स्वयं को दण्ड देने का काम छोड़ देता है?

घर शांत है। उसका दिल भी शांत है।

राधा के अंदर का बच्चा बड़ा हो रहा है। एक बच्चा जो उसके हर कदम और हर घंटे को भरता है
वह पहले से ही इसे प्यार करती है, और यह वह प्यार है जिसे वह एक ताबीज के रूप में पहनती है।

वह रॉकिंग चेयर पर पीछे की ओर झुक जाती है। उसके पास यह सोचने के लिए पर्याप्त समय है कि वह अपने जीवन में क्या करना चाहती है। उसके पास अपनी खुशियाँ और आशीर्वाद गिनने का समय है। उसके पास समय है।

वह अपने दोनों हाथ अपनी गोद में रखती है और खुद को बहुत धीरे से हिलाती है।

Machine Translated by Google

स्वीकृतियाँ

इस पुस्तक को लिखते समय मुझे कई लोगों से सहायता और समर्थन मिला:

केरल कलामंडलम ने मुझे अल्पकालिक छात्र के रूप में नामांकन की अनुमति दी।

केरल कलामंडलम में कथकली के सहायक प्रोफेसर के. गोपालकृष्णन ने मुझे कथकली की गलियों और गलियारों से परिचित कराया और इस कला के कई आयामों को समझाया। अकादमिक दृष्टिकोण के अलावा, आशान ने जो कुछ भी बहुत उदारता से दिया, वह था उनके अनुभव, उनकी समझ और यादों का भार और सबसे महत्वपूर्ण बात, कथकली कलाकार होने के बारे में एक अंतर्दृष्टि। कथकली के बारे में लिखने का प्रयास करने का साहस मुझमें पैदा करने के लिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ। उनके बिना, यह पुस्तक एक मात्र विचार बनकर रह जाती।

नलिनी सूर्यवंशी, जिन्होंने मुझे तमिलनाडु के सुदूर दक्षिणी भाग की यात्रा कराई तथा मेरी कल्पना को उन क्षेत्रों में जाने के लिए प्रेरित किया, जहां मैं अन्यथा नहीं पहुंच पाता; उनके पिता, स्वर्गीय डॉ. थॉमस ज्ञानमुथु, जिन्होंने 1930 के दशक में थूथुकुडी में एक डॉक्टर के रूप में अपने अनुभव मेरे साथ साझा किए।

डॉ. पी.के. सुनील, जिन्होंने धैर्यपूर्वक मेरे द्वारा बताई गई सभी बातों पर शोध किया तथा मुझे काम करने के लिए सुझाव दिए।

पैट्रिक विल्सन और एनरिक मुरिलो, जिन्होंने साठ के दशक के अंत और सत्तर के दशक के आरम्भ में लंदन की अपनी यादों को ताजा किया और उन्हें मेरे लिए उपलब्ध कराया, ताकि मैं उनसे बेबाकी से प्रेरणा ले सकूं।

बाबू नैनन, जिन्होंने मुझे बाइबिल की एक प्रति उपहार में दी; आशीष खोखर और डोमिनिक विटालियोस, जिन्होंने मुझे सही समय पर सही कथकली पुस्तकें भेजीं, जिससे वास्तव में बहुत फर्क पड़ा।

कलामंडलम वासु पिशारोडी और कलाधरन, जिन्होंने धैर्य के साथ हर प्रश्न का उत्तर देने के लिए समय निकाला और कभी-कभी, मुश्किल से ही अपने प्रश्न छिपाए।
मनोरंजन.

साहित्यिक एजेंट लौरा सुसिजन को उनके सक्रिय प्रोत्साहन और निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद।

कार्तिका वी.के., एक ऐसी संपादक बनने के लिए जिसका सपना कोई भी देख सकता है: उन्होंने मेरे द्वारा किए गए सभी कार्यों को देखा और उसे बेहतर बनाने में मदद की।

जयंत कोडकानी, रेबेका कार्टर और एनरिक मुरिलो, पहले पाठक जिन्होंने मेरी शंकाओं को दूर किया और पुस्तक को आगे बढ़ाया।

Machine Translated by Google

डिम्पी और सुरेश मेनन, जिनका प्यार और दोस्ती मेरे लिए मुख्य आधार रहे हैं, जिन्होंने मुझे अपने करीब खींचा और हर बार जब मैं निराश हुआ, तो मेरा हौसला बढ़ाया।

वसीम खान अपने कैमरे के साथ और गीता कृष्णनकुट्टी अपनी अंतर्दृष्टि के साथ
अनुवादों में इतनी तत्परता और उत्साह के साथ योगदान देने के लिए धन्यवाद।

अनगिनत तरीकों से, वहाँ थे: आनंद, सुमेंथा और
फ्रैंकलिन बेल, फ्रांसेस्का डायनो, एमी ईशू, अच्युतन कुदाल्लूर, कारमेन लाविन, प्रसन्ना, राजेश्वरी अम्मा, रजनी, बाला सेठी, जयप्रिया वासुदेवन और विश्वास।

मेरे माता-पिता सौमिनी और भास्करन, जिन्होंने हमेशा मेरी हर संभव मदद की है।
किया है और करते हैं.

उन्नी, जो बड़े धैर्य के साथ यह स्वीकार करती है कि कला एक ईर्ष्यालु मालकिन है।

चीनी - छाया, पैर गरम करने वाला और प्रेम गुरु।

और मैत्रेय - साथी और लेखक के सबसे अच्छे दोस्त, हर चीज को परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए।

Machine Translated by Google

अनिता नायर द्वारा लिखित

द बेटर मैन (1999)

लेडीज़ कूपे (2001)

जहां वर्षा जन्म लेती है: केरल के बारे में लेखन (सं.) (2003)

द पफ इन बुक ऑफ वर्ल्ड मिथ्स एंड लीजेंड्स (2004)

Machine Translated by Google

अनीता नायर

अनीता नायर बैंगलोर और केरल के मुंडाकोट्टुकुरसी में रहती हैं। उनकी किताबों का दुनिया भर की पच्चीस से ज़्यादा भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। www.anitanair.net पर उनसे मिलें।

Machine Translated by Google

कथकली शब्दकोश

श्रृंगारम	प्यार
हास्यं	अवमानना
करुणाम	दु: ख
रौद्रम	रोष
वीरम	वीरता
भयानाकम भय	
बीभलसम	घृणा
अद्भुतम्	आश्चर्य
शांतम	सेना की टुकड़ी
अभरम	अभ्रक धूल
अलार्चा	गर्जन

अट्टकलशम कथकली में एक जटिल नृत्य अनुक्रम

चुंडापू	सोलनम प्यूबेस्कस
चुट्टी	कलाकार के चेहरे से जुड़ा निर्मित चेहरे का फ्रेम
चुवान्ना ठाडी	लाल दाढ़ी; यह संकेत है कि चरित्र बुरा है
कलारी	प्रशिक्षण का स्थान; व्यायामशाला

Machine Translated by Google

कन्नु-साधकम	नेत्र व्यायाम
कत्थी	चाकू; यह संकेत है कि चरित्र अभिमानी और दुष्ट दोनों है, तथापि उसमें कुछ क्षमाशील गुण भी हैं, जो आमतौर पर कुलीनता की एक झलक है।
मल्लन	पहलवान
मन्नोला	कलाकार के चेहरे पर लगाया गया पीला रंग
मिनुक्कुवेशाम	उज्ज्वल या चमकीला; यह संकेत है कि चरित्र सौम्य है और उसमें आध्यात्मिक गुण हैं। इसमें नायिकाएं, ब्राह्मण, ऋषि आदि शामिल हैं।
नोकू	तीक्ष्ण दृष्टि
ओकू	ताक़त
पच्चा	हरा रंग; यह संकेत है कि यह किरदार एक नायक है, परिष्कृत है और उच्च नैतिकता वाला है। दिव्य प्राणी, राजा और महाकाव्य नायक इस मेकअप को पहनते हैं।
पदिंगिया पदम	धीमा गाना
पगारचा	प्रभावशाली कद
पझुप्पु	परिपक्वता या पीलापन; विशिष्ट दैवीय पात्रों के लिए प्रयुक्त एक विशेष श्रृंगार
पेट्टीकरन	ग्रीनरूम सहायक। शाब्दिक अनुवाद: बक्सा-वाहक। बॉक्स का तात्पर्य पोशाक और मेक-अप बॉक्स से है।
श्रृंगार पदम	प्रणय गीत
तिरशीला	परदा

Machine Translated by Google

वल्लन	भीम का पर्यायवाची
वेषकरण	अभिनेता
वेषम	भूमिका

युद्ध पदम युद्ध गीत

Machine Translated by Google

ग्रन्थसूची

कथकली कॉम्प्लेक्स, फिलिप ज़ारिल्ली; अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984.

चोलियाट्टम, खंड 1 और 2, कलामंडलम पद्मनाभन नायर; केरल कलामंडलम, वल्लाथोल नगर, 2000।

नालचरितम अट्टाप्रकरम, कलामंडलम कृष्णन नायर; केरल संगीत नाटक अकादमी, त्रिशूर, 1984।

केरलाथिले पक्षिकल, इंदुचूडन; केरल साहित्य अकादमी, त्रिशूर, 1958।

हिंदू पौराणिक कथाओं और धर्म का एक क्लासिक शब्दकोष, जॉन डाउसन; रूपा एंड कंपनी, नई दिल्ली, 1982।

Machine Translated by Google

मालकिन। कॉपीराइट © 2005 अनीता नायर द्वारा। सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी भाग बिना लिखित अनुमति के किसी भी तरह से पुन: प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है, सिवाय आलोचनात्मक लेखों या समीक्षाओं में निहित संक्षिप्त उद्धरणों के। जानकारी के लिए, सेंट मार्टिन प्रेस, 175 फिफ्थ एवेन्यू, न्यूयॉर्क, एनवाई 10010 पर संपर्क करें।

केमिली पिसारो द्वारा लिखित 'लेटर टू हिज सन लुसिएन' के अंश , पृष्ठ 77 पर हैं, जो केगन पॉल, ट्रेंच, ट्रबनर एंड कंपनी लिमिटेड, 1943 द्वारा प्रकाशित संस्करण से लिए गए हैं; डोम मोरेस द्वारा लिखित 'द शैडो टाइम्स', पृष्ठ 214 पर है, जो यति बुक्स, 2002 द्वारा प्रकाशित ' टाइप्ड विद वन फिंगर ' से लिया गया है ; रेनर मारिया रिल्के द्वारा लिखित 'फाइनल एक्ट', पृष्ठ 336 पर है, जिसका अनुवाद ब्रूस गेटनबी ने किया है।

यद्यपि कॉपीराइट धारकों का पता लगाने और अनुमति प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है, लेकिन सभी मामलों में यह संभव नहीं हो पाया है; हमारे ध्यान में लाई गई किसी भी चूक को भविष्य के संस्करणों में ठीक कर दिया जाएगा।

www.stmartins.com भारत में

सबसे पहले पेंगुइन बुक्स इंडिया द्वारा प्रकाशित

ईआईएसबीएन 9781429998710

पहला ई-बुक संस्करण : अप्रैल 2011

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा नायर, अनीता.

मालकिन: एक उपन्यास / अनीता नायर.—पहला सेंट मार्टिन ग्रिफिन एड.

पी. सेमी.

आईएसबीएन-13: 978-0-312-34947-9 आईएसबीएन-10:

0-312-34947-5

1. यात्रा लेखक - कथा साहित्य। 2. नर्तक - कथा साहित्य। 3. त्रिकोण (पारस्परिक संबंध) - कथा साहित्य। 4. केरल (भारत) - कथा साहित्य।

I. शीर्षक।

PR9499.3.N255M57 2006 823'.92—

dc22

2006040024

पहला सेंट मार्टिन ग्रिफिन संस्करण: अगस्त 2006